संसार के सभी विकासशील देश ... बहुत ... यह स्पष्ट है कि किसी देश के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचों का [illegible] ... में साम्यवादिक शांति भी स्थापित हो सकती है। इस के अतिरिक्त अन्य देशों में भी आज साम्यवादी विचारधारा का प्रचार धीरे-धीरे बढ़ रहा है। ऐसी दशा में विभिन्न क्षेत्रों में किए गए प्रयोगों के प्रति उपेक्षा करने का समय अब नहीं रहा।

हिंदी में सुप्रसिद्ध राहुल सांकृत्यायन जी एक बड़े अधिकारी विद्वान हैं जो अपने निजी अनुभवों के आधार पर [illegible] हिंदी समाज को पिछले बारह वर्षों से परिचित करते रहे हैं। साहित्य और संस्कृति के [illegible] की दिशा में उनकी यह [illegible] सेवाएँ अत्यंत [illegible] है।

प्रस्तुत ग्रंथ सोवियत भूमि भाग २ का दूसरा है। इसमें लेखक ने [illegible] वहां की भूमि और निवासियों का परिचय कराते हुए वहां के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक [illegible] का उल्लेख किया था। इसमें पंचायतों, खेती, शिक्षा, [illegible] और साहित्य, कला, धर्म और वैज्ञानिक [illegible] पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है। यह ग्रंथ का एक अंश था। इसके साथ यह ग्रंथ आपकी [illegible] में हमारी [illegible] से सामने आता है।

सोवियत भूमि और उसकी महान क्रांति के संबंध में यह एकमात्र प्रामाणिक ग्रंथ है।

सोवियत्-भूमि

भाग २

राहुल सांकृत्यायन

द्वितीय संस्करण

किताब महल : इलाहाबाद, बम्बई
१९४९

प्रथम संस्करण, १९३८
द्वितीय संस्करण, १९४९

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—कुन्दनलाल जायसवाल, जय हिन्द प्रेस, कीटगंज, प्रयाग।

विषय-सूची

द्वितीय भाग

अध्याय ६

(कृषि)

अध्याय ७

(शिक्षा व्यापक)

अध्याय ८

(कला)

पृष्ठ

अध्याय ९

(संविधान और पार्लामेंट)

अध्याय १०

(धर्म और वैयक्तिक सम्पत्ति)

अध्याय ११

(महोत्सव)

अध्याय १२

(१९३७की यात्राका अन्त)

सोवियत्-राष्ट्र-गीत*

स्वाधीन सहज जनतन्त्रोंका अच्छेद्य सङ्घ
सङ्घटित किया इस महादेशने अ-विनश्वर
जन-गण-मनद्वारा सङ्घर्षोंमें निर्मित है
एकताबद्ध यह महाबली सोवियत्-भूमि

आओ, गायें हम मिल-जुलकर
निज मातृ-भूमिकी अमर कीर्ति
बन्धुता हमारी अति दृढ़ है
यह जनताका अनुपम गढ़ है
फर फर फर फर फहराता है
यह लाल लाल
यह वैजयन्त विक्रमशाली
यह सोवियतोंका झण्डा है
यह एक विजयसे ले जाता
दूसरी विजयपर हम सबको

---

*श्री नागार्जुन द्वारा अनुवादित

तूफानोंमेंसे स्वतन्त्रता—
रवि किरणोंने आ-आ करके
हमें कर दिया है आनन्दित
जिसपर लेनिन हमें ले चले
उसी नये पथसे हम आये
सच्चे रहना जनताके प्रति—
स्तालिनने यह हमें सिखाया
और उसीने किया हमें रह-रहकर प्रेरित
कठिन परिश्रम और वीरतापूर्ण काम करनेके खातिर

आओ, गायें हम मिल-जुलकर
निज मातृ-भूमिकी अमर कीर्ति
समरानलकी विकराल ज्वालमें तप-तप कर
यह हुई वयस्क हमारी लाल फौज
बर्बर आक्रमक ! दूर दूर !!
हम तुमको मार गिरायेंगे
अपने भविष्यका निर्णय हम समरांगणमें ही कर लेंगे
अक्षय प्रसिद्धि लेकर लौटेंगे अपने घर
जय जन्मभूमि...सोवियत्-सङ्घ !

द्वितीय भाग

सोवियत्-भूमि

अध्याय ६

(कृषि)

१. कल्खोज़ ❀

(पंचायती खेती)

(१) निर्माण—समाजवाद उत्पादन-साधनकी सम्पत्तिका स्वामित्व समाजके हाथमें देता है, वह सम्पत्ति चाहे औद्योगिक हो, चाहे कृषि-सम्बन्धी। इस प्रकार समाजवादियोंको यह पहले ही मालूम है, कि खेतीका भी समाजीकरण होना जरूरी है। क्रान्तिका वेग यद्यपि बहुत तीव्र होता है। वह उस तूफ़ानकी तरह है, जिसके सामने बड़े-बड़े वृक्ष फूँकसे तिनकेकी तरह उड़ते हैं। तो भी मनुष्यके समाजका संगठन इतना पेचीदा है, कि एक दिनमें उसे बदला नहीं जा सकता। इसीलिए रूसमें क्रान्तिके विजयी होनेके बाद भी ११ साल तक इन्तिजार करना पड़ा, तब जोरशोरके साथ खेतीको पंचायती बनानेका भारी प्रोग्राम कार्य-रूपमें परिणत किया जाने लगा।

महान् साम्यवादी क्रान्तिने प्रथम वर्ष हीमें खेतोंपर जमींदारोंका प्रभुत्व खतम कर दिया, जिसके कारण किसान सिर ऊपर उठाकर चलनेमें समर्थ हुए; लेकिन सोवियत्के कर्णधारोंके सामने तो पहले ३ सालका

❀१९३८में लिखित पृष्ठ ३—३५

भयंकर गृह-युद्ध था। उसके बाद उद्योग-धंधेको फिरसे निर्माण करनेका सवाल था। १९२७ तक उनका सारा ध्यान इसी ओर रहा।

हाँ, एक बात जरूर हुई थी। क्रान्तिके समय जमींदारोंकी बड़ी बड़ी जमींदारियाँ जो जब्त की गई थीं, उनमें बड़े बड़े फ़ार्म (खेत) थे। नई सरकारने बहुतसे खेतोंको किसानोंको दे दिया, लेकिन कुछ खेतोंको सरकारी खेतके रूपमें परिणत कर दिया। इन्हें आजकल सोव्खोज (सोवियत्के खेत) कहते हैं। सोव्खोजके बारेमें हम अलग लिखेंगे। यहाँ संक्षेपमें इतना ही समझना चाहिए, कि सोव्खोज एक प्रकारसे अनाजकी फ़ैक्टरी है, जिसका हरएक कार्यकर्ता वैसा ही कमकर है, जैसा किसी और कारखानेका कमकर।

सोव्खोजोंके अतिरिक्त कितनी ही जगहोंपर कुछ आदर्शवादी साम्यवादियोंने साम्यवादी खेती (कम्यून) भी स्थापित की; और सोवियत् सरकारकी हर तरहसे मदद होनेके कारण सफलतापूर्वक उन्हें चलाया। लेकिन जब तक (१९२७ ई०में) देशका उद्योग-धंधा युद्धके पहलेकी हालतमें नहीं पहुँच गया, तब तक गाँवोंके जीवनको समाजवादी बनानेकी ओर ध्यान नहीं गया।

व्यक्तिगत खेतीके रहते उद्योगधंधेका समाजीकरण करके आगे बढ़ना बहुत जोखिमका काम था। क्योंकि कारखानोंके मजदूरोंको रोटी देनेवाले तो आखिर ये ही किसान थे। उन्हें अकेले जीवनसे प्रेम होनेसे अकेले भूखे मरनेकी भी उतनी चिन्ता नहीं होती। उनके धार्मिक तथा दूसरे मूढ़विश्वास हैजा, चेचक, महामारीके समयकी तरह दुष्कालके समयमें ढाढ़स बँधा सकते थे। लेकिन शहरके कारखानोंके समाजवादी कमकर उनसे अधिक जानने और समझने वाले थे। वे हर बातको भाग्यपर नहीं छोड़ सकते थे। अब असल समस्या थी—जिस प्रकार कारखानोंके मजदूरों, मशीनों, कच्चे माल आदिका इन्तजाम करके हम उपजका एक परिमाण निश्चित कर सकते हैं, क्या अनाजके बारेमें भी हम वैसी ही निश्चिन्तता प्राप्त कर सकते हैं? ऐसी निश्चिन्तता प्राप्त करनेके लिए हमें खेतोंमें भी विज्ञानकी सहायता लेनी

पड़ेगी। जहाँ पानी नहीं है, वहाँ दैवका भरोसा छोड़कर सिंचाईका प्रबन्ध करना होगा, नहरें और कलके कुएँ बनाने होंगे। खेतोंकी स्वाभाविक शक्ति तथा सेर-दो सेर गोबर आदिकी खादसे काम नहीं चलेगा। वहाँ वैज्ञानिक खाद निट्रेट और फोस्फेटका उपयोग करना पड़ेगा। चार अंगुल जमीन खुरचनेवाले हलोंसे बेड़ा पार नहीं होगा। इसके लिए हमें ट्रैक्टरकी जरूरत होगी, जो हाथ-हाथ गहरी जमीन खोदकर सभी तरहकी अवांछनीय घासोंको निकाल दे और नरम भूमिमें पौधेकी जड़ एक-एक-डेढ़-डेढ़ फुट भीतर घुस सके। इस प्रकार छोटे-मोटे सूखे—जिसका प्रभाव पाँच-सात इञ्च धर्ती सुखाने तक ही पड़ सकता है—से भी पौदोंको सूखनेसे बचाया जा सके। किसान बाबाआदमके जमानेसे चले आते कृषिविज्ञान हीपर अवलंबित न रहें, बल्कि कृषिकी हर प्रकारकी बीमारियों, हर प्रकारकी आपदाओंका संगठित रूपसे मुकाबला करें। जिस प्रकार जन-गणनासे काम करने वालोंकी संख्या निश्चित मालूम है, और यह भी मालूम है, कि उतने मुँहोंको कितने गेहूँ, कितने मांस, कितने मक्खनकी जरूरत होती है।

सोवखोज़ोंका प्रबन्ध सरकारके हाथमें था, और उनके बारेमें वह निश्चिन्त थी, लेकिन सोवखोज इतने काफ़ी नहीं थे, कि उनकी उपजसे सारी मजदूर जनताकी भूखकी आवश्यकता पूरी हो सके। वैयक्तिक किसानोंकी आमदनीका कोई निश्चय नहीं था। कभी सूखा पड़ जाता, कभी बाढ़ आ जाती, कभी टिड्डियाँ खेत चर जातीं, कभी खुद ही आलसके मारे या स्वार्थियोंकी बातमें आकर वह बहुतसे खेतको पर्ती छोड़ देते, यह अनिश्चिन्तताकी अवस्था वांछनीय न थी।

आर्थिक प्रश्नके साथ साथ एक और भी विचार था, जिसने खेतीको पंचायती करनेके लिए जननायकोंको प्रेरित किया। जब तक किसान अपने घर-द्वार, अपने हल-बैल, और अपने दस अंगुलके खेतको अलग संसार बनाये हुए हैं, तब तक उनकी सांस्कृतिक उन्नति नहीं हो सकती; नगर और गाँवका नागरिक और ग्रामीण भेद नहीं मिट सकता। दोनोंके दृष्टिकोणमें बराबर

अन्तर रहेगा। बाहरके विस्तृत जगत्का पूरा ज्ञान न होनेके कारण किसान बराबर कूप-मंडूक रहेगा। क्रान्तिके महान् उद्देश्यको वह समझ नहीं सकेगा, समाजवादके विश्वहितके महान् आदर्शको बूझ नहीं सकेगा। जरासी बातके लिए उसकी अज्ञानताका फ़ायदा उठाकर स्वार्थी क्रान्तिविरोधी लोग उसे जातिके नामपर, धर्मके नामपर, संस्कृतिके नामपर आचार-विचारके नामपर उत्तेजित कर सकेंगे।

किसानोंका अज्ञान, व्यक्तिगत स्वार्थसे चिपटे रहना, आदि बातें राष्ट्रके भीतरी खतरे हीका कारण नहीं बन सकती है, बल्कि जिन पूँजीवादी शत्रुओंसे सोवियत्-भूमि घिरी है, उन्हें भी सोवियत्के किसान प्रहार करनेके लिए मर्मस्थलसे रहेंगे।

गाँवोंमें एक और भी सोवियत्-शक्तिके लिए खतरेकी चीज मौजूद थी; अधिकांश किसान अपनी अयोग्यता और आलस्यसे अनाज कम पैदा करके शहरवालोंको भूखा रख सकते थे। लेकिन गाँवोंमें ऐसी श्रेणी मौजूद थी, जिसने विनष्ट जमींदारोंका स्थान ग्रहण किया था। जहाँ तक गाँवके आर्थिक जीवनका सम्बन्ध था, जमींदारोंके रहते समय इस धनिक किसान या कुलक श्रेणीका अत्याचार, षड्यन्त्र और दूसरोंके चूसनेकी नीति उतनी स्पष्ट न थी। जमींदारोंके अत्याचारके कारण कुलक भी कितनीही बार गरीब किसानोंका साथ देते थे। लेकिन अब जमींदारोंके हट जानेपर कुलकोंका स्वार्थ स्पष्ट दिखाई देने लगा। देशके आर्थिक जीवनके सब कोनोंमें समाजवादको पहुँचते देखकर उनको घबराहट हुई। वह चाहते कि उनके रास्तेमें समाजवाद रोड़ा न अटकाने पाये। गाँवोंमें ६० फ़ीसदी गरीब किसान थे, जिनके पास बहुत कम जमीन थी, जोतने-बोनेका साधन भी बहुत थोड़ा था। कुलक लोगोंके पास ज़्यादा जमीन थी। वह गाँवके गरीब किसानोंको मजदूरीपर रख सकते थे। उनकी आय अधिक थी, इसलिए किसीको कर्ज देकर, किसीको मजदूरीपर रखकर, किसीको खिला-पिलाकर, किसीपर और छोटा-मोटा

अहसान करके उनपर अपना प्रभाव डाल सकते थे; और सोवियत् सरकारकी समाजवादी नीतिमें बाधा डाल सकते थे।

यह अवस्था थी, जब कि सोवियत्के नेता स्तालिनका ध्यान गाँवोंकी ओर गया। १६२८में कलखोज्की योजनापर गर्मागर्म बहस हुई। लोगों ने पक्ष-विपक्षमें कहा। अन्तमें पार्टी और सरकारने कलखोज् की नीतिको स्वीकार किया।

नियम यह रखा गया था, कि समझा-बुझाकर पंचायती खेती और वैज्ञानिक सहायताके लाभोंको दिखला लोगोंको कलखोज्में आनेके लिए आकर्षित किया जाय। पहले साल (१६२६)के लिए जितनी खेतीको पंचायती करना था, उसका परिमाण कम रखा गया था। उसके साथ यही खयाल काम कर रहा था, कि जो थोड़ेसे लोग पहली बार आयेंगे, उन्हें यंत्रोंकी मदद मिलेगी, वैज्ञानिक खादका इस्तेमाल होगा और संगठित सामूहिक श्रमको जोश और लगनके साथ इस्तेमाल करनेका मौका मिलेगा। इस प्रकार कलखोज्में आये हुए लोग प्रत्यक्ष नफ़ेको देखकर सन्तुष्ट होंगे। उनके जीवनको बेहतर देखकर पड़ोसके लोग अधिक आकर्षित होंगे और वह धीरे धीरे कलखोज्में सम्मिलित होंगे। धीरे-धीरे कलखोज्में आनेसे एक और फ़ायदा रहेगा, कि सोवियत् सरकार ट्रैक्टर तथा दूसरे कृषि-सम्बन्धी यंत्रोंके बनानेवाले कारखानोंको तब तक स्थापित कर सकेगी। जितनी ही मशीनें अधिक उत्पन्न होंगी, उसीके अनुसार यदि कलखोज़ोंकी संख्या बढ़ेगी, तो लोगोंको कलखोजसे फ़ायदा ही फ़ायदा दिखलाई पड़ेगा।

कलखोजके संगठनका काम १६२८में ही शुरू हुआ था। उस वक्त एक तरफ़ कलखोजके पक्षपाती पक्षमें प्रचार कर रहे थे, दूसरी ओर कुलक और पुरोहित उसके विरोधमें लगे हुए थे। कलखोजकी सफलता पर कुलकोंको ग़रीबोंका खून चूस कर मोटे होनेका मौक़ा नहीं मिलेगा और कलखोजी जीवनसे किसानोंको ज़्यादा प्रकाश मिलेगा। फिर सूखा पड़नेपर पुरोहितोंसे वह पूजा करवाना नहीं पसन्द करेंगे, हर शादीग़मीपर पुरोहितों द्वारा भाग्यके लिए

सिफ़ारिश नहीं करवायेंगे। कल्खोज़की स्थापनाके विरोधमें पुरोहित-वर्ग कितना तैयार था, वह एक ईश्वरकी तरफ़से भेजे पत्र—जिसे उक्रइन्‌के ईसाई पुरोहितोंने १९३०में लोगोंमें प्रचारित किया था—के इस वाक्यसे मालूम होगा—

"मैं तुम्हारा स्वामी ईश्वर तुमसे कहता हूँ। यह समय ऐसा आ गया है, जब कि शैतान तुम्हें अपने जालमें फँसाना चाहता है। जो इस कल्खोज़के प्रलोभनमें नहीं पड़ेगा, वह बच जायगा। मैं कल्खोज़ी किसानोंको चन्द दिनोंमें बरबाद कर दूँगा, और उन्हें भी बर्बाद कर दूँगा, जो अपनी छातीपर क्रास नहीं पहनते।"

क्रास पहनना हर एक रूसी ईसाईके लिए उतना ही जरूरी था जैसा कि एक हिन्दुस्तानी ब्राह्मणके लिये जनेऊ।

१९२८ में तो कल्खोज़का प्रचार धीरे धीरे होता रहा, लेकिन उसकी सफलताको देखकर कार्यकर्त्ताओंको और उत्साह हुआ। उन्होंने जल्दीसे काम लेना शुरू किया और चाहा कि शीघ्रसे शीघ्र सभी किसानोंको कल्खोज़में भर्ती कर लिया जाय। इसके कारण कल्खोज़ियोंकी तादाद तो बढ़ गई, लेकिन उनके श्रमका संगठन नहीं हो सका। यद्यपि नियममें कहा गया था, कि खेतीको पंचायती बनाना चाहिए, साम्यवादी बनानेकी कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन लोगोंने जोशके मारे गाय-भेड़ ही नहीं, मुर्गी आदिको भी पंचायती बना डाला। यदि कल्खोज़में आतेके साथ वह जीवन किसानोंको प्राप्त होता, जो आठ-नौ वर्ष बाद हुआ, तो कोई हर्ज नहीं था। लेकिन वहाँ तो हर चीजका आरम्भ था। कल्खोज़ी जीवनके पूरा संगठित होनेमें अभी वर्षोंकी देरी थी; लेकिन उत्साही कार्यकर्त्ता उसी दिन किसानोंके छोटे-मोटे खाने-पीनेके अवलम्बको भी उनके पास रहने देना नहीं चाहते थे।

हर गाँवमें कुलक मौजूद थे। उनका स्वार्थ उन्हें मजबूर करता था, कि कल्खोज़में शामिल न हों, और जहाँ तक हो सके, उसकी सफलतामें बाधा डालें। उधर किसानोंमें जल्दीके कारण जो तकलीफ़ हुई, उससे कुछ

असन्तोष हो चला था। कुलकोंने उसपर आगमें घी छोड़ने का काम किया—कल्खोज वाले आखिर तुम्हारी गायको छीन ले जायेंगे, बैल तुम्हारे खूँटेसे खुल जायेंगे। सुअर तुम्हारे नहीं रहेंगे। अच्छा है, तुम लोग अक़लसे काम लो, जोई राम सोई राम। मारो, जो बिक सके, उसका पैसा बनाओ, नहीं तो अपनी कमाई अपने पेटमें तो जायेगी! कुलकोंने खुद अपना उदाहरण रखा। कुलकोंके पास खेत ज़्यादा थे। सरकार ज़्यादा खेतवालों पर ज़्यादा टैक्स लगाती थी। उनसे ज़्यादा अनाज वसूल करती थी। खर्चके लिए ज़्यादा मांस तलब करती थी। कुलकोंने आधेसे ¾ खेत अपने पर्ती छोड़ दिये 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। न ज़्यादा खेत बोयेंगे, न ज़्यादा अनाज सरकारको देना पड़ेगा। बैल गाय भी ज़्यादा रखकर सरकारसे क्यों लुटवाया जाय?

मंत्र चल गया। चाहे खरीदार हो या न हो। चाहे सब खर्च हो सके, या थोड़ा; लेकिन लगे लोग अंधा-धुंध जानवरों को मार-मारकर घरोंमें मांसका ढेर लगाने। पीतरको देखकर पावलने वैसा ही किया और पावलसे वान्याने सीखा। बहुत जल्द जङ्गलकी आगकी तरह यह बीमारी सारी सोवियत् भूमिमें फैल गई। आधेसे अधिक बैल, गाय, सूअर, भेड़, बकरी कुछ ही महीनोंमें खतम कर दिये गये। उसके बाद दूध, मक्खन और मांसका अकाल पड़ा। हाँ, उधर जब अधिकारी इस भयंकर कांडको रोक नहीं सकते थे, तो उनकी असमर्थताको देखकर कल्खोज़में आये किसानोंमें बग़ावत सी फैल गई। लोग ठेकोंमें रखे अनाजको खुद तौलकर और कभी-कभी अपने हिस्सेसे अधिक भी घर ले गये। कल्खोज् की गोशाला और घुड़सारोंमें दाखिल गाय, बैलों और घोड़ोंको भी निकाल ले गये। मालूम होने लगा, कि कल्खोज प्रथाका अब हमेशा के लिए खातमा हो गया।

इस अव्यवस्थाकी खबर सरकार, कम्युनिस्ट पार्टी और उसके सूक्ष्मदर्शी नेता स्तालिन्को मालूम होते देर न लगी। कहाँ भूल हुई, इसे भी वे तुरन्त समझ गये। २ मार्च १९३०को जल्दीबाज़ोंको फटकारते हुए स्तालिन्के

अपना मशहूर लेख "कामयाबीकी चकाचौंध" लिखा। इसका असर भी ऐसा ही हुआ। स्तालिनने कहा—जल्दी करना बुरा था। और अब उसका उपाय यही है, कि जो कल्खोजमें नहीं रहना चाहें, उन्हें लौट जाने देना चाहिए। यद्यपि इस लेखके फल-स्वरूप आधी कल्खोजी चिड़ियाँ फुर हो गईं, लेकिन जो बचे रहे, उनको अधिक संगठित करके काम करनेका मौक़ा मिला।

कुलकोंकी दुष्टताका प्याला लबरेज़ हो गया था। उन्होंने लोगोंको बहकाकर और ख़ुद भी जो इतना पशु-संहार किया—जिसकी कि पूर्ति करनेमें वर्षों लगे—और इतनी अव्यवस्था फैलाई, उसके लिए कुछ करना ज़रूरी था। सरकारने कुलकोंके खिलाफ़ वैसा ही कानून बना दिया, जैसाकि क्रान्तिके आरम्भके समय ज़मींदारोंके खिलाफ़ बना था। गाँवकी सोवियत्को अधिकार था, कि कुलकोंका पता लगाकर नाम घोषित करें और उनकी संपत्तिको ज़ब्त कर उन्हें दूर भेजनेके लिए पुलिसके हवाले करें।

गाँवकी सोवियत् बैठी, सभी बालिग नर-नारी जमा हुए। एक धनी किसानका नाम लिया गया—पैत्रोफ़् कुलक है। वह दूसरोंके जाँगरसे खेती कराता है। वह अधिक भूमि जोतता है। वह कर्जेपर रुपया देता है। वह सोवियत् शासनको दिलसे नहीं चाहता। दूसरेने अनुमोदन किया। सर्वसम्मतिसे घोषित हुआ, पैत्रोफ़् कुलक है। कभी-कभी किसी कुलकके लिए कुछ खींचातानी भी होती थी। कुलकने गाँवके कुछ आदमियोंका उपकार किया था, या उनसे विवाह-शादीका सम्बन्ध था, या उसके कुछ हित-मित्र परिवारके परिवारको दूर देश भेजनेसे असहमत थे। ऐसे लोगोंने चाहा कि उक्त गृह कुलक न घोषित किया जाय, छोटा वैयक्तिक किसान मान लिया जाय। लेकिन दो-चार आदमी सभाके मुँहको बन्द कैसे कर सकते थे? दूसरेने उठकर कहा—इसको पावलने एक फटा कोट दे दिया था। इसीलिए यह झूठ बोल रहा है। दूसरे ने कहा—कभी-कभी वह इसे बोतलमें शामिल कर लेता है, इसलिए प्यालेके दोस्तका पक्ष ले रहा

है। आखिर कुलक छिपा थोड़े ही रह सकता है। ग्राम-सोवियत्‌ने गाँवके ५—१० जितने हुए, उनको कुलक घोषित कर दिया। जिले या इलाक़ेके सोवियत्‌के पास मलिशिया (हथियारबन्द पुलीस) भेजनेके लिए खबर भेज दी। ५—५, ६—६ आदमियोंकी कमेटी बनाकर एक एक कुलकके माल-असबाब, ढोर-डंगरका चार्ज लेनेके लिए भेज दिया।

एक टोली कुलक पैत्रोफ़्के घर चली। गाँवके बूढ़े बच्चे तमाशबीन भी कुछ साथ हो लिये। शायद पैत्रोफ़्को पहलेसे भी कुछ खबर लग गई थी। घरके भीतर चीजें बड़ी सावधानीके साथ चुनी जा रही थीं। पैत्रोफ़्की स्त्रीने अपने घराऊँ वस्त्रोंका बक्स खोला। एकके ऊपर एक चार-चार, पाँच-पाँच घाघरे और चार-चार, पाँच-पाँच कोट पहने जा रहे थे। टोली पहुँच गई। "तवारिश पैत्रोफ़्! ग्राम-सोवियत्‌ने हमें आपकी चीजोंको सँभालनेके लिए भेजा है। आप अपने बदनके कपड़े तथा एक दो और, नक़द हो सो नक़द और रास्तेमें ले जाने लायक थोड़ा सा बिस्तरा बर्तन लेकर बाकी सब चीजोंको हमारे हवाले कर दीजिए। मलीशिया के सिपाही आ रहे हैं। वे आपको हमारे गाँव से दूर ऐसी जगह ले जायेंगे, जहाँसे फिर आप हम पर शनि-दृष्टि नहीं डाल सकेंगे और वहाँ आपको जीने खानेके लिए कामभी मिलेगा।"

पैत्रोफ़्को हफ़्तों पहलेसे इन बातोंकी कुछ-कुछ खबर थी, इसलिए धक्का कुछ सह्य हुआ।

कमेटी बैठ गई। एक आदमी कलम-दवात लेकर तैयार हो गया। एक आदमी बोलने लगा।

मर्दोंकी कमीज (पुरानी) ५
मर्दोंका कोट (पुराना).........................३
" " (नया)......................................२
औरतोंकी कमीज (पुरानी)........................४
औरतोंकी कमीज (नई)............................३

रंगीन रूमाल (रेशमी)	३
,, ,, (सूती)	३
लोहेके ट्रंक	४
लकड़ीके बक्स (बड़े)	२
,, ,, (छोटे)	२
बैल	५
घोड़े	४
गायें	६
सुअर	१०
भेड़ें	२५
मकान (दस कमरे दोतल्ला)	१
गोशाला	१
घुड़शाल	१
सूअर की खुभार	१

पेत्रोफ़की सब चीजोंको कमेटीने सँभाल लिया। बूढ़ा मिश्का बोल उठा—"अरे, पेत्रोवल्कया (पेत्रोफ़की स्त्री)ने तो ५ लहँगे और ४ कमीजें एकके ऊपर एक पहन ली हैं! और इतना बर्तन विस्तरा बाँध रखा है, कि दो गाड़ियाँ तो इन्हें ही लादनेको चाहिए।"

पंचोंका खयाल इधर नहीं गया था। उन्होंने देखा, सचमुच कुलकका लालच अभी भी उतना ही तेज है। निकितिना पंच-स्त्रीसे कहा गया कि देखो, "किसी स्त्रीके बदनपर दोसे अधिक कपड़े नहीं होने चाहिए और आदमी पीछे मन भरसे अधिक बोझा नहीं होना चाहिए"। बेचारे पेत्रोफ़के परिवारको यदि पहले यह मालूम होता, समय काफी मिलता, यह सोचनेके लिए कि किस चीजको ले चलें और किस चीजको छोड़ें! मलीशिया पहुँच गई थी। पंचोंका हुक्म हुआ—"घर से बाहर निकलो। ताला बन्द करेंगे।"

पञ्च अन्द्रई ने बाहर निकलते हुए कहा—"कलखोजके कार्यालयके लिए यह मकान अच्छा होगा।"

पेत्रोफ़् उनकी अधेड़ औरत, दो जवान लड़के, एक जवान लड़की, दो छोटे-छोटे बच्चे, एक बहू आठों व्यक्ति घरसे बाहर निकले। साथ जाने वाला सामान और कुछ बर्तन भाँड़े निकालकर द्वारपर रखे हुये थे। न जाने कितनी पीढ़ियाँ पेत्रोफ़की इस गाँवमें बीती थीं। उसके पूर्वजोंके न जाने कितने शव यहाँके कब्रिस्तानमें सोये पड़े थे। इस गाँवमें जन्मसे ही कितने उसके मित्र थे। सबको छोड़कर एक अनजाने देशमें जाना था, जहाँ कोई परिचित नहीं मिलेगा, जहाँ जङ्गलकी लकड़ियाँ काटनी पड़ेंगी, या पथरीली जमीनमें नहरें खोदनी पड़ेंगी। घरके लोगोंमेंसे कितने सिसकियाँ भर रहे थे। पेत्रोफ़ने अपनेको रोकनेकी कोशिश की, लेकिन गाँवके परिचितोंसे बिदा होते वक्त उसका गला भर आया।

गाँव वालोंको कुछ अफ़सोस तो हो रहा था। पंच भी इस करुणापूर्ण दृश्यसे कम प्रभावित न थे, लेकिन वह यह भी जानते थे, कि पेत्रोफ़ने ही गोशालाके प्रबंधक वान्याको माघ-पूसके जाड़ोंके दिनोंमें सिखलाया था—"गोशालामें बालू बिछा दो। बैलोंको रातमें गर्म रहेगा।" रातको बालू ठंडा हो गया। माघ-पूसका जाड़ा हड्डी तकको बर्फ़ बना देनेवाला। सबेरे वान्याने देखा, एक भी बैल खड़ा नहीं हो सकता। ५० में से ५ बैल जीते बचे। उनको यह भी मालूम था, कि पेत्रोफ़् हीने गाँवके कितने किसानों-को भड़का दिया था, और जब वह ठेकसे जबर्दस्ती अपना अनाज उठा लेनेके लिए पहुँचे, तो कम्युनिस्ट दावीदोफ़् उन्हें समझाने आया। उसने कहा "मत समझो, सोवियत् शक्ति खतम हो गई है। पीछे तुम्हें पछताना पड़ेगा। थोड़ा ठहरो। एक वर्षमें कलखोजी जीवनका लाभ तुम्हें मालूम होगा। कुलकोंकी बातमें न आओ।" क्रोधमें पागल हुए आदमियोंने अपने हितकी बात न समझी। दावीदोफ़्को अपनी समझमें उन्होंने मारही डाला था। एकपर एक न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ पेत्रोफ़् और गाँवके

दूसरे कुलकोंके भड़कानेसे हुई थी। जिन्हें याद करते ही लोगोंकी करुणा दूर हो गई। पंचोंने हाथ मिला विदाई देते हुए कहा—"साथी पेत्रोफ़्, आशा है, तुम वहाँ अच्छी तरह काम करोगे। और दो-तीन वर्ष बाद अपने हृदय-परिवर्तनको दिखलाओगे। फिर बहुत सम्भव है, सरकार तुम्हें अपने गाँव में आनेकी इजाजत दे दे।"

पेत्रोफ़् और उसके जैसे कितनेही कुलक-परिवार गाँवसे निकले। उनके साथ १० हथियारबन्द मलीशियाके जवान थे। कुछ घोड़े-गाड़ियोंपर सामान लदा हुआ था। छोटे बच्चे भी उनपर बैठे हुए थे। कुछ ही देरमें यह काफ़िला गाँववालोंकी आँख से ओझल हो गया।

पेत्रोफ़्के कपड़े-लत्ते गाँव के गरीबोंमें बाँट दिये गये।

अब गाँवमें रह गये थे, कल्खोजी किसान, और थोड़ेसे डेढ़ चावलकी अलग खिचड़ी पकानेवाले छोटे किसान।

* * *　　　　* * *

(२) कल्खोज़्का संगठन—कल्खोज़् क्या है ? सहयोग-समिति या पंचायत द्वारा खेती। आसपासके किसान इसीमें फ़ायदा समझ कर स्वेच्छापूर्वक एकत्रित होते हैं। वह एक समिति क़ायम करते हैं। जिसके नियम बने हुए हैं। फिर पदाधिकारियोंका चुनाव करते हैं। एक अध्यक्ष होता है, एक खेतों का प्रबन्धक होता है, एक बहीखाता रखनेवाला होता है। सौ-सौ डेढ़-डेढ़ सौ काम करनेवाले स्त्री-पुरुषोंकी सम्मिलित या अलग-अलग टोलीपर एक एक ब्रिगादीर चुना जाता है। अपने अपने ब्रिगाद या टोलीकी देखभाल करना इसका काम है। फिर रसोइया, लड़कोंकी देख भालके लिए दाई चुनी जाती हैं। लोहार, बढ़ई, धोबी, गाय, सूअर, घोड़े, मुर्गियों के अलग-अलग रखवाले चुने जाते हैं। ब्रिगेडको भी आठ-आठ, दस-दसकी छोटी-छोटी टुकड़ियों या गोलोंमें बाँटा जाता है। गोलके भी सरदार या सरदारिनें होती हैं। हाँ, ब्रिगेडियर (ब्रिगादीर) और गोलके सरदारमें इतना

फ़र्क है, कि जहाँ निरीक्षणके कामकी अधिकता के कारण ब्रिगेडियर .खुद काम नहीं कर सकता, वहाँ गोलका सरदार .खुद भी कुदाल लेकर साथियोंके साथ खेतमें जुटा रहता है, और कामके मुताबिक उसे तनख्वाह मिलती है। कलखोजके अधिकारियोंमें निश्चित तनख्वाह पाने वाले हैं—अध्यक्ष, प्रबंधक, बही-खाता रखनेवाला और ब्रिगेडियर। उन्हें एक दिनके वास्ते डेढ़ दिनकी मजदूरी मिलती है।

कलखोजोंके सचालनके पहले नियम २ मार्च १९३०में बने थे। ५ सालके तजर्बेके बाद फिर सारी सोवियत्के कलखोजोंके प्रतिनिधियोंकी मास्कोमें बैठक हुई और १७ मार्च १९३५ को नया विधान बना। कलखोज जीवन और उसके कामका कुछ परिचय हमें उस आदेश-पत्रसे मालूम होगा, जिसे कि स्तारोसेल्ये कलखोजके किसानोंने अपने प्रतिनिधि मारिया देम्येन्को को मास्को जाते वक़्त दिया था—

"हमने तुम्हें—अपने सर्वोत्तम उदारनिक् (तूफ़ानी कमकर) को द्वितीय कलखोज उदार्निक कांग्रेसके लिए प्रतिनिधि चुना है। तुमने इसके लिए जान लड़ाकर काम किया, इसलिए तुम हमारे विश्वासकी पात्र हो। कलखोजके ८००से अधिक मेंबरोंने तुम्हें वोट दिया और ९ उम्मेदवारोंमेंसे तुम निर्वाचित हुई।

"१. मास्कोमें जाकर हमारे कलखोजकी तरफ़से यह फूलोंका गुच्छा लेनिन्की समाधिपर रखना।

"२. साथी स्तालिन्को हमारा प्रेम और सम्मान कहना। और हमारी सफलताओंके बारेमें भी कहना—पिछले वर्ष १३'६ सेन्तनेर (१ सेन्तनेर = २२० पौंड = २ मन २६ सेर २ छटांक) प्रति हेक्नर (१ हेक्नर = २'४७११ एकड़) यानी १ एकड़में कोई १५ मनसे अधिक गेहूँ, पतला गेहूँ ८'८ सेन्तनेर, जौ ११'८, बकला ११'१ पैदा किया। और मारिया! तुम्हारे विभागमें प्रति हेक्नर ४६० सेन्तनेर चुकन्दर। हमने ८०० सेन्तनेर अनाज सरकारको बेचा। और इसके अलावा अपने

हिस्सेका जो अनाज देना था, उसे भी सरकारको दिया। हमने अपने कल्खोजियोंको प्रतिदिनके कामके बदलेमें ३ किलोग्राम (१ किलोग्राम = २' २०४६ पौंड = १ सेर) अनाज और पैसा भी दिया। राजको जितने बछड़े देने थे, उनसे सवाया दिया। जितने बछड़े तैयार करने थे, उनसे ड्योढ़े तैयार किये। चुकन्दरकी खेतीके लिए हमने ३०० हेक्टरकी गहरी जुताई की। हमने बीजोंके जमनेकी परीक्षा की और देखा कि हमारे जौ ६२ सैकड़ा और बकला ६७ सैकड़ा जमते हैं। हमारे ढोर अच्छी अवस्थामें हैं और उनकी निगहबानीके लिए हमने अपने सबसे अच्छे आदमी नियुक्त कर रखे हैं। हमारी सब मशीनरी मरम्मत करके ठीक तौर से रखी हैं। हमने अपने खेतों में २००० टन साधारण खाद डाली है, १८० सेन्तनेर सुपर-फोसफेट और २४० सेन्तनेर राख डाली है। हमारे यहाँ कृषियंत्रका एक स्वाध्याय-केन्द्र है और दो राजनीति-अध्ययनके, जिनमें कल्खोज़के उत्साही कार्यकर्त्ता अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। औरतोंके लिए भी दो राजनैतिक स्वाध्याय-केन्द्र हैं।

"३. जनताके युद्ध-मंत्री (वोरोशिलोफ़्)से कहना, कि हम अपनी महान् जन्मभूमिकी रक्षाके लिए तब तक तैयार हैं, जब तक कि हमारे शरीरमें एक बूँद खून रहेगा।

"४. कांग्रेसमें आये हुए दूसरे प्रतिनिधियोंका हमारे नामसे अभिनंदन करना और उनसे कहना कि हमारे लिए यह आसान काम नहीं था, जो कि कल्खोजोंमें अव्वल नंबर होने का हमें सौभाग्य मिला; क्योंकि समाजवादी कृषिकी होड़में अकेला हमारा ही कल्खोज नहीं था।

"५. उनसे यह भी कहना कि हम तबतक दम नहीं लेंगे, जबतक कि हमारे जिलेमें एक भी पिछड़ा हुआ कल्खोज है। हमें तभी सन्तोष होगा, जब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण सोवियत्-संघ पर समृद्ध कल्खोज फैले हुए हैं। हम प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि हम चेल्युरिकन् कल्खोजोंको अपने बराबरपर लानेके लिए उनकी मदद करेंगे।

६. मास्कोकी फैक्टरियोंमें जाना और कमकरोंको हमारे अभि-नन्दन देना। उनसे कहना कि हम श्रमजीवियोंसे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं। मास्कोके श्रमजीवियों और बुद्धिजीवियोंसे कहना कि वह हमारे इस प्रयत्नमें और मदद दें: जिसमें कि गाँव संस्कृत हो जायँ और गाँव और नगरका भेद दूर हो जाय। उनसे कहना कि हम अपनी प्रयोगशालामें बीजोंके जमनेकी परीक्षा १५ फ़रवरी तक खतम कर देंगे और यह भी कि किसान और मजदूर संवाददाताओं और पार्लियामेंटके सभासदोंकी मददसे हम अपने ब्रिगेडोंका लेखा लेंगे, कि वह बसन्तकी जुताईके लिए कितने तैयार हैं। हमने निश्चय किया है, कि ८ कामके दिनोंमें बसन्तकी जुताई खतम कर देंगे और ३ दिनमें चुकन्दरकी जुताई भी। हम प्रतिज्ञा करते हैं, कि मशीनको और ठीकसे इस्तेमाल करेंगे। सुपर-फोस्फेट तैयार करेंगे। तेज जहर तैयार-कर कीड़ों और फ़स्लोंके दूसरे दुश्मनोंको मारेंगे। अपनी प्रयोगशालाके जरिये हर एक कल्खोजी किसानको कृषिके गुर बतलायेंगे और सभी ब्रिगेडियर और गोल-सरदारसे प्रार्थना करेंगे, कि वह प्रयोगशालाके काममें क्रियात्मक रूपसे भाग लें। हम ब्रिगेडियरों और गोल-सरदारोंके टेकनिकल ज्ञानकी परीक्षा करवायेंगे। चुकन्दरको २-३ दिनमें जोतना, ४ से ५ दिनमें घनेकी छँटाई करना खतम करेंगे। सब मिलाकर ४ बार हम चुकन्दरको जोतेंगे। हम चुकन्दरकी छँटाई ऐसी करेंगे, कि हर एक हेक्टरमें १ लाख १० हजार कंद हों। प्रतिज्ञा करते हैं, कि हम उस साम्यवादी होड़में पूरा भाग लेंगे, जो कि कृषि-सचिवकी पताका और उक्रइनकी केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिकी पताकाको जीतने के लिए होगी। दूसरे कल्खोजोंको भी जो देंगे, कि वे भी ऐसा करें। हम पेत्रोव्स्की-कल्खोज (कामेन्स्की जिला) और बुदूयोन्नि-कल्खोजको साम्यवादी होड़के लिए ललकारते हैं, और साम्यवादीपत्र-कल्खोज (ओल्शंको जिला) की ललकारको स्वीकार करते हैं; और इसके लिए 'प्रोले-तर्स्की प्राव्दा' समाचार-पत्र तथा जिले के समाचार-पत्रको इस होड़का निर्णायक मानते हैं।

२

"७. हमारे कल्खोजके नामसे चुकन्दर पैदा करनेवाले जिलोंके कल्खोजों के प्रतिनिधियोंको न्योता देना कि यदि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें, तो ७ नवम्बर (लाल क्रान्तिका दिन)के उत्सवमें वह हमारे यहाँ आयें।

"८. नये नियमोंके बारेमें होने वाली बहसमें क्रियात्मक रूपसे भाग लेना।

"९. दूसरे आगे बढ़े हुए कल्खोजोंके तजर्बोंको नोट करके ले आना, जिसमें कि हम उनके तजर्बोंसे फ़ायदा उठा सकें।"

मरिया देम्चेंको इस आदेश-पत्रको लेकर फ़रवरी १९३५को मास्को गई। कल्खोजवाले इतने हीसे सन्तुष्ट नहीं थे। वे कांग्रेसकी कार्यवाहीको अपने रेडियोपर बड़े ध्यानसे सुनते थे। इसके अतिरिक्त वह अपने सबसे तेज घोड़ोंको प्रतिदिन चेर्कास्सी इसलिए भेजते थे, कि छपनेके साथ ताज़ा अखबार गाँवमें लाये जायें।

मरिया देम्चेंकोने चुकन्दर पैदा करनेमें बड़ी सफलता प्राप्त की थी। उस साल उसने प्रति-हेक्तर ४६८ सेन्तनेर पैदा किया था। स्तालिनने उससे कहा—"यदि पिछले साल तुमने प्रति हेक्तर ४६८ सेन्तनेर पैदा किया, तो वचन दो कि इस साल ५०० सेन्तनेर पैदा करोगी।"

मरिया थोड़ी देर तक सोचने लगी और फिर बोल उठी—"बहुत अच्छा, ५०० सेन्तनेर, मैं वचन देती हूँ।"

जब मरिया देम्चेंको लौटकर आई तो एक तरफ़ कांग्रेसकी सफलताकी खबर सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन दूसरी ओर सारे गाँवको यह भी चिन्ता हुई, कि हमें इस साल प्रति हेक्तर (४ बीघे) ५०० सेन्तनेर (प्रायः १३०० मन) चुकन्दर पैदा करना पड़ेगा।

मरियाने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

सोवियतके हर एक कल्खोजमें एक प्रयोगशाला या लेबोरेटरी होती है, जिसका काम है, कल्खोजकी उपज बढ़ानेमें भाग लेना तथा मिट्टी और हानिकारक कीड़ों आदिकी समस्याको हल करना। कृषि और पशुपालनके ज्ञानको

व्याख्यानों, स्वाध्याय-केन्द्रों, प्रदर्शनों और जलूसों द्वारा बढ़ाना । ट्रैक्टर-ड्राइवर, यंत्रशिल्पी (मिस्त्री) और आविष्कारकोंके विशेष अध्ययनका प्रबंध करना । अकाल, पौदोंकी बीमारी और हानिकारक घास के दूर करने का उपाय सोचना, खेती-सम्बन्धी होड़का संचालन करना, बूढ़े चतुर किसानों के अनुभवोंको एकत्रित और नियमबद्ध करना । बीज, मिट्टी, खाद और कृषि की उपजकी परीक्षा करना, मौसम और फ़सल का लेखा रखना, फ़सल और पशुओंकी हर एक अवस्थाका हिसाब रखना, मौसमकी खराबी या टिड्डी आदिके खतरेसे लोगोंको सजग करना । काम या बीजमें खराबी पानेपर प्रबंध-समितिको इसकी सूचना देना, सबसे अच्छे काम करने वाले ब्रिगेडोंके तजर्बोंको रेखा-चित्र तथा दूसरे प्रकारसे दूसरोंके ज्ञानगोचर करना । कलखोजके किसानों की छोटी छोटी मंडलियोंको आस पासके श्रेष्ठ कलखोजोंको देखने के लिए प्रबंध करना । कलखोजकी भूमिकी मिट्टीको उसकी रासायनिक बनावट और आकारको लेख और नक़शेके रूपमें अंकित करना तथा किस खेतके लिए कौन फ़सल या खाद उपयुक्त है, इसका निश्चय करना । घास-भूसे-की विशेष तौरसे रासायनिक परीक्षा करके उनको अधिक पुष्टकारक बनाना तथा उनकी कमी-बेशीका इन्तजाम सोचना । ढोरोंके खिलानेके ढंग और नस्ल अच्छी बनानेके तरीक़ेपर ग़ौर करना । ढोरोंकी बीमारीको देखते रहना, प्रत्येक गायके दूध और मक्खनके गुण और परिमाणका नाप रखना । मशीनोंके टूट-फूटकी परीक्षा करना, जिसमें कि आगे ग़लतियाँ कम हों । नई मशीनों के इस्तेमालका ढंग सीखना ।

प्रयोगशालाके लिए हर एक कलखोज़में दो-तीन या अधिक कमरे होते हैं । एक खास प्रबन्धक रहता है । सब लोग उसके काममें सहायता करते हैं । प्रबन्धक अपने विषयका काफ़ी ज्ञान रखता है ।

ढोरोंकी ताक़त या दूधपर खूराकका क्या असर होता है, तथा उनकी रक्षा ठीकसे होती है या नहीं, इस काममें गाँवके छोटे लड़के भी मदद देते हैं । एक-एक लड़केको एक-एक गायपर निगाह रखनेका काम दे दिया जाता

है। वह रोज खेलनेकी तरह शाम-सबेरे अपनी-अपनी गायको भी देखने जाता है। मोटी, दुबली देखकर गायोंके ऊपर नियुक्त आदमीसे पूछ-ताछ करता है—"आज कल हमारी गाय दुबली होती जा रही है। दूध नहीं देती।" इसकी खबर वह प्रयोगशालामें पहुँचाता है, और बड़ी चिन्ताके साथ कोई उपाय जानना चाहता है। किसी लड़केकी गायने दूधमें या स्वास्थ्यमें बड़ी तरक्की की, तो लड़केको इनाम मिलता है।

चूहे तथा खेतीको नुकसान करने वाले और जानवरोंके मारनेपर सरकार की तरफसे इनाम मुकर्रर है। प्रति चूहा २ या ३ पैसा पड़ता है। यह काम भी लड़कोंके ही हाथमें है। वह पानी ढो-ढोकर बिलोंमें डालते हैं। या धुआँ सुलगाते हैं। जब चूहा भागता है तो डंडेसे वहीं खतम कर देते हैं। उनके लिए खेलका खेल और पैसेका पैसा। पौदों को खा जानेवाले पतिंगोंको मारनेपर भी इनाम मिलता है। यह इनाम तोलेके हिसाबसे मिलता है। एक एक गाँवमें मन मन भर मरे भुनगे और पतिंगे इस प्रकार जमा हो जाते हैं।

* * * * * *

(३) ग्राम-सोवियत्—सोवियत्का अर्थ है पंचायत या शासन करनेवाली पंचायत। सोवियत्-संघका सारा शासन सोवियत् या पंचायत द्वारा होता है। हर एक गाँवके १८ वर्षके ऊपरके नर-नारी अपने गाँवके शासनको चलानेके लिए पंच चुनते हैं। पंचोंकी संख्या गाँवके छोटे-बड़े होने पर निर्भर है। पंच आपसमें एकको अध्यक्ष चुनते हैं, दूसरेको मंत्री, तीसरेको हिसाब रखनेवाला। इसी तरह कार्यकारिणीके दूसरे पदाधिकारी चुने जाते हैं।

उदाहरणार्थ कोमिन्तर्न-कल्खोजकी सोवियत्के ५७ मेंबर हैं। इनके अतिरिक्त १२ उम्मेदवार भी इसलिए चुने गये हैं, कि कोई जगह खाली होनेपर उनमेंसे लिये जायँगे। इन ६९ व्यक्तियोंमें २८ औरतें हैं। इन मेंबरोंको कई विभागोंमें बाँटा गया है।

विभाग			पंच	स्वयंसेवक
कृषि और खेत	..	..	६	११
पशुपालन	..	..	६	१४
व्यापार	..	..	७	१०
शिक्षा और संस्कृति	..	..	७	१३
रोशनी, सफ़ाई	..	..	७	१२
अर्थ ..	..	..	७	१३
यातायात	..	..	७	१३
सड़क ..	..	..	७	१०
ग्राम-रक्षा	..	..	६	१४
क्रान्तिकारी कानून (न्याय)		..	६	१२
स्वास्थ्य	..	..	७	१०

स्वयं-सेवक पंचायतके सदस्य नहीं हैं। इसको देखनेसे मालूम होगा कि ग्राम-सोवियत् सूक्ष्म रूपमें सारे देशकी सोवियत्का प्रतिरूप है।

याद रखना चाहिए कि हर कलखोज-गाँवमें ग्राम-सोवियत् और कलखोज-प्रबंधक-समिति दो अलग-अलग चीजें हैं। सोवियत्का मुख्य काम शासन करना है; और समितिका काम है खेतीका संचालन करना। सोवियत्का सारा खर्चा ऊपरकी सरकारसे आता है; और समितिका अपने गाँवसे, अपने पैदा किए हुए धनसे।

जैसे एक गाँवकी सोवियत् है, वैसे ही उसके ऊपर इलाक़ेकी सोवियत् होती है। फिर जिलेकी सोवियत्, फिर प्रजातंत्र या प्रान्तकी सोवियत् होती है; और फिर सारे सोवियत्-संघकी महा सोवियत्, जिसके जातिक-सोवियत् और संघ-सोवियत् दो भवन हैं।

ग्राम-सोवियत्के आय-व्ययके लिए हम यहाँ स्तारोसेल्येका १९३५ का बजट देते हैं—

आय

जिला-सोवियत्से		२७,३४० रू०
ग्राम-कर से		२५,८०० "
स्वतन्त्र किसान	२,०००	
कल्खोज् "	२३,८००	
कल्खोज्से साधारण दान		४,३०७ "
कल्खोज् किसानोंसे		१८,००० "
बाजारसे		८०० "
सिनेमा आदिसे		२,५०० "
वोटके अधिकारसे वंचित		७५० "
गृहनिर्माण और उद्योगसे		१,५०० "
सांस्कृतिक कर		४,५०० "
कर्जमें सूद		२५,००० "
	योग	९०,४९७ रू०

व्यय

स्कूल पर		७८,८७० रूबल
अध्यापकोंका वेतन	६३,६१३ रू०	
किन्डरगार्टन अध्यापक	२,१२० रू०	
(सहायता)		८,०६५ रू०
शासन-खर्च		३,५६६२ ०
	योग	९० ४९७ रू०

ग्राम-सोवियतके पदाधिकारियोंमें अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष दो ही वैतनिक हैं, बाकी सब अवैतनिक। न्याय-विभाग गाँवके फौजदारी-दीवानी (एक तरह दीवानी मुकदमोंका अभावसा है। सिर्फ घर-बारकी चीजें और मकान लड़केको मिलता है और उसीके लेन-देनके सम्बन्धमें कोई झगड़ा हो सकता है) मुकदमोंको देखता है। हर मुकदमेके लिए ३ पंच मुकर्रर होते हैं; जो एक साथ बैठकर मुकदमेको सुनते और उसका फैसला करते हैं। भारी मुकदमें ऊपरकी अदालतोंमें चले जाते हैं।

* * *

(४) गाँव समृद्ध—कलखोज्-प्रथाने सोवियत सबके गाँवोंके जीवन और आकार-प्रकारमें भारी परिवर्तन किया है। खेतीके कामके लिए बने हुए मकानोंपर २५, ८०६ लाख रूबल १९३३में खर्च किये गये और १९३६में उसी कामपर ४३,४१८ लाख खर्च हुए। स्कूल, अस्पताल, सांस्कृतिक-भवन, वाचनालय, क्रीड़ा-क्षेत्र, प्रसूति-गृह, स्नानागारकी इमारतें वहाँ बन रही हैं। द्वितीय पंच-वार्षिक-योजनामें गाँवोंके स्कूलोंमें पढ़ने वाले विद्यार्थियोंकी संख्या १,६८,३४,००० से २,२१,१४,००० हो गई। नाट्यशाला और सर्कस १८,०३५२ की जगह ५७,०४०-हो गये। चलते फिरते और स्थायी सिनेमोंकी संख्या १८,२४०से५६,५२० हो गई। १९३३में स्थायी शिशुशालायें ३,५१,००० थीं और १९३७में ७,१३,८०० हो गईं। क्लब सांस्कृतिक-भवन वाचनालय आदि ३१,७३१ से ५७,५६६ हो गये। अस्पतालोंमें १,५१,६०० चारपाइयोंकी जगह १,८३,३०० हो गईं। प्रसूतिगृहोंकी चारपाइयाँ २४,८६१से २५,८६५ हो गईं। स्मरण रखना चाहिए कि यह अन्तर सिर्फ चार वर्षोंमें हुआ है।

बहुतसे कलखोजी गाँवोंमें टेलीफोन और डाकखाने हैं। रेडियोसे खाली गाँवका तो मिलना मुश्किल है। कलखोजवाले सरकारके अलावा खुद भी स्कूल, अस्पतालके ऊपर खर्च करते हैं। १९२९में उन्होंने १०

करोड़ रूबल खर्च किये थे और (१९३७में) २ अरब १२ करोड़ ३१ लाख।

सोवियत् गाँवोंके बारेमें स्तालिनने कहा—"हमारे गाँवोंकी शकल और भी बदल गई है। पुराना गाँव—जिसमें केन्द्रीय स्थानपर गाँवका गिर्जा, और उसकी बगलमें पुलीस, पुरोहित और कुलकके सबसे अच्छे घर और फिर खंडहर, और फूसकी झोपड़ियों वाले किसानके घर—अब लुप्त होता जा रहा है। उसकी जगह अब नया गाँव ले रहा है, जिसमें सार्वजनिक भवन, क्लब, रेडियो, सिनेमा, स्कूल, पुस्तकालय, बच्चाखाना, ट्रैक्टर, कंबाइन और मोटरें दीख पड़ती हैं।"

बहुत से कल्खोजी गाँव इतने स्वच्छ और समुन्नत हैं, कि उनका मुकाबला जारशाहीके कितने ही शहर भी नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ किर्सानोफ् जिले (वोरोनेज् प्रान्तके) लेनिन-कल्खोजको ले लीजिए। यह कल्खोज अपने काममें बहुत आगे बढ़ा हुआ है। इसके स्तखानोवी सदस्योंमें ४को सरकारी पदक प्राप्त हैं। यहाँ बिजली पैदा करनेके लिए अपना पावर-स्टेशन है, मोटरखाना और उसकी मरम्मतके लिए वर्कशाप है। अश्वपालन और शूकरपालनका अच्छे पैमानेपर इंतिजाम है। लकड़ी चीरने का कारखाना और चर्बी-अँचारकी फैक्टरी है। मोची और दर्जीके कामकी दूकानें हैं। ग्राम-पंचायतके दोतल्ले सुन्दर घर हैं। एक क्लब है, जिसमें एक सिनेमा-हाल है। एक हाई स्कूल है। एक वयस्कोंके लिए स्कूल है। कई बच्चाखाने हैं। एक पुस्तकालय और वाचनालय है। एक रेडियोका स्टेशन है, जिससे खबर भेजी भी जा सकती है। एक हजामतखाना है। भोजनागार और अतिथि-आश्रम भी है। एक प्रसूतागृह, एक सांस्कृतिक उद्यान और एक बड़ा सा क्रीड़ा-क्षेत्र है।

* * * * * *

यहाँ हम कुछ कल्खोजी गाँवोंका विशेष विवरण देते हैं, जिससे पाठकोंको मालूम होगा कि सोवियत् गाँवोंमें क्या हो रहा है।

(क) कालिनिन्-कलखोज् (मास्को प्रान्त,)—इसके १६५ सदस्य हैं। १६३७में आमदनी २० लाख रूबल हुई थी; जिसमेंसे २ लाख रूबलको गाँवने घर बनाने के लिए अलग रख दिया। वे एक बड़ा प्रासाद बनाना चाहते हैं, जिसमें ग्राम-सोवियत्, कलखोज्-प्रबन्ध-समिति, क्लब और पुस्तकालय के अलग-अलग मकान होंगे। एक बहुत भारी हाल होगा, और इसके अतिरिक्त जाड़े में साग-भाजी बोने के लिए काँचका एक गर्म-घर भी होगा।

हालमें पाँतीसे बने कुटीरोंको देखकर यह समझना मुश्किल है, कि २० साल पहले इस गाँवकी क्या हालत थी। अगर आप किसी बूढ़ेसे पूछें, तो मालूम होगा, उस वक़्त ६० घर थे। ४१२ एकड़ जमीन थी, जिसमें १४७ एकड़ तो ३ कुलकोंके हाथमें थी। गाँवकी सराय और लकड़ीखाना भी कुलकोंके हाथमें थे। ५० परिवारोंके पास कोई खेत न था। उनके अधिकांश व्यक्ति नौकरीकी तलाशमें शहरमें घूमते थे। आधेसे अधिक व्यक्ति निरक्षर थे, और बाकी लोगोंका भी ज्ञान क-खसे अधिक नहीं था।

आज गाँवमें एक भी निरक्षर ही नहीं है, बल्कि गाँवके पुस्तकालयमें आप गोर्की, पुश्किन, नेक्रासोफ़, रोम्याँरोलाँ, फ़ॉस्टवांगेर, विक्टर ह्यूगो, जैक् लण्डन, थ्योडोर, ड्राइसेर आदि लेखकोंके ग्रन्थ पायेंगे। गाँवमें एक नाटक-मंडली और संगीत-मंडली है।

यह कलखोज् मुख्यतया तरकारीकी खेती करता है, और कृषि-विज्ञानके तरीकों और नई मशीनोंकी मददसे ४०० एकड़में ८ लाख रुपये (प्रति एकड़ २०००)) प्रति वर्ष पैदा करनेमें सफल हुआ है। जाड़ेके दिनोंमें गर्म घरोंमें तरकारीकी फ़सल होती है। अधिकांश भूमि ४ महीनेके लिए सफ़ेद बर्फ़के नीचे दब जाती है। इसके लिये कलखोज़ने ऊन साफ करनेका कारखाना बना रखा है। जाड़ेके दिनोंमें किसान उसमें काम करते हैं। १६३६ में शूकर-पालनका काम भी शुरू किया गया, और १६३७के अन्तमें वहाँ ५५ सूअर हो गये।

पिछले साल कल्खोज़के किसानोंको प्रति कार्य-दिनके लिए २० रूबल और ६५ कोपेक (६ रुपये से ऊपर) नक़द और २५ किलोग्राम् (प्रायः २५ सेर) तरकारी मिली। इतने अधिक परिमाणमें उपपन्न तरकारीको क्या किया जाय, यह भी प्रश्न उनके सामने आया। बुखानोफ़-परिवार—जिसमें पति-पत्नीने मिलकर पिछले साल ४८३ कार्य-दिन काम किया—को कलखोज़से १० हज़ार रूबल (४५००रु०से अधिक) नक़द और १२००० किलोग्राम (३०० मन) तरकारी आलू मिले। इसके अतिरिक्त उनके पास है वैयक्तिक पिछवाड़ेके खेत, एक गाय, सुअर और मुर्गीकी भी आमदनी हुई। दो साल पहले तक बुखानोफ़की टूटही मड़ैया चली आती थी अब उसकी जगह नया पक्का बड़ा सा मकान है, जिसमें कई कमरे हैं। नई-नई कुर्सियाँ और मेजें रक्खी हुई हैं।

(ख) चपायेफ़्का-कल्खोज़् (उक्राइन्, पोल्तावा प्रान्त)—क्रान्तिके पहले इस गाँवका नाम था बोगुसास्लोबोद्का और यह एक पोलिश बड़े जमींदार बोगाज़ाकी सम्पत्ति थी। उस वक़्त यहाँके किसानोंकी जो दयनीय अवस्था थी, उसे अब भी सीमा पारकर चन्द ही मीलोंपर पोलैंडके गाँवोंमें देखा जा सकता है। लोगोंने पुराने अत्याचारोंको स्मरण कर जमींदारका नाम गाँवके साथ रखना नहीं चाहा, इसलिए लाल-क्रान्तिके बहादुर सेनानायक चपायेफ़का नाम अपने गाँवको दिया।

पिछले साल १९३६की अपेक्षा कल्खोज़की आमदनीमें बहुत बढ़ती हुई। प्रति कार्य-दिनके वेतनमें मिलनेवाला अनाज दूना हो गया। नक़द रुपया भी अधिक मिला। इसके सिवा अपनी गाय, सुअर मुर्गीकी आमदनी तथा पिछवाड़ेके खेतकी आमदनी। चपायेफ़काके किसानोंकी आमदनीका अन्दाज उनकी खरीदोंसे आप लगा सकते हैं—५ व्यक्ति (बच्चोंको लेकर) का प्रिस्तूपा एक साधारण किसान-परिवार है। उसने १९३७में १३१२ कार्य-दिन कमाये। हजारों रूबल उन्होंने कपड़ेपर खर्च किये। लड़की और दो पुत्रोंके सिर्फ़ जूते और मोज़ेपर १६२० रूबल खर्च हुए। याद रखना चाहिए

कि क्रान्तिसे पहले यहाँके किसान छाल या रस्सीके-घरके बने चप्पल पहना करते थे।

उसी गाँवके दूसरे कलखोर्जा लोहार जखरकुजेल्नीको ले लीजिए। उसके घरमें भी ५ व्यक्ति हैं। पिछले जाड़ेमें उन्होंने ५ जोड़ बूट, २ ओवरकोट और ३ सूट (पहननेका सारा कपड़ा) खरीदे। इसके अतिरिक्त एक नया पलंग, कुछ कुर्सियाँ, एक आलमारी, तथा कुछ घरके कामकी चीजें खरीदीं।

लोगोंके भोजनमें गेहूँका आटा, माँस, मक्खन, अंडा, मलाई, दूध, शहद, फल और तरकारियाँ हैं। साथ ही शहरकी मिठाइयाँ, मिश्री, हल्वा टिनकी मछली भी गाँवके भंडारमें खूब बिक रही हैं। इनकी बिक्री कितनी तेजीसे बढ़ी है, इसे आप वहाँके भंडारकी निम्न चीजोंकी बिक्रीसे समझ सकेंगे—

	१९३५	१९३६	१९३७
चीनी और मिश्री - - -	२१,०४० रू०	८३,५९१ रू०	१,२६,३६२ रू०
बिस्कुट कहवा आदि - -	२५,४८४ ,,	३६,५७० ,,	६३,५६० ,,
मकरोनी सेंवई आदि - -	३,६६८ ,,	२१,०७० ”	३२,०६४ ,,
सूखी और टिनकी मछली	१०,३९३ ,,	१५,८६४ ,,	१७,७७५ ”

भंडारमें शराब भी बिकती है। १९३७में उसकी बिक्री १९३६की अपेक्षा १८ सैकड़ा १९३५की अपेक्षा ६८ सैकड़ा अधिक हुई। साथ ही हल्के दर्जेकी कड़ी शराब वोद्‌काकी बिक्री कम हुई। ऊँची किस्मके तम्बाकू और सिगरेटकी बिक्री १९३५में १७,७२८ रूबल थी, १९३७में वह ३६,१०५ हो गई। पिछले साल पहलेकी अपेक्षा गाँव वालोंने धोनेका साबुन ड्योढ़ा और खुशबू तथा खुशबूदार साबुन दुगुना खरीदा।

कल्खोज़की नाट्यशालामें १००० आदमियोंके बैठनेकी जगह है। पिछले साल दिसम्बरमें ६ बार फिल्म दिखलाये गये हैं। गाँवकी नाटक-मंडलीने

पिछले दिसम्बरमें ४ नाटक खेले और कितनी ही बार गाँवके संगीत-समाजने संगीत-बैठक की।

चपायेफ़काके पास एक अच्छा क्रीड़ा-क्षेत्र है, जिसमें ५००० आदमियोंके बैठनेका इन्तजाम है। फुटबाल, वालीबाल, टेनिस आदिकी टोलियाँ हैं। जाड़ोंके दिनोंमें जब क्रीड़ाक्षेत्र बर्फ़से ढँक जाता है, तो लोग स्केटिंग करते हैं। यहाँके सभी १०६० घरोंमें रेडियो और बिजलीकी रोशनी है।

क्रान्तिके पहले चपायेफ़काके १०६० घरोंमें ४५४के पास जमीन नहीं थी। ३०२के पास जोतनेके लिए घोड़े नहीं थे।

(ग) 'बढ़े-चलो'-कल्खोज—(दिमित्रोफ् जिला, मास्को प्रान्त) इस कल्खोजकी प्रयोगशालाके प्रबंधक सिदोरोफ़ने अपने कल्खोजके बारेमें कहा—"हमको इसका अभिमान है, कि मास्को प्रान्तमें हमने जाड़ेके गेहूँकी प्रति एकड़ ६० बुशल (१८ मन) पैदा किया।"

इस कल्खोजके किसानोंको प्रति कार्य-दिनके लिए ३१ किलोग्राम (३१ सेर) अनाज, तरकारी आदि तथा ३ रूबल (१।) मिला। गाँवके १३० आदमियोंने ३४००० कार्य-दिन काम किये। कुछ सदस्योंके काम तो ५०० से ६०० कार्य-दिनके हुए। ६० वर्षके बूढ़े द्रोब्दोफ़ने ५०० कार्य-दिन और उसकी स्त्रीने २०० कार्य-दिन काम किये। इनको इतना अनाज मिला, कि उसको ले जानेके लिए ४० घोड़ा गाड़ियोंकी जरूरत पड़ी। इसके अतिरिक्त २१०० रूबल नक़द और तिसपर घरके बगीचेकी आमदनी और गाय, मुर्गी, सुअर ऊपरसे।

१९३८के लिए गाँववालोंकी योजना है, १२ सैकड़ा उपज बढ़ानेकी। जाड़ेमें ही लोगोंने खाद जमा करना शुरू कर दिया है। गोबरके अतिरिक्त रसायनिक खाद खरीदी गई है। मास्कोकी कृषि अकदमीके एक वैज्ञानिकने जाड़ोंमें एक कृषि-कक्षा खोली, जिसमें ३० सदस्य पढ़ रहे थे। ४० सदस्य राजनैतिक और दूसरी कक्षाओंमें शामिल हैं। गाँवसे दो मीलपर मास्कोको जानेवाले बिजलीके खंभे हैं। सिदोरोफ़ने कहा—"हम उस तारसे अपने गाँवको

मिलाने जा रहे हैं। फिर हर एक रहनेके घर तथा पशुशाला और दूसरे मकानोंमें भी बिजलीकी रोशनी होगी। दाँवनेकी मशीन भी हम बिजलीसे चलायेंगे।''

गाँवकी योजनाओंमें अबकी साल एक सूअरखाना बनवाना, एक आनाज सुखानेका मकान और एक आनाज रखनेकी बखार। सिदोरोफ़ने कहा—''वे दिन गये, जब किसान तमाम जाड़े चूल्हेके गिर्द बैठे रहते थे। जाड़ेमें भी अब हमें काम करना है।''

सिदोरोफ़ अबकी बार सोवियत् पार्लियामेंटका सदस्य चुना गया है।

* * * * * *

(५) कलखोजोंकी तैयारी—सोवियत्की खेतीमें जहाँ किसान, इंजीनियर, मशीन तथा वैज्ञानिक मदद दे रहे हैं, वहाँ अखबारोंका हिस्सा भी इसके विषयमें कम नहीं है। जहाँ 'प्राव्द' और 'इज्वेस्तिया' जैसे सोवियत् की राजधानीसे निकलने वाले अखबार हैं, और २०-२० लाखकी तादादमें छपकर सारे देशमें जाते हैं। वहाँ बहुतसे संग-प्रजातंत्रकी राजधानी तथा प्रान्त और जिलेके केन्द्रसे निकलनेवाले अखबार भी हैं। किसानोंका सबसे बड़ा अखबार ''क्रेस्त्यंस्काया गजेता'' है, जिसकी ग्राहक-संख्या २० लाखसे भी ऊपर है और सोवियत्के दैनिक समाचार-पत्रोंमें उससे अधिक ग्राहक-संख्या किसीकी नहीं है। शायद दुनियामें अमेरिकाका ही कोई अखबार मुक़ाबला करे तो करे। बड़े-बड़े कलखोज खुद अपना अखबार निकालते हैं। जो खबरें रेडियोसे आती हैं, उन्हें दीवारपर लिख दिया जाता है। ऐसे दीवार-समाचार पत्रोंका वहाँ बहुत अधिक प्रचार है। कोई गाँव नहीं, जहाँ दीवार समाचार-पत्र न हों। इन दीवार-समाचार-पत्रोंमें गाँवकी आर्थिक, खेती सम्बन्धी तथा दूसरी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं। किस ब्रिगेडने सबसे अधिक निराई की है, किस कलखोजीने जमीन खोदनेमें आज कमाल किया है—यह भी उसमें लिख दिया जाता है। यहाँ तक कि खेतपर काम करते वक़्त भी दीवार

समाचार-पत्र पढ़नेको मिलता है। (यहाँ चाय आदि गर्म करनेके लिए छोटी कोठरीकी दीवार या साथ आई लारीके किनारेका पटरा कागजका काम देता है।) बुनाईका मौसम आरंभ होनेसे कुछ समय पहले (हमारे यहाँके क्वार-की तरहका महीना) अखबारवाले किस तरहसे कृषकोंकी सहायता करते हैं, और सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी किस तरह भाग लेती है, इसे जाननेके लिए मास्कोके एक दैनिक पत्रसे हम एक उद्धरण देते हैं—

"स०स०स०र० के मंत्रिमंडल और स०स० कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समिति अगले मौसममें बोनेकी तैयारीकी रिपोर्टोंको देखकर समझती है, कि काम बिलकुल असन्तोषजनक है। ट्रैक्टरकी मरम्मत, पेट्रोलका संग्रह, बीजके संचय करनेका प्रबन्ध, बीजकी सफाई, और साधारण बीजसे चुने हुए बीजोंका परिवर्तन जैसे अत्यन्त महत्वपूर्ण और जल्दी किये जानेवाले काममें वक्तपर न पूरा होनेका भारी खतरा हो गया है।

स्थानीय अधिकारियोंकी बेपरवाई और सुस्तीके कारण दक्षिणी प्रदेशों (रोस्तोफ् प्रान्त, क्रास्नोदार इलाका, स्तालिनग्राद् प्रान्त, क्रिमिया और दूसरे) में बसन्तके बोनेकी तैयारी अत्यन्त धीमी गतिसे हो रही है। और दक्षिणमें बुआईका समय सिरपर आ पहुँचा है।

२० दिसम्बर १९३७ तक ट्रैक्टरकी मरम्मतका काम सारे स०स०स०र० में सिर्फ १३ सैकड़ा हो पाया है। चेचन-इंगुश स्वायत्त-प्रजातंत्र (३ सैकड़ा), गुर्जी प्रजातंत्र (६ सैकड़ा), रोस्तोफ्-प्रान्त (११ सैकड़ा), ताजिक प्रजातंत्र (७ सैकड़ा), में खास तौरसे अक्षम्य सुस्ती देखी जा रही है। ट्रैक्टरोंकी मरम्मत जो हुई है, वह भी अच्छी तरह नहीं की गई है।

सारे स०स०स०र० में १५ दिसम्बर १९३७ तक बीज जमा करनेका काम सिर्फ ७६ सैकड़ा हुआ है। और बीज साफ करनेका काम तो और भी कम, १८ सैकड़ा हुआ है। इनमें अधिक पीछे रहनेवालोंमें ये जगहें हैं—ओर्जो-कितीद्ज़े इलाका, (बीज-संग्रह ६८ सैकड़ा और बीज-शोधन १० सैकड़ा

स्तालिनग्राद् प्रान्त (बीज-संग्रह ८७ सैकड़ा, बीज-शोधन १८ सैकड़ा) । बहुत जगह बीज-संग्रह करते वक्त लोगोंने अलाय-बलाय बीज डाल दिया है ।

कलखोजोंके बीजका साधारण अनाजके बदले चुने हुए बीज चुने बीज-संग्रहालय और राजकीय 'अनाज-क्रेत ट्रस्ट' से बदलनेका काम अभी आरंभ तक नहीं हुआ है ।

मंत्रिमंडल और पार्टीकी केन्द्रीय समिति इस बातको अक्षम्य अपराध समझती है । बोनेका समय हमारे सिरपर आ पहुँचा है । ऐसे समयमें भी कितने ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन, मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशाप और स्थानीय भूम्य-धिकारी अग्रणी कार्य-प्रबंधकोंके बिना काम कर रहे हैं ।

स्थानीय समाचार-पत्रोंने वसन्तकी बुआईकी तैयारीका जिक्र बड़े असन्तोषजनक तरीकेसे किया है । समाचार-पत्र उन असली अपराधियोंका भण्डाफोड़ नहीं कर रहे हैं, जिनके कारण कि ट्रैक्टरकी मरम्मत, बीज-संग्रह और बीज-शोधनके काममें ढिलाई हो रही है । और कलखोजी तथा सोवखोजी किसानोंमें बसन्तकी बुनाईके सम्बन्धमें साम्यवादी होड़को संगठित करनेमें दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं ।

मंत्रिमण्डल और पार्टी केन्द्रीय समितिने संघ और स्वायत्त प्रजातंत्रोंके मंत्रिमण्डलोंको, इलाकों, प्रान्तों और जिलोंकी कार्यकारिणी समितियों तथा उनकी जातीय पार्टियों; और इलाका, जिले और प्रान्तकी पार्टी समितियोंको हिदायत की है, कि ऊपरके दोषोंको तुरन्त दूर करें, और निम्नलिखित बातोंका अनुसरण करें—

१. दक्षिणी जिलोंमें ३ दिनके भीतर और उत्तरी जिलोंमें ५ से ७ दिनके भीतर वहाँकी प्रान्तीय पार्टी कमेटीके ब्यूरो और प्रान्तीय कार्य-कारिणीके सचिवमण्ड, की सम्मिलित बैठक करके वसन्तकी बुआईकी तैयारी पर विचार करें; और जिलाकी पार्टी कमेटियोंके मन्त्रियों, जिलाके सोवियत कार्यकारिणीके अध्यक्षों, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनोंके डाइरेक्टरोंकी मीटिंग करें और उसमें बहुत पिछड़े जिलोंकी कार्यकारिणी के मुख्य कार्यकर्त्ताओंकी रिपोर्ट

सुने, कि क्यों बुआईकी तैयारीमें देर हो रही है। उन्हें बीज-संग्रह तथा बीज-शोधन और ट्रैक्टर मरम्मत आदिको जल्दी करनेके लिए रास्ता बतलायें।......

२. ट्रैक्टर मरम्मत और बीजको बोनेके लिए तैयार करनेके कामकी मात्रा और योग्यताका दैनिक प्रोग्राम बनायें। और जरूरत हो तो खराब तरहसे मरम्मत करनेवालेया खराब तरहसे बीजको बोनेके लिए तैयार करनेवाले अपराधी व्यक्तियों को सजा देनेसे बाज न आयें।

३. ५ से १२ जनवरी (१६३८) के बीचमें सभी कल्खोजोंके बीज-संग्रहके अच्छे बुरेपनकी पूर्णतया जाँच कर लेनी चाहिए।

४. जहां आवश्यक हो, वहांके लिए इन्जीनियरों और मिस्त्रियोंकी अध्यक्षतामें शहरके कारखानोंके योग्य कमकरोंके ब्रिगेड्को बुलाया जाय और उन्हें उन मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशापोंमें भेजा जाय, जिनमें ट्रैक्टर मरम्मतके कामकी पूर्ति समय पर होनेकी संभावना नहीं है।

५. दक्षिणी जिलोंमें १५ जनवरी तक और उत्तरी जिलों में २० जनवरी तक मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों और उनकी वर्कशापों तथा जिला के भूमि-विभागोंमें जो जगहें खाली हैं, उन्हें अनुभवी कार्यकर्त्ताओंसे पूरा करना चाहिए; और इसकी सूचना २० जनवरी तक मन्त्रिमण्डल और पार्टी केन्द्रीय समिति के पास आ जानी चाहिए।

६. वसन्तकी बुआईकी खूब तैयारी करनेके लिए सोवखोजों और कल्खोजोंमें जबर्दस्त होड़ कराना तथा रोज-बरोज उसे विस्तृत क्षेत्रमें संचालित करना चाहिए।

७. वसन्तकी बुआईकी तैयारी और होड़की प्रगतियोंके बारेमें रोज-बरोज और अच्छे ढंगसे रिपोर्ट छापना समाचार-पत्रोंका कर्तव्य है।

..........................."

* *
*   * *
*

(६) कम्युनिस्ट-पार्टी—कल्खोजोंका सम्बन्ध गाँवोंसे है। गाँवके जीवनको कल्खोजों ने कितना परिवर्तित कर दिया है, यह ऊपरके वर्णनसे मालूम होगा। लेकिन सभी देशोंके किसानोंकी तरह सोवियतके किसान भी बहुत पुराणवादी थे। नई चीजके लिए साहस करनेकी अपेक्षा बाप-दादोंके रास्ते पर भूखे रहकर तिलतिल करके मरनेमें उन्हें ज़्यादा सन्तोष था। सोवियतके ग्रामीण समाजके मन और शरीरमें जिसने इतना भारी परिवर्तन कराया, वे कम्युनिस्ट पार्टीके सदस्य थे। कम्युनिस्ट पार्टी वैसे भी नगर और उद्योग-धन्धे सभीके नवनिर्माणकी प्राण है। गाँवोंमें उसने क्या किया, इसका भी जिक्रकर देना जरूरी है।

कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर होनेके लिए, कितनी कसौटियोंसे गुजरना पड़ता है, इसे हम अन्यत्र कह चुके हैं। शारीरिक और मानसिक तौरसे उसे अधिक योग्य बनना पड़ता है। दूसरी तरफ़ जोखिम और खतरेके काममें निर्भीक होकर कूदना पड़ता है। कम्युनिस्ट पार्टीका मेम्बर होना एक खतरा, कष्ट और तपस्याका जीवन बिताना है। और इसपर जरासी गलती हो जाय, तो पार्टीसे निकालकर उसकी सारी तपस्या बेकार कर दी जाती है। निश्चय ही इन परीक्षाओंमें पास होकर जो आयेगा, उसमें कामकी क्षमता अधिक होगी, वह जनताका अधिक विश्वास-पात्र होगा। जिस तरह शासनके लिए गाँवसे लेकर सारी सोवियत् भूमि तककी सोवियत् स्थापित है। जिस तरह खेतीके लिए गाँवोंमें सोव्खोज् और कल्खोज तथा शहरोंमें मजदूर-संघ लेखक-संघ आदि स्थापित हैं, उसी तरह गाँवों और शहरोंमें सभी जगह कम्युनिस्ट पार्टी या उनके मेम्बर पाये जाते हैं। कम्युनिस्ट पार्टीके मेम्बरोंकी संख्या ६० लाखसे ज़्यादा नहीं है। गाँवोंमें तो पार्टी मेम्बरोंकी संख्या और भी कम है। उदाहरणार्थ (१६३७) स्तारोसेल्ये-कल्खोज के १२०० परिवारों में सिर्फ़ १ पार्टी मेम्बर था। बुद्योन्नि कल्खोज् (ओदेस्सा जिला)के ५५ परिवारोंमें १ और इलिच-कल्खोज् (उक्रइन)के १०४ परिवारोंमें ३ पार्टी मेम्बर थे। लेकिन स्तारोसेल्येके १२०० परिवारोंमें सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति कम्युनिस्ट

देरिवस् था। वहाँ कोई भी महत्त्वपूर्ण काम नहीं है, जिसमें देरिवस्से न पूछा जाता हो। महत्त्वपूर्ण क्या, साधारण कामोंमें भी देरिवस्की पूछ होती है। अच्छे कामके लिए इनाम देते हैं, किसको कितना इनाम देना चाहिए, किसका काम सबसे अच्छा है और किसका उससे कम तो देरिवस् उसमें जरूर बुलाये जायेंगे। देरिवस् प्रबंधकारिणीका सदस्य नहीं है, वह सिर्फ सांस्कृतिक विभागका प्रबंधक है। तब भी उसे बुलाया जायगा। लोग जानते हैं, कि देरिवस्को कोई प्रलोभन, कोई मित्रता-बंधुताका भाव अपनी तरफ खींच नहीं सकता। वह हमेशा उधर ही रहेगा, जिधर न्याय है। इसके साथ लोग यह भी जानते हैं, कि देरिवस्का ज्ञान उनसे बहुत ज़्यादा है। लोगोंको मालूम है, कि देरिवस् कल्खोज्के संगठनके आरंभमें पार्टीकी ओरसे जब स्तारोसेल्ये में भेजा गया, तभी से वह कितनी लगनसे काम कर रहा है वह। आधी रातको उठ पड़ता और अस्तबलमें जाकर देखता, कि उस वक़्तके ड्यूटीवाले कमकर वहाँ मौजूद हैं या नहीं। घोड़ोंके नीचे घास बिछी हुई है या नहीं। जब सर्दी बढ़ गई, और पाला पड़नेका डर हुआ तो देरिवस् खुद घासको उठाकर चुकन्दरके खेतोंमें पहुँचता और लोगोंको भी ले जाकर धुआँ जलाकर पाला नहीं पड़ने देता। बहाना बनानेवाले हलवाहेके हाथसे परिहत छीनकर ६ घंटे लगातार हल चला देरिवस्ने दिखलाया, कि एक आदमी कितना काम कर सकता है।

स्तारोसेल्येमें देरिवस्की जो स्थिति और प्रभाव है, वही स्थिति और प्रभाव सोवियत्-भूमिमें कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) का है।

सदस्योंकी संख्या कम होनेसे हर गाँवमें कम्युनिस्ट पार्टी न होकर ज़िले-ज़िलेमें पार्टीका संगठन किया गया है। ज़िला पार्टीके अधिकांश सदस्य देरिवस् की तरह भिन्न-भिन्न सोव्खोजों, कल्खोजों आदिमें काम करते हैं। ज़िला पार्टीके सेक्रेटरी बराबर कल्खोजोंमें दौरा करते रहते हैं। खुद खेतोंमें आते हैं और लोगोंको कामके लिए परामर्श देते तथा त्रुटि होनेपर सुधारनेके

लिए हिदायत करते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत्-संघका दिमाग है। इसी-लिए संख्या थोड़ी होने पर भी उसका प्रभाव अधिक है।

गाँवोंमें कम्युनिस्ट पार्टीके सभासदोंके बाद कुछ मेम्बरीके उम्मेदवार होते हैं। उनकी भी संख्या मेम्बरोंकी तरह ही कम है। कुछ सालोंकी परीक्षाके बाद वे मेम्बर बनाये जाते हैं। उम्मेदवारोंके बाद सहानुभूति रखनेवालोंका नंबर आता है। इनकी तादाद कुछ अधिक जरूर होती है, लेकिन उनके प्रवेशमें भी छानबीन की जाती है।

फिर तरुण-साम्यवादी-संघ या कम्सोमोल है जिसमें सोलह वर्ष से ऊपर-वाले तरुण-तरुणी दाखिल होते हैं। स्तारोसेल्येमें जहाँ १ पार्टी मेम्बर है, वहाँ २६ कम्सोमोल हैं।

(२) मातृ-भुक्ति युद्धके बाद कृषि

(१) ध्वंसका पुनर्निर्माण—स्तालिनने ६ नवम्बर १६४३में कहा था "हमारी सेनाने अन्नकी कमीको अनुभव नहीं किया। हमारी जनताको पर्याप्त अन्न और उद्योग-धन्धोंको पर्याप्त कच्चा माल मिला, इसने हमारी पंचा-यती खेती (कलखोज) व्यवस्थाकी शक्ति और जीवनको कलखोजी किसान की देश-भक्तिको सिद्ध किया"।

सोवियत् लेखक मानते हैं, कि प्रथम विश्वयुद्धमें रूसी सेनाके हारनेका एक बड़ा कारण था, जारके शासनमें छोटी-छोटी किसानी खेती और किसानों का पिछड़ापन। रूसकी कृषि उस वक्त निस्सन्देह बहुत पिछड़ी हुई थी। किसानोंके खेत करोड़ों टुकड़ोंमें बँटे हुए थे और वह सदा प्रकृतिकी दयापर निर्भर रहते थे। १६१०की जनगणनाके अनुसार रूसमें १ करोड़ लकड़ीके हल, चालीस लाख लोहेके हल और १ करोड़ सत्तर लाख घसकट्टीके हथियार थे। ऐसी अवस्थामें फसलकी उपज कम और वह भी अनिश्चित होना जरूरी था। महाक्रान्ति और पंचायती-खेती-व्यवस्थाने किसानोंके जीवनको सुखी और समृद्ध बनाया और साथ ही खेतीको उन्नतिशील भी। क्रान्तिके

बाद सोवियत् सरकारने पन्द्रह करोड़ हेक्तर (एक हेक्तर = २·४७ एकड़) जमीन किसानोंको मुफ्त प्रदान की और यह उस जमीनके अतिरिक्त थी, जो कि पहलेसे किसान जोतते थे। इसके साथ ही साथ किसानोंको पचास करोड़ सोनेके रूबलका कर भी माफ कर दिया, जो कि उनके ऊपर एक भारी बोझ था। सोवियत राज्यने गृह-युद्ध और बाहरी राज्योंके दखल देनेसे खेतीका जो संहार हुआ था, उसे फिरसे सुधारनेमें अपने पहले वर्ष लगाये। उसी समय १९२१की फसल खराब होनेसे अकाल भी आ गया था। कृषिकी अवस्था पूर्ववत् कर दी गयी, किन्तु इतनेसे क्या हो सकता था। किसानोंकी ढाई करोड़ छोटी-छोटी खेतियाँ देशकी खाद्य-आवश्यकताको नहीं पूरा कर सकती थीं और न वह असाधारण तौरसे बढ़ते उद्योग-धन्धे और नगर-निवासी जनताकी माँगोंको पूरा कर सकते थे। ये नन्हे-नन्हे खेत उपज बढ़ानेके लिये उपयोगी कृषि-साइन्स और आधुनिक साधनों का उपयोग न कर सकते थे। कृषिके पिछड़ेपनसे उद्योग-धन्धेके विकासको खतरा होने लगा। भारतमें भी यदि एकाङ्गीन कल-कारखानोंको बनानेका काम किया जाय और खेतीको अपनी जगहपर छोड़ दिया जाय, तो उसी खतरेका सामना करना पड़ेगा।

सोवियत्ने इस समस्याका हल निकाला—छोटे-छोटे बिखरे हुए खेतोंको इकट्ठाकर बड़ी खेतीका रूप देना—जिसमें कि सभी किसान इकट्ठा होकर खेतीका काम कर सकें। यह काम है, स्वेच्छापूर्वक यही साझी खेती और नवीनतम कृषि साइन्सकी प्रक्रिया, ट्रैक्टर और दूसरी खेतीके मशीनोंका इस्तेमाल करना।

सोवियत्के कर्णधारोंने पञ्चायती खेतीके लिये लोगोंको प्रेरित किया और उसने एक जन-आन्दोलनका रूप लिया। शिक्षा-संगठन और प्रचारका जो जबर्दस्त काम हुआ, उसका किसानोंपर प्रभाव पड़ा और वह १९२९में भारी संख्यामें पञ्चायती खेती (कल्खोज)में शामिल होने लगे।

कल्खोजोंकी संख्या बढ़ते-बढ़ते दो लाख सत्तरह हजार हो गयी, जिसमें पचासों सैकड़ा किसान परिवार सम्मिलित हो गये। यद्यपि हालमें सोवियत्

संघमें शामिल होने वाले प्रजातन्त्रोंमें—एस्तोनिया, लतविया, लिथुवानिया, और मोलदावियाके प्रजातन्त्र और उक्रइन तथा बेलोरूसियाके पश्चिमी भागमें—अभी पञ्चायती खेतीका प्रचार नहीं हो सका है, किन्तु वहाँ भी यह काम तेजीसे हो रहा है।

कल्खोजोंके सगठन और विकासने खेतीको समृद्ध किया और करोड़ों एकड़ जमीन नये खेतोंमें परिणत हो गई। यदि उद्योग-धन्धोंका तेजीके साथ भारी विकास नहीं हुआ होता, तो कृषिको नये ढंगकी मशीनें न मिल पातीं। उद्योग-धन्धे और कल्खोजी व्यवस्थाने सोवियत्को लकड़ीके हलों और हँसुओंसे मुक्त कर मोटर-हल और कम्बाइनका देश बना दिया। इन कृषि-मशीनोंने किसानोंके स्वाभाविक आलस्य और अक्षमताको दूरकर उन्हें कार्य-तत्पर बनाया, जिससे फसलकी उपज बढ़ी।

सोवियत् कृषि प्रायः सारी कल्खोजों (पञ्चायती खेती), और-सोव-खोजों (सरकारी खेती) की है। प्रथम विश्वयुद्धसे पहले रूस प्रतिवर्ष साढ़े छै करोड़-से आठ करोड़ टन अन्न पैदा करता था, और द्वितीय-विश्वयुद्धसे पहले सोवियत्के कल्खोज् और सोव-खोज प्रतिवर्ष साढ़े एग्यारह करोड़ टन अनाज पैदा करते रहे।

जर्मन फासिस्तोंने कुछ समयके लिये सोवियत्के बहुत ही महत्वपूर्ण कृषि-प्रदेशपर अधिकारकर अनाजका संकट उपस्थित कर दिया। १९४२की शरदमें जो कल्खोज् और सोवख्खोज जर्मनाधिकृत भूमिमें चले गये, वह सारी सोवियत्के चालीस सैकड़ा थे। फासिस्तोंने यहाँकी खेतीको बहुत हानि पहुँचाई। घरों, मशीनोंको तोड़-फोड़ दिया। ९८ हजार कल्खोजों को बरबाद किया और सत्तर लाख घोड़ों, १ करोड़ ७० लाख ढोरों, दो करोड़ सूअरों और २ करोड़ ७२ लाख भेड़ोंको खा गये या जर्मनी भेज दिया। कल्खोजोंको जर्मनोंने जो नुकसान पहुँचाया, वह १९४१के रूबलोंमें गिनने-पर १ अरब ८१ करोड़ होता है। साथ ही फासिस्तोंने २८९० मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों और १८७६ सोव-खोजोंको ध्वस्त किया, लूटा। वह १,३७,०००

ट्रेक्टर, ४६,००० कम्बाइन, ४,००,०००० दूसरे कृषि-हथियारों, २,६५,००० बोवाईकी मशीनों और ८,८५,००० कटाइ दँवाईकी मशीनोंको ले गये।

यदि वैसी ध्वंस-लीला, क्रान्तिसे पहले रूसमें हुई होती, तो कृषिको फिरसे बसानेमें कितने ही वर्ष लग जाते। कृषिके हथियारों और उपयोगी पशुओंका इतनी संख्यामें कम होना ऊपरसे ७० लाख नर-नारियोंका युद्ध-में मारा जाना—जिससे बहुत खेत परती हो गये—किसी दूसरे देशके लिये सँभलने न देना। लेकिन पंचायती खेतीकी व्यवस्थाने युद्धोत्तर-कालमें सोवियत्-संघ और उसकी कृषिको बचा लिया और बड़ी तेजीसे उजड़े खेत आबाद होने लगे। १९४४-४५में ही जर्मनोंसे मुक्त किये जिलोंमें कल्खोज अपना काम करने लगे और उन्होंने खेतों और ढोरोंमें वृद्धि की। १९४६के आरम्भमें ६९ सैकड़ा पुराने खेत आबाद हो चुके थे और उन्होंने युद्ध-पूर्वकी पैदावारका ७५ सैकड़ा नाज पैदा किया। १९४५में घोड़े युद्ध-पूर्वसे ५१ सैकड़ा हो गये, ढोर ८८ सैकड़ा, भेड़-बकरियाँ ३७ सैकड़ा और सुअर युद्ध-पूर्व-से भी अधिक यानी ११३ सैकड़ा बढ़ गये।

राज्यकी लगातार सहायता और सोवियत्-भूमिके दूसरे स्थानोंके कल्खोजोंकी मददसे जर्मनों द्वारा ध्वस्त कृषि बड़ी तेजीसे आगे बढ़ी है। युद्ध क्षेत्रसे दूरके कल्खोजोंने अपने पीड़ित भाइयोंको २६ हजार ट्रेक्टर, ४० हजार दूसरी कृषि-सम्बन्धी मशीनें और ३० लाख ढोर प्रदान किये। इस प्रदेशमें ३ हजारसे अधिक मशीन-ट्रेक्टर-स्टेशन स्थापित हो गये।

वैयक्तिक खेती करने वालोंको अपने पैरपर खड़ा होनेमें बहुत देर लगती, यदि सरकार और कल्खोजोंने उन्हें मदद न की होती। किसानोंके मकान जर्मनोंने नष्ट कर दिये थे और उन्हें भूधरे खोदकर रहनेके लिये मजबूर होना पड़ा था। सरकारने किसानोंको गृह-निर्माण-सामग्री और पैसेकी सहायता दी। किसान मकान बनानेमें जुट गये और १९४५के अन्त तक लाखों मकान बन चुके थे। लड़ाईके ध्वंसने किसानोंको निराशावादी नहीं बनाया। सरकारी सहायता, दूसरे पंचायती खेतोंकी दिल खोलकर मदद और

स्वयं अपने श्रमके ऊपर विश्वास—इसने किसानोंमें नवीन उत्साह भर दिया और १९४६में पिछले सालकी अपेक्षा २० लाख हेक्टर अधिक जर्मानमें फसल बोयी गई। पशुओंकी वृद्धि भी बड़ी तेजीसे हुई। १९४५के ९ महीनोंमें घोड़े ४ सैकड़ा, गायें ६ सैकड़ा, भेड़-बकरियें १५ सैकड़ा और सूअर ५० सैकड़ा बढ़े।

चतुर्थ (वर्तमान) पंचवार्षिक योजनामें कृषि और गोपालनमें बहुत वृद्धि होने वाली है। इसके लिये अधिक ट्रेक्टरों और मशीनोंकी जरूरत है, और कृषिका काम पूर्णतया मशीन द्वारा होना भी जरूरी है। इस काममें सोवियत्-जनता कमर बाँधकर पिल पड़ी है। पंचवार्षिक योजनामें गाँव-गाँवमें बिजली पहुँचानेका प्रोग्राम भी है और अभी ही कितने ही जिलोंके सारे गाँवोंमें बिजली पहुँच गयी है—१९४७के आरम्भमें ऊराल जिले के हर गाँवमें बिजली पहुँच गयी और घरोंसे किरासेनकी लालटेनें निकाली जा चुकीं। कारखानें बिजली पैदा करनेकी छोटी-छोटी टर्बाइनें तेजीसे तैयार कर रहे हैं।

अब गाँवके किसान अपने पासकी हर धारा और जल-प्रपातसे बिजली निकालनेकी होड़ लगाये हुए हैं। गाँवमें बिजली सिर्फ रोशनी हीके लिये नहीं, बल्कि छोटे-छोटे ग्राम-उद्योगों और खेतीकी मशीनोंको चलानेके लिये भी इस्तेमाल की जा रही है। खेतीके हर कामका यंत्रीकरण और विद्युदी-करण—यह है लक्ष्य आज सोवियत् सरकार और उसके किसानका। उसे अनाज और चारेको बढ़ा अपनी कृषि और ढोरोंकी अवस्था उन्नत करनी है। ढोरोंकी संख्या बढ़ानेसे ही वहाँ अधिक खाद्य-सामग्री पाई जा सकती है।

× × ×

(२) कृषिका यंत्रीकरण—वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें खेतीके मशीनीकरणका काम अत्यन्त शीघ्रतासे हो रहा है। इन पांच वर्षोंमें एक

करोड़ आठ लाख अश्व-शक्तिके सवा तीन लाख ट्रैक्टर—जो कि प्रथम और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाओंके बराबर हैं—पञ्चायती खेतोंको मिलेंगे, बीज बोवनी, निकौनी और दूसरी कृषि-मशीनें दस लाखकी संख्यामें तैयार की जा रही हैं। इनके अतिरिक्त १ लाख ७४ हजार कम्बाइन मशीनें तथा और भी कितनी कृषि-मशीनें वर्तमान पंचवार्षिक योजना किसानोंको प्रदान करेंगी। १९५०में अनाज १२ करोड़ ७० लाख टन, चीनी २ लाख ६० हजार टन, और कपास ३१ लाख टन पैदा करना है, इसके लिये सिर्फ उपजको ही बढ़ानेका आयोजन नहीं हो रहा है, बल्कि करोड़ों एकड़ बन्जर जमीनको खेतके रूप में परिणत किया जा रहा है।

कृषिके मशीनीकरणमें और कलखोजोंके काममें सहायता देनेमें हर दस-दस बारह-बारह गाँवके लिये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों ने बहुत बड़ा काम किया है। १९४०में सोवियत् भूमिमें ६९८० मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन थे, जिनमें ५ लाख ट्रैक्टर और डेढ़ लाख कम्बाइनें काम करनेके लिये रखी थीं। उस साल स्टेशनोंने कलखोजोंकी ९७ सैकड़ा खेतोंको जोता, ८२ सैकड़ा जमीनको उलटा, ५२ सैकड़ाको बोया और ३४ सैकड़ाकी कटाई, दँवाई की। उक्रइन, उत्तरी काकेशस और वोल्गा-उपत्यकामें खेतीका मशीनी-करण सबसे अधिक था। अकेले १९४०में ट्रैक्टरों और कम्बाइनोंने इतना काम किया, कि यदि हाथसे काम करना होगा, तो एक आदमीको उतना काम करनेके लिये १ करोड़ १० लाख वर्ष काम करना पड़ता।

मशीनोंके द्वारा खेती करनेसे किसान अब वह पुराना किसान नहीं रह गया। मशीनोंके ठीक उपयोगके लिये उसे मिस्त्री और ड्राइवर बनना पड़ा। लाखों किसान इस तरह मशीनोंको इस्तेमाल करना सीख गये।

ये सीखे हुए किसान मोटर और मशीनसे काम करने वाली लाल सेनाके लिये बहुत उपयोगी साबित हुए और वे बड़ी आसानीसे लाल सेनाके ड्राइवर तोपची बन गये। सोवियत्की विजयमें सिर्फ अपनी उपज द्वारा ही

कल्खोजोंने सहायता नहीं पहुँचाई, बल्कि लाखों सीखे-सिखाये किसान लाल-सेनाके सिपाही बनकर लड़े। इससे सोवियत्-जनताको मालूम हो गया, कि आधुनिक ढंगपर संगठित और यन्त्रोंसे सुसज्जित कल्खोज देशकी रक्षक-सेनाके अभिन्न अंग हैं। इसीलिये सोवियत्-सरकारका कल्खोजोंकी ओर और भी अधिक ध्यान है, इसका प्रमाण वे तीन हजार॰मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन हैं; जो जर्मन-अधिकृत जिलोंमें कुछ ही महीनोंमें तैयार कर दिये गये। १६४५ में कल्खोजोंने अपेक्षाकृत कम दिनोंमें अपने खेतोंको जोत डाला और बोवाई भी खतम कर दी। वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें प्रतिवर्ष नये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन स्थापित किये जा रहे हैं। ६५० नये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन इन पाँच वर्षोंमें स्थापित किये जायेंगे, जिनमेंसे हर एकमें सौसे अधिक ट्रैक्टर, दर्जनों कम्बाइनें और दूसरी मशीनें रहेंगी। साथ ही वहाँ मरम्मतके लिये मिस्त्रीखाना, इंजीनियर और कृषि-विशेषज्ञ भी रहेंगे।

मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन ऐसी जगह बनाया जाता है, जहाँसे वह पाँच हजार-से दस हजार हेक्तर जमीनको जोत सकता है। हर साल उस हल्केके कल्खोज् स्टेशनके साथ जोताई-कटाईके कामके बारेमें स्टेशनके साथ लिखा-पढ़ी करते और कामके लिये अनाजके रूपमें उसे मजदूरी देते हैं। यह अनाज सरकारके पास चला जाता है, जो कि मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनका सारा खर्च अपने ऊपर उठाती है। स्टेशन अपनी मशीनों तथा साइन्स-सम्बन्धी परामर्श और संगठन द्वारा जो सहायता कल्खोजोंको देता है और उससे जितना अधिक पैदावार होती है, उसका बहुत कम ही अंश कल्खोजकी ओरसे मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनको मिलता है। सरकार मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनको नफा उठाने-का साधन नहीं बनाती। मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन स्थापित करनेका एक मात्र प्रयोजन है, कृषिकी समृद्धि और देहातमें सुखी और सम्पन्न समाजका निर्माण करना। इसीलिये कल्खोज इन स्टेशनोंको उतना ही पारिश्रमिक देते हैं, जितना कि मशीनके बनाने, मरम्मत करने, हिफाजतसे रखने और काममें लेनेमें खर्च होता है।

(३) सदा-फल अनाज

सोवियत् भूमिके साइन्स-वेत्ताओंका अपने देशमें जितना आदर है, उसीके अनुरूप वे अपनी प्रतिभाको नई-नई खोजों और परीक्षणोंमें लगाते हैं। चोटीके साइन्सवेत्ता—जिनमें साहित्य और इतिहासके धुरन्धर विद्वान भी शामिल हैं—जिस अन्तिम सम्मानकी अभिलाषा रखते हैं, वह है साइन्स-अकदमीका सदस्य होना, यानी अकदमिकके नामसे पुकारा जाना। आजकल सारे सोवियतमें अकदमिकोंकी संख्या डेढ़ सौसे थोड़ा ही ऊपर है। अकदमिक निकोलाय त्सित्सिन् उसी तरहके एक साइन्सवेत्ता हैं। वह अपना सारा समय अनाजकी भिन्न-भिन्न जातियोंके वर्ण-संकरीकरणके परीक्षणमें लगा रहे हैं। उन्होंने इस तरहका एक गेहूँ निकाला है, जो एक सालका बोया कई साल तक फल देता है। बेलोरुसिया प्रजातन्त्र अपने देशके लिये उपयुक्त इस तरहके गेहूँकी एक जाति पानेके लिये बहुत ही उत्सुक है। मिन्स्कमें अकदमीके वनस्पति-उद्यानमें अकदमिक त्सित्सिनके तत्त्वावधानमें प्रयोग-क्षेत्र भी तैयार कर लिया गया है। यहाँ वसन्त और शरदमें बोये जानेवाले गेहुँओंकी अच्छी-अच्छी जातियोंके बीज और उनके साथ संकरीकरणके लिये उपयोगी घासें भी एकत्र कर ली गई हैं। त्सित्सिन् और उनके साथियोंने वर्षोंके प्रयोगसे संकरीकृत जो गेहूँ पैदा किया है, उसे यहाँकी भूमिमें परीक्षित करके बड़े पैमानेपर उसका प्रचार करना है। प्रयोग-स्टेशन अपने खेतोंमें इस साल त्सित्सिन्के उद्भावित अनाजमेंसे हजार प्रकारके बीजोंको बोने जा रहा है। इनमेंसे बेलोरुसियाकी भूमि और जलवायुके लिये जो सबसे अनुकूल सिद्ध होंगे, उन्हें कल्खोजोंको दिया जायगा। इसके अतिरिक्त १६४६ की शरदमें दो बिल्कुल ही नये प्रकारके सदा-बहार गेहूँ बोनेकी योजना बनी।

किसीके पूछनेपर त्सित्सिनने कहा—"कुछ साइन्सवेत्ताओंको इसमें बहुत संदेह था, कि सदाबहार गेहूँ भी तैयार किया जा सकता है, किन्तु अब यह प्रश्न बिल्कुल हल हो चुका है। १६४४ से ही सदाबहार गेहूँ बोया जा रहा

है, और मास्को जिलेमें उपज भी बहुत अच्छी रही। आज-कल हमारे पास पाँच प्रकारके सदाबहार गेहूँ हैं, जो एक बारके बोये दो-तीन फसलें देते हैं।" अकदमिकने उपजके कई उदाहरण देते हुए बतलाया मास्को जिलेके रूजा तहसीलमें लाल-अक्टूबर कलखोजके खेतोंमें संकरित बसन्ती गेहूँ नं० २२८५० बोया गया और फसल उस इलाकेकी औसत उपजसे दो से तीन गुना अधिक हुई। वर्णसंकरी शरद्-गेहूँ नं० ५६६ पर कीड़ोंका कोई असर नहीं हुआ यद्यपि उस साल वर्षा अधिक हुई थी। साथ ही उसने उपज भी अधिक दी।

बेलोरुसियाकी योजना है, कि १६५० ई०में लाखों एकड़ खेतोंमें नये प्रकारके ये संकरित गेहूँ बोये जायँ।

अकदमिक त्सित्सिन्ने अपनी नई खोजोंपर प्रकाश डालते हुए कहा—"समीप भविष्यमें ही हम गेहूँके ऐसे बीज दे सकेंगे, जिनकी बालोंमें तीस-चालीस ही नहीं बल्कि सैकड़ों दाने होंगे।"

कितने ही वर्षोंके प्रयोगके बाद त्सित्सिन और उनके साथियोंने ऐसे ढंग निकाले हैं, कि अब सेम और टोमाटो पेड़पर उग सकते हैं और सेम टमाटो जैसी पौधोंकी डालोंपर। श्रोताके सन्देहको निवारण करते हुए त्सित्सिन्ने कहा—"सुननेमें यह बात दूरकी हाँकने जैसी मालूम होगी, परन्तु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि यह कोई ऐसी बात नहीं है। यह बिल्कुल यथार्थ है।"

(४) मरु-भूमिपर विजय

१६४६में बोगदो-वनस्पतीकरण प्रयोग और भूमि-उद्धार स्टेशनकी बीसवीं वर्षगाँठ मनाई गई। इस स्टेशनने अगस्त १६२६में अस्त्राखान जिले-में खारे, अर्धबालुकामय मैदानसे कृषि-उपयोगी भूमिके उद्धारका काम शुरू किया। अब तक यहाँके कर्मियोंने २५०० हेक्तर (६०७५ एकड़) जमीनको खेतोंमें परिणत कर दिया और बाईस लाख हेक्तर (२·४७ एकड़) जमीनको खेती लायक बनानेके लिये योजना और तरीके बना लिये हैं। जिस

वक्त अनुसन्धानका काम पहली बार शुरू किया गया, उस वक्त आस-पासके लोगोंको विश्वास नहीं था, कि गर्मियोंमें पूर्व-दक्षिणकी लू और धधकती हवा वाले इस बालूके निर्जल पाँतरमेंसे खेती लायक जमीन निकाली जा सकती है। कार्यकर्त्ताओंने हवाके तीव्र वेगको रोकनेके लिये रक्षक वृक्ष-पंक्तियाँ लगानी शुरू कीं। खास तौरके हल इस्तेमाल किये गये जिसमें जमीन-को ज्यादा गहराई तक जोतकर पेड़ लगानेपर उनकी जड़ें नीचे तक जा सकें। ऊपर जिप्सम् फैला दिया गया, जिसमें कि कलिसयम्से मिलकर वह धरतीके बहुत अधिक सोडियम (ऊसर) क्षारको दबा दे। थोड़े ही वर्षोंमें सिद्ध हो गया, कि पीला बाबूल (अकेसिया), मापल और कुछ दूसरी झाड़ियाँ बालु-का भूमिमें मजेमें जम सकती हैं। रक्षक वृक्षपंक्ति बालुका-भूमिपर प्राप्त होने वाली विजयका पहला कदम था। बाकायदा फसल बोना तो उससे कहीं मुश्किल साबित हुआ। कई बारकी असफलताओंके बाद अनुसन्धान कर्त्ताओं-को यहाँ खेती करनेका तरीका मालूम हुआ। वह तरीका है सिंचाईकी सहायता लिये बिना ही जितनी भी नमी प्राप्य हो, उसका बहुत ठीक तौरसे उपयोग करना आजकल इस प्रयोग-स्थानमें पच्चीस सौ हेक्तर में गेहूँ, जौ, बाजरा, अल्फाल्का जैसे अनाजोंके साथ-साथ तरबूजा और खरबूजाकी बड़ी अच्छी खेती हो रही है। सूखेके साल अक्सर ही यहाँ आते रहते हैं, तो भी फसल अच्छी होती है।

खर्बूजा, तर्बूजा, खीरा और इस तरहकी दूसरी फसलें तो काफ़ी अच्छी होती हैं। धरू और खनिज खादोंके उपयोगके अतिरिक्त उगते हुए पौधोंको अतिरिक्त खाद देनेकी जरूरत होती है। इसके साथ रक्षक-पंक्तिने मिलकर फसलकी सुरक्षाका भार ले लिया है। रक्षक-पंक्तिके वृक्ष धरतीकी नमीको भाप बनकर उड़नेसे रोकते हैं और पौधोंको जड़से उखाड़ फेंकनेवाली तेज हवाके वेगका भी सामना करते हैं। १९४५में मौसमके अनुकूल न होनेपर भी प्रति हेक्तर पाँच टन तरबूजा पैदा किया गया। यहाँ सफलतापूर्वक फलोंके बाग भी लगाये गये। उसी साल प्रति हेक्तर १३२ टन सेब पैदा किये गये।

(५) नये प्रकारका सूर्यमुखी फूल

तेलहनके पौधोंमें सबसे अधिक सोवियत्‌में है। वहाँ सूर्यमुखीका फूल बोया जाता है। इसका तेल खानेके भी काम आता है और उद्योग-धंधेमें भी इसके कई उपयोग है। युद्धके पहले ७६,००,००० एकड़में सूर्यमुखी बोया जाता था, जो कि सारे विश्वकी सूर्य-मुखी-खेतीका ८५% है। प्रोफेसर इवान मिन्केविच् अखिल सोवियत् तेलहन अनुसन्धान इन्स्टीट्यूट (क्रास्नोदोर) के डाइरेक्टर हैं। यह इन्स्टीट्यूट १६१६ से सूर्यमुखी बीजके निर्वाचन और संकरीकरणके सम्बन्धमें प्रयोग कर रहा है। पिछले बीस सालोंमें सूर्यमुखी बीजके बारेमें दो लाख प्रयोग किये गये, जिनमें कुछ बीज अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं—तेलकी मात्रा अधिक देनेमें ही नहीं बल्कि कीटाणु और रोगोंका मुकाबला करनेमें भी। आमतौरसे सूर्यमुखी बीजमें ३३% तेल पाया जाता है, किन्तु नई जातिके बीज में वह ४८% पाया गया। इसका कितना महत्त्व है, यह इसीसे मालूम हो जायगा, कि तेलमें चार सैकड़ा वृद्धि होनेपर एक लाख टन अधिक तेल मिलेगा। नया बीज बहुत बड़े पैमानेपर बोया जा रहा है और इक्कीस लाख एकड़में इसकी खेती हुई है।

(६) "प्लाम्या" कलखोज़्

मास्को जिलेका "प्लाम्या कलखोज्" १६२६में संगठित हुआ, १६३५ पहुँचते-पहुँचते आलूकी खेती और गोशालाकी उन्नतिके लिये इसे कई पारितोषिक और सामान प्राप्त हो चुके थे किसान आपसमें मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखते थे, आपसमें मिलकर बहुत योग्यतासे काम करते थे।

१६३५के सितम्बरके मध्यमें "प्लाम्या" कलखोजके मेम्बर अपने क्लबघरमें जमा हुए। उत्सवकी तैयारी थी। आज सरकारकी ओरसे सदाके लिये खेतके निःशुल्क दानका प्रशस्ति-पत्र दिया जाने वाला था। जिला सोवियत्‌के प्रधानने एक छोटा सा भाषण देकर चमड़ेपर लिखे प्रशस्तिपत्रको हाथमें

लेकर कहा—"यह भूमि जिसे तुम जोत रहे हो। सोवियत्-संघकी दूसरी भूमिकी तरह राज्यकी सम्पत्ति—जनताकी सम्पत्ति है। सोवियत् संघके कानूनके अनुसार आज यह तुम्हारे कल्खोज़को सदाके लिये दी जा रही है।" प्रधानने प्रशस्तिपत्रको एक स्त्रीके हाथमें दिया। वह उतनी जवान नहीं थी। सफ़ाईसे माँग-फाड़े उसके बालोंमेंसे कितने ही सफ़ेद दिखाई दे रहे थे। यह कल्खोज़की प्रधाना येवूदोकिया एगोरोवा थी, जिसे अपने कल्खोज़ तथा मास्को जिलेके किसान "दादी येवदोकिया" कहकर पुकारते हैं। येवदोकियाने उत्तर देते कहा—"हम रूसी किसान सदासे शताब्दियोंसे भूमिके मालिक बननेकी लालसा रखते आये। हमारा सारा जीवन धरतीके कामसे घनिष्ठतया सम्बन्ध था। तो भी धरती हमारी कभी नहीं हुई। वह सदा जमीदारों और कुलकों (धनी किसानों) की रही। हम उनके लिये काम करते थे, उनका खेत जोतते थे और काली रोटीपर जीते थे। किन्तु आखिर आज भूमि हमारी है। सोवियत् सरकारने यह भूमि हमें दी। अब हम कह सकते हैं, कि हमारी सुख-समृद्धिकी कुंजी हमारे हाथमें है। यदि हम मिलजुलकर काम करें, यदि हम खेतीको सफल बनानेकी कोशिश करें; तो सुख और समृद्धिका जीवन हमारे आगे रखा है।"

येवदोकियाने बड़े भावावेशके साथ यह बात कही। उसके सामने स्त्री-पुरुष बैठे हुए थे—वह स्त्री-पुरुष जो कि उसके सुख-दुख और कल्खोज़के कामोंके साथी थे, जिन्होंने उसका हाथ बँटाया। वह उनकी राय लेना चाहती थी। उसने आगे बोलते हुए फिर कहा—"आजके महत्त्वपूर्ण समयमें हमें अपनी सोवियत् सरकार और साथी स्तालिनको क्या कहना चाहिये? दिलो-जानसे हम इस भूमिमें मेहनत करेंगे, जिसे सोवियत सरकारने हमें दी है। फसल की उपजको हम तिगुनी करेंगे। सारे जिलेमें सबसे अच्छे सूअर सबसे अच्छी गाय पैदा करेंगे। हम इस फार्मके जीवनको अच्छा बनायेंगे। हम इसे सारे संसारका अत्यन्त सुखमय स्थान बनायेंगे।"

येव्दोकिया के शब्द खोखली आवाज नहीं थे। उक्त उत्सव के ६ महीने

बाद कितने ही दूसरे कलखोजोंके साथ येव्दोकिया पशुपालकोंकी कान्फ्रेन्स-में मास्को बुलाई गई। कान्फ्रेन्स क्रेमलिन प्रासादमें हुई। येवदोकियाने भाषण मंचपर चढ़कर भावोद्रेकमें आ कहना शुरू किया—"मैं खुश हूँ, अत्यन्त खुश हूँ। मैं खुश हूँ क्योंकि मुझे लेनिनसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था और आज साथी स्तालिनसे मुलाकात होगी और इसलिये भी खुश हूँ कि इस आयुमें भी अपने देशमें एक नये समाजवादी जीवनके निर्माणके महान् कार्यमें भाग ले रही हूँ। हमारे सामने एक बहुत भारी काम है, जिसके लिये हमें कड़ी मेहनत करनी होगी।"

येवदोकिया येगोरोवाने कान्फ्रेंन्सके सामने अपने कलखोजके बारेमें सविस्तर बतलाया। फिर उसने सोवियत् सरकारके नेताओंके मंचकी तरफ देखते हुए कहा—"मैं आपके पास अपने कलखोजके सभी किसानोंका अभि-नन्दन और शुभेच्छा लेकर आई हूँ। मैं तुमसे कहना चाहती हूँ, कि हम सभी को विश्वास है, कि किसानोंके लिये एक नये और बेहतर जीवनके समयका अब आरम्भ हो गया है।"

लोगोंने तालियाँ बजाई। येवदोकियोके पास आनेपर स्तालिनने मिलानेके लिये अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। फिर येगोरोवाने मोलोतोफ, कलिनिन और दूसरे नेताओंसे हाथ मिलाया। इस कान्फ्रेंन्सकी समाप्तिपर उसे "लालझंडा" पदक मिला।

× × ×

"फलभ्या" कलखोज् पहले युगमें एक बहुत दरिद्र अव्दोतिनों नामका गाँव था। वर्षों पहले वह रूसके एक प्रसिद्ध प्रगतिशील शिक्षाशास्त्री निकोलाइ नवीकोफकी सम्पत्ति थी। अपने प्रगतिशील लेखोंके लिये उसे श्लीसेलबुर्गके किलेमें कैद रहना पड़ा। उसने अपने जीवनके अंतिम वर्ष अवदो-तिनोंमें बिताये। किसान आज भी बड़े प्रेम से नवीकोफको याद करते हैं। उसने किसानोंकी स्थिति सुधारनेका बहुत यत्न किया। अपने किसानोंको

अर्धदासतासे मुक्त करके वह कैथरिना द्वितीयसे खुला वैर मोल लेना नहीं चाहता था। उसने करों और बेगारोंको नाम मात्र रहने दिया। ठंठ-मंठ गंदे झोपड़े हटाकर ईटों के बड़े-बड़े नौ मकान तैयार कर गये। हर मकान कई खंडोंमें विभक्त था— एक खंड एक किसान परिवारके लिये। मकान बहुत मजबूत थे। देहाती घरोंकी अपेक्षा किलेके प्राकारोंसे ज्यादा मिलते-जुलते थे। मोटी दीवारें और छोटे-छोटे जंगले धूपको अंदर नहीं आने देते इसलिये घरके अंदर सदा नमी बनी रहती थी। जल्द ही किसान परिवार बँट गये। हरेक खंड अनेक घने छोटे-छोटे टुकड़ोंमें विभक्त हो गये और पड़ोसियोंके साथ सदाकी किच-किच रहने लगी। और फिर लोग उसे "भिखमंगोंका गाँव" के नामसे पुकारने लगे।

सचमुच ही वह "भिखमंगों का गाँव" था। प्रसिद्ध नवीकोफकी हवेलियाँ जन-संकुल हो गई और उनमें वही दरिद्रता दिखलाई देने लगी, जो क्रान्तिके पहले रूसके गाँवमें दिखलाई पड़ती थी। भूमिकी उर्वरता जाती रही। वह लोगोंको खानेके लिये पर्याप्त अन्न नहीं दे सकती थी। घरके मर्द पास-पड़ोसके गाँवों और शहरों की छोटी-छोटी कपड़ा मिलोंमें मजदूरी करते, स्त्रियाँ घरमें कपड़े बुनतीं।

येगोरोवाने उन दिनोंकी याद करके कहा—"हरेक छोटी कोठरीमें अपना कर्घा होता। काम तीन बजे रात हीको शुरू हो जाता। काम कठिन था। हरेक किसानको प्रति दिन पचपन अर्शिना (१ अर्शिना = २८ इंच) बुनकर देना पड़ता था। एक अर्शिनाकी मजूरी एक कोपेक ($\frac{१}{१००}$ रूबल) थी।"

आदमीका जीवन कोपकों से तौला जाता था। सारा जीवन अनन्त नीरस-श्रम था। फैक्टरीका कमाया कोपेक गाँवकी भट्टीसे आगे नहीं बढ़ने पाता और गृहस्थोका सारा भार औरतोंके सिरपर पड़ता। वही खेत जोततीं, अनाज बोतीं और अगस्तकी कड़कती धूपमें फसल काटतीं। पशुओंको वही चरातीं और चीजें गाड़ियोंपर लादकर शहर ले जातीं। इतना होनेपर भी गाँवके

जीवनमें स्त्रियोंका कोई अधिकार नहीं था। सभी बातोंका फैसला पुरुष कभी-कभी होती अपनी पंचायतोंमें करते।

येगोरोवाने याद करके कहा—"हमारे पास कभी काफी रोटी नहीं होती थी। बहुत थोड़ेसे ऐसे परिवार थे, जिनका अनाज अप्रैल तक चलता था। वसन्त सबसे कठिन समय था। कैसे हम निर्वाह करते थे, आज तो यह कहना भी मुश्किल है। हमें यह समझमें आने लगा था, कि यदि भूमि हमारी होती तो जीवन बेहतर होता।"

किन्तु सोवियत्-शासनके आनेपर ही किसानोंकी वह भूमिकी भूख मिटी।

कल्खोज् (पंचायती खेती)के संगठनपर जब बहस चली, तो सारे अवदोतिनो गाँवने नये आन्दोलनका दिलसे समर्थन किया। येगोरोवा उस समय गाँव सोवियत्की प्रधानता थी। वही "प्लाम्या" (ज्वाला) कल्खोज्की प्रधाना चुनी गई और तब से अब तक बराबर वही प्रधान पदपर है।

संगठन करनेकी उसकी क्षमता कल्खोज्के जीवनके पहले ही मासमें प्रगट हो गई। गाँवकी जिन्दगीको नया रूप देना था। उसे बिलकुल नये रास्तेपर ले चलना था। कामको अब बड़े पैमानेपर करना था और उसमें किसानोंकी छोटी-छोटी बातोंका भी ध्यान रखना था। लोगोंको मिलजुलकर एक काम करनेकी आदत न थी। वह अनुशासनका मूल्य नहीं समझते थे। खेतीकी मशीनोंके बारेमें उनका ज्ञान बहुत ही संकीर्ण था।

येगोरोवाने इस परिस्थितिमें शान्तिसे काम लिया, अपनी स्वाभाविक परखसे योग्य व्यक्तियोंको योग्य कामोंके लिये चुना। काम बढ़ चला। किसानोंने उसका लोहा माना। बादमें सब उसका सम्मान करने लगे। कुछ-कुछ डरने भी लगे।

उन आरम्भिक दिनोंमें उसने फार्मके मुख्य स्थानोंपर स्त्रियोंको रखनेमें जरा भी झिझक नहीं दिखलाई। आज उसके चुने हुए वह व्यक्ति अपने ही फार्म नहीं बल्कि सारे जिलेके गर्वकी वस्तु हैं। उनमें मरिया पोलो-

त्येवा खेतकी एक टुकड़ी (गोल)की नेत्री है। अग्राफेना कस्तकिना शूकरशालाकी मुखिया है। जिनेइदा मुखिना एक टोलीकी नेता और येव्दोकिया मिखाइलोवा अतितरुण टोली नेता है। मिखाइलोवाको छोड़कर बाकी सभी जीवनकी कठिन परीक्षाओंमें से गुजरी हैं। सबको परिवारका पोषण करना पड़ता था। सभी अपने काममें बड़ी दत्तचित्त रहती हैं और येगोरोवाके "जेनरल स्टाफ" (सैन्यसंचालक)की भाँति हैं। नई बातें सीखनेको वह स्वयं उत्सुक रहती हैं और दूसरोंको कल्खोजी काम सिखानेको उत्कंठित रहती हैं। इन स्त्रियों और कितने ही किसानोंने कल्खोज़को अपने पैरपर खड़ा करनेमें येगोरोवाकी मदद की है। येवदोकियामें एक और असाधारण गुण है। बातोंके हजारों झमेलोंमेंसे मुख्य समस्याको वह पकड़ लेती है। कल्खोज़के आरंभिक कठिन दिनोंमें इससे बहुत फायदा हुआ। वह सोचती है—हमारा कल्खोज़् तभी सफल हो सकता है, यदि फसल अधिकसे अधिक उपजे। उपज तभी अधिक हो सकती है, जब फसलोंकी बारी बाँधनेमें नवीनतम तरीके इस्तेमाल किये जायँ अच्छे बीजों और आधुनिकतम मशीनोंका उपयोग किया जाय। सबसे जरूरी चीज है खाद। इसके लिये अधिक ढोर चाहिये। ढोर भी कल्खोज़की आमदनीको बढ़ाते हैं।"

कल्खोज़के कामको संगठित करनेके लिये येगोरोवाको बहुत मेहनत करनी पड़ती। कामकी टोलीको ठीक तरहसे चुनना था। उसके कार्यक्रमको बतलाना पड़ता और योजना ठीक करनी होती। किसानोंको यह विश्वास दिलाना था, कि वैयक्तिक कामकी अपेक्षा कल्खोज़का काम ज्यादा लाभका है। कल्खोज़में कार्यदिनके अधिक पारिश्रमिकने किसानोंको इसपर विश्वास दिला दिया और समझने लगे कि उनके कामका हरेक दिन और हरेक घंटा ज्यादा पैसा लाता है। इसलिये वह कामोंको और अच्छी तरह करने लगे।

येगोरोवाने कल्खोज़की आरंभिक अवस्थाका वर्णन करते हुए कहा—"सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी, कि कल्खोज़के किसान आरम्भसे ही समझने

लगे, कि उनके फार्ममें नई सम्पत्ति जमा हो रही है और कल्खोज् दिन-पर-दिन अधिक समृद्ध और संपन्न होता जा रहा है। यह इस बातका पक्का सबूत था, कि हम ठीक रास्तेपर हैं और हमारा प्रारम्भ अच्छा है।"

× × ×

यह ग्यारह साल पीछेकी बात है।

मोटी बरफ देहातको ढाँके हुए थी। एक कार उसके ऊपरसे सड़कपर जा रही थी। यद्यपि ठंडक थी, तो भी रात साफ थी और कारके छोटे झरोखेसे दूर गाँवोंकी छोटी-छोटी टिमटिमाती प्रकाशकी किरणें दिखाई पड़ती थीं। हाल हीमें सेनासे लौटकर आये ड्राइवरने कहा—"जैसे ही बिजलीकी रोशनी दिखावे, समझ लेना कि अन्दोतिनो पहुँच गये।"

उसका कहना ठीक था। जैसे ही गाड़ी बाँई तरफ घूमी, सैकड़ों बिजलीके दीपक दिखाई पड़े। सड़कके दोनों तरफ लम्बे-लम्बे वृक्ष थे और जल्दी ही गोशाला और भंडारकी सफ़ेद दीवालें दिखाई देने लगी। गाड़ी गाँवके भीतर घुसी और बिजलीघरकी डाजेल मोटरकी एक-समान घनघनाहट सुनाई देने लगी।

दूसरे दिन गाँव दूसरासा ही दिखाई दिया। पहलेसे और अधिक बड़ा, और और अधिक सुन्दर। बीचमें सीधी सड़क थी, जिसकी दोनों तरफ स्वच्छ बङ्गले और उनके सामनेके हातेमें बरफकी समतल चादर बिछी थी। ऊँचे भोजपत्र और देवदारुके वृक्षोंके नीचे कल्खोज्की सुदृढ़ शालाएँ खड़ी थीं। सड़क पत्थरके टुकड़ोंसे पक्की की गयी थी और शिरके ऊपरसे बिजलीके तार जा रहे थे—यह बतला रहे थे कि कल्खोज् सफल रहा। येगोरोवा घुटनों तक लटकते भेड़के चमड़ेकी कोट पहने और शिरमें ऊनी रूमाल बाँधे दिखलाई दी थी। उसकी चालाकी फुर्ती उसकी उम्रको ढाँक रही थी। प्रसिद्ध नोविकोफ़-कुटीरोंके पाससे गुजरते देखनेमें आया, कि उनकी दीवारें बिल्कुल सफ़ेद रँगी हुई हैं और उनके किनारे बाग लगे हुए हैं। उनके आगे प्राय:

एक किलोमीतर तक कल्खोज़के किसानोंके नये बङ्गले पाँतीसे खड़े हैं। कहीं पुराने कुटीरोंके छोटे-छोटे जँगले और कहीं नये बँगलोंके शीशे लगे बड़े जँगले! बहुतसे नये मकान बन रहे थे जिनके देखनेसे मालूम होता था, कि वह युद्धके पहलेके मकानोंसे अधिक बड़े होंगे। कल्खोज़की आँटा-मिल युद्धके समय बनी थी। यह बहुत बड़ी और काफी जगहदार थी, और कल्खोज़की सारी पिसाई कर सकती थी। मिलकी बगलमें एक बँगला मिलके मैनेजरके रहनेके लिये बन रहा था। इसके साथ एक मेहमानखाना भी था जिसमें पिसाईके लिये आने वाले पड़ोसके गाँवके कल्खोज़ी ठहरा करेंगे। और आगे कल्खोज़के अस्तबल, शूकर-शालाएँ, मशीन रखनेके गोदामें और चारा बनानेके कुंड थे। वह बिल्कुल नये मालूम होते थे। शूकर-शालामें बहुतसी अच्छी जातिके सूअर थे। येगोरोवाने कहा—'सारे जिलेके सबसे अच्छे सूअर' येगोरोवा अपने अस्तबलके ४५ घोड़ोंके लिये भी उचित गर्व करती थी। पशुओंकी देखभाल करना किसानोंका सबसे आवश्यक कर्तव्य है, और येगोरोवा इस कर्त्तव्यको अच्छी तरह पालन करती है।

कल्खोज़के मकानोंके परे देवदारोंका एक झुरमुट था। यहीं दो तल्ला ईंटका बना स्कूल-भवन है।

काम शुरू हो गया था, और स्कूलसे आफिस जाते वक्त कितनी ही टुकड़ियोंको काममें लगे देखा गया। तरकारीके बगीचेमें स्त्रियाँ काँचके गर्मघरोंको साफ करके बसंतके लिये तैयार कर रही थीं। मेवा बागमें कितनी ही स्त्रियाँ ठंडकसे बचानेके लिये सेवके पौधोंको तिनकोंसे ढाँक रही थीं। कुछ गाड़ियाँ गौशालाके लिये चारा ला रही थीं। कल्खोज़की लारी कुछ जानवरोंको लादकर शहर गई थी।

कई आदमियोंने येगोरोवाको बात करनेके लिये रोका। बातचीत संक्षिप्त और बिल्कुल कामकी होती। येगोरोवाके पास हर प्रश्नका उत्तर था। यह सत्तर साला बुढ़िया कल्खोज़ी किसानोंकी कितना आदर-पात्र है, उसे देखकर आश्चर्य होता था। कल्खोज़की हर एक चीज उसकी आँखोंके सामने

है। उसके निर्णय बिल्कुल उपयुक्त और साफ होते हैं। और उनसे शायद ही कभी विरोध प्रगट किया जाता है। अभी आफिसमें भी उससे ब त बातें पूछी गईं, जिनमें हिसाब-किताबसे लेकर आलूको ढोने तककी बातें थीं। उसने कई पत्रों पर अच्छी तरह पढ़कर हस्ताक्षर किये। मेजपर रखे चश्मेकी उसे कभी जरूर त नहीं पड़ी।

× × ×

शामको येगोरोवाने अपने जीवन और भविष्यकी योजनाके बारेमें कुछ कहा—'जब मैं तरुणी थी और बापके खेतमें काम करती थी, घोड़ोंके सम्हालनेका काम मेरे जिम्मे था। वह सदा निर्बल और भूखे रहते थे। ऐसे घोड़ोंसे खेत जोतना उन पर अत्याचारके सिवा और कुछ नहीं था। एक बार यदि गाड़ी गहरे कीचड़में फँसी तो फिर घोड़े उसे बाहर नहीं निकाल सकते थे। तबसे मैं स्लेज (बेपहिया गाड़ी) में तेज घोड़ोंको जोतकर चढ़नेको सपनाती थी। लेकिन अपने स्वप्नको सच्चा करनेके लिये मुझे बहुत वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसी वक्त हम अच्छी जातके घोड़ोंको उपजानेमें सफल हुए, जब हमारे यहाँ कल्खोज् बना। हम उन्हें गर्मियों और जाड़ोंमें खेतोंमें जोतते थे। उन्हें गाड़ीमें जोत जिला केन्द्र जाते। यह इसलिये कि अस्तबलमें खड़े-खड़े वह बहुत मोटे न हो जायँ। सचमुच यह वास्तविक घोड़े थे, हवाकी तरह तेज। किंतु लोगोंको कभी संतोष नहीं होता। वह कुछ और बेहतर चीजें चाहते हैं। हमारे पास अच्छे घोड़े थे, किंतु हमारी इच्छा हुई मोटर की। कल्खोज्के चौथे साल हमने देखा कि हमारे पास अनाजकी बिक्रीका काफ़ी पैसा पड़ा हुआ है। मैंने कल्खोज्के मेम्बरोंको परामर्श दिया कि हमारे पास एक मोटर-लारी होनी चाहिये। कहनेमें देर थी लेकिन काम पूरा हो गया। हम शहर गये, मोटर खरीदी और चढ़कर कल्खोज् लौट आये। मुझे अपनी लारीका बहुत अभिमान है। जब कभी मैं पड़ोसी कल्खोजोंमें जाती हूँ, तो लोगोंसे कहती हूँ—'देखो कल्खोजी

जीवन क्या कर सकता है?' हमारे पास मोटरकार भी हो गई। हमने एक दूसरी लारी भी खरीद ली है।'

पिछले साल कल्खोज-समितिने गाँवमें होकर बहने वाली सेवेकी नदी-पर पनबिजली-स्टेशन बनानेका विचार किया। समितिने देखा कि 'फ्लाम्या कल्खोज़के लिये अकेले यह काम पूरा करना मुश्किल होगा। स्थानीय अधिकारियोंकी सहायता प्राप्त की गई। इंजीनियरोंको नियुक्त करके उनसे ६५ किलोवात पनबिजली स्टेशनकी योजना बनवाई गई। यह स्टेशन आस-पासके पाँच कल्खोज़ों और उनकी सारी इमारतोंके लिये बिजली देनेको काफी है। जब पता लगा कि सारा खर्च साढ़े छः लाख रूबल होगा, तो कल्खोज़ोंने ज़रा भी देर करना पसन्द नहीं किया। फ्लाम्या कल्खोज़ने अकेले ही पचासी हजार रूबल, गृह निर्माण सामग्री, सामान ढोनेके लिये लारियाँ और कमकरोंके लिये अन्न प्रदान किया। १६४६के जाड़ोंमें सेवेकी जमी हुई थी और काम पूरे वेगमें चल रहा था। पत्थर, बालू, और सीमेंट जगहपर गिरा दिया था। बढ़ई अपने काममें लगे थे १९४७के बसन्तमें बाँध तैयार हो जाने वाला था, जिससे नदीका पानी सात मीतर (१६ हाथ) ऊँचा हो जायेगा। मशीन रखनेके लिये घर बनाया जाने वाला था। फ्लाम्या कल्खोज़के पास बिजली तैयार करनेका अपना कारखाना था, परन्तु पनबिजलीकी सस्ती बिजली और भी दूसरे कामोंके उपयोगमें आ सकती थी।

गाँवमें बेहतर और सांस्कृतिक वातावरण पैदा करनेकी लोगोंमें बड़ी इच्छा है। अब अवदोतिनों "भिखमंगा" गाँव नहीं। अब वहाँ नंगी गन्दी ईंट की दीवारें नहीं, उनपर साफ चिकना सफेद प्लास्तर लगा हुआ है। फर्शपर खुरदरे लकड़ीके तख्तोंकी जगह कालीन बिछे हैं। कमरे स्वच्छ हैं और उनमें नागरिक ढंगके फर्नीचर रखे हैं। करीब-करीब सभी घरोंमें घड़ी फोनोग्राफ, सिलाई मशीन, पुस्तकाधानी और रेडियो मौजूद हैं। अपनी जवानी-में येगोरोवा उन चंद लड़कियोंमें थी, जो लिख पढ़ सकती थीं। अब सभी बच्चे स्कूल जाते हैं और कितने ही मास्कोके कालेजोंमें पढ़ रहे हैं। गाँवके

दश पुत्र-पुत्रियाँ इंजिनियर अध्यापक और कृषि-विशेषज्ञ हैं। यह सारा विकास कल्खोज़के उत्पादनमें जो सफलता हुई उसीसे हुआ। अधिक अन्न और बेहतर पशु पैदा करनेके लिये यहाँके किसानोंने कठिन साधनाकी, यह वहाँके उपज और वेतनके आँकड़ोंसे मालूम होता है युद्धसे पहले प्रति हेक्तर (१ हेक्तर २·४७ एकड़) दश-बारह सेन्तनेर (७, ८ मन) अनाज बहुत काफी समझा जाता था और अब मारिया प्लोलेत्येवाके दलने २० सेन्तनेर उच्च दर्जेका गेहूँ औसतन पैदा किया। अच्छे चकमें २७ सेन्तनेरसे भी अधिक पैदावार हुई। प्रति कार्यदिन* इकलोग्राम (पौने चार सेर) अनाज, आठ किलोग्राम (दश सेर) आलू डेढ़ किलोग्राम गोभी आदि तरकारी तथा कुछ मांस और मधुके अतिरिक्त सात रूबल नगद भी मिला। एक दिनके कामके लिये पौने चार सेर अनाज। दश सेर आलू, पौने दो सेर तरकारी, कुछ मांस और मधु और ऊपरसे तीन रुपयासे अधिक नगद पैसा—इतना यदि अपने यहाँ मिलने लगे; तो किसानोंकी जीवन कैसा समृद्ध हो जायेगा? और, यह असम्भव बात नहीं है। हमारे यहाँके किसान अन्दोतिनोंके किसानोंसे कम मेहनत करने वाले नहीं हैं और न हमारी जमीन अन्दोतिनोंकी जमीनसे कम उर्वर हैं। हमारे यहाँ वहाँ जैसा कड़ाकेका जाड़ा नहीं और न सालमें सात महीना खेतोंको फसलसे खाली रहनेकी जरूरत है। यदि भूमिके भीतर और बाहर बहती गंगा धाराका उपयोग करें—जिसके लिये साइन्सने हमारे हाथमें प्रचुर साधन दे दिया है—तो सालमें कमसे कम तीन फसल, धानके खेतोंमें भी दो फसल, तैयार हो सकती है। खाद्य हमारे लिये दुर्लभ नहीं हो सकता। यह भी ख्यालमें रखना चाहिये, कि अन्दोतिनोंका हर तीन व्यक्तियोंका परिवार एक हजार कार्य दिन काम करता है अर्थात् उसकी सालाना आमदनी आठ हजार रुपयेके करीब है।

*एक दिनके कामके परिमाण—जुताई, बुआई, कटाई आदि खेतीके विविध कामोंमें एक आदमीको जितना काम अवश्यकरणीय।

२. कलखोज़ क़ानून*

(कृषि-सम्बन्धी सहयोगके आदर्श नियम)

१७ फ़रवरी १९३५को द्वितीय अखिल-संघ-कलखोज़ उदर्निक-कांग्रेसने यह नियम बनाये; जिनको सोवियत् सरकार और कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समितिने भी स्वीकार किया।

(१) उद्देश्य और कार्य

१. ......जिला......गाँवके जाँगर चलानेवाले किसान स्वेच्छासे कृषि संबंधी सहयोगमें सम्मिलित होते हैं जिसमें कि वे उपजके साधनों तथा सबके संगठित श्रमके द्वारा कलखोज़—समाजवादीय अर्थनीतिको कुलकों तथा जाँगर चलानेवालोंके लुटेरों और शत्रुओंपर पूर्ण विजय प्राप्त करनेके लिए कलखोज़का निर्माण करना, तथा दरिद्रता और अज्ञानपर पूर्ण विजय प्राप्त करना, छोटी और वैयक्तिक खेतीके पिछड़ेपनको हटाना, श्रमकी उपजको बहुत ऊँचा बढ़ाकर कलखोज़के किसानोंके लिए बेहतर जीवन प्रदान करना सीखें।

कलखोजका मार्ग समाजवादका मार्ग है; और सिर्फ वही जाँगर चलाने वाले किसानोंके लिए अकेला ठीक मार्ग है। सहयोग (अर्तेल)के सदस्य निम्न बातोंकी जिम्मेवारी लेते हैं—अपने अर्तेलको मजबूत करना, सच्चाईसे काम करना, किये कामके अनुसार कलखोजकी आमदनीको बाँटना, सार्वजनिक सम्पत्तिकी रक्षा करना, कलखोज़की सम्पत्तिकी रक्षा करना, ट्रैक्टर और मशीनको ठीकसे सँभालना, घोड़ोंकी ठीकसे निगहबानी करना, किसान-मजदूर सरकारने जो काम उन्हें सौंपा है, उसे पूराकर अपने कलखोज़को बोल्शेविक कलखोज़ और कलखोजी किसानोंको समृद्ध बनाना।

---

*१९३८में लिखित पृष्ठ ७४४—७२

(२) भूमि

२. सहयोगके सदस्योंके खेतोंको अलग करनेवाली जो पहले मेड़ें थीं, वह तोड़ दी जायेंगी और सभी खेत एक महान् क्षेत्रके रूपमें परिणत कर दिया जायगा, और सहयोग उसे सामूहिक रूपसे काममें लायेगा।

सहयोगके अधिकारकी भूमि सारी जनताकी राजकीय सम्पत्ति है। किसान-मजदूर सरकारके क़ानूनके अनुसार वह हमेशाके लिए सहयोगको दे दी जाती है, लेकिन सहयोग न तो उसे खरीद-बेंच सकता है, न लगानपर दे सकता है। हर एक सहयोगको जिलाकी सोवियत् कार्यकारिणी समितियाँ गवर्नमेंटकी ओरसे दायमी बन्दोबस्तका प्रमाणपत्र देंगी; जिसमें सहयोगकी भूमिका परिमाण और निश्चित सीमा दर्ज रहेगी। एक बार सहयोगके भीतर जितनी भूमि आ गई, उसे कम नहीं किया जा सकता। हाँ, पर्ती जमीन या स्वतंत्र किसानोंकी अधिक जमीनसे उसे बढ़ाया जरूर जा सकता है; और वह इस तरहसे बढ़ाया जायगा, उसके बढ़ानेमें यह खयाल रखा जायगा कि बीचमें किसी दूसरेकी जमीन न आ जाय।

समाजवादी भूमिमेंसे एक छोटा-सा टुकड़ा—जो कि घरसे लगा होगा—हर एक कलखोजी घरको वैयक्तिक रूपसे इस्तेमाल करनेके लिए दिया जायगा।

हर घरके वैयक्तिक इस्तेमालके लिए मिली यह भूमि $\frac{1}{4}$ हेक्टर या $\frac{1}{2}$ हेक्टर और किन्हीं-किन्हीं जिलोंमें १ हेक्टर तक (जितनी भूमिमें घर है, उसे छोड़कर) होगी। इस परिमाणको उस इलाके या जिलेकी अवस्थाको देखकर स०स०स०र०के कृषि-विभागके आदेशानुसार संघ-प्रजातंत्रका कृषि-विभाग निश्चित करेगा।

३. लगातार चली गई, सहयोगकी भूमिको कभी भी कम नहीं किया जा सकता। सहयोगके छोड़नेवाले सदस्योंको सहयोगके अधिकारकी भूमिमें-से कुछ भी देना मना है। जो लोग सहयोगसे अलग होंगे, उन्हें राज्यकी

गैर-आबाद जमीनसे भूमि मिल सकती है। सहयोगकी भूमिको फ़सलकी बारीके अनुसार अनेक खेतोंमें बाँटा जायगा। फसलके बारी वाले खेतोंमें से एक भाग एक ब्रिगेडके लिए सदाके वास्ते दिया जायगा और वह फ़सलकी बारीके सम्पूर्ण कालमें उसे इस्तेमाल करेगा।

बहुत ज़्यादा ढोर पालनेवाले कल्खोजों में अगर वहाँ काफ़ी जमीन है और उसकी आवश्यकता है, तो एक निश्चित भूभाग फ़ार्म (पशुशाला)के साथ जोड़ दिया जायगा और उस फ़ार्मके ढोरोंके चारेके लिए वह खेतके तौरपर इस्तेमाल होगा।

(३) उपज के साधन

४. जुताईके काम करनेवाले पशु, खेतीके औजार (हल, बोने, काटने, दाँवने, आदि की मशीन), बीज-भंडार, समाजीकृत पशुओंके लिए आवश्यक परिमाणमें चारा, सहयोगके काम तथा कृषि-सम्बन्धी उपजके पैदा करनेके लिए जितने कामकाजोंकी जरूरत है, उनके लिए आवश्यक घर—ये सब समाजकी सम्पत्ति होंगी, व्यक्तिकी नहीं।

कल्खोज् परिवारके रहनेका घर उसके व्यक्तिगत पशु और मुर्गियाँ, एवं इन व्यक्तिगत पशुओंके रखनेके लिए जिन घरोंकी आवश्यकता होगी, उनका समाजीकरण नहीं होगा। वे कल्खोज् परिवारके व्यक्तिगत अधिकारमें रहेंगे।

कृषि-संबंधी औजारोंके समाजीकरणके साथ-साथ परिवारके अपने खेतमें काम करनेके लिए आवश्यक छोटे-छोटे औजारोंका समाजीकरण नहीं होगा।

आवश्यकता होनेपर सहयोग-प्रबंधक-समिति कल्खोज्के सदस्योंके वैयक्तिक तौरसे इस्तेमाल करनेके लिए समाजीकृत खेत जोतनेवाले जानवरोंमेंसे अनेक ओड़े किरायेपर दे सकती है।

सहयोग मिश्रित (कई जातियोंके)-पशुपालन (फ़ार्म)का प्रबंध करेगा;

और जहाँपर बहुत अधिक संख्यामें पशु हैं, वहाँ अनेक विशेष जातिकी पशुशालाओंका प्रबंध करेगा।

५. अनाज, कपास, चुकन्दर, सन, पटसन, आलू और तरकारी एवं चाय और तंबाकू पैदा करनेवाले जिलोंके कलखोजोंके हर एक घरको अधिकार है कि एक या दो बछड़ा, अपने छौनोंके साथ एक सुअर या यदि कलखोज-प्रबंधकारिणी अधिकार दे, तो अपने छौनोंके साथ दो सुअर, १० तक भेड़ और बकरी, जितना चाहें उतनी मुर्गी, खरगोश और शहदकी मक्खियोंकी २० मक्खीदानी रक्खें।

कृषि-प्रधान जिलोंमें जहाँ पशुपालन भी उन्नत है—हर एक कलखोजी घरको अधिकार है, कि वह बछड़ोंके अतिरिक्त २ या ३ गायें, अपने छौनोंके साथ २ या ३ सुअर, २० से २५ तक भेड़-बकरी, जितना चाहें उतनी मुर्गी और खरगोश, और २० तक शहदकी मक्खियोंकी मक्खी-दानियाँ रक्खें। ऐसे जिलोंमें निम्न स्थान शामिल हैं—खानाबदोश जिलोंसे दूरवाले कजाकस्तानके कृषि प्रधान जिले, बेलोरूसियाके योलेसीमे जिले, उक्रइन्के चेर्नीगोफ़् और कियेफ़् जिले, पश्चिमी सिबेरिया प्रान्तके बरबिस्कीको पथरीली भूमि तथा सिस्-अल्ताई जिले, ओम्स्क प्रान्तके इशिम् और तोबोल्स्क समुदायवाले जिले, बशकिरियाकी ऊँची भूमि, पूर्वी सिबेरियाका पूरबवाला भाग, सुदूरपूर्व-प्रदेशके कृषि-प्रधान जिले, उत्तर-प्रदेशके वोलोग्दा और खोल्योगुरि समूहवाले जिले।

उन जिलोंमें, जहाँ कि स्थायी तौरसे या आधी खानाबदोशीकी हालतमें पशुपालनका रवाज है, जहाँ पर कि खेती कम महत्त्व रखती है, और पशुपालन लोगोंका मुख्य व्यवसाय है—वहाँ कलखोज़के हर एक घरको अधिकार है कि बछड़ोंके अतिरिक्त ४ या ५ गायें, ३० से ४० तक भेड़-बकरियाँ, अपने छौनोंके साथ २ या ३ सुअर, जितना चाहें उतनी मुर्गियाँ और खरगोश, शहदकी मक्खियोंकी २० मक्खीदानी रखें। इस प्रकारके जिले ये हैं—खानाबदोशीके पासके जिले कजाकस्तानवाले पशुपालन-प्रधान जिले

तुर्कमानिस्तान, ताजिकिस्तान कराकल्पका, किर्गिजिस्तान ओइरोतिया, खकसिया, पश्चिमी-बुर्यत मंगोलिया, कल्मुक-स्वायत्त-जिला, दागिस्तान स्वायत्त-प्रजातंत्रकी ऊँची भूमि, चेचेनो-इंगुशिया, कबर्दिनो-बल्गारिया, उत्तरी काकेशस्के ओसेती और कराचयेफ् स्वायत्त-जिले और आजुर्बाइजान्, अर्मनी, गुर्जी संघ-प्रजातन्त्रोंकी ऊँची भूमियाँ।

जिन जिलोंमें खानाबदोशी पशुपालन-प्रधान व्यवसाय है, खेती जहाँ बिलकुल नाम मात्र है, और सर्वत्र पशुपालन ही गृहस्थीका काम है, उन जिलोंमें कल्खोजी प्रत्येक घरको अधिकार है, कि वह बछड़ोंके साथ ८से १० तक गायें, १००से १५० तक भेड़ बकरियाँ, जितनी चाहें उतनी मुर्गियाँ, १० तक घोड़े, ५से ८ तक ऊँट रक्खें। ऐसे जिले हैं—कजाकस्तानके खानाबदोशी जिले, बुर्यत् मंगोलियाके खानाबदोशी जिले और नागाइस्क जिला।

(४) सहयोगी कामकाज और उसका प्रबन्ध

६. सहयोगको उन योजनाओंके मुताबिक़ अपने कल्खोज़का प्रबन्ध करना होगा, जिन्हें कि किसान-मजदूर-राज्यकी संस्थाओंने कृषिकी उपजके बारेमें निश्चित किया है; और राज्यकी ओरसे सहयोगके लिए जो जवाबदेहियाँ हैं।

सहयोगको निम्न बातोंको पूर्णतया पालन करनेकी जिम्मेवारी लेनी पड़ेगी। कल्खोज़की विशेष अवस्था और स्थानीय वातावरणको नजरमें रखकर तैयारकी गई बुनाई, गर्मीका जुनाई, पाँतियोंके भीतर खेती करने, खेत काटने, दाँवने, पलिहर जोतनेकी योजना और पशुपालनके विकासके संबंधमें राजकीय योजनाको पूरा करना।

सहयोगकी प्रबंधकारिणी और उसके सभी सभासदोंका कर्तव्य होगा—

(क) उचित फ़सलकी बारीका अनुसरण कर, गहरी जुताई और हानिकारक घासोंको निकालकर परती और जुतहड़ ज़मीनको ठीक तरहसे इस्तेमाल करने तथा बढ़ानेके जरिए, एवं अधिक दामवाली फ़सलोंके समयपर सावधानीके साथ खेती करना,

कपासके समयपर देख-भाल, पंचायती और व्यक्तिगत दोनों तरहके पशुओंकी खादसे तथा धातुज खादसे खेतको ज़रखेज़ बनाना; हानिकारक कीड़ोंको नाश करना; बिना नुक़सान किये सावधानीके साथ फ़सल काटना; सिंचाईकी नहर-नालियोंकी रक्षा और सफ़ाई; जंगलकी हिफ़ाज़त करना; रक्षित जंगलोंका लगाना, स्थानीय कृषि-विभाग द्वारा निश्चित किये तथा कृषि-शास्त्रीय नियमोंका सख़्तीके साथ पालन करना;

(ख) बोनेके लिए उत्तम बीजका चुनना, उनको सावधानीके साथ साफ़ करना, चोरी और ख़राब होनेसे उनकी हिफ़ाज़त करना, उन्हें शुद्ध और हवा रोशनीवाले घरोंमें रखना, चुने हुए बीज द्वारा बोये जानेवाले खेतोंके क्षेत्रको बढ़ाना;

(ग) वैज्ञानिक ढंगसे भूमिको कलखोज़के खेतोंमें लाकर, उपेक्षित और गैर-आबाद ज़मीनको सुधार और जोतकर सहयोगके अधिकारमें आई सभी भूमिको इस्तेमाल कर जुतहड़को और बढ़ाना;

(घ) सहयोगके अधिकारवाले सभी जुताईके पशु, सभी सम्पत्ति, कृषि-संबंधी हथियार, बीज और दूसरे उपजके साधनोंको सहयोगके कामके लिए पूरी तौरसे इस्तेमाल करना और जिन ट्रैक्टर, मोटर, दँवाईकी मशीन, काटनेकी कंबाइन और दूसरी मशीनें जिन्हें कि मजदूर-किसान-सरकारने मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनोंकी मार्फ़त कलखोज़की सहायताके लिए दिया है, उनका पूर्णतया इस्तेमाल करना। कलखोज़के पशुओं और औज़ारोंको अच्छी अवस्थामें रखनेके ख़यालसे समाजीकृत पशुओं और औज़ारोंको ठीक प्रकारसे देख-रेख करनेका इन्तज़ाम करना;

(ङ) पशुपालन—और जहाँ संभव है वहाँ अश्वपालन—को संगठित करना, पशुपालनकी जगहोंमें पशुओंकी संख्या और उनकी

नसल और उपजको बढ़ाना, एक गाय या छोटा पशु पालकर ईमानदारीके साथ काम करनेवाले सहयोगके सदस्योंको सहायता करना, कल्खोजकी पशुशालाके पशुओंकेलिए ही नहीं, बल्कि व्यक्तियोंके अधीन भी जो पशु हैं, उनकी भी नसल सुधारनेके लिए अच्छी जातिके साँड़ोंका इस्तेमाल करना; पशु-शास्त्र और पशु-चिकित्सा सम्बन्धी निश्चित नियमोंका पालन करना;

(च) चारेकी उपजको बढ़ाना, गोचर-भूमि और तृण-भूमिको उन्नत करना, सहयोगके जो सदस्य ईमानदारीके साथ समाजवादी कार-बारमें काम कर रहे हैं, उनकी सहायता करना, और कार्य-दिनके बदलेमें जहाँ संभव है, वहाँ कल्खोजकी गोचर-भूमिको उन्हें चराने देना और जहाँ संभव है, वहाँ वैयक्तिक पशुओंके लिए उन्हें चारा देना;

(छ) स्थानीय प्राकृतिक अवस्थाके अनुसार कृषिकी उपजसे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे व्यवसायोंको विकसित करना, भिन्न-भिन्न जिलोंमें मौजूद दस्तकारीको तरक्की देना, पुराने पोखरोंको साफ़ करना और हिफ़ाजतसे रखना, तथा नये पोखरोंको बनाना और मछली-पालनकी उन्नति करना;

(ज) पंचायती तौर पर पशुशालाओं और सार्वजनिक गृहोंके निर्माणके लिए इंतज़ाम करना;

(झ) सहयोगके सभासदोंका व्यावसायिक ज्ञान बढ़ाना और कल्खोजी किसानोंको सहायता देकर उन्हें ब्रिगेडियर, ट्रैक्टर-ड्राइवर कंबा-इन-कमकर, मोटर-ड्राइवर, पशुचिकित्सासहायक, अश्वपाल, शूकरपाल, पशुपाल, भेड़पाल, चरवाहा और प्रयोग-शाला कमकर बननेके लिए शिक्षित करना;

(ञ) सहयोगके सदस्योंके सांस्कृतिक धरातलको ऊँचा करना, उन्हें

समाचार-पत्रों, पुस्तकों, रेडियो और सिनेमासे परिचित कराना, क्लबों, पुस्तकालयों और वाचनालयोंकी स्थापना करना, स्नानागारों और हज्जाम-दूकानोंको स्थापित करना खेतके कैम्पको शुद्ध और रोशनीसे युक्त बनाना, गाँवकी सड़कोंको अच्छी हालतमें रखना तथा उनके किनारे नाना प्रकारके वृक्षों—विशेषतया फलदार वृक्षों—को लगाना और कलखोजी किसानोंको उनके घरोंको सुधारने तथा सुन्दर बनानेमें सहायता करना;

(ट) स्त्रियोंको कलखोजके उत्पादनके काम तथा सामाजिक जीवनकी ओर आकर्षित करनेके लिए योग्य और अनुभवी कलखोजी स्त्रियोंको नेतृत्वके पदपर पहुँचाना; और जहाँ तक संभव है, वहाँ तक बच्चाखाना, किन्डरगार्टन तथा दूसरे उपायों द्वारा उन्हें घरेलू कामसे मुक्त करना।

(५) सदस्यता

७. सहयोगमें नये मेम्बर वे ही चुने जायेंगे, जिनको प्रबंध-कारिणीने सहयोगकी साधारण सभामें पेश कर मंजूरी ले ली है।

सभी जाँगर चलानेवाले नर-नारी—जो १६ वर्षकी अवस्थाको पहुँच गये हैं—सहयोगके सदस्य बन सकते हैं।

कुलक तथा जो लोग निर्वाचकताके अधिकारसे वंचित हैं, वे सहयोगमें शामिल नहीं किये जा सकते। इस नियमको निम्न प्रकारके व्यक्तियोंके बारेमें अपवाद समझा जा सकता है—

(क) निर्वाचकताके अधिकारसे वंचित पुरुषोंकी ऐसी सन्तान, जो कि कितने ही सालसे समाजके लिए उपयोगी काममें लगी हुई है, और समझकर काम करनेवाली है;

(ख) पहलेके कुलक तथा सोवियत् और कलखोजके विरुद्ध काम करनेके लिए निर्वासित कर दिये परिवारोंके आदमी, जिन्होंने अपने नये

निवास-स्थानमें ३ वर्षसे अधिक तक ईमानदारीसे काम करके और सोवियत् सरकारकी योजनाओंका समर्थन करके अपनेको सुधारा है।

वे स्वतंत्र किसान जिन्होंने कि सहयोगमें सम्मिलित होनेसे पूर्व दो सालके भीतर अपना घोड़ा बेच दिया है, और जिनके पास बीज नहीं है, वह तभी सहयोगमें सम्मिलित किये जा सकते हैं, जब कि वे स्वीकार करें कि अपने अगले ६ वर्षकी कमाईमेंसे घोड़े और बीजका दाम चुका देंगे।

८. सहयोगसे कोई सदस्य तभी निकाला जा सकता है, जब कि ऐसा प्रस्ताव सहयोगके कमसे कम ⅔ सदस्योंवाली साधारण सभामें स्वीकृत हुआ हो। सहयोगके सदस्योंकी साधारण सभाकी कार्यवाही लिखते समय यह स्पष्ट लिखना होगा, कि कल्खोज़के कितने सदस्य वहाँ उपस्थित थे, और कितनोंने निकाल बाहर करनेके प्रस्तावका समर्थन किया। सहयोगके सभासद् द्वारा जिला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समितिके पास उक्त फ़ैसलेकी अपील करने पर उसका अंतिम फ़ैसला जिला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समितिके विभागाध्यक्ष, सहयोग-प्रबंधकारिणीके अध्यक्षकी उपस्थितिमें करेंगे।

(६) सहयोगका कोष

९. जो कोई सहयोगमें शामिल होना चाहता है, उसे अपनी जोतके अनुसार प्रतिघर (परिवार) १० से ४० रूबल तक प्रवेश-शुल्क देना होगा। यह प्रवेश-शुल्क सहयोगके न बँटनेवाले कोषमें जमा होगा।

१०. कल्खोज़के सदस्योंकी समाजीकृत (पंचायती) सम्पत्ति (जुताईके पशु, खेतीके औज़ार, खेतीके मकान आदि)के मूल्यका ¼ से ½ तक सहयोगके न बँटनेवाले कोषमें जमा होगा। अधिक जोत वालोंसे अधिक सैकड़ा मूल्य लेकर न बँटनेवाली पूँजीमें शामिल किया जायगा। संपत्तिका बाकी बचा हिस्सा सदस्यके नाम सहयोगके शेयर (हिस्सेदारी)के रूपमें शामिल किया जायेगा।

प्रबन्ध-समिति सहयोग छोड़नेवाले सदस्यका अन्तिम हिसाब तैयार करेगी, और उनके शेयरके नक़द दामको लौटा देगी। छोड़नेवालोंको अपने पहलेके खेतोंके बदलेमें सहयोगकी भूमिकी सीमाके बाहर जगह मिलेगी। आम तौरसे हिसाब-किताब सरकारी वर्षके अन्तमें किया जायगा।

११. फ़सलकी आमदनी और पशुशालाकी उपजसे जो कुछ मिलेगा, उसका उपयोग सहयोग निम्न प्रकारसे करेगा—

(क) राज्यको दिये जानेवाले अनाज तथा बीजके क़र्ज़को अदा करना, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनको उसके कामकेलिए क़ानूनके अनुसार लिखे हुए इक़रारनामेके मुताबिक़ पैसा देना, उधार खरीदे हुए मालकी शर्तोंको पूरा करना;

(ख) बोनेकेलिए बीज और पशुओंकेलिए चारेका भाग साल भर पहलेसे अलग कर देना, और वार्षिक आवश्यकताके १० से १५ सैकड़े तक अधिक बीज और चारा आगे बुरी फ़सल या अपर्याप्त चारा होनेके वक़्त काममें लानेकेलिए साल-साल नया सुरक्षित रखना।

(ग) साधारण सभाके निश्चयानुसार एक फ़ंड क़ायम करना, जो कि अंग-भंग हो गये सदस्यों, बूढ़ों, चन्द दिनोंके लिए शरीरसे अयोग्य, लाल सेनाके आदमियोंके कष्टमें पड़े हुए परिवारोंकी सहायता और बच्चा-खाना, तथा किंडरगार्टनके चलानेमें खर्च होगा। इस फ़ंडमें सारे कल्खोज़की आमदनीका दो सैकड़ासे ज़्यादा नहीं दिया जा सकता।

(घ) सहयोगके सदस्योंकी साधारण सभाके निश्चयानुसार उपजका एक हिस्सा सरकारके हाथ या खुले बाजारमें बेचनेकेलिए अलग रख देना।

(ङ) सहयोगकी फ़सल तथा पशुशालाकी उपजका बचा हिस्सा कार्य-दिनकी संख्याके अनुसार सहयोगके सदस्योंमें बाँट दिया जायगा।

१२. सहयोगको जो नक़द आमदनी होगी, उसे वह निम्न प्रकारसे खर्च करेगा—

(क) क़ानूनके अनुसार निश्चित पैसा राज्यको टैक्सके रूपमें देना और बीमेकी फ़ीस अदा करना;

(ख) उत्पादनके लिए चलते हुए कामकी आवश्यकता—कृषि सम्बन्धी औज़ारोंकी तात्कालिक मरम्मत, पशु-चिकित्सा सम्बन्धी सेवा, हानिकारक घासों और कीड़ोंको नष्ट करना आदिपर जरूरी खर्च करना;

(ग) सहयोगके प्रबन्ध और कार्य सम्बन्धी खर्चोंको चलानेकेलिए सारी नक़द आमदनीके दो सैकड़े तकको अलग कर देना;

(घ) ब्रिगेडियर तथा दूसरे कार्यकर्त्ताओंकी शिक्षा, बच्चाखानेका प्रबंध, रेडियो लगाने आदि सांस्कृतिक कामोंके लिए फंडका अलग कर देना;

(ङ) कृषि-सम्बन्धी औज़ारों तथा पशुओंके खरीदनेकेलिए, मकान बनानेके सामान, मकान बनानेके काममें बाहरसे बुलाकर लगाये गये कमकरोंकी तनख़्वाह देने और कृषि-बैंकको लम्बी मुद्दतके क़र्ज़के तात्कालिक देनेको अदा करनेके लिए सहयोगके न बँटनेवाले फंडमें पैसा रक्खेगा। यह पैसा सहयोगकी नक़द आमदनीका १० सैकड़ेसे कम नहीं और २० सैकड़ेसे अधिक नहीं होगा।

(च) सहयोगकी बाक़ी बची हुई सारी नक़द आमदनी सदस्योंमें उनके कार्य-दिनके अनुसार बाँट दी जायगी।

आमदनीको पानेके दिन ही सहयोगकी बहीमें लिख देना होगा।

सहयोग-प्रबन्धक-समिति अपनी आमदनी और खर्चका एक वार्षिक तख़मीना तैयार करेगी; लेकिन उसके अनुसार तभी काम होगा, जब कि सहयोगके सदस्योंकी एक साधारण सभाने उसे स्वीकार कर लिया हो।

प्रबंधक-समिति तख़मीनेमें दी हुई मदोंपर ही खर्च कर सकती है।

प्रबन्धक-समितिको अधिकार नहीं है कि वार्षिक तखमीनेकी एक मद्के पैसेको दूसरी मदमें खर्च करे। एक मदसे दूसरी मदमें खर्च करनेके लिए प्रबन्धक-समितिको साधारण सभासे आज्ञा लेनी होगी।

सहयोग अपने नक़द रुपयेको किसी बैंक या सेविंग बैंकके चलते-खातेमें रखेगा। चलते-खातेसे पैसा तभी निकाला जा सकता है, जब कि सहयोगकी प्रबन्धक समितिने आज्ञा दी हो। आज्ञा उचित समझी जायगी यदि सहयोगके अध्यक्ष या कोषाध्यक्षने हस्ताक्षर कर दिया हो।

(७) संगठन, वेतन और श्रमके सम्बन्धमें

१३. सहयोगका सभी काम साधारण सभामें स्वीकृत अन्दरूनी नियम और क़ायदेके मुताबिक़ उसके मेम्बरोंके निजी जाँगरसे किया जायगा। बाहरसे खेतीका मजदूर वही व्यक्ति रखा जायगा, जो विशेष ज्ञान और शिक्षा रखता है—जैसे कि कृषि-विशेषज्ञ, इन्जीनियर, मिस्त्री आदि।

खास अवस्थामें कुछ दिनोंके लिए मजदूरीपर किसीको तभी रखा जा सकता है, जब कि कोई ऐसा जरूरी काम हो, जिसे निश्चित समयके भीतर अपनी सारी शक्ति लगाकर भी सहयोगके सदस्योंकी शक्ति नहीं कर सकती; या कोई मकान आदि निर्माणका काम हो।

१४. प्रबन्ध-समिति सहयोगके सदस्योंमेंसे उत्पादनके कामकेलिए अलग-अलग ब्रिगेड नियुक्त करेगी।

खेत-ब्रिगेड, फ़सलकी एक बारीसे कमकेलिए नहीं नियुक्त किया जायगा।

खेत-ब्रिगेडको फ़सलकी बारीके समयके लिए फ़सलकी बारी वाले खेतमें-से एक खास हिस्सा मिलेगा।

कलखोज्की प्रबन्ध-कारिणी खास परवानेके ज़रिए हर एक खेत-ब्रिगेडको सभी आवश्यक औज़ार, जुताईके जानवर और रहनेके लिए मकान देगी।

पशुपालन-ब्रिगेडकी नियुक्ति तीन सालसे कमकेलिए न होगी।

सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी प्रत्येक पशुपालन-ब्रिगेडको पोसे-बढ़ाये जाने-

वाले जानवर, औजार, जुताईके जानवर और कामकेलिए आवश्यक मशीनरी, तथा पशुओंकेलिए जरूरी मकान देगी।

ब्रिगेडियर सहयोगके सदस्योंको काम बाँटेगा इसमें वह इस बातका खयाल रखेगा कि हर एक सदस्यको उसकी सबसे अधिक उपयोगिताके साथ इस्तेमाल किया जाय। वह किसी प्रकारका पक्षपात या भाईचारेका खयाल न रखेगा। काम देनेमें वह हर एक कमकरके शारीरिक बल, अनुभव और दक्षता-का पूरा खयाल रखेगा। गर्भिणी या दूध-पिलानेवाली स्त्रियोंको हल्का काम देगा। गर्भिणी स्त्रियोंको बच्चा पैदा होनेसे १ मास पहले और पैदा होनेके १ मास बाद काममें छुट्टी देगा; और इन दोनों महीनोंकेलिए आधे कार्य दिनके हिसाबसे वेतन देगा।

१५. सहयोगमें कृषि-सम्बन्धी काम छोटे छोटे टुकड़ोंमें बाँट करके किया जायगा।

सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी कृषि-सम्बन्धी कामके परिमाणका एक नाप तथा प्रति कार्यदिनके वेतनकी दर तैयार करेगी; और कल्खोज्‌की साधारण सभा उसे स्वीकार करेगी।

कामके परिमाणका नाप निश्चय करते वक्त हर एक प्रकारके कामोंको देखना होगा कि एक जवाबदेही रखनेवाला कमकर उतने समयमें कितना काम करता है। इसमें जुताईके जानवर, मशीन और खेतकी मिट्टीका भी खयाल करना होगा। प्रत्येक किस्मका काम जैसे एक हेक्तर जोतना, एक हेक्तर बोना, एक हेक्तर कपासका रोपना, एक टन अनाज दाँवना, एक सेन्तनेर चुकन्दर खोदना, एक हेक्तर सन निकालना; एक हेक्तर धान सींचना, एक लितर (लिटर = १·७५६८ पिंट = प्रायः १ सेर) दूधका दुहना आदि-का मूल्य प्रति कार्यदिनमें जोड़ते वक्त यह खयाल रखना होगा कि उस कामके करनेमें कार्यकर्त्ताकी चतुरताकी कितनी आवश्यकता है; उसमें कितनी कठिनाई और दुरूहता है; और सहयोगके कामकेलिए उसका महत्त्व कितना है। ब्रिगेडियर सहयोगके प्रत्येक मेम्बरको प्रायः (एक सप्ताहसे कमपर नहीं)

उसके सारे किये कामका परिमाण जोड़ेगा और निश्चित दरके अनुसार उक्त कल्खोज़ीके किये हुए कार्य-दिनोंकी संख्याको श्रम-बहीमें दर्ज करेगा।

प्रति-मास प्रबन्ध-कारिणी सहयोगके सदस्योंकी नाम-सूची उनके पिछले मासके किये हुए, कार्य-दिनोंकी संख्याके साथ टाँग देगी। प्रत्येक कल्खोज़ीके वार्षिक काम और आमदनीके जोड़को ब्रिगेडियर, सहयोगके अध्यक्ष तथा कोषाध्यक्षको जाँचना होगा। सहयोगके प्रत्येक सदस्यने जितने कार्य-दिन काम किये, उसकी सूची सर्व साधारणकी जानकारीके लिये टाँग दी जायगी; और सहयोगकी आयके बँटवारेके हिसाबको स्वीकार करनेकेलिए जिस दिन साधारण-सभा होगी, उस दिनसे कमसे कम दो सप्ताह पहले उक्त सूची टँग जानी चाहिए।

अगर एक खेत-ब्रिगेड अपने अच्छे कामके कारण अपने हिस्सेके खेतमेंसे कल्खोज़की औसत फ़सलसे अच्छी फ़सल पैदा करे, या अपने अच्छे कामके कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवोंसे अधिक दूध पैदा करे, पशुओंको ज़्यादा मोटा करे, और बछड़ोंको न गँवावे; तो सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी ब्रिगेडके सदस्योंको पारितोषिक देगी, जो कि उस ब्रिगेडके किये हुए तमाम कार्य-दिनों-की संख्याका १० सैकड़ा तक होगा और ब्रिगेडके श्रेष्ठ उदर्मिकों (तूफ़ानी कमकरों) को १५ सैकड़ा तक एवं ब्रिगेडियर तथा पशुशालाके प्रबन्धकको २० सैकड़ा तक पारितोषिक मिलेगा।

यदि कामकी ख़राबीके कारण खेत-ब्रिगेड अपने हिस्सेके खेतसे कल्खोज़की औसत फ़सलसे कम फ़सल पैदा करे, या अपने बुरे कामके कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवोंसे औसतसे कम दूध पैदा करे, पशुओंकी मुटाईको औसतसे कम करे, और बछड़ोंको औसत संख्यासे अधिक गँवाए, तो सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी उक्त ब्रिगेडके सब सदस्योंकी आयमेंसे १० सैकड़ा काट लेगी।

सहयोगकी आमदनीको सदस्योंमें बाँटते वक़्त हर एक सदस्यके किए हुए कार्यदिनकी संख्या मात्रका ख़याल रखा जायगा।

१६. सालके भीतर किसी सदस्यको अगवढ़ नक़द दिया जा सकता है;

लेकिन वह रक़म उसके अपने कामसे मिलनेवाली रक़मसे आधीसे अधिक नहीं होनी चाहिए।

अनाज-दँवाईके आरंभके समयसे सदस्योंको अगवड़ दी जा सकती है; लेकिन वह कल्खोज़्की भीतरी आवश्यकताके लिए दाँकर अलग रखे हुए अनाजका १० से १५ सैकड़ा होना चाहिए। जिन सहयोगोंमें औद्योगिक फ़सल (कपास आदि) बोई जाती है, उनके सदस्योंको राज्यकेलिए दी जानेवाली कपास, सन, पटसन, चुकंदर, चाय, तंबाकू इत्यादिको अदा किये बिना भी नक़द आमदनी बाँटी जा सकती है; लेकिन इस बाँटनेमें यह ध्यान रखना होगा कि वह जिस परिमाणमें माल अदा किया गया है, उसके अनुसार हो; प्रति सप्ताह एक बारसे अधिक नहीं तथा अदा किये हुए मालके रूपमें मिले पैसेके ६० सैकड़े तक ही हों।

१७. सहयोगके सभी सदस्य इस बातके लिए परस्पर प्रतिज्ञा-बद्ध होंगे कि वह कल्खोज़्की सम्पत्ति और कल्खोज़्की भूमिपर काम करने वाली सरकारी मशीनको बहुत सावधानीसे रखेंगे, ईमानदारीसे काम करेंगे, कल्खोज़ी क़ानून, साधारण-सभाके प्रस्ताव और प्रबन्ध-कारिणीके आदेशोंके अनुसार चलेंगे; सहयोगके आन्तरिक नियमों और उपनियमोंका पालन करेंगे; प्रबन्ध-कारिणी और ब्रिगेडियर्ने जो काम उनके जिम्मे लगाया है, उसको अक्षर अक्षर पूरा करेंगे; अपने सामाजिक कर्तव्यका पालन करेंगे, और श्रम-सम्बन्धी विनयका ख़याल रखेंगे।

यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक सम्पत्तिको बेपरवाई या असावधानीसे इस्तेमाल करेगा, बिना उचित कारणके काममें ग़ैरहाज़िर होगा, थोड़ा काम करेगा, या श्रम-सम्बन्धी-विनयों और नियमोंकी अवहेलना करेगा, तो प्रबन्ध-कारिणी ऐसे व्यक्तिको आन्तरिक नियम-उपनियमोंके अनुसार दण्ड देगी, जो इस प्रकार होगा—जिस कामको बुरी तौरसे किया, उसे बिना वेतन पाये फिरसे करना होगा; साधारण सभामें उन्हें निन्दित, लज्जित या सतर्कित किया जायगा; उनका नाम काले बोर्डपर लिखकर टाँगा जायगा; ५ कार्यदिन तककी आम-

दनी तकका जुर्माना किया जायगा; कामके पदसे नीचे उतार दिया जायगा; कुछ समयकेलिए कामसे अलग कर दिया जायगा ।

अगर सभी शिक्षा देनेकी तदबीरें और दण्ड बेकार साबित हुए, और सहयोगका सदस्य अपनेको न सुधरनेवाला साबित करे; तो प्रबन्ध-कारिणी समिति उक्त सदस्यको सहयोगसे बाहर करनेके लिए साधारण-सभामें प्रस्ताव पास करायेगी । यह बहिःनिष्कासन कृषि-सम्बन्धी सहयोगके आदर्श नियम धारा ८के अनुसार होगा ।

१८. सार्वजनिक कल्खोजी या राजकीय सम्पत्तिको हानि पहुँचाना सहयोगकी सम्पत्ति और पशुओंको तथा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनकी मशीनोंको जानबूझकर नुक़सान पहुँचाना—इन्हें कल्खोज़्के सामूहिक हितके प्रति द्रोह और जनताके शत्रुओंका पक्ष लेना समझा जायगा ।

जो व्यक्ति कल्खोज़्-प्रथाकी जड़को इस प्रकार बुरी नीयतसे खोदनेके अपराधके अपराधी पाये जायँगे, सहयोग उन व्यक्तियोंको मज़दूर-किसान-राज्यके क़ानूनके अनुसार पूर्णतया कठोर दण्ड देनेकेलिए न्यायालयमें भेजेगा ।

(८) सहयोगका साधारण प्रबन्ध

१९. सहयोगके साधारण प्रबन्धका काम सहयोगके सदस्योंकी साधारण-सभामें होगा । बीचके समयमें काम चलानेकेलिए साधारण-सभा एक प्रबन्ध-कारिणी-समिति निर्वाचित करेगी ।

२०. साधारण-सभा सहयोगके प्रबन्धकेलिए सर्वोपरि संस्था है । साधारण-सभामें निम्न काम होंगे—

(क) सहयोगके अध्यक्ष प्रबन्ध-कारिणी-समिति और आय-व्यय-निरीक्षक-समितिका निर्वाचन, आय-व्यय-निरीक्षक-समितिका निर्वाचन तबतक जायज़ नहीं समझा जायगा, जबतक कि ज़िला-सोवियत्-कार्य-कारिणी-समितिने उसे मंजूर न कर लिया हो;

(ख) सहयोगमें नये सदस्योंका लेना और पुराने सदस्योंको निकालना;

(ग) वार्षिक उपजकी योजना, आय-व्ययका तख़मीना, नई इमारत बनानेकी योजना, हर एक कार्यदिनके कामका मान और वेतनकी दर निश्चित करना;

(घ) मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनके साथके इक़रारनामेको स्वीकार करना;

(ङ) प्रबन्ध-कारिणीकी वार्षिक रिपोर्टको स्वीकार करना। इस रिपोर्टमें निरीक्षक-समितिकी राय तथा कृषि-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कार्रवाइयों-पर प्रबन्ध-कारिणीका विवेचन भी शामिल रहना चाहिए;

(च) हर प्रकारके फ़ंडों तथा नक़द और अनाजके रूपमें प्रति कार्यदिनके-लिए दिये जानेवाले वेतनके परिमाणोंको तय करना।

(छ) सहयोगके आन्तरिक नियमों-उपनियमोंको स्वीकार करना।

ऊपर लिखी हुई उपधाराओंकी जो बातें गिनाई गई हैं, उनके बारेमें प्रबन्ध-कारिणीका निश्चय तब तक जायज़ नहीं समझा जायगा, जब तक कि सहयोगकी साधारण-सभाने उसे मंज़ूर नहीं कर लिया हो।

कुछ बातोंके अपवादके साथ सभी प्रश्नोंके निर्णयकेलिए सहयोगके आधे सभासदोंकी उपस्थिति साधारण सभाके लिए 'कोरम' है। अपवादकी बातें ये हैं—

सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी और अध्यक्षका चुनाव, सहयोगकी सदस्यतासे किसीको बाहर निकालना और भिन्न-भिन्न प्रकारके फ़ंडोंके परिमाणका निश्चय करना; इन प्रश्नोंके निर्णय के लिए 'कोरम' ⅔ है।

साधारण-सभाका निर्णय बहुमतसे और खुले वोट द्वारा संपादित होगा।

२१. सहयोगके साधारण प्रबन्धकेलिए सहयोगकी साधारण सभा अपने परिमाणके अनुसार ५से ९ व्यक्तियोंकी एक प्रबन्ध-कारिणी समिति २ वर्षके लिए चुनेगी।

सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी समिति सहयोगके काम और उसके राज्यके प्रति ज़िम्मेवारियोंको पूरा करनेकेलिए सहयोगके मेम्बरोंकी साधारण सभाके सामने जवाबदेह है।

२२. सहयोगकी साधारण-सभा सहयोग और उसके ब्रिगेडोंके कामके प्रतिदिनके पथ-प्रदर्शन तथा प्रबन्ध-कारिणीके निश्चयोंके पूरा करनेके वास्ते दैनिक निरीक्षणका काम करनेके लिए सहयोगकी सहयोगकेलिये एक अध्यक्ष चुनेगी। वही प्रबन्ध-कारिणी-समितिका भी अध्यक्ष होगा।

अध्यक्षको लाजिम है कि वह तात्कालिक बातोंके विचार और आवश्यक निर्णयकेलिए प्रतिमास कमसे कम दो बार प्रबन्ध-कारिणीकी बैठक बुलावे।

अध्यक्षकी सिफ़ारिशपर प्रबन्ध-कारिणी अपने सभासदोंमेंसे एकको उपाध्यक्ष चुनेगी।

उपाध्यक्षको चेयरमैनकी बात हर काममें माननी होगी।

२३. ब्रिगेडियरों और पशुशाला-प्रबन्धकोंको प्रबन्ध-कारिणी कमसे कम २ सालके लिए नियुक्त करेगी।

२४. सम्पत्ति और आय-व्ययका हिसाब रखनेकेलिए प्रबन्ध-कारिणी सहयोगके मेम्बरोंमेंसे या बाहरसे एक वैतनिक 'मुनीम' रखेगी। मुनीमको सर्वमान्य तरीकेके अनुसार हिसाब-किताब रखना होगा; और उसे प्रबन्ध-कारिणी समिति तथा अध्यक्षके पूर्णतया आधीन रहना होगा।

मुनीमको अधिकार नहीं है कि अपने नामसे सहयोगके फ़ंडको खर्च करे या अगवड़ दे या जिन्सके रूपमें प्रदान करे। यह अधिकार सहयोगकी प्रबन्ध-कारिणी और अध्यक्षको ही है। सहयोगके पैसेके सभी खर्चके कागजोंको मुनीम और अध्यक्ष या उपाध्यक्षके हस्ताक्षरसे जायज समझा जायगा।

२५. आय-व्यय-निरीक्षक-समितिका कर्तव्य है कि वह प्रबन्ध-कारिणी-की आर्थिक और पैसेसे सम्बन्ध रखनेवाली कार्रवाइयोंका निरीक्षण करे और देखे कि नक़द या जिन्स अनाजके रूपमें आई आमदनी ठीक तौरसे कागजमें दर्ज हुई है या नहीं। वह यह भी देखे कि फ़ंडके खर्चमें नियमोंका पालन हो रहा है या नहीं, और सहयोगकी सम्पत्ति अच्छी हालतमें रखी जाती है या नहीं। सहयोगकी सम्पत्ति और नक़द फ़ंडमें चोरी या धोखा तो नहीं किया जा रहा है। सहयोग राज्यके प्रति अपने दायित्वको कैसे पूरा कर रहा है।

अपने क़र्ज़ोंको अदा करने तथा अपने कर्ज़दारोंसे कर्ज़ वसूल करनेमें वह कैसे काम कर रहा है।

उपर्युक्त बातोंके अतिरिक्त आय-व्यय-निरीक्षक-समितिका यह भी कर्तव्य है कि वह सावधानता-पूर्वक सहयोगके अपने सदस्योंके साथ वाले हिसाबको देखे। यदि कोई धोखाबाज़ी हो, कार्य-दिनोंकी गिन्तीमें ग़लती हो, कार्यदिनोंके वेतनको समयपर न दिया गया हो, और इसी तरहके और भी सहयोग और उसके सदस्योंके हितके ख़िलाफ़ होनेवाले जो काम हों उनको प्रकट कर दे।

आय-व्यय-निरीक्षक-समिति प्रति वर्ष चार बार निरीक्षण करेगी। जब प्रबन्ध-कारिणी अपनी वार्षिक रिपोर्ट साधारण-सभाके सामने पेश करेगी उसी समय आय-व्यय-निरीक्षण-समिति भी अपने निरीक्षण-परिणामको रखेगी। इसे साधारण-सभा प्रबन्ध-कारिणीकी रिपोर्टके सुननेके बाद ही सुनेगी। साधारण सभा आय-व्यय-निरीक्षणकी रिपोर्टको स्वीकार करेगी।

अपने काममें आय-व्यय-निरीक्षण-समिति सहयोगके मेम्बरोंकी साधारण सभाके अधीन होगी।

३. सोव्खोज़्
(सरकारी खेती)

(१) प्रगति—सोवियत्की साम्यवादी खेती दो हिस्सोंमें विभक्त है। एकको सोव्खोज़् कहते हैं और दूसरेको कलखोज़्। कलखोज़्के बारेमें हम अभी कह आये हैं, यहाँ सोव्खोज़्के बारेमें भी कुछ कह देना ज़रूरी है।

क्रान्तिके पहले प्रायः सारा रूसी साम्राज्य छोटी-बड़ी ज़मींदारियोंमें बँटा था; और ज़मीनके साथ किसानोंका भी ज़मींदार ही मालिक था। ज़मीन कितने मालिकोंमें बँटी थी, उसे इस तालिकासे आप समझ सकते हैं—

ज़मींदार	रक़बा (हेक्टर)
ज़ार-वंश (सिर्फ़ यूरोपीय रूसमें)	८० लाख
२८ हज़ार	६ करोड़ २० लाख

२८ हजार जमींदारोंकी जोतमें उतनी जमीन थी, जितनी कि १ करोड़ किसान जोतते थे। किसानोंकी जमीन भी कम उपजाऊ और निकम्मी थी।

क्रान्तिके बाद जमींदारोंकी जमींदारी जब्त कर ली गई और उसमेंसे कितनी ही तो किसानोंको दे दी गई; और कुछमें सरकार ख़ुद खेती कराने लगी। यही सरकारी खेती सोव्खोज् कहलाती है। कल्खोज् और सोव्खोज़में फ़र्क़ यह है कि जहाँ कल्खोज्के नफ़ा-नुक़सानका तअल्लुक़ उस गाँवके कल्खोज् भरसे है, वहाँ सोव्खोज्के नफ़ा नुक़सानकी जिम्मेवारी सोवियत् सरकारकी है। कारख़ानोंकी तरह कामका घंटा और तनख़्वाह यहाँ बँधा हुआ है। एक तरह सोव्खोज्को अन्न अनाज पैदा करनेकी फ़ैक्टरी कह सकते हैं।

बड़े-बड़े जमींदारोंकी अपनी जोतके जो खेत थे, उन्हींको सरकारने पहले सोव्खोज्के रूपमें परिणत किया। पीछे जंगल काटकर या नहर निकालकर और भी नये सोव्खोज् बनाये गये। इस प्रकार सोव्खोज्का आरम्भ नवम्बर १९१७से होता है। १९३७के सोव्खोजोंके बारेमें एक सोवियत् समाचार-पत्रने इस प्रकार लिखा है—

१९३७में सोव्खोजोंने १९३६से डेढ़ गुना अनाज पैदा किया। अर्थात् कुल ३२ करोड़ ७७ लाख पूड (१ पूड = ३६ पौंड) अर्थात् १४ करोड़ ६४ लाख मन। गीगन्त सोव्खोज्—जो कि अपने क़िस्मका सबसे बड़ा सोव्खोज् —प्रति एकड़ ३४ बुशल् गेहूँ तैयार करनेमें सफल हुआ है। अकेले इस सोव्खोज्ने सरकारको ४१ हजार टन गेहूँ दिया। एलेक्स्रोजावोद् सोव्खोज् (ओरेन्-बुर्ग प्रान्त)ने प्रति एकड़ २८·५ बुशल् वसन्तका गेहूँ पैदा किया। इस सोव्खोज्के हाथमें ५७,५०० एकड़ खेती है। अनुभवी-सोव्खोज्ने प्रति एकड़ ३६·६ बुशल् अनाज पैदा किया। विसेल्कोव्स्की सोव्खोज्ने प्रति एकड़ ३७·५ बुशल, कोपत्किनके कुछ खेतोंने प्रति एकड़ ६६ बुशल गेहूँ पैदा किया। सोव्खोजोंकी पशुशालाओंने भी इसी प्रकार तरक़्क़ी दिखलाई।

१९३७में सारे सोवियत्ने ७० हजार लाख पूड अनाज पैदा किया। इस साल ८० हजार लाख पूड पैदा करनेकेलिए होड़ लगी है। १९३७में

सोव्खोजोंने अपने कृषि और यंत्र-सम्बन्धी तरीक़ोंको और उन्नत किया है। तथा खेतकी जुताई तथा फसलकी दँवाई आदिमें होनेवाले नुक़सानको और भी घटा दिया है। पिछले साल सोव्खोजोंमें ४८ हजार ट्रैक्टर—जिनमें १० हजार ढोलाकार (कटर-पिलर)—तथा २१ हजार कटाई दँवाई करनेवाली कंबाइन मशीनें थीं।

मशीनोंके चलानेमें अब सोव्खोजी कमकर और दक्ष हो गये हैं। स्तखा-नोवी कमकरोंने खास तौरसे मशीनोंके कामकी मात्राको बढ़ाया है। १९३६में प्रति कंबाइनपर सोव्खोजोंमें ६०२ एकड़ खेत पड़ा था। पिछले साल कामकी मात्रा और बढ़ी है; और कुछ सोव्खोजोंमें तो प्रति-कंबाइन ८७५से १००० एकड़ काम हुआ है। इसके कारण जहाँ एक तरफ़ जल्दी खलिहानका काम खतम हुआ, वहाँ दूसरी तरफ़ कमकरोंके घंटेकी कमीके कारण उपजपर खर्च भी कम हुआ है।

१९३३में सिम्फेरोपोल-सोव्खोज़्को अपने कामकेलिए १०० कंबाइन ३६ दिन तक चलानी पड़ी; १९३७में उससे भी अधिक फ़सलकेलिए ४२ कंबाइनोंको सिर्फ़ १६ दिन काम करना पड़ा।

इस सोव्खोज़्में १९३३में २२१ ट्रैक्टर काम करते थे; लेकिन १९३७में उतनी जुताई सिर्फ़ ३१ ट्रैक्टर करनेमें समर्थ हुए। क्रिवोई-सोव्खोज़्ने १९३६ में २२ कंबाइनोंको २९ दिन तक चलाया था। १९३७में उसे १० कंबाइनें १७ दिनों तक चलानी पड़ीं।

मशीनोंमें इस दक्षताके कारण हर एक कमकरका श्रम अधिक अनाज पैदा करनेमें समर्थ हुआ है। उदाहरणार्थ—कूबन्-सोव्खोज़्में प्रति कमकर १९३४में ११.७ टन अनाज पैदा हुआ था; लेकिन १९३७में वह ११९.७ टन हो गया। साल्स्क-सोव्खोज़्में भी इसी तरह १९३४से १९३७में १३.३ टनसे १३३ टन हो गया।

१९३७की फ़सल जैसी उत्तम हुई, वैसी ही पशुशालाओंकी उपज भी बढ़ी। १९३३की अपेक्षा १९३७में पशुशालाओंने दूना अधिक मांस दिया।

प्रति गाय ४६·१ किलोग्राम (प्रायः १ मन ६ सेर) आमदनी हुई। १६३३में २४ किलोग्राम ही हुई थी। इसी समय सुअरके मांसमें पाँच गुनेकी वृद्धि हुई।

१६३८में सोव्खोजोंने उपजका नया प्रोग्राम रखा है; जिसमें वह पिछले सालसे भी अधिक पैदा करना चाहते हैं। सोव्खोज्के २७० व्यक्तियोंको अच्छे कामकेलिए पदक मिले हैं। कंबाइनके २०० संचालकों और हजारों दूसरे कमकरोंको भी सरकारने सम्मानित किया है। हालमें सोव्खोजोंके २६० कम-कर प्रबन्धक, सहायक-प्रबन्धक, तथा दूसरे ऊँचे पदोंपर नियुक्त किये गये हैं; और वे अपने कामको बड़े उत्साहसे कर रहे हैं।

* * *   * * *   * * *

जिम्मेर्वाल्ड-सोव्खोज्—एक अमेरिकन यात्रीने—जो १६३५में इस सोव्खोज्में गया था—इस प्रकार उसका वर्णन किया है—

जब मैं सोव्खोज्में घुस रहा था, तो मालूम होता था, मैं गाँवमें नहीं, किसी शहरमें जा रहा हूँ। सड़कके दोनों ओर आध मील तक वृक्ष लगे हुए हैं, जो उस वक्त फूल रहे थे। एक वर्गमीलका बगीचा, जिसमें चौड़ी रविश चारों ओर फैली हुई ज्यामितिकी शक्लें, तारे, आदि बना रही थीं। इनके किनारे छँटी हुई हरियालीकी ८-६ फ़ीट ऊँची टट्टी लगी हुई थी।

घासके हरे मैदानोंपर कुछ खेलाड़ी फ़ुटबालका अभ्यास कर रहे थे; कुछ टेनिस और वोलीबालका। कहीं खुली हवामें कसरतका अखाड़ा था, कहीं खुली हवामें थियेटर। बैंड बजनेकी जगहें थीं और सिनेमा-घर भी। इन क्रीड़ा-क्षेत्रोंमें कहींपर वयस्क स्त्री-पुरुष और कहींपर बच्चे अनेकों प्रकारके खेल खेल रहे थे। तरुण जोड़ियाँ फ़ुटपाथपर चल रही थीं, कहीं बेंचोंपर बैठी थीं। लड़कियाँ अपने भड़कीले कपड़ेमें और युवक फलालैनकी क़मीज़ोंमें थे। कहीं वे खुली जगहमें गाँवकी मंडली द्वारा खेले जानेवाले नाटक या संगीतके

प्रदर्शनकेलिए कुर्सियोंपर बैठे थे। फौवारोंके नीचे तैरते हंसोंके सामने बच्चे रोटीका टुकड़ा फेंक रहे थे।

यह वर्णन किसी शहरका नहीं है, न किसी राजाके क्रीड़ा-प्रासादका है। यह एक गड़ेरियोंका गाँव है। जितने लोग यहाँ हैं, सभी कमकर या उनके परिवारके आदमी हैं। हाँ, सच है, इस बगीचेको सोवियत्‌ने नहीं बनाया। इसे रूसके एक बड़े जमींदार-राजाने बनाया था। राजा साहब स्विट्‌जरलैंडमें हवा खाने गये। वहाँ एक सुन्दरीके प्रेममें फँस गये। विवाहका प्रस्ताव आनेपर सुन्दरीने कहा कि मैं तभी व्याह करनेकेलिए तैयार हूँ; जब कि मुझे मेरे बापके महल और बागके जैसा महल और बाग मिले। राजा साहब रूस लौट आये और यहाँ अपने असामियोंको—जो पहलेही से पिसे जा रहे थे—और कोड़े लगाकर उन्हें यह स्वर्ग बनानेकेलिए मजबूर किया।

लेकिन इस स्वर्गको जिसने गड़ेरियोंको दिया, वह सोवियत्-शासन ही था।

इन गड़ेरियोंकी शकल और स्वास्थ्य देखनेसे ही मालूम होता है, कि वे भोजन-छाजनसे आसूदा हैं। उनकी भोजनशालामें चले जाइए, वह गमलों-में हरे हरे वृक्ष लगाकर सजाई हुई है। एक कोनेमें संगीत-वेदी है; जिसपर गायक और वादक खानेके वक्त, लोगोंका मनोरंजन करते हैं।

कोई-कोई कमकर अपने घरमें खाते हैं। परिवारके छोटे-बड़े होनेके अनुसार हर एकको दो या तीन कमरे मिलते हैं। इसके अतिरिक्त हर एक कमकरको पिछवाड़े तरकारीका बगीचा मिला है; और गाय और सूअर रखने-केलिए जगह भी। इसके लिए उन्हें मालगुजारी नहीं देनी पड़ती। सोव्खोज् सालमें दो बार इन तरकारीके बगीचोंको जोत देता है; और बीज तथा चारा दे देता है।

केन्द्रपर जो लोग रहते हैं; उनकी यह हालत है। लेकिन भेड़ चराने वाले—जिनके जिम्मे भेड़का गल्ला है—चरागाहके पास बने हुए घरोंमें

रहते हैं। घरोंमें उनके फ़र्क़ इतना ही है कि केन्द्रीय जगहोंमें रहने वालोंके मकान दो-दो तल्लेके हैं, यहाँ एक तल्ले छोटे।

सोव्खोज़में १३०० कमकरोंके परिवारके सभी व्यक्तियोंको मिलानेपर उनकी तादाद ४०००से ऊपर होगी। सोव्खोज़में अपना डाकख़ाना और तारघर है। दवाईकी दूकान, विक्रय-भण्डार, मिठाई बिस्कुट आदिका भण्डार, धोबीख़ाना और स्नानागार हैं। यहाँ पाताल-फोड़ (आर्टिजन) कुएँ हैं; जिनसे स्वच्छ स्वास्थ्य-वर्द्धक पानी मिलता है। अपना अस्पताल है; जिसमें अनेक डाक्टर और नर्सें हैं। छोटे बच्चोंकेलिए बच्चाख़ाना है। बड़े बच्चोंकेलिए स्कूल, वाचनालय, स्वाध्याय-केन्द्र आदिके साथ एक क्लब है। सोव्खोज़ ख़ुद अपना सामाचार-पत्र छापता है। पत्रमें सोव्खोज़की ख़बरें तथा रेडिओ और तार द्वारा आनेवाली देशी-विदेशी ख़बरें छपती हैं। यह पत्र सोव्खोज़के ही प्रेसमें छपता है। डाक्टरकी रायपर कमकरोंके रहनेकेलिए अलग विश्राम-गृह बने हैं।

सोव्खोज़के चौकपर रेडियोके लाउड-स्पीकर लगे हुए हैं। वहीं प्रबन्ध-समिति-भवनके सामने लेनिन्की एक बड़ी मूर्ति स्थापित है। उत्सवके दिनोंपर यहाँ प्रदर्शन होते हैं।

ज़िम्मेरवाल्डमें ट्रामको छोड़कर शहरकी सभी सुविधायें मौजूद हैं। इसकी ६०,००० एकड़की चरागाहोंपर ५०,००० भेड़ें चरती हैं। पिछले साल १,२०,००० रूबल आमदनी का तख़मीना था, लेकिन आमदनी हुई ४,७६,००० रूबल।

* * *　　　* * *

पशुपालनमें विज्ञान

दक्षिण उक्रइन्में अस्कानिया-नोवा आज सोवियत्की एक प्रसिद्ध जगह है; और नाना प्रकारके पशुओंकी जातिको उन्नत करनेकेलिए बड़े ऊँचे पैमानेपर दोगली नसल करनेका काम हो रहा है। लाल-क्रान्तिके पहले यहाँ एक

छोटे जमींदारकी जमीन थी। सोवियतने यहाँपर पशु-संकर-करण ऋतु-सह्य-करण-प्रतिष्ठानके नामसे एक संस्था स्थापित की है। आज इसके पास एक लाख एकड़ जमीन है। भिन्न-भिन्न जातियोंके २० हजार पशु हैं। बड़ी-बड़ी प्रयोग-शालाएँ हैं। कई चोटीके वैज्ञानिक अन्य वैज्ञानिकोंकी एक बड़ी पलटन-के साथ नये-नये तजर्बे कर रहे हैं; और उनसे अपने देशको लाभान्वित कर रहे हैं। ठंडे मुल्कोंके जानवरोंको गर्म मुल्कोंमें जीना मुश्किल होता है, उसी तरह गर्म मुल्कोंके जानवरोंका जीना ठंडे मुल्कोंमें मुश्किल होता है। बहुतसे जानवर गर्म मुल्कोंसे ठंडी जगहोंपर पहुँचे हैं। जैसे हिमालयमें पाँच-पाँच हजार फ़ीटकी ऊँचाई तक भैंसें पहुँची हुई हैं। लेकिन ऐसे ऋतु-सह्य करणको शताब्दियोंमें पूरा किया गया है। विज्ञानने जैसे और क्षेत्रोंमें प्रकृतिकी धीमी गतिको तेज करनेमें सफलता पाई है, उसी तरह इस क्षेत्रमें भी वह सफल हो रहा है। ऋतु-सह्य-करणका काम जो वैज्ञानिक ढंगसे यहाँ हो रहा है, उसका प्रयोग १०—२० जानवरोंपर नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर हो रहा है। दुनियाके नाना देशोंके नाना प्रकारके जन्तु अस्कानिया-नोवामें रहते हैं। अरबी जेबू तथा गनू (जंगली भेड़ा), कनाडाका बिसेन तथा दूसरे बहुतसे जानवर स०स०स०र०के इस दक्षिणी भागकी ऋतुको सहन करने लगे हैं। यहाँ पर प्रेजेवाल्स्क घोड़ों और चाप्मान् जेब्रोंका बड़ा झुंड है। प्रायः सभी जानवर खुली जगहमें घूमते हैं, सिर्फ़ उनके रहनेके मैदानोंको कँटीले तारोंकी बाड़से अलग कर दिया गया है। जाड़ोंमें उनके लिए गर्म जगह बनी हुई है।

अस्कानिया-नोवामें बहुत बड़ी तादादमें चिड़ियाँ भी रखी गई हैं। अफ्रीका जैसी गर्म जगहका रहनेवाला शुतुरमुर्ग यहाँ खूब स्वस्थ रहता है। शुतुरमुर्गोंके सन्तति-प्रसवमें प्राकृतिक ढंग तथा यंत्रकी मदद—दोनों तरह से अंडेको सेवाया जाता है। अस्कानिया-नोवाके प्रयोगोंने घरू पशुओंकी अच्छी नसल पैदा कर सोवियत् पशु-पालनको महुत मदद दी है।

सुअर—मृत अकदमिक म० फ० इवानोफ़के संरक्षणमें एक नई नसल

सुअरकी तैयार हुई है; जिसे उक्रइनी सफ़ेद पथरीली भूमिका सुअर कहते हैं। यह उक्रइन्के सफेद मैदानी सुअर और बड़ी जातिके सफ़ेद अंग्रेजी सुअरके मेलसे पैदा किया गया है। नई नसलमें जहाँ उक्रइन्के सुअरकी ऋतु-सहन-शीलता आ गई है, वहाँ अंग्रेजी सुअरकी भाँति वह अधिक बच्चे पैदा करता है। आजकल यहाँ हज़ारों उक्रइनी श्वेत पथरीली-भू-शूकर और लाखों दुबारा संकर तैयार हुए हैं।

इस नई जातिके शूकरके तजर्बेने बतलाया है, कि जहाँ यह मांस और चर्बीके गुण तथा परिमाणमें उक्त अंग्रेजी सुअरका मुकाबला करता है, वहाँ सर्द आबहवा और अपनी प्राकृतिक परिस्थितिको अच्छी तरह सहन कर सकता है। पहला परिणाम इस नई नसल और साधारण सुअरके संकरसे निम्न प्रकार मिला है। औसतन् एक सुअरीसे एक बार १० बच्चे मिले हैं; और दो महीनेके बाद हर एक बच्चे १४से १५ किलोग्राम (१४-१५ सेर)के हो गये। इसके मुकाबलेमें मामूली सूअरीके औसतसे ६-७ बच्चे बहुत छोटे होते हैं। बहुत बड़े हो जाने पर भी उनका वजन १६ किलोग्रामसे ज़्यादा नहीं होता, जबकि इस नई नसलका सूअर २०० किलोग्राम और उससे भी भारी होता है।

अकदमिक इवानोफ़्ने अस्कानिया-नोवामें रामबूलियेर नामकी एक नई भेड़की नस्ल पैदाकी है। इसमें संकर-करण और ऋतु-सह्य-करण दोनोंका प्रयोग हुआ है। इस नई नस्लका ऊन बहुत मुलायम होता है, और इससे अच्छी क़िस्मके ऊनी कपड़े बनते हैं। यह भेड़ोंकी नस्ल अच्छी ऊनवाली भेड़ोंके सुधारनेमें बहुत काम करेगी। प्रतिष्ठान तथा दूसरे कल्खोज़ोंमें लाखों तक इसकी संख्या पहुँच गई है। सन्तति पैदा करनेकी संख्या इस प्रकार है—१०० भेड़ोंसे १४० बच्चे मिले, १ भेड़से १३ किलोग्राम (१३सेर) ऊन सालमें मिला। साधारण भेड़से सिर्फ़ ३ किलोग्राम ऊन मिलता है। कल्खोज़ोंमें इस भेड़ोंकी बड़ी माँग है और वैज्ञानिक तथा कल्खोज दोनों इस जातिकी भेड़ोंकी संख्या बढ़ानेमें लगे हुए हैं।

पहाड़ी मेरिनो एक दूसरी भेड़की नस्ल अस्कानिया-नोवामें पैदा की गई, जो पहाड़ी बन सकती है। यह नस्ल बड़े महत्त्वकी है। मेरिनो भेड़ पहाड़ी चरागाहके अयोग्य होती है। मेरिनोका ऊन बड़ा नरम होता है; लेकिन सोवियतके हजारों मीलके पहाड़ी चरागाहोंमें वह रह नहीं सकती। जंगली मुफ़लोन भेड़ें और मेरिनोके संकरसे यह नस्ल पैदा की गई है। इस संकर नस्लका तजर्बा करनेसे मालूम हुआ है, कि स्थानीय भेड़ोंसे यह ज़्यादा लाभदायक है। एक भेड़ सालमें ६ किलोग्राम ऊन देती है, जो कि साधारण भेड़से दूना है; और वजन ७० किलोग्राम (७० सेर) तक जाता है।

ईरानी भेड़का ऊन बहुत अच्छा होता है, लेकिन उसका प्रसव कम होता है। अस्कानिया-नोवामें रोमन भेड़ों और ईरानी भेड़ोंसे संयोग करा, एक नई नस्ल पैदा की गई है। पहले तजर्बेमें देखा गया कि १०० भेड़ोंने १६० बच्चे दिये। यह उपज बहुत ज़्यादा है। इन भेड़ोंसे ऊन भी दूना मिलता है।

बड़े सींगवाले जानवरोंकी भी संकर नस्ल की जा रही है। जर्मन नस्लकी लाल-गायें हिन्दुस्तानी और अरबी गायोंसे वैसे ही ढंगसे तैयार की गई हैं; जैसे कि दक्षिणी एसिया और अफ्रीकाके कुछ हिस्सोंकी। अरबी गाय (जेबू) बहुत कम दूध देती है; लेकिन उस दूधमें मामूली गायके दूधसे ज्यादा घी होता है। नई नस्ल जहाँ जर्मन गायकी तरह अधिक दूध देनेका स्वभाव रखती है, वहाँ जेबूके घी अधिक होनेके गुणको भी कायम रखती है। इसका फायदा गोपालनके कार्यमें कितना है, इसे कहनेकी आवश्यकता नहीं।

उक्रइनकी पहाड़ी गायको विसेनसे संकर किया गया है, परिणाम यह हुआ कि नई नस्ल मांसके परिमाण और स्वाद दोनोंमें बढ़ कर है।

दूध देनेवाली गायको याक (चमरी)से संकर कराया गया—याक तिब्बत, मंगोलिया, किर्गिजिया आदिमें मिलती है। इसके दूधमें घी बहुत होता है। जहाँ खास जर्मन गायके दूधमें ३से ४ सैकड़ा घी होता है, वहाँ

इसमें ७ और ८ सैकड़ा। नई नस्ल जहाँ जर्मन गायोंकी भाँति दूध अधिक देती है, वहाँ याककी तरह उसमें घी भी ज्यादा होता है।

४. सोव्खोज़ गिगान्त

गिगान्त सोवियत्का एक बहुत बड़ा सरकारी फार्म (सोव्खोज़) है। यह फार्म प्रायः १५०० वर्ग-किलोमीतरमें है। इसकी वार्षिक उपज १ लाख ४० हजार टन है।

जाड़ेके गेहूँके कोमल अंकुरों पर नरम बरफ देर तक टिकी नहीं रह सकती। निरभ्र आकाशमें सूर्य चमकने लगा। दोन तटके खेतों पर वसन्तका राज था। बर्फ तेजीसे पिघलने लगी और गीली भूमि सूखने लगी। अब खेतीका काम आरम्भ हो सकता है। गिगान्तके कृषि-विशेषज्ञ, ट्रैक्टर-ड्राइवर, बीजबोवक और मैकेनिक बड़ी उत्सुकतासे इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वसन्तकी धूप कार्यारम्भका संकेत थी।

पिछले साल उन्होंने अच्छी फसल काटी थी। अब वसन्तकी बुवाईकी तैयारी करनी थी, जो सुव्यवस्थित रूपसे और शीघ्र गतिसे चल रही थी।

बाहर खेतमें एक शक्तिशाली ट्रैक्टर एक प्रकांड हलको खींच रहा था। फाल धरतीमें गहरे गड़ते काली मिट्टीके मोटे चिप्पे निकालकर फेंकते जा रहे थे। गहरी जुताईकी जरूरत थी, क्योंकि जर्मनों द्वारा वर्षों अधिकृत रहनेसे यहाँ बहुत काँटा-घास जम आया था। गहरी जुताईसे घासें उच्छिन्न जायेंगी। ट्रैक्टरके चालक-पहिये पर **वासिली किविलित्स्की** बैठा था और पासही उसका बाप **इवान अन्तिकेयेविच** खड़ा था। इवान सोव्खोजका मैकेनिक है। वासिली हाल ही में सेनासे लौटा है। उसकी छातीपरके फीते बतला रहे थे, कि लड़ाईमें अच्छा काम किया। पीछेकी ओर हलपर इवानकी लड़की **मरिया** खड़ी थी। **किविलित्की** अनुभवी किसानोंका परिवार है। जवार के सारे लोग उन्हें जानते हैं।

जर्मनोंने सोव्खोजकी सारी मुख्य इमारतें उड़ा दीं। युद्धसे पहले यहाँ बहुत

से आधुनिक ढंगके मकान थे। हरेक मकानमें जाड़ेमें गर्मी पहुँचानेके लिये केन्द्रीय तापक थे, बिजली और स्नानागार थे। चायखाना, क्लबघर, एक कृषि-स्कूल, किंडर-गार्डेन, बालोद्यान, शिशुशाला, अस्पताल, प्रसूति-घर ये सभी मकान कितने प्रेमसे सोवियत् नर-नारियोंने बनाये थे? जर्मनोंने उन्हें ईंटोंका ढेर बनाकर छोड़ दिया। १९४६में गिगान्तमें बड़ी तेजीसे पुनर्निर्माणका कार्य हो रहा है। अस्पताल, हाई स्कूल, और कृषि स्कूल बन चुके हैं। पहलेकी तरह अब शाम को तरुण-जन क्लबघरमें एकत्र होने लगे हैं। फार्मका डाइरेक्टर फ्योदोर अन्तोनोविच बोइको सारे इलाकेमें "दोन का अन्नराजा" नामसे मशहूर है। उसकी सफलताओंका परिचायक "लेनिन पदक" छातीपर टँगा हुआ है। बोइको चतुर, व्यवहारवादी और साहसी स्वप्नद्रष्टा भी है। उसने युद्धसे पहले खेतीकी उपजके रिकार्डको तोड़ा था। वह कहता है—"हम अब पहलेकी तरह अपने अनाज, पशु, दूध और सूर्यमुखीके बीज जहाजपर लादकर बाहर नहीं भेजेंगे। अपनी फैक्टरी बनायेंगे और कच्चा माल भेजनेकी जगह आटा, कलबासा (आँतोंमें डालकर पकाया मांस), पनीर, मक्खन, भेड़की पोस्तीन, फेल्ट और चमड़ेके बूट भेजेंगे। और इन सभी चीजों पर गिगान्तका "ट्रेडमार्क" रहेगा।

× × ×

५. पुराना और नया गाँव*

एक सोवियत् लेखकने इस परिवर्तनका बड़ा अच्छा चित्रण किया है—

जब पहाड़ोंकी आड़में सूरज छिप जाता है, तो काकेशसके गाँव जायकोवोके बूढ़े कलखोजके पंचायत-भवनके बाहर जमा हो जाते हैं। इस गोधूलिकी शान्तिमें पेड़के नीचेकी उस घास पर बैठकर भिन्न-भिन्न विषयों पर गप करना, उनके लिए एक नियम सा बन गया है।

---

* १९३८में लिखित पृष्ठ ८६-८७-७८

उनके वार्तालापका अधिक भाग भूत—पुराने जीवनकी शुष्कता और अंधकार—के विषयमें होता है। लेकिन कुछही देर बाद नवयुगके नये मनुष्य की ओर उनका ध्यान खिंच जाता है। अपने बारेमें उनकी राय होती है—कैसा वह नीरस और अँधियारा जीवन था, जिसमें सुख और सन्तोषकी एकभी किरण कहीं दीख नहीं पड़ती थी। यह वह जीवन था, जिसे हमने बिताया और आज इस पेड़के नीचे मालूम होता है, जैसे बुद्धिने खुद आकर अपनी कचहरी लगाई हो।

बूढ़े अपने बुढ़ापेके लिए उतना अफ़सोस नहीं करते, क्योंकि शरीरके लिए यह अवश्यंभावी है। हाँ, इसके लिए उन्हें दुःख ज़रूर होता है, कि उनके सारे वर्ष बेकार गये।

जिस वक़्त इस प्रकार यह बातचीतमें मग्न रहते, उसी वक़्त गाँवकी तरुण-तरुणियाँ आस-पाससे गुज़रतीं। उनमें कोई-कोई सुननेके लिए उनके पास आ बैठते। बूढ़े कह उठते—"पुराना जीवन हमें चुप रहनेके लिए मजबूर करता है। हम अकेलेपनके कारण गूँगे बन गये थे। बुढ़ापेका ख़याल हमारे लिए ढाल था। लेकिन नये जीवनने हमारी वाणी और श्रवण शक्तिको फिर लौटा दिया।"

ऐसे समय कोई गाँवकी गप आ पड़ती; और वार्तालाप आगे बढ़ जाता। वे मानवताके गुण बखानने लगते। हमारे सोवियत् संघके इस स्वतन्त्र और सुखमय जीवनका किसने निर्माण किया?—स्वतन्त्र साम्यवादी मनुष्यके हाथोंने।

फिर बहस छिड़ती है—साम्यवादी मनुष्यको कैसा होना चाहिए?

७७ वर्षके बूढ़े अवाज़ोफ़् याक़ूब बोल उठे—"होना चाहिए स्तालिन् की तरह, किरोफ़्की तरह, जेर्जिन्स्की की तरह, ओर्जोनिकिद्ज़ेकी तरह।"

स्तालिनका महान् नाम उनके लिए बड़ी श्रद्धाका विषय है। जेर्जिन्स्की और ओर्जोनिकद्ज़े जैसे क्रान्तिके महान् वीरोंकी स्मृति उन्हें बहुत प्रिय है। अपने प्यारे सर्गेइ मिरोनोविच् किरोफ़्के हत्यारोंको वह कभी

क्षमा नहीं कर सकते। जिस दिन फ़ासिस्ट गोलीने किरोफ़की छातीको छेदा, वह उनके लिए बड़े शोकका दिन था। एक सवार दौड़ा हुआ गाँवमें आया और उसने एक घरसे दूसरे घर इस दुःखद समाचारको सुनाया। घोड़ेकी दाहिनी ओरसे वह दरवाज़ों पर उतरता था—यह स्थानीय संकेत था कि इस घरका कोई मरा है। सारा गाँव उस पुरुषकी मृत्युके लिए आँसू बहा रहा था। किरोफ़ यहाँ आग्नेय वीरके नामसे मशहूर था। क्रान्तिके दिनोंमें जब काकेशस सफ़ेद जनरलोंके घोड़ोंकी टापोंके नीचे रौंदा जा रहा था, और वे लाल-क्रान्तिकी देन इस स्वतन्त्रतासे इन पर्वतवासियोंको वंचित रखना चाहते थे; उस वक्त यही आग्नेय आदमी था, जिसने इन पहाड़ियोंमें रूह फूंकी और दासतासे हमेशाकेलिए मुक्त कर दिया।

८३ वर्षके बूढ़े ख़बन्चियेफ़ ज़ाकूरईने कहा—"जाँगर चलानेवालों से प्रेम करना चाहिए और उनके शत्रुओंसे भयंकर घृणा।"

६५ वर्षके तेज़ोकेल्मसतने राय दी—"अगर तुम अच्छी तरह देखनेकी ताक़त रखते हो, सुननेकी ताक़त रखते हो, छूनेकी ताक़त रखते हो, सूंघने की ताक़त रखते हो, चखनेकी ताक़त रखते हो, तो शत्रुओंके प्रति घृणा—यह भी तुममें होनी चाहिए। ऐसी अवस्थामें घृणा छठी ज्ञानेन्द्रिय है।"

६७ सालके दादा प्युबोकतोफ़् एलदूज़ुको बोले—"घृणाका मार्ग भी शीशेकी तरह साफ़ रहना चाहिए।"

काकेशसकी एक नई कहावत है—सावधानी और घृणा दोनों बहनें हैं। ६३ वर्षके बूढ़े जेलूका कहना है—जो तुम खुद करते या देखते हो, उसी भरको जानेकी कोशिश मत करो। बल्कि उसेभी जाननेकी कोशिश करो, जो तुम्हारी आँखकी ओटमें है। स्तालिन् हमको सिखलाता है, कि हमें हर क़दम पर सावधान रहना चाहिए, और साम्यवादी समाजके शत्रुओंका भण्डा-फोड़ करना चाहिए। याद रखना चाहिए, हम चारों ओर पूँजीवादियोंसे घिरे हुए हैं।"

फिर बूढ़े लोग ४० हजार मील तक फैले सोवियत सीमाके बहादुर चौकीदारोंके बारेमें बात करते हैं। "आदमीको इस तरह सावधान और निर्भीक होना चाहिए, जैसे हमारी मातृभूमिके ये लाल-सीमा-रक्षक।" ७२वर्षकी सफ़ेद दाढ़ीवाले केल्चुकोने कहा—"मातृभूमिसे प्यार करो, उसकी सेवा करो, यह मैं अपने बेटों और पोतोंसे कहता हूँ। अपनी मातृभूमिको उसी तरह प्यार करो, जैसे माँ अपने बच्चेको, सवार अपने घोड़ेको, प्रेमी अपनी प्रियाको।"

तब ६६ सालके शोगेनोफ़ नूर बोल उठे—"देश-द्रोहके समान दुनिया में कोई पाप नहीं।"

जिनकी कोई मातृभूमि न थी, उन्होंने साम्यवादी राष्ट्रके रूपमें मातृभूमि पाई। इस मातृभूमिकेलिए बूढ़े और जवान हर एकको गहरा प्रेम है।

पिछले बसन्तमें उन्होंने नगरों, खानों, कारखानों और दुर्जेय लाल-सेना-में काम करनेवाले पुत्रों और पौत्रोंको एक पत्र लिखा था, उसका कुछ भाग इस प्रकार है—

"हमारी सुपहली घाटीके सभी निवासियोंको, सभी छोटे और बड़ोंको, सभी बहादुर सन्तानों और महान जाँगर चलानेवालोंको, सभी शिक्षितों और शिक्षकों को, सभी धरातल पर तथा उसके अन्दर काम करनेवालोंको, सुनना चाहिए—उनकी आवाज जो कोड़ेसे पीटे और मारे गये थे, जो अंग-भंग और लंगड़े लूले बना दिये गये थे, जो राजा-बाबुओंके चरणोंकी धूलिमें चिपटनेवाले थे, जो घृणित असभ्य जीवनमें पड़े थे। सुनो, ओ स्तालिनी सूर्यकी सन्तानो! तुमने कभी उस अन्धकारपूर्ण जीवनको नहीं देखा, तुमने कभी उस कड़वे भाग्यको नहीं चखा। होशियार रहो अपनी मातृभूमिके लिये, उस भूमिके लिये जिसने बचपनसे तुम्हें सब कुछ दिया और खुद तुम्हें दिया, और हमेंभी इस ढलती उमरमें एक बड़ा जीवन, एक सुन्दर और सुखमय जीवन दिया। उस मातृभूमिकी रक्षा करो, उसी तरह हिफ़ाजत करो,

जैसे तुम अपने जीवन, अपने घर, अपनी स्त्रियों, और बच्चोंकी हिफ़ाजत करते हो।

"और अगर बदनीयत दुश्मन हमारी सरहदके भीतर अपनी छाया भी डाले, तो ऐसा मारो कि न दुश्मनका पता लगे, न उसकी छायाका। अगर बूढ़ोंके अनुभवका तुम्हें कुछ खयाल है, तो हमारी इस माँगको सुनो—अपनी पार्टीकी पताका जिसमें नीची न होने पावे, वैसा करना।"

इस चिट्ठी पर तेज़ोफ़् केलेमेत्, सवान्चियेफ़् इन्चेतो, अबाज़ोफ़् याकूब, शोगेनोफ़् चेजू, तेमिरोफ़् माशा खशोफ़्मचीची......के हस्ताक्षर थे।

६७ सालके बाबा रोजी, सोवियत्के बहादुरोंके बारेमें कह रहे थे—"आदमीका संकल्प चट्टानसे भी ज़्यादा मजबूत, फ़ौलादसे भी ज़्यादा दृढ़ होना चाहिए। आत्म-त्याग है जीवनका सुख।"

सोवियत्-संघ-वीर चकालोफ़्, बइदुकोफ़्, बेल्याकोफ़्, ग्रोमोफ़्, दूनीलिन, और यूमाशोफ़्—बहादुर उड़ाके जो उत्तरी ध्रुवके रास्ते उड़कर मास्कोसे अमेरिका पहुँचे—; और श्मित्, वोदोप्यानोफ़् और पपानिन्—उत्तरी ध्रुवके विजेता—के नाम छोटे-बड़े सारेही ग्राम-वासियोंके होठ पर है।

६८ वर्षके बूढ़े तेमिरकन्ने राय दी—"सोवियत् आदमीको, अपनी साम्यवादी सम्पत्तिकी हिफ़ाजत आँखकी पुतलीकी तरह करनी चाहिए। सार्वजनिक सम्पत्तिके लिए वैसी ही सावधानी रखो, जैसी तुम अपने कलेजेके लिए करते हो। यही तुम्हारा वर्तमान है। यही तुम्हारा भविष्य है।"

बूढ़े लोग इसके लिए कितने ही उदाहरण देते। कैसे कल्खोज़का अमुक बहादुर, शत्रु और विनाशकोंसे सार्वजनिक सम्पत्तिकी रक्षा करता है; कैसे वह दीमक, पानी, आँधी और वर्फ़से उसे बचाता है। दर असल गाँवोंमें साम्यवादी सम्पत्तिकी रक्षा लोगोंका अनुल्लंघनीय पवित्र धर्म बन गया है।

"मनुष्यको बिना पीछे देखे आगे बढ़ना चाहिए। उसे नई वस्तुओंको लेना और पैदा करना चाहिए।"

७० वर्षके बूढ़े अल्कदूने कहा—"हमारा वीर वह है, जो निरन्तर नई चीजें प्राप्त करता है। सदा और ऊँचे बढ़नेके लिए साहस करता है; और हमेशा आदर्शके पीछे दौड़ता है।"

उनकी बातको पुष्ट करते हुए पाँच वर्ष जेठे कन्बोत् बोल उठे—"बेहतर जीवनकी ओर बढ़नेके लिए बेकरारी, अधिक जाननेके लिए उतावलापन ये हैं, जो आजके मनुष्यको सुन्दर बनाते हैं।"

७६ सालके पिताने कहा—"व्यक्तिगत स्वार्थको समाजके स्वार्थके अधीन रहना चाहिए। पञ्चायती खेती एक बड़ा वैद्य है। यह सभी बीमारियोंको दूर करती है। पंचायती खेती मनुष्यमें मनुष्यता पैदा करती है।"

रन्नैरीने अपने तीन कोड़ी और १० सालोंके तजर्बेका निचोड़ इस प्रकार कहा—"पंचायती खेती मनुष्यको उसकी मानसिक संकीर्णता, उसके मिथ्या-भिमानको दूर करती है। यह मनुष्यके स्वभावमें परिवर्तन करती है।"

७० वर्षके माशाने अपनी अन्तिम सम्मति देते हुए कहा—'मनुष्यको शीशेकी तरह साफ़, चश्मेके पानीकी तरह शुद्ध होना चाहिए।"

अध्याय ७

१. शिक्षामें प्रगति

१९१७के पहले अस्सी सैकड़ा रूसी बच्चे और तरुण शिक्षाकी सुविधा और अवसरसे वंचित थे। २६ दिसम्बर १९१९को सोवियत् सरकारने घोषित किया, कि सोवियत्की सभी जातियोंके नागरिक जिसमें देशके राजनीतिक जीवनमें भाग ले सकें, इसलिये आवश्यक है आठ सालसे पचास सालकी उम्रके सभी नर-नारी अपनी अपनी भाषा या रूसीमें लिखना पढ़ना सीखें। १९२१ की दसवीं पार्टी कांग्रेसके निर्णयानुसार शिक्षा-प्रचारके लिये साधारण तथा विशेष व्यावसायिक स्कूलोंकी स्थापना हुई। उनमें मातृभाषाओं द्वारा शिक्षा दी जाने लगी; पत्र-पत्रिका, पुस्तक, और नाट्यशालाओंका प्रसार किया गया। पंचवार्षिक योजनाओंने उद्योग-धंधोंको बढ़ाया, जिसके साथ-साथ जनताका सांस्कृतिक तल ऊपर उठा। १९३०में सोलहवीं पार्टी-कांग्रेसके समक्ष बोलते हुए स्तालिनने कहा—"अब मुख्य बात यह है, कि आरंभिक शिक्षाको अनिवार्य कर दिया जाय।"

परिणाम—१९३३में ९० प्रतिशत जनता शिक्षित हो गई जब कि १९३० में वह ६७ प्रतिशतही थी।

अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा अपनी-अपनी भाषामें दी गई। इसका परिणाम हुआ स्कूलोंकी वृद्धि, सभी क्लासोंमें छात्रोंकी वृद्धि, उच्च शिक्षा संस्थाओंसे निकलनेवाले विशेषज्ञ ग्रेजुएटोंकी वृद्धि। एक नये शिक्षित वर्गका बनना—ऐसा शिक्षित वर्ग जिसकी जड़ जनतामें थी। यह प्रभाव हुआ सांस्कृतिक क्षेत्रमें द्वितीय पंचवार्षिक योजना का।

१९३३-३४से १९३८-३९ तक २०,६०७ नये स्कूल बनाये गये,

जिनमें से १६,३५३ देहातमें थे। १९३९में सोवियत् स्कूलोंकी छात्र-संख्या दुनियामें प्रथम थी। यह संख्या ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रान्स, इटलीकी छात्र संख्यासे-१'२ गुना अधिक थी। और उच्च शिक्षामें तो जापानको भी मिला लेनेसे १'४ गुना अधिक थी।

शिक्षाने लोगोंमें पुस्तक पढ़नेका चाव बढ़ाया और इसका परिणाम—१९१३में रूसमें २६,२०० पुस्तकोंकी ८,६७,००,००० प्रतियाँ छपी थीं यानी औसतन् प्रति पुस्तक ३,३०० प्रतियाँ। १९३९में ३३,८०० पुस्तकोंकी ७०,१२,००००० प्रतियाँ छपीं, अर्थात् प्रत्येक पुस्तककी १६,००० प्रतियाँ। सोवियत्में पुस्तकें १११ भाषाओंमें छपती हैं।

सोवियत्के ही नहीं, दूसरे देशोंके भी बड़े-बड़े ग्रन्थकारोंकी पुस्तकोंके बड़े-बड़े संस्करण निकले हैं। वहाँके गंभीर पाठकोंके प्रिय लेखक हैं—अरस्तू, वोल्तेयर, दिदेरो, हेलवेसियो, हेलवाश, देकार्त, देमोक्रितु, फ्वारबाख, डार्विन, न्यूटन, आईन्स्टाइन, आइजेन्स्टाईन, मेन्देलेयेफ़, मेच्निकोफ्, पावलोफ, तिमिर्याजेफ़। जिनकी पुस्तकें लाखोंकी तादादमें बिकती हैं, वह हैं बायरन, बलजक, हाइने, गोयथे, ह्यूगो, डिकेन, जोला, मोपासाँ, रोम्यारोलाँ, सर्वांत, अनातोल फ्राँस, शेक्सपियर और शिलर। रूसी महान् लेखकोंकी पुस्तकें क्रान्तिके बाद पहलेकी अपेक्षा कितनी अधिक दूसरी भाषाओंमें प्रकाशित हुईं, उसके लिये देखिये;

नाम	क्रान्तिसे पूर्व	क्रान्तिके बाद
पुश्किन	६ भाषाओंमें	५६ भाषाओंमें
लेर्मन्तोफ् (कवि)	५ "	२६ "
लियु तल्स्तवा	१० "	५४ "
नेक्रासोफ़ (कवि)	१ "	२१ "
साल्तिकोफ-शेद्रिन	१ "	२४ "
चेखोफ़	५ "	५३ "

अध्याय ७

१. शिक्षामें प्रगति

१९१७के पहले अस्सी सैकड़ा रूसी बच्चे और तरुण शिक्षाकी सुविधा और अवसरसे वंचित थे। २६ दिसम्बर १९१९को सोवियत् सरकारने घोषित किया, कि सोवियतकी सभी जातियोंके नागरिक जिसमें देशके राजनीतिक जीवनमें भाग ले सकें, इसलिये आवश्यक है आठ सालसे पचास सालकी उम्रके सभी नर-नारी अपनी अपनी भाषा या रूसीमें लिखना पढ़ना सीखें। १९२१ की दसवीं पार्टी कांग्रेसके निर्णयानुसार शिक्षा-प्रचारके लिये साधारण तथा विशेष व्यावसायिक स्कूलोंकी स्थापना हुई। उनमें मातृभाषाओं द्वारा शिक्षा दी जाने लगी; पत्र-पत्रिका, पुस्तक, और नाट्यशालाओंका प्रसार किया गया। पंचवार्षिक योजनाओंने उद्योग-धंधोंको बढ़ाया, जिसके साथ-साथ जनताका सांस्कृतिक तल ऊपर उठा। १९३०में सोलहवीं पार्टी कांग्रेसके समक्ष बोलते हुए स्तालिनने कहा—"अब मुख्य बात यह है, कि प्रारंभिक शिक्षाको अनिवार्य कर दिया जाय।"

परिणाम—१९३३में ९० प्रतिशत जनता शिक्षित हो गई जब कि १९३० में वह ६७ प्रतिशतही थी।

अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा अपनी-अपनी भाषामें दी गई। इसका परिणाम हुआ स्कूलोंकी वृद्धि, सभी क्लासोंमें छात्रोंकी वृद्धि, उच्च शिक्षा संस्थाओंसे निकलनेवाले विशेषज्ञ ग्रेजुएटोंकी वृद्धि। एक नये शिक्षित वर्गका बनना—ऐसा शिक्षित वर्ग जिसकी जड़ जनतामें थी। यह प्रभाव हुआ सांस्कृतिक क्षेत्रमें द्वितीय पंचवार्षिक योजना का।

१९३३-३४से १९३८-३९ तक २०,६०७ नये स्कूल बनाये गये,

जिनमें से १६,३५३ देहातमें थे। १९३९में सोवियत् स्कूलोंकी छात्र-संख्या दुनियामें प्रथम थी। यह संख्या ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रान्स, इटलीकी छात्र संख्यासे-१·२ गुना अधिक थी। और उच्च शिक्षामें तो जापानको भी मिला लेनेसे १·४ गुना अधिक थी।

शिक्षाने लोगोंमें पुस्तक पढ़नेका चाव बढ़ाया और इसका परिणाम—१९१३में रूसमें २६,२०० पुस्तकोंकी ८,६७,००,००० प्रतियाँ छपी थीं यानी औसतन् प्रति पुस्तक ३,३०० प्रतियाँ। १९३९में ३२,८०० पुस्तकोंकी ७०,१२,००००० प्रतियाँ छपीं, अर्थात् प्रत्येक पुस्तककी १६,००० प्रतियाँ। सोवियत्में पुस्तकें १११ भाषाओंमें छपती हैं।

सोवियत्के ही नहीं, दूसरे देशोंके भी बड़े-बड़े ग्रन्थकारोंकी पुस्तकोंके बड़े-बड़े संस्करण निकले हैं। वहाँके गंभीर पाठकोंके प्रिय लेखक हैं—अरस्तू, वोल्तेयर, दिदेरो, हेलवेसियो, हेलबाश, देकार्त, देमोक्रितु, फ्वारबाख, डार्विन, न्यूटन, आईन्स्टाइन, आइजेन्स्टाईन, मेन्देलेयेफ़, मेच्निकोफ्, पावलोफ़, तिमिर्याजेफ़। जिनकी पुस्तकें लाखोंकी तादादमें बिकती हैं, वह हैं बायरन, बलजक, हाइने, गोयथे, ह्यूगो, डिकेन, जोला, मोपासाँ, रोम्यारोलाँ, सेर्वांत, अनातोल फ्राँस, शेक्सपियर और शिलर। रूसी महान् लेखकोंकी पुस्तकें क्रान्तिके बाद पहलेकी अपेक्षा कितनी अधिक दूसरी भाषाओंमें प्रकाशित हुईं, उसके लिये देखिये;

नाम	क्रान्तिसे पूर्व	क्रान्तिके बाद
पुश्किन	६ भाषाओंमें	५६ भाषाओंमें
लेर्मन्तोफ् (कवि)	५ ”	२६ ”
लियु ताल्स्तवा	१० ”	५४ ”
नेक्रासोफ़ (कवि)	१ ”	२१ ”
साल्तिकोफ-शेद्रिन	१ ”	२४ ”
चेखोफ़	५ ”	५३ ”

१९३७-४०में शेक्सपियरके नाटक सोवियत्की सत्रह भाषाओंमें छापे गये। स्विफ्टके ३८, लंडनके २८, मार्क ट्वाइनके २२, बलजाकके १०, वार्बूसाके २०, ह्यूगोके ४१, हाइनेके १४, एन्डर्सनके ग्रन्थ २८ भाषाओंमें प्रकाशित हुए।

सोवियत्में बड़े लेखकोंकी ग्रन्थमालायें जब छपती हैं, तो ग्राहकोंको पहलेसे ही अपना नाम रजिस्टर्ड कराना पड़ता है, नहीं तो संस्करण इतना शीघ्र समाप्त हो जाता है, कि आदमी ताकता ही रह जाता है। १९४२में डिकेन-ग्रन्थावलीके प्रकाशनकी सूचना निकली और दो दिनमें बीस हजार आदमियोंने सारे सेटके लिये अपना अपना नाम रजिस्टर्ड करा लिया।

२. स्कूलसे पूर्व शिक्षा

सोवियत्में शिक्षा कहाँसे शुरू होती है इसे आसानीसे नहीं कहा जा सकता है। शिक्षाका उद्देश्य बहुत व्यापक है, उसका अर्थ अक्षर पढ़ लिख लेना ही नहीं है बल्कि अक्षरोंकी सहायताके बिनाही आदमी जो कितनी ही बातें जान लेता है, वह भी शिक्षाके अन्तर्गत है। और फिर शिक्षा ज्ञानकी वृद्धि और मनको संस्कृत करने तकही सीमित नहीं है, बल्कि शारीरिक उन्नति और स्वास्थ्य रक्षाभी उसका अभिन्न अंग है। स्वास्थ्य-रक्षाको भी शिक्षाका अंग मान लेने पर हमें बच्चेकी शिक्षाका आरम्भ उसके जन्मके साथही मानना पड़ेगा।

सोवियत्में सभी नर-नारी कोई न कोई कार्य करते हैं, कार्यभी ऐसा जो कि राष्ट्रके लिये आवश्यक है। बूढ़े-बच्चे और असमर्थ लोग इसके अपवाद हैं। वहाँ बहुत नगण्य सी स्त्रियाँ मिलेंगी, जो सिर्फ घरके काम तक अपनेको सीमित रखती हैं। प्रसवसे पहले माता को एक दो सप्ताह कामसे छुट्टी मिल जाती है और वह प्रसवके बाद तक एक महीना या उससे अधिक समय तक घर रहती हैं। इस छुट्टीके दिनोंका भी उसे वेतन मिलता है। बच्चोंके

पैदा होनेके लिये बहुत बड़े पैमाने पर प्रसूतिगृह हैं, जहाँ कुछ समय पहले माँ पहुँच जाती है। जरूरत होने पर उसे लेनेके लिये प्रसूति-गृहकी मोटर आती है। डाक्टर माँके स्वास्थ्यकी परीक्षा करता है और सबको कागज पर लिखता है। प्रसव-कालमें शिक्षित नर्सें सहायता करती हैं। माँ और बच्चेकी देख-भाल भी उनके जिम्मे होती है। प्रसूति-गृह इतने बड़े-बड़े हैं, कि जिनमें एक समय सौ-सौ डेढ़-डेढ़ सौ नव-जात शिशु देखे जाते हैं। एक माँने मुझे एक दिन सुनाया : किसीको एक लड़की हुई थी। पैदा होनेके बाद माँकी खाटके नम्बरके साथ नव-जात शिशुके हाथमें एक धागा बाँध दिया जाता है। उसमें कुछ गड़बड़ी हो गयी थी। माँको पूरा विश्राम देनेके लिये नव-जात शिशुओं को अलग पालने में सुला दिया जाता है। उक्त सद्यः प्रसूता माँके पास जब बच्चा लाया गया। उसने देखा, वह लड़का है और कहा—कि मेरी तो लड़की थी। गलती सुधार दी गई और माँको अपनी लड़की मिल गयी। सम्भव है, यदि बदले में दूसरी लड़की आयी होती, तो माँ अपनी लड़कीसे वंचित हो जाती। इसमें सन्देह नहीं कि माँको वह अपनी ही लड़की सदाके लिये मालूम होती, लेकिन ऐसी घटनायें शायद ही कभी होती हैं।

प्रसूति-गृहमें माँ और बच्चेके खाने पीने और दवा-दर्पनका ही सरकारकी ओरसे निःशुल्क प्रबन्ध नहीं होता, बल्कि डाक्टरी परीक्षा पूरी तौरसे होती है। जन्मके समय बच्चा कितना लम्बा था, कितना भारी था और डाक्टरी साइन्सके अनुसार उसके शरीर उसके रक्त आदिमें क्या दोष-गुण थे, यह सब लिखा जाता है। बच्चेके स्वास्थ्यकी जन्म-कुण्डली यहाँसे शुरू होती है, प्रसूतिगृहमें रहते वक्त जितने समय तक बच्चेके स्वास्थ्यमें जो भी परिवर्तन या घटनायें होती हैं, वह सब जन्मकुण्डलीमें चढ़ जाती हैं। जन्म-कुण्डली यहीं नहीं खतम होती, वह शिशु-शाला और बालोद्यानमें भरती होते। सात वर्ष पूरा होने पर जब बच्चा स्कूलमें जाता है, तो वहाँ एक पूरे फ़ाइलके रूप में स्कूलके डाक्टरके पास पहुँच जाती है। प्रत्येक शिशु-शाला, बालोद्यान और स्कूलमें अपने स्थायी डाक्टर होते हैं।

(१) शिशुशाला—जैसा कि ऊपर कहा गया है, सोवियत्के नरनारी किसी न किसी राष्ट्र-हितके काममें लगे रहते हैं। सोवियतकी बड़ी-बड़ी आर्थिक योजनायें पूरी न हो सकतीं, यदि सारे हाथ और दिमाग उसमें न लगते। शिशु-शाला और बालोद्यानही नहीं बल्कि स्कूलोंमें भी स्त्रियाँही शिक्षक दिखलाई पड़ती हैं। हाई स्कूलोंमें भी उनकीही संख्या अधिक है। यही नहीं सहयोगी दूकानों, पुस्तक आदिकी विक्रयशालाओं पुस्तकालयों, सिनेमाघरों, और आफिसोंमें उनकी संख्या बहुत है। डाक्टरभी तीन चौथाईके करीब स्त्रियाँ हैं। इंजीनियरोंमें भी आधेसे अधिक स्त्रियाँही देखी जाती हैं। लेनिनग्राद, और मास्कोके शहरोंमें यदि आप घूमें, तो वहाँ ट्रामों और बसोंमें भी स्त्रियाँही अधिक काम करती मिलेंगी। और तो और सड़कोंके चौरस्तोंपर खड़ी पुलिसमें भी आप स्त्रियोंको ही अत्यधिक देखेंगे। आपको शायद स्त्री राज्यका सन्देह होने लगे। सवाल स्त्री-राज्य, पुरुष-राज्यका नहीं है। सोवियत्के लोगोंका ख्याल है, हलके कामोंमें पुरुषोंको क्यों फँसाकर रखा जाय। उन्हें उन कामोंमें भेजना चाहिये, जहाँ अधिक शारीरिक बलकी आवश्यकता है। लन्दनकी पुलिसमें ६ फुटसे कमका आदमी भर्ती नहीं हो सकता। इन छफुटे विकराल कान्स्टेबुलोंको देख कर दुनियाके दूसरे नागरिकों और खास कर बृटिश साम्राज्यके आधीन व्यक्तियों पर भलेही रोब पड़ जाये—शायद यह उसका एक मुख्य प्रयोजन हो भी लन्दनमें ६ फुटी पुलिस बहाल करनेका, लेकिन सोवियत् नागरिक इस पर आश्चर्य करेगा—क्यों इन आन्डील जवानोंको चौरस्तों पर हाथ हिलानेके लिये खड़ा कर दिया गया है? क्यों नहीं इन्हें भारी मेहनतके कामों पर भेजा जाता?

हाँ, तो हमें लन्दन-पुलिससे मतलब नहीं है। ऊपरके कहनेसे स्पष्ट हो गया होगा, कि सोवियत्के आर्थिक और सांस्कृतिक महान् निर्माण कार्यमें स्त्रियोंका महत्त्वपूर्ण हाथही नहीं है, बल्कि बहुतसे कामोंमें आधीसे अधिक संख्या उनकी है सेनामें भी उनकी संख्या काफी है। फिर इंजीनियर, डाक्टर और दूसरी स्त्रियाँ अपना काम कैसे कर सकती हैं, यदि कामके वक्त उनके

बच्चोंके सँभालनेका प्रबन्ध न हो। सोवियत् शिशु-शालाओंकी भारी संख्या और उनके अच्छे अच्छे घर तथा खर्चके आँकड़ोंको पढ़कर शायद किसी पाठक को सन्देह हो जाय, किन्तु उन्हें समझना चाहिए कि सोवियतमें यह काम देश या बाहर प्रोपेगेण्डाके लिये नहीं किया जाता. दूसरे देशोंमें दो चार ऐसी संस्थायें खूब टीप-टापके साथ बना दी जाती हैं, फोटो ले लिया जाता है, फिर सचित्र-पुस्तिकायें छाप कर बाँट दी जाती हैं—आहा, सरकार कितना अच्छा काम कर रही है, मन्त्रिमण्डलका इस ओर कितना ध्यान है? सोवियतमें शिशुशालायें प्रोपेगेन्डाके लिये नहीं हैं। इस कामके लिये उनके शतांशकी भी जरूरत न होती। असल काम है, उन माताओंको राष्ट्रके कामके लिये छुट्टी दिलाना, जो करोड़ोंकी संख्यामें देशके जीवनके हर क्षेत्र में और हर निर्माण कार्यमें भाग ले रहीं हैं।

शिशुशालाओंमें महीने डेढ़ महीनेसे लेकर ३ वर्षके बच्चे रहते हैं। इनकी संख्या बहुत अधिक होनी ही चाहिये नहीं तो मातायें कामके लिये छुट्टी नहीं पायेंगी। हाँ, यह ख्याल दूर कर देना चाहिये कि शिशुशालायें बच्चोंसे माताओं का पिण्ड छुड़ाने अतएव मातृप्रेमके उच्छेदके लिये बनाई गयी हैं। सोवियत् मातायें अपने बच्चोंको सबसे अधिक प्रेम करती हैं। माता होनेसे वंचित या जिनके बच्चे मारे गये ऐसी बहुतसी स्त्रियों ने द्वितीय-महायुद्धमें १ लाखसे अधिक अनाथ बच्चोंको गोद लिया। कभी-कभी तो इस गोद लेनेके बहुत करुण दृश्य दिखलाई पड़े। माता-पिताको मरा समझ कर लेनिन ग्राद्की एक स्त्रीने तीन चार वर्षके बच्चेको गोद लिया था। बच्चा तीन वर्ष तक इस नयी माँके साथ रहा। दोनोंमें अपूर्व स्नेह था। एकाएक आफिसके कागज पत्रोंसे पता लगाते एक सैनिक वहाँ पहुँचा और देखाकि उसके बच्चेके साथ नयी माँका कितना प्रेम है। उसके हृदयमें बापका भी प्रेम जोर मार रहा था, किन्तु अपने भावोंको एकाएक प्रकट करनेमें उसे भारी कठिनाई मालूम पड़ने लगी। वहाँ तीन हृदयोंका ख्याल था, समझौता कैसे हुआ यह मुझे याद नहीं।

हाँ, तो शिशुशालाका सबसे मुख्य काम है माताओंको कामके घंटोंके लिये छुट्टी दिलाना। सबेरे आठ-नौ बजे या फैक्टरियोंमें अपनी बारीके समयानुसार मातायें अपने बच्चोंको शिशुशालामें ले जाती हैं और पाँच छै बजे शामको अथवा कामसे छुट्टी पाने पर बच्चेको शिशुशालासे घर लाती हैं। शिशुशालामें समयानुसार खिलाना, सुलाना, धुलाना आदि सभी काम सुव्यवस्थित-रूपसे होता है। शिशुशालाकी डाक्टर बच्चेके स्वास्थ्यका पूरा ध्यान रखती हैं और स्वास्थ्यके अनुसार भोजन दिलानेका प्रबन्ध करती हैं। शिशु-शाला और आगे भी जो इतने बड़े पैमाने पर बच्चे एक आयुके एक साथ रखे जाते हैं इससे सही अर्थमें वह सामाजिक जीव बन जाते हैं। शिशु-शालाके लिये माँ-बापको कुछ खर्च देना पड़ता है, किन्तु वह वास्तविक खर्चका चौथाईभी नहीं होता। और उससेंभी कम वेतन पानेवाले या युद्धमें जिनके बाप मारे या विकलाङ्ग हुए हैं, उनको कुछ नहीं देना पड़ता; इन शिशुशालाओं में और आगेभी एक उम्रके बच्चे एक वर्गमें रहते हैं। शिशुशालाओंका परिदर्शनभी आदमीके लिये बहुत मनोरंजक और आनन्द-प्रद होता है। कुछ बच्चे नरम-पालनोंमें सोए हाथ-पैर हिला रहे या अँगूठा पी रहे हैं। चल फिर सकनेवाले बच्चे बगीचोंमें फुदक रहे हैं। या जाड़ोंमें भूमि पर पड़ी हुई बरफको लकड़ीके बेलचोंसे काट रहे हैं। सभी स्वस्थ हैं, सभी प्रसन्न हैं।

(२) बालोद्यान—तीन वर्ष की उम्र पूरी हो जाने पर बच्चे शिशु-शालासे बालोद्यान या किन्डर गार्डनमें भेज दिये जाते हैं यहाँ शिशुशालाकी तरहही लड़के-लड़कियाँ एक जगह रहती हैं। इस नियमको स्कूलके दस सालोंमें नहीं बरता जाता। ७ सालकी उम्र पूरा होने तक बच्चे बालोद्यानमें रखे जाते हैं। उनके साथही उनकी स्वास्थ्यवाली जन्म-कुण्डली बालोद्यानके डाक्टरके पास पहुँच जाती है और अगले चार सालोंमें बच्चेकी सारी स्वास्थ्य-घटनायें और सुधारके प्रयत्न दर्ज होते रहते हैं। बालोद्यानमें भी माँ-बापका शिशुशालाही की तरहसे लड़केके खर्चके लिये कुछ देना पड़ता है। कितने ही खर्चसे मुक्त रहते हैं और कितनोंको बहुत कम खर्च देना पड़ता है। मेरे

लड़केकेलिये जब मैं लेनिनग्रादमें नहीं था तो ४० रूबल २० रुपयेके करीब, मासिक माँको देना पड़ता था। मेरे पहुँच जानेपर मासिक शुल्क दूना हो गया।

बालोद्यानमें ४, ५, ६, ७ वर्षोंके उनके चार वर्ग होते हैं। वर्गमें संख्या अधिक होनेपर उन्हें २० या कम-वेशीकी टुकड़ियोंमें बाँट दिया जाता है। माँ या कुछ बड़े होनेपर स्वयं बच्चे ६ बजेके करीब बालोद्यानमें पहुँच जाते हैं। लड़के सबेरे चाय-पान करके जाते हैं, किन्तु बालोद्यानमें भी जल-पान तैयार रहता है। थोड़ा शारीरिक-व्यायाम-हाथ-पैर हिलाना या दौड़-धूप-और जलपान, फिर उनका खेल शुरू हो जाता है। खेल बहुत तरहके हैं। हर बालोद्यानके साथ या पासमें एक उद्यान अवश्य रहता है, जहाँ बहुत प्रकारके फूल और वृक्ष होते हैं। वहाँ दो-चार बकरियाँ, कुत्ते, मुर्गियाँ और सूअर भी होती हैं। इनसे जहाँ बच्चोंका मनोरंजन होता है, वहाँ उनके स्वभावके बारेमें भी वह कुछ ज्ञान प्राप्त करते हैं। घरौंदे बनानेकेलिये लकड़ीके टुकड़े, घूमती नावें और दूसरे खेलके साधन उद्यानमें रखे रहते हैं। घरके भीतर सैकड़ों तरहके खिलौने होते हैं, जिनमें कितने ही मनोरञ्जनके अतिरिक्त उनकी बुद्धिके विकासमें भी सहायक होते हैं। लड़कियोंकेलिये कितनी तरहकी गुड़ियाँ होती हैं।

स्वच्छता और व्यवस्थाका इन संस्थाओंमें अखण्ड राज्य रहता है। बच्चे आते ही अपने फालतू कपड़ोंको अपनी-अपनी छोटी-सी आलमारियोंमें रख देते हैं। बालोद्यानमें अक्षर न सिखलानेकी कसम है। पाँतीसे रखी आल-मारियोंमेंसे अपने आलमारीकी पहचानकेलिये उनके ऊपर भिन्न-भिन्न जानवरोंके चित्र लगे रहते हैं। इनसे वे शताधिक जानवरोंको पहचान भी जाते हैं और अपनी आलमारीका पता भी रखते हैं। बच्चोंके अँगोछोंपर भी इसी तरहके चित्र होते हैं। हरवर्ग अपने लिये एक लड़का एक लड़की को स्वास्थ्य-रक्षकके तौरपर निर्वाचित करता है। नगरके स्वास्थ्य-रक्षा-निरीक्षक नर-नारियोंकी तरह इनकी बाँहपर भी लाल फीता बँधा रहता है। निरीक्षक

ध्यान रखते हैं, कि कोई बच्चा नाखून और हाथ साफ किये बिना खानेके-लिये मेजपर तो नहीं बैठ गया, किसीने रद्दी-कागजको जहाँ-तहाँ तो नहीं फेंक दिया। बालोद्यानमें लड़कोंके सोनेकेलिये छोटी-छोटी चारपाइयाँ होती हैं; उनपर छोटा-छोटा गद्दा, तकिया, ओढ़ना और बिछौना भी होता है। अपनी चारपाई बिछौनेको ठीक रखना हर बच्चेका काम है। गद्दे और चादरको आस्ते-से झाड़ना फिर गद्देपर चादर बिछाना—बेचारे छोटे बच्चोंकेलिये लम्बी चादर कम्बल बिछाना उतना आसान नहीं है। वह आधा-आधा करके बिछाते हैं। कम्बलके ऊपर चादर डाल फिर तकियेको सजाकर रख देते हैं। निरी-क्षकोंका काम यह भी देखनेका है, कि बिछौना ठीकसे लगाया गया या नहीं। खाना बनानेकेलिये रसोइया स्त्रियाँ हैं, किन्तु परोसनेमें बच्चे भी सहायता करते हैं और कुछ तो खेल छोड़कर भी चोच्या तान्या (चाची-तान्या)के साथ उसके रसोईघरमें चीजोंको उठाने लेने-देनेमें जबर्दस्ती सहायता करते रहते हैं। यद्यपि इसकेलिये अपने वर्गकी शिक्षिकासे उन्हें बात भी सुननी पड़ती है। जलपानके बाद १ बजे मध्याह्न भोजन होता है। एक बार फिर चाय मिलती है और ५ बजे खानेपर बैठ जाते हैं। मध्याह्न भोजनके बाद बच्चोंका सोनेका समय है। सभी चादर हटाकर अपनी चारपाइयोंपर सो जाते हैं और बालोद्यानके उद्यान तथा घरमें पूर्ण नीरवता छा जाती है। उठनेके बाद चाय और फिर खेल-तमाशा शुरू हो जाता है।

बालोद्यानमें अक्षरसे परिचय नहीं कराया जाता किन्तु इसका यह अर्थ नहीं, कि बच्चोंके ज्ञानकी वृद्धि नहीं होती। बच्चोंको कहानी तथा कविता सुनानेकेलिये खास तौरसे ट्रेण्ड अध्यापिकायें होती हैं। वह हर तरहकी कहानियोंको बड़े मनोरंजक ढंगसे सुनाती हैं; और यह कहानियाँ वर्गानुसार अधिक शब्दों तथा ज्ञानोंसे भरी होती हैं। कितनी ही कहानियाँ उसी तरहकी होती हैं जिन्हें हमने भी अपनी दादियोंके मुँहसे सुना है। कितनी कहानियोंमें आधुनिक घटनायें होती हैं—युद्धकी घटनायें, वीर तरुणी गोयाकी कहानी, लेनिन-स्तालिनकी मनोरञ्जक जीवनियाँ, पशुओं-पक्षियोंके स्वभावकी कहानियाँ

इत्यादि। खास-खास आयुके बच्चोंकेलिये फिल्म होते हैं। जिनसे भी मनोरंजन-के साथ-साथ ज्ञान-वृद्धि होती है। ये फ़िल्म बालोद्यानोंमें दिखाये जाते हैं और गृह-प्रबन्ध (कन्त्रोल) कार्यालयकी शालाओंमें भी। मेरा वासस्थान कन्त्रोल-आफिससे लगा हुआ था अनेक तलोंवाली हर इमारतका एक कन्त्रोल आफिस होता है, जिसका काम है भाड़ा और बिजलीका दाम महीने-महीने उगाहना तथा रोशनी, जल-कल, पाखाना और जाड़ेमें कमरा तपानेको ठीकठाक रखना। जिस दिन कन्त्रोलशालामें बच्चोंका फिल्म आता था, कुछ पहले हीसे बच्चोंकी खूब चह-चह सुनाई देती थी। बच्चे खुद भी बालोद्यानमें नाचते-गाते और छोटे-छोटे अभिनय भी करते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंकेलिये कठ-पुतलीके नाच होते हैं बल्कि कठपुतलीका नाच कहना ठीक नहीं है, वस्तुतः यह एक अच्छा कलापूर्ण नाट्य है, जहाँ दक्षकलाकार कुछ पुतलियोंसे मनोरंजक कहानियोंका अभिनय करते हैं। यह कला सोवियत्में बहुत उन्नत हुई है। कठपुतलियोंका अभिनय मूक नहीं होता बल्कि पूरा सम्वाद होता है। पुतली-थियेटर (कुकलनेतियात्र) बच्चोंमें बहुत प्रिय है। हर अभिनयमें रंगशाला-की कुर्सियाँ बच्चोंसे भरी रहती हैं; जिनमें जहाँ-तहाँ सयाने अभिभावक भी बैठे दीख पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चोंकेलिये जानवरोंके सर्कस भी हैं—कोई-कोई तो खासकर उन्हींकेलिये होते हैं।

मेरी धारणा थी, कि ७ वर्ष तक बच्चोंको अक्षर न पढ़ाना यह उनके बहुमूल्य समयकी बरबादी है। हमारे यहाँ पाँच साल हीमें "ओना मासी धम" शुरू करा दिया जाता है। खासकर अपने लड़केकी वजहसे वहाँ वैय-क्तिक ख्याल भी था। लेकिन मुझे यह मालूम न था, कि बच्चे मौखिक ही बहुतसी शिक्षाकी बातें और ज्ञान सीख जाते हैं। वसन्तके आनेसे पहले ही मेरा लड़का गाने लगता "आ आ वसन्त मेरी बहिनियाँ, बैठी खिड़कियाँ" उसके साथ में भी उस गीत और वसन्तागमनका आनन्द लेता। उसको पचासों कवितायें याद थीं। सामूहिक कविता पाठ और गान बालोद्यानके जीवनका एक अंग है। घर आकर वह माँसे भी आग्रह करके कितनी ही कविता-बद्ध

कहानियोंको सुनता। मेरा भ्रम दूर हो गया, जब पहली क्लासकी ६ महीनेकी पढ़ाई समाप्त होते-होते, मैंने देखा कि बाल-कहानीकी पुस्तकोंसे जबर-दस्ती हटाकर उसे सुलाना पड़ता। चौथी क्लास या ११वें वर्षमें वहाँ लड़कोंको स्कूलमें बीजगणित पढ़ाया जाता है, जो हमारे यहाँ ७वीं क्लासमें शुरू होता है, इससे भी मालूम हुआ कि सोवियत्के बच्चे ७ सालकी आयुमें वर्ण परिचय से वंचित रह घाटेमें नहीं रहते। बालोद्यान वस्तुतः केवल मनोरञ्जन और माँको कामसे मुक्ति देनेका ही स्थान नहीं, बल्कि एक पूरा शिक्षणालय है। एक नागरिककेलिये आवश्यक जिन व्यवहारोंको सीखना चाहिये, उनकी बहुत-सी बातें ये क्रिया रूपमें वहाँ सीख जाते हैं। वहाँ खेलोंके जरिये बच्चोंके मस्तिष्क और काम करनेकी आदतकी शिक्षा दी जाती है।

बालोद्यानमें बच्चे केवल अपने ही वर्गके नहीं बल्कि चारों वर्गोंके बच्चोंके साथ सौहार्द और मित्रता स्थापित करते हैं। शिक्षिकाओं, डाक्टर और रसोइ-दारिनोंसे ४ वर्षोंमें उनका इतना प्रेम हो जाता है, कि बिछुड़ते वक्त उन्हें बहुत दुःख होता है। अपने वर्गके बच्चे अब लड़के और लड़कियोंके अलग-अलग स्कूलोंमें जायेंगे, इसलिये वह सहवास उन्हें अब नहीं मिल सकता। हाँ, आगे भी एक दूसरेकी दावत करके या उत्सवके दिनोंमें मिलकर वे स्थायी परिचय रखनेकी कोशिश करते हैं।

२. स्कूल-कालेजकी शिक्षा

(१) प्रारम्भिक स्कूल—स्कूल, यूनिवर्सीटी, कालेज और दूसरी सारी शिक्षण-संस्थायें पहली सितम्बरको खुलती हैं, यानी उनका वर्ष इसी दिनसे आरम्भ होता है। बालोद्यानसे अन्तिम भोज खाकर लड़के-लड़कियाँ इस दिन की प्रतीक्षा करती हैं। स्वास्थ्य-कुण्डली और बालोद्यानका दूसरा कागज-पत्र पहले ही स्कूलकी प्रधानाध्यापिकाके पास पहुँचा दिया जाता है। लड़कोंके स्कूलमें लड़कोंका और लड़कियोंके स्कूलमें लड़कियोंका नाम लिखा दिया

जाता है। पहली सितम्बरको माँ बच्चेको सजा-धजाकर और कुछ तो स्वयं भी सजधजकर अपने बच्चेको स्कूलमें ले जाती है। बच्चोंकी पढ़ाई शुरू हो जाती है। बच्चे अब स्कोल्निक (स्कूलवाला) कहकर अभिमान प्रकट करते हैं। पहले उनकी पढ़ाई तीन घंटेकी होती है जिसमें थोड़ी-थोड़ी देरपर शारीरिक व्यायाम भी करना पड़ता है। लड़ाईमें जहाँ स्कूलोंके बहुतसे मकान नष्ट हो गये, वहाँ एक ही मकानको दो बारमें पढ़ानेकेलिये इस्तेमाल किया जाता था। कुछ बच्चे १० बजे जाकर १ बजे घर लौटते होते, उस समय दूसरा दल पढ़नेकेलिये जाता दिखलाई पड़ता।

सोवियत् शिक्षाका उद्देश्य मास्को शिक्षा बोर्डके अध्यक्षके कथनानुसार है:

(१) आवश्यक ज्ञान प्रदान करना।

(२) देशके प्रति प्रेमका भाव भरना।

(३) समाज, सम्पत्ति और अपने प्रति बच्चेमें सामाजिक दायित्वके भावको डालना।

सोवियत् शिक्षा बालकोंकेलिये एकसी होती है, सभी जगह एक तरहके स्कूल और हर जगह वही पाठ्य पुस्तकें होती हैं। लेकिन, इसका अर्थ यह नहीं कि बच्चोंको ठोक-पीटकर एक तरहका बनाया जाता है। स्कूलमें एक तरहकी पाठ्य-पुस्तकोंको पढ़ते हुए भी स्कूलके बाहर उनको अपनी रुचिके अनुसार आगे बढ़नेका पूरा मौका रहता है। बच्चोंको सिखानेकेलिये बाजा बजाना, गाना, नाचना, चित्र खींचना आदि-आदिका अलग भी प्रबन्ध होता है। वहाँ बच्चे स्वेच्छापूर्वक अपनी छुट्टीके समय जाते हैं।

सोवियत्में स्कूलको तीन भागोंमें विभक्त किया गया है, प्रारम्भिक स्कूलोंमें पहली चार क्लासें होती हैं, मिडल स्कूलोंमें सातवीं क्लास तककी पढ़ाई होती है और हाई स्कूलोंमें ८वीं, ९वीं, १०वीं क्लासोंके विद्यार्थी पढ़ते हैं। शहरोंमें पृथक प्रारम्भिक स्कूल बहुत कम पाये जाते हैं। अधिकतर मिडल

स्कूल होते हैं, जिनमें सात क्लासोंकी पढ़ाई होती है। इसी तरह हाई स्कूल हैं, जिनमें दसों क्लासें होती हैं। हरएक बच्चा अपनी मातृभाषामें शिक्षा पाता है। सोवियत्की ऐसी ६६ भाषायें हैं। १९१७की क्रान्तिके पहले यूरोपीय भाषाओं तथा गुर्जी, अर्मेनियम, अजुर बायजानी, उजबेक और मंगोल भाषाओंको छोड़कर बाकीकी न लिपि थी न लिखित-साहित्य। सोवियत् सरकारकेलिये हर नागरिकको साक्षर और शिक्षित बनाना उसी तरह आवश्यक था, जिस तरह क्रान्तिको सुरक्षित रखनेका आयोजन। उस समय देशके भीतर और बाहर सब जगह बोल्शेविकोंके खिलाफ हजारों तरहके झूठे प्रचार किये जाते थे। सोवियत् राष्ट्र मजबूत नहीं हो सकता था, न नव-निर्माणको सफलता-पूर्वक कर सकता था, उसकी पंचवार्षिक योजनायें हवामें रह जातीं, यदि उसे जनताका पूरा सहयोग न मिलता। जनताके सहयोगकेलिये उसे यह समझाना जरूरी था, कि सोवियत् सरकार क्या करना चाहती है और उसके शत्रु क्या करनेके फेरमें हैं। भारतमें भी हमारी सरकारके सामने इसी तरहकी समस्या और इसलिये हम भी सोवियत्के प्रयोगसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। सोवियत् ने निश्चय किया कि जनताको साक्षर करनेकेलिये हमें "प्राणैः कण्ठगतैरपि" तरह काम करना होगा। १०-१५ वर्षके भीतर सारी जनताको साक्षर और शिक्षित करना जरूरी है। उन्होंने देखा, यह काम किसी उन्नत-साहित्य-भाषाको लेकर नहीं बल्कि जनताकी मातृभाषा द्वारा ही सम्भव है। उन्होंने खकाश, चुकची, येवेंकी, किर्गिज जैसी पचासों भाषाओंको लिपि दी, पाठ्य-पुस्तकें तैयार कीं, अध्यापक तैयार किये और साथ ही पढ़ानेका काम शुरू किया। और परिणाम?

१९१७ तक रूसी साम्राज्यके ५ मेंसे ४ हिस्से बच्चोंके लिये शिक्षाकी कोई सम्भावना न थी, १६ अक्तूबर १९१८को घोषणा हुई, जिसके अनुसार निश्चय किया गया :

(१) सभी तरहकी शिक्षण-संस्थाओंका खर्च सरकारी बजटमें शामिल

होगा। स्कूलके काम और रूप (पाठ्य-पुस्तक, पाठ्य-क्रम आदि) का निश्चय सरकार करेगी। शिक्षाका प्रबन्ध, नियंत्रण और संचालन शिक्षा विभागके हाथमें रहेगा।

(२) शिक्षाका धर्मसे कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। "धर्म हरएक व्यक्तिकेलिये निजी विश्वासकी चीज है, इसलिये राज्य धार्मिक बातोंमें तटस्थ है—वह किसी एक धर्मका समर्थन नहीं करता, न किसीको खास अधिकार या सुभीता देता, और न किसी एक खास धर्मको अर्थ या सदिच्छाके रूपमें सहायता देगा। अतएव बच्चोंकी धार्मिक शिक्षाका काम सरकार अपने ऊपर नहीं ले सकती।"

(३) शिक्षा सबके लिये चाहे जिस भी धर्म या सामाजिक स्थिति, जातीय या रंगका हो, हर एक नागरिकको शिक्षा पानेका अधिकार है।

सोवियत्के सभी नागरिक शहरोंमें नहीं रहते जहाँ कि बालकोंकी संख्या अधिक होनेसे मिड्ल या हाई स्कूल खोलनेमें आसानी है। कम्सचात्का, त्यानशान्, पामीर और काकेशसके पहाड़ोंमें स्कूलोंके खोलनेमें और भी दिक्कत थी। वहाँ जनसंख्या और बिखरी हुई थी और एक जगह दस ही पाँच घर मिल सकते थे—बहुतसे तो उनके घर भी जाड़ा भर एक जगह रहनेके डेरे मात्र थे और बाकी समयोंमें वे अपने पशुओं या शिकारके पीछे घूमा करते। इसलिये किन्हीं-किन्हीं जगहोंपर एक जगह १०-१२ लड़के मुश्किलसे मिलते। लेकिन हरएक सोवियत् बालकको शिक्षा प्राप्त करनेका अधिकार है और सरकार उसका प्रबन्ध करनेकेलिये मजबूर है। अतः १०-१२ लड़कोंकेलिये भी उसने "बौने" स्कूल खोले। घुमन्तुओंके डेरेके साथ ही अध्यापक और स्कूलका तम्बू भी गया। ऐसे स्कूलोंमें लड़के और लड़कियोंके पढ़ानेका पृथक् इन्तिजाम नहीं हो सकता था। मिड्ल-स्कूलोंकेलिये भी कितनी जगह बालक-बालिकाओंकी सह-शिक्षाको कायम रखा गया, यदि देखा गया कि उसमें कम संख्या और अधिक व्यय बाधक है।

सोवियत्की शिक्षा-नीतिने भारी परिवर्तन उपस्थित किया—काकेशसमें कबर्दिनो-बलकारियाके स्वायत्त प्रजा-तन्त्रको ले लीजिये, जहाँ १९१३में १२ प्रारम्भिक और १ मिडिल स्कूल था। १९४०में ६४ प्रारम्भिक ६२ मिडिल और ६१ हाई स्कूल थे, जिनमें ७४,६८४ लड़के पढ़ रहे थे। आरमेनिया प्रजातन्त्रमें १९१४के ३४,००० विद्यार्थियोंकी जगह, १९३९में ३,२०,००० बच्चे पढ़ रहे थे। तुर्कमानिस्तानमें जहाँ १९१४में ६,८०० विद्यार्थी थे, वहाँ १९३९में २,२३,००० हो गये; इसी तरह उज़्बेकिस्तानमें १९१४में १७,००० विद्यार्थी थे, १९३९में ११,०६,००० हो गये। रूसी और उक्रइनी जातियोंके साथ-साथ सोवियत्की कितनी पिछड़ी जातियोंमें शिक्षाका विस्तार कैसे हुआ, इसे निम्नतालिकामें प्रतिशत शिक्षितके रूपमें देखिये :—

नाम-प्रजातन्त्र	१९२६	१९३९
	(प्रतिशत)	(प्रतिशत)
रूसी प्रजातन्त्र	५५·०	८१·९
उक्रइन	५७·५	८५·३
आज़ुरबाईजान	२५·२	७५·३
तुर्कमानिस्तान	१२·५	६७·२
उज़्बेकिस्तान	१०·६	६७·८
ताजकिस्तान	३·७	७१·७

यदि सोवियत्ने मातृभाषाओंको शिक्षाका माध्यम न बनाया होता, तो शिक्षामें इतनी शीघ्र उन्नति न होती। आज वहाँ कुछ बूढ़े ही निरीक्षर रह गये हैं। भारतमें भी जनतासे शीघ्र निरक्षता दूर करने का यही रास्ता है, कि

मातृभाषाओंको हम शिक्षाका माध्यम बनायें और कमसे कम प्रारम्भिक ६ क्लासोंकेलिये व्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, भोजपुरी, मगही, मैथिलीको अपनानेमें आनाकानी न करें।

सोवियत्‌में तीसरी क्लाससे रूसी भिन्न-भाषा-भाषी बच्चोंको सारे सोवियत् संघकी राष्ट्र भाषा रूसीका पढ़ना अनिवार्य है। इसका अनुकरण करते हुए हम भी सारे भारतकेलिये हिन्दीको राष्ट्र-भाषा मान तीसरी या चौथी क्लाससे हिन्दीको अनिवार्य कर दें। सोवियत् स्कूलोंमें रूसी भाषा-भाषी बच्चे किसी एक यूरोपीय-भाषाको भी द्वितीय-भाषाके तौरपर पढ़ते हैं; अ-रूसी भाषा-भाषी कुछ समय बाद उसे शुरू करते हैं।

सोवियत्‌के स्कूलोंकी इमारतें बहुत अच्छी होती हैं। बहुतसे प्राइमरी स्कूलोंके मकान तो हमारे यहाँके अच्छे कालेजोंके मकानसे भी विशाल और सुन्दर होते हैं। प्रारम्भिक स्कूलके हरएक शिक्षककेलिये ट्रेनिंग स्कूलका प्रमाण-पत्र आवश्यक है। मिड्ल स्कूलोंके शिक्षक, शिक्षक-इन्स्टीच्यूटकी शिक्षा प्राप्त किये रहते हैं और हाई स्कूलमें अर्थात् ८, ९, १०वीं क्लासके पढ़ाने वाले ट्रेनिंग कालेज या युनिवर्सीटीके शिक्षा विभागके ग्रेजुयेट होते हैं।

पाठ्य-पुस्तकें बड़े ध्यानसे तैयार की जाती हैं। अपने विषयके अधिकारी व्यक्ति उसे लिखते हैं। लिखित पुस्तकोंकी प्रतियोगिता होती है। १९३६में इतिहासके पाठ्य-पुस्तककेलिये एक इसी तरहकी प्रतियोगितामें "सोवियत्‌संघका संक्षिप्त इतिहास" पुस्तकको निर्णायकोंने सबसे अच्छा कहा। इसे मास्कोके राज्य ट्रेनिंग कालेजके अध्यापकों और इतिहासके गम्भीर विद्वान् प्रो० अ० व० शेस्ताकोफने तैयार किया था। शिक्षा-मन्त्रीने ५वींसे १०वीं क्लासकेलिये इतिहासकी पाठ्य-पुस्तकोंको तैयार करनेके वास्ते विद्वानोंके पाँच समुदायोंको नियुक्त किया। इन पुस्तकोंके हस्त-लेखको देशके प्रमुख विद्वानों और राजनीतिज्ञोंने दुहराया—स्तालिन, किरोफ, ज्दानोफ जैसे चोटीके नेताओंने देखकर कई सुझाव दिये, और उसके बाद इन पुस्तकोंको छापा गया।

प्रारम्भिक स्कूलोंकी पढ़ाईमें प्रति सप्ताह भिन्न-भिन्न विषयोंकी पढ़ाईमें घंटे नियत हैं; जैसे रूसी स्कूलोंकेलिये :—

विषय	क्लास			
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
रूसी भाषा और लिखना	१४	१४	१५	८
गणित	७	७	६	७
प्राकृतिक विज्ञान	०	०	०	३
इतिहास	०	०	०	२ (३)
भूगोल	०	०	०	३ (२)
शारीरिक व्यायाम	१	१	२	२
चित्रण	१	१	१	१
गाना	१	१	१	१
योग	२४	२४	२५	२७

वर्ष भरमें प्रारम्भिक स्कूलोंकी पढ़ाईके घंटे निम्न प्रकार हैं :

विषय	क्लास				
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	योग
रूसी भाषा और लेख	४५६	४५६	४८६	२६२	१६६२
गणित	२२८	२२८	१९६	२२८	८८३
प्राकृतिक विज्ञान	०	०	०	९७	९७
इतिहास	०	०	०	८१	८१
भूगोल	०	०	०	८१	८१
शारीरिक व्यायाम	३३	३३	६६	६६	१९८
चित्रण	३३	३३	३३	३३	१३२
गाना	३३	३३	३३	३३	१३२
योग	७८४	७८४	८१७	८८२	३,२६७

पहली और चौथी क्लासमें चार पाठ होते हैं। हर पाठके लिये पैंतालीस मिनट नियत हैं। तृतीय क्लासमें पाँच दिन चार-चार पाठ और एक दिन पाँच पाठ होते हैं। चतुर्थ क्लासमें तीन दिन चार-चार पाठ और तीन दिन पाँच-पाँच पाठ होते हैं। एतवारको स्कूल बंद रहते हैं।

प्रारम्भिक चार क्लासोंमें भाषा और लेखनके घंटे प्रति सप्ताह निम्न प्रकार हैं :—

भाषा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
पढ़ना	६	६	६	३
लिखना	५	५	६	४
भाषाविकास	१	१	१	१
सुलेख	२	२	२	...

स्कूली पुस्तकोंके अतिरिक्त लड़के अपने मनसे बहुत सी कहानियों और कविताओंकी पुस्तकें घरपर पढ़ा करते हैं। घरपर स्कूलका काम भी उन्हें कुछ करना पड़ता है, जो कि एक डेढ़ घंटेसे अधिक नहीं होता। बाकी वह अपने मनकी पुस्तकें पढ़ते हैं। स्कूलके पाठ्य-क्रममें लड़कोंकेलिये दर्जनों ऐसी मनो-रंजक पुस्तकोंकी सूची दी रहती है। उदाहरणार्थ प्रथम क्लासकी ऐसी कुछ पुस्तकें निम्न प्रकारकी हैं :—

"फुलकिया"—रूसी जनकथा

"रूसी जनकथा"—अलेक्से तालस्त्वा द्वारा संगृहीत

"मेढ़की रानी"—रूसी जनकथा

"हंस-हंसी"—रूसी जनकथा

"मेंढकिया वटोहिन"—व० गर्शिन
"हमने क्या देखा ?"—व० जित्कोफ
"तेरे रखवार"—ल० कासिल, अ० एमेलियेफ
"लालसेना"—ल० क्वित्को
"कथा, गीत, पहेली"—स० मर्शक
"कौन ऐसा भला, कौन ऐसा बुरा ?"—व० मयाकोव्स्की (महाकवि)
"रानी और सात बहादुरोंकी मृत्यु"—पुश्किन (महाकवि)
नन्हेकी कहानियाँ"—ल० ताल्स्त्वा
"तीन भालू"—ल० ताल्स्त्वा
"चार लालसायें"—क० उशिन्स्की
"कैसे उगा खेतमें कुर्ता ?"—क० उशिन्स्की
"हमरे द्वारे"—ये० चारुशिन्
"जङ्गलमें"—ये० चारुशिन
"गर्म-ठंढे मुल्कोंके जानवर"—ये० चारुशिन्
"डाक्टर ऐवोलित" (परिहासपूर्ण बालकाव्य)—क० चुकोव्स्की

द्वितीय क्लासके विद्यार्थियोंके लिये—

"लाले लाले फुलवा"—स० अक्साकोफ़
"हममें अच्छा कौन ?"—व० बिअन्की
"होंगे वीर"—(कहानी और कविता)
"क्रान्तिकारिन तान्या"—क० वेरेयिस्कया
"वलोद्या उल्यानोफ" (लेनिन)—न० वेरेतिन्निकोफ
"सहरकी बिटिया"—द० वोरोन्कोवा
"अँगुरी भरका बेटौना"—व० .जुकोव्स्की
"बाल कविता"—स० मिखल्कोफ़
"जानवरोंकी कहानियाँ"—ल० ताल्स्त्वा

तीसरे क्लासके विद्यार्थियोंकेलिये

"आर्मेनियाकी कहानी"—(जनकथा)
"महासागरके पथपर"— व० वियान्की
"युद्धकी धोखा-धड़ी"—न० ग्रिगोर्येफ
"राबिन्सन क्रूसो"—द० देफो
"टोपीवाली बिलौटी"—व० जुकोव्स्की
"कैसे मोटरने चलना सीखा ?"—मा० इलिन
"लेनिनकी कहानियाँ"—अ० कोनोनोफ
"बोरोदिनो" (प्रसिद्ध युद्धपर काव्य)—मा० लेर्मेन्तोफ (महाकवि)
"गुलिवर-यात्रा"—ड० स्विफ्ट
"बाब्का" (दादी)—व० ओसेयेवा
"कविता"—अ० पुश्किन
"सोनेकी कुंजी"—अ० ताल्स्त्वा
"पराक्रमी पर्सियस" (यूनानकी पुरानी कहानी)
"चन्द्र पुरुष"—अ० चुमाचेन्को

चौथी क्लासके लड़कोंकेलिये—

"युद्धके वर्ष"—गृहयुद्धकी कहानियाँ
"तैमूर और उसका कमांड"—अ० हैदर
"सुवारोफ"—स० ग्रिगोर्येफ
"अन्तिम पाठ"—अ० दोदे
"अन्तिम रात"—ल० जरिकोफ
"स्तेपन् राज़िन" (किसानवीर)—स० ज्लोबिन
"क्यों सौ हजार"—मा० इलिन
"पातालके बच्चे"—व० कोरोलेन्को
"कविता"—अ० पुश्किन

"राजा और रंक"—मार्क ट्वाइन

"मुमू"—ई० तुर्गनेफ्

"कविता"—त० शेव्चेन्को

"नन्हेलाल इन्डियन"—द० सुलास्

"जीवनकी कहानियाँ"—अ० याकोब्लेफ

इतिहास और भूगोल प्रारम्भिक स्कूलमें सिर्फ चौथी क्लासमें पढ़ाया जाता है। इतिहासमें पढ़ानेकी चीजें हैं—हमारी जन्मभूमि, कियेफका राज्य, मंगोलों-की दासता, स्वेडों (स्वीडनवालों) और जर्मनोंसे लड़ाइयाँ, मास्को राज्य, रूसी साम्राज्य (१८वीं सदी), जारशाही रूस (१९वीं सदीका पूर्वार्ध), जारशाही रूस (१९वीं सदीका उत्तरार्ध), रूसमें प्रथम क्रान्ति (१९०५), समाजवादी महाक्रान्ति (१९१७), गृहयुद्ध (१९१७-२२), सोवियत् संघ—समाजवादका देश, मातृमुक्ति युद्ध।

भूगोलमें चौथे क्लासके लड़कोंको पढ़ाया जाता है—भूगोल, सोवियत् संघका प्राकृतिक मानचित्र, राजधानी मास्को, उत्तरीय हिमसागर, तुन्द्रा प्रदेश, वनप्रदेश, बयाबान-प्रदेश, मध्य-एसियाकी मरुभूमि और पहाड़, काकेशस्, क्रिमिया, मानचित्रके सहारे संक्षिप्त राजनीतिक विवरण।

चित्रणमें प्रकृति-चित्र, कल्पना-चित्र और अलंकार-चित्र खिंचवाये जाते हैं, इसके घंटे निम्न प्रकार हैं :—

विषय	क्लास			
	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
प्रकृति चित्र	१२	१६	२०	२४
अलंकरण चित्र	१०	९	५	०
कल्पना चित्र	११	८	८	६

मिडल स्कूल—पाँचवें, छठवें, सातवें क्लास मिडल स्कूलके । जिसमें ११से १४ साल तककी उम्रके लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं। मिडल स्कूल पास छात्रोंकी योग्यता करीब-करीब वही होती है जो हमारे यहाँ हाईस्कूल पास लड़कोंकी। यह मैं बतला चुका हूँ कि सोवियत् स्कूलोंमें चौथे क्लाससे बीज-गणित आरम्भ हो जाती है, जब कि हमारे यहाँ वह सातवें क्लासमें आरम्भ होती है। सोवियत्के बच्चोंको सभी विषय अपनी मातृभाषा द्वारा पढ़ना होता है, इसीलिये वह तीन साल पहले ही उन विषयोंको पढ़ लेते हैं जिन्हें हमारे बच्चे तीन साल बाद पढ़ते हैं।

मिडल स्कूल पास बच्चोंके सामने तीन रास्ते हैं—(१) आठवें क्लासमें भर्ती हो हाईस्कूलकी पढ़ाई करना, (२) व्यावसायिक स्कूलोंमें जाना, (३) थोड़े समयके व्यापारिक विद्यालयोंमें जाना।

प्यूनीर—स्कूलोंके बाहर विद्यार्थियोंकी शिक्षाके कई सुभीते हैं। सबसे अधिक सुभीता है प्यूनीर (पायोनियर)जो हमारे यहांके व्वायस्काउटकी तरह है और जिसमें ६ सालसे १५ साल तकके लड़के लड़कियाँ होती हैं। बड़े शहरोंमें तो प्यूनीरोंके अपने महल हैं, जिनमें पचासों कमरे होते हैं। प्यूनीर-क्लब भी होते हैं। वहाँ छात्रोंके अपनी रुचिके विषयोंके अध्ययनका प्रबन्ध होता है। गीत, नृत्य, वाद्य, चित्र, फोटोग्राफीके सिखाने वाले अध्यापक रहते हैं। सतरंजके भी अखाड़े जमते हैं। तैरना, बरफपर फिसलना, हॉकी-फुटबाल, सभी तरहके खेलोंका वहाँ इन्तजाम रहता है। प्यूनीर बाहर जंगलोंमें जाकर कैम्प लगाते हैं, जहाँ उनकेलिये और खेलोंके अतिरिक्त बंदूक चलाने, शिकार करनेका भी प्रबन्ध रहता है।

यहाँ प्यूनीरोंके ऐसे ही एक कैम्पका हम वर्णन देते हैं। याद रहे कि हर साल तीस लाखसे अधिक प्यूनीर अपनी छुट्टियाँ इन कैम्पोंमें बिताते हैं। ये कैम्प अधिकतर जंगलोंमें, नदी, झील, या समुद्रके किनारे लगते हैं। हरएक मजूरसभा और दूसरी संस्थाओंकी तरफसे इन प्यूनीर-कैम्पोंको मदद दी जाती है। माँ-बाप अपने बच्चोंके खानेभरका खर्च देते हैं। युद्धमें मरे लालसैनिकोंके

बच्चोंको कुछ नहीं देना पड़ता है। कैम्पके लिये प्रस्थान करनेसे पहले अभि-भावकोंकी सभा होती है, जिसमें कैम्पका स्थान बतलानेके साथ-साथ यह भी कह दिया जाता है, कि दिनचर्या क्या रहेगी और कौन दिन बच्चोंसे भेंट हो सकती है। खाना होनेसे पहले सब बच्चोंकी डाक्टरी परीक्षा होती है। डाक्टर उनके भोजन आदिके बारेमें आवश्यकता होनेपर खास हिदायतें देता है। ये कैम्प अट्ठाईस दिनोंके होते हैं। अस्वस्थ लड़कोंकेलिये अलग कैम्प हैं। इलिना ओल्कने एक कैम्पका जिक्र करते हुए लिखा है :—

मैं मास्कोसे शामको देरसे पन्द्रह-बीस मील दूर इस कैम्पमें पहुँची। बच्चे एक घंटे पहलेसे सो गये थे। कैम्पकी मुखिया ल्युबोफ पोलेयेवा हमें ऊपरके शयनकक्षोंमें ले गई। बड़े दुतल्ले मकानके ऊपरके कमरे लड़कियोंके थे। खुली खिड़कियोंसे देवदारकी भीनी-भीनी गंध आ रही थी। वहाँ रातकी ड्यूटीपर एक नर्स अपने स्वच्छ श्वेत परिधानमें बैठी थी। नीचे लड़कोंके शयनकक्ष थे।

इस कैम्पमें २६० लड़के थे, जो आठ टुकड़ियोंमें बँटे थे—चार टुकड़ियाँ लड़कोंकी और चार लड़कियोंकी। प्ायनीरोंके नेता, शिक्षक और पथप्रदर्शक पन्द्रह थे, जिनकी उम्र १८से २३ तककी थी। यह सब हाईस्कूल पास थे और अपने कामकी उन्होंने खास तौरकी शिक्षा पाई थी। व्यायाम और संगीत-पटु होना उनके लिये आवश्यक है, साथ ही चित्रण, मिट्टी और कागजकी मूर्तियाँ बनाने आदिका भी उनमेंसे कितनोंको ज्ञान था। विद्यार्थियोंको घूमनेकेलिये कैसे ले जाना, कैसे फल, औषधि और पौधोंके संग्रह करनेमें उनकी सहायता करना—यह सब वे अच्छी तरह जानते थे। कैम्पका अध्यक्ष युनिवर्सिटीका ग्रेजुयेट था।

सबेरे ही बिगुल बजा। अभी उसकी प्रतिध्वनि विलीन नहीं हुई थी, कि लड़के पासकी खुली जगहमें आकर खड़े हो गये। लड़कियाँ अपनी नीली घँघरी और सफेद कुर्त्तियोंमें, लड़के अपने हाफ पैन्ट और सफेद कमीजोंमें।

हरेककी गर्दनमें प्योनेरकी लाल रूमाल बँधी थी। ठीक साढ़े सात बजे अध्यापककी कमानपर उनके हाथ और पैर झूमने लगे।

प्रातःकालके व्यायामके उपरान्त बच्चोंने हाथमें अँगोछा लिया और अपने नेताओंके साथ नदीमें नहाने गये—लड़कियाँ बाईं ओर एक दूसरे घाटपर और लड़के दाहिनी ओर। नहानेके बाद दौड़ते हुए वह अपने शयनकक्षमें गये। अपने बिस्तरोंको ठीकसे लगाया। अपने शरीरको ठीकठाक किया। तब तक साढ़े आठ बजे। फिर बिगुल बजा और फिर वह दौड़कर उसी खुली जगहमें पाँतीमें खड़े हुए। सब "सावधान" पर खड़े हो गये। हर टुकड़ीका नेता पाँतीसे आगे निकलकर रिपोर्ट देने लगा। "दूसरी टुकड़ीकी पाँचवीं उप-टुकड़ीमें नौ मेम्बर सब यहाँ मौजूद, कोई बीमार नहीं।" इसी तरह दूसरी टुकड़ियोंके नेताओंने रिपोर्ट दी। यह रिपोर्ट फिर कैम्पकी प्रधानाके पास पहुँचाई गई। अन्तमें प्रधानाने कमान किया—"सावधान!" "झंडेकेलिये तैयार!" बिगुल फिर बजा और लहराता हुआ झंडा ऊपर उठा। लड़के वहाँसे भोजनशालामें आये।

स्वच्छ श्वेत वस्त्रसे ढँकी मेजें वहाँ तैयार थीं। उन पर गर्मागर्म रोटियोंके टुकड़े एक बड़ी प्लेटपर और दूसरीपर ताजा मक्खन और साथमें एक गड़ुआ दूधका भी रखा था। परोसिकाओंने अंडा, काफीकी दूधसहित लपसीको मक्खनके साथ परोसा, और नासपातीके साथ जलपान समाप्त हुआ। प्रत्येक टुकड़ी अपनी इच्छानुसार सबेरे भिन्न-भिन्न कामोंमें लग जाती है। उदाहरणार्थ आज छोटे लड़के-लड़कियोंने अपने संग्रहकेलिये जंगलमें जाकर पौधों और दवाईकी जड़ी-बूटियोंको एकत्र करनेका निश्चय किया था। माया सोन्किना और तान्या तन्कयाने कैम्पमें रहनेकी आज्ञा माँगी। उन्होंने फूल लगाया था और चाहती थीं, कि फूलोंमें पानी दें। शूरा आकोलोफ और लेन्या लिसित्सनको बाड़ी लगानेका बहुत शौक था। दोनों मछली मारने नदीके किनारे गये। बड़ी लड़कियाँ गोटा बुननेकी शौकीन थीं। वह चार विशेषज्ञाओंके साथ घासपर बैठकर गोटे बुनने लगीं। इसे वह अपनी माताओंको भेंटमें देना

चाहती थीं। तीन लड़कियाँ जानवरों और फलोंके मिट्टीके खिलौने बना रही थीं। कैम्पमें खिलौना बनाने वाले वर्गके पचासके करीब मेम्बर थे।

एक बजे मध्याह्न भोजन परोसा गया। लेकिन उससे पहले कैम्प द्वारा निर्वाचित दो स्वास्थ्य निरीक्षकोंने सबके नाखून हाथ की सफाईको देख लिया। आजके भोजनमें मांस, चुकन्दर और बंद गोभीका सूप पहली बार, दूसरी बार, हरी मटर और आलूके भर्तेके साथ भेड़के मांसकी कटलेट थी। साथमें खीरेका अचार और टोमाटोकी फाँकें भी थीं। अन्तमें बगीचेकी बरफ-डाली मिठाई आई।

भोजनके बाद दो घंटे मध्याह्न-शयनका समय रहा। चार बजे तक कैम्पमें पूरी निस्तब्धता छाई रही। फिर बिस्तरे ठीक किये गये और अपनी ड्यूटीपर खड़े स्वास्थ्य-रक्षकोंने देखा, कि कोई कपड़ा बेहूदे तौरपर तो नहीं लगाया गया। फिर मक्खन वाले बन (मिठाई)के साथ हल्का कोको पीनेको दिया गया। बच्चे घास वृक्षोंके नीचे अपने माँ-बापसे मिलने गये—आज मुलाकात-का दिन था।

कैम्पमें नाटक, बैले (मूक नृत्य) और जननृत्य, जनगान और नटोंके खेल, चित्रण और व्यायामकी कई जमातें थीं। उस दिन बच्चोंने छ बजे अपनी और पड़ोसी सैनिक कैम्पके बीच फुटबालके खेलका विज्ञापन बनाया था। इसी समय दोनों कैम्पोंकी लड़कियोंने वॉलीबालका मैच खेला। खेल डेढ़ घंटे तक चलता रहा और विजेताओंको पुस्तकें तथा फूलोंके गुच्छे दिये गये। नाटक-मंडलीके बच्चोंने कुछ छोटे-छोटे रूपक खेले। भेंट करनेकेलिये आये अभिभावक और मेहमान खेलाड़ी चले गये। लड़के भोजनशालाकी ओर दौड़े और ब्यालूमें दही, चावलकी खीर, बगीचेका मीठा अचार, चाय और केक मिले।

ब्यालूके बाद बच्चोंने एक-आध घंटा खेल-कूदमें बिताया, फिर खुली जगहमें अलाव जला दिया गया। वादक पहुँच गये थे। उन्होंने एकतारा बजाना शुरू किया। बच्चोंने रागके मुताबिक नृत्य किया, गीत गाये। दिनचर्या

खतम हुई और हाथ-पैर धोकर बच्चे अपनी चारपाइयोंपर सोने गये। दस बजे बत्तियाँ बुझा दी गईं और नीरव हो गया।

व्लादिमिर—इलिच् कारखाना प्रतिवर्ष अपने इस कैम्पकेलिए २,७०,००० रूबल खर्च करता है, जिसमें कैम्पकी और-और आवश्यक चीजों तथा खर्चोंके अतिरिक्त एक धोबीखाना, स्नानागारके फौवारे, प्रतिवर्षकी सजावट और कर्मचारियोंका वेतन भी शामिल है। प्रत्येक बच्चेपर कैम्पमें ५२० रूबल प्रति मास खर्च होता है, जिसमेंसे माँ-बाप अपनी आयके अनुसार २०० से ३०० रूबल तक देते हैं। १५% प्रतिशत बच्चोंको कुछ नहीं देना पड़ता, क्योंकि वह [illegible] बापके या कम वेतन पाने वालोंके लड़के हैं। लड़कियों-को कैनवासका जूता, घघरी और कुर्ती, लड़कोंको जूता, हाफपैन्ट और कमीज मुफ्त मिलती है।

बच्चोंके भोजनमें ५०० ग्राम (एक सेर = आठ सौ ग्राम) रोटी, चालीस ग्राम मक्खन, १५० ग्राम मांस, २०० ग्राम दूसरे अन्न, ६० ग्राम चीनी, दो अंडा, आधा लितर दूध ऊपरसे तरकारी तथा फल प्रतिदिनके आहारमें मिलता है। यह निश्चित राशन है। इसके अतिरिक्त कैम्पके अपने फार्मसे खट्टी मलाई, पनीर और मांस भी मिलता है। कैम्पका डाक्टर लड़कोंकी तन्दुरुस्तीकी निगरानी करता है। प्रति सप्ताह उन्हें तौला जाता है। आवश्यकता होनेपर खास भोजन, विशेष स्नान या मालिशका प्रबन्ध किया जाता है। आम तौरसे बच्चे एक महीनेमें साढ़े चारसे आठ पौंड तक अपना वजन बढ़ा लेते हैं। दो बार करके इस कैम्पमें ५००से अधिक बच्चे आते हैं।

मास्कोकी फैक्टरियों और भिन्न-भिन्न संस्थाओंके इस तरहके ७०० कैम्प हैं। १९४६की गर्मीके पहले महीनेमें १,४१,७६० बच्चे इन कैम्पोंमें आये और सारी गर्मियोंमें राजधानीके २०,९,००० बच्चोंने इन कैम्पोंसे फायदा उठाया।

१९४५में सारे सोवियत्में प्यूनीर संगठनके मेम्बरोंकी संख्या ७० लाख

थीं; जिनमेंसे २० लाख शहरों और ५० लाख दिहातोंके रहने वाले थे। संग-ठनकी ३ लाख टुकड़ियाँ हैं।

× × ×

सोवियत्‌के स्कूलोंमें बच्चोंको शारीरिक दंड या रोक करके उन्हें खानेसे वंचित करने जैसी सजाएँ बिल्कुल वर्जित हैं। अपराध करनेपर बच्चेको अध्यापक स्वयं या क्लासमें सबके सामने फटकारता है, अथवा बेंचपर खड़ा कर देता है, क्लाससे बाहर निकल जानेको कहता है; अध्यापकोंकी बैठकके सामने फटकारता है, सदाचारके अंकोंको नहीं देता, और अन्तिम दण्ड है स्कूलसे निकाल देना। लेकिन इसके लिए जिलेके अधिकारियोंकी स्वीकृति आवश्यक है। अच्छे लड़कोंकी अध्यापक—किन्तु स्कूलोंमें अध्यापक नहीं अध्यापिकाएँ ही अधिक हैं—प्रशंसा करता है और प्रधानाध्यापक अच्छे आचरणका प्रमाण-पत्र देता है।

(३) तीन प्रकारके हाइ स्कूल

(क) साधारण हाइ स्कूल—७वीं क्लासको समाप्तकर बच्चे ८वीं क्लासमें आते हैं। ८वीं, ९वीं, १०वीं क्लास हाई स्कूलकी क्लासें मानी जाती हैं। अधिकांश हाई स्कूलोंमें दसों क्लासें होती हैं। हाई स्कूलमें १४ वर्षकी आयु पूरा करके बच्चे दाखिल होते हैं। और १७वें वर्षको पूरा करके वहाँसे निकलते हैं। शहरोंमें जहाँ अधिक विद्यार्थी हैं, वहाँ लड़के-लड़कियोंके हाई स्कूल अलग-अलग हैं, किन्तु कस्बों और दूसरी जगहोंमें जहाँ बच्चोंकी अधिक संख्या नहीं है, वहाँ सह-शिक्षा दी जाती है। हाई स्कूलोंमें पाठ्य-विषय हैं रूसी या अपनी मातृ-भाषा और साहित्य, गणित (अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति, और त्रिकोणमिति), फ़िज़िक्स (भौतिक शास्त्र), रसायन, प्राकृतिक साइंस (वनस्पतिशास्त्र, प्राणिशास्त्र, शरीरशास्त्र, मानव शरीरावयव, विकासवाद, भूगर्भशास्त्र और धातुशास्त्र), ज्योतिषशास्त्र, सोवियत-संघका विधान, इतिहास (प्राचीन, मध्यकाल और आधुनिक), सोवियत् संघका इतिहास, भूगोल,

कोई एक विदेशी भाषा, शारीरिक व्यायाम, लेख, नक्शानवीसी, कला, गायन और सैनिक शिक्षा (आरम्भिक युद्ध-विज्ञान, जिसकी सैनिक सेवाकेलिये जाने-पर जरूरत होगी)।

कई विषय वैकल्पिक हैं, किन्तु सोवियत्के स्कूलोंमें प्राकृतिक विज्ञान, फिजिक्स और गणितपर बहुत जोर दिया जाता है।

सात सालमें किस विषयके लिये कितना समय देना पड़ता है वह निम्न-तालिकासे मालूम होगा : (१९४२-४३के पाठ्यक्रममें प्रतिवर्ष)

विषय	घंटा	प्रतिशत
मातृ-भाषा और साहित्य	२,६७६	२८·१
गणित	२,०९२	२२·०
फीजिक्स, रसायन, ज्योतिष	८४८	८·९
प्राकृतिक विज्ञान	५२३	५·५
भूगोल	५७०	६·०
इतिहास एवं सोवियत्-विधान	७९७	८·३
आधुनिक विदेशी भाषा	६५३	६·८
लिखना, नक्शानवीसी, कला, गायन	३३०	३·४
व्यायाम, सैनिक शिक्षा	१,०४८	११·०

सोवियत् हाई स्कूलकी पढ़ाई समाप्त करनेपर हमारे यहाँके साइंस या आर्ट्-के इंटरमीडियटकी पढ़ाईसे अधिक ज्ञान होता है, इसमें कोई संदेह नहीं। सोवियत्के शिक्षणालयोंकी कोई भी परीक्षा भयकी नहीं है। वहाँ रटंतको उतना आवश्यक नहीं समझा जाता। परीक्षा भी अपने अध्यापक ही लेते हैं। युनिवर्सिटियोंमें भी, और परीक्षकका ध्यान इस ओर अधिक रहता है, कि विद्यार्थीने अपने विषयको अच्छी तरह समझा या नहीं। इसीलिए सोवियत्के विद्यार्थी पाठ्य-पुस्तकोंसे बाहर अपने विषयोंकी बहुतसी पुस्तकें पढ़ते हैं। हाई स्कूलकी परीक्षा समाप्तकर विद्यार्थी युनिवर्सिटी, मेडिकल कालेज, इंजिनियरिंग कालेज या टेक्निकल कालेजमें दाखिल हो सकते हैं।

(ख) रात्रि हाई स्कूल—जो लड़के हाई स्कूलमें न दाखिल होकर किसी दूसरे काममें लग गये, या दूसरी तरहके विशेष स्कूलोंमें भरती हो गये, वह भी यदि चाहें, तो रात्रि स्कूलोंमें शामिल हो सकते हैं। इन स्कूलोंमें भी हाई स्कूलका ही पाठ्यक्रम है, किन्तु पढ़ाईमें सब विषयोंको साथ-साथ लेनेकी जरूरत नहीं है। वह पाठ्य-विषयोंको अलग-अलग सालोंमें बाँट सकते हैं। जैसे, एक साल उन्होंने भाषा, साहित्य और इतिहासको लेकर परीक्षा पास की, दूसरे साल गणित और फीजिक्सके विषयोंको, तीसरे साल तीसरे समूहके विषयोंको। इस तरह तीन सालमें वह अपनी पढ़ाई समाप्त कर सकते हैं। रात्रिस्कूलोंमें सप्ताहमें तीन दिन पढ़ाई होती है, और प्रतिदिन पढ़नेके तीन घंटे होते हैं। इस परीक्षाको पास कर लेनेपर विद्यार्थी उसी तरह युनिवर्सिटी और कालेजोंमें जा सकता है, जिस तरह हाई स्कूल परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थी।

(ग) विशेष हाई स्कूल—(a) जंगल-स्कूल—यह स्कूल कमजोर स्वास्थ्य के बच्चोंकेलिए है और स्वास्थ्यकर जगल या दूसरे स्थानोंपर बना होता है। यहाँ पढ़ाईके साथ-साथ बच्चोंकी चिकित्साका भी प्रबन्ध रहता है। कितने ही बच्चोंको वर्षों इन स्कूलोंमें रहना पड़ता है। और उस समय वह अपनी पढ़ाई भी साधारण पाठ्यक्रमके अनुसार चालू रखते हैं। इस तरहके स्कूल मानो स्कूल और अस्पताल दोनों हैं।

(b) अंधे, बहरे, गूंगे, तथा कमजोर आँखोंवाले बच्चोंके स्कूल—इन स्कूलोंका पाठ्य-क्रम और पाठ्य-पुस्तकें अपनी अलग होती हैं। अंधोंकेलिये लिपि टोके पढ़ने लायक होती है। बहरे-गूंगोंको इशारे और विशेष यंत्रोंसे पढ़ाया जाता है। शिक्षा-मंत्रीका एक खास विभाग है, जो इस तरहके स्कूलोंकी देखभाल करता है।

(c) विकृत मस्तिष्क बच्चोंके स्कूल—इस तरहके स्कूलोंकी संख्या बहुत अधिक नहीं है, तो भी उनके लिये विशेष पाठ्य-क्रम और पाठ्य-पुस्तकें होती हैं। पढ़ानेमें पाठ्य-यंत्रोंका भी इस्तेमाल किया जाता है और हर तरहसे कोशिश की जाती है, कि १५, १६ सालकी उम्र तक कुछ प्रारम्भिक शिक्षा जैसा ज्ञान हो जाय और फिर बच्चा शारीरिक श्रमके किसी काममें लग जाय।

(d) कला-स्कूल—बड़े-बड़े शहरोंमें असाधारण प्रतिभावाले बच्चोंके लिए विशेष प्रकारके कला-स्कूल हैं। संगीतकी प्रतिभावाले कंजरवेटरी (उच्च संगीत स्कूल) में पढ़ने जाते हैं। नृत्य प्रतिभाके धनी प्रसिद्ध नाट्यशालाओंसे संबद्ध बैलेट (कथकली) स्कूलोंमें पढ़ते हैं। इसी तरह चित्रकला स्कूल, मूर्ति-कला स्कूल आदि भी हैं। इन स्कूलोंमें बहुतसे ऐसे विद्यार्थी होते हैं, जो साधारण स्कूलों और कालेजोंमें पढ़ते हुए कला स्कूलोंकी रात्रि-क्लासोंमें शामिल होते हैं। जो इन स्कूलोंके ही विद्यार्थी होते हैं, उन्हें भी हाई स्कूलकी पढ़ाई जारी रखनेका प्रबन्ध रहता है। सोवियत्की ललितकला जो इतनी उन्नत है—और इसमें शक नहीं कि वहाँ दायभागमें भी बहुत प्रौढ़कला पहिलेसे मिली थी, इसमें इन स्कूलोंका बहुत हाथ है।

(e) आश्रम स्कूल—(१) ऐसे स्कूलोंमें अधिकतर युद्धमें निष्पितृक हो गये बच्चे या भविष्यके सेना-अफसर बननेवाले लड़के पढ़ते हैं। बहुतसे लड़के बाल-भवनोंमें रहते मिडल् स्कूलोंकी पढ़ाई समाप्तकर किसी व्यावसायिक या टेक्निकल स्कूलमें चले जाते हैं और कितने ही हाई स्कूल या सेना स्कूलमें जाते हैं। सेना स्कूलोंमें आम तौरसे १४ साल या मिडल् क्लास पास

करके बच्चे भरती होते हैं। इन्हें ही आगे लालसेनाका जनरल, मार्शल और ऐडमिरल बनना है, इसलिये स्वस्थ और प्रतिभावान लड़के ही वहाँ ज्यादा जाते हैं। उन्हें सैनिक विज्ञानके साथ-साथ हाई स्कूलके दूसरे विषय भी पढ़ने पड़ते हैं।

(f) सुवारोफ़् सैनिक स्कूल—यह भी आश्रम-स्कूल है जो इस युद्धके जमानेमें स्थापित किया गया। यहाँ लालसेनाके सैनिकों और अफसरोंके बच्चे और युद्धमें गुरिल्ला लड़ाई लड़ते मरे वीरोंके बच्चे लिये जाते हैं। कितने ही बच्चे तो ऐसे भी हैं, जिन्होंने खुद गुरिल्ला-युद्ध या लड़ाईके मैदानमें बड़ी बहादुरी दिखलाई। यह सोवियत् सरकारके लाड़ले पुत्र हैं, इसमें संदेह नहीं। दूसरे सैनिक स्कूलोंकी तरह सुवारोफ़् स्कूल भी युद्ध मंत्रि-विभागके अधीन हैं।

(g) टेकिनकल स्कूल—इन स्कूलोंमें टेक्निकल स्कूल, रेलवे स्कूल, फैक्ट्री स्कूल भी शामिल हैं। इनका उद्देश्य है यातायात तथा उद्योगोंकेलिये यंत्र-चतुर व्यक्तियोंको मुहैया करना। जिस दिन सोवियत्‌ने देशके उद्योगी-करणकी तरफ कदम बढ़ाया, उसी वक्त ऐसे व्यक्तियोंकी आवश्यकता पड़ी। १९४०से पहले फैक्ट्रियोंके साथ उम्मीदवारोंके इतने अधिक स्कूल थे, कि उन्होंने २० सालमें २५ लाख यंत्र-चतुर आदमियोंको सिखलाकर कारखानोंमें भेजा। कितने स्कूलोंमें थोड़े समयका कोर्स भी था और वहाँसे ८३ लाख मिस्त्री तैयार करके भेजे गये थे। लेकिन नये-नये कारखाने और फैक्ट्रियाँ इतनी तेजीसे बढ़ती गई, कि मिस्त्रियोंका अकाल नहीं हटा।

इस कठिनाईको दूर करनेकेलिये अक्तूबर १९४०में सरकारने एक शासन-घोषणा निकाली, जिससे व्यवसाय-स्कूल, रेलवे-स्कूल और फैक्ट्री-स्कूल विशाल परिमाणमें खोले गये। इन स्कूलोंमें १४-१५ सालके लड़के-लड़कियाँ कमसे-कम प्रारम्भिक शिक्षा-प्राप्त लिये जाते हैं। शिक्षा दो सालकी है। इन स्कूलोंसे निकले तरुण-तरुणियाँ धातुमिस्त्री, तेल-मिस्त्री, सहायक इंजन ड्राइवर, रेल मरम्मत-मिस्त्री आदिका काम करते हैं।

फैक्टरी-उम्मीदवार-स्कूलोंमें शिक्षा सिर्फ छः महीनेकी है। और यहाँ पहले की शिक्षाका ख्याल किये बिना १६-१७ सालके लड़के-लड़कियाँ लिये जाते हैं। यहाँसे निकले तरुण कारखानों, और गृह निर्माणके काममें साधारण मिस्त्रीका काम करते हैं।

इन स्कूलोंमें विद्यार्थियोंको जहाँ पुस्तककी शिक्षा होती है, वहाँ साथ ही साथ उन्हें व्यावहारिक शिक्षा बहुत अधिक दी जाती है। ये विद्यार्थी वस्तुतः कच्चा माल लेकर नवीनतम मशीनोंपर काम करते हैं। उन्हें अपने कामके-लिये ३०% से १००% तक वेतन मिलता है। उदाहरणार्थ टेक्निकल स्कूलके छात्रोंने युद्धके दो सालोंमें ३० हजार सुरंगें बनाईं; ६ हजार राइफलों, २८० तोपों, २५० मशीनगनों और २ लाख ४० हजार जहाज और विमानके पुर्जों-की मरम्मत की।

इनके अतिरिक्त कुछ और भी स्कूल हैं। जैसे, भिन्न भिन्न विशेष कार्योंके टेक्निकल स्कूल, अध्यापकोंके स्कूल, छोटे मेडिकल स्कूल (नर्स और धाई आदि तैयार करनेके लिये), इनमें ७ क्लास पढ़े १५-१६ सालके बच्चे लिये जाते हैं। शिक्षा तीन या चार सालकी होती है। यहाँसे पढ़कर नर्सें, टेक्नीशियन, बालोद्यानों और प्रारम्भिक स्कूलोंकी अध्यापिकायें आदि निकलती हैं।

१९४०-४१में सोवियत्-संघके ३,६६५ टेक्निकल स्कूलोंमें ८,०२,२०० विद्यार्थी पढ़ते थे। जिनका विवरण इस प्रकार है:

स्कूल	स्कूल-संख्या	विद्यार्थी-संख्या
औद्योगिक	५४६	१,७७,०००
यातायात और डाक-तार	१५६	५२,१००
कृषि	७३५	१,११,३००
कानून	३६	४,०००
शिक्षक-ट्रेनिंग	८३४	१,६७,६००

मेडिकल	१,०४२	२,०३,५००
कला	२०२	२३,७००
आर्थिक संगठन	१४१	३३,०००

४. कालेज और युनिवर्सिटी

(१) शिक्षाक्रम—युनिवर्सिटी और उच्च शिक्षणालयोंमें वहाँ लड़के-लड़कियाँ ली जाती हैं, जिन्होंने प्रवेशिका परीक्षा पास की है या हाई स्कूल-की अंतिम परीक्षामें पूरे अंक पाये हैं।

जारशाही रूसमें सिर्फ १५%लड़कियाँ—युनिवर्सिटियोंमें थी, १९३८में उनकी संख्या ४३% थी। बीस सालोंमें युनिवर्सिटियों और कालेजोंकी संख्या ९१से ७८२ हो गई जैसे :—

उच्च शिक्षणालय	१९१७	१९४०
यूनिवर्सिटी और कालेज	४५	३९८
मेडिकल कालेज	९	७८
कृषि कालेज	१०	८६
टेक्निकल और यातायात कालेज	१४	१५२
अर्थशास्त्र इन्स्टीट्यूट	६	४७
कला इन्स्टीट्यूट	७	२५
योग	९१	७८२

जातीय प्रजातंत्रोंमें तो जारशाही जमानेमें युनिवर्सिटियों और कालेजोंका बिल्कुल अभाव था। लेकिन अब गुर्जीमें २१, आर्मेनियामें ९, कजाकस्तानमें १९, उज्बेकिस्तानमें २८, अजुर्बाइजानमें १५ युनिवर्सिटी और कालेज हैं।

क्रान्तिके पहले मजूरों, किसानों और छोटे कर्मचारियोंके बच्चे युनिवर्सिटी-की चौखटके अंदर पैर रखनेका सौभाग्य नहीं रखते थे। आज उनकेलिए इन

उच्च शिक्षणालयोंके द्वार उन्मुक्त हैं। १९३८में ९७% विद्यार्थी किसानों, मजदूरों और आफिस कर्मचारियोंके बच्चे थे। उच्च शिक्षणालयोंमें ९०% तक विद्यार्थी सरकारी खर्चेसे पढ़ते हैं। उनके छात्रावास साफ और सुन्दर हैं। भोजनालयोंमें उन्हें अल्प मूल्यमें भोजन मिलता है। पुस्तकालय और वाचनालय सभी मौजूद हैं! इसके विरुद्ध १९१४-१५में क्या दशा थी? ८ युनिवर्सिटियोंमें ३८.२ सैकड़ा विद्यार्थी सामन्तों और उच्च अफसरोंके बच्चे थे, और उच्च मध्यम वर्गके २४.४ सैकड़ा, व्यापारियोंके ११.४ सैकड़ा धनी किसानोंके बच्चे १४% थे, पादड़ियोंके ७.४ सैकड़ा थे। सर्व साधारण गरीब जनताका एक भी लड़का युनिवर्सिटियोंमें दाखिल नहीं हो पाता था।

इन नियमित उच्च शिक्षणालयोंके अतिरिक्त पत्र-व्यवहारसे उच्च शिक्षा प्राप्त करनेकी व्यवस्था भी बड़े पैमाने पर की गई है। युद्धसे पहले १,१५,६५,००० विद्यार्थी पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। युनि-वर्सिटियोंकी पढ़ाईका पाठ्यक्रम पाँच वर्षोंका है। युनिवर्सिटीका प्रबन्ध एक रेक्टर (चान्सलर), कई उप रेक्टर (वाइस-चान्सलर) और एक सीनेट (सभा)के हाथमें होता है।

यह बतला चुके हैं, कि आज सोवियत्की युनिवर्सिटियोंमें प्रवेश करनेमें कोई दिक्कत नहीं, सिर्फ विद्यार्थीको हाई स्कूल पासका होनेका प्रमाण पत्र तथा पढ़नेकी इच्छा रखनी चाहिये, वह युनिवर्सिटी ही में जाकर दाखिल हो सकती है और कोई भी विषय अपने लिये चुन सकता है। इस सुभीतेसे फायदा उठाकर आज तक अयोग्य विद्यार्थी भी दाखिल हो जाते हैं। कभी वह ऐसे विषयको चुन लेते हैं, जिसमें वह आगे बढ़नेकी क्षमता नहीं रखते और कभी योग्यतामें वह कम होते ही हैं। युनिवर्सिटी परीक्षा समाप्त करके भी आशा नहीं की जा सकती, कि अपने विषयमें वह सफलतापूर्वक कर सकेंगे। गलत विषय चुनने वाले तो जल्दी सँभल जाते हैं, और पहली छमाहीमें ही छोड़कर अपने अनु-कूल विषयमें चले जाते हैं, लेकिन लस्टम-पस्टम चलनेवाले कुछ छात्र-छात्राएँ रह जरूर जाते हैं। उनको देखकर कहा जा सकता है, कि जनताको धनका

अपव्यय हो रहा है, किन्तु यह कहना अधिक अतिरंजन होगा। आज विद्यार्थी तो समता रखते भी रुचि और परिश्रमके अभावमें पिछड़े रहते हैं। हो सकता है, ऐसे विद्यार्थी युनिवर्सिटी-शिक्षा समाप्त करनेके बाद अपनी यह कमी दूर कर लें—ऐसा कितनी ही बार हुआ है। इस तरह सबको छाँट देनेपर शायद ही कोई विद्यार्थी युनिवर्सिटीमें आता हो, जिसे हम बिल्कुल अयोग्य कहें।

युनिवर्सिटीकी पाँचसाला शिक्षामें पहले तीन वर्ष विषयके साथ साधारण परिचय कराया जाता है। फिर चौथे-पाँचवें वर्षमें विषयकी गहराईमें जाते हैं, और अपने विषयकी किसी खास शाखामें विशेषज्ञता प्राप्त करनेकी कोशिश की जाती है। विश्वविद्यालयकी शिक्षामें अपने विषयके अतिरिक्त समाज-शास्त्र, अर्थशास्त्र, शारीरिक व्यायाम, और सैनिक शिक्षा भी शामिल है। पाँच सालकी पढ़ाईका यही क्रम इंजिनियरिंग कालेजों, मेडिकल कालेजों और टेक्निकल इन्स्टीट्यूटोंमें भी है। इन कालेजोंमें व्यावहारिक शिक्षा भी होती है। ग्रेजुएट होनेके बाद तो छात्र अनिवार्य व्यावहारिक शिक्षाकेलिये फेक्टरी, खेती, अस्पताल, स्कूल आदिमें अपने विषयके अनुसार जाते हैं।

व्यायाम और सैनिक शिक्षा विद्यार्थियोंके पाठ्य-क्रमके टाइमटेबुलमें सम्मिलित है। इसके बाद उनका बड़ा संगठन "कमसोमोल" (कम्युनिस्ट-तरुण-संघ) है। यह "प्योनीर" के आगेके तरुणोंका संगठन है। यह विद्यार्थियोंके पाठ्य-क्रमके बाहरके कामों का भारी संगठन करता है।

युनिवर्सिटीमें कई फेकल्टी (विद्याशाखा) होती है। लेनिनग्राद् युनिवर्सिटीमें १२ और मास्कोमें ११ फेकल्टियाँ हैं। एक योग्य प्रोफेसर फेकल्टी-का देकन (डीन) बनाया जाता है। हर फेकल्टीमें कई विभाग होते हैं, जैसे लेनिनग्राद्के प्राच्य फेकल्टीमें मिश्रसे लेकर जापान तकके देशोंके कई विभागोंमें एक हिन्द-तिब्बत (भारतीय) विभाग है। इस विभागको रूसीमें काफेदरल (कैथेड्रल) कहा जाता है। हर काफेदरलका एक प्रमुख होता है और एक या अधिक प्रोफेसर, लेक्चरर (दोत्सेन्त) और असिस्टेन्ट होते हैं। १९४०-४१ में सोवियत् संघके उच्च-शिक्षणालयोंमें ५,३५३ प्रोफेसर, १३,१०५

रीडर या लेक्चरर (डोसेन्ट) और २१,५५७ असिस्टेन्ट लेक्चरर या शिक्षक थे।

सोवियत्की युनिवर्सिटियोंमें सिर्फ एक ही डिग्री है और वह है डाक्टरकी—साइन्स डाक्टर, इतिहास डाक्टर, अर्थशास्त्र डाक्टर, फिलोसफी डाक्टर इत्यादि।

सोवियत्की परीक्षायें बड़ी आसान होती हैं और विद्यार्थियोंमें उस भयका कहीं पता नहीं, जो कि हमारे यहाँ देखा जाता है। वस्तुतः यहाँ स्मृतिके स्थान-पर योग्यताकी परीक्षा लेनेसे यह भय दूर हुआ है और परीक्षाकी गर्मीके कारण योग्यतामें कमी नहीं आने पाती। अपने ही अध्यापकोंमें से दो या तीन परीक्षा लेने बैठते हैं। प्रश्नपत्रोंके छापने और उत्तर पुस्तिकाओंको लाखोंकी संख्यामें वितरण करनेकी हमारे यहाँकी सी दिक्कत वहाँ बिल्कुल नहीं होती। सारे प्रश्नोत्तर मौखिक और व्यावहारिक होते हैं और लेखन योग्यताकी परीक्षा हीके लिये ही कागज-कलमकी जरूरत पड़ती है। परीक्षाके हर विषयके पूर्णाङ्क ५ होते हैं जिसमें उत्तीर्ण होनेकेलिये कमसे कम ३ अवश्य मिलना चाहिये। ४ अंक पाने वाला विद्यार्थी अच्छा और ५ पानेवाला बहुत अच्छा समझा जाता है। जो विद्यार्थी सभी विषयों या अधिकांश विषयोंमें ५ ५ पाते हैं वे अतिश्रेष्ठ और श्रेष्ठ माने जाते हैं। श्रेष्ठ और अतिश्रेष्ठ विद्यार्थी विशेष योग्यतावाली छात्रवृत्तियोंके अधिकारी होते हैं।

परीक्षा विद्यार्थियोंकेलिये डरावनी चीज नहीं है। जिन्होंने पाँच साल पढ़नेमें लगाये हैं, उनमें सौ-प्रतिशतके युनिवर्सिटी ग्रेजुएट होनेकी संभावना रखनी चाहिये। लेकिन युनिवर्सिटी ग्रेजुएटको कोई डिग्री नहीं मिलती, उसको सिर्फ प्रशंसा-पत्र मिलता है। आगे पढ़ने वाले विद्यार्थी फिर स्पेशलिस्ट (एम० ए० या पी० एच० डी० जैसा)की पढ़ाई शुरू कर सकते हैं, जिसका कोर्स तीन सालका है। यहाँ और तरहकी परीक्षाके साथ निबन्ध लिखना पड़ता है, किन्तु परीक्षा कठिन नहीं, तथा अपने अध्यापक ही परीक्षक होते हैं। यहाँ भी कोई डिग्री (उपाधि) नहीं मिलती। आगे दो या तीन सालका कोर्स उमेदवार-

डाक्टरका है। जिसे समाप्त करनेके बाद आदमी डाक्टर बननेकेलिये काम करता है, उसे अपने निबन्धकेलिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है और अपने विषयमें मौलिक बातें देनी पड़ती हैं। अनुसन्धानमें मौलिकता डाक्टर बननेकेलिये परमावश्यक है। सारी परीक्षाओंकी कसर डाक्टरकी परीक्षामें निकल जाती है। इसके परीक्षक सिर्फ अपने ही अध्यापक नहीं होते। इसमें उस विषयके चोटीके विद्वान् दूसरी युनिवर्सिटीसे बुलाये जाते हैं, और वह विद्यार्थियोंकी वही गति करते हैं, जो कि अदालतमें वकील लोग फौजदारीके गवाहोंकी। जरा भी कमी होनेपर निबन्ध स्वीकार नहीं किया जाता, और विद्यार्थीको फिर श्रम करना पड़ता है। इससे साफ है कि सोवियत्‌में डाक्टर उपाधिधारी विद्वानोंकी संख्या कम है, और इस उपाधिका मान बहुत अधिक है।

युद्धके समय युनिवर्सिटी-कालेजके विद्यार्थियोंकी संख्या कम हो गई। यह होना स्वाभाविक था, देश-भक्त तरुण-तरुणियाँ उस समय कैसे चुपचाप बैठे पुस्तकोंके पन्ने उलटते जब कि मातृ-भूमिपर संकट आया था। लड़के बहुत अधिक और लड़कियाँ भी काफी मात्रामें सेनामें चली गयीं। उधर हाई-स्कूलकी ऊपरी कक्षाओंमें भी लड़कोंकी कमी होने लगी। इसका असर उच्च शिक्षणालयके छात्रोंपर पड़ा और लड़ाईके खतम होनेपर भी कमसे कम लड़कोंकी संख्यामें अब भी कमी है। युनिवर्सिटी छात्रोंमें लड़कियाँ ही अधिक दीखती और किसी-किसी विभागमें तो १९४७में भी वह ७०-८०% तक थीं। धीरे-धीरे लड़कोंकी संख्या बढ़ रही है, किन्तु इसमें सन्देह है, कि वह लड़कियोंके बहुमतको हटा सकेंगे, १९४०से किस तरह उच्च-शिक्षणालयों-युनिवर्सिटी-कालेजोंमें छात्रोंकी संख्या घटी-बढ़ी, उसे इस तालिकामें देखें—

वर्ष	शिक्षणालय	विद्यार्थी
१९४०-४१	७८२	५,६४,५७३
१९४१-४२	५०३	३,१२,८९८
१९४२-४३	४६०	२,२७,४४५

१९४३-४४	५१५	३,२०,७८०
१९४४-४५	७१७	४,३६,०००
१९४५-४६	७७२	५,६०,०००

× × ×

२. मास्को युनिवर्सिटी—१७५५में मास्को युनिवर्सिटीकी स्थापना हुई थी यानी पलासीके युद्धसे दो साल पहिले। इसका सबसे पुराना साइन्सवेत्ता मिखाइल लोमोनोसोफ इसके संस्थापकोंमेंसे था। मास्को युनिवर्सिटीका रूसमें सदासे बहुत सम्मान रहा है, यद्यपि लेनिनग्राद् युनिवर्सिटी जारकी राजधानी सेन्ट पीतरबुर्गमें होनेसे जारकी सरकारकी कृपापात्र अधिक थी। १९१८में जब कि दो-सदियोंके बाद फिर मास्को राजधानी बना, तो इस युनिवर्सिटीका महत्त्व और बढ़ गया। लेकिन इसका यह मतलब नहीं, कि लेनिनग्राद् युनिवर्सिटी उपेक्षणीय है। आज भी लेनिनग्राद्की प्राच्य फेकल्टी बहुत बड़ी है। एक तरफ वह पूर्वी देशोंके साहित्य और संस्कृतिके मर्मज्ञ-अनुसंधानकर्ता विद्वानोंको पैदा करती है तो दूसरी तरफ भावी राजदूतों और कौन्सलोंको भी तैयार करती है।

२४ दिसम्बर १८२५को जारके निरंकुश सरकारके विरुद्ध जो पहला विद्रोह हुआ और जिन विद्रोहियोंको दिसम्बरिस्तके नामसे पुकारा जाता है, उनमें अर्तमोन, मिकिता, मुराव्योफ, अन्यनकोफ, यकुश्किन् और निकोलाइ तुर्गेनेफ मास्को युनिवर्सिटीसे ही शिक्षा-प्राप्त थे। प्रसिद्ध दार्शनिक हेर्जेन, बेलिन्स्की, ओगरयोफ, स्तनकेविच् और पीतर चअदाएफ; और प्रसिद्ध लेखक लेर्मोन्तोफ (महाकवि), तुर्गेनेफ (कहानी लेखक), गोन्चारोफ, अक्साकोफ, चेखोफ यहींके शिक्षा-प्राप्त थे। आजकलके प्रसिद्ध साइन्सवेत्ता तथा अकदमिक वाविलोफ, अब्रिकोस्सोफ, बोलिगन, ई० स० अलेक्सन्द्रोफ, स० न० ब्लज़्को आदिने भी यहीं शिक्षा पायी। इसके अध्यापकोंमें ग्रनोव्स्की, क्ल्यूचेव्स्की,

स्चेनोफ़, पीरोगोफ़, मेन्ज़बिर, तिमिरियाजेफ़, कोवालेव्स्की, जुकोव्स्की, लेबे-देफ़ और स्तोलेतोफ जैसी महान् विभूतियाँ रहीं।

मास्को युनिवर्सिटीके अध्यापक और विद्यार्थी सदा प्रगतिशील विचारोंके रहते रहे। १९०५की क्रान्तिमें यहाँके विद्यार्थियोंने क्रान्तिकारियोंसे मिलकर ज़ारकी सेनासे लड़नेमें भाग लिया। संसार प्रसिद्ध प्राणिशास्त्री क्लिमेन्ततिमि-रियाज़ोव (१८४३-१९२०)ने १९११में अपने प्रोफेसर-पदसे इस्तीफा दे दिया, जब कि देखा कि ज़ारकी सरकार हर तरहके प्रगतिशील विचारोंको बल-पूर्वक दबाना चाहती है। ज़ारकी सरकार तुली हुई थी कि युनिवर्सिटीको चाप-लूस अफसरोंको पैदा करनेकी मशीन बना दी जाय। यहाँ १९१२में ४०% विद्यार्थी सामन्तों और उच्च अफसरोंके लड़के थे; २३.७% व्यापारियों और पादरियोंके लड़के और ११% धनी किसानोंके। मजदूरों, किसानों और छोटे आफिस कर्मचारियोंकी सन्तानोंकेलिये यहाँ गुन्जाइश नहीं थी।

सोवियत् क्रान्तिने युनिवर्सिटीका दरवाजा सबकेलिये खोल दिया और अब वह सोवियत् यूनियनकी सभी जातियोंके प्रतिभाशाली दिमागोंका शिक्षण-केन्द्र बन गयी है। एक ही क्लासरूममें रूसियोंके साथ उक्रइनी, बेलोरूसी, गुर्जी, आर्मेनियन, आज़ुर्बायजानी, उज़्बेक, ताजिक, करेलियन, एस्तोनियन, लेत, लिथुवानियन, कज़ाक, किर्गिज़ और मोल्दाविअन छात्र-छात्राएँ पढ़ते मिलेंगे। सभी एक दूसरेसे समान और मित्र हैं। हर एकके दिलमें अपनी युनिवर्सिटीके प्रति सम्मान और अभिमान है। क्रान्तिने प्रथम बार युनिवर्सिटीके द्वारको स्त्रियों-केलिये खोल दिया। लड़ाईके पहले ४०% विद्यार्थी लड़कियाँ थीं, अब तो उनकी संख्या लड़कोंसे बहुत ज़्यादा है।

आजकल युनिवर्सिटीके रेक्तर (चान्सलर) प्रो० गल्किन हैं। युनिवर्सिटी में ११ फेकल्टी और १५० भिन्न-भिन्न विषयोंके विभाग (कफ़ेदरा) हैं। यहाँ गणित और फिजिक्स, रसायन और वनस्पतिशास्त्र, इतिहास और साहित्य, मानवतत्त्व और भूगोल तथा और दूसरे विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। यहाँ ८,००० विद्यार्थी और ५०० पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थी हैं। सोवियत्

शासनकी स्थापनाके बाद इस युनिवर्सिटीने देशको २५,००० अध्यापक, इंजीनियर, आविष्कारक, पत्रकार आदि दिये हैं। इसके अध्यापकोंमें ३०० प्रोफेसर हैं, जिनमें ४२ अकदमिक और ५४ उपअकदमिक हैं।

इसके भूतपूर्व विद्यार्थियोंमें कईने साइन्समें भारी नाम पैदा किया। विश्वके महान् गणितज्ञ अकादी अलकसेन्द्रोविच् कोस्मोदेम्यान्स्को यहीं इवानोवो जिलेके स्तारिलवो गाँवसे पढ़ने आये। अब भी उस गाँवसे आये तरुणका छात्र-जीवन लोगोंको याद है। विद्यार्थियोंके सभी कार्य-क्षेत्रमें वह बहुत भाग लेता था। परीक्षामें उसने अपना चमत्कार दिखाया और ३० सालकी उम्रमें ही विमान-दिनामिक विभागमें प्रोफेसर नियुक्त हुआ।

क्रान्तिके पहले एसियाइयोंकेलिये युनिवर्सिटीमें कहाँ जगह थी? उनकेलिये तो हाई स्कूलकी पढ़ाई भी खतम करना मुश्किल था। किन्तु क्रान्तिने सबकेलिये पथ मुक्त कर दिया। एक तातार-तरुण खलील अहमेतो विच् रहमतुल्लिन् विश्वविद्यालयमें दाखिल हुआ और सभी परीक्षायें उच्च योग्यतासे पास करके डाक्टरकी उपाधिसे विभूषित हुआ। आजकल डाक्टर रहमतुल्लिन् युनिवर्सिटीके मेकानिक्स (यंत्रशास्त्र) अनुसंधान इंस्टीच्यूटके डायरेक्टर हैं। मास्को युनिवर्सिटीमें कितने ही नामी महिला प्रोफेसर हैं। जोयापेत्रोव्ना ईगुमनोवा मार्क्सवादकी लेक्चरर हैं। अन्नापेत्रोव्ना र्युमिना रसायनशास्त्रकी लेक्चरर हैं। एक प्रतिभाशाली रसायनवेत्ता फ० अ० करोल्योफ़ फिजिक्सके लेक्चरर हैं, अपने अनुसंधानकेलिये उसने स्तालिन-पुरस्कार जीता है। प्रो० अ० अ० व्लासोफ़ सैद्धान्तिक फिजिक्सकी गद्दीपर हैं।

युनिवर्सिटीकी अनुसंधानशालायें और वैज्ञानिक इन्स्टीच्यूट बहुतसे मौलिक विषयोंपर अनुसंधान कर रहे हैं। युद्धके वर्षोंमें विद्वानोंने युनिवर्सिटीके ११ इन्स्टीच्यूटोंमें १६०० अनुसंधान किये, जिनमें ३४को स्तालिन-पुरस्कार मिले और अपनी साइन्सकी खोजोंकेलिये १५० विद्वान् सरकार द्वारा सम्मानित किये गये। युनिवर्सिटीके वैज्ञानिक इन्स्टीट्यूट अनेक विषयोंपर अनुसंधान कर रहे हैं, खनिज सम्पत्ति, परमाणुका ढाँचा, वायु यात्रा-विज्ञान, यंत्र-विज्ञान, सूक्ष्म

कीटाणु प्राणि विज्ञान, नासूर चिकित्सा आदि बहुतसे इनके अनुसंधानके विषय हैं। समाज विज्ञानपर भी यहाँ विस्तृत खोज होती है। रसायन-शास्त्रके यहाँ कई उद्भट-विद्वान् हैं, जिनमें प्रमुख अकदमिक निकोलाय ज़ेलिन्स्कीने प्राणिज रसायनशास्त्रपर बहुत-सी खोजें की हैं। गणित-शास्त्रके प्रसिद्ध आचार्य अकदमिक अन्द्रेइ कोल्मोगरोफ़ तथा उप-अकदमिक पावेल अलेकसन्द्रोफ़ और पावेल पोन्त्र्यागिन यहीं पढ़ाते हैं। यहाँके अध्यापक अकदमिक मिखाइल जावदोव्स्कीने ढोरोंके एक साथ अनेक सन्तान पैदा करनेके तरीकेका जो आविष्कार किया है वह मध्यएसिया और सोवियत्-संघके दूसरे भागोंके कल्खोज़ोंमें पशु-वर्द्धनमें बड़ी सहायता कर रहा है। उन्हें इसकेलिये स्तालिन पुरस्कार मिला। इतिहासके प्रकाण्ड विद्वान् महिला-प्रोफेसर मिलित्सा वासिल्येव्ना नेच्किना यहीं अध्यापन करती हैं। तरुण अध्यापकोंमें इयानिकोलायेव्ना पुतिलोवा और वलेरी वरानोफ़ रसायनशास्त्रमें महत्त्वपूर्ण अनुसंधान कर रहे हैं और उन्होंने धातुके मुर्चा न खानेकेलिए एक संरक्षक तत्त्व खोज निकाला है। उन्हें भी अपने अनुसंधानकेलिये स्तालिन पुरस्कार मिला है।

जर्मनोंका जब आक्रमण हुआ और फ़ासिस्तोंकी सेनायें मास्कोके पास पहुँचने लगीं, तो हजारों विद्यार्थियोंने पुस्तकें छोड़ बन्दूकें हाथमें लीं। यहाँकी ऐसी छात्राओंमें वैज्ञानिका अन्तोनिना जुब्कोवा एकातेरिना र्यावोवा नतालिया मेक्लिना और येव्दोकिया पस्कोने वीरताके सबसे बड़े सम्मान "सोवियत् संघ-वीर" को प्राप्त किया। दूसरी वीर छात्रा इरिनारकोवोल्सकया (सक्वाड्रनके स्टाफकी चीफ (प्रमुख) थी। उसने भी बहुत सैनिक सम्मान प्राप्त किये। युद्धके बाद उसने फिर अपना अध्ययन शुरू किया। और उसके साथ वायु सेनामें काम करने वाले कई उसके आज सहपाठी हैं। युनिवर्सिटीमें युद्धसे लौटे बहुत-से छात्र और छात्राएँ पढ़ रही हैं। युनिवर्सिटीके कितने ही छात्रोंने मातृभूमिके-लिये अपनी बलि दी। उनमें बेलोरूसियाका किसान-पुत्र इव्गत् लगोइको भी था। इव्गत्ने अभी-अभी अपरान्तकी परीक्षा प्राणिशास्त्रमें बड़ी योग्यताके

साथ पास की थी। दूसरा प्रतिभाशाली तरुण अन्द्रेइकामेन्स्की था, जिसने भी मातृ-भूमिकेलिये अपनी बलि चढ़ाई। अभी वह एक तरुण अन्डर ग्रेजुयेट था, किन्तु इसी अवस्थामें उसने १५ अनुसंधान-पत्र छपाये थे। एक दूसरी छात्रा अलेक्सान्द्रा सेरेब्रोव्स्काया कोन्स्तात् (लेनिनग्राद)से बर्लिन तक लड़ती रही और बर्लिनके पास वीरगतिको प्राप्त हुई। दूसरी वीर छात्रा युगेनिया रुद्नेवाथी, वह विमानकी सेनामें थी और प्राण देनेसे पहले "सोवियत्-संघवीर" का सन्मान प्राप्त कर चुकी थी।

सोवियत् सरकार मास्को युनिवर्सिटीको हर तरहसे सहायता करती है। १९४६में उसका वार्षिक बजट १० करोड़ रूबल (५ करोड़ रुपया) था।

(३) कम्सोमोल-तरुण-संगठन—कम्सोमोल सोवियत् तरुण-तरुणियोंका बहुत बड़ा संगठन है। १९१७में पहले-पहल रूसमें तरुणोंके संघ बने। रूसके मजूरों और किसानोंने जारकी सरकारको उठाकर अपनी सरकार कायम की। इससे पहले तरुण अपना किसी तरहका संगठन नहीं कर सकते थे। क्रान्तिके साथ ही जगह-जगह तरुणोंकी समितियाँ, अध्ययन-चक्र और क्लबें बनने लगीं। १९१८में उनकी पहली कांग्रेस हुई, जिसने तरुण कम्युनिस्त संघके संगठनका निश्चय किया। संघके जीवनके पहले पाँच वर्ष बड़े संघर्षका जीवन था। देशमें गृह-युद्धकी आग भड़की हुई थी। जारशाहीके पक्षपाती प्रतिक्रियावादियोंने नव-जात सोवियत् प्रजातन्त्रको नष्ट करनेकेलिये सारी शक्ति लगा रखी थी। उधरसे इंगलैंड, अमेरिका, जापान आदि १४ राज्य क्रान्ति-विरोधियोंके साथ सिर्फ सहानुभूति ही नहीं प्रकट कर रहे थे, बल्कि उन्होंने अपनी सेनायें भी लड़नेकेलिये सोवियत्-भूमिमें भेजी थीं। तरुण कम्युनिस्ट-संघके मेम्बरों—जिन्हें कम्सोमोलके नामसे पुकारा जाता है—को इस परीक्षाकी भट्ठीसे गुजरना पड़ा।

कम्सोमोल हर मोर्चेपर बड़ी बहादुरीसे लड़े। कितनी ही बार सारेके सारे मेम्बर युद्धक्षेत्रमें चले गये और नये मेम्बरोंने संघके संगठनका काम अपने हाथमें सँभाला। जो युद्ध-क्षेत्रमें नहीं जा सके वे रेलवे या फेक्टरियोंमें काम

करते, जाड़ेकेलिये ईंधन जमा करते, वे माँ-बापके बच्चोंको सँभालते, लाल सेनाकी सहायता करते। हर जगह कम्सोमोल बड़ी तत्परतासे काम करते थे। उन्होंने निरक्षरता दूर करनेमें बहुत काम किया। प्रत्येक कम्सोमोलने दो या तीन आदमियोंको साक्षर बनानेकी शपथ ली थी।

थोड़े ही समयमें उनकी २२,००० मेम्बरोंकी संख्या बढ़कर ५ लाख हो गई। गृह-युद्धमें उनकी अपूर्व सेवाओंकेलिये उनके संगठनको "लालध्वज" का भारी सम्मान प्राप्त हुआ।

गृह-युद्धका अन्त हुआ। ध्वस्त देशको फिरसे आबाद करनेका काम शुरू हुआ। नये कारखाने बनने लगे, नहरें खोदी जाने लगीं, बिजलीके पावर स्टेशन तैयार होने लगे। कम्सोमोलोंने सब जगह आगे बढ़कर भाग लिया। उन्होंने कारखानोंके विकास, कृषिके प्राचुर्य, सार्वजनिक साक्षरता, सभी जातियोंके भ्रातृत्व और समानाधिकारके संघर्षमें भाग लिया, और सबसे मुश्किल तथा दायित्व-पूर्ण क्षेत्रोंमें जानेमें ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं की। पंचवार्षिक योजनाओंमें २,००० कम्सोमोलोंने सबसे महत्वपूर्ण उद्योग-निर्माण-के कामोंमें भाग लिया। द्नियेपरके विशाल पन-बिजली स्टेशन, ऊरालकी लोह-फौलाद मिलों, मास्कोकी भूगर्भीय रेलवेके बनानेमें उन्होंने दिल लगाकर काम किया। दोन्वासके नये मशीन-कारखानों और कोयला-खानोंमें नये ढंगकी मशीनोंका चलाना सीखा, तथा सुदूर सिबेरियाकी तइगामें अपने नाम-से बसे नगर कम्सोमोल्स्ककी पहली इमारतें बनाईं। कम्सोमोलोंकी आठवीं कांग्रेसमें स्तालिन्‌ने कहा था—"हमारे सामने एक किला खड़ा है, यह किला अनेक ज्ञान शाखाओंवाले साइंसका है। चाहे जैसे भी हो, हमें इस किलेको दखल करना है। तुम्हें इसे दखल करना होगा। यदि तुम नव-जीवनके निर्माण-की इच्छा रखते हो।" तरुणोंने स्तालिनकी बात मानी और साइंसके किलेपर धावा बोल दिया। एक फिटर अपना काम करते हुए मशीन बनानेकी विद्या पढ़ने लगा, फौलाद गलाने वाले मिस्त्रीने धातु-इन्स्टीट्यूटमें परीक्षा जारी रखी और वह धौंकू भट्ठे और फौलाद पिघलानेका विशेषज्ञ बन गया। पंच-

वार्षिक योजनाओंके दस वर्षों (१९२७-३७) में १ लाख १८ हजार कम्सो-मोल इंजीनियर और टेकनीसियन बन गये, ६६,००० कृषि विशेषज्ञ, १६,००० अध्यापक, ६,००० डाक्टर तथा लाखों दूसरे साइंसके क्षेत्रोंमें विशेषज्ञ बने।

द्वितीय विश्वयुद्धके आरम्भमें कम्सोमोल संगठनमें १ करोड़से अधिक मेम्बर थे। उनके पास अब देशके भिन्न-भिन्न जगहोंमें खेलके मैदान, क्लबें और प्रकाशन-भवन थे। संगठनकी ओरसे लाखों पुस्तकें, सैकड़ों दैनिक और साप्ताहिक पत्र भिन्न-भिन्न भाषाओंमें निकलते थे। युद्ध शुरू होते ही बहुतसे स्थानीय कम्सोमोल संगठनोंके मेम्बर तो शत-प्रतिशत युद्धमें चले गये। लेनिन्ग्राद्के तीन-चौथाई और मास्कोके ⅘ कम्सोमोल स्वेच्छापूर्वक सेनामें शामिल हो गये। ओदेसा और सेवस्तापोलके सारे कम्सोमोल युद्ध-क्षेत्रमें चले गये। कम्सोमोलोंका एक दूसरेसे कहना था "अपमानित हो भागनेसे खाइयोंमें मरना बेहतर है। यही नहीं बल्कि ध्यान रखना होगा, कि पड़ोसी भी न भागे।" "खाइयोंके छोड़नेकेलिये भी कोई वजह हो सकती है" इस सवालके जवाबमें उत्तर था "ऐसा करनेकी सभी वजहोंमेंसे सिर्फ एक वजहको कबूल किया जा सकता है, और वह है मृत्यु।" स्तालिनग्राद्में कम्सोमोलोंकी जिस सभामें यह बात-विचार हो रहा था, उसीमें कमाण्डरने कहा, "हमारा देश मृत्यु नहीं बल्कि विजय चाहता है। हाँ, हममेंसे कुछ युद्धक्षेत्रमें मरेंगे। यह युद्ध है। जो समझदारी और बहादुरीके साथ विजयकी घड़ियोंको पास ले आकर मरता है, वही वीर है, और जो शत्रुको सफलतापूर्वक हराते जिन्दा रह जाता है वह दूना वीर है।"

जीवनकेलिये कम्सोमोलोंने अपना बलिदान किया और वीरताकेलिये क्या कहना? ३,००० कम्सोमोलोंने युद्धके सबसे बड़े सम्मान "सोवियत्-संघ-वीर" को प्राप्त किया, और लाखोंने दूसरे सम्मान पाये। कम्सोमोलोंकी बहादुरीने सारी सेनाको प्रभावित किया। सारे तरुण सैनिक शत्रुसे भारी लड़ाई लड़नेकेलिये प्रस्थानसे पहले अपना कम्सोमोली मेम्बरी फार्म भरकर जाते

थे। १९४१-४५के बीच ७० लाखसे अधिक तरुण-तरुणी कम्सोमोल संस्थाके नये मेम्बर बने।

युद्धकी समाप्ति हुई, अब कम्सोमोल देशको फिरसे बसानेमें लगे। स्तालिन-ग्राद् और दोनबासको फिरसे बसानेमें वह जी जानसे काम कर रहे हैं। शहरों और गाँवों, हर जगह देशके पुनर्निर्माणमें लग गये हैं। स्कूलके ऊँची क्लासों तथा युनिवर्सिटीमें वे शिक्षा और संस्कृतिके कामोंमें सरगर्म हैं।

कम्सोमोल-संगठन देशव्यापी है। सभी प्रजातन्त्रों और जातियोंमें इसका संगठन है। गाँव और शहरोंमें उनकी स्थायी समितियाँ हैं, जिनके ऊपर तहसील और जिलोंकी समितियाँ हैं। सभी मेम्बर मिलकर जिलेकी समितिका निर्वाचन करते हैं। प्रत्येक संघ प्रजातंत्रमें उनकी केन्द्रीय समिति है। जिला समितिसे लेकर केन्द्रीय समिति तक सभी चुनाव गुप्त वोटसे किया जाता है। इस तरह सारा संगठन पूर्णरूपेण जन-तान्त्रिक है। साथ ही यह भी नियम है, कि नीचेकी समितियाँ ऊपरी समितियोंके आदेशका पालन करें।

लड़के और लड़कियाँ जो १४ वर्षकी हो गयी हैं, वह मेम्बर होकर कम्सो-मोल बन सकती हैं—९ से १५ साल तकके लड़के-लड़कियोंका संगठन प्योनीर (पायनीयर) है, यह बतला आये हैं फिर वह २६ सालकी अवस्था पूरी होने तक कम्सोमोल रह सकते हैं इससे ऊपर वह कम्सोमोल संस्थाओंकेलिये वोट देनेका अधिकार नहीं रखते—हाँ, वह किसी पदपर चुने जा सकते हैं, यदि कम्सोमोल उन्हें वहाँ रखना चाहें।

(४) उच्च शिक्षापर मंत्री कफ्तानोफ—मई मास विद्यार्थियोंकी वार्षिक परीक्षाका समय है। कालेज या युनिवर्सिटीमें दाखिल होनेमें छात्र-छात्राओंकेलिये सिर्फ दो ही शर्तें हैं—(१) उनमें पढ़नेकी इच्छा हो और (२) दस सालकी माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त हों। लेकिन उनकी यह माध्यमिक शिक्षा हमारे यहाँकी मैट्रिक नहीं है। सोवियत-संघके माध्यमिक शिक्षा प्राप्त छात्र हमारे यहाँके कालेजके तृतीय वर्षके छात्रकी भाँति होते हैं साइन्समें तो यह निश्चित ही है।

परीक्षामें छात्रोंकी स्मृतिका उतना ख्याल नहीं किया जाता जितना कि ज्ञानका। उन्हें पाठ्य-पुस्तकोंसे बाहर अपने विषयपर ढेरकी ढेर किताबें पढ़नेका अवसर मिलता है। परीक्षायें अधिकतर मौखिक और अपने ही अध्यापकों द्वारा ली जाती हैं। परीक्षा लेनेको दो या तीन परीक्षक बैठते हैं। हर पाठ्य-विषय या ग्रन्थका पूर्णांक पाँच है। तीन अंक पानेपर "उत्तीर्ण", चार अंक पानेपर "अच्छा" और पाँचमें पाँचों अंक पानेपर परीक्षार्थी "श्रेष्ठ" समझा जाता है। मास्कोकी युनिवर्सिटीके परीक्षार्थियोंकी एक दिनकी परीक्षाका परिणाम था अस्सी सैकड़ा "अच्छा" और "श्रेष्ठ"। महासोवियत्के उच्च शिक्षा मंत्री स० कप्तानोफने कहा—हमारी उच्च शिक्षण संस्थाओंका उद्देश्य है विद्यार्थियों-को अच्छी और बहुमुखी शिक्षा देना, न कि एक संकीर्ण विशेष क्षेत्र केवल विशेषज्ञ मात्र बनाना, यह संतोषकी बात है, कि हमारे विद्यार्थी समाज विज्ञान, समाज विकासके नियमोंका अध्ययन और दर्शन-समस्याके प्रति पहलेसे अधिक दिलचस्पी दिखला रहे हैं।

सोवियत्के सभी विश्वविद्यालयों और कालेजोंमें अपने-अपने विशेष विषयोंके अतिरिक्त मार्क्सवादके मौलिक सिद्धान्तोंका अध्ययन अनिवार्य है। उन्हें विश्वके भिन्न-भिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों से भी परिचित कराया जाता है, अर्थात् सोवियत्के छात्रोंको एक व्यापक राजनीतिक अभिज्ञताका परिचय प्राप्त होता है जो कि हरेक शिक्षित व्यक्तिकेलिये अ-परिहाय है। शिक्षाका यह क्रम बतलाता है, कि भावी चिकित्सक और इंजीनियर, अध्यापक और रसायनशास्त्री, वकील और भूगर्भवेत्ता समाज-विज्ञान का अच्छा परिचय रखते हैं। उदाहरणार्थ मास्को युनिवर्सिटीके भूगोल-विभाग (प्रथम वर्ष)के चौबीस छात्रोंको ले लीजिये। इनमें मार्क्सवाद सम्बन्धी परीक्षामें पन्द्रह "श्रेष्ठ" और आठ "अच्छे" निकले। और एक उत्तीर्ण भर।

शिक्षा मंत्री कप्तानोफने कहा—इस साल युनिवर्सिटीसे निकलने वाला हरेक ग्रेजुएट इंग्लिश, फ्रेंच और जर्मन इन तीन विदेशी भाषाओंमेंसे कमसे कम एकका जानने वाला जरूर होगा। कोई-कोई तो दो या तीनों भाषाओंका ज्ञान

रखते हैं। जो आदमी विदेशी भाषाओंको नहीं जानता वह, विदेशके साइन्स और टेक्निक सम्बन्धी नवीनतम आविष्कारों तथा गवेषणाओंका ताजा ज्ञान प्राप्त करनेसे वंचित होता है, इसीलिये वह अपने विषयमें उच्च श्रेणीका विशेषज्ञ नहीं बन सकता। हमारे तरुण अपने विषयमें उच्च स्थान लेना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें यह भलीभाँति मालूम है, कि हमारे देशको ऐसे ही लोगोंकी जरूरत है।

१९४६में सोवियत्की युनिवर्सिटियों और कालेजोंने नाना विषयोंके ९२,००० विशेषज्ञ स्नातक निकाले। यह संख्या करीब-करीब युद्ध-पूर्वके बराबर है।

युद्धके समय जर्मनोंने सोवियत्की युनिवर्सिटियों और कालेजोंको बहुत अधिक क्षति पहुँचाई। इससे शिक्षामें हमें कई दिक्कतें उठानी पड़ीं, तो भी शिक्षाका काम रुका नहीं। बहुत सी उच्च शिक्षण संस्थाओंको मध्य एसिया और दूरके दूसरे स्थानोंमें ले जाया गया। युद्धके समयमें भी प्रायः तीन लाख ग्रेजुएट पैदा हुये।

जैसे ही जर्मनोंने जगहको छोड़ा, वैसे ही वहाँकी शिक्षण संस्थाओंने अपना काम आरम्भ कर दिया। स्तालिनग्राद् मेडिकल कालेजको लड़ाईमें बड़ा नुकसान पहुँचा था, लेकिन पावलूस (जर्मन सेनापति)के आत्मसमर्पणके छः महीने बाद ही मेडिकल कालेजका काम फिरसे शुरू हो गया। युद्धोत्तर द्वितीय वर्षमें उतने ही युनिवर्सिटी और कालेज काम कर रहे हैं, जितने कि १९४०में थे। छात्रोंकी संख्या तबसे एक लाख अधिक ही है—इनमें पत्र-व्यवहारके द्वारा शिक्षा प्राप्त करनेवालोंकी गिनती नहीं की गई है। पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा देने वाले तीन सौ छियानबे कालेज हैं—युद्ध पूर्वमें इससे सौ कम थे। इन कालेजों द्वारा दो लाख विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सोवियत् सरकारने १९४६में उच्च शिक्षापर छः अरब रूबल खर्च किये। यह पिछले वर्षसे ३०·५ अधिक है। इस सालके ९२,००० ग्रेजुएटोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारके इंजीनियर, १९,००० चिकित्सक, ८,००० कृषि विशेषज्ञ, ८,०००

वकील-अर्थशास्त्री और भाषातत्त्ववेत्ता, १,००० कलाकार-संगीतज्ञ-अभिनेता-सूत्रधार (नाटक और सिनेमा डाइरेक्टर) और ४१०००से अधिक अध्यापक हैं। विद्यार्थियों और स्कूलोंकी संख्या बढ़ाई जानेके कारण अध्यापकोंकी बड़ी आवश्यकता है। इसीलिये इतने अध्यापकोंकी जरूरत पड़ रही है।

विद्यार्थियोंमें काफी संख्या युद्धसे लौटे हुए तरुणोंकी है।

विगत तीन पंचवार्षिक योजनामें १०,००,०० ग्रेजुयेट निकले थे। वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें ६,००,००० ग्रेजुयेट निकलेंगे।

(५) युद्धोपरांत—गर्मियोंके दोसे तीन महीनेकी छुट्टीके बाद पहली सितम्बरको सोवियतके स्कूल खुलते हैं। इसी समय सारे सोवियत-ध्रुवकक्षीय समुद्रसे पामीर-अफगानिस्तानकी सीमा तकके स्कूलोंका नया साल आरम्भ होता है। १९४६में केवल रूसी प्रजातंत्रमें ही १,६४,००,००० छात्र-छात्राएँ प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलोंमें पढ़ रहे थे। इस साल छः अरब रूबल सिर्फ रूसी प्रजातंत्रने अपने स्कूली बालकोंपर खर्च किये। बाकी पन्द्रह प्रजातंत्रोंमें भी कोई ऐसा नहीं था जिसने अपने बजटका आधा शिक्षापर न खर्च किया हो। नई योजनाके अनुसार १९५०में अखिल सोवियतके स्कूलोंमें तीन करोड़ अठारह लाख विद्यार्थियोंको पढ़ना है। जर्मन अधिकृत प्रदेशोंमें जिस परिमाणमें स्कूलोंका ध्वंस हुआ है उससे स्कूली मकानोंकी कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गई हैं। उदाहरणार्थ उक्रइन प्रजातन्त्रमें जर्मनोंने शायद ही किसी स्कूलको सही-सलामत छोड़ा हो। स्कूल बनानेके काममें सरकार और जनता दिलोजानसे लगी हुई है, लेकिन तब भी अभी मकानोंकी ऐसी कमी है, कि कितने ही स्कूलोंमें विद्यार्थी दो बारीमें पढ़ते हैं। फिर भी नये मकान बनानेमें लड़कोंकी सुविधाका बहुत अधिक ख्याल रखा गया है। रूसी प्रजातन्त्रने अपने १,१२,३१५ स्कूलोंको तैयार कर लिया। लेनिनग्राद्-मास्को-स्तालिनग्राद् रेखाके पश्चिम—जर्मनोंके हाथमें रहे प्रदेश—में भी स्कूलोंकी मरम्मत या नवनिर्माण पूरा हो गया। एक सितम्बर (१९४६) को अपने ५,७०,००० अध्यापकोंके साथ रूसी प्रजातन्त्रके स्कूल काम करनेको तैयार थे।

गाँवके स्कूलोंकी मरम्मत और तैयारीमें लोगोंने बड़ी सहायता की—१३,००० देहाती स्कूलोंको इस तरहकी सहायता मिली, जिनमें १,१०,००,००० लड़के पढ़ते हैं। गोर्की जिलेमें दो लाख माता-पिताओंने स्कूलकी मरम्मत और सफाईमें हाथ बटाया। उन्होंने बाहरी इमारत, क्लासरूम और अध्यापक निवासकी ही मरम्मत नहीं की, बल्कि जाड़ेकेलिये ईंधन काटकर जमा कर दिया और लड़कोंकी रसोईकी तरकारीका खेत भी जोत दिया।

एक और बड़ी समस्या स्कूलोंके सम्बन्धमें है—करोड़ोंकी संख्यामें पाठ्य-पुस्तकोंको—बाराखड़ीसे ले उच्च क्लासके फिजिक्स और रसायनकी पुस्तकों तक—तैयार करना। सहीनोंसे देशकी सबसे बड़ी कागज-मिलें और छापाखाने इस काममें लगे हैं। पेन्सिलबक्स, इन्स्ट्रुमेन्ट बक्स, होल्डर-निब आदिके कारखाने रात-दिन लगे हुए हैं। स्कूल-उद्योग कितना बड़ा है, इसका अन्दाजा इसीसे लग सकता है कि १९४९में सिर्फ रूसी प्रजातन्त्रमें चार करोड़ अतिरिक्त पाठ्य पुस्तकें छापी गईं। यह पिछले सालसे ढाई गुना अधिक थीं। आर्मेनिया-में बयालीस नई पाठ्य-पुस्तकोंकी बीस लाख प्रतियाँ छापी गईं। उज्बेकिस्तान-में चौवन पाठ्य-पुस्तकोंकी सत्रह लाख कापियाँ छपीं।

× × ×

(क) विद्यार्थी और पंचवार्षिक योजना—मास्कोके कालेजोंके बीस हजार विद्यार्थियोंने बुधवार २ जुलाई १९४६को केन्द्रीय संस्कृति-उद्यानमें एक रैली की। कार्यक्रममें खेल प्रतियोगिता और संगीतका विशेष स्थान था। शामको विशाल खुले थियेटरमें सोवियत-संघट्रेड यूनियनके सेक्रेटरी स० सोल्शवेफने छात्रोंकी सभामें भाषण देते हुये सफलतापूर्ण परीक्षा-समाप्तिपर उन्हें बधाई दी और छुट्टियोंके दिनोंको सानन्द बितानेकी सदिच्छा प्रगट की।

सोवियत् संघके उच्च शिक्षामंत्री स० कफ्तानोफने अपने भाषणमें कहा—"चतुर्थ पंचवार्षिक योजनाकेलिये सभी क्षेत्रोंमें भारी संख्यामें यंत्र और

साइन्समें दक्ष आदमियोंकी आवश्यकता है। अगले पाँच वर्षोंमें सोवियत्की युनिवर्सिटियों, कालेजों और टेक्निकल स्कूलोंको बीस लाख विशेषज्ञ देने हैं। आजकल मास्कोके ७७ कालेजोंमें १,०५,००० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जो कि सारे सोवियत् संघकी कालेज छात्र-संख्याका ⅕ है। मास्कोके कालेजोंमें दश हजार अध्यापक काम कर रहे हैं और तीन हजार विद्यार्थी पोस्ट-ग्रेजुएट (स्नातक-उपरान्त) कक्षाओंमें पढ़ रहे हैं। अगली शरदमें विद्यालय खुलनेपर सोवियत्के कालेजों और युनिवर्सिटियोंमें एक लाख पंचानवे हजार और टेक्निकल कालेजोंमें तीन लाख सतहत्तर हजार नये छात्र भर्त्ती होंगे।

(ख) उच्च शिक्षाके पृथक् मंत्री—१९४६के आरम्भमें शिक्षा-मंत्रीसे अलग एक उच्च शिक्षा-मंत्रीका पद निर्मित हुआ। इस मंत्रीका काम है, देशकी सारी उच्च शिक्षणसंस्थाओंकी देख-भाल करना और उनके कामोंको एक दूसरेसे सम्बद्ध करना। मंत्रीके अधिकारमें तीन सौ पाँच शिक्षण-संस्थायें हैं, जिनमें तीस युनिवर्सिटियाँ, बीस पोलिटेक्निकल कालेज; पैंतीस इंजीनियरिंग तथा पावर (बिजली आदि) कालेज, छियासी कृषि कालेज और कितने ही खनिज धातु कालेज, वास्तु निर्माण कालेज, रसायन-टेक्नोलोजिकल कालेज, अर्थशास्त्र कालेज, वस्त्रवयन कालेज, पोलिग्राफी कालेज, अन्नकालेज, जंगल कालेज, विदेशी भाषा शिक्षण कालेज और दूसरे कितने ही विषयोंके कालेज हैं।

उच्च शिक्षण संस्था कमीटी के प्रमुख सेर्गी केल्पानोफ् नये विभागमें मन्त्री बनाये गये हैं। वस्तुतः इस विभागके जिम्मे बहुत भारी काम है। वर्तमान पंचवार्षिक योजनाके अनुसार कालेजों और युनिवर्सिटियोंमें छात्रोंकी संख्या ६,७४,००० होगी। योजनानुसार ईंधन, पावर, लोहा-फौलाद-उद्योग, कृषि, रेलवे-यातायातके विशेषज्ञ भारी तादादमें चाहिये। आरम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षाकेलिये अध्यापक चाहिये और टेक्निककी नई शाखाओंकेलिये सुचतुर विशेषज्ञोंका प्रबन्ध करना होगा। युनिवर्सिटियों और कालेजोंमें साइन्स सम्बन्धी खोजोंको बहुत अधिक बढ़ाना और फैलाना होगा। तीन सौ पाँच उच्च शिक्षण

संस्थायें जो नये मंत्रीको मिली हैं, उनमें रेलवे यातायात, चिकित्सा, शिक्षकोंके इन्स्टीट्यूट और वास्तुकला (आर्किटेक्टर) व्यायाम और कलाके उच्च कालेज भी शामिल हैं।

५. साइंस अकदमी

रूसी साइन्स अकदमीकी स्थापना प्रथम पीतरने की थी। पीतरने रूसको एक विश्वशक्तिके रूपमें परिणत करके जो बड़े-बड़े सुधार जीवनके सभी क्षेत्रों-में किये थे, उन्हींका एक अंग अकदमीके स्थापनामें थी। यद्यपि तोप और बन्दूकोंके युद्धमें अनिवार्य उपयोग, छापेकी टाइप और दूरबीन आदिके आवि-ष्कारने बतला दिया था कि दुनियामें जीनेका उसीको हक है, जिसकी पीठपर साइंसका वरदहस्त है, लेकिन १८वीं सदीके प्रथम चरणमें साइंसको अभी वह महत्व नहीं मिला था।

धीरे धीरे रूसमें व्यापार और उद्योग बढ़ने लगा। किले, बन्दरगाह और नहरें बनने लगीं। एक शक्तिशाली सेना और नौ सेनाकी स्थापना हुई। पीतर रूस के उत्तरी समुद्र-तटको मिलानेका विचार रखता था। इसीलिये उसने एक बड़े अभियान का सगठन किया। पीतरके युगके बारेमें १९वीं सदीके पूर्वार्द्धमें महाकवि पुश्किनने लिखा—"हथौड़ोंकी आवाज और तोपोंकी गड़गड़ाहटमें रूसका नया जहाज यूरोपके समुद्रमें उतारा गया। पीतरके सैनिक-अभियानके सामने उच्च उद्देश्य थे और उसका परिणाम हितकारी हुआ। पोल्तावाके युद्धने राष्ट्रीय सुधारकी सफलताको निश्चित कर दिया। उसके बाद यूरोपीय नव-प्रकाश ने विजित नेवा तटपर अपना लंगर डाला।"

पीतरके शासनमें जो देशमें ऐतिहासिक विकास हुआ, उसका एक आव-श्यक परिणाम था, रूसमें साइंस अकदमीकी स्थापना। पीतरके वृद्ध सम-साम-यिक औरङ्गजेबने—जिससे पीतरका दूत सूरतके पास मिला था—नवप्रकाश-केलिये भारतमें साइंस अकदमीकी नहीं धर्मान्धताकी स्थापना करनी चाही।

कियेफ़रूसकी भव्य संस्कृतिने रूसी साइंस और कल्पनाको जन्म दिया था, जो १८वीं सदीके अन्त तक काफ़ी आगे बढ़ी थी। उसीका अन्तिम प्रयास था साइंस अकदमीकी स्थापना।

अकदमीकी स्थापनामें पीतर अकेला नहीं था। उसके काममें सहायक थे—प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता व० तातिश्चेफ़, भूगोलज्ञ इ० किरिल्लोफ़, अर्थशास्त्री इ० पोखोश्कोफ़ और नये विचारोंके धर्माचार्य महापुरोहित (आर्चविशप्) थ्योफ़ानिस् प्रोकोपोविच्। इन सभी पुरुषोंने अकदमीकी स्थापनामें पीतरकी सहायता की। पीतरने अकदमीकी स्थापनाकेलिये २८ जनवरी १७२४को अपना शासन-पत्र निकाला और अगले सालसे काम शुरू हुआ। सेन्तपीतरबुर्गमें नयी अकदमीमें व्याख्यान देनेकेलिये ससारके प्रसिद्ध साइंसवेत्ता बुलाये गये, जिनमेंसे कुछके नाम हैं—ल्यूनार्ड यूलर, दानियेल बेर्नूली और जोज़ेफ़ निकोलस् डेलीजल्। १५ वर्ष बाद प्रसिद्ध रूसी साइंसवेत्ता मिखाइल् लोमोनोसोफ़—साधारण रूसी जनता का पुत्र—अकदमीका मेम्बर बना। लोमोनोसोफ़का प्रभाव अपने समयमें बहुत जबर्दस्त रहा। उसने फिज़िक्स, रसायन, भूगोल, भूगर्भ धातुशास्त्र और ज्योतिषमें कई महत्त्वपूर्ण आविष्कार किये। उसने गैसके अणु-निर्मित होनेके सिद्धान्तको पल्लवित किया। भूत और शक्तिके संरक्षणके नियमका पूर्व कथन किया; प्रकाशके बारेमें एक मौलिक सिद्धान्त पेश किया। इस तरहके भिन्न-भिन्न शास्त्रोंमें कई नयी खोजें कीं। यही नहीं कविता और रूसी इतिहासके सिद्धान्त पर भी कई निबन्ध लिखे, जो सदाकेलिये मूल्यवान हैं। उसीने प्रथम रूसी व्याकरण लिखा।

अपनी स्थापनाके थोड़े ही समय बाद दूसरे पच्छिमी देशोंमें अकदमीकी कीर्ति बढ़ी। १७२८में अकदमीने साइंस-सम्बन्धी ग्रन्थोंका अनुवाद "अकदेमिचेसकिये कोमेन्तरिइ (अकदमिक व्याख्या)के नामसे प्रकाशित करना शुरू किया। १७३४में बेर्नूलीने यूलरको लिखा—"मेरे पास बयान करनेकेलिये शब्द नहीं, किस उत्कण्ठासे लोग सेन्तपीतरबुर्गके प्रकाशनोंकेलिये माँग कर रहे हैं।" फिज़िक्स शास्त्री बुल्फिगरने १७३१में लिखा "जो कोई प्राकृतिक

और गणित सम्बन्धी साइंसोंका पूरी तौरसे अध्ययन करना चाहता है, उसे पेरिस, लन्दन या सेन्तपीतरबुर्ग जाना चाहिये। वहाँ उन्हें साइंसकी प्रत्येक शाखाके विद्वान् लोग और बहुतायतसे अनुसंधानके यन्त्र और साधन मिलेंगे। पीतरने—जो स्वयं इन साइंसोंको जानता है—अपनी राजधानीमें इन विषयों-के अध्ययनकेलिये सभी आवश्यक चीजोंको एकत्रित कर दिया है। उसने एक अच्छा पुस्तकालय, मूल्यवान यंत्र दुर्लभ प्राकृतिक नमूने और कलाकी सामग्री दूसरे देशोंसे मँगाकर जमा कर दी है।"

१८वीं सदीमें साइन्स अकदमीका कार्य दो दिशाओंमें होता रहा—एक गणित और प्राकृतिक साइन्सका अध्ययन, जिसमें महान् गणितज्ञ और प्रसिद्ध प्राकृतिक शास्त्रवेत्ता लोग लगे हुए थे, दूसरी दिशामें अध्ययन करनेके विषय थे रूसकी प्राकृतिक सम्पत्ति, उसके निवासी और उसका भौगोलिक स्वरूप। १८वीं सदीके उत्तरार्द्धमें जिन साइन्स-वेत्ताओंने महाभियानोंमें भाग लिया, उनमें प्रमुख थे पल्लस, ग्मेलिन, लेपेखिन, जूयेफ़, सर्वेगिन, ओजेरेत्स्कोव्स्की और क्रसेनिन्निकोफ़, यूरोपीय और एशियाई रूसके सम्बन्धमें उनकी गवेषणाओं-को देखकर विदेशी विद्वानोंने कहा था, इस समय रूसकी तरह किसी देशका इतना सविस्तर अध्ययन नहीं हुआ है।

१९वीं सदीमें भी कितने ही प्रसिद्ध साइन्सवेत्ता हुए, जिनका नाम साइंसके इतिहासमें अमर है। इन्होंने मानव-ज्ञानके विकासमें युगान्तकारी काम किये और साइंसकी बिल्कुल नयी शाखायें स्थापित कीं। इनमें प्रमुख थे लोबा-चेव्स्की, मेन्देलेयेफ़, चेबीशेफ़, सेचेनोफ़ और मेच्निकोफ़। जारशाही रूसकी प्रतिगामी परिस्थितिमें कितनी ही बार मजबूर होकर इन साइंसवेत्ताओंको अपने लोगोंसे दूर रह एकान्तवासी बनकर काम करना पड़ा। सोवियतकी महाक्रान्ति-ने जारशाही निरंकुशताको खतम कर दिया। उसने साइंस और जनताके बिलगावको हटा दिया, साइंसको जीवनसे अलग करनेवाली खाईको पाट दिया और साइंसके क्षेत्रको असीम बना दिया।

सोवियत संघ वह देश है, जहाँ संस्कृति और साइंसको फूलने-फलनेका

सबसे अधिक मौका है। साइंस और सृजन सम्बन्धी काम तथा आविष्कारके-लिये सारे रास्ते खुले हैं। साइंसके विकासकेलिये सोवियत्-सरकार हर साल अरबों रूबल देती है, क्रान्तिके पहले जहाँ साइंस-क्षेत्रमें लाभ करने वाले ५,६०० व्यक्ति थे वहाँ आज १ लाख योग्य अनुसंधान कर्ता अपने कामोंमें लगे हैं। द्वितीय विश्वयुद्धसे पहिले देशकी चौथाई जनता स्कूलोंमें थी। केवल पहली तीन पंचवार्षिक योजनाओंमें १८,८०० स्कूल बने। द्वितीय महा-युद्धके पहले सोवियत्के कालेजों और युनिवर्सिटियोंमें उससे भी अधिक विद्यार्थी थे जितने की यूरोपके २३ देशोंके मिलकर।

सोवियत् साइंसवेत्ताओंने बहुतसे क्षेत्रोंमें जबर्दस्त काम किये हैं। शरीर-विज्ञानके सम्बन्धमें इवान पावलोफ़के अद्भुत कामोंको सारी दुनिया जानती है। उसके कामको बड़ी सफलतापूर्वक ल० ओर्बेली आगे बढ़ा रहे हैं। अकदमिक विलन्का और गेद्रोइत्सने खेत-मिट्टी सम्बन्धी साइंसके सम्बन्धमें महत्त्वपूर्ण गवेषणायें की हैं। अकदमिक कोस्तिचेफ़ने खटासके कारणोंपर महत्त्वपूर्ण खोजें की हैं। अकदमिक वेनदिस्कीने भू-रसायनिक प्रक्रिया का गम्भीर अध्ययन किया है। विकास और सार्फोलोजी शास्त्रके संस्थापक अकदमिक सेवर्त्सेफ़का नाम विख्यात है। रसायनशास्त्रियोंमें सोवियत् बायो-केमिस्ट्रीके संस्थापक अकदमिक बाख् और रसायनिक विश्लेषणके सिद्धान्तके पुरस्कर्ता अकदमिक कुर्नाकोफ़का नाम भी अमर है। अकदमिक फावर्स्कीने कृत्रिम रसायनोंके कई नये सिद्धान्त निकाले और अकदमिक जेलिन्स्कीने कृत्रिम ईंधनकी समस्याओंपर महत्त्वपूर्ण खोजें की हैं। अकदमिक गुब्किन्की पेत्रोलके भूगर्भ शास्त्रीय खोजोंने सोवियत्के समाजवादी निर्माण कार्यमें भारी सहायता की है।

२०० साल पहले गोल्डबाख़ने अंक सिद्धान्तके बारेमें एक बहुत ही महत्त्व-पूर्ण प्रश्न उपस्थित किया था, जिसका उत्तर सोवियत् गणितज्ञ अकदमिक विनोग्रदोफ़ने १९३७में प्रस्तुत किया। अकदमिक—कर्पिन्स्की भूगर्भ-शास्त्रीय खोजें खासकर सोवियत्के यूरोपीय भागके सम्बन्धमें अपूर्व है।

द्वितीय विश्वयुद्धमें सोवियत् साइंसवेत्ताओंने लालसेनाको नये-नये आवि-ष्कारों और नये-नये हथियारोंसे सुसज्जित करनेमें भारी काम किया।

कालेजों या विश्वविद्यालयोंसे निकले छात्र और प्रोफेसर जिन संस्थाओंमें अनुसन्धान करते हैं, उन्हें इन्स्टीट्यूट (प्रतिष्ठान) कहते हैं। इन सारे प्रति-ष्ठानोंको राह बतलाने वाली तथा प्रबन्ध करने वाली सर्वोपरि संस्था है साइंस-अकदमी, जिसका पूर्ण सदस्य होना अर्थात् अकदमिक बनना सोवियत्के विद्वानोंके लिये सर्व श्रेष्ठ सम्मान है।

(१) अकदमीके विभाग

यद्यपि इस संस्थाको सन् १७२५ में प्रथम पीतरने स्थापित किया था, किन्तु आरम्भमें यह एक छोटी धाराकी तरह थी, जो धीरे-धीरे बढ़ती-बढ़ती एक विशाल संस्थाके रूपमें परिणत हो गई। १७२५में इसमें १५ अकदमिक थे, जो १८२५में २२, १९१६में ४३, १९२५में ४८ और १९४५में १४२ हो गये। इसके भिन्न-भिन्न प्रतिष्ठानोंमें अनुसन्धान करनेवालोंकी संख्या भी बराबर बढ़ती गई और १९४५में अनुसन्धान-कार्यमें लगे सारे विद्वानोंकी संख्या ४२१३ हो गई। अकदमीका वार्षिक खर्च करोड़ों रूबल है, और इसके पुस्तकालयमें एक करोड़से ऊपर पुस्तकें हैं। अनुसन्धान-कार्य आठ बड़े-बड़े विभागोंमें बँटे हुए हैं : (१) फिजिक-गणित, (२) रसायन, (३) भूगर्भ-भूगोल, (४) प्राणिशास्त्र, (५) टेक्निकल साइंस, (६) इतिहास और दर्शन, (७) अर्थशास्त्र और कानून, (८) साहित्य और भाषा। आजकल अकदमीके प्रेसीडेंट अकदमिक स० इ० वाविलोफ हैं।

१९४५में अकदमीमें ५३ इंस्टीट्यूट थे। अकदमीके एक एक इंस्टीट्यूट भारी भारी संस्थायें हैं। यह ५३ इन्स्टीट्यूट निम्न प्रकार हैं—

१. फिजिक-गणित विभाग—२० अकदमिक सिर्फ इस विभागमें काम करते हैं, ६ अकदमिक इसके अतिरिक्त दूसरे विभागोंमें भी और ३५ उप-

अकदमिक काम करते हैं। इसके अकदमिक-सेक्रेटरी प्रसिद्ध भौतिक-शास्त्री योफ़ हैं। इसके ८ इंस्टीट्यूट (प्रतिष्ठान) निम्न प्रकार हैं—

इंस्टीट्यूट	डाइरेक्टर	स्थान
(१) फ़िजिक-इंस्टीट्यूट	अकदमिक स० इ० वाविलोफ्	मास्को
(२) फ़िजिक-टेक्निकल	" अ० फ० योफ़	लेनिनग्राद्
(३) फ़िजिक-समस्या	" प० ल० कापित्सा	मास्को
(४) क्रिस्टलोग्राफी	उप-अकदमिक अ० व० शुब्निकोफ़	"
(५) गणित	अकदमिक इ० म० विनोग्रादोफ्	लेनिनग्राद्
(६) थ्योरी-ज्योफ़िक्स	अकदमिक ओ० यु० श्मिद्	मास्को
(७) सीस्मोलोगी (भूकंप)	डाक्टर न० फ० वॉक्कोव्स्की	"
(८) थ्योरी-ज्योतिष	" म० फ० सुब्बोतिन्	लेनिनग्राद्

२. रसायन-शास्त्रके विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी अ० न० बाख थे। इस विभागमें १६ अकदमिक पूर्णतः, ७ अकदमिक अंशतः, और २५ उप-अकदमिक काम करते हैं। इसके छ इन्स्टीट्यूट निम्न प्रकार हैं—

(१) साधारण अप्राणिज रसायन	अकदमिक इ० इ० चेर्न्यायेफ़	मास्को
(२) प्राणिज रसायन	" अ० न० नेस्मेयोनोफ्	"
(३) कोलाइद-विद्युद्-रसायन	" अ० न० फ्रुम्किन्	"
(४) रसायनिक-फ़िजिक्स	" न० न० सेमेनोफ्	"
(५) रेदियो	" व० ग० ख्लोपिन्	लेनिनग्राद
(६) हैड्रोकिमिया (उद-रसायन)	डा०प०अ० काशिन्स्की	नवोचेर्कास्क

३. भूगोल-भूगर्भ विभागके अकदमिक सेक्रेटरी व० अ० अब्रुचेफ हैं। इसके चार इंस्टीट्यूटोंमें १० अकदमिक पूर्णतः, ७ अकदमिक अंशतः और १६ उप-अकदमिक पूर्णतः काम करते हैं। इसके इंस्टीट्यूटोंका विवरण निम्न प्रकार है—

(१) भूगर्भ	अकद० द० स० वेल्यान्किन्	मास्को
(२) हिम० वर्फ० विद्या	अकद० व० अ० अव्रूचेफ	"
(३) ज्योग्राफिया	अकद० अ० अ० ग्रिगोर्येफ	"
(४) भूमृत्तिका	अकद० ल० इ० प्रसोलोफ्	"

४. प्राणिशास्त्र-विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी अकद० ल० अ० ओर्बेली हैं। विभागमें २२ अकदमिक पूर्णतः, २ अकदमिक अंशतः और २२ उप-अकदमिक पूर्णतः काम करते हैं। इसके १३ इंस्टीच्यूटों का विवरण निम्न प्रकार है—

(१) वनस्पति	उप-अकदमिक	व० क० शिश्किन्	लेनिनग्राद्
(२) सस्य-फिजियालोजी	अकद०	अ० न० बाख (मृत)	मास्को
(३) जंगल	अकद०	व० न० सुकाचेफ़	"
(४) बायोकेमिस्ट्री	अकद०	अ० न० बाख (मृत)	"
(५) कीटाणु-प्राणिशास्त्र	उप-अकद०	व० ल० इसाचेंको	"
(६) जेनेटिक्	अकद०	लिसेंको	"
(७) गर्भशास्त्रादि	अकद०	जावर्जिन्	"
(८) जूलोजी	अकद०	ए० न० पाव्लोव्स्की	लेनिनग्राद्
(९) विकासीय मोर्फोलोजी	अकद०	श्मल्हौजेन्	मास्को
(१०) पेलियोन्टोलोजी	उप-अकद०	अ० ग० वोलोग्दिन्	"
(११) पावलोफ फिजियोलोजी (शरीर)	अकद०	ओर्बेली	लेनिनग्राद्
(१२) फिजियोलोजी	अकद०	ल० स० श्तेर्न	मास्को

५. टेक्नीकल-साइंस विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी अकद० इ० प० बर्दिन हैं। विभागमें ३३ अकदमिक पूर्णतः, ६ अकदमिक अंशतः और ४० उप-अकदमिक पूर्णतः काम करते हैं। इसके सात इंस्टीच्यूट निम्न प्रकार हैं—

(१) शक्ति (एनेर्जी)	अकद०	ग० म० कृज़िहानोव्स्की	मास्को
(२) खनिज कम्बस्टिबल	अकद०	स० स० नामेत्किन्	"

(३) धातुविद्या	अकद०	इ० प० बर्दिन्	”
(४) खनि-कार्य	अकद०	अ० अ० स्कोचिन्स्की	”
(५) मशीनविद्या	अकद०	ये० अ० चुदाकोफ्	”
(६) मेकानिक	अकद०	गलेर्किन्	”
(७) ओटोमेटिक-टेलीमेकानिक	उप अकद०	व० इ० कोवालेंकोफ	”

६. इतिहास और दर्शन विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी अकद० व० प० वोल्गिन् हैं। इसमें १७ अकदमिक पूर्णतः, १० अकदमिक अंशतः और २२ उप-अकदमिक काम करते हैं। इसके सात इंस्टीच्यूट निम्न प्रकार हैं—

(१) इतिहास	अकद०	व० द० ग्रेकोफ्	मास्को
(२) भौतिक संस्कृति-इतिहास	अकद०	”	”
(३) कला-इतिहास	अकद०	इ० ए० ग्राबर	”
(४) एथनोग्राफी	डाक्टर	स० प० ताल्स्तोफ	लेनिनग्राद्
(५) दर्शन	प्रोफेसर	व० ह० स्वेत्लोफ़	मास्को
(६) प्राकृतिक इतिहास	अकद०	व० ल० कमारोफ (मृत)	”
(७) प्रशान्त-महासागर	डाक्टर	ज्हुकोफ़	”

७. अर्थशास्त्र और कानून विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी अकदमिक ये० स० वर्गा हैं। इसमें ६ अकदमिक पूर्णतः, १ अंशतः और १२ उप-अकदमिक काम करते हैं। इसके ३ इंस्टीच्यूट निम्न प्रकार हैं—

(१) अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र-राजनीति	अकद०	ये० स० वर्गा	मास्को
(२) अर्थशास्त्र	डाक्टर	प० अ० खोमोफ्	”
(३) क़ानून	अकद०	त्राइनिन्	”

८. साहित्य और भाषा विभागके अकदमिक-सेक्रेटरी इ० इ० मेश्चानिकोफ है। इसमें ११ अकदमिक पूर्णतः, २ अंशतः और १६ उप-अकदमिक काम करते हैं। इसके पाँच इंस्टीच्यूट निम्न प्रकार हैं।

(१) विश्व-साहित्य	उप-अकद०	व० फ० शिश्मरेफ	मास्को

(२) साहित्य उप-अकद० प० इ० लेबेदेव-पोल्यान्स्की लेनिनग्राद्
(३) भाषा और मन अकद० इ० इ० मेश्चानिकोफ ”
(४) रूसी भाषा अकद० स० प० ओब्नोर्स्की मास्को
(५) प्राच्यविद्या अकद० व० व० स्त्रूवे लेनिनग्राद्

(२) अकदमीका कार्य-क्रम

(१) अकदमीका महत्त्व—सोवियत् साइंस-अकदमी साइंसकी हर शाखाका विश्वमें सबसे बड़ा संगठन है। सोवियत्के लोगोंका और उनकी सरकारका साइंसके प्रति कितना विश्वास और श्रद्धा है, इसे हमारे यहाँ समझना भी मुश्किल होगा। जितना उग्र धर्मवादी अपने धर्मपर आस्था रखते हैं, सोवियत् जनताकी वैसी ही आस्था साइंसपर है। वह भली भाँति जानती है, कि पुराने जगतका परिवर्तन केवल कोरी कल्पनाओंसे नहीं हो सकता और न देशको ही कल्पनाके बलपर समृद्ध बनाया जा सकता। यह साइंस ही है, जिसने इतने थोड़े समयमें पिछड़े और कृषि-प्रधान रूसको प्रथम श्रेणीके उद्योग-प्रधान देशमें परिणत कर दिया। सोवियत् साइंसवेत्ताओं ने देशके उद्योगीकरण में भारी भाग लिया। भूगर्भमें निहित अपार खनिज सम्पत्ति, नदियोंमें अनन्त विद्युत् तथा सिंचन-शक्तिकी बड़े भारी पैमानेपर खोज एवं सर्वेके लिये अकदमीने सैकड़ों विशेषज्ञोंके अभियान दश-पाँच नहीं बल्कि हजारोंकी संख्यामें—देशके कोने-कोनेमें भेजे। राष्ट्रको ज्ञान कराया, कि प्रकृति तुम्हारे लिये हर प्रकार की सम्पत्तिके दानमें कितनी उदार है। अकदमी सिर्फ ज्ञान कराकर ही संतुष्ट नहीं हुई, बल्कि उस सम्पत्तिको कैसे मनुष्यके उपयोगमें लाया जा सकता है, इसके लिये हजारों बड़े-बड़े कारखानोंके खोलनेमें सहायता की। साइंसकी महिमा सोवियत्-जनताने द्नियेपर जैसे महान पन-बिजली स्टेशनों और दुनियाकी हर तरहकी चीजोंके विशाल कारखानोंमें ही नहीं देखा, बल्कि उसने उसे हर गाँवमें मोटरहलो (ट्रैक्टरों) और काटने-दाँवनेकी कम्बाइन-मशीनोंके रूपमें देखा। अकदमिक लिसेन्कोने बर्नलित बीजसे—खास तापमानमें कुछ समय

रखकर बीजको सुखा लेना—फसलको दो तीन सप्ताह पहले तैयार हो जानेका ढंग निकाला। इसके द्वारा करोड़ों एकड़ भूमि (उत्तरी अक्षांशमें तापमानके शीघ्र गिर जाने से बाल फूटे गेहूँ पकने नहीं पाते थे) खेतोंके रूपमें परिणत हो गई। यदि लिस्सेन्कोकी प्रक्रिया को हम यहाँ भारतमें बरतें, तो अगहनी धानमें फँसे करोड़ों एकड़ खेत रब्बीके बोते समय खाली होकर दो-फसला बन जायेंगे। अकदमिक त्सित्सिन् ने सदा-बहार गेहूँका आविष्कार किया, इससे एक बार का बोया गेहूँ दो-तीन बार फलता है, साथ ही अधिक उपजता तथा बीमारियोंका मुकाबला करता है। सोवियत् अकदमिकोंने कृषि और उद्योगके उपयुक्त हजारों नये नये आविष्कार किये हैं। द्वितीय-विश्वयुद्धमें उन्होंने कितने ही नये तथा शक्तिशाली हथियार तैयार किये। उनकी बनाई तोपोंके सामने जर्मनोंके "टाइगर" जैसे टैंक विफल सिद्ध हुए। उनकी "कत्यूशा" तोपका शत्रुओंके पास कोई जवाब नहीं था। उनके "स्तार्मोविक" विमानोंने जर्मन-सेनाके भगानेमें भारी काम किया। संक्षेपमें यह कि सोवियत्-जनताने साइंसको साकार रूपमें हर जगह और हमेशा अपनी सेवा करते पाया।

यदि साइंसकी इन ताकतोंको देखकर आज सोवियत्में अकदमिक लोग देवताकी तरह पूजे जाते हैं (देशमें सबसे अधिक वेतन और पारितोषिक पानेवाले वही हैं) उनके विश्रामकेलिये सारे आधुनिक सुखसाधन-सम्पन्न स्वास्थ्यप्रद स्थानोंमें छोटे-छोटे नगर बना दिये गये हैं; तो इसमें आश्चर्य करनेकी आवश्यकता नहीं। सोवियतका अकदमिक अपनी कृतियों और आविष्कारोंसे हजारों वर्षोंके लिये अमर हो चुका है और इस जीवनमें भी अमर (देवता)की भाँति ही सारी सुख-सुविधाओंका भोग करता है। किन्तु, कोई भी उच्चश्रेणीका मस्तिष्क केवल इतनेसे ही सन्तुष्ट नहीं रह सकता। उसे जीवनसे भी प्यारी अपनी गवेषणा होती है। सोवियत्-सरकारने गवेषणाकी सुविधाकेलिये बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों (इन्स्टीट्यूटों) और प्रयोगशालाओं पर मुक्तहस्त हो धन खर्च किया है। विश्वविख्यात फ़िजिकवेत्ता कापित्साको उसकी गवेषणाकेलिये एक बड़ा इन्स्टीट्यूट—फीजिकसमस्या इन्स्टीट्यूट—तैयार करके दे दिया,

जिसमें उसने अन्य गवेषणाओंके अतिरिक्त तरल-आक्सिजनका अविष्कार किया।

× × ×

(२) अकदमीकी एक बैठक—अप्रैल १९४६में मास्कोमें साइंस-अकदमीके सभापति-मण्डलकी बैठक पंचवार्षिक प्रोग्राम बनानेकेलिये बैठी—जिसमें फीजिक्स, गणित, रसायन, प्राणिशास्त्र और टेकनिकल साइंसके सम्बन्धमें विशेष तौरसे योजनायें बनीं। टेकनिकल-साइंस विभागने अपने सामने बावन मौलिक समस्याओंपर अनुसन्धान करनेकी योजना रखी। यह सभी समस्यायें वर्तमान पंचवार्षिक योजना और राष्ट्रीय अर्थनीतिसे सम्बद्ध हैं। औद्योगिक इंजिनियरीके भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंमें थ्योरी (सिद्धान्त)-सम्बन्धी विस्तृत गवेषणाके साथ-साथ उक्त विभागने इंजिनियरी, सूक्ष्ममापान, मशीन-दीर्घायुता (विशेषकर उच्च तापमान, उच्च दबाव और उच्च वेगमें) धातुओंकी लचकशक्ति और चिमड़ेपनकी समस्याओंके अनुसन्धानको अपनी योजनामें रखा। मोटर-ईंधन और लुब्रिकेटर-सम्बन्धी खोजोंके साथ-साथ लम्बी दूर तक तारपर बिजली ले जाने और देशकी जलशक्ति तथा अल्पज्वलनशक्ति-वाले ईंधनोंके विद्युत्-शक्तिमें परिणत करने आदिके सम्बन्धमें प्रयोग करनेका प्रोग्राम बनाया। धातु-विभागने भी बहुतसे अनुसन्धान-विषय गवेषणाकेलिये स्वीकार किये, जिनमें नई शक्तिशाली निश्चित धातुओंका निर्माण, धातु-सम्बन्धी प्रक्रियाको और घना करने तथा धातुके उद्योग-धंधेमें तरल आक्सिजनका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल भी सम्मिलित है। अकदमी ने इंजिनियरी-विभागकी हरेक शाखाके सम्बन्धमें अपने अनुसन्धान-प्रोग्राम तैयार किये, जैसे—भारी वेगमें चीजकी निश्चित गति कायम रखना, वायु-जल-मशीन-शास्त्र, कोयलेका गैसीकरण, अत्यधिक गहराईकी धातुओंका उपयोग, भारी दबाववाला वाष्प-ब्वाइलर आदि।

उन उन विषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाले विभागोंके मंत्रियोंने अपने प्रतिनिधि

बैठकमें भेजे थे। अकदमीके प्रेसिडेन्ट वाविलोफ्ने खास तौरसे कुछ समस्याओंको पेश किया, जिन्हें प्रोग्राममें सम्मिलित किया गया। जैसे : एलक्ट्रोनिक्-साइक्लोट्रोन-यंत्र और एलेक्ट्रन-सूक्ष्मदर्शक, प्रकाश-सम्बन्धी इंजिनियरी, फोटोग्राफी और सिनेमाग्राफी।

प्राणिशास्त्रकी योजनामें प्रोटीनके ढाँचे और उसके कृत्रिम निर्माणको प्रोग्राममें खास स्थान दिया गया। यह ऐसा विषय है, जिसमें अकदमीके प्राणिशास्त्र-विभागने काफी काम किया है। अणुप्राणिशास्त्र, हानिकारक-बैक्टीरिया-ध्वंसक तत्वों पर अनुसंधानकी योजना बनाई गई।

शरीर-शास्त्रियों ने उच्च-ज्ञानतंतुओंकी क्रिया और मस्तिष्ककी पेचीली क्रियाओंके अनुसन्धानके सम्बन्धमें नई योजनायें बनाईं।

फीजिक्स और गणित विभागने साठ समस्यायें अपनी पंचवार्षिक योजनामें रखीं, जो अकदमिक कापित्साके कथनानुसार "प्रकृतिपर आक्रमण करनेके लिये युद्ध-योजना" है। योजनामें फिजिक्स, भू-फिजिक्स, गणित और ज्योतिष् सम्बन्धी समस्याओंको इन क्षेत्रोंमें हुए नवीनतम शोधोंके प्रकाशमें हल करनेका प्रोग्राम रखा गया। परमाणुकेन्द्र (नकलियस) और सृष्टिकिरण आधुनिक फिजिक्सकी प्रमुख समस्यायें हैं, उन्हें भी प्रोग्राममें सम्मिलित किया गया। साथ ही परमशून्य (-२२० डिग्री)के करीब वस्तुओंके गुण, प्रकाशमान और अर्ध-वाहक तत्वोंके अनुसन्धान द्वारा ठोस वस्तुओंके गर्भमें निहित रहस्यका उद्घाटन भी प्रोग्रामका अंग बना।

(३) बानर-नगरी (सुखुमी)की प्रयोगशाला

सुखुमी काला-सागरके तटपर है। काफी पहाड़पर चढ़नेके बाद सुखुमीकी बानर-नर्सरीमें पहुँचा जाता है। इसका संबंध सोवियत्-साइंस अकदमीके साथ है। पहाड़के ऊपरसे सुखुमी नगर और काला-सागरका सुन्दर दृश्य आँखोंके सामने आता है।

यहाँ दो सौके करीब बानर रहते हैं। सारा उद्यान और उसके मकान साठ

एकडमें हैं। यहाँ दो बड़े खुले हुए हाते हैं, जिनमें बानर घूमा-फिरा करते हैं। आठ बड़े मकानोंमें भिन्न-भिन्न प्रयोग-शालाएँ हैं। बानरोंकी देख-भाल करने वालों तथा अनुसंधान-कर्त्ताओंकेलिये मकानोंकी बारह पंक्तियाँ हैं। बानर-नगरीका अपना बिजली-स्टेशन, चिकित्सालय, यहाँ तक कि एक छोटी सी 'शिशु-शाला' भी है। यहाँ उन बच्चोंकी देख-भाल होती है, जिनकी माँ बच्चेकी परवाह नहीं करती। ये सारे मकान घने हरे वृक्षोंकी छायामें हैं। आब-हवा काफी गर्म है और बानरोंको पता नहीं लगता, कि वह बंद करके अवांछनीय स्थानमें रखे गये हैं।

बानरोंको तीन बार खिलाया जाता है, और ऐसा अच्छा भोजन, जिसे देखकर उनके एसियाई या अफ्रीकी भाइयोंके मुँहमें पानी भर आये बिना नहीं रहेगा। उनके भोजनमें काफी सब्जी, फल, रोटी, अंडा, दूध, लप्सी आदि होती है। साथमें उनके सबसे प्रिय भोजन टिड्डी, घास-कीड़े तथा अकेसिया (बबूल)के पत्ते भी रहते हैं। बानर बहुत अधिक भोजन करते हैं। मनुष्यकी तुलनामें वह अपने वजनसे पाँच गुना अधिक हजम करते हैं।

मकासा बानर सेब खाते वक्त पहले बीजको निकाल देता है, फिर गुद्देको खाता है और छिलकेको छूता तक नहीं। कोंहड़ेके साथ भी वह ऐसा ही करता है। अंडा खाते वक्त अधिकांश बानर सिर्फ उसके पीले भागको खाते हैं। सबसे आश्चर्यकी बात यह है, कि वे चीनीकी परवाह नहीं करते।

सबसे दिलचस्प दृश्य है, मातृ-परित्यक्त बच्चोंका देखना। वह आदमीके बच्चेकी तरह बोतलसे दूध चूसते हैं। उन्हें लप्सी और छिला बादाम दिया जाता है।

बानर-नगरीकी देख-भालकेलिये १७० आदमी नियुक्त हैं। जरा-सी छींक भी हुई, कि डाक्टर आकर हाजिर हुआ। प्रतिमास एकबार सभी बानरोंकी पूरी डाक्टरी परीक्षा होती है, जिसमें एक्सरे भी शामिल है। जरासा भी बीमार दीखनेपर बानरको खास अस्पतालमें ले जाया जाता है। क्यों इनकी इतनी नाजबरदारी की जाती है? सारे प्राणि-जगत्‌में बानर मनुष्यका निकटतम संबंधी

है। इसके स्वभावके अध्ययनसे भाषण और चिंतनकी उत्पत्तिके रहस्यके पता लगनेकी आशा है। साथ ही मनुष्यकी बीमारियोंका भी उनके द्वारा पता लगाया जा सकता है। इसी वास्ते १६२७में सुखुमीकी नर्सरी स्थापित की गई। इसमें रहनेवाले बानर बबून और मकाका जातिके हैं, जिनको पालतू बनाकर पैदा किया और पाला गया है।

साइंस-संबंधी अनुसंधान भिन्न-भिन्न विषयोंके अनुसंधान-कर्ता करते हैं। नीना निख् सहायक-डाइरेक्टर और अनुसंधानकी इनचार्ज हैं। छूतकी बीमारी, कीटाणु-प्राणिशास्त्र, रुधिर-निवशेन, मनोविज्ञान, शरीर-शास्त्र, क्षयरोग, नासूर आदि अनुसंधानके विषय हैं। यहाँ पर ५० अनुसन्धानकर्ता और प्रयोग-शाला-सहायक लगातार अपना काम करते हैं। समय-समय पर दूसरे विद्वान भी विशेष अनुसंधानकेलिये आते हैं। कामके महत्वका इसीसे पता लगता है, कि यहाँके अनुसंधानके पथ-प्रदर्शक महान् पावलोफ़के प्रसिद्ध शिष्य और प्रसिद्ध शरीर-शास्त्री ल० ओर्बेली, ई० पावलोव्स्की, न० पैत्रोफ़् हैं। १६ सालोंमें, जबसे कि नर्सरी स्थापित हुई, साइंस-वेत्ताओंने अपने अनुसंधानके सम्बन्धमें चार सौ लेख लिखे हैं।

एक दिलचस्प अनुसंधान भोजनके शरीर-पोषक तत्त्वोंमें परिणति के बारेमें हुआ है। एक बानरके लिये स्वस्थ और सक्रिय रहनेके वास्ते कितने और किस तरहके भोजनकी आवश्यकता है, इसका अनुसंधान किया गया और उसकी मनुष्यकी तुलनासे पता चला, कि वह वस्तुतः मानव-जातिके बहुत निकटके सम्बन्धी हैं।

भिन्न-भिन्न उपजातियोंके बानरोंकी संकर-संतानका भी तजर्बा किया गया है। संकर-संतानें अपने माँ-बापसे अधिक क्षय और दूसरे रोगोंके प्रहारको बर्दाश्त कर सकती हैं। उनके अध्ययनसे अनुवंशिकताकी समस्या पर भी काफी प्रकाश पड़ा है। भविष्यके अनुसन्धानकेलिये प्रयोगशालाने एक योजना लिंग-भेदके सम्बन्धमें बनाई है।

बीमार बानरोंकी चिकित्सा करके भिन्न-भिन्न औषधियोंके उपयोग, अनुपान

और चिकित्साके बारेमें भी गवेषणा की जाती है। सहायक डायरेक्टरने बताया, कि यहीं पर पहले-पहल जगत्प्रसिद्ध सर्जन प्रोफेसर विश्नेव्स्कीने क्षयरोगमें फेफड़ेके एक भागके निकालनेका प्रयोग किया। आपरेशन सफल रहा। आठ सालके बाद भी वह बानर जिन्दा हैं, और संततिप्रसवमें भी समर्थ हैं। पेनिसिलिन्की भी यहाँ परीक्षा हुई और अब अनुसंधान-कर्ता स्त्रेप्तोमिसिनके आविष्कारकी आशा रख रहे हैं—यही एक दवा है, जो कि क्षयरोगके कीटाणुपर प्रहार कर सकती है।

शरीर-विज्ञान-विभाग बानरोंके उच्च ज्ञान-तंतुओंकी क्रियाका अध्ययन कर रहा है। यह प्रयोग बानरों और कुत्तों दोनोंपर दो शब्दप्रतिरोधक कमरोंमें हो रहा है। यहाँ भिन्न-भिन्न शब्द या प्रकाशकी प्रभा डालनेवाली १४ बिजलीकी स्विचें हैं। जानवरको इस शब्द-विहीन कमरेमें भिन्न-भिन्न उत्तेजकों (सीटीके शब्द, प्रकाश आदि) द्वारा उत्तेजित करके निश्चित क्षणके अनन्तर भोजन दिया जाता है। हरेक चीजका यंत्रद्वारा बारीकीसे रिकार्ड होता है। यह भिन्न-भिन्न तरहके उत्तेजक शब्द या प्रकाश क्रमशः ससंकेतक प्रवृत्ति पैदा करते हैं। प्रवृत्तिको उत्तेजित करनेकेलिये मेत्रोनोम् (एक प्रकारकी घड़ी) का भी इस्तेमाल किया जाता है। अभ्यस्त बानर जानते हैं, कि प्रतिमिनट एक सौ बत्तीस टिक्-टिक् करनेपर एक मिनट बाद एक छेदसे भोजन सामने आयेगा और यह भी कि सीटीकी आवाजसे भोजन की कोई आशा नहीं। यह सिद्ध हो चुका है, कि बानर दूसरे जानवरोंकी अपेक्षा ससंकेतक प्रवृत्तिको देरतक कायम रख सकते हैं। यह भी बानरोंके मनुष्यसे निकटतम सम्बन्धको बतलाता है। शब्दहीन कमरोंकी जगह अब एक खास तरहके यंत्रका इस्तेमाल किया जाने वाला है, जिसके द्वारा बानरोंका प्राकृतिक वातावरणमें कुछ अधिक सुविधापूर्वक अध्ययन किया जा सकेगा।

नासूर-प्रयोगशालामें सात सालसे गवेषणा हो रही है। अनुसन्धान अभी जारी है।

साइंस-अकदमीका दर्शन-इन्स्टीट्यूट भाषण और चिन्तनकी उत्पत्ति और

विशेषकर संकेतोंके बारेमें अध्ययन कर रहा है। अनुसन्धान-कर्ता अपना प्रयोग दो बबूनोंके ऊपर कर रहा है। वह अब उसके हुक्मको समझते हैं, अपने पिंजड़ेमें फेंकी छड़ीको ही लौटा नहीं देते, बल्कि अनुसन्धानकर्ताके इंगित पर उसे अपने पड़ोसीके पिंजड़े में थमा देता है। इतना ही नहीं, अनुसन्धान-कर्ताके संकेतपर वह एक दूसरेको भोजन भी थमा देते हैं।

अनुसन्धानके दो लक्ष्य हैं—(१) वानरोंके स्वभावका अनुशीलन और (२) मनुष्यसे उनकी तुलनाकेलिये परिणामके आँकड़े प्राप्त करना। १९४७ में वानरोंकी संख्या दूनी होने जा रही थी और वानर-नगरीमें चिम्पान्जी और ओरांग-ऊटांग जैसे वनमानुस भी आनेवाले थे। उनके रहनेकेलिये खास मकान बनवाये जा रहे थे, जिनमें कि वह आराम से रह सकें। साथ ही, देख-भाल करनेवालोंकेलिये खतरा न हो।

वानर-नगरी पंचवार्षिक-योजनामें भुलाई नहीं गई है।

६. सबकेलिये खुला मार्ग*

सोवियत्-भूमिमें बहुत आदमियोंके श्रम पर कुछ आदमियोंको मोटा नहीं होना है; और न वहाँ कलकी फ़िक्रकेलिए धन जोड़नेकी लोगोंको धुन है। हर एक आदमी जिस कामके योग्य है, वह काम उसके लिए रखा हुआ है। कई साल हुए, जब बेकारीको उस भूमिसे बिदाई मिल चुकी। विद्याकी तरफ़ लोगोंकी अपार रुचि है। यदि यह कहा जाय, कि सोवियत् का हर एक नागरिक अपने विद्यार्थी-जीवनमें है, तो कोई अत्युक्ति नहीं। प्रत्येक व्यक्ति अपनेको अधिक उपयोगी बनानेकेलिए अपना ज्ञान बढ़ा रहा है। अनेक रात्रि-पाठशालाएँ हैं; जिनमें हर विषयकी पढ़ाई होती है। इन पाठशालाओंमें जाकर अधेड़ और बूढ़े कमकर तक अपने विषयका ज्ञान बढ़ा सकते हैं। वहाँ कोई आदमी अपनी वर्तमान स्थितिसे सन्तुष्ट नहीं है। ड्राइवर

*१९३८ में लिखित १५६-७३

चाहता है मेकेनिकल इंजीनियर होना, कंपौंडर चाहता है डाक्टर होना, गाँव का अध्यापक चाहता है प्रोफेसर होना । सबकेलिए अपने अभी उच्चस्थान-पर पहुँचनेकेलिए बाधाओंका अभाव ही नहीं है, बल्कि हर तरहसे आगे बढ़नेकेलिये उत्साह और प्रेरणा मिलती है ।

क्लावदिया इलिन्स्काया—मास्कोके मशीन बनानेके कारखानेमें इलिन्स्काया एक टेक्नोलोजिस्ट (विशेषज्ञ) है । १९३८के लिए उसका क्या प्रोग्राम था, इसके बारेमें उसीके शब्दोंमें सुनिए—

पिछले वर्ष मैंने कितने ही खुशीके दिन देखे, लेकिन सबसे बढ़कर मेरे लिए खुशीका दिन ८ दिसंबर था । उसी दिन हमारे कारखानेके डाइरेक्टर की आज्ञासे मेरी जैसी २४ वर्षकी आयुवाली टेक्नोलोजिस्ट को इंजीनियरों और टेकनीशियनके दलमें शामिल किया गया । इस दलको काम मिला है, कि प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर इवान गुदोफ्, की देखरेखमें उसके अद्भुत उपज बढ़ानेके तरीकेको सारे कारखानेमें प्रचारित किया जाय । हमारे कार्य-कर्त्ताओंके लिए यह बड़े सन्मान का काम है, कि उनका कारखाना स्तखानोवी कारखानोंका एक नमूना बन जाय । मैं इस काममें बड़े जोरके साथ भाग ले रही हूँ । मैं अपने ऊपर एक भारी जिम्मेवारी समझ रही हूँ ।

१९३७में मैंने अपने काममें बहुत उन्नति की है । मैंने अपने काम के बारेमें गोदोफ्से बहुत सीखा है; जब कि मैं उसे नया रैकार्ड स्थापित करने-केलिए सहायता कर रही थी । एक मित्रतापूर्ण सामूहिक रूपसे काम करनेमें बड़ा आनन्द आता है । वहाँ सभी एक दूसरेकी सहायता करते हैं; और बेहतर नतीजेकेलिए होड़ लगाते हैं । हमारे वह नौजवान कितने आश्चर्यमें डालते हैं, जोकि हमारी आँखोंके सामने बढ़ते जा रहे हैं, और अपने काममें बड़ा उत्साह दिखलाते हैं । अभी कल तक वह साधारण कमकर थे, आज वह स्तखानोवी बन गये और कल वह फ़ोरमैन, ब्रिगेडके नायक या विशेषज्ञ बन जायेंगे ।

हमारे वर्कशापमें खोखलोवा, क्रूगलूसीना और तमातोवा जैसी

अद्भुत कमकर लड़कियाँ हैं। वे इतखानोवी कमकरों की अगुआ हैं। उनकी और वर्कशापके सभी कमकरोंकी सहायता करना, उनके श्रमकी उपजको बढ़ाना, उनके कामको संगठित करना, ये बड़े ही सम्माननीय कर्तव्य हैं, जिन्हें मैं कर रही हूँ और उसकेलिए मुझे बड़ा अभिमान है।

पिछले साल मैंने बड़ी मिहनतसे काम किया, लेकिन मुझे अच्छा विश्राम भी मिला। अक्तूबरमें अपनी छुट्टीको मैंने काकेशसकी मनोहर पार्वत्य-भूमिमें बिताया। कितनी ही बार मैं नाटक देखने गई, दावतोंमें शामिल हुई, बहुतसी किताबें पढ़ीं। आजकल मैं प्रतिमास ७००से ८००रूबल (३०० से ३५० रुपया) महीना कमा रही हूँ।

मुझे अपने परिवारकी कुछ आनंददायक घटनाओंने भी बहुत प्रसन्न किया है। मेरा बड़ा भाई सीमान्त-रक्षक सैनिक है। हाल हीमें अपने कामको सुचारु रूपसे करनेकेलिए उसे सरकारकी ओरसे पदक प्राप्त हुआ है।

इस वक्त मैं कुछ ऐसे पुर्जोंका डिजाइन बनानेमें लगी हूँ, जिनके पूरा हो जानेपर हमारे कारखानेके सभी कमकर अपने हिस्सेके काम को दुगुना और उससे भी अधिक कर सकेंगे।

इस वर्ष मेरे सामने और भी कितनी ही योजनाएँ हैं। शीघ्र ही मेरे जीवन की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटनेवाली है—मैं कम्युनिस्ट-पार्टीकी मेम्बर स्वीकृत होने जा रही हूँ। इसकी तैयारीके लिए मैंने कितने ही साल दिये। फिर मैं अपने विवाहकी तैयारी कर रही हूँ। लेकिन वह मेरी पढ़ाईमें बाधक नहीं होगा। मैं औद्योगिक अकदमीमें दाखिल होकर विदेशी भाषाएँ पढ़ना चाहती हूँ।

* * * * * *

नववर्षके (१९३८)के आरम्भमें एलेना कोनोनेन्को एक प्रसिद्ध संवाददात्री-ने मास्कोके जीवनका एक दिलचस्प चित्र खींचा था, जिसे हम यहाँ दे रहे हैं—

मास्कोके मकानोंमें अनन्त प्रकारके लोग रहते हैं। हर एक दीवारकी आड़-

में रहनेवाला जीवन अपना खास व्यक्तित्व रखता है। हर एक दरवाजेकी ओट-में गृहस्थीके दुख-सुख हैं। एक परिवारमें पुत्रके पैदा होनेकी खुशी मनाई जा रही है, दूसरेमें दादीको दफ़नानेकी तैयारी हो रही है, तीसरेमें सबसे छोटी लड़कीने स्कूल जाना शुरू किया है, चौथेमें पुत्रने विश्वविद्यालयमें प्रवेश किया है। लेकिन इनके अतिरिक्त और भी सुख-दुख हैं, जो हर घरमें एक जैसे मालूम होते हैं। जो वलेरी स्कालोफ़्के लिए वैसे ही, जैसे केइज़िक्के लिए।

१—मैंने कई दरवाज़ों पर थपकी लगाई। एक जगह पूछा—"साथी, कैसे हो? पुराना वर्ष तो बीत चुका; मुझे साफ़ बतलाओ तो पिछले वर्ष ने तुम्हें क्या दिया?"

दाविद् बोइस्त्राफ़्के घरके भीतरसे वाइलिन्की मधुर ध्वनि आ रही थी। प्रसिद्ध गायकका छ वर्षका पुत्र गरिक बजा रहा था। दाविद् ने मेरे प्रश्न का स्वागत अपनी मुस्कराहटसे किया। वह नहीं समझ सका, कि उसे क्या जवाब देना चाहिए। अचानक उसे मेरे प्रश्नका मुकाबला करना पड़ा। वह घरके भीतर पहननेका एक लंबा चोगा और स्लीपर पहने था। इस वक़्त वह उस गायक सा नहीं मालूम देता था, जिसे कि कंज़र्वेटरी (सर्वोच्च संगीत-शाला)के चमचमाते हालमें हम देखनेके आदी हैं। पियानोका मुख खुला था। संगीत-लिपि उसपर पड़ी थी। वाइलिन्की चौकियोंपर बहुतसे वाइलिन् पड़े हुए थे। एक वाइलिन् पियानो पर था, कई सोफ़ाके ऊपर थे। एक वाइलिन् किताबकी आलमारीपर था। बोइस्राफ़्ने पिछले वर्षकी सबसे आनन्ददायिनी घटनाके बारेमें कहा—"हाँ, सबसे बड़ी बात हुई अन्तर्राष्ट्रीय अखाड़ेमें सोवियत् वाइलिन्-वादकोंकी विजय। वह सोवियत् संगीतकेलिए, जन्म-भूमि-केलिए, अभिमानकी बात थी।"

"………तुम पूछ रहे हो, कि क्या मैं बेल्जियमकी रानी—जो कि सोवियत् वादकोंकी निपुणता पर मुग्ध हुई थी—द्वारा दिये गये स्वागतमें मौजूद था? हाँ, मैं था। लेकिन ज़रा सुनो। कल्खोज़ोंके किसान मुझे क्या लिख रहे हैं। इवानोवोके पुतलीघरोंके जुलाहे क्या लिख रहे हैं।………"

दाविद् ओइस्त्राफ़्ने एक बक्स खोला। वह विदेशी समाचार-पत्रोंकी कटिंग, नाना भाषाओंमें लिखे बधाईके तारों से भरा था। "नहीं नहीं, ये नहीं !"

वह बड़ा उत्तेजित था। वह इवानोवोकी कमकर स्त्री सोबोलेवाका पत्र ढूँढ़ रहा था। वह उसे मिल नहीं रहा था।

मैंने पूछा—"१६३८के बारेमें क्या चाहते हो ?"

"अधिक और बेहतर काम। जन्मभूमिके स्वतन्त्र आकाशमें रहना, साँस लेना बड़ा सुन्दर है। मुझे इस वर्ष बड़ा आनन्द आया, जब कि मैंने पहले पहल ब्राम्‌के सरगम पर जैसा चाहता था वैसे बजा पाया। इस पर मैं कई वर्षोंसे काम कर रहा था।" वह कहना शुरू करता अपने बारेमें, लेकिन झट जन्म-भूमि पर पहुँच जाता। बोला—मैं और मेरी जन्मभूमि दो नहीं, एक हैं।

यह बात थी, जो सब घरोंमें मैंने एक सी सुनी।

२—हम पहले फ़ौलादके कारखानेमें काम करनेवाले मजदूरोंके एपार्टमेंट (नये तरहके महल जो मजदूरोंके रहनेके लिए बने हैं)में दाखिल हुए। गव्रील स्विरिदोफ़् अब औद्योगिक अकदमीका एक विद्यार्थी है। वह तरुण-साम्यवादी-संघका भी मेम्बर है। गव्रील स्विरिदोफ़् पहले अशिक्षित कमकर था, पीछे वह खुले भट्ठेका फ़ोरमैन हो गया। अपने अच्छे कामकेलिए उसे लेनिन्-पदक मिला। उसे और ज्ञान बढ़ानेकी इच्छा हुई और इसीकेलिए अब वह औद्योगिक अकदमीमें पढ़ रहा है। उसे ६५० रूबल (३०० रुपये) मासिक छात्रवृत्ति मिलती है।

स्विरिदोफ़् परीक्षा की तैयारी कर रहा है, किताबोंमें डूबा है। कमरा खूब साफ़ और सजानेमें अच्छी सुरुचि प्रकट कर रहा था। अप्राणिज-रसायन शास्त्र सम्बन्धी नोट-बुकों और प्रयोगशालाकी पुस्तकोंसे उसकी मेज भरी हुई थी।

पिछले वर्षकी सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यह थी कि उसकी तरक्क़ी अकदमी

के दूसरे वर्षमें हुई। यह आसान काम नहीं था। उसे साल भर बड़ी मिहनतके साथ पढ़ना पड़ा। देशने उसे पढ़नेकेलिये भेजा था और उसे अपने अध्ययन-कालमें अधिकसे अधिक ज्ञान प्राप्त करना है, जिससे कि वह आगे चलकर उस ऋणसे उऋण हो सके।

ख्रिरिदोफ़् शब्दोंमें और मुस्कराहटमें भी बड़ा कंजूस है।

"पिछले सालका निर्वाचन भी मेरे जीवनकेलिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। जरा सोचो तो, मुझे अपने इच्छानुसार वोट देनेका अवसर मिला। जरूर यह अद्भुत है।"

ख्रिरिदोफ़् मुस्कुरा उठा। उसकी मुस्कुराहट उसके छोटेसे पुत्र स्लवा (श्रवा) के चेहरेपर फैल गई। स्लवाकेलिए सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी, कि अबकी बार पहले-पहल उसने बर्फपर स्केटिंग करनेका मौका पाया।

२. चित्रकार इवान् एक श्वेतकेश पुरुष है; लेकिन अब भी देखनेमें उसका चेहरा जवान सा मालूम होता है। उसने अपने १६३७के कामके बारेमें बतलाया—

"मेरे तीन चित्र प्रदर्शिनीमें रखे जानेवाले हैं। 'विमानसे हवाई बमका लटकाना', 'पहली छलाँग', 'पहला उतरना'। वह इस वक्त 'लेनाकी उड़ान' नामक एक बड़े चित्रपर काम कर रहा है। उसने माली नाट्यशालामें खेले जानेवाले 'इंस्पेक्टर-जनरल'के सीन तैयार करनेमें भी बहुत काम किया है।"

चित्रकार इवानका एपार्टमेंट अच्छा लंबा चौड़ा और चमकीला है। दीवारोंपर कितने ही चित्र और पेंसिल-अंकन टँगे हुए हैं।

"मुझे उन्निद्रता सताती है। पहले जहाँ मैं रहता था, वह बड़े हल्ले-गुल्लेकी जगह थी। लेकिन यह जगह बिलकुल अनुकूल है।"

मैंने इवानके पोतेसे पूछा—"और वोलेग, तुम तो बतलाओ जरा, पिछला साल कैसे बीता?"

"मैं बालचर बन गया और प्राणिशास्त्रीय परिषद्का मेम्बर भी। हमारे बालचर-भवनकी छोटी साही जाड़ेकी ऋतुमें सोने चली गई। अब जाड़ा

बीतनेपर जगेगी। हमारे खरगोशने बच्चे जने हैं, छोटे-छोटे बड़े सुन्दर हैं।........."

४. गल्याजमीराईलोवाके जीवनकी सबसे बड़ी घटना हुई, जो कि वह रात्रि हाई-स्कूलमें प्रविष्ट हुई; और उसने पुश्किन्‌की कविताओंके स्वाद लेनेका मौका पाया।

"पिछले साल मुझे बहुत बातें मिलीं। मैं कितनी ही सभाओंमें गई। लेफोर्तोवोमें मैं निर्वाचन-संबंधी एक बड़ी सभामें गई थी। मैं मन लगाकर खूब पढ़ रही हूँ। मैं सोच रही हूँ फ़ैक्टरीमें जाना। यहाँ कमरोंकी सफ़ाई और देखभाल करने मात्रसे मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ।"

५. पीतर निकिफोरोविच् प्रोखोरोफ़् एक मजदूरने कहा—"मेरे लिए सबसे आनन्ददायक घटना यह हुई, कि मेरी लड़की कमकरोंके हाई स्कूल-में दाखिल हुई। उसे छात्रवृत्ति मिल रही है। पीछे वह कालेजमें जायगी। उसका रास्ता खुला हुआ है।"

६. हमने उस एपार्टमेंटका दरवाजा खोला, जिसमें लाल-क्रान्तिके बहादुर सेना-नायक चपायेफ़्‌के लड़के रहते हैं। एक भूरे बालोंवाला छोटा बच्चा हालसे निकलकर बाहर भागा। अपने जाड़के भारी भरकम कपड़ोंमें वह एक छोटेसे भालू जैसा मालूम होता था। यह चपायेफ़्‌का नाती आर्थर् था।

चपायेफ़्‌की लड़की क्लाउदिया वासीलेव्नाने हँसते हुए हमें कमरेके भीतर आनेकेलिये निमंत्रित किया। कमरा खूब साफ़-सुथरा था। एक दीवार-पर कितनी ही सुन्दर चीजें टँगी हुई थीं। कमरेमें एक सुन्दर बनी हुई शतरंज-की मेज थी। एक दीवारपर उसके बापको दिया गया एक अभिनन्दन-पत्र टँगा हुआ था। दूसरे कमरेमें चपायेफ़्‌का फोटो लगा था।

क्लाउदिया २४ सालकी है। शरीरसे पतली और आँखें उसकी काली हैं। रोटीके उद्योगोंके कालेजके दूसरे वर्षमें पढ़ रही है। चन्द ही दिनोंमें वह कम्युनिस्ट-पार्टीमें दाखिल होनेकेलिए अर्जी देने जा रही है। यह उसके

जीवनकी सबसे बड़ी घटना हुई। सारे पिछले वर्ष वह काममें लगी रही। उसने बहुत सी पढ़ाईकी, निर्वाचन-कमीशनकी मेंबर बनकर काम किया। कम-करों और विद्यार्थियोंने कितनी ही बार सभाओंमें बुलाकर अपने पिताके बारेमें बोलनेकेलिए उसे कहा। बालचरोंकी मुलाक़ातने उसके दिलको अधिक द्रवित किया। वह चपायेफ़्से बहुत प्रेम करते हैं, और पुत्रीके नाते उस प्रेमको क्लाउदियाकेलिए बदल देते हैं।

चपायेफ़्का पुत्र अर्कादि वासील्येफ़् भी आजकल यहीं रहता है। वह एक हवाई-जहाजके संचालकोंका कमांडर है। यह वर्ष उसकेलिए बहुत सफल रहा। गृह-युद्धके समयके विमान-संचालकोंकी निर्भीकता और बहादुरीके संबंधमें उसने एक सिनारियो लिखा।

"१६३८में मैं सोच रहा हूँ कि मैं कैसे अच्छी तरह अपनेको एकेडेमीके लिए तैयार कर सकता हूँ? मेरेलिए यह स्ताखानोवी कामका वर्ष होगा। और फिर मेरे सामने एक दूसरा स्वप्न है—मैं चाहता हूँ, एक किताब—चापायेफ़् लिखना।"

७—दूसरे एपार्टमेन्टमें एक तरुण गणितज्ञ कोल्या दिमित्रियेफ़् रहता है। रातके दस बज गये थे, जब मैं उसके यहाँ पहुँची। कोल्या गर्म नीले कम्बलसे अपनेको ढाँके चारपाईपर लेटा था। समयपर सो जाना यह उसकी माँ ही नहीं चाहती, बल्कि सरकारका भी उसकेलिए यही हुक्म है। कोल्या अभी १२ वर्षका है; लेकिन उसके गणितका ज्ञान बहुत ऊँचा है। जब वह ८ ही वर्षका था, तभी अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमितिके बड़े-बड़े प्रश्न हल करता था। सरकारने सारे दिमित्रियेफ़्-परिवारको तोबोल्स्क-से बुला मँगाया। कोल्याको ५०० रूबल (२२० रुपये) महीना वृत्ति मिलती है। प्रोफ़ेसर लोग उसके घर पर पहुँचते हैं; और वह उच्च गणित और विदेशी भाषाएँ उनसे पढ़ता है। अपने ज्ञानमें अभी ही वह कालेजकी शिक्षासे आगे चला गया है। उसका पिछला साल अच्छी तरह बीता। उसने अध्ययन किया, खेल खेले और बन्दूकका निशाना लगाना सीखा। एपार्टमेंटमें बड़ी

खुशी है। इस साल कोल्या विश्वविद्यालयकी ऊपरी कक्षामें प्रवेश करने जा रहा है।

८—१२ वर्षका वान्या एक साधारण लड़का है। लेकिन उसकी भी जिन्दगी वैसी ही आनन्दपूर्ण है, जैसी कोल्या दिमित्रियेफ्की। हम उसके पिता केइज़िक्के एपार्टमेंटमें घुसे। वान्या अपने जूते बदल रहा था। वह स्केटिंगमें जानेकी तैयारी कर रहा था। वान्याने अपने पिछले वर्षके बारेमें कहा—

"मैंने पुस्तकें पढ़ीं। कितनी ही बार थियेटर देखने गया। सिनेमा और सर्कस भी बहुत देखे। गर्मियोंको मैंने बालचर-कैम्पमें मोज़ाइस्क नगरके पास बिताया। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण घटना हुई कि मैंने दौड़, कूद और गोला फेंकनेकी परीक्षामें सफलता प्राप्त की। और भी महत्त्वपूर्ण घटना यह है कि उसे एक फ़ोटो-कैमरा पारितोषिक मिला।"

* * * * * *

इ० स० कुप्रियानोफ्

सोवियत् शासनने लोगोंके जीवनमें कितना उत्साह, कितना आनन्द भर दिया है, यह इस चौसठ बरसके जवान विक्रेताके लेखसे मालूम होता है—

"अपनेलिए मुझे एक बात बिलकुल निश्चित है। अगर सोवियत्-शासन स्थापित न हुआ होता तो कभीका मेरा अस्तित्व खतम हो गया होता।

बहुतसे लोग विश्वास नहीं करते कि मैं ६४ वर्षका हूँ और सचमुच मैं खुद भी अपनेको बूढ़ा नहीं अनुभव करता। अपने जीनेकी महती इच्छा और इस उम्रमें भी सुन्दर स्वास्थ्यकेलिए मैं सोवियत्-शासनका ऋणी हूँ। मैं ११ वर्षका बच्चा था, तभीसे मजबूर करके दूकानमें काम करनेकेलिए लगाया गया। चूक हो या न हो, मालिक और उनके सहायक मुझे पीटना अपना कर्तव्य समझते थे। उसी मारमें मेरे कितने दाँत टूट गये। उनकी

जगह अब मैंने सोनेके लगाये हैं। उस समय हर रोज १५ घंटे खटना पड़ता था और अब ८ घंटे; और इसीमें दोपहरके खानेका वक़्त भी शामिल है। हर पाँच दिनके बाद एक दिन छुट्टीका है; और साधारण छुट्टियाँ इनके अतिरिक्त। सालमें डेढ़ महीनेकी लम्बी छुट्टी जिसे मैं किसी स्वास्थ्यप्रद प्रदेशमें जाकर बिताता हूँ। इसपर भी अगर स्वास्थ्य अच्छा न हो तो क्या हो?

इसी गस्त्रोनोम् नं० १के महाभंडार (बड़ी दूकान)में मैं उस वक़्त भी काम करता था, जब यह येलिसेयेफ् बनियेकी सम्पत्ति थी; और विदेशी शौक़ीनी चीज़ोंके बेचनेमें मेरी बड़ी प्रसिद्धि थी। इन शौक़की चीज़ोंको ख़रीदनेकेलिए आते थे सेठ, साहूकार, राजा-बाबू—सभी कमकरोंके जल्लाद। मैं इन्हींकेलिए बिना विश्रामके १५-१५ घंटा खटता था। कितनी ही बार नींद भी हराम थी। अपने बूतेसे बाहरके बोझको ढकेलना पड़ता था। सड़ाँद आती हुई अँधेरी खोभारमें मुझे सोना पड़ता था। मैं हमेशा कामको गाली देता था; और दूकानदार और ख़रीदार दोनोंकेलिए मेरे दिलमें अपार घृणा थी। क्या उस समय इस तरहके जीवनको बिताते हुए मेरे पास समय और शक्ति बची रह सकती थी?—पैसेकी बात छोड़ दीजिए—क्या मैं इस तरह किताबें पढ़ता, नाटक और सिनेमा देखने जाता, जैसा कि आजकल कर रहा हूँ? किसान-मजदूर राज्यने मुझे नया जीवन दिया। अब मैं मनुष्यके गौरवको समझता हूँ। अपने कामसे प्रेम करता हूँ। अपने जीवनको पसन्द करता हूँ। मैं अपने प्रोग्रामको बराबर मात्रासे अधिक पूरा करता हूँ। मैं स्ताख़ानोवी कमकर हूँ। मैं अपने भंडारके तरुण कमकरोंको जहाँ किताबी ज्ञान पढ़ाता हूँ, वहाँ उन्हें यह भी सिखलाता हूँ कि सौदा कैसे रखना-उठाना चाहिए। खानेकी चीज़ोंको कैसे काटना और कैसे चित्ताकर्षक तरीक़ेसे उन्हें काग़ज़में लपेटकर देना चाहिए। काम मेरेलिए अब आनन्दका विषय है। मेरे बहुतसे विद्यार्थी सफलतापूर्वक अपना काम कर रहे हैं। सारे भंडारके लोग मेरा सम्मान करते हैं; और मेरे कामका मूल्य समझते हैं। मैं खुद भी अपने ज्ञानके बढ़ानेकेलिए बाक़ायदा रात्रि-क्लासोंमें जाता हूँ।

हमारे देशमें हर एक आदमी जवान है। यदि मेरी शक्ति क्षीण होगी, तो मैं जानता हूँ कि मेरा सुखमय जीवन सुरक्षित है। सरकारको उसका खयाल है। लेकिन, अभी वह बहुत दूरकी बात है। मेरे स्वास्थ्यकी जो अवस्था है, उसको देखनेसे मुझे याद नहीं आता कि इस पृथ्वीपर रहते मेरे ३ कोड़ीसे ज़्यादा वर्ष बीत गये। जवानीकी तकलीफें और चुभने वाली पीड़ाएँ वर्तमान जीवनके कारण भूल चुकी हैं।''

* * * * * *

वसा-कुसिम् मास्कोके एक बड़े कारखाने (कगानोविच् State Ball-bearing Plant)के डाइरेक्टर हैं। उन्होंने अपने कारखानेके विशेष आदमियोंके बारेमें लिखते हुए कहा—

''वह लोग एक दूसरेसे फ़र्क रखते हैं। लेकिन एक बात सबमें समान पाई जाती है—वह एक ऐसे देशमें पैदा हुए, जहाँ २० साल पहले महान् साम्यवादी क्रान्तिने पूँजीवादको हराया।

१. ईवान् ग्रीगोर्येविच् द्विमित्रियेफ़् पुर्जे बनानेवाली वर्कशापमें दवाई मशीनका संचालक है। १६२६में उसने एक फ़ैक्टरीके उम्मेदवार-स्कूलसे पढ़ाई खतम की। पुर्जा बनानेमें वह कमाल करता है। वह साथी स्तालिनके उस कथनका उदाहरण है, जिसमें उन्होंने कहा—'कमकरोंको अपना ज्ञान वहाँ तक बढ़ाना चाहिए कि वह इंजीनियरकी जगह ले सकें।' उसमें क्रियात्मक तजर्बा जितने बड़े परिमाणमें है, उतना ही उसका शास्त्रीय ज्ञान भी है। दिसंबरके पहले सप्ताहमें जो होड़ लगी थी, उसमें उसने अपने कामका १० गुना किया था। उसे गानेका बड़ा शौक है। उसका स्वर बड़ा मधुर है। वह फ़ैक्टरीके संगीत-समाजमें अध्ययन कर रहा है।

२. एव्दोकिया बोगोमोलोवाने बड़ा आश्चर्यजनक रास्ता पार किया। दो ही सप्ताह हुए, वह रोलर-वर्कशापकी सुपरिंटेंडेंट बनाई गई है। वह मास्को-सोवियत् (मास्को नगरकी म्युनिसिपलिटी)की सदस्या है। लेकिन

उसका आरंभिक जीवन इतना आसान न था। बचपनकी वह बात उसे याद है; जब कि उसको बड़ी चाह थी, एक जोड़ा चमड़ेका जूता पानेकी! इस साल उसने अपने विभागमें उपजके कई नये रेकार्ड स्थापित किये हैं।

३. क्रान्तिके पहले साथी जाबदूस्कीके माँ-बाप किसी एक जगह नहीं रहते थे। उनका बाप लोहार था; और कामकी तलाशमें हमेशा घूमता रहता था। इसीलिये उसके सातो भाई रूसकी भिन्न-भिन्न जगहोंमें पैदा हुए। सात वर्षकी अवस्थामें जाबदूस्की एक जमींदारका चरवाहा बना। इस तरह उसके जीवनका प्रारंभ हुआ। वह वहीं रह भी जाता। लेकिन महान् साम्यवादी क्रान्तिने उसकेलिए उन्नतिका रास्ता खोल दिया। धीरे-धीरे काम करता और पढ़ता आगे बढ़ा। १६२६में उसने एक मशीनका आविष्कार किया, जिसके देखते ही सरकारने उसे कमकर कालेजमें भेज दिया। १६३२से वह हमारी फ़ैक्टरीमें काम कर रहा है। इस बीचमें उसने अपने शास्त्रीय और प्रयोगात्मक ज्ञानको बहुत बढ़ाया है। हाल हीमें उसने एक मशीनका आविष्कार किया है, जिससे पहलेकी मशीनसे १३ गुना काम लिया जा सकता है।

* * * * * *

पहलेका आवारा अब पी-एच० डी० बनने जा रहा है। दिमित्रि वोनिका मास्को खनिज-कालेजका विद्यार्थी चन्द ही महीनोंमें डाक्टर बननेकेलिये अपना निबन्ध पेश करने जा रहा है। उसने अपनी खोजोंके आधारपर एक योजना तैयार की है, जिसको इस्तेमाल करनेसे कुज्बासकी खान पूर्णरूपेण मशीनसे चलनेवाली बन जायगी; और कामोंको इस ढंगसे संगठित किया जायगा कि खनक प्रतिदिन आजसे तिगुना काम कर सकेंगे। हाँ, तिगुना। वोनिकाकी योजना शेखचिल्लीका महल नहीं है। उसने हर चीजपर बारीकीसे सोचकर और छोटी-छोटी बातोंकी भी गणना करके अपनी योजना तैयार की है। उसे विज्ञानकी कितनी ही शास्त्रीय और प्रयोगात्मक शाखाओंके ज्ञानका उपयोग करके तैयार किया है।

बोनिकाने सबसे पहले १६३०के शरद्में खनिज-कालेजके दरवाजेमें प्रवेश किया। उसके साथ बैठनेवालोंमें कितने ही परिपक्व-बुद्धि मुछन्दर थे। गलियारोंमें लाल-झंडेके पदकको छातीपर लटकाये कितने ही विद्यार्थी टहल रहे थे। उस समय प्रथम पंच-वार्षिक योजनाके आरम्भके दिन थे। सरकारने हजारों विद्यार्थियोंको विशेष अध्ययनकेलिए कालेजमें भेजा था; और उनकेलिए पाठ्य भी इतने कम समयका रखा गया था कि वह सीखकर जल्दीसे जल्दी पंच-वार्षिक योजनाके काममें योग देने लगें। विद्यार्थी बहुत दिल लगाकर परिश्रमसे पढ़ते थे। वे समझते थे कि उन्होंने बहुत देरसे पढ़ाईकी ओर मुँह किया है। लेकिन तो भी नव-निर्माणके कामकेलिए अपनेको योग्य बनानेकी धुन उनके सिरपर बड़े जोरसे सवार थी। पहलेका आवारा बोनिका अपनी कक्षामें खड़ा होकर सुन रहा था। सामनेके विद्यार्थी इतने बड़े थे कि वह लड़का पीछे बैठे-बैठे अध्यापकको देख नहीं सकता था। एक समय था जब बोनिका आवारे लड़कोंकी एक बड़ी मंडलीका नेता था। मंडलीमें उसे 'लाल मित्का' कहते थे। गृह-युद्ध खतम हो गया था। लेकिन सोवियत्-भूमिके कलकारखाने ही नहीं खेतीकी व्यवस्था भी अस्त-व्यस्त हो गई थी। लोगोंको रोटीके लाले पड़ रहे थे; और कई लाखकी तादादमें आवारे छोटे-छोटे लड़के झुंडके झुंड बनाकर बिना टिकट रेलोंपर या पैदल ही सैकड़ों हजारों मील तक फिरते रहते थे। मित्का भी मालगाड़ियों और दूसरी ट्रेनोंमें सारे सोवियत् देशका चक्कर काट चुका था। कितनी ही बार वह और उसके साथी मालगाड़ीके धुरोंमें चिपककर एक जगहसे सैकड़ों मील दूर पहुँच जाते थे। उस आवारापनकी जिन्दगीमें मित्का ही आवारोंका बड़ा सरदार था।

१६२४में लाल मित्का लुप्त हो गया; जब कि देश बड़े जोशके साथ अपनी आर्थिक अवस्थाको सुधारनेमें कटिबद्ध हुआ। मित्का अब दिमित्रि बोनिकाके रूपमें प्रकट हुआ। सोवियत्-शासनने उसकेलिए काम और अध्ययनका रास्ता खोल दिया। बोनिकाने उससे फ़ायदा उठानेकी ठानी।

कामके साथ-साथ उसने पढ़ना जारी रखा और १६३०में वह कालेजमें दाखिल हुआ। इंजीनियरके नीले कागज और पुस्तकें उसकी प्रिय वस्तुएँ बन गईं। साधारण गणितके बिना उच्च गणितके सिद्धान्तोंको समझना बहुत मुश्किल था। यंत्र-विद्या और फ़िजिक्सकी बारीकियाँ और भौतिक पदार्थोंकी सहनशक्ति आदि विषय बहुत कठिन थे। लेकिन तरुण बोनिका—चलती हुई रेलवे ट्रेनकी मालगाड़ीके धुरेसे चिपकनेकी जिस तरहसे हिम्मत रखता था—अब विज्ञानके सूक्ष्म विषयोंमें भी उसका वह साहस उसके साथ था। वह अपनी सारी शक्ति लगाकर किताबोंके पीछे पड़ा था। घंटों वह शास्त्रीय सिद्धान्तोंको अवगत करनेमें लगा रहता और घंटों प्रयोगशालामें प्रयोग करनेमें लगाता था। बोनिकाने अपना प्रयोगात्मक कार्य सबसे पहले शाख्त-अन्थसाइट-ट्रस्टकी खानमें किया। खानमें काम करते हुए अपने साथियोंकी अपेक्षा वह अपने कामको अधिक गम्भीरता और ज़्यादा विस्तार-के साथ देखता था। उस वक्त वह खानकी मशीनोंको खास दिलचस्पीसे अध्ययन कर रहा था। वहाँ मशीनें जब तब क्यों टूट जाती हैं, इसके कारण-पर भी उसने गौर किया। तरुण विद्यार्थीने देखा, कि तजर्बा हलका होनेपर भी वह खानको कुछ मदद कर सकता है।

पहले सालके प्रयोगको समाप्त कर लेनेके बाद दूसरे साल कालेजमें उसने एक खानमें काम आनेवाली मशीन (winch) का मौलिक डिजाइन पेश किया। उसे विशेषज्ञोंने बहुत उत्तम श्रेणीका स्वीकार किया। बोनिका की बनाई वह विंच आज भी उस खानमें तथा मास्कोकी भूगर्भी रेलोंकी खुदाईमें दिखाई पड़ती हैं।

दूसरा काम बोनिकाने किया, वह था खानके भीतरसे कोयला लदी छोटी गाड़ियोंको चंदवकके ऊपर आनेपर वेग और धक्केसे जो नुक़सान पहुँचता था, उसकेलिए एक खास यंत्रका आविष्कार करना।

बोनिका अब भी रात-दिन अपने गंभीर अध्ययनको जारी रखे था और साथ ही नये आविष्कारोंकी ओर भी उसका ध्यान लगा था। १६३४में मास्कोकी

चीनी दीवार नगरको प्रशस्त करनेकेलिए गिराई जा रही थी। बोनिका उसके पाससे गुज़र रहा था। बोनिकाने सोचा, अगर ईंटोंकी छल्ली काटनेकेलिए बर्मा मशीनका इस्तेमाल हो, तो काम जल्दी हो सकता है। मास्को सोवियत्के अध्यक्ष बुल्गानिन्ने बोनिकाके विचारोंको स्वीकार किया; और ईंटके ढाँचेको गिरानेकेलिए बर्मा मशीनका सबसे पहले सोवियत् संघमें इस्तेमाल हुआ। बोनिकाने सोचा, कि कैसे नगरोंकी धूल और गैसको यांत्रिक तौरसे हटाया जा सकता है? उसकेलिए भी ख़ास तरीक़े आविष्कृत किये। उसके आविष्कार-संबंधी विचार सदा साहस-पूर्ण और मौलिक थे। अपने अध्ययनके वर्षोंमें उसने अपने कई आविष्कारोंको पेटेंट कराया।

बोनिका अब डिग्रीकेलिए अपना निबन्ध तैयार कर रहा है। कालेजमें १५०० दिनोंके अध्ययनका अन्तिम परिणाम सामने आनेवाला है। इसके बाद बोनिका शुरू करेगा अपने प्रयोगात्मक कार्यको।

बोनिका सोच रहा है, भविष्यकी उस खानकी रूपरेखाके बारेमें; जिसमें हर एक काम मशीनसे होगा और मशीनें भी खुद बखुद चलने वाली होंगी। बिजलीके तारोंका जाल और मशीनोंके संचालनपर अधिकार रखनेकेलिए सूक्ष्म पुर्जे, घड़ियाँ और सिगनल होंगे। इस सबके साथ उसका यह भी विचार है, कि ज़मीनके भीतरके काम तथा ऊपरके कामकी उपज और श्रमको यंत्रोंके उपयोगसे बराबर किया जा सकता है। लोगोंने कहा कि भविष्यकी उस सम्पूर्ण-तया यंत्र-नियंत्रित खानकी योजना बनानेकी अपेक्षा अच्छा होगा कि वर्तमानकी खानोंमें वह अपने विचारों और आविष्कारोंको कार्यान्वित करे। बोनिकाने इसे स्वीकार किया है। और कुज़बासकी किरोफ़रोव खान—जिससे कि वह पहले हीसे परिचित है - के एक भागको वह तैयार करने जा रहा है। उसकी योजनाके सफल होनेपर एक दिनमें तीन दिनका काम हो सकेगा।

* * * * * *

अलेक्सी ह्स्तारोतिसन् मास्कोके १७० नंबरवाले हाई-स्कूलमें अध्यापक है। वह अपने पुराने स्वप्नोंके पूरा होनेकी बात करते हुए लिखता है—

१९३८का नया वर्ष मेरे—एक २४ वर्षके नौजवान इतिहासाध्यापक के—लिए बड़े महत्त्वपूर्ण अध्यायको खोल रहा है। इस साल मैं ट्रेनिंग कालेज-की सरकारी परीक्षा दूँगा और आशा है, प्रथम श्रेणीके साथ डिग्री प्राप्त करूँगा। इसके बाद मैं ग्रेजुएटके बादकी परीक्षामें उत्तीर्ण समझा जाऊँगा; और फिर इतिहासके डाक्टरकी उपाधिकेलिए मैं तैयारी करने जा रहा हूँ। कितने ही असंभवसे जान पड़ते मेरे लड़कपनके स्वप्न बड़ी जल्दी वास्तविक हुए। जब मैं एक छोटा सा किसानका लड़का था, उस वक्त मुझे इच्छा होती थी, कि पढ़ूँ और विद्वान् बनकर दूसरोंको पढ़ाऊँ। गाँवके स्कूलकी पढ़ाई खतम कर नगरके सतसाला स्कूलमें पढ़नेकेलिए मुझे हर रोज २० मील आना-जाना पड़ता था। मैंने सतसाला स्कूल और उसके बादके ट्रेनिंग स्कूलकी पढ़ाई समाप्त की। २० वर्षकी उम्रमें मैं अध्यापक ही नहीं हो गया, बल्कि २५० विद्यार्थियोंके एक स्कूलका हेडमास्टर भी बन गया।

लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई बन्द नहीं की। तुरन्त ही शिक्षा-विभागने मुझे ट्रेनिंग कालेजमें भेज दिया। वहाँ पढ़ते हुए स्कूलमें मैं इतिहास पढ़ाया करता था। १९३७में कई स्मरणीय घटनाएँ मेरे जीवनमें घटीं। मैंने अपने सोवियत् स्कूलोंको समुन्नत और सुदृढ़ होते देखा, और अपने आपको भी मैंने बहुत विकसित किया। स्कूलकेलिए हमें नया विशाल सुन्दर मकान मिला।" "स० स० स० र०का इतिहास" पुस्तक लड़कोंकी पढ़ाईकेलिये खास तौरसे बनी, जिसने अध्यापकों और विद्यार्थियोंके काममें बहुत आसानी पैदा कर दी। मैं अपने विद्यार्थियोंकी उन्नति देख बड़ा खुश होता हूँ। इतिहास पढ़ाते समय अपनी जन्मभूमिके प्रति मैं शिष्योंमें प्रेम उत्पन्न करता हूँ। इति-हास पढ़नेमें वह बहुत आनन्द अनुभव करते हैं। विद्यार्थी मुझसे स्नेह रखते हैं और हम एक दूसरेके जबर्दस्त दोस्त हैं। १९३७में इतिहासके कई पाठ्य-क्रमोंको मैंने पास किया और परीक्षामें मुझे "उत्तम" मार्क मिला। यद्यपि अपने काम और पढ़ाईमें मुझे बहुत समय देना पड़ता था, तो भी साल भरमें पन्द्रह बार मैं नाटक, ओपेरा और संगीत अभिनयोंमें शामिल हुआ।

१९३७में मेरा वेतन २५० रूबल मासिक था और अब १९३८में ८०० रूबल (प्रायः ३७५ रुपये) है। एक अविवाहितकेलिये यह वेतन बुरा नहीं है। मैंने अपने निजी इस्तेमालकेलिये ६० किताबें खरीदीं—शेक्सपियर, बैरन और दूसरे पुराने कवियोंको मैं नियमपूर्वक पढ़ता हूँ। नये साहित्यके बारेमें तो कहना ही क्या! पिछली गर्मियोंकी छुट्टी मैंने अपने माँ-बापके साथ बिताई। उससे पहलेकी काकेशसकी सुन्दर पर्वतमालामें बीती थी। इसके अतिरिक्त विशेषज्ञोंके कितने ही इतिहास-सम्बन्धी लेक्चर सुने।

अभी मैं नौजवान हूँ। अब भी मेरा जीवन आनन्दपूर्ण है। लेकिन मेरा भविष्य उससे भी अधिक आकर्षक है। परीक्षाके परिणामके निकलते ही मैंने निश्चय किया है, विवाह कर डालनेका।

अध्याय ८

(कला)

चित्रशाला

रूसी लोगोंके पूर्वज शक जब क्रिमिया और द्नियेपरके किनारे बस गये और ग्रीक सभ्यताके प्रभावमें आये तो ग्रीक-कलाका उनके ऊपर असर होना स्वाभाविक है। लेकिन शकोंने अपनी स्वतंत्र कला भी विकसित की। जिसके कुछ नमूने अपने क्रिमियाके हालकी खुदाइयोंमें मिले हैं। कुछ मिट्टीके बर्तनोंके चित्र जो ईस्वी सनके आरम्भ कालके हैं, बहुत सजीव मालूम होते हैं। लेकिन यह पुरानी बात है और रूसी चित्रकलाके विकासके साथ उसका सीधा सम्बन्ध जोड़ना कठिन है। आजकी रूसी कलाकी अविच्छिन्नधारा पीछेकी ओर जाती १२वीं सदीमें पहुँचती है। जब कि रूसियोंको ईसाई धर्म स्वीकार किये हुए अभी एक शताब्दी हुई थी। इस वक्त फिर अपने शक पूर्वजोंकी तरह ग्रीक-संस्कृति और कलासे रूसी लोग प्रभावित हुए। रूसी चित्रकलाके संग्रह वैसे तो कई जगहोंपर हैं, लेकिन इनमेंसे मुख्य हैं लेनिनग्राद्के "रुस्कीमुजेइ" (रूसी संग्रहालय), और "हेर्मीताज म्यूजियम" तथा मास्कोमें "त्रेत्याकोफ़ गैलरी"। रुस्कीमुजेईमें चित्रोंका अपूर्व संग्रह है और उन्हें इस तरह काल-क्रमसे रखा गया है, कि रूसी चित्रकलाका क्रम विकास बहुत आसानीसे समझमें आ जाता है। १२वीं सदीसे १६वीं सदी तक कलामें धर्मकी प्रधानता रही। वहाँ अधिकतर चित्र ईसा, मरियम और दूसरे सन्तों तथा धार्मिक पुरुषोंके हैं। वेस-भूषा ही नहीं, रंग और रेखाका सम्मिश्रण भी पुराने ढगका है। लेकिन १७वीं सदीसे ढंग बदलने लगता है। अब पश्चिमी युरोपके पुनरुज्जीवन-कालका प्रकाश रूसके ऊपर पड़ने लगता है, जो प्रथम पीतरके समयमें आकर प्रमुख

स्थान ग्रहण कर लेता है। रूसी कलाकार वस्तुवादी आदि चित्रकलामें कमाल करने लगते हैं। द्वानोफ़के चित्रोंमें वस्तुवाद और कल्पनाका अद्भुत सम्मिश्रण है। रूसी चित्रकलासे परिचय प्राप्त करनेकेलिये हम यहाँ मास्कोकी त्रेत्याकोफ़ चित्रशालाका सैर कराते हैं।

त्रेत्याकोफ़ चित्रशालाकी स्थापना वैसे तो पिछली शताब्दीमें हुई थी, लेकिन सोवियत् काल हीमें उसका विकास बहुत हुआ। युद्धके समयमें इतने बहुमूल्य चित्रोंको ख़तरेमें रखना कैसे उचित समझा जा सकता था, इसलिये उन्हें सुरक्षित स्थानोंमें हटाया गया। जर्मन काफ़ी पीछे हटा दिये गये। अभी भी घमासान युद्ध चल ही रहा था, तो भी सोवियत्के कर्णधारोंको इतना विश्वास था, कि उन्होंने इस चित्रशालाको फिर सजाना शुरू किया और जर्मनी-के हथियार रखनेसे कुछ ही दिनों बाद १७ मई १९४५को चित्रशालाको दर्शकों-केलिये खोल दिया गया। समयपर चित्रोंका हटाना बहुत अच्छा सिद्ध हुआ, क्योंकि चित्रशालाके मकानपर दो बार दुश्मनके हवाई बम पड़े थे। ११ अगस्त १९४१की रातको ढाई सौ किलोग्रामके दो बम शाल नं० ६ पर गिरे। १२ नवम्बर १९४१को चित्रशालाके नजदीक ही २० बम गिरे, जिनमेंसे ५ने चित्रशालाकी इमारतको नुकसान पहुँचाया। जब जर्मन सेनायें काफी दूर हट गयीं और मास्कोको हवाई हमलेका डर नहीं रह गया, तभी चित्र लव्रू-शेन्स्की सड़कपर अपने मकानमें लाये गये। उद्घाटनसे पहले इमारतकी पूरी तौरसे मरम्मत और रंगाई-सफाई करके कि जर्मन बमोंके आघातका कोई चिह्न न रहने दिया गया था। चित्र-शालाके उद्घाटनके पहले ही दिन १५,००० दर्शक देखनेकेलिये आये। लेनिनग्राद्की रूसी चित्रशाला (रूस्की-मुज़ेइ)की भाँति इस चित्रशालामें भी चित्रोंको ऐतिहासिक क्रमसे सजाया गया है। चित्र इतने अधिक संख्यामें हैं, कि सभी चित्रोंके रखनेकेलिये जगह नहीं है।

इस चित्रशालाके महत्वको दर्शाते हुए, जन कलाकार बोरिस योहन्सन्ने उद्घाटनके समय कहा था—"मैं समझता हूँ, मैं गलती नहीं करता यदि कहूँ,

कि कलाके क्षेत्रमें सबसे अधिक वस्तुवादियों, चित्रकारों, रेखाकारों और मूर्ति-कारोंकेलिये त्रेत्याकोफ़ चित्रशाला सबसे अच्छा शिक्षक है। यह कलाके सम्बन्धमें हमारा दृष्टिकोण बनाती है। महान् रूसी चित्रकारोंके इस चित्रशाला-में अवस्थित चित्रोंसे हम अपने शिल्पकी चतुराई सीखते हैं।

"रूसी चित्रकला अपने आरम्भ हीसे वस्तुवादी कला बननेकी कोशिश करती है। इसने अपने लक्ष्यको १८वीं और १९वीं सदीके प्रारम्भमें प्राप्त किया। रोकोतोफ़, लेवित्स्की, बोरोविकोव्स्की, किपरेन्स्की और अलेक्सन्द्र-इवानोफ़ वस्तुवादी कलाके तब तक आचार्य हो चुके थे। इस समय एक ही साथ यूरोपके सभी वस्तुवादी चित्रकार एक ही विषय और एक ही समस्यामें जुटे हुए थे। अलेक्सान्द्र इवानोफ़ उसी समस्या और प्रक्रियापर काम कर रहा था जिसपर उसका समसामयिक राफ़ेल, फेदोरोफ़का ध्यान उसी विषय-पर केन्द्रित था, जिसपर डच चित्रकारोंका, और सूरीकोफ़ उन्हीं चीजोंमें दिल-चस्पी ले रहा था, जिनमें तत्कालीन वेनिसके चित्रकार।"

अन्द्रेईरुब्लेफ़का चित्र "त्रिदेव" एक बड़ा ही सुन्दर चित्र है। सुन्दर अपने अंग-प्रत्यंग और सारे सम्मिश्रणमें। सभी चीजोंका पूर्ण समन्वय है। एक बालके बराबर भी कम-बेसी कहीं नहीं पाया जाता। चेहरे, परिधान, हाथों और सुनहले पंखोंके बनानेमें रेखाओं और रंगोंका ऐसा सुन्दर सम्मिश्रण है, कि दर्शकपर अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहता। रूप-सौन्दर्य को पूरी तौर-से चित्रित करनेकेलिये उन सभी बेकारकी चीजोंको हटा देना होगा, जो कि उसके विचारोंके प्रकाश करनेमें बाधा डालती हैं, और ऐसे कलाके रूपको स्वीकार करना होगा जो दर्शककी आँखको खींचे और उसकी कल्पनाको प्रेरणा दे।

अलेक्सान्द्र इवानोफ़का चित्र "ख्रिष्ट जनताके सामने" एक पूरे जीवनकी साधना है।

चित्रकारने अपने जीवनके २५ साल इस चित्रके बनानेमें लगाये। वह

इस चित्रकेलिये फिलस्तीनमें कितने ही समय रहा। वहाँके कितने ही लोगोंके अलग-अलग पोर्ट्रेत चित्र लिये, रेखाचित्र खींचे, उनकी भिन्न-भिन्न मुद्राओंको भी अपनी रेखाओंमें बाँधा। इस सारे समयमें उसकी कल्पना भी भीतर-भीतर काम करती और विकसित होती रही, फिर उसने उस चित्र-पर तूलिका उठाई, जो आज मेरी समझमें त्रेत्याकोफ़ चित्रशालाका सबसे सुन्दर चित्र है।

फेदोतोफ़्की "विधवा" अत्यन्त करुणापूर्ण चित्र है। यह एक पचास साला विधवाका चित्र है। जीवनकी सारी कहानी इसमें अंकित है। विधवा और उसके जीवनको सूचित करनेवाली दूसरी बातें इस एक चित्रमें अंकित हैं। विधवाका आगे जरा झुका चेहरा पीठ पीछे दीवारपर सटा कागज़ दाहिने हाथमें सफ़ेद रूमाल और काला परिधान सुईके कामके साथ बाईं तरफ़का पलंगपरका तकिया, सुनहले फ्रेममें मृतपतिका चित्र, पूजाकी मूर्ति-रंग और रेखाओंका अद्भुत सम्मिश्रण।

एक चित्रमें एक महाकाव्य अंकित है।

वेनेत् सियानोव् प्रकृतिका चित्रकार है। उसकी प्राकृतिक सुषमा "बसन्त" और "ग्रीष्म" में अद्भुत सजीवता धारण करती है। उसके ऊँचे देवदार और भोजवृक्ष, नीचे मखमली घास जगह-जगह बहती नदियाँ या स्थिर-शान्त सरोवर—एक एकको देखिये और आपका मन मुग्ध हो जायेगा। इस प्राकृतिक सौन्दर्यको बहुतोंने देखा होगा, लेकिन उसका सजीव चित्रण किसी चित्रकारने आज तक नहीं कर पाया। वेनेत्का "ग्रीष्म" रूसी कलाके सर्वश्रेष्ठ निदर्शनोंमेंसे है। प्रकृतिका यह पूर्ण चित्र है। आकाशका रंग, सामने फैली पकी धान्यराशि, बच्चेके साथ हँसी कृषक रमणी। सभी बातें सन्निविष्ट होकर बहुत नयनाभिराम बहुत कल्पनोत्तेजक मालूम देती हैं। "बसन्त"में भी कलाकारने इसी प्रकार अपनी तूलिकाका चमत्कार दिखाया है।

२. जातीय नाट्यकला

रूसी फेडरल प्रजातंत्रमें १२ जातीय स्वायत्त प्रजातंत्र, ६ स्वायत्त जिले और १० जातीय इलाके हैं, जिसका अर्थ है रूसी प्रजातन्त्रमें रूसियोंके अतिरिक्त २८ भाषा-भाषी और जातियाँ भी बसती हैं। जारशाही शोषणनीति और उपेक्षा का शिकार हो याकूत और मारी जैसी कितनी ही छोटी-छोटी जातियाँ लुप्त होने जा रही थीं। सोवियत् क्रान्ति ने उन्हें जीवदान दिया। यह जातियाँ बहुत पिछड़ी हुई थीं। प्रायः सभी की भाषायें न अपनी लिपि रखती थीं न लिखित-साहित्य। शिक्षा और संस्कृति दोनोंमें उनका कोई स्थान न था और गरीबी हद दर्जेकी थी। फिर इनमें नाट्यकला के विकास की सम्भावना कहाँ से हो सकती थी? बुर्यत (मंगोल), कूमिक, अवार, लाक्, उद्मूर्त, रोसनी, मारी, कोमी और दूसरी २२ भाषा-भाषी जातियोंके १९४६ में ५१ जातीय नाट्यशालायें थीं, संस्कृति और शिक्षामें इस थोड़ेसे समयमें ये जातियाँ बहुत आगे बढ़ीं। सोवियत् सरकारका बहुत जोर है, कि ऐतिहासिक कारणोंसे पिछड़ी इन जातियोंके सांस्कृतिक तल को समुन्नत रूसी जाति के तलपर लाया जाय। इन जातियोंको आधुनिक नाट्यकलाका कोई पता न था। इनके मनोरञ्जन के साधन मामूली लीला और नाच तमाशे थे।

आज यह कितनी आगे बढ़ी हुई है, इसकेलिये बश्कीरिया स्वायत्त प्रजातन्त्रका उदाहरण लीजिये। यह प्रजातन्त्र ऊरालके पश्चिमी छोरसे मध्यवोल्गाके किनारे तक फैला हुआ है, और जनसंख्या १३ लाखसे कुछ अधिक है। आज वहाँ बश्किर (प्राचीन हूणोंके वंशज) भाषाकी १३ नाट्यशालायें हैं। इसकी राजधानी ऊफ़ामें ओपेरा और बालेत् (मूकनाट्य) थियेटर, बश्किर अकदमिक नाटक थियेटर, संगीत मण्डली, नाट्यकला म्यूजियम, नाट्य स्तूदियो, संगीत स्कूल और कलास्कूल हैं। नयी पंचवार्षिक योजनाके समय बेलोरेत्स्क, स्तेर्लीतमक, बिरस्क और तुइमज़ाके नये औद्योगिक-केन्द्रोंमें थियेटर और संगीत मण्डली संगठित हो रही हैं। दूसरी जातियोंमें भी नाट्यशालायें बढ़ रही हैं।

वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें याकूतिया (सिबेरिया) तथा काकेशसमेंके उत्तरी ओसेतियाके प्रजातन्त्रके ओर्जोनिकिड्ज़ नगरमें जातीय ओपेरा नाट्यशाला कायम हुई है। रूसी संगीत विशारदोंकी सहायतासे स्थानीय नाटककार अपने ओपेराके निर्माणमें लगे हुए हैं। इसी समय कई और स्वायत्त प्रजातन्त्रोंमें ६ जातीय थियेटर कायम होने जा रहे हैं।

रूसी प्रजातन्त्रकी छोटी जातियाँ अब कलामें बच्चे नहीं व्यस्क हो गयीं। रूसी नाट्य सूत्रधारों, नाटक-संगीतकारों, अभिनेताओं और कलाकारोंकी मददसे इन जातियोंको इतना शीघ्र आगे बढ़नेमें भारी सहायता पहुँची। रूसी—डायरेक्टरों (सूत्रधारों)ने इनके प्रथम अभिनयोंको तैयार करनेमें अधिक भाग लिया और मंच निर्माण-कलाका 'क ख' पढ़ाया। रूसी कलाकारोंने उनकेलिये पर्दे चित्रित किये। रूसी नाट्यकारोंने बड़ी मिहनतसे उनके जन संगीतको समझकर उसका उपयोग करते हुए स्थानीय गायकोंको मदद देकर प्रथम नाटक लिखवाये। यही सहायता थी, जिससे तातार या सुदूर बुर्यत मंगोलियाके प्रजातन्त्रोंने नाट्यकलाकी सबसे कठिन चीज़ ओपेरा और बालेतको सात-आठ वर्षोंके भीतर तैयार कर दिया।

रूसी लोग बहु-जातिके रूसी प्रजातन्त्रमें अपनी संख्या तथा आर्थिक-सांस्कृतिक विकासमें सबसे प्रथम हैं। उनकी नाट्यकला जारशाही जमानेमें भी बहुत आगे बढ़ी हुई थी, यदि वह ज़माना होता तो छोटी जातियोंकी भाषा और संस्कृति पनपने न पाती लेकिन सोवियत् राज्यमें अवस्था दूसरी है। रूसीकला विशारदोंने जातीय भाषा और संस्कृतिको दबानेका काम नहीं किया। उन्होंने भिन्न-भिन्न जातियोंके होनहार तरुणोंको अपने भारी ज्ञान और अनुभवसे सहायता देकर सिखाकर उनकी सृजन-शक्तिको जागृत किया और इन्हीं तरुणोंने अपनी-अपनी जातीय नाट्यशालाओं और नाटक-कलाका विकास किया। जातीय नाट्यशालाओं ने जहाँ अपने जातीय कथानकों और इतिहाससे नाटक रचनायें कीं, वहाँ रूसी नाटक भी उन्होंने अपनी भाषामें अनुवाद करके अभिनीत किये। तातार, बश्किर, उदमूर्त, मारी, चुवाश और कबर्दाकी

नाट्यशालाओंमें उनकी अपनी भाषाओंमें ओस्त्रोव्स्कीका नाटक "तूफान" बराबर खेला जाता है। ल्योनिद् ल्योनोफ़का द्वितीय विश्वयुद्ध सम्बन्धी नाटक "चढ़ाई" का बश्किर रूपान्तर बश्किरियाकी राजधानी ऊफ़ामें उस समय खेला गया, जब कि अभी मास्कोमें उसका अभिनय नहीं हो सका था। कन्स्तान्तिन् सीमोनोफ़का नाटक "रूसी जनता"—(द्वितीय महायुद्ध सम्बन्धी नाटक) एक ही समय मास्कोमें रूसी भाषा द्वारा और उद्मूर्तियाकी राजधानी इजेव्स्कमें उद्मूर्ती भाषामें खेला गया।

नयी पंचवार्षिक योजनामें इसका भी आयोजन किया गया है, कि भिन्न-भिन्न जातियोंके कलाकारोंका कला सम्मेलन हुआ करें, कलाकार एक दूसरेके स्थानोंमें जाकर आपसमें कलाका आदान-प्रदान करें, कला-सम्बन्धी प्रदर्शनियाँ की जायें। मास्कोमें हर साल जातीय-कला-महोत्सवमें सारे सोवियत्-के नाट्य-संगीतका प्रदर्शन तो होता ही है।

संगीत और नाट्यकलाके विकासमें सबसे पहले आवश्यकता है कलाकारोंकी शिक्षाकी। सोवियत्‌में ऐसे कला-स्कूल बहुत हैं। १९४०में उनकी संख्या २०० थी और १९५०में वह ४४० हो जायगी। नाट्य-कला कालेज और संगीत कंजर्वेतरी (शिक्षणालय) जैसे उच्च-कला-शिक्षणालय अभी तक आठ थे, वर्तमान पंचवार्षिक योजनामें उनकी संख्या २४ हो जायेगी।

अब तक रूसी संगीत-नाट्य-कला स्कूल अभिनेताओं, गायकों, वादकों, मूकनाट्यनर्तकों (बालेत् नर्तकों) और कलाकारोंको जातीय प्रजातन्त्रोंकेलिये शिक्षित करते थे। आगे योजना है कि उन्हें मास्को, लेनिनग्राद्, स्वेर्दलोव्स्क, सरातोफ़ और दूसरे रूसी सांस्कृतिक केन्द्रोंमें शिक्षा देनेके साथ-साथ, स्वात्तय प्रजातन्त्रोंकी राजधानियोंमें भी प्रबन्ध किया जाय। अब प्रत्येक स्वायत्त-प्रजातन्त्र और अधिकांश जातीय इलाकोंमें अपने संगीत-नाट्यक-लाके स्कूल होंगे।

२. जन-कला भवन

सारी कलाओंका उद्गम साधारण जनता है, वही जनता जिसे, गँवार कहकर हम उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं। कविता, कथा और संगीतमें आज भी कितनी ही बार बड़ी नाक वालोंको भी जनताके कृतित्वको मानना पड़ता है। जनताके इस मूल्यको समझनेकेलिये अधिक शिक्षा और संस्कृतिकी आवश्यकता है। अर्थात् अधिक शिक्षित और संस्कृत समाज ही इस बारेमें जनताकी परख कर सकता है। पुराने रूसमें भी ग्लिन्का जैसे महा संगीतकार और पुश्किन् जैसे महाकविने जन-कलाके मूल्यको समझा था। सोवियत् युगमें तो जनताहीका राज्य है, इसलिये यदि जनकलाका इतना अधिक आदर हो, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं।

जन-कलाके संग्रह और प्रोत्साहनकेलिये एक बड़ी संस्था मास्कोमें जन-कला भवनके नामसे १९१८में स्थापित हुई। इसका संगठन बहुत बड़ा और प्रभाव उससे भी बड़ा है। जन-कला भवन जन-नाट्य जन-संगीत और जन-नृत्यके विकासमें प्रोत्साहन देता है। वह परामर्श देता है, कि कौन सी चीज खेली जाय, कैसे रंगमंचपर उसकी तैयारी की जाय, कैसे रूप भरा जाय और कैसे परदे तैयार किये जायँ उसके कई विभाग हैं—नाट्य, संगीत, चित्र सम्बन्धी कला और नृत्य। हर एक विभागमें कितने ही विशेषज्ञ कलाकार हैं, जो जन-अभिनेताओंकी शिक्षा और पथ प्रदर्शनका काम करते हैं। भवनमें ४००के करीब रंग सूत्रधार, अभिनेता, संगीतकार और कलाकार काम करते हैं, जो मौखिक या पत्र-व्यवहार द्वारा परामर्श देते हैं। सोवियत्के सभी प्रजातन्त्रोंमें १५० जनकला केन्द्र मास्कोके अखिल सोवियत् जनकला भवन द्वारा एकता बद्ध हैं।

सोवियत्में तीन लाख ऐसे गायक, वादक, संगीतकार और अभिनेता हैं, जिनका कला व्यवसाय नहीं है, लेकिन उन्होंने अपने कोरस और नाटक मंडलियाँ संगठित की हैं। नाना भाँतिके वाद्योंके साथ उनकी दिलचस्पी है।

इन कलाकारोंमें १६० हजार मजदूर क्लबों, जहाजों, लाल सेना और कलखोजी किसानोंमें रहते हैं। ये १६०,००० कलाकार इतने आदमियोंका मनोरञ्जन करते हैं, जितना कि दुनियाकी सारी नाट्यशाला मिलकर नहीं कर पातीं। इन कलाकारोंमें इञ्जीनियर, विद्यार्थी, मजदूर, किसान, व्यापार स्कूलके विद्यार्थी, बूढ़े डाक्टर सभी तरहके लोग हैं। ये दिलबहलावके तौरपर इस कलासे सम्बन्ध रखते हैं और उसका अभ्यास करते हैं।

प्रतिवर्ष सारे देशमें जनकलाकी प्रदर्शनी होती है, इन प्रदर्शनियोंमेंसे सफल कलाकार मास्कोकी बड़ी प्रदर्शनीमें भाग लेते हैं और इनमेंसे कितने ही उच्च कलाकारके तौरपर विख्यात हो जाते हैं। ईगर मोइसेयेफ जैसा प्रसिद्ध गायक और नर्तक ऐसी ही प्रदर्शनीमें मिला था।

केन्द्रीयजन-कला भवनका एक और भी बड़ा काम है, जन-गीतोंका संग्रह और अध्ययन। और उनमेंसे सबसे अच्छे जन गीतोंको जन-संगीत मंडलीके लिये तैयार करना। आर्खङ्गेलस्क जिलेमें श्वेत-समुद्रके तटपर मरीम्याना गोलुब्कोवा नामकी एक सहुइन रहती थी। कोसों तक अपने पुराने गीतों और पँवारोंके उसके गानोंकी ख्याति थी। वह अपने विचारोंको कागजपर लिखने-की शक्ति भी नहीं रखती थी। एकबार एकाएक जनकला भवनके परामर्श दाता लेखक निकोलाय ल्योनत्येफने उसको खोज निकाला। उसने उसके गानों, कहानियों, कविताओंको जमाकरके उसे साहित्यिक पत्रिकाओंमें भेजा। लोगोंमें गोलुब्कोवाकी ख्याति बढ़ गयी। अन्तमें ल्योनत्येफने गोलुब्कोवाको "आधी शताब्दीमें दो शताब्दियाँ" नामक पुस्तक लिखनेमें सहायता दी।

आजकल ल्योनत्येफ "सोवियत्के उत्तराखण्ड"पर उसे एक पुस्तक लिखनेमें मदद दे रहा है।

जन कला भवनने अब तक ७० उच्च श्रेणीके जनकवि खोज निकाले हैं। इनमेंसे एक हैं याकूतियाका उस्तिन् नखशूरोफ जिसे अनगिनत प्राचीन कवितायें याद हैं। "ओलोन्खो" नामक प्राचीन कविताको उसने लिखवाया,

जो एक मोटी जिल्दमें छपी है। वैसे ६ काव्योंको वह जबानी सुना सकता है। वह बिना बाधके सहारे भी गाता है। नखसूरोफ़को याकूतिया प्रजातन्त्रने "ओलोनखोसुत" (राष्ट्रकवि)की उपाधि दी है। ४० वर्षके आदमीकेलिये यह सम्मान बहुत दुर्लभ है। उसका गला बहुत मीठा है, इसलिये बिना बाजेके भी बहुत पसन्द किया जाता है। वह एक किसान और अपने कल्खोजका प्रधान भी है।

दूसरा मशहूर जन गायक है, चोपानोफ़। काकेशसके पर्वतोंमें उत्तरी ओसेतीया नामका एक छोटा सा प्रजातन्त्र इसकी जन्म-भूमि है। वह एक मेषपाल है और अपने लोगोंमें गायक और कहानी कहने वालेके तौरपर प्रसिद्ध है। चोपानोफ़का दादा १७६० ई०में एक प्रसिद्ध जनगायक कवि था, जो १०० वर्षकी उमरमें मरा था। नाराकर्वालेकी कहानियाँ चोपानोफ़के परिवारमें पीढ़ीदर पीढ़ीसे चली आई थीं, जिन्हें चोपानोफ़ने दायभागमें पाया। चोपानोफ़ आजकल (१९४७) ६६ वर्षका है, उसने पुराने ढंगकी कविता ही नहीं बनाई है, बल्कि, स्तालिन, विजय और युद्धपर भी गीत गाये हैं। अपने प्रजातन्त्रमें उसकी कविताएँ बहुत जन-प्रिय हैं।

जनकला भवनने जनकलाके प्रचार और संरक्षाकेलिये सोवियत् संघमें बहुत काम किया है और अब तो उसके पास पोलेण्ड, यूगोस्लाविया और रोमानियासे भी सहायताकेलिये माँगे आती हैं।

४. सोवियत् फिल्म

केनेस् (फ्रांस)में १९४६में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म प्रदर्शनी हुई थी। जिसमें सबसे अधिक पारितोषिक सोवियत-फिल्मोंको मिले, सोवियत्के निम्न ७ फिल्म प्रतियोगितामें पारितोषिक योग्य समझे गये—

१. महान् मोजव-स्थान	स्तालिनग्राद् युद्ध सम्बन्धी
२. जोयो	वीर तरुणी जोयापर
३. नंबर २१७	दासताकेलिये जर्मनीमें भेजी गई कन्या

४. पाषाण-पुष्प — उराल जन-कथा
५. सम्मिलित करंड — ...
६. हमारे देशके तरुण — सोवियत् तरुणोंका व्यायाम
७. "बर्लिन"—"धूपके जीव" समाचार रील

× × ×

ललित-कला* में रूस पिछली शताब्दीसे ही यूरोपमें अग्रणी माना जाने लगा है। यदि यूरोपके बड़े-बड़े गायक-गायिका, नर्तक-नर्तकी, वादक-वादिकाके नामकी सूची ली जाय, तो उनमें रूसियोंका नम्बर बहुत काफ़ी आयेगा। क्रान्तिके बाद सोवियत् भूमिने अपनेको इस उत्तराधिकारसे वंचित नहीं किया, बल्कि आज इन बातोंमें वह संसारमें प्रथम स्थान ग्रहण कर रहा है। सोवियत् फ़िल्म सभी दृष्टिसे संसारमें सर्वोत्तम है। सीन-सीनरी दिखलानेमें तो वह कमाल करते हैं। वर्षा, सूर्योदय, सूर्यास्त, चाँदनी आदिका इतना सच्चा और इतना सुन्दर चित्रण संसारके किसी भी फ़िल्ममें न मिलेगा। चाहे आप होलीउडको लीजिए या जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी फ़िल्मोंको। सोवियत्-फ़िल्मों-के सामने वह दरिद्र मालूम होंगे। यह जरूर है, कि अगर स्त्रैण सम्बन्धोंको लीजिए, तो होलीउड क्या हमारे हिन्दुस्तानी फ़िल्मोंके सामने भी वह दरिद्र मालूम होंगे। चुम्बन तो वहाँ देखनेमें ही नहीं आयेगा। और आलिंगन आदि उतना ही, जितना स्वाभाविक समाजमें होता है। जहाँ एक ओर सोवियत् फ़िल्मोंमें अश्लीलता नहीं आने दी जाती, वहाँ उनके प्लाट, दृश्य और अभिनयमें बड़ी गंभीरता रहती है। ऐतिहासिक फ़िल्मोंमें उस समयके संसारको बड़े प्रयत्नके साथ चित्रित किया जाता है। उस समय लोग कैसा कोट पहनते थे, कैसा पतलून और कैसी टोपी। कैसी उनके पास बन्दूक थी और किस तरहके आमोद-प्रमोद को वह पसन्द करते थे? समाज और धर्मके बारेमें उनके कैसे खयाल थे? इन सभी बातोंको सच्चाईके साथ फ़िल्ममें लानेकी

---

*१९३८में लिखित पृष्ठ ८६६-९४२

कोशिश जितनी सोवियत्-फ़िल्म करते हैं, उतनी दुनियाके किसी फ़िल्ममें नहीं देखी जाती। सोवियत्-फ़िल्मोंमें इस बातका भी ख़याल रखा जाता है कि उनसे जहाँ साधारण जनताका मनोरंजन हो, वहाँ उच्च साहित्यिक भी उसे पसन्द करें। "बाल्तिकके डिपुटी" नामक फ़िल्मको फ़्रांस, अमेरिकामें उसी तरहकी सफलता हुई, जैसी सोवियत्-भूमि में। रोम्याँ रोलाँने इसकी बड़ी तारीफ़ की थी। जहाँ वहाँ साधारण दर्शकोंकी टिकटके जँगलोंपर भीड़ रहती थी, वहाँ संसारके लब्ध-प्रतिष्ठ वैज्ञानिक भी इसे देखनेकेलिए लालायित थे। "महान् पीतर" सोवियत्का एक दूसरा फ़िल्म पिछले साल चल रहा था। यह सोवियत्के सर्वोत्कृष्ट उपन्यासकार अलेक्सेइ ताल्स्त्वाके इसी नामके उपन्यासके आधारपर बना है। पीतरके समयके संसार और समाजको चित्रित करनेमें इस फ़िल्मने कमाल किया है। कैसे समाजके भिन्न-भिन्न अंग ज़मींदार, व्यापारी एक दूसरेसे आगे बढ़नेकेलिए प्रतिद्वन्द्विता कर रहे थे, इसका इसमें अच्छी तरह परिचय कराया गया है। इसमें पीतर-को एक चतुर और कर्मठ शासकके रूपमें दिखाया गया है। यह पीतर ही था जिसने पुराने ढाँचेमें ढले रूसको यूरोपके विज्ञान और प्रगतिशील सभ्यतासे प्रभावित होनेका उद्योग किया। पीतरके इस काममें उसके सामन्त और धर्माधिकारी बाधक थे। फ़िल्ममें बड़ी चतुरतासे दिखलाया गया है कि कैसे सामन्तों और महन्तोंने पीतरके पुत्रको उसके बापके ख़िलाफ़ भड़काया। सौदागर पीतरके सुधारोंको चाहते थे, क्योंकि उनके द्वारा व्यापारकी वृद्धिके साथ-साथ समाजमें उन्हें सम्माननीय स्थान मिलनेका अवसर था। ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तियोंके भावचित्रण और व्यक्तित्व-चित्रणमें कलाकारोंने कमाल किया है।

* * *   * * *

१९ नवम्बर (१९३७)को हमने लेनिन्ग्रादमें "पुगाचोफ़्" फ़िल्म देखा। यह भी एक ऐतिहासिक फ़िल्म है। ज़मींदारोंके अत्याचार और ज़ारके अन्यायके

कारण रूसके किसान नरककी जिन्दगी बिता रहे थे। हजारोंने जानसे हाथ धोया और हजारों जेलोंमें पड़े सड़ रहे थे। इन्हीं कैदियोंमें एक तरुण किसान पुगाचोफ़् भी था। उसका हृष्ट-पुष्ट बदन, उसकी निर्भीकता और साथियोंके साथ दिली सहानुभूतिने उसे कैदियोंमें सर्वप्रिय बना दिया था। एक दिन वह जेलसे भाग निकलता है। किसानोंको जालिमोंके ख़िलाफ़ उठ खड़े होनेकेलिए उत्तेजित करता है। हजारों किसान खुशी खुशी उसके दलमें शामिल होते हैं। जार और उसके पिट्ठुओंकी सेना पुगाचोफ़के दलके सामने सेंठोंकी तरह चूर-चूर हो जाते हैं। पुगाचोफ़्के अनुयायी उससे 'राजा' बननेका आग्रह करते हैं। वह राजा घोषित किया जाता है। राजा होनेके साथ अपनी पुरानी किसान बीबीके साथ राजसी ठाटको क़ायम रखनेमें बाधा होती है। मुसाहिब राय देते हैं, पुरानी पत्नीको तिलाक़ देकर नई रानी लानेकेलिए। पुगाचोफ़् दिलसे नहीं चाहता। अन्तमें एक पत्नीके रहते दूसरीसे विवाह उसका समाज बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसलिए दिलको पत्थर करके वह पत्नीको विदाई देता है। नई रानी और मुसाहिबोंकी इच्छाके विरुद्ध स्वयं फाटक तक अपनी पत्नीको पहुँचाने आता है। पुगाचोफ़्का एक सहायक तातार सरदार उसके राजदरबारमें किसी ग़लतफ़हमीके कारण अपमानित होता है। जातीयता और धर्म (मुसलमान तथा ईसाई)का भेद भी उसमें दख़ल देता है। इस प्रकार एक ओर पुगाचोफ़् की शक्ति क्षीण होने लगती है; और दूसरी ओर जार और उसके अनुयायियों की शक्ति बढ़ती है। पुगाचोफ़् फिर भी बहादुरीके साथ सामना करता है और गिरफ्तारकर मास्को ले जाया जाता है। अन्तमें जल्लादके हाथमें कुठार और हाथ-पैर बँधे शेरकी तरह खड़े पुगाचोफ़्को दिखलाया जाता है। फ़िल्मका कथानक यही है। लेकिन हर एक चीज़के पीछे जितने बड़े और सुन्दर दृश्य हैं, उनको देखते ही बनता है। फ़िल्मके देखनेसे ही पुगाचोफ़् जिस संसारमें घूमता था, उसका सजीव चित्र हमारे सामने आ जाता है। जारीना कैथराइन उस वक़्त रूसकी शासिका थी। उसके दरबार और मुसाहिबोंकी सजावट और वेश-भूषा हीका इस फ़िल्मसे पूरी तरह परिचय नहीं

मिलता, बल्कि यह भी मालूम होता है कि केथराइनके सलाहकारोंमें कैसे-कैसे डरपोक, वंचक और नीच पुरुष थे।

* * * * * *

वहीं हमने आर्मेनीमें क्रान्तिके संबंधका एक फ़िल्म भी देखा। सोवियत्-फ़िल्मोंका उद्देश्य दर्शकोंका सिर्फ मनोरंजन करना मात्र नहीं है। वह मनोरंजनके साथ जनताके ज्ञानकी वृद्धि करते हैं। भारतीय फ़िल्म तो इस दृष्टिसे देखनेपर अत्यन्त निम्न कोटिके हैं। इनका सारा प्लाट कलकत्ता या बम्बईके शहर और आसपासकी थोड़ी सी जगहपर ही चित्रित होता है। बहुत कुछ तो वह अपने स्टुडियोंके भीतर ही कर डालते हैं। इस आर्मेनी फ़िल्ममें वहाँके हरेभरे पहाड़ों, घने जंगलों, कल-कल-नादिनी नदियोंका इतना सुन्दर चित्रण हुआ था कि उस एक चित्रसे आदमी आर्मेनियाके प्राकृतिक भूगोलके बारेमें बहुतसा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। क्रान्तिकारी सैनिक—जिनमें पुरुषोंके अतिरिक्त स्त्रियाँ भी शामिल थीं—जिन समाजों से आये थे, जैसे उनके घर थे, जिस तरहका व्यवसाय करते थे, इन सबको भी बारीकीके साथ दिखाया गया था। करुणा, क्रोध, जहाँ जिस भावकी आवश्यकता थी वहाँ उसीको बड़ी सफलताके साथ अंकित किया गया था।

* * * * * *

१९३७में लाल-क्रान्तिके सम्बन्धमें भी कुछ फ़िल्म बने। इनमें 'अक्तूबरमें लेनिन' बहुत ही सफल फ़िल्म है। लाल क्रान्तिपर पोथेके पोथे पढ़ जानेपर भी उस समयकी अवस्थाका जितना ज्ञान नहीं होगा, उतना इस फ़िल्मको दो घंटा देख लेनेमें होता है। वास्तविकता लानेमें कमाल किया गया है। लेनिन, स्तालिन, जेर्ज़िन्स्की, करेन्स्की ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, जिनमें कुछ अब भी जीवित हैं। फ़िल्मको देखनेसे मालूम होता है कि हम उन्हीं व्यक्तियोंको फ़िल्ममें देख रहे हैं। मोम, रबर और दूसरी चीज़ोंसे चेहरोंकी हूबहू नक़ल ही नहीं उतारी गई है, बल्कि उनके सिरपर हाथ रखने, दाढ़ीपर हाथ

फेरने, सीटी बजाने आदि विशेष ढंगों और बोलनेके तकिया-कलामको भी बारीकीके साथ लाया गया है। व्यक्तियोंके चित्रणमें जिस सूक्ष्मतासे काम लिया गया है, स्थानों और प्राकृतिक दृश्योंके चित्रणमें भी वही बात दिखलाई पड़ती है। लेनिन् कई सालके प्रवासके बाद वेष बदलकर चुपकेसे एक बोल्शेविक इंजन-ड्राइवरके साथ शामको पीतर्बुर्गके फ़िनलैंड स्टेशनपर पहुँचता है। करेन्स्की-गवर्नमेंट—जो लेनिनसे बहुत खौफ़ खाती है—को इसका पता लग गया। उसने पुलीसके जत्थे भेजे। इंजन-ड्राइवर ट्रेनको प्लेटफ़ार्मसे थोड़ा आगे बढ़ा देता है, और फिर भापका एक घना बादल इंजनसे छोड़ता है। उसी भापकी आड़में वह लेनिन्को स्टेशनसे बाहर निकाल ले जाता है। वहाँ मित्र लोग तैयार हैं। लेनिन् क़दमें नाटा है और इंजनसे आया उसका मित्र बहुत लंबा चौड़ा है। उसी आदमीके साथ लेनिन् पहले हीसे निश्चित किये गये घरमें जाता है। मकानके दरवाजेको अच्छी तरह देखकर बन्द किया जाता है। घर उसी साथीका है। वहाँ उसकी स्त्री रहती है। स्त्रीने स्वागत किया। लेनिन् ओवरकोट उतारकर झटसे मेजपर बैठ जाता है। लेनिनग्राद्के नक़शेको सामने रखता है। उसी समय स्तालिन, जेर्जेन्स्की तथा दूसरे बोल्शेविक आ पहुँचते हैं। क्रान्ति का झन्डा कैसे और किस वक़्त उठाया जाय, कहाँ और कितने हमारे साथ सहयोग देनेवाले सैनिक हैं आदि आदि बातोंपर विचार होता है। सब लोग चले जाते हैं। लेनिन्की नजर एक दूसरी मेजपर जाती है। वहाँपर गृहपत्नीने अपने होनेवाले बच्चेके लिए कुर्ती सी कर रखी है। लेनिनका उस कुर्तीको उठाकर देखने तथा टिप्पणी करनेका ढंग बड़ा ही मनोरंजक है। लेनिन् अपने लम्बे साथीसे—जो कि कई दिनसे नहीं सो सका था—सो लेनेकेलिए बड़ा आग्रह करता है। वह बहाना करके बाहर जाता है। बड़ी देर बाद लेनिन् खुद सोनेकेलिए उठता है। उसकेलिए चारपाई तैयार की हुई है लेकिन वह फ़र्शपर कुछ पुस्तकोंको तकिया बना ओवरकोट ओढ़ सो जाता है। उसका लम्बा रक्षक लेनिन्को सोया देख सन्तुष्ट होता है।

करेन्स्कीकी सरकार लेनिन्का काम खतम करना चाहती है। लेनिन्को मारनेकेलिए एक मजदूर तैयार किया जाता है। उसे बहुत आश्वासन और प्रलोभन देकर बड़े अफसरके पास लाया जाता है। मजदूर अभिवादन करके हाथ आगे बढ़ाता है। उसके मैले-कुचैले कपड़े, अस्तव्यस्त केश और कालिख पुते हाथको देखकर अफसर अपने हाथको समेटे रखता है। पैसेके लोभकेलिए मजदूरोंके प्राण लेनिनकी जान लेनेकेलिए वह तैयार है; लेकिन उसके साथ उस अफसरका यह व्यवहार हत्यारेके चेहरेपर अनेक स्पष्ट रेखाओंमें अंकित हो जाता है। हत्यारा उस मकानको देख आया है, जिसमें लेनिन् ठहरा है। वहाँ-पर उसने एक हथियारबन्द आदमी भी छोड़ रखा है। अब सशस्त्र पुलीस लेनिन्को पकड़ने चलती है। हत्यारा ड्राइवरके पास बैठता है। ड्राइवरको किसी तरह यह मालूम हो जाता है। आगे बढ़ता देख हत्यारा पहले जबानसे, फिर हाथसे ड्राइवरको रोकना चाहता है। ड्राइवर एक ऐसा घूँसा रसीद करता है कि हत्यारा बेहोश हो जाता है। ड्राइवर मोटरको आगे दौड़ा किसी चीजसे टकरा-कर उसे बेकार कर देता है। सिपाही लोग उतरकर पैदल जानेकेलिए मज-बूर होते हैं; लेकिन पथप्रदर्शक हत्यारा बेहोश है।

उधर संकटके जीवनके चिरअभ्यासी लेनिनने मकानको छोड़ना चाहा। साथी कहता है—अभी रक्षाका पूरा प्रबन्ध नहीं हुआ है। तो भी लेनिन् जाने-केलिए आग्रह करता है। रोकनेपर वह छटपटाता है और रुक जाता है। निश्चय ही यदि मोटर ड्राइवर बाधक न हुआ होता, तो कभीकी पुलिस मकान-में दाखिल हो गई होती। आखिर लेनिनके गंजे सिरमें बाल चिपका, दाढ़ी-मूछ-को घायलोंकी सफेद पट्टीमें छिपा बाहर निकाला जाता है। दरवाजेसे बाहर जाकर पहले लम्बा आदमी खुद झाँकता है और वहाँ हथियारबन्द आदमीको खड़ा देख वहीं पटककर उसे खतम कर देता है। फिर कितने ही उपायोंसे बचाकर वह लेनिनको एक जगह ले जाता है। वहाँ मजदूरोंके भीतर लेनिन् भी बैठता है। पेत्रोग्राद्के मजदूरोंकी बगावतका करेन्स्कीकी सरकारको सामना करना पड़ता है। वह उसको रोकना चाहती है। लेकिन असफल!

जिस मजदूरकी बगलमें लेनिन बैठा है, उसने भी लेनिनका नाम सुना है। वह अपने पासके आदमीसे पूछता है—'तुमने लेनिनको देखा है, वह काले बालोंवाला है या भूरे बालोंवाला?' लेनिन बड़ी संजीदगीसे कहता है—मैंने नहीं देखा! 'कहाँ है'के जवाबमें कहता है—शायद यहीं हो। आरोरके नौसैनिक क्रान्तिका पक्ष लेते हैं। मजदूर और मजदूरिनें अपने फटेपुराने कपड़ों-में बन्दूकें हाथमेंलिये क्रान्ति-युद्ध आरम्भ करती हैं। युद्धके भिन्न-भिन्न मोर्चों-का बड़ी खूबीसे दिखलाया गया है। युद्धके बीचमें करेन्स्कीके मंत्रिमंडलकी बैठक होती है। लाल योद्धा ज़ारके शरद्-प्रासादमें दाखिल होते हैं। वहाँ किसी जगह सुन्दर पाषाणमूर्तियाँ हैं। किसी जगह किसी महान कलाकार द्वारा चित्रित अद्‌भुत चित्रपट हैं। बेपरवाईसे या जानबूझकर इन चीज़ोंको सिपाही नष्ट न कर दें, इसके लिए मजदूर सेनाका अगुआ बहुत ख़याल करता है। वह एक बार चिल्ला कर कहता है—'साथियो, यह सुन्दर कलाकी वस्तुएँ राष्ट्र-की सम्पत्ति हैं। सोवियत सरकारको इनकी जरूरत पड़ेगी। ख़याल रखना, इनको नुक़सान न पहुँचे।'

शरद्-प्रासादपर बोल्शेविकोंका अधिकार होता है। करेन्स्कीका मंत्रिमंडल पकड़ा जाता है। विजयके उपलक्षमें प्रासादके बड़े हालमें सभा होती है। लेनिन् मंचपर व्याख्यान देने आता है। वह मजदूर, जिसकी बगलमें लेनिन कुछ समय तक बैठा था, खुशीके मारे फूला नहीं समाता। साथियोंसे कहता है—अरे, लेनिन तो मेरे पास बैठा था! मैंने उससे बातकी थी। मैंने पूछा—लेनिन् कहाँ है; तो बोला, शायद यहीं हो।

'अक्तूबरमें लेनिन्' सोवियत् फ़िल्म-उद्योगकी प्रगतिको बहुत ऊँचा साबित करता है। कलाकारोंने जिन व्यक्तियोंको अपने नाट्यका विषय बनाया है, उनके रूप और भावके चित्रणमें इसने अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। जन-कलाकार श्चुकिनने अपने चित्रण द्वारा सिद्ध किया है कि जारशाहीकी मजबूत शक्तिको ध्वस्त करनेके लिए लेनिन्के पास कितना सुदृढ़ दिल और दिमाग था।

* * *　　　* * *

'बाल्तिकके आदमी' एक दूसरा फ़िल्म है, जो कि क्रान्ति-युद्धके एक अंगको दिखलाता है। यह फ़िल्म एक एक शहरमें महीनों चलता रहा; और तब भी दर्शकोंकी भीड़ कम न होती थी। मैंने पहले दिन टिकटके लिए कोशिश की, तो देखा, पहले और दूसरे प्रदर्शनके सभी टिकट बँट चुके हैं और तीसरे प्रदर्शनकेलिए मेरे आगे एक लम्बी कतार खड़ी है। टिकट मिलता, तो भी ११ बजे रातसे ४ बजे तक फ़िल्म आरंभकी प्रतीक्षामें बैठनेकेलिए मैं तैयार नहीं था। दूसरे दिन किसी तरह टिकट मिला। दृश्य १९१९में मित्र (अंग्रेज-फ्रेंच)-शक्तियोंकी मददसे सफ़ेद रूसी (जमींदार और पूँजीपति) पेत्रोग्रादपर कब्जा करना चाहते थे। एक तरफ़ जेनरल यूदेनिच्की सेनाएँ पेत्रोग्रादके पास पहुँचती हैं और दूसरी तरफ़ अंग्रेजी जहाज। बाल्तिक समुद्र में वे माइन डालकर सोवियत बेड़ेको नष्ट करनेकी प्रतीक्षामें खड़े होते हैं। दो सोवियत् जंगी जहाज गवरील और आजर्द, फ़िनलैंडकी खाड़ी (पेत्रोग्राद की खाड़ी) की हिफ़ाजतके लिए तैयार हैं। गवरीलका कप्तान जारशाहीके वक़्तका एक अफ़सर है। वह लाल क्रान्तिको दिलसे नहीं पसंद करता तो भी वह बागी होना नहीं चाहता। इधर क्रान्तिके बाद सैनिकोंमें विनयकी कमी और उच्छृङ्खलता अधिक बढ़ जाती है। सैनिक अपने पुराने कप्तानसे बड़ी बेतकल्लुफ़ीसे बातचीत ही नहीं करते, बल्कि मुँहपर मजाक उड़ानेसे भी बाज़ नहीं आते। कप्तानको यह बहुत बुरा लगता है। सोवियत् कायदेके मुताबिक़ हर एक सेना या जंगी जहाजमें सैनिक अफ़सरके अतिरिक्त एक राजनैतिक अफ़सर या कमीसर रहना भी जरूरी था। एक मजदूर कमीसर होकर आता है। सोवियत् शासनके ऊपर काली घटाएँ छाई हुई हैं। चारों ओर शत्रुओंकी शक्ति अधिक बढ़ हो चुकी है। कमीसर बड़ी हँसी-खुशीके साथ अपनी स्त्री और एकलौते लड़केसे बिदाई लेता है। जहाजमें आकर सैनिकोंको लज्जा और उच्चादर्शकी ओर ध्यान दिलाकर विनीत बनानेमें सफल होता है। पुराने कप्तानको भी नई परिस्थितिके अनुकूल बनानेकेलिए प्रस्तुत करता है। जहाज के भीतर भी दुश्मनके आदमी पहुँचे हुए हैं। वह उलटा सन्देश दे गवरीलके

सैनिकोंको दुश्मनोंके अधीन एक तटपर उतार देते हैं। शत्रु गोलाबारी शुरू करता है। सैनिक खुद खतरेमें तो हैं ही, लेकिन वह चाहते हैं कि इस खतरेको उनका साथी जहाज जान जाय। वे एक दूत भेजते हैं, लेकिन वर्षाकी बूँदोंकी तरह बरसती गोलियोंके भीतर वह चार क़दम आगे भी जीवित नहीं बचता। दूसरा तैयार होता है। तीसरा भी उसी हिम्मत और उत्साहसे सन्देश ले जानेकेलिए अपनेको अर्पण करता है। आखिर गोलियोंके भीतरसे एक सन्देश-वाहक जहाजकी ओर भागता है। सैनिक एक पहाड़के डाँड़ेकी आड़से दुश्मनका मुक़ाबला कर रहे हैं। एक सिगरेट जलाकर एक ओरसे दूसरे ओर तक सभी मुँहोंमें घड़ीकी सुईकी तरह कैसे खिसकता चला जा रहा है, और किस तरह वह सैनिक मृत्युसे निडर हो दुश्मनोंकी गोलियोंकी प्रतीक्षा कर रहे हैं; ये दृश्य बहुत ही भावपूर्ण हैं।

सन्देश-वाहक जहाजपर पहुँचता है। सैनिक भी कुछ हानिके बाद अपने जहाजपर लौटते हैं। एक अँग्रेज लड़ाइका जहाज हमला करता है। समुद्री लड़ाईका एक बहुत ही भीषण दृश्य दर्शकोंके सामने आता है। तोपें आग उगल रही हैं। उनका धुआँ आसमानमें छा रहा है। गोलोंके आघातसे नौकाएँ और जहाजके पटरे गजों ऊपर उड़कर समुद्र-तलपर गिर रहे हैं। अंग्रेज़ी जहाज डूबने लगता है। बचे-खुचे नौसैनिक पानीमें कूद पड़ते हैं। सोवियत् जहाज जीवित अंग्रेज सैनिकोंको बचाता है। अंग्रेज कप्तान गिरफ्तार होता है। उसे सोवियत्के साधारण सैनिक और अफ़सरमें कोई भेद नहीं दिखलाई देता। लाल सिपाहियोंके समानताके व्यवहारसे झुँझला उठता है। उसके रूखे बर्तावको लाल सैनिक हँसीमें उड़ा देते हैं।

दो खतरोंसे अभी तक वे बच चुके थे। लेकिन इसी समय दुश्मनका भेदिया भुलावा देकर गबरीलको उस तरफ़ भेज देता है, जिस तरफ़ कि समुद्रमें विस्फोटक बिछे हुये हैं। भेदिया मृत्युसे डर जाता है और भेद खोल देता है। लेकिन तब तक जहाज क़रीब पहुँच गया है। उसे खुद बचनेकी कोई गुंजायश नहीं, लेकिन वह अपने साथी जहाज आजर्दको संकेत द्वारा खतरे

को सूचना दे देता है। जहाजसे टकराकर विस्फोटक फूटता है और जहाज-में भारी छेद हो जाता है। बचनेकेलिए छोटी नावें और कमर-पेटियोंके सहारे लोग उतर रहे हैं। कमीसर और कप्तान उतरनेसे इन्कार कर देते हैं। इसी वक्त पता लगता है, कि कमीसरका एकलौता लड़का भी छिपकर जहाजमें चला आया है। कमीसर अपने लड़केको गोदमें लेता है। अब तक उसके चेहरेपर हर्षका चिह्न था। अपनी मृत्यु उसकेलिए तृणके समान थी। उसको खुशी इस बातकी थी, कि उसने एक जहाजको बचा दिया; और दुश्मनके एक जहाज को वह पहले ही डुबा चुका है। लेकिन मृत्युकी घड़ीमें अपने बच्चेको सामने पाकर वह विचलित हो जाता है। उसी समय नावसे कोई आदमी बच्चेको लेनेकेलिए आ जाता है। कमीसर प्यार करके बच्चेको दे देता है। जहाज-पर कमीसर और कप्तान खुशी-खुशी मृत्युका आलिंगन करनेकेलिए खड़े हो जाते हैं। इञ्च-इञ्च करके जहाज पानीमें धँसता जाता है और वह दोनों प्रसन्नमुख अनन्त जलराशिके भीतर निमग्न हो जाते हैं। कलाकारोंने भाव-चित्रणमें ही सिद्धहस्तता नहीं दिखलाई है; बल्कि प्राकृतिक दृश्योंके दिखलानेमें भी वैसी ही उदारता है जैसी कि सोवियत्-फ़िल्मोंमें देखी जाती है।

* * *   * * *

छोटे छोटे लड़कोंकेलिए सोवियत्ने अलग फ़िल्म तैयार किये हैं। इनकी संख्या हजारों तक पहुँच गई है। शिक्षाप्रद कहानियोंको ऐसे मनोरंजक ढंगसे बोलते चित्रपटोंमें उतारा गया है कि बालक देखते वक्त लोटपोट हो जाते हैं। पुश्किनकी सोनेकी मछली और मछुएवाली कहानी मैंने देखी। उसमें मछुएका जाल गिराना, मछलीका जालमें आना और उसकी प्रार्थनापर मछुएका छोड़ देना। फिर मछुएकी औरतकी फ़रमाइशपर मछुएका एकके ऊपर एक बरदान माँगना और धीरे-धीरे झोपड़ीकी जगह महल और मछुइनकी जगह महारानी बनना आदि सभी घटनाओंको बड़े स्वाभाविकरूपमें चित्रित किया गया है। मछुइन-रानीके दरबार और उसकी कौड़ियोंका ऐसा खाका खींचा गया है कि लड़के भी अपनी हँसीको रोक नहीं सकते थे।

ऐसे ही कितने दूसरे पशु-पक्षियोंकी कहानियोंके भी फ़िल्म तैयार किये गये हैं, जिनसे मनोरंजन ही नहीं, लड़कोंके ज्ञानकी भी वृद्धि होती है।

इतिहासके ज्ञानकेलिए बड़े सुन्दर प्रयोग हुये हैं। 'लेनिनग्राद्'के पहले दृश्यमें १५ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वीकी अवस्था दिखलाई गई है। कैसे लाल धधकती गोल धरतीके ऊपर ताजी पपड़ी पड़ी। पपड़ियोंके बीचमें जहाँ-तहाँ लाल आग दिखलाई पड़ रही है। दहकता तरल पदार्थ बीच-बीचसे ऊपर फिंक जाता है; और वह धीरे-धीरे ठन्डा होने लगता है। वह दहकती हुई धरतीकी लौर दूर तक आसमानमें फैल रही है। गर्म बादल उसपर बूँदें डालते हैं। उस नवीन ग्रहके चारों ओर आँधियाँ दौड़ रही हैं। पृथ्वी थर्राती है। धीरे-धीरे ऊपरकी लाली छिप जाती है। घन बादल भी जहाँ-तहाँ फट जाते हैं और सूरजकी किरणें धरातल तक पहुँचने लगती हैं। पृथ्वीपर प्रथम दिन होता है। लेकिन अभी वहाँ किसी प्राणधारीका पता नहीं।

दूसरे दृश्यमें भिन्न-भिन्न भूगर्भ युगोंको दिखलाया जाता है। कैसे पपड़ियों-की सिकुड़नमें पानी जमा हुआ। कैसे धीरे-धीरे उसकी भाप कम होने लगी और कैसे ताप-मानके गिरनेके अनुसार केंचुए जैसे जानवरों और क्रमशः बड़े-बड़े विशालकाय जीवधारियोंका प्रादुर्भाव हुआ।

फिर कैसे उन जीवोंकी पैदायश हुई जो धरती और जल—दोनोंमें रहते हैं। उन वनस्पतियोंको भी दिखलाया गया है जो उस अवस्थामें रह सकते थे। मछलियाँ जल-थल-वासिनी हुईं। फिर वृक्ष भी समुद्रके सूखे किनारोंपर उगने लगे और अपने भीतरसे आक्सिजन निकालकर हवामें फैलाने लगे।

चौथे दृश्यमें दिखाया गया है कि कैसे बड़ी-बड़ी दलदल पृथ्वीमें पैदा हुईं। पानीमें झुंडकी झुंड मछलियाँ और पनिहे साँप दौड़ने लगे। अभी तक चिड़ियाँ नहीं उत्पन्न हो पाई थीं और न फूलोंका अब तक प्रादुर्भाव आ था। करोड़ों महाकाय वृक्ष टूट-फूटकर गिरने लगे और पानीके भीतर नरम काली राख जैसे कोयलेका रूप धारण करने लगीं और करोड़ों वर्षों बाद यही चलकर कोयले बने।

फिर ५ लाख वर्ष पहलेका दृश्य सामने आया। हिमयुग सारे उत्तरी भूमण्डलको विशाल हिमराशिसे ढककर सर्द करने लगा। आज जिस जगह पानी कभी नहीं जमता, वहाँ भी निरन्तर हजारों वर्षों तक बर्फ पड़ी रही। धीरे-धीरे हिमयुगकी कड़ाई दूर होने लगी। बर्फ पिघलने लगा और हिमानियाँ (ग्लेसियर) उत्तरकी ओर हटने लगीं। अब नये वृक्ष जो आज भी सिबेरिया-के तुन्द्रामें मिलते हैं; प्रकट होने लगे। बड़े-बड़े बालोंवाले महागज (मम्मथ) और उत्तरी भैंड़ जहाँ तहाँ घूमने लगे। उसके बाद हमारे बाप-दादा प्रस्तरयुगके मनुष्य अपने अनगढ़ पत्थरके हथियारोंसे रीछोंको गुफाओंसे भगाने लगे। और उन गुफाओंको अपने घरके रूपमें परिणत कर दिया।

फिर ७ हजार वर्ष पहलेके लेनिनग्रादका दृश्य दिखलाया गया। उस वक्त नेवा नदीके मुँहपर इतने अधिक द्वीप न थे। नेवा उस वक्त लदोगा भील और फिनलैंडकी खाड़ीको मिलाती थी। आजकल जिसे वसिलियेफ् द्वीप कहते हैं, वहाँ अजगर, मछली और भेड़ियाके सिरकी नक्काशीवाले कितने ही बजरे आते थे। ये यूनानी व्यापारियोंके पोत थे, जो सुदूर काला सागरसे आते थे। उन्हींपर स्कन्दनेवियाके नाविक भी देखे जाते हैं। यही वे नाविक थे, जिन्होंने कि नार्वेसे यूनान तकके रास्तेका पता लगाया।

इसके बाद आधुनिक समयके भौगोलिक और सामाजिक परिवर्तनोंको दिखलाया गया है।

समाचार देनेवाले बोलते फिल्म कितनी जल्द सोवियत्में तैयार कर दिए जाते हैं, यह इसीसे मालूम होगा कि १२ जनवरीको जो महासोवियत् (पार्लियामेंट)का प्रथम अधिवेशन हुआ, उसका फिल्म तीसरे दिन (१४ जनवरीको) दिखलाया जा रहा था। पूँजीवादी देशोंमें विज्ञानके हर एक आविष्कारको काममें लानेमें सबसे बड़ा बाधक होता है, नफ़ेका सवाल। पूँजीवादी पैसा तब लगायेगा जब वह देखेगा कि एकका सवा होगा। मनो-रंजन, ज्ञानवृद्धि, कलाकी उन्नति उसके सामने कोई चीज नहीं है। उसके सामने

सिर्फ़ एक सवाल है नफ़ा! पूँजीवादी सरकारें आँख मूँदकर रुपया ऐसे फ़िल्मोंपर सिर्फ़ इसलिए नहीं खर्च कर सकतीं कि उनसे ज्ञान और कलाका प्रसार होगा। वह जानती हैं कि ऐसे फ़िल्मोंपर खर्च करनेकेलिए रुपया नये टैक्सके लगानेमें मिलेगा। अधिकांश जनता गरीबीके कारण ऐसे टैक्सके बोझको सह नहीं सकती और पूँजीपति—जिनके पास कि रुपया है—पर टैक्स अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता; क्योंकि गवर्नमेंट तो उन्हींके हाथमें है। सेनामें बड़े-बड़े जेनरल उन्हींके बेटे-पोते हैं। सोवियत् भूमिकी परिस्थिति ही दूसरी है। वहाँ देखना होता है क्या फ़िल्म जिस कच्चे मालसे बनता है, वह काफ़ी परिमाणमें हमारे यहाँ मौजूद है? क्या वह यन्त्र हैं, जिनकी फ़िल्म बनाने और दिखानेके वक़्त जरूरत होगी, उनके बनानेमें काम आनेवाले कच्चे माल—लोहा, ताँबा, आल्मोनियम, निकल आदि—हमारे यहाँ मौजूद हैं? क्या हमारे यहाँ ऐसे यंत्रविद्याविशारद मौजूद हैं, जो इन कच्चे मालोंको फ़िल्म और यंत्रके रूपमें परिणत कर दें। क्या हमारे यहाँ ऐसे कलाकार पर्याप्त संख्या-में मौजूद हैं जो फिल्ममें आये पात्रोंके चरित्रको अच्छी तरहसे चित्रित कर सकें? या ऐसे कारीगर हैं, जो ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक और वर्तमान जगत्के प्राणियोंको ऐसे रूपमें चित्रित करें कि देखनेवालोंको वे वास्तविक मालूम पड़ें? यह स्पष्ट ही है कि जहाँ तक कच्चे मालका सवाल है, सोवियत् प्रजातंत्र उनके लिए सबसे अधिक धनी देश है। यंत्रविद्या-विशारद इंजीनियर और मेकेनिक उसके यहाँ दिनपर दिन बढ़ते जा रहे हैं। हर एक आदमीको नया काम मिलनेसे बेकारीकी समस्या हल होती है। काम करने वाले आदमीकी आव-श्यकताएँ कैसे पूर्ण होंगी, इसका जवाब सोवियत्-सरकारके पंचायती खेत और कपड़ा आदि पैदा करनेवाले कारखाने देंगे। सारांश यह कि सोवियत्-सरकारके सामने किसी उपयोगी काममें हाथ डालते वक़्त टैक्स बढ़ानेकी भयंकरता नहीं आती। यही वजह है कि सोवियत्-सरकार इन उपयोगी फ़िल्मोंपर इतना श्रम और सामग्री लगानेमें समर्थ है। सोवियत्में फ़िल्म उद्योगकी कितनी तेजीसे तरक्की हुई है, यह इसीसे मालूम होगा कि १९३२ ई०में जहाँ दो करोड़

५६ लाख ७६ हजार मीतर फ़िल्म बना था, वहाँ १९३५ ई०में ८ करोड़ ६३ लाख ८५ हजार मीतर* फ़िल्म तैयार हुआ।

५. सोवियत्-नाटक

सोवियत्-नाटक प्रायः चार प्रकार के होते हैं। बेलेत् (मूक नाटक), ओपेरा (पद्यमय नाटक), कंसर्ट (संगीत), ड्रामा (गद्य नाटक)। लाल क्रान्तिके पहले भी नाट्य, नृत्य और संगीतमें रूसी लोग बढ़े-चढ़े हुए थे। जारके पास अपार सम्पत्ति थी और रूसके ग्राण्ड-ड्यूक, पिंस, कौंट आदि भी जगद्विख्यात् धन-कुबेर थे। विषय-वासनाकी उत्तेजनामें नृत्य, संगीत और नाट्य अधिक सहायक हैं; इस ख़यालसे ये लोग खुले हाथों इनपर रुपया बहाते थे। आज भी लेनिनग्राद्की पुरानी नाट्यशालाओंको देखनेसे मालूम होता है कि इनके बनानेमें निर्माताओंने दिल खोलकर पैसा खर्च किया है।

जबसे बोलते फ़िल्मोंका प्रचार हुआ, तबसे पूँजीवादी देशोंकी नाट्य-शालाओंपर वज्र सा पड़ गया। फ़िल्मोंमें एक बारके अभिनयको हजारों जगह और हजारों बार दिखलाया जा सकता है। लोगोंको एक तो फ़िल्मके रूपमें वह अभिनय देखनेमें सस्ता पड़ता है। दूसरे हजारों फ़िल्मोंकेलिए एक अभिनयपर फ़िल्म-उत्पादक अभिनेताको मुँहमाँगा दाम भी दे सकता है। इस प्रकार वह बड़ेसे बड़े सितारोंके अभिनयको अपने फ़िल्ममें समाविष्ट कर सकता है। यह दूसरा कारण है। इससे फ़िल्म-दर्शकको उत्कृष्ट कोटि-के अभिनेताओं और गायकोंकी कलाको इतने सस्तेमें देखनेका मौक़ा मिलता है। फ़िल्मको दिखाते वक़्त न बाजा बजानेवालोंकी आवश्यकता, न नटों और नटियोंकी आवश्यकता, और न गायक, गायिकाओंकी आवश्यकता। इस प्रकार वह अपने दर्शकोंपर कमसे कम टिकट लगा सकता है। कमसे कम टिकट और अच्छा से अच्छा अभिनय जहाँ हो, उसे छोड़कर चौगुना, अठगुना दाम

---

* १ मीतर = ४० इंच अर्थात् ३ फ़ीट ४ इंच लम्बा।

है अपेक्षाकृत घटिया अभिनेताओंके अभिनयको देखना कौन पसन्द करेगा? पूँजीवादी देशोंमें बोलते फ़िल्मोंने लाखों मध्यम और निम्न श्रेणीके कलाकारोंको बेकार कर दिया। लन्दन, न्यूयार्क जैसे शहरोंमें जहाँ पहले सैकड़ों नाट्य-शालाएँ बराबर आबाद रहती थीं, अब दो-चार ही रह गईं। और यह उन्हीं धनियोंके प्रतापसे जिनके पास इतना पैसा है कि वह उसे आँख मूँदकर लुटा सकते हैं।

सोवियत्-प्रजातंत्रमें फ़िल्मके द्वारा नाट्यशालाको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। जिन लेनिन्ग्राद् और मास्को शहरोंमें पहले पचीसों नाट्यागार थे, वहाँ अब उनकी संख्या पचासों हो गई है। यही नहीं, जहाँ पहले बालकोंके-लिए अलग नाटकोंका प्रबन्ध नहीं था, वहाँ अब उनके लिए अलग कितनी ही शिशु-नाट्यशालाएँ स्थापित हुई हैं। पहले सभी नाट्यशालाएँ सोवियत् प्रजातंत्रके रूस प्रदेशमें और उसमें भी मास्को और पेत्रोग्राद् जैसे दो, तीन शहरों हीमें थीं। अब नाट्यशालाएँ सभी बड़े-बड़े शहरोंमें और एकसे अधिक संख्यामें स्थापित हो गईं। ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, किरगिज़स्तान, कज़ाकस्तान, याकूतिया, तातार आदि ऐसे प्रजातंत्रोंमें भी, जहाँ पहले न कोई रंगशाला थी, और न कोई नाटक साहित्य। क्रान्तिके बाद इन पिछले २० वर्षोंमें इन जातीय प्रजातंत्रोंकी रंगशालाएँ इतनी समुन्नत हुई हैं कि समय-समयपर होनेवाले अखिल-सोवित्-संघ-नाटक-सम्मेलनोंमें इन्होंने प्रशंसा-पत्र पाया है। और ताजिकिस्तानका रंगमंच तो सारे सोवियत् प्रजातंत्रमें ऊँचा माना जाने लगा है। १९१८से पहले ताजिक भाषा—जो फ़ारसी भाषाकी एक बोली है—में कोई नाटक लिखा न गया था। जिस नौजवानने अपनी भाषामें पहले-पहल नाटक लिखा, वह एक धर्मान्ध क़ातिल-की छुरीका शिकार हुआ। जो लड़की पहले-पहल रंगमंचपर आई। उसकी खबर जब गाँवमें उसके पिताको मालूम हुई, तो वह क्रोधसे पागल हो गया। उसने कहा—"एक मुसलमानकी लड़की—जिसकी अनगिनत पीढ़ियोंने किसी अजनबीके सामने मुँह तक न खोला—लोगोंके सामने इस तरह निर्लज्ज हो

मुँह खोलकर नाचे। उसने खुद रंगमंचपर कूदकर लड़कीके सीनेमें उस वक्त छुरा भोंक दिया, जब कि वह एक नाटकमें अभिनय कर रही थी। इन घटनाओंसे पता लगेगा, कि सोवियत्-प्रजातंत्रके कुछ भागोंमें नाट्यकलाको कितने और कैसे भयंकर रास्ते पार करने पड़े।

आज सोवियत्के नाट्यकलाकार बहुत ही सम्माननीय स्त्री-पुरुष हैं। मास्क्विन मास्कोका सबसे बड़ा अभिनेता सारे सोवियत् जगत्में प्रसिद्ध ही नहीं है; बल्कि वह अबकी बार सोवियत् पार्लियामेंटका मेंबर चुना गया है। उसीकी भाँति एक दो और अभिनेता और अभिनेत्रियाँ पार्लियामेंटकी सदस्य चुनी गई हैं। पूँजीवादी देशोंमें अच्छे अभिनेताओंकी कुछ कदर जरूर है, लेकिन वह सिर्फ अधिक मूल्य चुकानेके स्वरूपमें ही। और यदि स्त्री है, तो उसे तो रूपकी दूकान और खुला सौदा समझा जाता है। सोवियत्के नट और नटीके सामने क्रय-विक्रयका सवाल नहीं है। वह राजा, राजकुमार और कुछ रईसोंकेलिए अपनी कलाको नहीं प्रदर्शित कर रहा है। वह मनोरंजन करता है, अपने अपार जन-समूहका जो ऐसे अभिनेताको हमेशा श्रद्धा और सम्मानकी दृष्टिसे देखता है।

सिगान्स्की (रोमनी या जिप्सी), पोलिश, यहूदी तथा दूसरी अत्यन्त अल्पसंख्यक जातियोंके भी अपनी-अपनी भाषामें अथवा अपनी अपनी कलाके अनुसार अलग-अलग नाट्य-मंच हैं। सोवियत् नाट्य-मंच दुनियामें सबसे अधिक उन्नत है, इसे दुनिया भरके नाट्य-तत्त्वविद् और नाट्यकला-प्रेमी मानते हैं। एक और भी बात सोवियत् नाट्य-कलाके विषयमें स्मरणीय है। वहाँके नाट्यकलाकार मास्को, लेनिनग्राद् जैसे कुछ बड़े-बड़े शहरोंकी जनताके मनोरंजनमें ही अपना सारा समय नहीं गुजारते। गर्मियोंमें वे इन बड़े-बड़े शहरोंमें रहते हैं और जाड़ोंके ४-५ महीने कोल्खोजों और दीहातमें घूमते हैं। इस प्रकार साधारण ग्रामीण जनताको भी बड़े-बड़े कलाकारोंका अभिनय देखनेका मौका मिलता है। स्मरण रखिए, इन कलाकारोंमें कितने ऐसे स्त्री-पुरुष हैं, जो अपने अभिनय, नृत्य और संगीतकेलिए सारी दुनियामें ख्याति

पा चुके हैं। ये लोग मोटरोंपर अपने पर्दे, वाद्ययन्त्र, आदिके साथ रेलवे स्टेशनोंसे दूर-दूरके गाँवों तकमें पहुँचते हैं। यह इस बातका द्योतक है, कि सोवियत्-राष्ट्र उपभोग-सामग्रीकी भाँति अपने ज्ञान-विज्ञान और ललित-कला-को भी सभी नागरिकोंके उपभोगकी वस्तु बनाना चाहता है।

* * * * * *

सोवियत् फ़िल्मोंका टिकट दो रूबलसे तीन रूबल तक है और नाटकोंके टिकट १५, २०, २५ रूबलके होते हैं। लेनिनग्राद्में राष्ट्रीय ओपेरा-ओर-बैलेट-थियेटरमें मैं एक बैलेट देखने गया। समयसे सिर्फ़ ३ मिनट पीछे मैं पहुँचा था। मेरा टिकट २० रूबलका था। रेलवे टिकटकी तरह सिनेमा और नाटकके टिकटोंपर भी कुर्सीका नम्बर लिखा रहता है। मेरी कुर्सी रंगमंचके सामनेके अर्द्धवृत्ताकार चबूतरेपर थी। मैं ३ मिनट पीछे पहुँचा था। इसलिए उधरका रास्ता रुक गया था। मजबूरन् मुझे चबूतरेके तीन ओर अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्लेकी बैठकोंमेंसे सबसे ऊपरवालीपर जाना पड़ा। ख़ैरियत यह हुई थी, कि मैंने अपने टिकटका प्रबन्ध इन्तुरिस्त द्वारा करवाया था। नहीं तो टिकट खरीदने वालोंकी इतनी भीड़ थी कि उसका मिलना असम्भवसा था। पहले दृश्यके बाद अवकाश जब हुआ तो मुझे अपनी कुर्सीपर जानेका मौक़ा मिला। नाट्यशालाके निर्माणमें बड़ी सुरुचिका प्रदर्शन किया गया है। यह नाट्यगृह १८४०ई०के करीब बना था। रंगमंचके सामने कुछ नीची जगहमें ५०के क़रीब वादक अपने भिन्न-भिन्न प्रकारके वाद्योंको लेकर बैठते हैं। उसके बाद वह चढ़ा-उतार अर्द्धवृत्ताकार चबूतरा है। पहले और दूसरे दर्जेके दर्शकोंकी कुर्सियाँ हैं। तीसरे दर्जेकेलिए अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्लेकी बैठकें हैं। दो हजारसे ऊपर आदमी इस नाट्यशालामें बैठ सकते हैं। रंगमंचके सामने सुनहले रेशमी पर्दे और नाना प्रकारके बेल-बूटोंसे अलंकृत मंच हैं जिसपर किसी समय जार और जारीना बैठकर अभिनय देखा करते थे। आजकल कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा वहाँ पहुँच सकता है। मैंने समझा था कि नाटकोंका जब इतना अधिक टिकट

है, तो वहाँ दर्शकोंकी कमी जरूर होगी। लेकिन जब कभी मैं किसी नाट्यशालामें गया, हमेशा ही कुर्सियोंको भरी पाया।

बैलेट्का नाम था—स्मराल्दा। यह कह चुका हूँ कि बैलेट् कहते हैं, मूक-नाटकको। इसमें नृत्य होता है, लेकिन जिह्वाका काम संकेत और इशारेसे लिया जाता है और इसी संकेत और इशारेमें अभिनेताका कमाल देखा जाता है, किसी तरुणको प्राण-दंडकी आज्ञा होती है। वहाँ एक रोमनी (जिप्सी या नट)का गिरोह पहुँचा हुआ है। एक रोमनी तरुणी अपने नृत्यसे सारी राजसभाको मुग्ध कर लेती है। राजा प्रसन्न होकर वर देता है। तरुणी उसी तरुणको माँग लेती है। एक महन्त रोमनी युवतीके असाधारण सौन्दर्य और अनुपम कलानैपुण्यपर मुग्ध हो जाता है। तरुणी उसे पसन्द नहीं करती, वह उसी नये पति और रोमनियोंके गिरोहके साथ एक दूसरे राजदरबारमें पहुँचती है। एक तरफ़ राजा और रानी सिंहासनपर बैठे हैं। उनके सामने राजकन्या अपने पतिके साथ बैठी है। राजाके दाहिने अर्द्धवृत्तमें दरबारी लोग बैठे हैं। अनेक रोमनी तरुणियाँ एक हाथमें छोटी झालोंवाले चंगको लाल-पीले लटकते रूमालोंसे सजाकर बजाती अपना जातीय नृत्य दिखलाती हैं। रोमनी तरुणी अपने नृत्यमें कमाल करती है। हर एक तरहके कठिनसे कठिन नृत्योंको दिखलाते-दिखलाते थक जाती हैं, लेकिन उस सारी सभामें एक भी गुण-ग्राहक नहीं, कोई एक पैसा भी इनाम नहीं देता। सुन्दर तरुण फिर अपनी पत्नीको खड़ाकर नाचनेकेलिए बाध्य करता है। शायद अबकी बार किसीका दिल पसीज जाय और रोमनियोंको आज उपवास न करना पड़े। लेकिन कोई फल नहीं। इस प्रकार तीसरी चौथी बार भी। थककर मरणासन्न हो जानेपर भी तरुणी अपना नृत्य दिखलाती है। इसी बीच सभा बर्खास्त होती है। राजा-रानी एक तरफ़ जाते हैं। दरबारी खिसकने लगते हैं। राजकन्या कुछ आगे बढ़ती है, उस समय उसका पति ठमक जाता है। वह रोमनी तरुणीको अपनी चद्दर इनाम देता है और अपना प्रेम प्रकट करता है। दूसरे दृश्यमें राजकुमार रोमनी तरुणीको लेकर कहीं दूर जाकर एक मठमें पहुँचता है। वहाँ धर्मशालामें

ठहरता है। रोमनी तरुणीको नहीं मालूम था कि यह उसी महन्तका मठ है, जिसने उससे पहले छेड़खानीकी थी। महन्तने साथी तरुणको मार डाला और तरुणीसे प्रणय-भिक्षा माँगी। लेकिन उसने इन्कार कर दिया। इसपर राजकुमारके मारनेका दोष रोमनी तरुणीपर लगाया गया। महन्त और दूसरे कितने ही भलेमानुस साक्षी बने। तरुणीको प्राण-दंडकी सजा हुई।

बैलेटकी विशेषता है संकेतसे अभिप्राय प्रकट करना। इसमें कलाकारोंको कितनी सफलता हुई, इसकेलिए मैं ही प्रमाण हूँ। बिना किसीके बतलाये भी कथाके भावको मैं ख़ुद समझ गया था। बाचेस्लोवाने प्रधान पात्र रोमनी तरुणीका पार्ट लिया था और नृत्यमें उसने गजब किया था। सोवियत कलाकारोंके देखनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ कलाकारकेलिए सुन्दर होना आवश्यक चीज नहीं। कई अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंको तो सुन्दर क्या कुरूप भी कहा जा सकता है, लेकिन उससे उनकी सफलतामें कोई बाधा नहीं होती। बाचेस्लोवा कुरूप तो नहीं थी, लेकिन उसकी प्रशंसा उसके नृत्य और अभिनयमें थी। दूदीनिकाया और उलूनोवा दूसरी अभिनेत्रियाँ थीं, जिन्होंने दर्शकोंको अधिक प्रसन्न किया। नृत्य और भावव्यंजनके अतिरिक्त दूसरी विशेषता थी पर्देपर दृश्योंसे अंकनकी। जो चीज भी रङ्ग-मंचपर चित्रित की गई थी, ऐसे ढंगसे उसमें दृष्टिभ्रम उत्पन्न किया गया था, कि सभी चीजें वास्तविक ही नहीं मालूम होती थीं, बल्कि दर्शकको आश्चर्य होने लगता था कि इतने छोटेसे रङ्गमंचपर वह कैसे मीलों फैला आकाश, दुर्ग और प्रासाद खिड़कियों और दरवाजोंके साथ देख रहा है।

* * *   * * *

ओपेरा पद्यमय नाटकको कहते हैं। बैलेट रूसकी अपनी विशेषता है। उसका उद्भव और विकास रूसमें हुआ है। ओपेरा रूसकी कोई खास चीज नहीं है। यह यूरोपके अन्य देशोंमें भी खूब प्रचलित है। लेकिन कलाकेलिए जितना उत्साह, जितना स्वच्छन्द वातावरण सोवियत-प्रजातन्त्रमें है, उतना

और कहीं नहीं है। इसलिए इन पद्यमय नाटकोंने वहाँ बड़ी तरक्की की है। यहाँ मैं १९३७के ओपेरा पोतेम्किनका उदाहरण देता हूँ। १९०५ ई०में पहली बार रूसकी दलित जनताने जारके खिलाफ़ आवाज उठाई थी। जुल्मके मारे पिसी रहनेपर भी उसने अब तक न जबान खोली थी, न हाथ उठाया था। रूस-जापानके युद्धमें रूसकी हारसे जनताके दिलसे जारकी धाक कुछ कम हो चुकी थी; और अब अपने ऊपर होते हुए अत्याचारोंको वह मूक रहकर सहना नहीं चाहती थी। जहाँ उस वक़्त पीतरबुर्गमें मजदूरोंने खुले तौरसे अपना विरोध प्रदर्शित किया, और जारशाहीने बहुत निर्दयतापूर्वक तलवारके जोरसे उसे दबा दिया; वहाँ कालासागरके नौसैनिकोंने भी खुलेआम विद्रोह किया। यह पहला अवसर था, जब कि युद्ध-पोतने क्रान्तिकारियोंका साथ दिया हो। पोतेम्किन् उस जङ्गी जहाजका नाम था, जिसके नाविकोंने विद्रोहका झंडा ऊँचा किया। उस समय सारे साम्राज्यमें एक जबर्दस्त हलचल थी। किसानोंने जमींदारोंकी कचहरियाँ और हवेलियाँ जला दी थीं। कारखाने और रेलवेके मजदूरोंने हड़ताल कर दी थी। "पोतेम्किन्"के कर्त्ता ओलेस्चिस्की (उक्रइन् जातीय)ने अपनी रचनाके बारेमें लिखा है—'इस नाटकके निर्माणमें हमारा मतलब सिर्फ यही नहीं है कि उस युद्ध-पोतके नाविकोंकी वीरता—जो कि लाल क्रान्तिके पहलेके रिहर्सलके अद्भुत पृष्ठोंमेंसे एक थी—को पुनर्जागृत किया जाय, बल्कि उन घटनाओंको आजकी वर्तमान घटनाओंसे जोड़ना भी हमारा काम था। इस तरहका जीवित सम्बन्ध मौजूद था। हमने प्रयत्न किया कि उस सम्बन्धको पूर्णरूपमें दर्शकोंके सामने लाया जाय।'

क्रान्तिकारी नाविकोंका चित्रण ओपेराका सबसे अधिक सफल भाग है। मत्युशेंको क्रान्तिका प्रेमी एक जबर्दस्त वक्ता और साहसी है। वह जानता है कि कैसे उत्साहको बढ़ाया जा सकता है। बकुलेंचुक् एक जबर्दस्त नौकाशास्त्र नेता है। उसमें जहाँ एक वीर योद्धा और पटु संगठनकर्त्ताके गुण हैं, वहाँ वह मनुष्य-स्वभावसे भी पूरा परिचित है। नाटकमें इस क्रान्तिकारीका चित्र

बड़ी योग्यतासे चित्रित किया गया है। नौसैनिक कन्द्राको बड़ी कुशलताके साथ एक विश्वासपात्र खुले दिलवाले साथीके रूपमें नाटककारने चित्रित किया है। वकुलेंचुक्की मित्र ग्रुन्या युवतीको बड़े मनोहर रूप और औचित्यके साथ उपस्थित किया गया है। क्रान्तिविरोधी कप्तान और उसके साथियोंको स्वाभाविकताके साथ चित्रण करते हुए भी इस प्रकार उपस्थित किया गया है कि दर्शकोंकी नजरमें वह गिर जाते हैं। घटनाएँ दर्शकके दिलमें असफल क्रान्तिकारियोंके दिलमें सहानुभूति और सहयोगिताका भाव पैदा कर देती हैं। अपने वीर क्रान्तिकारी वकुलेंचुकके मरनेपर जब ओदेसाके मजदूर उससे सहानुभूति प्रकट करते हैं।—'साथियो, मुझे रोनेकेलिए मत समझाओ। क्या मैं नहीं जानती कि किसीको रोना नहीं चाहिए? यहाँ आँसूकी एक बूँद न होनी चाहिए।' ग्रुन्या इन शब्दोंमें रोते हुए गाती है। उसकी प्रतिध्वनि और शब्दोंमें अन्तर्हित भाव दर्शकके अन्तस्तल तक पहुँच जाता है। वह उनमें प्राण और शक्तिका संचार करती है। लोग क्रान्तिके नेताकी अर्थी बड़ी सजधजके साथ निकालते हैं। वे गाते चलते हैं—"खूनी लड़ाईमें निहत अपने सिपाहियोंको हम दफनाने जा रहे हैं।" इन शब्दों को सुनकर एक बड़ा-जनसन्दोह जमा होता है और वह जहाँ एक ओर जनताकी सहानुभूति शहीदोंकी ओर प्रदर्शित करता है, वहाँ शासकोंके प्रति घोर विरोध भी प्रकट करता है। कोई गाता है—'हर एक सबकेलिए और सब हर एककेलिए।'

पोतेम्किन्के सैनिकोंमें अशिक्षित असंस्कृत कहे जानेवाले मछुए ही अधिक हैं। नाटकमें उनकी बात, उनके गीत और उनके नृत्य अत्यन्त स्वाभाविक हैं।

पात्रोंके चित्रण करनेमें जन-कलाकार पिरोगोफ् क्रान्तिकारी नायक वकुलेंचुक्का पार्ट बड़े सुन्दर रूपसे अदा करता है। नाट्यकारके शब्दोंमें कैसे एक सिद्धहस्त अभिनेता अपने स्वरसे नवजीवन फूँक सकता है, कैसे वह अपनी भाव-भंगीसे नाट्यकारके अभिप्रायको कई गुना अधिक करके अभिव्यक्त कर सकता है, इसकेलिए पिरोगोफ्का अभिनय एक अच्छा उदाहरण है।

दविदोवाने ग्रुन्याका पार्ट लिया है। प्रेमीकी मृत्युके समय जिस तरह ग्रुन्याके मनोभावोंको संयत और सबलसे व्यक्त किया है, वह बड़े मार्केकी बात है।

पर्दोंकी चित्रकारीमें तो कमाल किया गया है। भारी युद्धपोतके दृश्यको रङ्गमंचपर लाना असंभव सी बात थी। लेकिन चित्रकारने इसमें बड़ी सफलता प्राप्त की है। छोटी सी रङ्गभूमिमें पोत, उसकी तोपें और उसके सैनिकोंको उसने ऐसे चित्रित किया है, कि देखनेसे मालूम नहीं होता कि कितने पात्र यहाँ सजीव हैं और कितने चित्रमय?

* * * * * *

"राष्ट्रीय-ओपेरा-और-बैलेट्-थियेटर" में हम एक दिन ओपेरा देखने गये। ओपेराका नाम था 'माजेपा'। कथानक था, एक छोटे सरदारकी कन्या एक तरुणको चाहती है। पिता भी उसीको पसन्द करता है, लेकिन एक शक्तिशाली सरदार माजेपा मरियाके सौन्दर्यपर मुग्ध है। पिताके आनाकानी करनेपर वह उसे जबर्दस्ती पकड़ ले जाता है। पिता एक किलेमें जंजीरसे बाँधकर बन्द कर दिया जाता है। माजेपा मरियाके साथ जबर्दस्ती विवाह करता है। मरियाके पिताको अब भी बड़ी रुकावट समझ उसे मार डालता है। वध्य-स्थानपर ले जानेके समयका दृश्य अत्यन्त करुणापूर्ण है।

मरिया भाग जाती है। पिताके मकानका बहुत सा हिस्सा गिर चुका है। लेकिन उसी टूटे-फूटे खंडहरमें वह आधी पगलीकी तरह रहती है। कितने ही दिनों बाद एक अँधेरी रातमें उसका प्रेमी वह तरुण खोजते हुए उसी खंडहरपर पहुँचता है। उसकी भग्नावस्थाको देखकर वह शोकोद्गार प्रकट करता है। इसी वक्त मरियाकी खबर पाकर माजेपा उसी खंडहरमें आता है। उसको देखकर युवककी आँखोंमें खून चढ़ आता है। वह जानता है—इस महलके स्वामीका प्राण लेने और उसे खंडहरके रूपमें परिणत करनेमें इसी दुष्टका हाथ है। वह द्वन्द्व-युद्धकेलिए ललकारता है। लेकिन माजेपा उसके लिए तैयार नहीं होता। युवक तलवार लेकर दौड़ता है और माजेपाके

तमंचेकी गोलीका शिकार होता है। पगली मरिया खंडहरके एक कोनेसे बाहर आती है। पहले उसकी नजर माजेपापर जाती है। माजेपा प्रेम प्रदर्शित करता है और अनुनय-विनय करके घर ले जाना चाहता है। मरियाका जवाब ऐसा होता है, जैसा कि कोई अर्द्ध विक्षिप्त व्यक्ति दे सकता है। वह स्वयं हर्ष और विषाद दोनों अवस्थाओंको पार कर चुकी है। लेकिन उसकी दशाको देखकर दर्शक उसकी सहानुभूतिमें विकल हो उठता है। मरियाके बालोंमें तिनके पड़े हुए हैं। उसके कपड़े जहाँ-तहाँ फट चुके हैं। उसकी आँखोंके नीचे काले दाग दिखाई पड़ते हैं। माजेपासे बात करते-करते जमीनपर पड़ी किसी चीजको वह देखती है। फिर आँखें फाड़कर गौरसे देखती है और अन्तमें अपने तरुण प्रेमी को पहचानती है। माजेपाको धिक्कारती है और तरुणके पास बैठ जाती है।

पर्देपर हर एक दृश्यको दिखानेमें चित्रकारने गजब ढाया है। गाँव और सरदारकी हवेली मानो मीलों तक फैली हुई है। मालूम होता था कि सैकड़ों आदमी (एक बार १५० आदमी तक गिने गये) एक पहाड़ीके पीछेसे सामने आते जा रहे हैं। रातके वक्त शून्य, निश्शब्द, गलियोंको बड़ी खूबीसे दिखलाया गया है। खंडहरके दिखलानेमें कितना भाग पर्देका है और कितना भाग ईंटे-चूने द्वारा रंगमंचपर बनाया गया है, इसका पता नहीं लगता था। अन्धकार और झुलमुल प्रकाशको इतनी बारीकीसे सम्मिश्रित किया गया था, कि बनावटी न होकर वह वास्तविक रातमें एक गाँवका दृश्य मालूम होता था।

"माजेपा" एक खास समय और एक खास प्रदेशमें घटित घटनाके आधार पर रचा गया है; और उसके हर एक दृश्यपर उस काल और प्रदेशकी स्पष्ट छाप दीख पड़ती है। माजेपा पोल-जातीय एक बड़ा सरदार था। मरियाका पिता उकइन्का एक छोटा सरदार था। उस समय बारूदके हथियारोंका प्रयोग हो चुका था; लेकिन अभी कारतूस नहीं आये थे। उकइन्के किसानका मुँह देखनेमें रोहतक या गुड़गाँवाँके किसी जाटके मुखकी तरह मालूम देता था।

दाढ़ी-शून्य वैसी ही बड़ी-बड़ी मूँछें, सिरके बाल सब मुँडे हुए, लेकिन सिरके बीचमें पतली चुटिया, उसी तरहका भोलाभाला किन्तु संयम और वीरताद्योतक मुख। वेशभूषामें भी उस समयका पूरी तौरसे ख़याल रखा गया था। सोवियत् नाटक और फ़िल्म, कला, ऐतिहासिक और भौगोलिक औचित्य आदि सभी दृष्टियोंसे क्यों इतने अच्छे होते हैं? कारण यह है कि उसकी हर एक बातको उन-उन विषयोंके विशेषज्ञ बड़ी बारीकीसे देखते हैं और आलोचना करते हैं। सबकी आलोचनाके अनुसार फिर कथानक, नृत्य, संगीत, और दृश्यमें हेर-फेर किया जाता है। और इस प्रकार उसमें सर्वांग-पूर्णता आती है।

* * * * * *

बैलेट्र और ओपेराकी तरह कन्सर्त (संगीत) और ड्रामामें भी सोवियत् ने बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। उसके प्रहसन गंभीरताके साथ-साथ सार्वजनीन होते हैं। सोवियत् रंगमंच हर एक अभिनयको किसी ऊँचे आदर्श, किसी विशेष सन्देशको लेकर दर्शकके सामने उपस्थित होता है। दर्शकोंमें जागृति और स्फूर्तिका संचार करना, अपने आदर्शकेलिए सर्वस्व त्यागकी भावना पैदा करना, आदर्शके विरोधियोंके प्रति रोष और घृणा पैदा करना, छोटे-बड़े दुर्गुणोंसे व्यक्तियोंका परिहास-पात्र बन जाना आदि आदि एक या अनेक अभिप्रायको लेकर सोवियत् नाट्यकार अपनी क़लम उठाता है। कला-कार अपनी कलाको सम्पादित करता है। चित्रकार अपनी तूलिका संचालित करता है। गायक अपने गानको प्रेरित करता है। 'कला कलाकेलिए' इन ढकोसलोंसे वहाँका कलाकार अपनी विडम्बना नहीं कराता।

* * * * * *

इवान् मास्कोविन् सोवियतका सबसे बड़ा अभिनेता था। अपनी कला-कुशलताके कारण उसे "जन-कलाकार"की अत्यन्त सन्मानित पदवी मिली है।

मास्को-कला-नाट्यशालाके इस ६३ वर्षके बूढ़े कलाकारकी संसारमें जितनी प्रसिद्धि है, उसे पानेमें उसको बहुत कठिन रास्तोंसे गुजरना पड़ा। मास्कोके एक गरीब घरमें १८७४में वह पैदा हुआ था। उसका पिता एक छोटा घड़ीसाज़ था। एक ओर आमदनी बहुत कम थी, दूसरी ओर उसके सिरपर ८ जनोंका बोझ था। इन्हींमें मास्कोविन्का छोटा भाई तथा स०स०स०र० जन-कलाकार तर्खानोफ् भी था। दोनोंने स्कूलकी साधारण शिक्षा पाई। आगे मास्कोविन् कला-विद्यालयमें पढ़ना चाहता था, लेकिन उसके लिए १०० रूबल वार्षिक फ़ीस देनी पड़ती थी; जो उसके गरीब परिवारकी शक्तिसे बाहरकी चीज थी। अन्तमें मास्कोविन्को नगरके स्कूलमें भेजा गया। वहाँ १० रूबल वार्षिक फ़ीस देनी पड़ती थी। घर और भी आर्थिक कठिनाईमें पड़ा हुआ था, इस-लिए मास्कोविन्की माँको अपने वान्या (इवान्)के साथ एक भंडारमें नौकरी करनी पड़ी। माँको ५० रूबल मासिक मिलते थे, और वान्या वस्तुएमें था। वान्याके धर्मपिता (ईसाई धर्मके अनुसार नामकरणके वक्त बना पिता) पचास वर्षका एक कमकर भी वहीं काम करता था। वान्याको रात-दिन वहीं जेलका जीवन बिताना पड़ता था। रातको एक बदबूदार चहबच्चेमें चटाईपर वह सो जाता था। सिर्फ एतवारको घर जानेकेलिए दो घंटेकी छुट्टी होती थी। सबेरे दूकानका दरवाजा खुलता। ६ बजे (जाड़ोंमें वहाँ ६बजे सूर्योदय होता है) तड़के दूकानके सभी नौकर कतार बाँधकर मालिकको सलामी देनेकेलिए खड़े हो जाते। वान्या भी उनमें एक होता। जरा-जरा से कसूरमें लड़कोंको पीट देना मामूली बात थी। कुछ दिन काम करनेके बाद वान्याको १० कोपेक् प्रतिदिन (३ रूबल प्रति मास) मिलने लगे। फिर वह लोहेकी फौंडरी (ढलाई) में २५ रूबल वार्षिकपर नौकर हुआ। यहाँ उसे ५ बजे सुबहसे ७ बजे रात तक (१४ घंटा) काम करना पड़ता। एक साल वह वहीं रहा। भंडारमें रहते वक्त उसे नाटक खेलनेका शौक हो गया था। एकाध बार उसके जौहरको किसी समझनेवाले आदमीने देखा। उसने मास्कोविन्के धर्मपितासे कहा और उसने १५० रूबल देकर नाट्य स्कूलमें उसे भर्ती करा दिया। माली

थियेटर—जो कि पहले राज्य-थियेटर था—की प्रवेश-परीक्षामें वह असफल रहा। लोगोंने उसे बहुत निरुत्साहित किया, तो भी वह एक प्राइवेटनाट्य-स्कूलमें दाखिल हो गया। डेढ़ वर्षकी शिक्षाके बाद अपनी कक्षामें वह अपनी योग्यताका सिक्का जमानेमें कामयाब हुआ। दूसरे वर्ष जब नाटक-मंडली रूसके और नगरोंमें भ्रमण करनेकेलिए गई, तो मास्कोविन्‌को भी साथ चलनेका हुक्म हुआ। उस वक्त उसे अपनी योग्यता दिखलानेका पूरा मौका मिला। स्कूलकी शिक्षा समाप्त करनेके बाद वह मास्को-कला-नाट्यशालामें चला आया; और तबसे आज तक उसी नाट्यशालाका प्रधान अभिनेता है। मास्कोविन् जारके जमानेमें ही एक सफल और प्रसिद्ध अभिनेता हो चुका था। शाही दरबार, राजाओं और सेठोंमें उसकी क़दर थी। क्रान्तिके बाद जिस तरह शासन दूसरी श्रेणीके हाथमें चला गया, उसी तरह नाट्यशालाओंके दर्शकोंमें भी परिवर्तन हुआ। कहाँ राजा-महाराजा दर्शक-मंचकी शोभा बढ़ाते थे और कहाँ मैले कुचैले पत्थर जैसे कड़े हाथोंवाले मजदूर उन्हीं मंचोंपर बेपरवाईसे बैठने लगे। मास्कोविन् देशसे भागा नहीं लेकिन तब भी आरम्भिक वर्षोंमें वह भौंचक सा हो गया था। वह समझ नहीं सकता था, कि ये अशिक्षित और रूखे लोग उसकी कलाकी क्या दाद देंगे। लेकिन उसने देखा कि क्रान्तिने अपनी कलाको विकसित करनेकेलिए उसे और भी अधिक मौक़ा दिया है। जहाँ पहलेवाले मालिक हमेशा गुलामोंकी तरह उससे खुशामदकी आशा रखते थे, दिलमें उसकी नीच-कुलीनता आदिके प्रति घृणा करते थे, वहाँ आजके मालिक श्रमिक उसे बिलकुल बराबर समझते हैं। यही नहीं, बल्कि छोटा बनकर खुशामद करनेको वहाँ घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। मास्कोविन्‌ने परिस्थितिकी अनुकूलताको समझ लिया और उसने अपनी कलाको सोवियत्-नवनिर्माणका एक भाग बना दिया। आज वह सोवियत्‌का अत्यन्त सम्माननीय अभिनेता है। मास्को-आर्ट-थियेटर और मास्कोविन् नाट्यजगतमें एक समझे जाते हैं। अबकी बार इवान् मास्कोविन् पार्लियामेंटका मेंबर चुना गया है।

६. सोवियत्-संग्रहालय

विज्ञानके बहुतसे आविष्कार कितने ही मुल्कोंमें तमाशाकी चीजें हैं। हिन्दुस्तानमें भी युनिवर्सिटी कालेजोंमें साइंस (रसायन और भौतिकी), कृषि-कालेजोंमें कृषि-विज्ञान और इम्पीरियल एग्रिकल्चरल् इंस्टीट्यूट जैसी संस्थाओंमें कृषि और पशुपालन-सम्बन्धी अन्वेषण इसी तरहके तमाशे हैं। इन वैज्ञानिक आविष्कारोंके प्रयोगसे तो देशकी दरिद्रता कबकी दूर हो जानी चाहिए थी, लेकिन उनका परिणाम क्या देखा जाता है? यही कि कृषि और उद्योगके नामपर मोटी-मोटी तनख्वाह देकर कुछ रिसर्च-स्कालर, कुछ प्रोफ़ेसर, कुछ डाइरेक्टर और डिप्टी डाइरेक्टर बनाकर बैठा दिये गये। उनको बँधी हुई तनख्वाह मिलने लगी। जिन्दगीकी तरफसे उन्हें बेफ़िक्री हुई। डिपार्टमेंटको रोजका काम दिखलाना जरूरी है और उसकेलिए मुफ़्तकी कागज-स्याही मिल ही रही है, इसलिए अपने दौरेका स्थान और मील गिना दिये। प्रयोगशालामें जो दो-चार कीड़े-मकोड़े या मेंढक मारे उनको भर दिया। दो-चार सुझाव रख दिये और यह जानते हुए कि हिन्दुस्तानमें इनपर कभी अमल नहीं होगा। बस, कृषिकी उन्नति, गो-जाति का विकास कागजपर हो गया और उनका काम खतम। इस कहनेका मतलब यह नहीं कि विज्ञान झूठा है, वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता बिल्कुल निकम्मे हैं। बल्कि असली दोष है, उन चीजोंका उपयोग न होना। हमारे दैनिक कार्यमें जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बाधाएँ हैं, उनको दूर करनेसे सभी डरते हैं।

सोवियत् भूमिमें विज्ञान मनुष्यकेलिए इसी पृथ्वीपर स्वर्ग बनानेका काम कर रहा है; और इसी दृष्टिसे हर चीजका मूल्य वहाँ आँका जाता है।

दुनियामें किसी देशमें इतनी संख्यामें संग्रहालय (म्यूजियम) नहीं हैं, जितने कि सोवियत्-भूमिमें। ऐतिहासिक, चित्रकला, नाटक, संगीत, साहित्य, विज्ञान आदिके सम्बन्धके अलग-अलग म्यूजियम सैकड़ों नहीं, हजारोंकी तादादमें हैं। कोई शहर ऐसा नहीं, कोई जिला या प्रान्त ऐसा

नहीं जिसमें स्थानीय म्यूजियम न हो। और विशेष बात यह है कि वहाँके म्यूजियमोंमें लोग इतवारके दो घंटे काटनेकेलिए नहीं जाया करते! जिस विषयके भी म्यूजियममें जाना हो, आपको उस विषयका जानकार पथ-प्रदर्शक मिलेगा और वह हर एक चीजको खूब अच्छी तरह समझाकर आपको बतलायेगा। इस प्रकार वहाँसे आप कुछ सीखकर आयँगे। म्यूजियमों-का कितना अधिक प्रचार है, और गवर्नमेंटका ध्यान उस ओर कितना है, इसे आप मास्कोके म्यूजियमोंकी इस सूचीसे जान सकते हैं—

१. इतिहास-सम्बन्धी

(१) केन्द्रीय लेनिन्-म्यूजियम
(२) क्रान्ति-म्यूजियम
(३) जेलोंमें बन्द और विदेशोंमें निर्वासित बोल्शेविक-म्यूजियम
(४) खुफ़िया क्रान्तिकारी छापाखानोंका म्यूजियम
(५) क्रास्नाया प्रेस्न्या जिलेका क्रान्ति-इतिहास-म्यूजियम
(६) लाल-सेना केन्द्रीय म्यूजियम
(७) सरकारी इतिहास म्यूजियम, (इसकी शाखायें भी हैं)
(८) भूतपूर्व नवोदेवीची साधुनी-मठ-म्यूजियम
(९) भूतपूर्व पोक्रोव्स्की गिर्जा-म्यूजियम
(१०) सत्रहवीं सदीके सामन्तोंके जीवनका म्यूजियम
(११) स०स०स०र० की जातियोंका म्यूजियम
(१२) धर्म-विरोधी केन्द्रीय म्यूजियम

२. ललित-कला—

(१३) त्रेत्याकोफ़ राजकीय चित्रशाला
(१४) आधुनिक पश्चिमी कला का म्यूजियम
(१५) पुश्किन ललित-कला राजकीय म्यूजियम

(१६) वस्नेत्सोफ़ चित्र प्रदर्शिनी
(१७) गोलुकिना तक्षणकला म्यूजियम और स्टूडियो
(१८) पूर्वी सभ्यताओंका म्यूजियम
(१९) अखिल-संघ व स्तु-शास्त्री एकेडेमीका म्यूजियम

३. नाटक और संगीत

(२०) बख़्रुशिन् नाटकीय केन्द्रीय म्यूजियम
(२१) गोर्की मास्को कला नाटक म्यूजियम
(२२) स्क्रापिन् म्यूजियम

४. साहित्य—

(२३) राजकीय साहित्य म्यूजियम
(२४) दोस्तोयेव्स्की म्यूजियम
(२५) राजकीय ताल्स्तवा म्यूजियम
(२६) ल्यू ताल्स्तवा प्रासाद म्यूजियम
(२७) मायाकोव्स्की म्यूजियम और पुस्तकालय वाचनालय

५. प्रकृति-विज्ञान—

(२८) प्लेनोटोरियम् (नक्षत्र-भवन)
(२९) राजकीय डार्विनीय म्यूजियम
(३०) तिमिर्याजेफ़् बायोलोजी (जीवनशास्त्र) म्यूजियम
(३१) राजकीय केन्द्रीय प्राणिशास्त्र म्यूजियम
(३२) राजकीय मानवशास्त्र म्यूजियम

६. शिक्षा—

(३३) राजकीय शिशु पुस्तक म्यूजियम
(३४) शिशु रेखांकन (ड्राइंग) की स्थायी प्रदर्शिनी

७. शिशु और प्रसूता की सुरक्षा—

(३५) शिशु और प्रसूताकी सुरक्षाके केन्द्रीय अन्वेषणालयकी प्रदर्शिनी

८. समाजवादी अर्थशास्त्र और टेक्नोलोजी (यंत्रशास्त्र)

(३६) राजकीय पोलीटेक्निक् (नाना यंत्र) म्यूज़ियम

(३७) सोवियत् निर्यात केन्द्रीय म्यूज़ियम

(३८) भवन-निर्माण उद्योगकी अखिल-संघ प्रदर्शिनी

(३९) नगर म्यूज़ियम

(४०) कला दस्तकारी म्यूज़ियम

(४१) फ़ौजी विमान-संचालन-म्यूज़ियम

(४२) घोड़ेकी नसल सम्बन्धी म्यूज़ियम

* * *   * * *

पोलीटेक्निक म्यूज़ियम—१९३७में इस म्यूज़ियममें १० लाख आदमी देखने गये। यहाँके चार्ट, मॉडल (नमूने) और संग्रहोंकी संख्या १० हज़ार है। और सबसे बड़ी विशेषता इस म्यूज़ियममें यह है, कि सारे सोवियत्-के नगरों और ग्रामोंमें, साम्यवादी नवनिर्माणने जिन उद्योगोंकी वृद्धि और पंचायती खेतियों और मशीनोंके प्रयोगसे युगान्तर स्थापित कर दिया है, उन सबको आप इस म्यूज़ियममें देख सकते हैं।

कहनेको तो यह म्यूज़ियम १८७२ ई०में खोला गया था, लेकिन उस समयके म्यूज़ियम और आजके म्यूज़ियममें ज़मीन आसमानका अन्तर है। उस वक्त यह ज़ारशाहीके प्रति भय और सन्मानके प्रचारका साधन समझा गया था। प्रदर्शित वस्तुओंमें महान् पीतर तथा तत्कालीन ज़ारके पैरोंके नापके दो जोड़े जूते बड़े अभिमानके साथ दिखाये गये थे। थोड़ेसे कपड़े, कुछ ईसाई धर्म-सम्बन्धी पताकाएँ और चित्र थे। १८७२में १८२८ आदमी म्यूज़ियम देखने आये थे।

आजकल यह म्यूज़ियम प्रदर्शनीय चीज़ोंको ही नहीं दिखाता बल्कि उसके झलकानेवाले नमूने, तस्वीरें, नक़्शे, पंचवार्षिक योजनाओंमें स्थापित उद्योगोंका जन्म और विकास बतलाते हैं। साथ ही यह म्यूज़ियम अपने वैज्ञानिकोंकी सहायतासे देशमें बड़े विस्तारके साथ वैज्ञानिक और यंत्र-सम्बन्धी खोजका काम करता है। १९३७में म्यूज़ियमपर ४० लाख रूबल खर्च हुआ था, जिसमें १२ लाख वैज्ञानिक अन्वेषणपर।

पथप्रदर्शक पहले दर्शकको जिस कमरेमें ले जाता है, उसके बीचोबीच एक धातुस्तंभपर भावपूर्ण दो तरुण स्त्री-पुरुष मूर्ति हैं। पुरुषके हाथमें हथौड़ा और स्त्रीके हाथमें हँसुआ। अपने एक हाथको ऊपर उठाकर उन्होंने मिला लिया है। और हँसुए-हथौड़े वाले हाथ ऊपर आसमानमें फैले हुए हैं। उनके सारे शरीर, मुख-मुद्रासे उत्साह और शक्तिका परिचय मिलता है। हँसुआ खेतीको सूचित करता है और हथौड़ा उद्योगको। कमकर और किसानके मेलने सोवियत्-शासनका निर्माण किया है; उसी भावको इस मूर्तिमें दिखाया गया है। दीवारके ऊपर सोवियत् भूमिका एक बहुत विशाल नक़्शा है। पथ-प्रदर्शक (अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच जाननेवाले भी मौजूद हैं), आपका ध्यान नक़्शेकी ओर आकर्षित करता है। फिर बिजलीके स्विच्को दबाता है। नक़्शेपर कई जगह रोशनी हो जाती है। रोशनीमें कोई लाल है, कोई पीली, कोई दूसरे रंगकी है। पथ-प्रदर्शक बतलाता है—देखिए, क्रान्तिसे पहले इन्हीं थोड़ी सी जगहोंमें—जो कि यूरोपके थोड़ेसे ही हिस्सेमें हैं—लोहे-कोयलेके कारख़ाने बिजलीके स्टेशन आदि थे। फिर वह दूसरी स्विच् दबाता है और बतलाता है—क्रान्तिके बाद गृहयुद्धके फलस्वरूप इन कारख़ानोंमें भी बहुतसे बेकार हो गये थे। कैसे साम्यवादियों-ने लेनिन्के नेतृत्वमें पुनर्निर्माणका काम आरम्भ किया। कैसे अभी वह पुनर्निर्माणके काममें थोड़ी ही दूर अग्रसर हो पाये थे और लेनिन्की योजना—सारे देशमें बिजलीका सार्वजनिक प्रचार—अभी कागज़से धरतीपर पहुँची ही थी कि १९२४में उनका देहान्त हो गया। फिर स्विच् दबाकर

कुछ नये आलोकोंसे आलोकित स्थानको दिखलाते हुए वह बतलाता है—स्तालिनके नेतृत्वमें सोवियत्-संघने पुनर्निर्माणका काम १९२७में खतम कर दिया। सभी उद्योगोंमें देश उस समय उस अवस्थामें पहुँच गया, जिसमें कि वह १९१३में था।

अब उसका स्विच् दबाना आपके ऊपर जादूकी तरह असर करने लगेगा। जहाँ पहले इस बड़े चित्रपटका एक छोटा सा कोना, वह भी कमजोर टिमटिमाते बल्बों (विद्युत-प्रदीपों)से आलोकित हो रहा था, वहाँ अब तेज रोशनीवाले बल्ब बहुत दूर तक फैले आपको मिलेंगे। उसमें आपको मग्नीतोगोर्स्कके विशाल लोहेके कारखानेका पता लगेगा। आप स्तालिन्ग्राद्के भारी ट्रैक्टरके कारखानेको देखेंगे। नई-नई कपड़ेकी मिलों, तेलकी खानों तथा दूसरी चीजोंको पायेंगे। हाँ, आपको यह ध्यान रखना होगा कि लाल बल्ब बहुमूल्य पत्थरों (माणिक, पुखराज आदि)को सूचित करते हैं। पीले बल्ब सोनेको। इसी तरह दूसरे रंग दूसरी चीजोंको सूचित करते हैं।

प्रथम पंचवार्षिक योजनामें आप देखेंगे कि प्रकाश दूर तकमें प्रकट हुआ हैं; लेकिन अब भी उसका अधिकांश भाग सोवियत्के यूरोपीय भागमें है। अब द्वितीय पंचवार्षिक योजनाकी स्विच् दबाई गई। आलोक-क्षेत्र और भी बढ़ गया। अब सुदूर सिबेरिया ही नहीं, प्रशान्त महासागरके उदरमें अवस्थित सखालिन् और उत्तरी अमेरिकाके पड़ोसी कम्चत्स्कामें भी दीप दिखलाई दे रहे हैं। पथ-प्रदर्शक प्रथम पंचवार्षिकसे द्वितीय पंचवार्षिकके भेदको दिखलानेकेलिए जल्दी-जल्दी दोनों स्विचोंको बारी-बारीसे बुझायेगा और जलायेगा। अब बिना उसके कहे आप समझ सकते हैं कि सोवियत्का उद्योग-धंधा प्रथम पंचवार्षिकसे द्वितीय पंचवार्षिकमें कितनी दूर तक फैल गया। द्वितीय पंचवार्षिकमें उद्योग, मध्य-एशियामें हिन्दुस्तानकी सीमाके २५ मील पास तक आ जाता है। अगर दर्शक भारतीय है तो बड़ी उत्सुकतासे पामीरके ऊपर चमकते उन चिरागोंको देखेगा और एक ठंडी साँस लिए बिना नहीं रहेगा।

इसके बाद पथ-प्रदर्शक अन्तिम स्विच दबायेगा। अब जो प्रकाश-पुंज हर जगहके चमकते बल्बोंसे आपके ऊपर पड़ेगा, उससे आपकी आँखें चौंधिया जायेंगी। देखेंगे, प्रशान्त महासागरसे बालतिक् सागर तक ध्रुवकक्षीय महा-समुद्रसे पामीरके शिखर तक अगणित रंग-बिरंगे बल्ब जल रहे हैं।*

इस एक नक्शेके देखनेसे सोवियत् शासनने देशकेलिए क्या किया, इसे आप समझ जायँगे। लेकिन अभी तो सोवियत्की आर्थिक उन्नतिका और भी सजीव उदाहरण, हाँ, सचमुच सजीव उदाहरण आपके सामने आनेवाला है। आप एक जगह जीती जागती गाय देखेंगे। एक छोटी सी कोठरी है। दरवाजेपर काँच लगा है। उसके पीछे गाय खड़ी है। सामने चारा भी पड़ा हुआ है। आप देखते ही चौंक पड़ेंगे। ख़याल होगा हम तो म्यूजियम देखने आये थे, यह खिड़कीके पीछे हजार गायोंका रेवड़ और हरा-भरा चरागाह जाड़ेके दिनोंमें कहाँसे चला आया। ख़ैर, आपको यह समझनेमें दिक़्क़त नहीं होगी कि सजीव गाय यही आपके पासवाली है, क्योंकि यही कान हिला रही है और पूँछ चला रही है; बाक़ी ९९९ चुपचाप निर्जीव खड़ी हैं।

यहाँ चित्रकारकी तूलिकाने वह कमाल किया है कि आपका दिमाग़ भ्रममें पड़ गया। जितनी ही चीज़ें दूर, दूरतर, होती जाती हैं, उतना ही उनका आकार छोटा होता जाता है। इसी दूरीके कारण आकारकी तारतम्यताको लेकर चित्रकारने इस चित्रको नाना रंगोंसे चित्रित किया है। जब आप सेबके कमरे-में जायँगे, तो वहाँ भी यही भ्रम आपके दिलमें उत्पन्न होगा। सामनेके दो सच्चे सेबके दरख़्तोंको देखकर आप सारी तसवीरको सच्चा बाग़ समझ जायँगे। लेकिन यह म्यूजियम चतुर चित्रकार या कुशल फोटोग्राफ़रकी कलाको प्रद-र्शित करनेकेलिए नहीं बना है, उसकेलिए तो दूसरी जगहें हैं। यहाँ यह दिखलाना है कि अमुक सरकारी बाग़में जो इतने हजार एकड़का है, उसमें सेबके दरख़्त कैसे लगे हैं। किस तरहके फल होते हैं। कैसे फलोंको तोड़ते हैं। कीड़ा लगनेपर कैसे दवाईका फुहारा छोड़ते हैं आदि।

यहाँ पानीसे बिजली पैदा करनेवाले नये-नये कारखानोंकी कलोंके छोटे-छोटे नमूने हैं। ये नमूने जड़ निर्जीव नहीं हैं। पथ-प्रदर्शक स्विच् दबाता है, और द्नीयेपर्की सबसे बड़ी टर्बाइन ज़ोरसे चलने लगती है। आपको बतलाया जायगा कि सोवियत्‌में १९१३से १९३७में २०गुनी बिजली पैदा हुई।

यहाँ आपको कुइबिशेफ़्‌का वोल्गाके ऊपर बँधता महान् बंध दिखलाई पड़ेगा। वह १३५० करोड़ किलोवाट घंटा बिजली देगा। अर्थात् १९३२में सारे सोवियत्‌में जितनी बिजली पैदा होती थी उतनी यह अकेला स्टेशन देगा। और यह बंध और उसके साथ खोदी जाती नहरें सूखी पथरीली जमीनको हरी-भरी कर देंगी।

बिजली पैदा करनेकी एक दूसरी टर्बाइन (चक्का)का माडल आप देखेंगे। इसकी ताक़त है १ लाख किलोवाट और सोवियत्‌के कारखाने एलेक्त्रो-सिलामें बनी है। साथ ही खारकोफ़्‌में बननेवाले २५ हजारसे ५० हजार और १ लाख किलोवाट् ताक़तके और भी जेनेरेटर (विद्युत्-उत्पादक) आपके देखनेमें आयेंगे। ज़ारशाही रूसने ढाई हजार किलोवाट्‌से अधिक ताक़तका जेनेरेटर कभी नहीं बना पाया। कुइबिशेफ़्‌का बिजलीका कारखाना कैसे-कैसे बल्बोंको बनाता है, उसके बहुतसे नमूने यहाँ देखनेको मिलेंगे। उनमें पतली फाउंटेन-पेनमें छिप जानेवाले बल्बसे लेकर ५००० वाटकी ताक़तवाले प्रचंड बल्ब—जिससे कि क्रेमलिन्‌के दोनों लाल तारे रातको आलोकित किये जाते हैं—दीख पड़ेंगे।

एक दूसरा हाल है जिसमें लोहा, फौलाद, ताँबा और दूसरी धातुओंको दिखलाया गया है। यहाँ खुद माल ढोने, गिराने, पिघलाकर निकालनेवाले माग्नितगोर्स्कके एक धौंकू भट्ठेका नमूना है। दूसरा नमूना है, पत्थरको पीसकर सोना निकालनेवाली मशीनका। और भी कितनी ही तरहके माडल आपको यहाँ मिलेंगे। एक कमरेमें श्रमकी उपज कैसे बढ़ाई जा रही है, इसे प्रदर्शित किया गया है। सौ वर्ष पहले कोयला कैसे हाथसे काटकर निकाला जाता था। ३० वर्ष पहले भी ज़ारशाही कोनिनर। दर्शनके बारेमें कितनी दरिद्र थी।

क्रान्तिके बाद और विशेषकर पिछले १०-१२ सालोंमें कैसे सूमा और खंतीकी जगह बिजलीसे चलनेवाले बर्मोंने लिया और फिर १९३५में वह पतलेसे शरीर-वाला तरुण—जिसके नामसे आज सोवियत्का बच्चा बच्चा परिचित है, यानी स्तखानोफ़्—के दिमागमें बात समाई और उसने चार साथियोंकी मददसे कोयला काटने और थूनी लगानेके कामको बाँट दिया। स्तखानोफ़् और उसके साथियोंकी छोटी-छोटी मूर्तियाँ यहाँ कोयलेके स्तरमें अपनी योजना चलाती हुई दिखलाई गई हैं। एक कमरेमें ट्रैक्टर और कम्बाइन् दिखलाये गये हैं। सबसे नये माडलका ढोलाकार (कटरपिलर) ट्रैक्टर भी रखा हुआ है। इसमें ईंधनकी भी किफ़ायत है और जंजीरपर चलनेके कारण ऊँची-नीची जगहमें चलाना भी आसान है। एक अत्यन्त नये कम्बाइनको दिखलाकर पथप्रदर्शक कहेगा, इस मशीनके द्वारा पहलेके ३०० आदमियोंका काम अब ३ आदमी करते हैं।

एक कमरेमें मास्कोकी मेत्रो (भूगर्भी रेलवे)के माडल भी रखे हैं।

कैसे ६२ भाषाओंमें रेडियोपर ब्राडकास्ट होता है। कैसे मास्को-का भारी टेलीफ़ोन्-आफिस लाखों आदमियोंकेलिए अपने आप लाइन बदल-कर काम करता रहता है। कैसे ३०-३० लाख छपनेवाले सोवियत्के दैनिक पत्रोंका मुद्रण और वितरण होता है।

स्कूल के छात्र और छात्राएँ आपके इधर-उधर आती जाती दिखलाई पड़ेंगी। कितनी ही जगहोंपर तो मालूम होगा कि यह म्यूज़ियम नहीं कोई कालेजका लेक्चर-हाल है।

१६ नवम्बर १९३७को जब मैं इस म्यूज़ियमको देखने गया था, तो एक अंग्रेज सज्जन भी दर्शकोंमें थे। वह पथप्रदर्शकसे बार-बार प्रश्न करते थे—यंत्रोंका इतना अधिक प्रयोग क्या आदमियोंको सुस्त और निकम्मा नहीं बना देगा? और फिर उससे मनुष्य समाज घोर पतनकी ओर नहीं जायगा? इन बेचारोंको दुनियाके कमकरोंकी आजकलकी नारकीय जिन्दगीका कोई ख़याल नहीं था। उनका सारा दिमाग़ उस सुदूर भविष्यकी ही समस्यासे विचलित

था जब कि मशीनोंके उपयोगसे मनुष्य समाज दो मिनटमें अपनी आवश्यक सभी चीजोंको पैदा कर लेगा। वह चिन्तित थे—उस समय अपने खुराफ़ाती दिमाग़से बचनेकेलिये उपाय क्या रहेगा?

* * * * * *

केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम—यह बिल्कुल नया म्यूज़ियम है, जो सन् १९३६में स्थापित हुआ है। इसमें २२ हाल हैं, जिनमें लेनिन्‌के कार्य और जीवन-संबंधी पत्र, फ़ोटो, चित्र तथा दूसरी चीजें जमा की गई हैं। लेनिन्‌का जीवनचरित्र समझनेकेलिए यह म्यूज़ियम बड़ा अच्छा साधन है। एक हालसे दूसरे हालमें जाते हुए उस महान् नेताके बचपन, उसके माँ-बाप, विद्यार्थी जीवन, क्रान्ति-कारी कार्य, जेल, सिबेरियामें देशनिकाला, वर्षों विदेशोंमें भटकना, १९०५की क्रान्तिकी असफलतासे जोशका ठंडा होना, महायुद्ध, फरवरीकी क्रान्ति, लेनिन्‌का देश लौटना, महान् साम्यवादी क्रान्ति, गृह-युद्ध, नवीन अर्थ-नीति, सोवियत् सरकारके अध्यक्षके तौरपर लेनिन्‌के काम, कम्युनिस्ट पार्टीका २५ वर्षके करीब नेतृत्व और जीवनके अन्तिम दिन; सभी यहाँ सामयिक सामग्रियोंके साथ प्रदर्शित किये गये हैं। यहाँ मुल्ककी उस राजनैतिक अवस्थाको भी चित्रित किया गया है, जिसमें रहकर लेनिन्‌को काम करना पड़ा। वह सब मौलिक सामग्री यहाँ मौजूद है जिससे सिद्ध होता है कि लेनिन्‌को मैन्-शेविक, त्रोत्स्की, जिनोवियेफ़्, कामेनेफ़्‌के खिलाफ़ कितनी जद्दोजहद करनी पड़ी।

स्तालिनकेलिए लिखे लेनिन्‌के कितने ही व्यक्तिगत पत्र भी यहाँ रखे हैं, जिनसे पता लगता है कि, लेनिन् स्तालिन्‌से कितना स्नेह रखते थे। कुछ पत्रोंमें लेनिनने स्तालिनके स्वास्थ्यके बारेमें पूछा है।

यहाँ लेनिन्‌के घनिष्ठ सहकारी स्वेर्दलोफ़, जेर्जिन्स्की, फ्रुंजे, किरोफ़, कुइबिशेफ़ और ओर्जोनिकिद्जे—जो क्रान्तिकेलिए जिये और क्रान्तिकेलिए मरे—से भी अच्छा परिचय होता है। स्तालिन्, मोलोतोफ़, वोरोशिलोफ़,

क्रमानोविच्, कालिनिन् आदि अभी तक जीवित लेनिन्के सहकारियोंके बारेमें भी ज्ञान होता है।

लेनिन्के मूल हस्तलेख और वैयक्तिक कागज-पत्रोंके फ़ोटो-चित्र यहाँ सजाए हुए हैं। लेनिनकी घड़ी यहाँ रखी है। उनकी वह क़लम भी यहाँ मौजूद है, जिससे कि उन्होंने सोवियत् सरकारकी पहली घोषणापर हस्ताक्षर किया था। १९१८में उनपर किसी क्रान्तिविरोधीने गोली चलाई थी, गोली ओवरकोटको छेदकर भीतर चली गई। वह ओवरकोट यहाँ रखा है। फटी हुई जगहकी मरम्मत लेनिन्की स्त्री क्रुप्सकायाने की थी। जारकी पुलीसके लिखे लेनिन्के खिलाफ़ कागज-पत्र भी यहाँ मौजूद हैं, और उनकी किताबोंके ग़ैरक़ानूनी प्रथम संस्करण भी।

साम्यवादी क्रान्तिके आरंभिक दिनोंमें लेनिनके लिखे हुए कितने ही ऐतिहासिक कागज-पत्र यहाँ संगृहीत हैं। यहीं लेनिन् और स्तालिन् द्वारा संपादित अधिकारोंकी घोषणावाला मूल पत्र मौजूद है। कमकर-किसान सरकारकी स्थापनाकी घोषणा, लाल-सेनाके कायम करनेकी घोषणा, जिनपर लेनिन् और दूसरोंके हस्ताक्षर हैं, यहाँ रखे हुए हैं। एक हालमें लेनिन्-ग्रन्थ-संग्रहकी सभी जिल्दें तथा उनके संपूर्ण या आंशिक अनुवाद दुनियाकी ८३ भाषाओंमें—जिनमें भारत, चीन, जापानकी भाषाएँ तथा यूरोप आदिकी भाषाएँ शामिल हैं—रखे हुए हैं।

कागज-पत्रोंके फ़ोटो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं; लेनिन्की जीवनीकेलिए ही नहीं, बल्कि साम्यवादी इतिहासकेलिए भी। इन कागजपत्रोंसे यह भी मालूम होता है कि लेनिन् जहाँ एक जबर्दस्त राजनीतिज्ञ थे, वहाँ उनका ज्ञान और विषयोंमें भी कितना विस्तृत था। क्रान्ति-युद्धकेलिए उनकी प्रतिभा कितनी अद्वितीय थी। कारखाना, बिजुलीके पावर हाउस, खेती, उपजका वितरण, यातायात का प्रबन्ध, शिक्षा और संस्कृति, वैदेशिक नीति, सभी विषयोंपर लेनिन्की कलम गंभीरतापूर्वक चली है; और उन कागजोंका यहाँ बहुत अच्छा संग्रह है। सीधे-सादे किसानों और मजदूरोंने जो पत्र लेनिन्को लिखे

थे, उनमेंसे भी कितने यहाँ प्रदर्शित किये गये हैं। उनसे मालूम होता है कि रूसके किसान-मजदूर लेनिन्‌से कितना प्रेम रखते थे।

मशहूर चित्रकारों—अन्द्रेयेफ़, अलतमान, ब्रोदूस्की द्वारा अंकित लेनिन्‌के चित्र या ड्राइंग यहाँ मौजूद हैं।

एक हालमें ऐसे मूल कागज-पत्र हैं, जिनमें लेनिन्‌की मृत्युपर दुनियाके बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और साहित्यिकों—रोम्याँ रोलाँ, बर्बुसे, सुनयात्‌सेन्, टामसमान्—आदिने जो शोक प्रकट किया था। यहीं किसानों और मजदूरों-के कितने ही शोक-पत्र भी हैं।

एक हालमें सोवियत्‌के भिन्न-भिन्न जातिके प्रजातंत्रों और बाहरके कलाकारोंके बनाये रेशम, कालीन, कमख़ाब चद्दर आदि पर बनी लेनिन्‌की तसवीरें जमा की गई हैं। गाँवकी साधारण जनताने अपनी भाषामें कविताके रूपमें लेनिन्‌के प्रति जो उद्‌गार प्रकट किया उसका भी यहाँ अच्छा संग्रह है। इन पद्यों और गीतोंमें कितने ऐसे हैं, जिनके कर्त्ताओंका नाम संसारने नहीं जाना।

यहाँपर लेनिन्‌के भाषणके फ़िल्म हैं; और दर्शकोंको जीवित लेनिन्‌के शब्द सुननेका सौभाग्य प्राप्त होता है।

अध्याय ६

(संविधान और पार्लीमेंट)

१. सोवियत्-संविधान पर स्तालिन्*

५ दिसम्बर १९३६को अष्टम सोवियत्-कांग्रेसके विशेष अधिवेशनने सोवियत्का नया संविधान स्वीकृत किया। यह संविधान सोवियत्केलिए ही नहीं, सारे संसारकेलिए एक अपूर्व चीज है। इसके निर्माणका इतिहास जानने-केलिए स्तालिन्ने जो व्याख्यान २५ नवम्बर १९३६को दिया था, वह बहुत उपयोगी है। उस व्याख्यानसे इस संविधान हीका इतिहास नहीं मालूम होता, बल्कि क्रान्तिके बाद सोवियत्-भूमिमें समाजवादकी कैसी प्रगति हुई है, उसका भी पता लग जाता है। हम उस व्याख्यानको यहाँ उद्धृत करते हैं—

१. संविधान-कमीशन और उसका काम

साथियो,

संविधान-कमीशन—जिसका मसविदा विचार करनेकेलिए कांग्रेसके सामने रखा गया है—आप जानते हैं, स०स०स०र०के सप्तम-सोवियत्-कांग्रेसके विशेष निश्चयके अनुसार निर्मित किया गया है। उक्त निश्चय ६ फरवरी १९३५को स्वीकृत किया गया। उसका उद्देश्य इस प्रकार है—

"(१) संघ-सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (स०स०स०र०)के संविधानमें संशोधन निम्न बातोंका ख्याल करके—

(क) पूर्णतया न समान मताधिकारकी जगहपर समान मताधिकार, अप्रत्यक्ष निर्वाचनकी जगह प्रत्यक्ष निर्वाचन और खुली वोटकी

---

* १९३८में लिखित पृष्ठ ९४६-५६

पुर्जियोंकी जगह गुप्त पुर्जियों द्वारा चुनावकी प्रक्रियाको और अधिक जनसत्ताक बनाना।

(ख) संविधानको स०स०स०र०की वर्ग-शक्तियोंके वर्तमान सम्बन्ध (एक नये समाजवादी उद्योगका निर्माण, कुलक श्रेणीका लोप, कोल्खोज् प्रथाकी विजय, सोवियत् समाजकी आधार-शिलाके तौरपर समाजवादी सम्पत्तिकी व्यापकता आदि) के अनुसार संविधानको ले आकर संविधानके सामाजिक और आर्थिक आधारको और भी स्पष्टताके साथ व्याख्या करना;

(२) स०स०स०र०की केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिको हिदायत करना कि वह एक ऐसे विधान-कमीशनको चुने जो कि प्रथम धारामें बतलाये सिद्धान्तोंके अनुसार संविधानके संशोधित मसविदेको तैयार करे और उसे स०स०स०र०की केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिके अधिवेशनमें स्वीकृतिकेलिए पेश करे।

(३) नये निर्वाचन-नियमके अनुसार स०स०स०र०की सोवियत् गवर्नमेंटकी संस्थाओंके आनेवाले साधारण निर्वाचनोंको संचालित करना।"

यह ६ फरवरी, १९३५को हुआ था। एक दिन बाद ७ फरवरीको यह निश्चय स्वीकृत हुआ। उस दिन स०स०स०र०की केन्द्रीय कार्यकारिणी समितिका प्रथम अधिवेशन हुआ और स०स०स०र०की सप्तम सोवियत् कांग्रेसके निश्चयानुसार ३१ व्यक्तियोंका एक संविधान-कमीशन स्थापित किया गया। उसने संविधान कमीशनको हिदायत की कि वह स०स०स०र०के संविधानका एक संशोधित मसविदा तैयार करे। यह हैं स०स०स०र०की सर्वोपरि समितिकी हिदायतें और आधार जिनके अनुसार कि संविधान-कमीशनके कामको चलाना था।

इस प्रकार संविधान-कमीशनको प्रचलित संविधान—जो कि १९२४में स्वीकृत हुआ था—में १९२४से आजतकके समयमें स०स०स०र०के जीवनके संबंधमें समाजवादकी तरफ हुए परिवर्तनोंको ध्यानमें रखते हुए तब्दीली करना था।

२. १९२४-३६में परिवर्तन

१९२४से १९३६ तकके समयमें स०स०स०र०के जीवनमें वे क्या परिवर्तन हुए हैं, जिन्हें कि संविधानके मसविदेमें विधान-कर्माशनको दिखलाना है।

परिवर्तनोंका क्या सार है?

१९२४में क्या परिस्थिति थी?

यह नवीन-आर्थिक-नीतिका प्रथम काल था; जब कि सोवियत् गवर्नमेंटने समाजवादके सभी तरीक़ोंको अख्तियार करते हुए पूँजीवादको थोड़ा पुनर्जीवित होने दिया। जब कि उसने हिसाब लगा लिया कि समाजवादी और पूँजीवादी—दोनों आर्थिक सिद्धान्तोंकी प्रतिद्वन्द्वितामें समाजवाद पूँजीवादपर हावी होगा। काम था, इस प्रतिद्वन्द्विताके समय समाजवादकी स्थितिको मजबूत करना, पूँजीवादी अंशको निमूल करनेमें सफलता प्राप्त करना और राष्ट्रीय अर्थनीतिके मौलिक सिद्धान्तके तौरपर समाजवादके सिद्धान्तकी विजयको पूर्णतापर पहुँचाना।

उस समय हमारे उद्योग—विशेषकर भारी उद्योग—की अवस्था बहुत शोचनीय थी। यह सच है कि धीरे-धीरे उसे पूर्व स्थितिपर पहुँचाया जा रहा था, लेकिन तो भी उस वक़्त तक उपज युद्धके पहलेवाले आँकड़े तक नहीं पहुँची थी। वह पुरानी पिछड़ी हुई और बहुत थोड़ी सामग्रीसे युक्त टेक्नीक् (यन्त्र-चातुरी)पर अवलंबित थी। यह भी ठीक है कि वह समाजवादकी ओर बढ़ रहा था। उस समय हमारे उद्योगमें समाजवादका भाग ८० सैकड़ा था; लेकिन पूँजीवादी भाग अब भी हमारे उद्योगका २० सैकड़ा अपने हाथमें रखे हुए था।

कृषिकी अवस्था और भी शोचनीय थी। यह सच है कि जमींदार श्रेणी कभीकी लुप्त हो चुकी थी; लेकिन तो भी कृषिके पूँजीवादी—कुलक श्रेणी अब भी काफी ताक़त रखती थी। सब देखनेपर उस समयकी कृषि पिछड़े

हुए दकियानूसी किसानी तरीकोंसे युक्त छोटे-छोटे वैयक्तिक खेतोंके-अपरिमित समुद्र-सी दिखलाई पड़ती थी। उस समुद्रमें छोटे-छोटे बिन्दुओं और द्वीपोंकी भाँति कुछ कल्खोज् (पंचायती खेती) और सोव्खोज् (सरकारी खेती) थे। ठीक तौरसे कहनेपर अभी हमारी राष्ट्रीय अर्थनीतिमें उनका कोई विशेष स्थान न था। कल्खोज् और सोव्खोज निर्बल थे, जब कि कुलक अब भी प्रबल था। उस समय हमने कुलकोंके नष्ट करनेकी जगहपर उन्हें सीमाबद्ध करनेकेलिए कहा।

यही बात देशके व्यापारके बारेमें भी उस समय कही जा सकती थी। व्यापारमें समाजवादी भाग ५०से ६० सैकड़ा तक था, अधिक नहीं। जब कि बाकी हिस्सा बनियों, लाभ कमानेवालों तथा दूसरे वैयक्तिक व्यापारियोंके हाथ-में था।

यह चित्र था हमारी अर्थनीतिका १९२४में।

और आज १९३६में क्या परिस्थिति है?

उस समय हम थे नवीन-आर्थिक-नीतिके प्रथम कालमें; नवीन-आर्थिक-नीतिके आरंभमें, पूँजीवादके कुछ पुनरुज्जीवनके कालमें। लेकिन अब हम हैं नवीन-आर्थिक-नीतिके अन्तिम कालमें, नवीन अर्थनीतिके अन्तमें, ऐसे कालमें जब कि राष्ट्रीय अर्थनीतिके सभी क्षेत्रोंमें पूँजीवादका पूर्णतया मूलोच्छेद हो गया है।

उदाहरणार्थ—यह यथार्थ बात है कि इस कालमें हमारा उद्योग बड़ी विशाल शक्तिके रूपमें बढ़ा है। अब इसको कमजोर, और यांत्रिक प्रक्रियामें दरिद्र नहीं कहा जा सकता। बल्कि इसके विरुद्ध आज यह एक बलिष्ट और उन्नत भारी उद्योग तथा एक उससे भी अधिक उन्नत मशीन-निर्माण-उद्योग-के साथ नये लाभदायक आधुनिक यांत्रिक साधनोंके ऊपर अवलंबित है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पूँजीवाद हमारे उद्योगके क्षेत्रसे बिल्कुल ही लुप्त हो चुका और उसका समाजवादी तरीका अब वह सिद्धान्त है, जो कि हमारे उद्योगके हर क्षेत्रमें अव्याहत अधिकार रखता है। हमारी

आजकी समाजवादी उद्योगकी उपज युद्धके पहलेके उद्योगसे सातगुनासे भी अधिक है। यह कोई मामूली बात नहीं है।

कृषिके क्षेत्रमें अपनी दरिद्र कृषि-प्रक्रियासे युक्त और कुलकोंके जबर्दस्त प्रभाववाले छोटे-छोटे वैयक्तिक किसानोंके खेतोंके समुद्रकी जगह-पर आज हमारे पास है यंत्रों द्वारा खेतीका उपजाना। वह नईसे नई कृषि-विज्ञानकी प्रक्रियाओंसे युक्त कल्खोज् और सोव्खोज्के सर्वव्यापी सिद्धान्त-के रूपमें इतने बड़े पैमानेपर किया जा रहा है जैसा कि संसारमें और कहीं नहीं देखनेमें आता। सभी लोग जानते हैं कि कृषिसे कुलक (धनी किसान) श्रेणी लुप्त हो चुकी है, और पिछड़े दकियानूसी कृषि-प्रक्रियाओंसे युक्त छोटे वैयक्तिक किसानोंका अंश भी अब नगण्यके बराबर रह गया है। जोती हुई भूमिको लेनेपर कृषिमें इसका भाग २ या ३ सैकड़ासे अधिक नहीं है। हमें यह बात भूलनी नहीं चाहिए कि आज कल्खोजोंके पास ५.७ लाख अश्व-शक्तिवाले ३ लाख १६ हजार ट्रैक्टर हैं। सोव्खोजोंको भी ले लेनेपर ७५ लाख ८० हजार अश्वशक्तिके ४ लाख ट्रैक्टर हो जाते हैं।

देशके व्यापारको देखनेपर मालूम होगा कि इस क्षेत्रसे बनिये और लाभ उठानेवाले बिलकुल नष्ट हो चुके हैं। सारा व्यापार अब राज्य, सहयोग-समितियों और कल्खोजोंके हाथमें है। एक नया सोवियत् व्यापार—व्यापार बिना लाभ उठानेवालोंके, व्यापार बिना पूँजीवादियों के—उत्पन्न हो-कर विकसित हुआ है।

इस प्रकार राष्ट्रीय अर्थनीतिके सभी क्षेत्रोंमें समाजवादी सिद्धान्तकी पूर्ण विजय अब एक वास्तविक घटना है।

और इसका क्या मतलब है?

इसका मतलब है कि मनुष्य-द्वारा मनुष्यका शोषण बन्द हो गया, नष्ट हो गया; जब कि उपजके हथियारों और साधनोंपर समाजका अधिकार हमारे सोवियत् समाजमें अचल नींवके रूपमें स्थापित हो गया। (देर तक हर्ष-ध्वनि)।

स०स०स०र०की राष्ट्रीय अर्थनीतिके क्षेत्रमें इन सभी परिवर्तनोंके फल-स्वरूप अब हमारे पास एक नई समाजवादी अर्थनीति है। जिसमें न मन्दी सम्भव है, न बेकारी; जिसमें न गरीबी सम्भव है, न सर्वनाश। और जो नागरिकोंको समृद्ध और संस्कृत जीवन बितानेके लिए हर प्रकारका मौका देती है।

ये हैं वे मुख्य परिवर्तन जो कि हमारी अर्थनीतिके क्षेत्रमें १९२४से १९३६के समयमें हुए हैं।

स०स०स०र०की अर्थनीतिके क्षेत्रमें होनेवाले इन परिवर्तनोंके अनुसार हमारे समाजका श्रेणी-ढाँचा भी बदल गया है।

जमींदार-श्रेणी, जैसा कि आप जानते हैं, गृह-युद्धकी विजयपूर्ण समाप्तिके परिणाम-स्वरूप पहले ही लुप्त हो चुकी; और दूसरी शोषक श्रेणियोंकी भी गति जमींदार श्रेणी जैसी ही हुई। उद्योग-क्षेत्रमें पूंजीवादी श्रेणीका खात्मा हो चुका। कृषि-क्षेत्रमें कुलक श्रेणीका अस्तित्व मिट चुका। व्यापारके क्षेत्रमें बनियों और लाभ कमानेवालोंकी सत्ता मिट गई। इस प्रकार सभी शोपक श्रेणियाँ अब खतम हो चुकीं।

अब बाकी है, श्रमिक-श्रेणी।
अब बाकी है, कृषक-श्रेणी।
अब बाकी है, बुद्धि-जीवी-श्रेणी।

लेकिन यह समझना गलत होगा कि उक्त कालमें इन श्रेणी-समूहोंमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, और वे अब भी वैसी ही हैं, जैसी कि पूंजीवाद-कालमें थीं।

उदाहरणार्थ स०स०स०र०की श्रमिक-श्रेणीको ले लीजिए। इसे प्रोलेतेरियत् (मजदूर) आदतके बस कहा जाता है। लेकिन प्रोलेतेरियत् क्या चीज है? प्रोलेतेरियत् वह श्रेणी है, जिसके पास उपजके औजार और साधन-का अभाव है। और जो ऐसे आर्थिक सिद्धान्तके आधीन है, जिसमें उपजके औजार और साधनका मालिक पूँजीपति है, जो कि प्रोलेतेरियत्का शोषण

करता है। मजदूर वह श्रेणी है, जिसका कि पूँजीवादी शोषण करते हैं। लेकिन हमारे देशमें, जैसा कि आप जानते हैं, पूँजीवादी-श्रेणी कभीकी खतम हो चुकी। उपजके औजार और साधन पूँजीवादियोंके हाथसे छीनकर राज्यके हाथमें दे दिये गये। जिस राज्यकी एक जबर्दस्त ताक़त है श्रमिक-श्रेणी। यहाँ पर अब कोई पूँजीवादी-श्रेणी नहीं रह गई, जो श्रमिक-श्रेणीका शोषण करेगी। अतएव हमारी श्रमिक-श्रेणी उपजके औजारों और साधनोंसे वंचित होनेकी तो बात कौन कहे, उलटे वह सारी जनताके साथ उनकी मालिक है। और चूँकि वह उनकी मालिक है, और पूँजीवादी-श्रेणी नष्ट हो चुकी है, इसलिए श्रमिक श्रेणीके शोषणकी संभावना ही बिलकुल नहीं रही। ऐसा होनेपर क्या हमारी श्रमिक-श्रेणीको मजदूर (प्रोलेतेरियत्) कहा जा सकता है? बिलकुल साफ़ है कि नहीं! मार्क्सने कहा था—अगर मजदूर अपनेको मुक्त करना चाहता है, तो उसे पूँजीवादी-श्रेणीको नष्ट करना होगा, और उपजके औजारों और साधनोंको पूँजीपतियोंके हाथसे छीन लेना होगा। उपजकी उन अवस्थाओंको बन्द करना होगा, जो कि मजदूर उत्पन्न करते हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि स०स०स०र०की श्रमिक श्रेणी अपनी मुक्तिके लिए इन अवस्थाओंको उत्पन्न कर चुकी है? निस्सन्देह! यह कहा जा सकता है और इसे कहना चाहिए। फिर इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है—स०स०स०र०का मजदूर एक बिलकुल ही नई श्रेणीमें, स०स०स०र०की श्रमिक-श्रेणीमें परिवर्तित हो गया है। उसने उपजके पूँजीवादी सिद्धान्तको उठा दिया, उसने उपजके औजारों और साधनों-पर समाजका स्वामित्व स्थापित किया और वह सोवियत् समाजको साम्यवादके रास्तेपर ले जा रहा है।

जैसा कि आप देखते हैं, कि स०स०स०र०की श्रमिक-श्रेणी एक बिलकुल ही नई श्रमिक-श्रेणी, शोषणसे मुक्त श्रमिक-श्रेणी है, जिसकी तरहकी श्रेणीको मानव-इतिहासने इससे पहले कभी नहीं देखा।

आओ, किसानोंके प्रश्नपर एक नजर डालें। आम तौरसे कहा जाता है

कि किसान छोटे उत्पादकोंकी एक श्रेणी हैं। इस श्रेणीके व्यक्ति बहुत छोटी-छोटी भूमि पर चारों ओर बिखरे हुए हैं; और अकेले हलसे पिछड़ी दकियानूसी प्रक्रियाके साथ अपने छोटे खेतोंको जोतते हैं।

वे वैयक्तिक सम्पत्तिके दास हैं और उन्हें जमींदार, कुलक, बनियाँ, महाजन, लाभ उठानेवाले तथा दूसरे बेखटके चूस सकते हैं। और सचमुच पूँजीवादी देशोंमें सबको लेकर देखनेपर किसान ठीक ऐसी ही श्रेणी है। क्या यह कहा जा सकता है कि आजकलका हमारा किसान-समुदाय, सोवियत्-किसान-समुदाय, सबको लेकर देखनेपर उस प्रकारके किसान-समुदाय सा मालूम होता है? नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता! अब हमारे देशमें वह किसान-समुदाय नहीं रहा। हमारा सोवियत् किसान बिलकुल नया किसान है। हमारे देशमें किसानोंको चूसनेके लिए एक भी जमींदार और कुलक नहीं रहा। एक भी बनियाँ और महाजन नहीं रहा। इसलिए हमारा किसान हर प्रकारके चूसनेसे मुक्त किसान है। और भी, हमारे सोवियत् किसानकी सबसे अधिक संख्या कलखोजी (पंचायती खेतीवाली) है। इसका कार्य धन वैयक्तिक श्रम और पिछड़ी हुई कृषि-प्रक्रियापर निर्भर न होकर; सामूहिक श्रम और नईसे नई वैज्ञानिक प्रक्रिया पर निर्भर है। अन्ततः, हमारे किसानकी खेती वैयक्तिक सम्पत्तिके आधारपर न हो, सामूहिक सम्पत्तिपर है; और सामूहिक श्रमके आधारपर खड़ी है।

जैसा कि आप देखते हैं, सोवियत्-किसान एक बिलकुल नया किसान है, जिसकी तरहकी श्रेणीको मानव-इतिहासने इससे पहले कभी नहीं देखा।

अन्तमें आइए, बुद्धि-जीवी-श्रेणीके प्रश्नपर विचार करें। इंजीनियर मिस्त्री, सांस्कृतिक क्षेत्रके कमकर, साधारण आफिस आदिमें काम करनेवाले आदिके प्रश्नपर गौर करें। इस कालमें बुद्धि-जीवी-श्रेणीमें भी भारी परिवर्तन हुआ है। अब वे वह बुद्धि-जीवी-श्रेणी नहीं हैं, जो अपनेको श्रेणियोंसे ऊपर समझती थी; हालाँकि वह जमींदारों और पूँजीपतियोंकी सेवक मात्र थी। पहली बात यह है, कि अब बुद्धि-जीवी-श्रेणीकी बनावटमें परिवर्तन

हो गया है । । आजकी सोवियत् बुद्धि-जीवी-श्रेणीमें अमीरों और मध्यवित्तके लोगोंसे आनेवाले लोगोंकी संख्या बहुत कम है । सोवियत् बुद्धिवादी-श्रेणीका ८० से ९० सैकड़ा कमकर, किसान और श्रमिक जनताके निम्नस्तरसे आया है । अन्तिम बात यह है कि बुद्धि-जीवी श्रेणीके कामका ढङ्ग ही बिलकुल बदल गया है । पहले ये धनिक-श्रेणीकी सेवा करनेके लिए मजबूर थी, क्योंकि दूसरा चारा नहीं था; लेकिन आज उसे जनताकी सेवा करनी है । क्योंकि अब वह चूसनेवाली श्रेणियाँ (जमींदार और पूँजीपति) रही ही नहीं । अब वे सोवियत्-समाजमें बराबरके सदस्य हैं । उस समाजमें यह किसानों और मजदूरोंसे कन्धासे कन्धा मिलाकर एक साथ जोर लगाते हुए नई श्रेणीरहित समाजवादी समाजके निर्माणमें लगी हुई हैं ।

जैसा कि आप देखते हैं, सोवियत्-बुद्धि-जीवी-श्रेणी एक बिलकुल ही नई श्रेणी है, जिसकी तरहकी श्रेणीको पृथ्वीतलपर किसी भी दूसरे देशमें आप नहीं पायेंगे ।

यह हैं वह परिवर्तन जो कि सोवियत्-समाजकी श्रेणीके ढाँचेमें इस कालमें हुए हैं ।

ये परिवर्तन क्या बतलाते हैं ?

अव्वल यह बतलाते हैं कि किसानों और श्रमिक-श्रेणी तथा इन दोनों श्रेणियों और बुद्धि-जीवी श्रेणी को विभक्त करनेवाली रेखा मिट-सी चुकी है । श्रेणियोंका पुराना अलगथलगपन लुप्त हो रहा है । इसका मतलब यह है, कि समाजके इन समुदायोंका फ़र्क़ तेजीसे खतम हो रहा है ।

दूसरे यह बतलाते हैं कि समाजके इन समुदायोंके पारस्परिक आर्थिक द्वन्द्व दबते जा रहे हैं, लुप्त होते जा रहे हैं ।

और [illegible] बतलाते हैं, कि इनके पारस्परिक राजनैतिक द्वन्द्व भी दबते जा रहे [illegible] हैं ।

यह है [illegible] श्रेणी-ढाँचेके सम्बन्धमें हुए परिवर्तनोंके बारेमें ।

स०स०स०र०के सामाजिक जीवनके परिवर्तनोंका जो चित्र यहाँ खींचा गया है, वह अपूर्ण रहेगा; जब तक कि कुछ शब्द एक और भी क्षेत्रके परिवर्तनोंके बारेमें न कहा जाय। मेरा मतलब है, स०स०स०र०की जातियोंके पारस्परिक सम्बन्धके विषयमें। जैसा कि आप जानते हैं, सोवियत्-संघके भीतर रहनेवाली जातियों, जाति-समूह और राष्ट्रोंकी संख्या ६० है। सोवियत्-राज्य एक बहुजातिक राज्य है। यह स्पष्ट ही है कि स०स०स०र०की जनता के पारस्परिक सम्बन्धका प्रश्न अव्वल दर्जेके महत्त्वका प्रश्न है।

आप जानते हैं कि संघ-सोवियत् समाजवादी-रिपब्लिक०(स०स०स०र०) प्रथम सोवियत् कांग्रेसमें १९२२में संगठित हुआ था। इसे स०स०स०र० की जातियोंकी स्वतन्त्रता और स्वेच्छासे सम्मिलित होनेके सिद्धान्तपर संगठित किया गया था। जो विधान आजकल काम कर रहा है, वह स०स०स०र०का प्रथम विधान है। और उसे १९२४में स्वीकृत किया गया था। यह वह समय था, जब कि लोगोंका पारस्परिक सम्बन्ध अभी ठीक तौर से जम नहीं पाया था। जब कि महान् रूसियोंके प्रति सदियोंसे चला आता अविश्वास लुप्त नहीं हुआ था। और जब कि बिखरनेवाली शक्तियाँ अब भी काम कर रही थीं। इन अवस्थाओंमें यह जरूरी था, कि श्रमिक, राजनैतिक और सैनिक पारस्परिक सहायताओंके आधारपर एक संयुक्त बहुजातिक राज्यके रूपमें सभी जातियोंमें परस्पर भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित किया जाय। सोवियत्-सरकार इस कामकी कठिनाइयोंको जानती थी। उसके सामने पूँजीवादी देशोंके बहुजातिक राज्योंके नाकामयाब तजर्बे मौजूद थे। उसके सामने पुराने आस्ट्रिया-हंगरीका नाकामयाब तजर्बा मौजूद था। लेकिन तो भी, उसने निश्चय किया, एक बहुजातिक राष्ट्रके बनानेके तजर्बेका; क्योंकि वह जानती थी, कि समाजवादके आधारपर जो बहुजातिक राज्य स्थापित होगा, वह अवश्य हर तरहकी परीक्षाओंमें उत्तीर्ण होगा।

तबसे १४ वर्ष बीत गये। तजर्बेकी परीक्षाके लिए यह काफी लंबा समय है। और अब हम क्या पा रहे हैं? इस समयने बिलकुल असंदिग्ध रूपमें

दिखला दिया, कि समाजवादके आधारपर संगठित बहुजातिक राष्ट्रका तजर्बा बिलकुल कामयाब रहा। यह है निःसन्दिग्ध विजय लेनिनकी जातीय नीतिकी। (देर तक हर्षध्वनि)

यह विजय क्यों हुई ?

चूसने वाली श्रेणियोंके अभावके कारण। यही श्रेणियाँ हैं, जो मुख्यतया जातियों में पारस्परिक वैमनस्यको संगठित करती हैं। चूसनेका अभाव इसका कारण हुआ। क्योंकि यही पारस्परिक अविश्वासको बढ़ाता और जातिक द्वेषको उत्तेजित करता है। चूँकि शक्ति कमकर-श्रेणीके हाथमें है, उस श्रेणीके हाथमें, जो कि हर तरहकी दासताका शत्रु और अन्तर्राष्ट्रीय विचारोंका सच्चा वाहन है। और कारण है, हर सामाजिक और आर्थिक जीवन-क्षेत्रमें लोगोंकी पारस्परिक सहायतामें योग देना। और आखिरी कारण है, स०स०स०र०की जनताकी जातिक संस्कृति—वह संस्कृति जो आकारमें जातिक है, और भीतरसे समाजवादी है—की समृद्धि। यह और इसी तरहके दूसरे कारण हैं, जिन्होंने स०स०स०र०के लोगोंकी दृष्टिमें भारी परिवर्तन किया। उनका पारस्परिक अविश्वास लुप्त हो गया। उनमें परस्पर मित्रताका भाव विकसित हुआ। और इस प्रकार एक अकेले संयुक्त राष्ट्रके भीतर लोगोंमें परस्पर वास्तविक भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित हो गया।

इसके परिणामस्वरूप अब हमारे सामने एक पूर्णतया तैयार बहुजातिक समाजवादी राष्ट्र मौजूद है; जो कि हर प्रकारकी परीक्षाओंमें उत्तीर्ण हुआ है। जिसकी स्थिरताको संसारके किसी भागका कोई भी राष्ट्रीय राज्य देखकर ईर्ष्या किये बिना नहीं रहेगा। (जोरकी हर्ष-ध्वनि)

उक्त समयके भीतर स०स०स०र०के जातिक संबंधके क्षेत्रमें यह परिवर्तन उपस्थित हुए हैं।

१६२४से १६३६ तकके समयके भीतर स०स०स०र०के आर्थिक और समाजी-राजनीतिक जीवनके क्षेत्रमें जो परिवर्तन हुए हैं, उनका यह है पूर्ण योग।

३. संविधान-मसविदेकी कुछ विशेषताएँ

नये संविधानके मसविदेमें स०स०स०र०के जीवनके इन परिवर्तनोंका क्या आभास मिलता है ?

दूसरे शब्दोंमें, मुख्य निश्चित विशेषताएँ क्या हैं इस संविधान मसविदे की—जो वर्तमान कांग्रेसके सामने विचारार्थ उपस्थित किया गया है ?

संविधान-कमीशनको हिदायत हुई थी कि वह १९२४ के संविधानमें संशोधन करे। संविधान-कमीशनके कार्यके परिणामस्वरूप एक नया संविधान, स०स०स०र०के नये संविधानका मसविदा, सामने आया है। विधान-कमीशन नये विधानके मसविदेको तैयार करते वक़्त यह ख़याल कर चुका था, कि विधानको प्रोग्राममें नहीं मिलाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि संविधान और प्रोग्राममें आवश्यक भेद है। प्रोग्राम बतलाता है ऐसी चीजको, जो अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि भविष्यमें प्राप्त करना और जीतना है। इसके विरुद्ध संविधानको कहना होता है उस चीजको, जो कि मौजूद है। जो कि अब तक वर्तमान कालमें पाई और जीती जा चुकी है। प्रोग्रामका संबंध मुख्यतया भविष्यसे होता है और संविधानका सम्बन्ध वर्तमानसे।

इसको स्पष्ट करनेके लिए दो उदाहरण देते हैं।

हमारा समाजवादी समाज अभी ही मुख्यतया समाजवादको प्राप्त करनेमें कामयाब हुआ है। इसने एक समाजवादी जीवन—जिसे कि मार्क्सवादी दूसरे शब्दोंमें प्रथम या निम्न प्रकारका साम्यवाद कहते हैं—का निर्माण किया है। अतएव प्रधानतया हमने साम्यवादके प्रथम आकार, समाजवादको अभी ही प्राप्त कर लिया (देर तक हर्ष-ध्वनि)। साम्यवादके इस आकारका मौलिक सिद्धान्त है, जैसा कि आप जानते हैं—'हर एकसे उसकी योग्यताके अनुसार, हर एकको उसके कामके अनुसार'—सूत्र है। क्या हमारा विधान यह बात—कि समाजवाद तक पहुँचा जा चुका है—को प्रदर्शित करता है ? क्या इसे हमें अपनी सफलताओंपर आधारित करना चाहिए। निस्सन्देह इसे जरूर करना

चाहिए। ऐसा जरूर करना चाहिए। क्योंकि स०स०स०र०के लिए समाजवाद ऐसी चीज है जिसे प्राप्त और जीता जा चुका है।

लेकिन सोवियत् समाज अभी साम्यवादके ऊँचे रूपपर नहीं पहुँच सका है। जहाँपर पहुँचनेपर यह सूत्र माना जायगा—'हर एकसे उसकी योग्यताके अनुसार, हर एकको उसकी आवश्यकताके अनुसार'—यद्यपि हमारे सोवियत् समाजके सामने भविष्यमें समाजवादके इसी ऊँचे रूपकी प्राप्ति अभीष्ट है। क्या हमारा संविधान साम्यवादके इस ऊँचे आदर्शपर आधारित होना चाहिए, जो कि अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि अभी हमें प्राप्त करना है? नहीं, आधारित नहीं होना चाहिए। क्योंकि स०स०स०र०के लिए साम्यवादका वह ऊँचा रूप ऐसी चीज है, जो कि अभी तक प्राप्त नहीं की जा चुकी है, जिसे कि भविष्यमें प्राप्त करना है। संविधान ऐसा नहीं कर सकता; जब तक कि इसे प्रोग्राम या भविष्यकी सफलताओंकी घोषणाके रूपमें न परिणत कर दिया जाय।

वर्तमान ऐतिहासिक समयमें हमारे संविधानके लिए यह सीमाएँ हैं।

इस प्रकार नये संविधानका मसविदा, जितना रास्ता हमने तय किया है, जितनी चीजें हम पा चुके हैं, उनका संक्षेप है। इसीलिए जो कुछ पाया जा चुका है, और जो कुछ वास्तविक रूपसे जीता जा चुका है, उसका अंकन और कानूनी एकीकरण यह विधान है। (जोरकी हर्ष-ध्वनि)

स०स०स०र०के नये विधानके मसविदेका यह प्रथम निश्चित आकार है।

और भी। पूँजीवादी देशोंके संविधान इस धारणाके साथ तैयार होते हैं कि पूँजीवादी सिद्धान्त अचल हैं। इन विधानोंका मुख्य आधार है, पूँजीवादके सिद्धान्त, जिसके कि प्रधान स्तंभ हैं—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारखाना और उपजके दूसरे औजारों और साधनोंका वैयक्तिक स्वामित्व, मनुष्यका मनुष्य द्वारा चूसा जाना, तथा चूसक और चूसितका मौजूद रहना, समाजके एक छोर पर बहुसंख्यक जाँगर चलानेवालोंका निराशापूर्ण जीवन और दूसरी ओर मुट्ठी भर जाँगर न चलानेवालोंका व्यसनपूर्ण निश्चिन्त जीवन

आदि आदि। वे संविधान इन या ऐसे ही दूसरे पूँजीवादके स्तंभोंपर अवलंबित हैं। वे संविधान इन्हें सूचित करते हैं। वे उन्हें कानूनका रूप देते हैं।

उनके विरुद्ध स०स०स०र०के नये विधानका मसविदा इस बातको सामने रखकर चलता है कि पूँजीवादी प्रथा खतम हो चुकी, और स०स०स०र०में समाजवादी सिद्धान्तकी विजय हुई। स०स०स०र०के नये विधानके मसविदेका प्रधान आधार है, समाजवादके सिद्धान्त। उसके मुख्य स्तंभ हैं—जिन्हें कि जीता और पाया जा चुका है—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारखाने और उपजके औजारों और साधनोंमें समाजका स्वामित्व; चूषक श्रेणी और चूसनेको उठा देना। बहुसंख्यककी दरिद्रता और अल्पसंख्यकके ऐश व आरामको उठा देना। बेकारीको उठा देना। 'जो काम नहीं करता, वह खा नहीं सकता के सूत्रके अनुसार हर एक उपयुक्त शरीरवाले नागरिकके लिए काम करना आवश्यक और सन्माननीय कर्तव्य है। काम करनेका अधिकार अर्थात् हर एक नागरिकको काम मिलनेकी गारंटीका अधिकार मिलना चाहिए। अधिकार मिलना चाहिए छुट्टी और विश्रामका, अधिकार मिलना चाहिए शिक्षा आदिका। नये संविधान का मसविदा समाजवादके इन और ऐसे अन्य स्तंभोंके ऊपर अवलंबित है। संविधान उन्हें सूचित करता है और उन्हें कानूनका रूप देता है।

नये संविधानके मसविदेका यह दूसरा विशेष रूप है।

और भी। पूँजीवाद संविधान पहले ही से इस प्रतिज्ञाको जोरसे पकड़ कर आगे चलते हैं; कि समाज परस्पर विरोधी श्रेणियोंपर अवलंबित है—ऐसी ऐसी श्रेणियों पर अवलंबित हैं—जिनमें एक सम्पत्तिकी मालिक है और दूसरी वे जिनके पास सम्पत्ति नहीं। चाहे कोई भी दल अधिकारारूढ़ हो, समाजका नेतृत्व करनेमें राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य पूँजीवादियोंके हाथमें होना चाहिए और वह मानते हैं कि विधानका प्रयोजन है, लाभ उठानेवाली धनी श्रेणियोंकी इच्छाके अनुसार सामाजिक व्यवस्थाको दृढ़ करना।

पूँजीवादी संविधानोंके बरखिलाफ़ स०स०स०र०के नये संविधानका मस-

विदा इस बातको लेकर चलता है; कि यहाँ समाजमें परस्पर विरोधी श्रेणियाँ नहीं रह गईं; और समाजमें दो मित्रतापूर्ण भाव रखनेवाले वर्ग कमकर और किसान हैं। और यही वर्ग—जाँगर चलानेवाले वर्ग—अधिकारारूढ़ हैं। समाजका नेतृत्व करनेमें राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य श्रमिक वर्ग—जो कि समाजमें बहुत उन्नत वर्ग है—के हाथमें होना चाहिए। संविधानका यह प्रयोजन है, कि जाँगर चलानेवालोंकी इच्छाके अनुकूल तथा उनके लिए लाभप्रद सामाजिक व्यवस्थाको दृढ़ करना।

नये संविधानके मसविदेका यह तीसरा विशेष रूप है।

और भी। पूँजीवादी संविधान इस प्रतिज्ञाको मजबूतीसे पकड़कर चलते हैं; कि सभी राष्ट्र और जातियाँ बराबरका अधिकार नहीं रख सकती। राष्ट्रोंमें भी कुछ पूर्ण अधिकार-प्राप्त हैं और कुछको पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त है। इसके अतिरिक्त एक तीसरे प्रकारके राष्ट्र और जातियाँ हैं। उदाहरणार्थ परतंत्र देश, जिन्हें कि पूर्ण अधिकार न पानेवाली जातियोंसे भी कम अधिकार है। इसका मतलब यह है कि ये सभी संविधान भीतरसे राष्ट्रीय शासक राष्ट्रोंके विधान हैं।

उन संविधानोंसे भिन्न स०स०स०र०के नये संविधानका मसविदा उनके बिलकुल विरुद्ध (राष्ट्रीय नहीं बल्कि) पूर्णतया अन्तर्राष्ट्रीय है। वह इस बातको मानकर चलता है कि सभी जातियों और राष्ट्रोंका समान अधिकार है। वह इस बातको मानकर चलता है कि कहीं रंग और भाषाके भेद नहीं, सांस्कृतिक विकास और राजनैतिक विकासका तारतम्य नहीं, राष्ट्रों और जातियों का कोई दूसरा पारस्परिक भेद नहीं। जातियोंके अधिकार-विषयक असमानताके औचित्यको सिद्ध नहीं किया जा सकता। इससे सिद्ध होता है कि सभी राष्ट्रों और जातियोंको भूत और भविष्यकी स्थितिके खयालको छोड़कर उनकी सबलता या निर्बलताके खयालको छोड़कर समाजके आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवनके सभी क्षेत्रोंमें समान अधिकार मिलना चाहिए।

नये संविधानके मसविदे का यह चौथा विशेष रूप है।

नये संविधानके मसविदेका पाँचवा रूप है, इसका एकाकारताके साथ सर्वतोभावेन जनसत्ताकपन। जन-सत्ताके ख्यालसे पूँजीवादी संविधानोंको दो समुदायोंमें बाँटा जा सकता है। एक समुदायवाले विधान, नागरिकोंके अधिकारोंकी समानता और जन-सत्ताक स्वतंत्रतासे खुले तौरसे इनकार करते हैं, या काममें उसे नहीं मानते। दूसरे समुदायवाले संविधान, जनसत्ताक सिद्धान्तोंको स्वीकार करनेके लिए तैयार हैं, बल्कि उनका विज्ञापन भी देते हैं; लेकिन साथ ही साथ वह ऐसे संरक्षण और नियंत्रण तैयार करते हैं, जो कि जनसत्ताक अधिकारों और स्वातंत्र्योंको तोड़मरोड़ देते हैं। वे सभी नागरिकोंके लिए समान मताधिकारकी बातें करते हैं; लेकिन एक ही साँसमें उसपर निवास-स्थान, शिक्षा और धनकी भी योग्यताओंकी शर्त रखकर सीमित कर देते हैं। वे नागरिकोंके समानाधिकारोंकी बात करते हैं, और साथ ही एक साँसमें अपवाद भी कर डालते हैं कि यह स्त्रियों या उनके कुछ भागकेलिए नहीं है। और इसी तरह और भी।

स०स०स०र०के नये संविधानके मसविदेका यह भी एक विशेषरूप है कि संरक्षण (अपवाद) और नियन्त्रण (सीमित करना) से यह मुक्त है। इसकी दृष्टिमें क्रियाशील और अक्रियाशील नागरिकोंका भेद नहीं। इसकेलिए सभी नागरिक क्रियाशील हैं। यह स्त्री और पुरुष, निवासी और गैरनिवासी, धनी और निर्धन, शिक्षित और अशिक्षितके बीच किसी प्रकारका भेद नहीं स्वीकार करता। समाजमें हर एक नागरिकका स्थान धनकी योग्यता, जातीयता, या स्त्री-पुरुष भेद या पद निश्चित नहीं करते; बल्कि वैयक्तिक योग्यता और वैयक्तिक जाँगर उसे निश्चित करता है।

अन्तिम, नये संविधानके मसविदेका एक और भी रूप है। पूँजीवादी संविधान प्रायः ऊपरी तौरसे नागरिकोंके अधिकारोंको निश्चित करने ही तकमें अपने कर्तव्यकी इति श्री समझते हैं। वे इन अधिकारोंके उपयोगके लिए आवश्यक स्थितियों, उनके उपयोगकी सम्भवनाओं और जिन साधनों द्वारा

उनका उपयोग हो सकता है, उन साधनोंके बारेमें सोचनेकी तकलीफ़ गवारा नहीं करते। वे नागरिकोंकी समानताकी बात करते हैं, लेकिन वे इसे भूल जाते हैं कि मालिक और मजदूर, जमींदार और किसान—जब कि समाजमें एक के पास धन और राजनीतिक बल है, और दूसरा उन दोनोंसे वंचित है, जब कि एक चूसनेवाला है और दूसरा चूसा जानेवाला—के बीच कैसे वास्तविक समानता हो सकती है। अथवा वह व्याख्यान, सभा और प्रेसकी स्वतन्त्रताकी बात करते हैं; लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि सभी स्वतन्त्रताएँ श्रमिक श्रेणीके लिए सिर्फ़ खोखले शब्दमात्र हैं; जब कि उनके पास सभाओंके लिए उपयुक्त मकान नहीं, अच्छा छापाखाना नहीं, पर्याप्त परिमाणमें छापनेका काग़ज़ नहीं है, इत्यादि।

नये संविधानके मसविदेका यह विशेष रूप है, कि यह नागरिकोंके बाहरी अधिकारको निश्चित करने ही तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इन अधिकारोंकी गारंटीके लिए और इन अधिकारोंके उपयोगके लिए आवश्यक साधनोंका प्रबन्ध करता है। यह नागरिकोंके अधिकारोंकी समानताकी घोषणा मात्र नहीं करता, बल्कि कानून द्वारा इस बातको दृढ़ कर देता है, कि चूसनेका राज्य उठा दिया गया। नागरिक सभी प्रकारके चूसनोंसे स्वतन्त्र कर दिया गया। यह काम पानेके अधिकारकी घोषणा नहीं करता, बल्कि कानून इस बात का ज़िम्मा लेता है कि सोवियत्-समाजमें (मंदी आदि) दुर्घटनाओंका अस्तित्व नहीं। बेकारी नष्ट की जा चुकी है। यह जन-सत्ताक स्वतन्त्रताओं की सिर्फ़ घोषणा ही नहीं करता, बल्कि कानूनन् उनकी ज़िम्मेवारी लेता है और उसके लिए निश्चित आर्थिक साधन मुहय्या करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नये विधानके मसविदेमें जो जन-सत्ताकपन है, वह साधारण 'मामूली' और 'सर्वत्र स्वीकृत' जनसत्ताकता नहीं है; बल्कि समाजवादी जनसत्ताकता है।

स०स०स०र०के नये संविधानके मसविदेके ये हैं मुख्य निश्चित रूप।

नये संविधानका मसविदा १९२४से १९३६ तकके समयके भीतर

स०स०स०र० की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवनके सम्बन्धमें होने वाली उन्नति और परिवर्तनोंको सूचित करता है।

४. संविधान मसविदेपर पूँजीवादियोंका आक्षेप

संविधान-मसविदे पर पूँजीवादियोंके आक्षेपके बारेमें चन्द शब्द।

संविधान-मसविदेके प्रति विदेशी पूँजीवादी समाचार पत्रोंके भाव निस्सन्देह दिलचस्पीसे खाली नहीं हैं। चूँकि विदेशी पत्र पूँजीवादी देशों-की जनता भिन्न-भिन्न स्वरोंके जनमत प्रकट करते हैं, इसलिए उन्होंने विधानके मसविदेके खिलाफ़ जो दोष लगाये हैं, उनकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

संविधान-मसविदेके प्रति विदेशी पत्रोंके मनोभावका प्रथम आभास था, विधान-मसविदेकी उपेक्षा करना। मेरा मतलब यहाँ है, सबसे अधिक प्रगति-विरोधी फ़ासिस्ट पत्रोंसे। इस श्रेणीके समालोचकोंने यही अच्छा समझा, कि विधानके मसविदेकी उपेक्षा कर दी जाय, जिससे मालूम हो कि विधान जैसी चीज़ न कोई है न थी। यह कहा जा सकता है कि चुप रहना समालोचना नहीं है; लेकिन यह ठीक नहीं। चुप रहना भी, वस्तुकी सत्ताकी उपेक्षा करनेका एक खास ढंग भी, एक प्रकारकी आलोचना है—यह सच है कि वह मूर्खता-पूर्ण और हास्यास्पद प्रकारकी—लेकिन तो भी वह एक आक्षेप है (हँसी और हर्ष ध्वनि)। लेकिन उनके चुप रहनेका ढंग असफल रहा। अन्तमें वे मजबूर हुए कि बातको खोलें और दुनियाको सूचित करें। यद्यपि यह उनके लिए अफ़सोसकी बात थी, कि स०स०स०र०के संविधानके मसविदेका अस्तित्व है। इतना ही नहीं, बल्कि वह जनताके दिमागोंपर विषैला असर भी करने लगा है। यह छोड़ दूसरा हो ही नहीं सकता था। क्योंकि आखिर संसारमें पूँजीवादियोंमें जीते लोगोंमें कुछ जनमत है, और वे चाहते हैं बातके सच-झूठ-के बारेमें जानना। ऐसे लोगोंको चिरकाल तक धोखेमें रखना बिलकुल असंभव है। धोखा देना बहुत दूर तक नहीं चल सकता।.........

दूसरे प्रकारके समालोचक स्वीकार करते हैं कि विधान-मसविदा नामकी एक चीज वस्तुतः है; लेकिन यह मसविदा कोई खास दिलचस्पीकी चीज नहीं है; क्योंकि वह वस्तुतः विधानका मसविदा नहीं है, बल्कि रद्दीका टुकड़ा, एक खोखली प्रतिज्ञा, तिकड़म लगाकर जनताको धोखेमें डालना है। वह यह भी कहते हैं, कि स०स०स०र० इससे बेहतर मसविदा नहीं तैयार कर सकता था; क्योंकि वह एक राज्य नहीं है, बल्कि भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)। और चूँकि वह एक राज्य नहीं है, इसलिए उसका विधान वास्तविक विधान नहीं हो सकता। इस प्रकारके समालोचकोंका अच्छा नमूना, यद्यपि यह सुनकर ताज्जुब होगा, जर्मन अर्द्धसरकारी पत्र "डुचाश् डिप्लोमातिश्-पोलितिश् कोरेस्पोन्डेंज" । यह पत्र मुँहफट होकर कहता है—कि स०स०स०र०के *विधान मसविदा एक खोखली प्रतिज्ञा, जालसाजी और "पोतेमकिन् गाँव"* है। यह निस्संकोच होकर घोषित करता है कि 'स०स०स०र० एक राज्य नहीं है। स०स०स०र० निश्चित सीमासे युक्त एक भौगोलिक संज्ञासे अधिक कुछ भी नहीं है।' (हँसी)। इस मतके अनुसार स०स०स०र०का संविधान वास्तविक विधान नहीं समझा जा सकता।

कृपया बतलाइए तो, ऐसे समालोचकोंके लिए क्या कहना चाहिए?

रूसी महान् लेखक स्चेद्रिन् अपनी कहानियोंमें एक बैल अफसरको चित्रित करता है। वह बड़ा ही संकीर्ण और जिद्दी स्वभावका था। लेकिन उसका आत्मविश्वास और उत्साह हदको पहुँचा हुआ था। इस नौकरशाहने हजारों निवासियोंको नाशकर और बीसों शहरोंको जलाकर अपने शासित प्रदेशमें शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। फिर उसने अपने चारों तरफ देखा और क्षितिजपर अमेरिका जैसे एक देशको देखा, जो बहुत कम लोगोंको मालूम था। और जहाँके बारेमें कहा जाता था, कि वहाँ किसी न किसी तरहकी स्वतंत्रता है, जो लोगोंको उत्तेजित करती है। और जहाँका राज्य शासन दूसरे किस्मका है। नौकरशाहने अमेरिकाको देखा। और उसे बुरा लगने लगा। वह कैसा देश है! और कैसे वहाँ

पहुँच गया ? अपनी सत्ता कायम रखनेका उसको क्या अधिकार है (हँसी और हर्षध्वनि) ? हाँ, उसका अकस्मात् कई सदियों पूर्व पता लगा था, लेकिन क्या उसे फिर अन्तर्हित नहीं किया जा सकता ? जिसमें कि उसकी छाया तक बाकी न रह जाय (हँसी) ? तब उसने हुक्म लिखा—"बन्द कर दो अमेरिकाको फिर।" (हँसी)। मैं समझता हूँ, ड्वाश-डिप्लोमातिश्-पोलितिश् कौरेस्पोन्डेंजके सज्जन और श्चेद्रिन्‌का नौकरशाह जुड़वेंकी तरह हैं (हँसी और हर्षध्वनि)। स०स०स०र० देरसे इन सज्जनोंकी आँखोंमें किरकिरी बना हुआ था। १६ वर्ष तक स०स०स०र० प्रदीप स्तंभकी भाँति सारी दुनियाकी श्रमिक-श्रेणीमें मुक्तिका भाव फैलाता एवं श्रमिक-श्रेणीके दुश्मनोंके क्रोधको जगाता और पता लगता है कि यह स०स०स०र० मौजूद ही नहीं है, बल्कि बराबर बढ़ रहा है। बढ़ ही नहीं रहा है, बल्कि सम्पत्ति-शाली होता जा रहा है। सम्पत्तिशाली ही नहीं होता जा रहा है, बल्कि वह एक नये विधानका मसविदाभी तैयार कर रहा है। ऐसा मसविदा जो कि दलित श्रेणियोंके दिमागमें उत्तेजना पैदा करता और नई आशाका संचार करता है (हर्षध्वनि)। ऐसा होनेपर कैसे जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्रके सज्जनोंको अनकुस न लगेगा ? वह चिल्लाते हैं, कौन यह देश है ? और यदि अक्तूबर १९१७में उसका पता लगा, तो इसे फिर क्यों न उसी तरह बन्द कर दिया जाय कि उसकी छाया भी बाकी न रहे। उसके बाद उन्होंने तय किया—स०स०स०र०को फिर बन्द कर दो। लोगोंके सामने बाँह उठाकर चिल्लाओ। स०स०स०र० राष्ट्रके तौरकी कोई चीज नहीं है। स०स०स०र० सिर्फ भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)।

श्चेद्रिन्‌के नौकरशाहने अमेरिकाको फिर बन्द करनेका हुक्म लिखते हुए, चाहे कुछ भी हो, कुछ वास्तविकताका ख्याल जरूर रखा, जब कि हुक्म लिखते वक्त उसने यह भी जोड़ दिया—"तो भी यह मालूम होता है, कि यह मेरे अधिकारके भीतरकी बात नहीं है।" (हँसी और हर्षध्वनिकी गर्जना)। मैं नहीं जानता कि जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्रके सज्जन इतने अधिक बुद्धिमान्

हैं जो सोचें कि 'बन्द कर दो' यह किसी राज्यके बारेमें वह कागजपर नहीं लिख सकते ! लेकिन विचारपूर्वक कहनेपर 'यह मेरे अधिकारके भीतर नहीं है' कहना पड़ेगा ।............(हँसी और हर्षध्वनिकी गर्जना)

यह कहना कि 'स०स०स०र०का संविधान खोखली प्रतिज्ञा है, पोतेमूकिन् गाँव है' इत्यादि । इसके लिए मैं कुछ सर्वसिद्ध घटनाएँ कहूँगा, जो खुद शहादत देंगी ।

१९१७में स०स०स०र०की जनता ने पूँजीवादियोंको पदच्युत किया और श्रमजीवियोंका अधिनायकत्व स्थापित किया । एक सोवियत् सरकारको स्थापित किया । यह वास्तविक है, (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं है ।

और भी । सोवियत् सरकारने जमींदार श्रेणीको उठा दिया और १५ करोड़ हेक्टर (प्रायः ३६ करोड़ एकड़) जमीन जो पहले जमींदारों, मठों, और जारके हाथमें थी, इसके अतिरिक्त और भी भूमि जो कि पहले ही से किसानोंके हाथमें थी, छीनकर किसानोंको दे दी । यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं ।

और भी । सोवियत् सरकारने पूँजीपति-श्रेणीको बेदखल कर दिया । उनके बैंकों, फैक्टरियों, रेलों, और उपजके औजारों तथा साधनोंको छीनकर उन्हें समाजकी सम्पत्ति घोषित किया और इन उद्योगोंके प्रबंधकेलिए श्रमिक-श्रेणीके योग्यतम व्यक्तियोंको नियुक्त किया । यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं । (देर तक हर्षध्वनि)

और भी । उद्योग और कृषिको, एक नये साम्यवादी तरीकेके अनुसार, एक नई वैज्ञानिक प्रक्रियाके आधारपर संगठितकर आज सोवियत् सरकार ऐसी अवस्थामें पहुँची है, जब कि स०स०स०र०की खेती लड़ाईके पहले होनेवाले अनाजका ड्योढ़ा अन्न पैदा करती है; और उद्योग लड़ाईके पहलेसे पँचगुना चीजें पैदा कर रहा है । राष्ट्रीय आय लड़ाईके पहलेसे चौगुनी हो गई है । यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं । (देर तक हर्षध्वनि)

और भी । सोवियत् सरकार ने बेकारीको उठा दिया । काम पानेका अधिकार, शान्ति और छुट्टी पानेका अधिकार, शिक्षाका अधिकार, सबको

दिया। कमकरों, किसानों और बुद्धिजीवियोंकेलिए बेहतर आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति तैयार की, और (चुनावमें) छिपी पुर्जीके साथ सार्वजनिक प्रत्यक्ष और समान-मताधिकार अपने नागरिकोंकेलिए प्रदान किया, यह वास्तविक है; (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं। (लंबी हर्षध्वनि)

अन्तमें, स०स०स०र०ने एक नये संविधानका मसविदा तैयार किया। वह प्रतिज्ञा नहीं है, बल्कि सर्व-साधारणको विदित बातोंका दर्ज करना और क़ानून द्वारा दृढ़ करना है। यह उन बातोंका दर्ज करना और क़ानून द्वारा दृढ़ करना है, जो जीती और प्राप्त की जा चुकी हैं।

प्रश्न होता है, क्यों जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्रके सज्जन यह सब पोते-म्किन् गाँवके बारेमें कहते हैं; अगर वह नहीं चाहते कि जनतासे स०स०स०र० सम्बन्धी सत्यको छिपाया जाय, उन्हें बरगलाया जाय, धोखा दिया जाय।

यह वास्तविक बात है और वास्तविकताके बारेमें कहा जाता है कि वह दुर्दम्य चीज है। जर्मन-अर्द्धसरकारी पत्रके सज्जन कह सकते हैं, वह और भी बुरा है (हँसी)। लेकिन हम उन्हें प्रसिद्ध रूसी कहावत के शब्दोंमें कह सकते हैं—'क़ानून बेवकूफ़ोंकेलिए नहीं बनाये जाते'। (हँसी और लम्बी हर्ष-ध्वनि)

तीसरी श्रेणीके समालोचक संविधानके मसविदेके कुछ गुणोंको स्वीकार करनेके विरुद्ध नहीं है। वह इसे अच्छी बात समझते हैं, लेकिन उनको बहुत सन्देह है कि उसके सिद्धान्तोंमेंसे कितने ही प्रयोगमें नहीं लाये जा सकते। उनको विश्वास है, कि ये सिद्धान्त आम तौरसे अव्यवहार्य हैं और वे किताब हीमें पड़े रहेंगे। यह सन्दिग्ध-विचारी लोग हैं। ऐसे सन्दिग्ध-विचारी सभी देशोंमें पाये जाते हैं।

लेकिन ऐसे सन्देहवाले लोग हमें यह पहली ही बार नहीं मिले हैं। जब १९१७में बोल्शेविकोंने अधिकार हाथमें लिया, तो इन सन्देहवादियोंने कहा—"बोल्शेविक बुरे नहीं हैं, शायद! लेकिन वे शासन नहीं कर सकेंगे।

वे विफल होंगे !" लेकिन असल बात क्या हुई ? बोल्शेविक नहीं, बल्कि सन्देहवादी नाकामयाब हुए।

इस प्रकारके सन्देहवादियोंने गृह-युद्ध और उसमें विदेशियोंके नाजायज़ दखल देनेके वक़्त कहा—सोवियत् सरकार बुरी चीज़ नहीं है, लेकिन देनिकिन् और कोल्चक्—हम बतला देना चाहते हैं, अवश्य विजयी होंगे। लेकिन यहाँ भी बात उलटी हुई। सन्देहवादियोंका अनुमान गलत निकला।

जब सोवियत् सरकारने प्रथम पंचवार्षिक योजना प्रकाशित की, तो फिर सन्देहवादियोंकी सूरतें दिखलाई देने लगीं। उन्होंने कहा—पंचवार्षिक योजना जरूर अच्छी चीज़ है, लेकिन इसका होना बहुत मुश्किल है। बोल्शेविकोंकी पंचवार्षिक योजना कामयाब होनेवाली नहीं है। लेकिन असल बातने सिद्ध कर दिया कि अभागके मारे सन्देहवादी फिर एक बार हारे ! पंचवार्षिक योजना चार वर्षमें पूरी हुई !

यही बात नये विधानके मसविदे और सन्देहवादियोंके किये आक्षेपोंके बारेमें कही जा सकती है। जैसे ही मसविदा प्रकाशित हुआ, वैसे ही इस प्रकारके समालोचक मैदानमें अपने निराशापूर्ण सन्देहके साथ तथा विधानके कुछ सिद्धान्तोंकी अव्यवहार्यतापर सन्देह करते दिखलाई पड़े। इसमें सन्देहकी जरा भी गुंजायश नहीं, कि इस बार भी सन्देहवादी नाकामयाब होंगे। आज भी वैसे ही नाकामयाब होंगे, जैसे पहले अनेक बार हो चुके हैं।

चौथे प्रकारके समालोचक नये संविधानके मसविदेपर आक्षेप करते हुए उसके बारेमें नाना स्वरोंमें कहते हैं—"यह दक्षिणपार्श्व (नर्मदल)की ओर झुकना", "श्रमजीवियोंके अधिनायकत्वका परित्याग", "बोल्शेविक शासनका खातमा", "बोल्शेविक दक्षिण पार्श्वकी ओर झुक गये, यह सच्ची बात है।" ऐसे कहनेवालोंमें कुछ पोलैंडके समाचार-पत्र तथा कितने ही अमेरिकाके समाचार-पत्र बड़ा जोश दिखला रहे हैं। कृपया बतलाएँ तो ऐसे समालोचकोंकेलिए क्या कहा जाय ?

श्रमजीवी श्रेणीके अधिनायकत्वके आधारको और विस्तृत करने

और अधिनायकत्वको और भी लचकदार तथा राज्य द्वारा समाजके नेतृत्वके-लिए और भी प्रबल; श्रमजीवी श्रेणीके अधिनायकत्वको मजबूत करना नहीं कहकर कमजोर करना कहते हैं, या त्याग देना तक कहते हैं, तो क्या उनसे यह पूछना उचित न होगा ?—क्या ये सज्जन वस्तुतः जानते हैं कि श्रमजीवी श्रेणीका अधिनायकत्व क्या चीज है ? यदि समाजवाद-की विजयोंको कानूनन् दृढ़ता प्रदान करना, उद्योगीकरण; पंचायती-करण और जनसत्ताकी-करणकी कामयाबियोंको कानूनन् दृढ़ करना 'दक्षिण-पार्श्वकी ओर झुकना है' तो यह पूछना उचित होगा—"क्या सचमुच यह सज्जन जानते हैं कि दक्षिण और वाममें क्या भेद है ?" (हँसी और हर्षध्वनि)।

इसमें सन्देह नहीं कि यह सज्जन संविधानके मसविदेकी आलोचना करते हुए अपना रास्ता बिल्कुल भूल गये । और रास्ता भूल जानेपर दक्षिण-वामका उन्हें पता नहीं ।

इस सम्बन्धमें मुझे गोगोल्के 'मृत आत्मा' की दासी पेलागेया याद आ रही है । पेलागेयाने चिचिकोफ़्के कोचवान सेलिफ़न्को रास्ता बतानेका जिम्मा लिया । लेकिन उसे रास्तेका दाहिना, बायाँ भाग मालूम नहीं था, जिससे वह रास्ता भूल किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई । यह मानना पड़ेगा, जानकारीका दम भरते हुए भी पोलिश् समाचार-पत्रवाले आलोचकोंका ज्ञान 'मृत आत्मा'की दासी पेलागेयासे अधिक नहीं है (हर्षध्वनि) । आपको स्मरण होगा, कि कोचवान सेलिफ़न्ने ताना मारते हुए कहा—'ओः, तू मूर्खा...तुझे दाहिने-बायेंका भेद मालूम नहीं है ।' हमारे ये अभागे आलोचक भी उसी तरहके तानेके पात्र मालूम होते हैं—'ओः, तुम बेचारे आलोचको,...तुम्हें दाहिने बायेंका भेद मालूम नहीं है ।' (लम्बी हर्षध्वनि)

अन्तिम । दूसरे प्रकारके भी कुछ आलोचक हैं । पिछले प्रकारके आलो-चक जहाँ संविधानके मसौदेपर श्रमिक श्रेणीके अधिनायकत्वको परित्याग करनेका दोष लगाते हैं; वहाँ ये आलोचक लोग, उसके विरुद्ध आक्षेप करते हैं, कि इसमें स०स०स०र०की वर्तमान अवस्थामें परिवर्तन करनेकी कोई बात

नहीं; श्रमिक श्रेणीका अधिनायकत्व पूर्ववत ही है; राजनीतिक दलोंको स्वतंत्रता नहीं दी गई है; और स०स०स०र०में पूर्ववत् ही साम्यवादी-दल (कम्युनिस्ट पार्टी)का नेतृत्व कायम रक्खा गया है। इस प्रकारके आलोचकोंका ख़याल है, कि स०स०स०र०में (राजनीतिक) दलोंका अभाव, जनसत्ताकताके सिद्धान्तोंकी अवहेलना है।

मैं स्वीकार करता हूँ, कि नये संविधानके मसौदेमें, सचमुच, श्रमिक-श्रेणीका अधिनायकत्व वैसे ही क़ायम रक्खा गया है; जैसे कि उसमें साम्यवादी दलका नेतृत्व क़ायम रखा गया है (उच्च हर्षध्वनि)। यदि हमारे आदरणीय आलोचक इसे विधानके मसौदेका कलंक समझते हैं, तो यह अफ़सोसकी बात है। हम बोल्शेविक इसे मसौदेका गुण समझते हैं (उच्च हर्षध्वनि)

राजनैतिक दलोंकी स्वतंत्रताके सम्बन्धमें हमारी सम्मति दूसरी है। दलका मतलब है श्रेणीका एक भाग, उसका अग्रणी भाग। बहुतसे दल और इसीलिये दलोंकी स्वतंत्रता ऐसे ही समाजमें रह सकती है, जिसमें परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं, जिन श्रेणियोंका स्वार्थ एक दूसरीके खिलाफ़ और न सुलह होने लायक़ है। जिनमें कि पूँजीपति और कमकर, जमींदार और किसान, कुलक और गरीब किसान आदि हैं। किन्तु स०स०स०र०में अब पूँजीपति, जमींदार कुलक जैसी श्रेणियाँ नहीं हैं। स०स०स०र०में सिर्फ दो श्रेणियाँ हैं। कमकर और किसान, जिनके स्वार्थ एक दूसरेके विरोधी नहीं। बल्कि उनके स्वार्थ एक दूसरेके सहायक हैं। इसीलिए स०स०स०र०में अनेक राजनीतिक दलोंकी जरूरत नहीं। और इसीलिए इन दलोंकी स्वतंत्रताका भी प्रश्न नहीं होता। स०स०स०र०में सिर्फ एक दल साम्यवादी-दलकी आवश्यकता है। स०स०स०र०में सिर्फ एक दल साम्यवादी रह सकता है जो कि हिम्मतके साथ कमकरों और किसानोंके स्वार्थकी पूर्णतया रक्षा करता है। और यह इन श्रेणियोंके स्वार्थ की रक्षा बहुत खूबीसे करता है; इसमें जरा भी सन्देह की गुञ्जायश नहीं। (उच्च हर्षध्वनि)

वे लोग जनसत्ताकताकी बात करते हैं; लेकिन जनसत्ताकता क्या

है ? पूँजीवादी देशोंमें जहाँ कि परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं—दूर तक विचार करनेपर वह जनसत्ताकता है बलवानोंकेलिए, जनसत्ताकता है अल्पसंख्यक धनी श्रेणीकेलिए। इसके विरुद्ध स०स०स०र०में प्रजासत्ताकता है जाँगर चलानेवालोंकी प्रजासत्ताकता। अर्थात् सबकी प्रजासत्ताकता। इससे तो यही मालूम होता है कि जनसत्ताकताके सिद्धान्तोंकी अवहेलना स०स०स०र०के नये विधानके मसविदेमें नहीं है; बल्कि पूँजीवादी विधानोंमें है। इसीलिए मैं समझता हूँ कि स०स०स०र०का विधान ही संसारमें पूर्णतया जनसत्तात्मक विधान है।

स०स०स०र०के नये विधानके मसविदेकी जो आलोचना पूँजीवादियोंने की है, उसकी यह स्थिति है।

५. संविधान-मसविदेके संशोधन

आइए, मसविदेके संबंधमें जो सारे राष्ट्रमें चारों ओर बहस करते समय नागरिकोंने विधानके मसविदेमें संशोधन पेश किये हैं, उनपर विचार करें।

सारे राष्ट्रमें चारों ओर संविधानके मसविदेपर वाद-विवाद हुए हैं। उन्होंने बहुत अधिक संख्यामें संशोधन और संवर्द्धन पेश किये हैं। वे सोवियत् पत्रोंमें प्रकाशित हुए हैं। संशोधनोंकी नानाकारता और सभीका मूल्य बराबर नहीं है। इसे देखते हुए मेरी रायमें उन्हें तीन क़िस्मोंमें विभक्त किया जा सकता है।

पहली क़िस्मके संशोधनोंकी यह विशेषता है कि वह विधान-संबंधी प्रश्न से संबंध नहीं रखते, बल्कि उन प्रश्नोंसे संबंध रखते हैं, जो कि भविष्यकी धारा-सभाओंके तात्कालिक क़ानूनी कामके भीतर आते हैं। कुछ बीमाके प्रश्न से संबंध रखते हैं। कुछ कलखोज़के ढाँचा सम्बन्धी प्रश्न, कुछ हमारे उद्योगके ढाँचे तथा आर्थिक समस्याओंसे संबंध रखते हैं। इन संशोधनोंका विषय उक्त प्रकारसे है। मालूम देता है, इन संशोधनोंको पेश करनेवालोंको विधान-सम्बन्धी समस्याओं और तात्कालिक क़ानून-सम्बन्धी समस्याओंका भेद स्पष्ट

नहीं मालूम हुआ। यही वजह है कि अधिक से अधिक जितने कानून हो सकें, उन्हें विधानके भीतर ठूसनेका प्रयत्न करते हैं और इस प्रकार विधान को एक कानूनकी पोथीकी शकल देना चाहते हैं। विधान मौलिक कानून है और वह सिर्फ मौलिक कानून है। विधान भविष्यकी धारा-सभाओंके अख्तियारके तात्कालिक कानून-निर्माणके कामको पहले हीसे मान लेता है, और उनके कामोंको भी अपने भीतर नहीं शामिल करता। विधानका काम है कि वह इन धारासभाओंके भविष्यके कानून बनाने के काममें सीमा और वैधानिकता प्रदान करें। इस प्रकारके संशोधन और परिवर्द्धन विधान से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं रखते। इसलिए उन्हें देशके भविष्यकी धारा-सभाओंमें भेज देना चाहिए।

दूसरे प्रकारके संशोधन वे हैं, जो कि विधानमें ऐतिहासिक उल्लेखों या सोवियत् सरकार जिसे अभी नहीं पा चुकी है, या जिसे भविष्यमें उसे पाना चाहिए, के बारेमें घोषणाओंको शामिल करना चाहते हैं। विधानमें पार्टी, श्रमिक-श्रेणी और सभी जाँगर चलानेवालों ने समाजवादकी विजयकेलिए वर्षों-की लड़ाइयोंमें जिन कठिनाइयोंको दूर किया; उनका विधानमें उल्लेख करना सोवियत् आन्दोलनका अन्तिम लक्ष्य अर्थात् पूर्णतया साम्यवादी समाजके निर्माणको विधानमें सूचित करना। ये हैं वे विषय जिन्हें अनेक प्रकार से ये संशोधन पेश करते हैं। मैं समझता हूँ कि इस प्रकारके संशोधनोंको भी छोड़ देना चाहिए, क्योंकि विधानसे उनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं है। जो बातें अभी तक हस्तगत और प्राप्त की जा चुकी हैं, उनके उल्लेख और कानूनके रूप देनेको विधान कहते हैं। यदि हम विधानके इस मौलिक लक्षणको तोड़ना-फोड़ना नहीं चाहते हैं, तो हमें भूतके ऐतिहासिक उल्लेखों या भविष्यमें स०स०स०र०के जाँगर चलानेवालोंकी सफलताओंके सम्बंधकी घोषणाओंसे इसे भरनेसे परहेज करना चाहिए। इसके लिए हमारे पास दूसरे तरीके और दूसरे दस्तावेज मौजूद हैं।

अन्तिम। तीसरे प्रकारके संशोधन वे हैं; जिनका सीधा सम्बन्ध विधानके मसविदेसे है।

इस प्रकारके संशोधनोंमें अधिकतर ऐसे हैं जो सिर्फ शब्द-योजनासे सम्बन्ध रखते हैं। उन्हें वर्तमान कांग्रेसके मसविदा बनानेवाले कमीशनको दे देना चाहिए। मैं समझता हूँ कि कांग्रेस ऐसे एक कमीशनको नये विधानके अन्तिम आकारको निश्चित करनेकेलिए नियुक्त करने जा रही है।

बाकी संशोधन अपने विषयमें विशेषता रखते हैं। उनके बारेमें मेरी रायमें कुछ कहना चाहिए।

(१) सबसे पहले मैं संविधान-मसविदेकी पहली धाराके संशोधनोंके बारेमें कहता हूँ। इस प्रकारके चार संशोधन हैं। कुछमें कहा गया है, कि "कमकर और किसान-राज्य"की जगह "जाँगर चलानेवालों का राज्य" रख देना चाहिए। दूसरे कहते हैं, कि उसमें "और बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता" "कमकरों और किसानोंके राज्य"के साथ जोड़ देना चाहिए। तीसरे प्रकारके संशोधनोंमें कहा गया है कि "कमकरों और किसानोंके राज्य"की जगह "स०स०स०र०की भूमिमें बसनेवाली सभी जातियों और राष्ट्रों का राज्य" रखना चाहिए। चौथे प्रकारके संशोधनोंमें कहा गया है कि "किसान"-की जगह "कलखोजी या समाजवादी कृषिके जाँगर चलानेवाले" रखना चाहिए।

क्या इन संशोधनोंको स्वीकृत करना चाहिए? मेरी रायमें नहीं स्वीकृत करना चाहिए। विधान-मसविदाकी पहली धारा क्या कहती है? यह बतलाती है कि सोवियत् समाज किन-किन श्रेणियोंसे मिलकर बना है। क्या हम मार्क्सवादी, विधानमें जिन श्रेणियोंसे मिलकर हमारा समाज बना है, उनकी उपेक्षा कर सकते हैं? नहीं हम नहीं उपेक्षा कर सकते। हम जानते हैं कि सोवियत्-समाज दो श्रेणियोंसे मिलकर बना है—एक कमकर श्रेणी और एक किसान श्रेणी। और इसी बातको विधान-मसविदेकी पहली धारा बतलाती है। यह पहली धारा हमारे समाजकी श्रेणी-सम्बंधी बनावटको सूचित करती है। प्रश्न हो सकता है, कि बुद्धिजीवी कार्यकर्ताओंको फिर क्यों छोड़ दिया गया? बुद्धिजीवी समुदाय कभी एक श्रेणी न था, और न कभी वह

एक श्रेणी हो सकता है। वह हमेशा एक ऐसा स्तर था और अब भी है जोकि समाजकी सभी श्रेणियोंसे लेकर अपने सदस्य बनाता है। पुराने जमानेमें बुद्धिजीवी समुदाय अमीरों, मध्यम वर्ग और कुछ-कुछ किसानों और बहुत-ही कम कमकरोंमेंसे अपने सदस्योंकी भर्ती करता था। हमारे सोवियत्के जमानेमें बुद्धिजीवी समूहके प्रायः सभी सदस्य कमकरों और किसानोंमेंसे भर्ती किये जाते हैं। चाहे जैसे भी वह अपने सदस्योंकी भर्ती करता हो, चाहे जैसी भी उसकी शकल हो, वह जरूर एक स्तर है, श्रेणी नहीं।

क्या ऐसी स्थितिके कारण बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओंके अधिकारोंपर प्रहार होता है? बिलकुल नहीं। विधान-मसविदेकी प्रथम धारा सोवियत्-समाजके नाना स्तरोंके अधिकारकी बात नहीं करती। वह सिर्फ समाजकी श्रेणी-संबंधी बनावट बतलाती है। सोवियत्-समाजके नाना स्तरों— जिनमें बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता भी शामिल हैं—के अधिकारोंको विधान-मसविदेके दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदोंमें मुख्तया कहा गया है। उन परिच्छेदोंसे साबित है कि कमकर, किसान और बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता देशके आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनके सभी क्षेत्रोंमें बिलकुल समान अधिकार रखते हैं। इसलिए बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओंके अधिकारोंके ऊपर प्रहारका प्रश्न ही नहीं होता।

स०स०स०र०में रहनेवाली जातियों और राष्ट्रोंके बारेमें भी वही बात कही जा सकती है। विधान-मसविदेके दूसरे परिच्छेदमें कहा गया है, कि स०स०स०र० समान अधिकारोंवाली जातियोंका एक स्वतंत्र संघ है। क्या यह अच्छा होगा, कि इस सूत्रको विधान-मसविदेकी पहली धारा—जो कि सोवियत् समाजकी जातिक बनावटकी बात नहीं करती, बल्कि उसकी श्रेणी-सम्बन्धी बनावटको कहती है—में दोहराया जाय? निश्चय ही नहीं दोहराना चाहिए। स०स०स०र०के राष्ट्रों और जातियोंके अधिकारोंको विधान-मसविदेके दूसरे, दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदोंमें कहा ही जा चुका है। उन परिच्छेदोंसे स्पष्ट है, कि स०स०स०र०के राष्ट्र और जातियाँ देशके आर्थिक, राजनीतिक,

सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनके सभी क्षेत्रोंमें समान अधिकार रखती हैं। इसलिए जातीय अधिकारोंपर प्रहारका सवाल ही नहीं उठता।

यह भी ठीक नहीं होगा, कि 'किसान'की जगह 'कल्खोजी' या 'समाजवादी कृषिका जाँगर चलानेवाला' रक्खा जाय। पहली बात यह है, कि कल्खोजियोंके अतिरिक्त अभी किसानोंके गैर-कल्खोजी १० लाखके करीब किसान-घर हैं। उनके बारेमें क्या करना होगा? क्या इस संशोधनके पेश करनेवाले चाहते हैं कि उनका नाम ही किताबसे काट दिया जाय? यह बुद्धिमानी नहीं होगी। दूसरी बात। चूँकि बहुसंख्यक किसान कल्खोजी हैं, इसका यह मतलब नहीं निकलता, कि अब वह किसान ही नहीं हैं? और उनके पास, अपना घर, थोड़ा पिछवाड़ेका खेत आदि है ही नहीं। तीसरी बात। ऐसा स्वीकार करनेपर तो "कमकर"की जगह भी हमें "समाजवादी जाँगर चलानेवाला" बनाना पड़ेगा। जिसके बारेमें कि संशोधनकर्त्ता न जाने क्यों चुप हैं? अन्तिम बात। क्या कमकर-श्रेणी और किसान-श्रेणी लुप्त हो चुकी है? अगर लुप्त नहीं हुई है, तो क्या यह अच्छा होगा कि उनके स्थापित नामको कोषसे उड़ा दिया जाय? वास्तविक बात यह है कि संशोधन पेश करनेवालेके दिमागमें वर्तमान समाज नहीं है। वह भविष्य समाजका खयाल कर रहा है, जब कि श्रेणियाँ नहीं रह जायँगी; और कमकर तथा किसान साम्यवादी समाजके जाँगर चलानेवालोंके रूपमें परिणत हो जायँगे। इसीलिए ऐसे संशोधन पेश करनेवाले बहुत आगे उड़ रहे हैं। लेकिन विधान बनाते वक़्त भविष्यसे न आरंभ करके वर्तमान—जो कि इस वक़्त अस्तित्वमें आ चुका है—से आरंभ करना चाहिए। विधानको बहुत आगे न दौड़ना है, न दौड़ना चाहिए।

(२) उसके बाद संविधान-मसविदेकी सत्रहवीं धारापर एक संशोधन है। इस संशोधनमें कहा गया है; कि सत्रहवीं धारा, जिसमें कि संघरिपब्लिकों को स०स०स०र०से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होनेका अधिकार दिया गया है, उसे बिलकुल हटा दिया जाय। मैं समझता हूँ, यह प्रस्ताव उचित नहीं है।

इसलिए कांग्रेसको इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। स०स०स०र० समान अधिकारवाले संघ-रिपब्लिकोंका स्वेच्छा-संघ है, विधानसे इस धारा—जो कि स०स०स०र०से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होनेका अधिकार प्रदान करता है—को निकाल देना इस संघके स्वेच्छापूर्वक होनेकी विशेषताके विरुद्ध जाना है। क्या हमें ऐसा कदम उठाना चाहिए? मैं समझता हूँ, हम ऐसा कदम उठा नहीं सकते, न उठाना चाहिए। कहा जाता है, कि स०स०स०र०में एक भी रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र०से अलग होना चाहता हो; इसलिए धारा १७का कोई क्रियात्मक उपयोग नहीं। निश्चय यह ठीक है कि एक भी ऐसा रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र०से अलग होना चाहता हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम स०स०स०र०से संघ-रिपब्लिकोंके स्वतंत्रतापूर्वक अलग होनेके अधिकारकेलिए विधानमें जगह न दें। स०स०-स०र०में एक भी ऐसा संघ-रिपब्लिक नहीं है, जो कि दूसरे संघ-रिपब्लिक-पर अत्याचार करना चाहता हो, लेकिन इसका मतलब हर्गिज नहीं कि हम स०स०स०र०के विधानसे उस धाराको निकाल दें, जो कि संघ-रिपब्लिकोंके अधिकारोंकी समानता बतलाती है।

(२) एक प्रस्ताव है, कि संविधान-मसविदेके दूसरे परिच्छेदमें एक नई धारा निम्न अर्थकी जोड़ दी जाय—"उपयुक्त आर्थिक और सांस्कृतिक विकासके तलपर पहुँचनेके बाद स्वायत्त सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकोंको संघ-सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकोंके रूपमें परिणत किया जा सकता है।" क्या इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया जाय? मेरे विचारमें इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। यह गलत प्रस्ताव है। अपने अभिप्राय हीमें नहीं; बल्कि इसलिए कि यह शर्त पेश करता है। आर्थिक और सांस्कृतिक परिपक्वता-पर जोर देकर स्वायत्त-रिपब्लिकोंको संघ-रिपब्लिकोंकी श्रेणीमें परिणत करनेके लिए कारणके तौरपर जोर नहीं दिया जा सकता। और न ही आर्थिक या सामाजिक पिछड़ेपनको स्वायत्त-रिपब्लिकोंकी सूचीमें किसी एक रिपब्लिकको छोड़ रखनेकेलिए कारण माना जा सकता है। यह मार्क्सवादी लेनिन्वादी

दृष्टि नहीं है। उदाहरणार्थ तातार-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक ही बनी है, जब कि कज़ाक-रिपब्लिक संघ-रिपब्लिक बन गई है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सांस्कृतिक और आर्थिक विकासकी दृष्टिसे देखनेपर कज़ाक रिपब्लिक तातार रिपब्लिकसे अधिक ऊँची है। बात बिलकुल उलटी है। यही बात वोल्गा जर्मन स्वायत्त रिपब्लिक और किर्गिज संघ-रिपब्लिकके बारेमें भी कही जा सकती है। इन दोनोंमें पहली दूसरीकी अपेक्षा सांस्कृतिक और आर्थिक विकासमें अधिक आगे है; यद्यपि वह स्वायत्त-रिपब्लिक ही रह गई है। स्वायत्त-रिपब्लिकोंको संघ-रिपब्लिकोंके रूपमें परिणत करनेके कारण क्या हैं?

ऐसे तीन कारण हैं—

अव्वल ऐसे रिपब्लिकको सीमान्त रिपब्लिक—ऐसी रिपब्लिक जो कि चारों तरफ़से स०स०स०र०की भूमि से घिरी न हो—होना चाहिए। क्यों? क्योंकि संघ रिपब्लिकोंको स०स०स०र०से अलग होनेका अधिकार है। जब एक रिपब्लिक संघ-रिपब्लिक हो जाती है, तो न्यायतः उसे इस स०स०स०र०से अपने अलग होनेके प्रश्नको उठानेके योग्य होना चाहिए। लेकिन ऐसा प्रश्न वही रिपब्लिक उठा सकती है, जोकि किसी विदेशी राज्यकी सीमापर हो। और इसलिए चारों तरफ़ स०स०स०र०की भूमिसे घिरी न हो। निश्चय हमारे रिपब्लिकोंमेंसे एक भी स०स०स०र०से अलग होनेके प्रश्नको नहीं उठायेगी, लेकिन संघ-रिपब्लिकोंको स०स०स०र०से अलग होनेका अधिकार दिया हुआ है। इसलिए ऐसा प्रबंध होना चाहिए, कि यह अधिकार अर्थशून्य रद्दीका टुकड़ा न बन जाय। उदाहरणार्थ बश्किर-रिपब्लिक या तातार-रिपब्लिकको ले लीजिए। मान लीजिए, कि यह स्वायत्त-रिपब्लिक संघ-रिपब्लिकोंकी श्रेणीमें परिणत कर दी गई, तो क्या वस्तुतः और सचमुच वे स०स०स०र०से अलग होनेके प्रश्नको उठा सकती हैं? नहीं, नहीं उठा सकतीं। क्यों? क्योंकि वे चारों ओरसे सोवियत् प्रजातंत्रों और ज़िलोंसे घिरी हुई हैं। और स०स०स०र०से यदि अलग हों, तो उनको कहीं जानेका रास्ता नहीं (हँसी और

हर्षध्वनि)। इसलिए यह अनुचित होगा कि ऐसी रिपब्लिकोंको संघ-रिपब्लिकोंके रूपमें परिणत कर दिया जाय।

दूसरे, जो जातियाँ किसी सोवियत्-रिपब्लिकको अपना नाम देती हैं, उन्हें उस रिपब्लिकके भीतर कम या अधिक ठोस बहुमतमें होना चाहिए। उदाहरणार्थ क्रिमिया स्वायत्त-रिपब्लिकको ले लीजिए। यह एक सीमान्त रिपब्लिक है, लेकिन क्रिमियाके तातार उस रिपब्लिकके बहुमत नहीं हैं, उलटे वे अल्पमत हैं; इसलिए यह अनुचित और युक्ति-विरुद्ध होगा कि क्रिमिया रिपब्लिकको संघ-रिपब्लिकोंकी श्रेणीमें बदल दिया जाय।

तीसरे, रिपब्लिक की जन-संख्या बहुत ही कम न होनी चाहिए। उसकी *जन-संख्या, कहिए, कमसे कम १० लाखसे छोटी नहीं होनी चाहिए। क्यों?* क्योंकि यह समझना गलत होगा, कि कोई छोटी सी रिपब्लिक जिसकी जन-संख्या बहुत थोड़ी है और सेना बहुत छोटी है—एक स्वतंत्र राज्यके तौर-पर अपने अस्तित्वको कायम रख सकती है। इसमें सन्देहकी गुंजायश ही नहीं कि साम्राज्यवादी दरिन्दे तुरन्त ही उसे हड़पकर जायेंगे।

मेरी रायमें जब तक कि ये तीन कारण मौजूद न हों, वर्तमान ऐतिहासिक क्षणमें यह गलती होगी, यदि किसी एक स्वायत्त-रिपब्लिकको संघ-रिपब्लिकोंकी श्रेणीमें परिणत करनेका प्रश्न उठाया जाय।

(४) प्रस्ताव किया गया है, कि २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८ और २९ धाराओंसे प्रदेशों और जिलोंके रूपमें संघ-रिपब्लिकोंके प्रबन्ध-संबंधी प्रादेशिक विभागकी सविस्तर गणनाको निकाल दिया जाय। मेरी समझमें यह प्रस्ताव भी स्वीकार करने योग्य नहीं। स०स०स०र०में कुछ लोग ऐसे हैं, जो हमेशा इसके लिए बहुत उत्सुक और तैयार हैं कि बिना थके प्रदेश और जिले फिर बनाये जायँ और इस प्रकार हमारे काममें अनिश्चयात्मकता और भ्रम पैदा करें। विधान-मसविदा ऐसे लोगोंपर बन्धन लगाता है। और यह बहुत अच्छा है। क्योंकि इस ओर कितनी ही अन्य बातोंके विषयमें हमें

निश्चयात्मकताके वातावरणकी आवश्यकता है। हमें स्थिरता और स्पष्टता चाहिए।

(५) पाँचवाँ संशोधन धारा ३३के संबंधमें है। इसमें दो भवनोंका बनाना बेकार समझा गया है; और प्रस्ताव किया गया है कि जातिक-सोवियत्-को हटा दिया जाय। मेरी रायमें यह संशोधन भी गलत है। यदि स०स०स० र० एक-जातिक राज्य होता, तो दो भवनोंकी अपेक्षा एक भवनका होना बेहतर होता। लेकिन स०स०स०र० एक-जातिक राज्य नहीं है। स०स०स०र०, जैसा कि हम जानते हैं, एक बहुजातिक राज्य है। हमारे पास एक सर्वोच्च संस्था है, जिसमें जातिकताका ध्यान न करके स०स०स०र०के सभी जाँगर चलानेवालोंके सम्मिलित स्वार्थोंका प्रतिनिधित्व है। यह है संघकी सभा। लेकिन सम्मिलित स्वार्थोंके अतिरिक्त स०स०स०र०की जातियोंके अपने विशेष और निश्चित स्वार्थ हैं—जो कि उनकी निश्चित जातिक विशेषतासे संबंध रखते हैं। क्या इस विशेष स्वार्थकी उपेक्षा कर देनी चाहिए? नहीं, नहीं करनी चाहिए। क्या हमें एक विशेष सर्वोच्च संस्थाकी आवश्यकता है, जो कि स्पष्टतया इन विशेष स्वार्थोंको सूचित करे? निस्सन्देह हमें जरूरत है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी संस्थाके बिना स०स०स०र० जैसे बहुजातिक राज्यका प्रबंध करना असंभव होगा। ऐसी संस्था है यह द्वितीय भवन स०स० स०र०की जातिक-सभा।

यूरोपीय और अमेरिकन राज्योंके पार्लियामेंट-संबंधी इतिहासका उदाहरण देकर बतलाया गया है, कि उन देशोंमें दोहरे भवनकी प्रथाने सिर्फ अभावात्मक परिणाम ही पैदा किये हैं, और द्वितीय भवन आमतौरसे प्रतिक्रियाके केन्द्रके रूपमें बिगड़ जाता और प्रगतिके रास्तेमें रुकावट डालता है। यह सब सच है, लेकिन यह इस वजहसे है, कि उन देशोंमें दोनों भवनोंके बीच समानता नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं द्वितीय भवनको प्रायः पहले भवनसे अधिक अधिकार दिये गये हैं, और हमेशा द्वितीय भवनका निर्माण जनसत्ता विरोधी ढंगसे होता है। अकसर इनके सदस्य ऊपरसे नियुक्त किये

जाते हैं। निस्सन्देह ही यह दोष लुप्त हो जाते हैं जब कि दोनों भवनोंमें समानता स्थापित की गई हो; और जब कि द्वितीय भवन भी प्रथमकी तरह ही जनसत्ताकीय रीतिसे स्थापित हुआ हो।

(६) और भी। संविधान-मसविदेमें एक बात जोड़नेकेलिए कही गई है—दोनों भवनोंके सदस्योंकी संख्या बराबर होनी चाहिए। मेरी रायमें इस प्रस्तावको स्वीकृत किया जा सकता है। मेरे विचारमें इसका राजनैतिक लाभ स्पष्ट है। क्योंकि यह दोनों भवनोंकी समानतापर जोर देता है।

(७) इसके बाद संविधान-मसविदेमें यह जोड़नेका प्रस्ताव आया है कि जातिक-सभाके सदस्योंको भी संघ-सभाके सदस्योंकी तरह साक्षात् निर्वाचन द्वारा चुना जाय। मैं समझता हूँ, इस प्रस्तावको भी स्वीकृत कर लेना चाहिए। यह सच है कि इसके कारण चुनावोंमें कुछ दफ्तरी असुविधाएँ होंगी, लेकिन दूसरी ओर इसका राजनैतिक लाभ भी बहुत ज़्यादा है, क्योंकि यह जातिक सभा (सोवियत्)के सन्मानको बढ़ा देगा।

(८) इसके बाद ४०वीं धारामें जोड़नेकेलिए यह प्रस्ताव किया गया है, कि महासोवियत्के प्रेसीदिउम्को अस्थायी क़ानून बनानेका अधिकार दिया जाय। मैं समझता हूँ, कि यह प्रस्ताव ग़लत है और कांग्रेसको इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। हमें अब ऐसी परिस्थितिका खात्मा कर देना चाहिए, जहाँ कि एक नहीं, कई संस्थाएँ क़ानून बनायें। ऐसी परिस्थिति इस सिद्धान्तके विरुद्ध है कि क़ानून स्थायी होने चाहिए। और हमें इस वक़्त क़ानूनोंकी स्थायित्वकी सबसे अधिक आवश्यकता है। स०स०स०र०में क़ानून बनानेका अधिकार सिर्फ एक ही संस्था—स०स०स०र०की महासभा—को होना चाहिए।

(९) और भी, संविधान-मसविदेकी ४८वीं धारामें यह जोड़नेका प्रस्ताव किया गया है, कि स०स०स०र०की महासभा (सुप्रीम कौंसिल)के प्रेसीदिउम्का अध्यक्ष स०स०स०र०के महासभा द्वारा निर्वाचित नहीं होना चाहिए, बल्कि देशकी सम्पूर्ण जनता द्वारा। मेरी रायमें यह प्रस्ताव ग़लत है। क्योंकि

यह हमारे विधानकी स्प्रिटके विरुद्ध जाता है। हमारे विधानके सिद्धान्तके अनुसार स०स०स०र०का एक ऐसा व्यक्ति प्रेसिडेंट नहीं होना चाहिए; जिसे कि सारी जनता, महासभासे अलग चुने; और वह महासभाके विरुद्ध अपने-को रख सके। स०स०स०र०का प्रेसीडेंट सहकारी है, महासभा का प्रेसीदिउम् है, साथ ही महासभाके प्रेसीदिउम्का अध्यक्ष है, जो कि सारी जनता द्वारा निर्वाचित होकर महासभा द्वारा निर्वाचित हुआ है; और महासभाके सामने उत्तरदायी है। इतिहासके तजर्बे ने बतलाया है कि सर्वोच्च संस्थाओंका इस प्रकारका ढाचा अत्यन्त प्रजा-सत्ताक है; और यह अनभिलषित घटनाओंसे देश को बचाता है।

(१०) इसके बाद एक संशोधन धारा ४८पर है। इसमें कहा गया है कि स०स०स०र०की महासभाके प्रेसीदिउम्के उपाध्यक्षोंकी संख्याको बढ़ाकर ग्यारह—प्रत्येक संघ-रिपब्लिकसे एक कर दिया जाय। मैं समझता हूँ कि इस सशोधनको स्वीकृत किया जा सकता है, क्योंकि यह स०स०स०र०के महासभा का सम्मान और बढ़ा देगा।

(११) इसके बाद ७७ धारापर एक संशोधन है, जिसमें कहा गया है कि एक नये अखिल जन-कमीसर—सैनिक उद्योग-सम्बन्धी जन-कमीसर—को संगठित किया जाय। मैं समझता हूँ कि इस प्रस्तावको भी उसी तरह स्वीकार कर लेना चाहिए (हर्षध्वनि); क्योंकि अब समय आ गया है कि हम अपने सैनिक उद्योगको अलग करके जन-कमीसरका उचित रूप प्रदान करें। मुझे मालूम होता है कि ऐसा करनेसे हमारे देशकी सैनिक-शक्तिका विकास होगा।

(१२) फिर है, एक सशोधन संविधान-मसविदेकी १२४वीं धारापर। इसमें कहा गया है कि धार्मिक पूजाके अनुष्ठानका निषेध कर दिया जाय। मैं समझता हूँ कि इस सशोधनको अस्वीकृत कर दिया जाय, क्योंकि यह हमारे विधानकी स्प्रिटके विरुद्ध जाता है।

(१३) अन्तिम संशोधन जो बहुत कुछ वास्तविक रूपका है, और विधान-

मसविदेकी १३५वीं धारासे सम्बन्ध रखता है, इसमें कहा गया है, कि धर्मके पुरोहितों, भूतपूर्व सफेद-वर्गियों, पहलेके सभी धनी, और वे व्यक्ति जो कि समाजके लिए लाभदायक किसी पेशेमें नहीं लगे हैं, उन्हें मताधिकार नहीं देना चाहिए, या ऐसा होनेपर भी इस श्रेणीके लोगोंके मताधिकारको परिसीमित करके सिर्फ निर्वाचन करनेका अधिकार देना चाहिए, निर्वाचित होने का नहीं। मैं समझता हूँ, इस संशोधनको अस्वीकृत कर देना चाहिए। सोवियत्-सरकारने काम न करनेवाले तथा चूसनेवाले वर्गको हमेशाके लिए मताधिकारसे वंचित नहीं किया, बल्कि अस्थायी तौरसे, कुछ समय तकके लिए वंचित किया था। ऐसा एक समय था, जब यह श्रेणी जनता के खिलाफ खुलकर लड़ाई कर रही थी, सोवियत्-कानूनोंका विरोध कर रही थी। उस विरोधका जवाब सोवियत्-सरकारकी ओरसे यह था कि उन्हें मताधिकारके अधिकारसे वंचित कर दिया जाय। लेकिन तबसे अब तक कम समय नहीं बीता है। इस समयके भीतर हम चूसनेवाली श्रेणियोंको उठा देनेमें कामयाब हुए हैं; और सोवियत्-सरकार एक अप्रतिहत-शक्ति बन गई है। क्या अब समय नहीं आ गया है, कि उस क़ानूनको बदला जाय? मैं समझता हूँ, समय आ गया है। कहा जाता है कि यह खतरनाक बात है; क्योंकि इससे सोवियत्-सरकारके विरोधी लोग—पहलेके कुछ सफ़ेद वर्गी, कुलक, पुरोहित आदि—देशकी महान् संस्थामें आ घुसेंगे। लेकिन यहाँ डरनेको क्या है? अगर तुम भेड़ियोंसे डरते हो, तो जंगलसे अलग रहो! (हँसी और उच्च हर्षध्वनि) पहली बात तो यह है कि सभी भूतपूर्व कुलक, सफ़ेदवर्गीय, या पुरोहित सोवियत्-सरकारके विरोधी नहीं हैं। दूसरी बात यह है, कि यदि किसी जगहके लोग विरोधी व्यक्तियोंको चुनते हैं, तो यह प्रगट करेगा, कि हमारा प्रचार कार्य बहुत बुरी तौरसे संगठित हुआ था; और हम ऐसे अपमानके मूर्ख-पात्र हैं। अगर हमारा प्रचार-कार्य बोल्शेविक ढंगसे संचालित होगा, तो लोग विरोधी व्यक्तियोंको अपनी महान् संस्थामें आने नहीं देंगे। इसका मतलब यह है, कि हमें काम करना चाहिए, घिघियाना नहीं चाहिए (उच्च हर्ष-

ध्वनि)। हमें काम करना चाहिए, और इसके लिए प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए कि सरकारी हुक्मसे हर एक चीज बनी-बनाई हमारे सामने आ जायगी। बहुत पहले १९१९में लेनिनने कहा था—"वह समय दूर नहीं है जब कि सोवियत् सरकार इसे लाभदायक समझेगी कि वह बिना प्रतिबन्धके सार्वजनिक मताधिकारका आरंभ करे।" कृपया खयाल कीजिए, "बिना किसी प्रतिबंध" इस वाक्यपर। उसने इस बातको ऐसे समयमें कहा था, जब कि विदेशी सेना-का नाजायज दखल अभी बन्द नहीं हुआ था; और जब हमारा उद्योग और कृषि बहुत ही शोचनीय दशामें थी। तबसे १७ वर्ष बीत गये। साथियो, क्या यह समय नहीं है, कि हम लेनिन्के वचनको पूरा करें। मैं समझता हूँ, समय आ गया है।

१९१९में अपने "रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल)के प्रोग्राम-का मसविदा"में उसने यह कहा था—मुझे इसे पढ़नेकी आज्ञा दीजिए।

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टीको जाँगर चलानेवाली जनताके सामने स्पष्ट कर देना चाहिए, जिसमें कि अस्थायी ऐतिहासिक आवश्यकताओंको गलतीसे साधारणके तौरपर न मान लें। नागरिकोंके एक भागको मताधिकारसे वंचित नागरिकोंकी एक निश्चित श्रेणीको जीवन भर के लिए नहीं है; जैसा कि अधिकांश पूँजीवादी जनसत्ताक प्रजातंत्रोंमें हुआ है। बल्कि इसका संबंध सिर्फ चूसनेवालोंसे है। सिर्फ उनसे है, जो अपनी चोषककी स्थितिको कायम रखनेके लिए, पूँजीपतिक सम्बन्धको अक्षुण्ण रखनेके लिए समाजवादी सोवि-यत्-प्रजातंत्रके मौलिक कानूनोंको तोड़नेमें तत्पर हैं। इसीलिए सोवियत्-प्रजा-तंत्रमें हर एक दिन, जो समाजवादके मजबूत करनेमें लग रहा है, एक ओर बचे-खुचे चूषकों या पूँजीपतिक सम्बन्धकी सम्भावनाको कम करता जा रहा है, और इस प्रकार स्वयं मताधिकारसे वंचित पुरुषोंके प्रतिशतकको कम कर रहा है—रूसमें इस वक्त ऐसे लोग मुश्किलसे दो या तीन प्रतिशत हैं। दूसरी ओर अदूर-भविष्यमें विदेशी हमलोंके बन्द होने और पहलेके मालिकोंकी सम्पत्तिके जब्त होनेका काम पूरा हो जाने पर, कुछ नियमोंके साथ ऐसी स्थिति उत्पन्न

होगी, जब कि श्रमजीवी-राज्य-शक्ति चूषकोंके विरोधको दबानेकेलिए कोई दूसरा तरीका चुनेगी और बिना किसी निर्बन्धके सार्वजनिक-मताधिकार प्रदान करेगी" (लेनिन-ग्रन्थ-संग्रह, भाग २४, पृष्ठ ६४, रूसी संस्करण) मैं समझता हूँ, यह स्पष्ट है।

स०स०स०र०के संविधानके मसविदेके संशोधनों और संवर्द्धनोंकी यह स्थिति है।

६. स०स०स०र०के नये संविधान का महत्त्व

देशके कोने-कोनेमें करीब पाँच महीने तक जो वाद-विवाद हुआ है, उसके परिणामोंको देखनेसे यह माना जा सकता है, कि वर्तमान कांग्रेस-विधान-मसविदेको स्वीकार कर लेगी (उच्च हर्षध्वनि और करतल-ध्वनि, सभी खड़े)।

चन्द दिनोंमें सोवियत्-संघके पास एक नया, सविस्तर समाजवादी-जन-सत्ताकताके सिद्धान्तोंपर अवलम्बित समाजवादी विधान होगा।

यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज होगा, जिसमें कि सरल, और संक्षिप्त शब्दोंमें प्रायः रोजाना टिप्पणीके ढङ्गसे स०स०स०र०में समाजवादके विजय-की घटनाएँ, पूँजीवादियोंकी गुलामीसे स०स०स०र०के जाँगर-चलानेवालोंके मुक्त होनेकी घटनाएँ, स०स०स०र०में पूर्ण और परस्पर-अविरोधी जन-सत्ताकताके विजयकी घटनाएँ दर्ज हैं।

यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो कि उस घटनाको सिद्ध करेगा, जिसका कि स्वप्न पूँजीवादी देशोंके लाखों ईमानदार आदमी देखते थे और अब भी देख रहे हैं; जो कि स०स०स०र०में प्राप्त किया जा चुका है (उच्च हर्षध्वनि)। यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो कि इस बात को सिद्ध करेगा, कि जो बात स०स०स०र०में प्राप्त की जा चुकी है, दूसरे देशोंमें भी उसका प्राप्त करना बिलकुल सम्भव है (उच्च हर्षध्वनि)।

इससे मालूम होगा, कि स०स०स०र०के नये विधानका अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व कितना अधिक है।

आज, जब कि फ़ासिज़्मकी भयंकर लहर श्रमिक-श्रेणीके समाजवादी आन्दोलनको टुकड़े-टुकड़े कर रही है, और सभ्य जगत्के श्रेष्ठ पुरुषोंके जनसत्ताक प्रयत्नोंको विफल कर रही है; स०स०स०र०का नया संविधान फ़ासिज़्मके विरुद्ध—समाजवाद और जनसत्ताकता अट्ट हैं—इसे घोषित करते हुए एक जबर्दस्त विरोधी आवाज होगी (हर्षध्वनि)। स०स०स०र०का नया विधान उन सभी लोगोंकी नैतिक सहायता और वास्तविक मददका काम करेगा, जो कि आज फ़ासिस्ट बर्बरोंसे लड़ रहे हैं (उच्च हर्षध्वनि)।

इससे भी अधिक महत्त्व स०स०स०र०के नये संविधानका है, स०स० स०र०की जनताके लिए। जब कि स०स०स०र०का संविधान पूँजीवादी देशोंके लिए एक कार्यके प्रोग्रामका महत्त्व रखेगा, वहाँ स०स०स०र०की जनताके लिए, वह उनके जद्दोजहदके सारांश, मानवताकी मुक्तिके मैदानमें उनके विजयोंके सारांशका परिचायक है। युद्ध और भूख-अकालकी पीड़ाका जो लम्बा मार्ग हमने तय किया, उसके बाद यह आनन्द और ख़ुशीका समय है, जब कि हम अपने लिए ऐसा विधान पा रहे हैं, जो हमारी विजयके फलोंका परिचायक है। यह जाननेमें आनन्द और .ख़ुशी होती है, कि किस लिए हमारे लोग लड़े और किस तरह सारे संसारके इतिहासके लिए महत्त्वपूर्ण इस विजयको प्राप्त किया। यह जानकर आनन्द और .ख़ुशी होती है, कि हमारे लोगोंका खून, जो इतनी अधिकतासे बहा, वह व्यर्थ नहीं गया; उसने सुन्दर फल पैदा किए (लम्बी हर्षध्वनि)। यह हमारी कमकर-श्रेणी, हमारी किसान-श्रेणी हमारी बुद्धिजीवी-कमकर-श्रेणी को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है, यह उन्हें आगे बढ़ाता है, और उनमें उचित अभिमानका खयाल लाता है। यह हममें अपनी शक्तिपर विश्वासको बढ़ाता है; और साम्यवाद-की नवीन विजयोंके लिए फिरसे जद्दोजहद करनेकेलिए हमें प्रेरित करता है (जोरकी करतलध्वनि और हर्षध्वनि)

२. सोवियत्-संविधान*

संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिककी ८वीं असाधारण सोवियत्-कांग्रेस स्वीकृत करती है, कि स०स०स०र०का संविधान (मौलिक क़ानून)-मसौदा कांग्रेसके मसौदा बनानेवाले कमीशन द्वारा जैसा पेश किया गया है, उसे स्वीकृत किया गया।

मास्को, क्रेमलिन् कांग्रेस प्रेसीदियम्।

दिसंबर ५, १९३६

सोवियत्-संविधान

परिच्छेद (१)

समाज-संगठन—

धारा (१) संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक (स०स०स०र०) कमकरों और किसानोंका समाजवादी राज्य है।

धारा (२) स०स०स०र०के राजनैतिक आधार हैं, जाँगर चलानेवालोंके सदस्यों (डिपुटी)की सोवियतें, जो कि जमींदारों और पूँजीपतियोंकी शक्तिको उठा देने तथा श्रमजीवियोंके अधिनायकत्वकी सफलताके परिणाम-स्वरूप विकसित और मजबूत हुईं।

धारा (३) स०स०स०र०का सभी अधिकार शहर और गाँवके जाँगर चलानेवालों—जिनके प्रतिनिधि स्वरूप जाँगर चलानेवाले प्रतिनिधियोंकी सोवियत् हैं—के हाथ में हैं।

धारा (४) स०स०स०र०का आर्थिक आधार है समाजवादी अर्थनीति का सिद्धान्त और उपजके हथियारों और साधनोंपर समाजवादी स्वामित्व

---

* १९३६में लिखित १९४७में संशोधित

—जो कि पूँजीवादी अर्थनीतिकी प्रथाको उठा देने, उपजके हथियारों और साधनोंके वैयक्तिक स्वामित्वको हटा देने और मनुष्य द्वारा मनुष्यके चूसे जानेको बन्द कर देनेके परिणामस्वरूप दृढ़तापूर्वक स्थापित है।

धारा (५) स०स०स०र०में समाजवादी सम्पत्ति या तो राज्यकी सम्पत्ति (सारी जनताके अधिकार)के रूपमें है या सहयोगी और सामूहिक खेतीकी सम्पत्ति (पृथक् कलखोजोंकी सम्पत्ति और सहयोग समितियोंकी सम्पत्ति)के रूपमें है।

धारा (६) राज्यकी सम्पत्ति—भूमि, खनिज-पदार्थ, जल, जंगल, मिल, फैक्टरी, खानें, रेलवे, पानी और हवाके यातायातकी संस्थाएँ, बैंक, गमनागमनके साधन, राज्य द्वारा संगठित बड़े-बड़े कृषि-संबंधी उद्योग (सोव्खोज, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन आदि) तथा सभी म्युनिसिपल्टियोंकी चीजें और नगरों तथा उद्योग-संबंधी स्थानोंकी सभी मुख्य रहने लायक घरोंकी सम्पत्तियाँ सारी जनता के अधिकारमें है।

धारा (७) कलखोजों और सहयोगी संस्थाओंकी समाजवादी सार्वजनिक सम्पत्तियाँ हैं—कलखोजों और सहयोगी संस्थाओंके सभी सार्वजनिक उद्योग तथा उनके पशु और औजार; कलखोजों और सहयोग-समितियों द्वारा उत्पादित या निर्मित उपज और उनके सार्वजनिक ढाँचे।

कृषिके अर्तेल्के क़ानूनके अनुसार कलखोजके हर एक घरकी सम्पत्ति होगी—अपने कलखोजके सार्वजनिक कलखोजी उद्योगसे प्राप्त आयके अतिरिक्त वैयक्तिक उपयोगके लिए घरसे लगा हुआ भूमिका एक टुकड़ा और खेतके ऊपर बनी कोई सहायक चीज, घर, पशु और मुर्गी तथा छोटे-छोटे कृषिके औजार।

धारा (८) कलखोजोंको अपने अधिकारकी भूमि स्वतंत्र उपयोगके लिए अनिश्चित समय अर्थात् सदाके लिए प्राप्त है।

धारा (९) समाजवादके आर्थिक सिद्धान्त—जो कि स०स०स०र०की अर्थनीतिका सर्वाधिक रूप हैं—के साथ-साथ अपने वैयक्तिक श्रमपर अवलम्बित

तथा दूसरेके श्रमको चूसे बिना वैयक्तिक किसानों और हाथके कारीगरोंकी छोटी-छोटी वैयक्तिक सम्पत्तिको कानून स्वीकार करता है।

धारा (१०) निम्न प्रकारकी वैयक्तिक सम्पत्तियोंपर नागरिकोंका अधिकार कानून द्वारा रक्षित है—श्रमकी आय, बचतकी आय, रहनेके घर, और उसकी सहायक गृहस्थीकी सम्पत्ति, घरका असबाब, बर्तन भांडा और वैयक्तिक उपयोग तथा आरामकी चीजें, नागरिकोंकी वैयक्तिक सम्पत्तिका उत्तराधिकार।

धारा (११) राष्ट्रीय अर्थनीतिकी राजकीय योजना—सार्वजनिक धनके बढ़ाने, जाँगर चलानेवालोंकी आर्थिक और सांस्कृतिक अवस्थाको निरन्तर उन्नत करने और स०स०स०र०की स्वतन्त्रता तथा उसकी रक्षाके साधनों (सैनिक शक्ति) को मजबूत करनेकेलिए स०स०स०र०के आर्थिक जीवनका निर्धारण और पथ-प्रदर्शन करना है।

धारा (१२) "जो काम नहीं करता, वह खा भी नहीं सकेगा" के सिद्धान्तके अनुसार स०स०स०र०में हर एक उपयुक्त शरीरवाले नागरिककेलिए काम करना आवश्यक और सम्मानकी चीज है।

स०स०स०र०में समाजवादका सिद्धान्त "हर एकसे उसकी योग्यताके अनुसार, हर एकको किये कामके अनुसार"—माना गया है।

परिच्छेद (२)

राज्य-संगठन—

धारा (१३) संघ-सोवियत्-साम्यवादी-रिपब्लिक एक संयुक्त राज्य है, जो कि समान अधिकार रखनेवाली निम्न सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकोंके स्वेच्छापूर्वक सम्मिलनके आधारपर बना है। वह रिपब्लिक हैं—

१. रूसी-फेडरल् (संयुक्त) सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक (र०फ०स०स०र०)
२. उक्रेन् सोवियत् समाजवादी

३. बेलो-रूसी	स०	स०	र०
४. आजुर्बाइजान्	,,	,,	,,
५. गुर्जी ,,	,,	,,	,,
६. अर्मनी ,,	,,	,,	,,
७. तुर्कमान	,,	,,	,,
८. उज़बेक ,,	,,	,,	,,
९. ताजिक ,,	,,	,,	,,
१०. कज़ाक ,,	,,	,,	,,
११. किर्गिज ,,	,,	,,	,,
१२. करेलो-फिन	,,	,,	,,
१३. मोल्दाविया	,,	,,	,,
१४. लिथुवानिया	,,	,,	,,
१५. लतविया	,,	,,	,,
१६. एस्तोनिया	,,	,,	,,

धारा (१४) स०स०स०र०के प्रतिनिधि और उसकी सर्वोच्च शक्तिकी संस्थाओं और राज्यप्रबन्ध-संस्थाओंके अधिकार हैं—

(क) अंत-र्राष्ट्रीय सम्बन्धोंमें संघका प्रतिनिधि भेजना, दूसरे राज्योंसे संधि करना, संघ-प्रजा-तन्त्रों और विदेशी राज्योंके बीच सम्बन्ध स्थापित करनेमें एकसी व्यवस्था रखना;

(ख) शान्ति और युद्धके प्रश्न;

(ग) स०स०स०र०में नये प्रजातन्त्रोंको सम्मिलित करना;

(घ) स०स०स०र०के विधानके पालन करनेका निरीक्षण करना और इसकी जिम्मेवारी लेना कि संघ-प्रजातन्त्रोंके विधान स०स०स०र० के विधानके अनुकूल हैं;

(ङ) संघ-प्रजातन्त्रोंकी आपसकी सीमाओंके हेर-फेरको स्वीकार करना;

(च) संघ-प्रजातन्त्रोंके भीतर नये स्वायत्त-प्रजातन्त्र, प्रान्त या नये प्रान्तों और इलाकोंके निर्माणको स्वीकार करना;

(छ) संघ-प्रजातन्त्रोंकी सेनाओंके संगठनके पथ-प्रदर्शक नियम स्थापित करना;

(ज) राज्यके स्वामित्वके आधारपर विदेशोंसे व्यापार करना;

(झ) राज्यकी सुरक्षाके क़ायम रखनेका प्रबन्ध करना;

(ञ) स०स०स०र०की जातीय आर्थिक योजनाओंको निश्चित करना;

(ट) स०स०स०र०के एकीभूत राजकीय आय-व्ययके लेखे (बजट)को स्वीकार करना तथा उन टैक्सों और मालगुजारियोंको स्वीकार करना जो कि संघ-प्रजातंत्र और स्थानीय बजटका अंग बनतो हैं;

(ठ) सारे संघके लिए विशेष महत्त्व रखनेवाले बैंकों, औद्योगिक और कृषि-सम्बन्धी संस्थाओं तथा कारखानों और व्यापारी संस्थाओंका प्रबन्ध करना;

(ड) यातायात और सामान ढोनेकी चीजोंका इन्तिज़ाम करना;

(ढ) सिक्के और ऋणकी प्रक्रियाका संचालन करना;

(ण) राजकीय बीमा-संस्थाओंका संगठन करना;

(त) क़र्ज लेना-देना;

(थ) खेतका बन्दोबस्त तथा खनिज पदार्थों, जंगलों और जलाशयोंके इस्तेमालके बारेमें मूल-सिद्धान्तोंको निर्धारित करना;

(द) शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्यके क्षेत्रमें मौलिक सिद्धान्तोंको निर्धारित करना;

(ध) राष्ट्रीय सम्पत्तिके बहीखातेकेलिए एकसा क़ायदा संगठित करना;

(न) श्रम सम्बन्धी क़ानूनोंके बारेमें सिद्धान्तोंका स्थापन करना;

(प) दीवानी नियमों तथा दीवानी कचहरियोंकी कार्रवाई एवं फ़ौजदारी और दीवानी क़ानूनोंपर लागू होनेवाले विधानोंका बनाना;

(क) संघकी नागरिकतापर लागू होनेवाले क़ानून तथा विदेशियोंके अधिकारोंपर लागू होनेवाले कानूनोंका बनाना; और

(ख) सारे संघमें क्षमादान-संबंधी व्यवस्थाओंको जारी करना;

धारा (१५) स०स०स०र०के विधानकी १४वीं धारामें उल्लिखित नियमोंको छोड़कर बाक़ी बातोंमें संघ-प्रजातंत्र पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। इन निर्बन्धोंके बाहर प्रत्येक संघ-प्रजातंत्र स्वतन्त्र रूपेण अपने राज्याधिकारका उपयोग करता है। स०स०स०र० संघ-प्रजातंत्रोंकी पूर्ण स्वतंत्रताके अधिकारोंकी रक्षा करता है।

ये अधिकार हैं, जिन्हें विधानने स०स०स०र०को प्रदान किया है; और उन्हें उसकी पार्लियामेंट—जिसे महासोवियत् कहते हैं—इस्तेमाल करती है। महासोवियत् दो भवनोंमें विभक्त है—एक है संघ-सोवियत् और दूसरा जातिक-सोवियत्।

धारा (१६) हर एक संघ-प्रजातंत्र (संघ-रिपब्लिक्)का अपना निजी विधान है; जो कि उक्त प्रजातंत्रके विशेषरूपके अनुसार स०स०स०र०के विधानके पूर्णतया अनुकूल बनाया गया है।

धारा (१७) प्रत्येक संघ-रिपब्लिक स्वतंत्रतापूर्वक स०स०स०र०से अलग होनेका अधिकार अपने हाथमें रखती है।

धारा (१८) क. संघ प्रजातन्त्रकी भूमिमें उसकी सम्मतिके बिना हेर-फेर नहीं हो सकता। प्रत्येक संघ-प्रजातन्त्रको विदेशी राज्यके साथ सीधे सम्बन्ध स्थापित करने, राजदूत और कौन्सल विनिमय करनेका अधिकार है;

ख. प्रत्येक संघ-प्रजातन्त्रकी अपनी सेना होती है।

धारा (१९) स०स०स०र०के कानून सभी संघ-रिपब्लिकोंकी भूमिमें समान अधिकार रखते हैं।

धारा (२०) यदि संघके क़ानून तथा संघ-रिपब्लिकके क़ानूनमें विरोध हो, तो अखिल-संघ-कानून मान्य होगा।

धारा (२१) स०स०स०र०के सभी नागरिकोंकेलिए एक ही संघ-नाग-रिकता स्थापित की गई है।

संघ-रिपब्लिकका हर एक नागरिक स०स०स०र०का नागरिक है।

धारा (२२) रुसी स०फ०स०र०के निम्न विभाग हैं—

(क) प्रदेश—

१. अल्ताइ
२. क्रास्नोदर
३. क्रास्नोयार्स्क
४. ओर्द्जोनिकिद्ज
५. उपसमुद्र
६. खबारोव्स्क

(ख) जिले

१. आर्खंगेल्
२. वलोग्दा
३. वोरोनेज
४. गोर्की
५. इवानोवो
६. इर्कुत्स्क
७. कलिनिन
८. किरोफ
९. कुइबिशेफ
१०. कुर्स्क
११. लेनिनग्राद्
१२. मोलोतोफ
१३. मास्को

१४. मूर्मान्स्क
१५. नवोसिबिर्स्क
१६. ओम्स्क
१७. स्तालिनग्राद्
१८. तम्बोफ्
१९. तुला
२०. चेल्याबिन्स्क
२१. चिता
२२. च्कालोफ
२३. यारोस्लाव्ल
२४. किमिया
२५. सखालिन
२६. नीचे सखालिन
२७. कलिनिनग्राद्
२८. ग्रोज्नी
२९. अस्त्राखान
३०. तावरोपोल

(ग) स्वायत्त-सोवियत् समाजवादी-रिपब्लिक (स्वा०स०स०र०)—

१. तातार (स०स०स०र०)
२. बश्किर्
३. दागिस्तान
४. बुर्यत्मंगोल
५. कबर्दिनो-बल्कारिन्
६. कोमी
७. मारी
८. मोर्दाविया

९. उत्तरी ओसेतिया
१०. उद्मुर्त
११. चेचेन्इन्गुश्
१२. चुवाश्
१३. याकूत

(घ) स्वायत्त-जिले—

१. अदिगेइ
२. यहूदी
३. कराचइ
४. ओइरोत्
५. खकस्
६. चेर्केस्

(ङ) जातीय इलाके—

१. तइमिर
२. येवेन्की
३. यमलो-नेनेत्स्
४. ओस्तियक्-वोगुल्
५. चुखोत्
६. कोरियक
७. अनित्स्की-बुर्यत्मंगोल
८. उस्तओर्दिन्स्क बुर्यत्-मंगोल
९. कोमी-पेर्मि

धारा (२३) उक्रइन् सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकके निम्न जिले हैं;

१. विन्नित्सा
२. द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क

३. कियेफ
४. ओदेसा
५. खरकोफ़
६. चेर्निगोफ्
७. वोल्हीनिया
८. वोरोशिलोवग्राद्
९. ग्रोहोविच्
१०. ज़ितोमिर
११. ज़ापोरोज़्ये
१२. इज़्माइल
१३. कामेनेत्स-पदोल्स्क्
१४. किरोवोग्राद्
१५. ल्वोफ्
१६. निकोलायेफ
१७. पोल्तावा
१८. रोव्नो
१९. स्तालिनो
२०. स्तानिस्लाव
२१. सूमी
२२. तर्नोपोल
२३. चेर्नोवित्सी
२४. करपाथिया

धारा (२४) आज़ुर्बाइजान सोवियत समाजवादी रिपब्लिकमें सम्मिलित हैं—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१. नखिचेवन्

धारा (२५) गुर्जी (जॉर्जिया) स०स०र०में सम्मिलित हैं—

(ख) स्वायत्त स०स०र०

१. अब्खाजिया
२. अजार

(क) स्वायत्त-जिला

१. दक्षिणी ओसेतिया

धारा (२६) उजबेक् स०स०र०में सम्मिलित हैं निम्नलिखित—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१. बुखारा
२. समरकंद
३. ताशकन्द
४. फ़रगाना
५. खारेज़म
६. क़राकल्पक

धारा (२७) ताजिक स०स०र०में सम्मिलित हैं—

१. गर्म
२. कूलाब
३. लेनिनाबाद
४. स्तालिनाबाद और
५. गोर्नोबदख़्शांके स्वायत्त जिले

धारा (२८) कजाक स०स०र०के स्वायत्त जिले हैं—

१. अत्युबिन्स्क
२. अल्मा-अता
३. पूर्व कज़ाकस्तान

४. पश्चिम-कजाकस्तान
५. करागन्दा
६. कुस्तनई
७. उत्तर-कजाकस्तान
८. दक्षिण-कजाकस्तान
९. अक्मोलिन्स्क
१०. गुर्येफ्
११. जम्बुल्
१२. किज्ल्ओर्दा
१३. पावलोदर
१४. सेमी-प्लातिन्स्क

धारा (२६) क, बेलोरुसिया स०स०र०में जिले हैं :—

बरानोविची
बेलोस्तोक
ब्रेस्त
विलेइका
वितेब्स्क
गोमेल
मिन्स्क
मोगिलेफ
पिन्स्क
पोलेस्सी

ख, तुर्कमान स०स०र०के जिले हैं :—

१, अश्काबाद
२, क्रास्नोवोद्स्क

३. मरी
४. तसौज
५. चारजूय

(ग) किर्गिज स०स०स०र०के जिले हैं :—

१. जलालाबाद
२. इतिक्कुल
३. ओश
४. त्यानशान्
५. फ्रुन्जे

(घ) आमर्नी सघ प्रजातन्त्रमे स्वायत्त प्रदेश और जिले नहीं है :—

परिच्छेद (३)

सोवियत्के उर्कीय सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (३०) स०स०स०र०की राज्यशक्तिकी सर्वोच्च संस्था है स०स०-स०र०की महासोवियत् ।

धारा (३१) स०स०स०र०की महासोवियत् उन सभी अधिकारोंका उपयोग करती है, जो कि विधान की १४वीं धाराके अनुसार स०स०स०र०को दिये गये है: जहां तक कि वे अधिकार विधानके अनुसार स०स०स०र०की उन संस्थाओंके अधिकारमें सम्मिलित नही है जो कि स०स०स०र०की महासोवियत्के सामने उत्तरदायी हैं। अर्थात् स०स०स०र०की महासोवियत्का प्रेसीदियम् महासोवियत्के मंत्रियोंकी कौंसिल और महासोवियत्का मंत्रिमंडल ।

धारा (३२) स०स०स०र०के कानून बनानेके अधिकारका उपयोग सिर्फ स०स०स०र०की महासोवियत्को है ।

धारा (३३) स०स०स०र०की महासोवियत् दो भवनोंमें विभक्त है—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् ।

धारा (३४) संघ-सोवियत्के लिये प्रतिनिधि प्रति तीन लाख जन-संख्या-पर एक सदस्य (डिपुटी) के आधारपर बने निर्वाचनक्षेत्रके अनुसार स०स०स०र०के नागरिक चुनते हैं।

धारा (३५) जातिक-सोवियत्को संघ-रिपब्लिक, स्वायत्त रिपब्लिक, स्वायत्त जिले और जातिक-क्षेत्रके अनुसार तथा सदस्योंकी निम्न संख्याके अनुसार स०स०स०र०के नागरिक चुनते हैं।

(१) प्रति संघ-रिपब्लिक (स०स०र०)	२५
(२) " स्वायत्त " (स्व०स०स०र०)	११
(३) " स्वायत्त-जिला	५
(४) जातिक क्षेत्र	१

धारा (३६) स०स०स०र०की महासोवियत्का चुनाव चार वर्षोंके लिए होता है।

धारा (३७) स०स०स०र०की महासोवियत्के दोनों भवन—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्—के अधिकार बराबर हैं।

धारा (३८) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् क़ानून-निर्माण आरंभ करनेमें बराबर अधिकार रखती हैं।

धारा ३९) कोई भी क़ानून स्वीकृत समझा जायगा, यदि वह स०स०स०र०की महासोवियत्के दोनों भवनों द्वारा प्रत्येकमें मामूली बहुमतके साथ पास किया गया हो।

धारा (४०) स०स०स०र०की महासोवियत् द्वारा स्वीकृत कानून स०स०स०र०की महासोवियत्के प्रेसीदियम्के अध्यक्ष और मन्त्रीके हस्ताक्षरों के साथ संघ-रिपब्लिकोंकी भाषाओंमें प्रकाशित हुआ करेगा।

धारा (४१) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्के अधिवेशन एक ही समय आरम्भ और समाप्त होंगे।

धारा (४२) संघ-सोवियत् अपने लिए अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी।

धारा (४३) जातिक-सोवियत् अपने लिए एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी ।

धारा (४४) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्‌के अध्यक्ष लोग अपने-अपने भवनोंके अधिवेशनोंका सभापतित्व करेंगे और उनकी कार्यवाहियोंके जिम्मेवार होंगे ।

धारा (४५) स०स०स०र०के महासोवियत्‌के दोनों भवनोंके सम्मिलित अधिवेशनका सभापतित्व संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्‌के अध्यक्ष बारी-बारी से करेंगे ।

धारा (४६) स०स०स०र०के महासोवियत्‌के अधिवेशनोंको हर साल दो बार स०स०स०र०के महासोवियत्‌का प्रेसीदिउम् (मन्त्रि-मण्डल) बुलायेगा ।

स०स०स०र०की महासोवियत्‌का अध्यक्ष अपने विचारानुसार या किसी एक संघ-प्रजातंत्रकी माँगके अनुसार विशेष अधिवेशन बुलायेगा ।

धारा (४७) यदि संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्‌में मत-भेद हो, तो वह प्रश्न एक बराबर संख्याओंमें चुने सुलह-कमीशनके पास तय करनेके लिए भेजा जायगा । यदि सुलह-कमीशन उभय पक्ष द्वारा स्वीकरणीय निर्णय पर नहीं पहुँचता अथवा उसका निर्णय दोनों भवनोंमेंसे एकको नापसन्द होता है तो वह प्रश्न फिर दूसरी बार दोनों भवनोंके सामने विचारकेलिए पेश होगा । यदि दोनों भवन उभय-स्वीकृत निश्चयपर नहीं पहुँचे तो स०स०स०र०की महासोवियत्‌का प्रेसीदिउम् स०स०स०र०की महासोवियत्‌को तोड़ देगा और नये चुनावका प्रबन्ध करेगा ।

धारा (४८) स०स०स०र०की महासोवियत् दोनों भवनोंके सम्मिलित अधिवेशनमें स०स०स०र०की महासोवियत्‌का प्रेसीदिउम् (मन्त्रि-मण्डल) चुनेगी । जिसमें स०स०स०र०की सुप्रीम सोवियत्‌के प्रेसीदिउम्‌का एक अध्यक्ष ११ उपाध्यक्ष १ मन्त्री और २४ सदस्य होंगे ।

स०स०स०र०के महासोवियत्का प्रेसीदियम् अपने हर कामकेलिए, स०स०-स०र०के महासोवियत्के सामने जिम्मेवार है।

धारा (४६) स०स०स०र०के महासोवियत्के प्रेसीदियम्का काम है—

(क) स०स०स०र०के महासोवियत्के अधिवेशनोंको बुलाना।

(ख) स०स०स०र०के मौजूदा क़ानूनोंकी व्याख्या करना और खरीता प्रकाशित करना।

(ग) स०स०स०र०के विधानकी ४७वीं धाराके अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत्को तोड़ना और नये चुनावको नियत करना।

(घ) अपने निर्णयके अनुसार या किसी एक संघ-प्रजातन्त्रकी माँगके अनुसार सार्वजनिक वोटका प्रबन्ध करना।

(ङ) स०स०स०र०के जन-कमीसर-कौंसिल तथा संघ-रिपब्लिकके जन-कमीसर-कौंसिलके निर्णयों और हुक्मोंको रोक देना, यदि वह क़ानूनके अनुकूल न हों।

(च) स०स०स०र०के महासोवियत्के अधिवेशनोंके बीचके समयमें वह स०स०स०र०के मन्त्रियोंको स०स०स०र०के मन्त्रि-कौंसिलके अध्यक्षकी सिफ़ारिशके अनुसार बर्खास्त या बहाल कर सकता है; यदि पीछे स०स०स०र०की महासोवियत्को स्वीकार हो।

(छ) स०स०स०र०के पदको और सम्मान-जनक पदवियोंको देना।

(ज) क्षमा करनेके अधिकारका उपयोग करना।

(झ) स०स०स०र० सेनाके उच्च सेना-नायकोंको बहाल बर्खास्त करना।

(ञ) स०स०स०र०की महासोवियत्के अधिवेशनोंके बीचके समयमें यदि स०स०स०र०पर सशस्त्र हमला हो, या जब कभी हमलावरोंके हमलेसे पारस्परिक रक्षाके सम्बन्धमें अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामोंके पूरा करनेकी आवश्यकता हो, उस समय युद्धकी घोषणा करना।

(ट) पूर्ण या आंशिकरूपसे सेनाओंको युद्ध-क्षेत्रमें भेजना।

(ठ) अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामोंको स्वीकृत करना ।

(ड) विदेशी राज्योंमें स०म०स०र०के प्रतिनिधि (दूतों)को बहाल और बर्खास्त करना ।

(ढ) विदेशी राज्यों द्वारा अपने यहाँ भेजे गये दूत-प्रतिनिधियोंको लौटा मँगानेके पत्रों और प्रमाणपत्रोंको लेना ।

धारा (५०) संघ सोवियत् और जातिक-सोवियत् अपने-अपने भवनके सदस्योंके (निर्वाचनकी) प्रामाणिकताकी परीक्षाकेलिए अलग-अलग प्रमाण-कमीशन निर्वाचित करेंगी।

प्रमाण-कमीशनोंकी सिफारिशपर भवन निश्चित करेंगे कि किसी सदस्यके चुनावको अनुचित करार दें या उचित ।

धारा (५१) स०स०स०र०की महासोवियत् जब जरूरत समझेगी, किसी विषयके अन्वेषण और निरीक्षणके लिए कमीशन नियुक्त कर सकती है ।

सभी संस्थाओं और अधिकारियोंका कर्तव्य है कि माँगे जानेपर वे इन कमीशनोंके सामने आवश्यक सामग्री और कागज-पत्र पेश करें ।

धारा (५२) स०स०स०र०की महासोवियत्के किसी सदस्यको स०सो० स०र०की महासोवियत्की सम्मति बिना पकड़ा या उसपर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता । जिस समय स०स०रा०र०की महासोवियत्का अधिवेशन नहीं है उस समय स०स०स०र०के महासोवियत्के प्रेसीदियम्की सम्मतिके बिना वैसा नहीं किया जा सकता ।

धारा (५३) स०स०स०र०की महासोवियत्के अधिकारकी अवधि तक या अवधिकी समाप्तिके पहले यदि महासोवियत् तोड़ दी गई हो, तो स०स० स०र०की महासोवियत्का प्रेसीदियम् तब तक अधिकारारूढ़ रहेगा, जब तक कि नई चुनी हुई स०स०स०र०की महासोवियत् एक नये प्रेसीदियम्को बना न लेगी ।

धारा (५४) महासोवियत्की अवधि बीत जाने या समयसे पहले तोड़

देनेपर प्रेसीडियम् निर्वाचनका दिन निश्चित करेगा; जो कि मीयादके अन्तिम दिन या महासोवियत्के टूटनेके दिनसे दो महीनेसे अधिक नहीं होगा।

धारा (५५) नई चुनी हुई महासोवियत्के अधिवेशनको प्रेसीडियम् निर्वाचन-दिनके बाद एक महीनेके भीतर बुलायेगा।

धारा (५६) महासोवियत् दोनों भवनोंकी सम्मिलित बैठकमें स०स०स० र०की सरकार—स०स०स०र०मन्त्रि-कौंसिलको नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (४)

संघ-प्रजातंत्रकी राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (५७) संघ-रिपब्लिककी राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्था है संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्।

धारा (५८) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्को उसके नागरिक चार वर्षकेलिए चुनते हैं।

प्रतिनिधियों और वोटरोंकी संख्याका तारतम्य संघ-रिपब्लिकोंके विधानों-के अनुसार तय होगा।

धारा (५९) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत् ही उक्त रिपब्लिककी क़ानून बनानेवाली संस्था है।

धारा (६०) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्का कार्य है—

(क) रिपब्लिकका विधान बनाना, और स०स०स०र०के विधानकी सोलहवीं धाराके अनुसार उसमें संशोधन करना।

(ख) अपने अधीनके स्वायत्त-रिपब्लिकोंके विधानोंको स्वीकार करना तथा उनकी सीमा निर्द्धारित करना।

(ग) रिपब्लिककी राष्ट्रीय आर्थिक योजना तथा आय-व्यय (बजट) का स्वीकार करना।

(घ) संघ-रिपब्लिककी अदालतों द्वारा दंड पाये नागरिकोंके अपराधको माफ़ करने या छोड़ देने के अधिकारका उपयोग करना।

(ङ) प्रत्येक संघका प्रजातंत्र अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धमें अपने प्रतिनिधि भेजना।

(च) प्रत्येक संघका अपनी-अपनी प्रजातंत्रीय सेना संगठित करनेकी व्यवस्था स्थापित करना है।

धारा (६१) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत् अपना प्रेसीदिउम् चुनेगी, जिसमें एक अध्यक्ष, अनेक उपाध्यक्ष, एक मंत्री तथा अनेक सदस्य होंगे।

संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्के प्रेसीदिउम्के अधिकार संघ-सोवियत्के विधानमें दिये हुए हैं।

धारा (६२) संघ-सोवियत्की महासोवियत् अपने अधिवेशनोंके संचालनकेलिए एक अध्यक्ष और अनेक उपाध्यक्ष निर्वाचित करेगी।

धारा (६३) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत् संघ-सोवियत्की गवर्नमेंट—संघ-सोवियत्की मन्त्रि-कौंसिलको नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (५)

स०स०स०र०के राज्यप्रबंधकी संस्थाएँ—

धारा (६४) स०स०स०र०की राज्यशक्तिकी सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबन्ध-कारिणी संस्था है स०स०स०र०की मन्त्रि-कमीसर-कौंसिल ?

धारा (६५) स०स०स०र०की मन्त्रि-कौंसिल स०स०स०र०के महासोवियत्के सामने उत्तरदायी है; और महासोवियत्के अधिवेशनोंके बीचवाले समयमें स०स०स०र०की महासोवियत्के प्रेसीदिउम्के सामने उत्तरदायी और जिम्मेवार है।

धारा (६६) स०स०स०र०की मन्त्रि-कौंसिल प्रचलित कानूनोंका अनुसरण करके अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी और उन्हें कार्य-रूपमें परिणत होनेकी देख-भाल करेगी।

धारा (६७) स०स०स०र०की मन्त्रि-कौंसिलके निर्णय और आज्ञाएँ स०स०स०र०की सम्पूर्ण भूमिके भीतर अवश्य मान्य हैं।

धारा (६८) स०स०स०र०की मन्त्रि-कौंसिलका कार्य है—

(क) स०स०स०र०की संघ-रिपब्लिक मन्त्रिमण्डल और अखिल-संघ और अपने अधीनकी दूसरी आर्थिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओंके कार्यका संगठन और संचालन करेगी।

(ख) राष्ट्रीय-आर्थिक-योजना (विभाग) राजकीय आय-व्ययको काम में लानेकेलिए तथा सिक्के और साखको मजबूत करनेकेलिए कार्रवाई करेगा।

(ग) सार्वजनिक व्यवस्थाको कायम रखनेकेलिए, राजकीय स्वार्थोंकी रक्षाकेलिए और नागरिकोंके अधिकारोंकी हिफ़ाज़तकेलिए कार्रवाई करेगा।

(घ) विदेशी राज्योंके साथ सम्बन्धके क्षेत्रमें साधारण नियमनका काम करेगा।

(ङ) प्रतिवर्ष सैनिक सेवाकेलिए बुलाये जानेवाले नागरिकोंकी संख्या निश्चित करेगा और देशकी सेनाके साधारण संगठन और विकास-का संचालन करेगा।

(च) जब आवश्यकता होगी, तो आर्थिक, सांस्कृतिक और सेना-सम्बन्धी विकाससे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंकेलिए स०स०स०र० की मन्त्रि-कौंसिलकी मातहत समिति या केन्द्रीय बोर्ड नियुक्त करेगा।

धारा (६९) स०स०स०र०की मन्त्रि-कौंसिल स०स०स०र०के अधिकार-की प्रबन्ध और अर्थ-सम्बन्धी शाखाओंके बारेमें यह अधिकार रखती है, कि वह संघ-रिपब्लिककी कौंसिलके निर्णयों और आज्ञाओंको रोक दे और स०स०स०र०के मन्त्रियोंकी आज्ञाओं और हिदायतोंको मंसूख कर दे।

धारा (७०) स०स०स०र०की महासोवियत् निम्न व्यक्तियोंकी स०स० स०र०की मन्त्रि-कौंसिल बनायेगी—

(१) अध्यक्ष स०म०स०र० मन्त्रि-कौंसिल

(२) अनेक उपाध्यक्ष स०म०स०र० मन्त्रि-कौंसिल

(३) अध्यक्ष " राजकीय-योजना-कमीसर

(४) " सोवियत्-नियन्त्रण-कमीसर

(५) स०स०स०र०के मन्त्री लोग

(६) अध्यक्ष राजबैंक बोर्ड

(७) " कला-समिति

(८) " उच्च-शिक्षा-समिति

धारा (७१) स०म०स०र०की गवर्नमेंट या स०स०स०र०का कोई मन्त्रि स०स०स०र०की महासोवियत्के किसी सदस्य द्वारा पूछे जानेपर तत्सम्बन्धी उत्तर भवनमें ३ दिनके भीतर मौखिक या लिखित देगा ।

धारा (७२) स०स०स०र०के मन्त्रि स०म०स०र०के अधिकारके भीतर आनेवाले राजकीय प्रबन्धकी शाखाओंका संचालन करेंगे ।

धारा (७३) स०स०स०र०के मन्त्रि अपने अपने जन-कमीसरीके अधिकारके भीतर प्रचलित कानूनों और स०म०स०र०की मन्त्रि-कौंसिलके निर्णयों और आज्ञाओंके अनुसार या उनके आधारपर आज्ञा या हिदायत देंगे और उनके कार्यरूपमें परिणत होनेकी देख-भाल करेंगे ।

धारा (७४) स०स०स०र०के मन्त्रि दो प्रकारके हैं—एक अखिल-संघ मन्त्रि और दूसरे संघ-रिपब्लिक-मन्त्रि ।

धारा (७५) अखिल संघ-मन्त्रि-मण्डल प्रत्यक्ष या अपने द्वारा नियुक्त संस्थाओं द्वारा स०स०स०र०की तमाम भूमिमें अपने जिम्मेके राजकीय प्रबन्ध की शाखाओंका संचालन करेंगी ।

धारा (७६) संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसरियाँ वैसे ही नामवाले संघ-रिपब्लिककी मन्त्रिविभागों द्वारा आमतौरसे अपने जिम्मेके राजकीय प्रबन्धकी

शाखाओंका संचालन करेंगी। वे एक निश्चित और परिमित संख्याके कारबारका प्रत्यक्ष रूपमें प्रबन्ध करेंगे। निश्चित और परिमित कारबारोंकी सूची स०स०स०र०की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् बनायेगा।

धारा (७७) निम्न विभागोंके मन्त्री अखिल-संघ-जन-मन्त्री मन्त्रि कहे जाते हैं—

१. सेना
२. विदेश
३. विदेश व्यापार
४. रेलवे
५. डाकके तार टेलीफोन
६. समुद्रपोत
७. नदीपोत
८. कोयला
९. ”
१०. तेल
११. ”
१२. बिजली पावर
१३. बिजली इंजीनियरी
१४. लोहा फौलाद
१५. अलोह धातु
१६. रसायन
१७. विमान उद्योग
१८. जहाज निर्माण
१९. गोला बारूद
२०. हथियार
२१. भारी मशीन निर्माण

२२. मध्यम मशीन निर्माण
२३. साधारण मशीन निर्माण
२४. नौसेना
२५. कृषिपशु
२६. सिविल इंजीनियरी
२७. गत्ता पार्चा-कागज

धारा (७८) निम्न मन्त्रि संघ-रिपब्लिक जनकमीसर कहे जाते हैं—

१. युद्ध विभाग
२. विदेश-विभाग
३. खाद्य-उद्योग
४. मछली
५. मांस-डेरी दूध
६. हलका उद्योग
७. कपड़ा
८. काष्ठ-उद्योग
९. कृषि-पालन
१०. राजकोष अन्न और पशु संबंधी खेती
११. कोष (अर्थ)
१२. व्यापार
१३. गृहविभाग
१४. राज्यरक्षा
१५. न्याय
१६. सार्वजनिक स्वास्थ्य
१७. गृहसामग्री
१८. राज नियन्त्रण

परिच्छेद (६)

संघ-प्रजातन्त्रोंकी राज्य-प्रबंध संस्थाएँ—

धारा (७६) संघ-रिपब्लिककी राज्यशक्तिकी सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबंधकारिणी संस्था है संघ-रिपब्लिक मन्त्रि-कौंसिल।

धारा (८०) संघ-रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिल संघ-रिपब्लिकके सामने जिम्मेवार और जवाबदेह है। संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्के अधिवेशनोंके बीचके समयमें वह अपनी संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्के प्रेसीदियुम्के सामने जिम्मेवार और जवाबदेह होगी।

धारा (८१) संघ-रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिल स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिकमें प्रचलित कानूनों और स०स०स०र०के मन्त्रि-कौंसिलके निर्णयों और आज्ञाओंके अनुसार तथा आधारपर अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी; और उनके कार्यरूपमें परिणत होनेकी देख-भाल करेगी।

धारा (८२) संघ-रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिलको अधिकार है कि वह स्वायत्त-रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिलके निर्णयों और आज्ञाओंको रोक दे और अपने अन्दरके प्रदेशों, जिलों, और स्वायत्त जिलोंके जाँगर चलानेवाले डिपुटियोंकी सोवियत्की कार्यकारिणी समितिके निर्णयों और आज्ञाओंको मंसूख कर दे।

धारा (८३) संघ-रिपब्लिककी महासोवियत् निम्न व्यक्तियोंकी जन-कमीसर कौंसिल बनायेगी।

1. अध्यक्ष संघ-रिपब्लिक मन्त्रि-कौंसिल
2. अनेक उपाध्यक्ष ,,
3. अध्यक्ष राजकीय योजना कमीशन
4. युद्ध विभाग,
5. विदेश विभाग
6. खाद्य-उद्योग मन्त्री

७. मछली
८. मांस-दूध
९. हलका
१०. कपड़ा
११. काष्ठ
१२. गृह-निर्माण
१३. कृषि
१४. राजकीय अन्न और पशु-सम्बन्धी खेती
१५. कोष (अर्थ)
१६. व्यापार
१७. गृह-विभाग
१८. देशरक्षा
१९. न्याय
२०. सार्वजनिक स्वास्थ्य
२१. राजकन्ट्रोल
२२. शिक्षा
२३. स्थानीय उद्योग
२४. म्युनिसिपल विभाग
२५. समाजकी ओरसे परवरिश
२६. मोटर यातायात
२७. कला-बोर्ड का प्रधान
२८. अखिल-सघ मन्त्रियोंके प्रतिनिधि

धारा (८४) संघ-रिपब्लिकके मन्त्रि संघ-रिपब्लिकके अधिकारके राजकीय प्रबन्धकी शाखाओंका संचालन करते हैं।

धारा (८५) संघ-रिपब्लिकके मन्त्री अपनी जन-कमीसरीके अधिकारके भीतर स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिकके कानूनों, स०स०स०र० और संघ-

रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिलके निर्णयों और आज्ञाओं तथा स०स०स०र०की संघ-रिपब्लिक मन्त्रियोंकी आज्ञाओं और हिदायतोंके अनुसार और आधार पर आज्ञा और हिदायत निकालेंगे ।

धारा (८६) संघ-रिपब्लिकके मन्त्री दो प्रकारके हैं; एक संघ-रिपब्लिक-कमीसर और दूसरे रिपब्लिक कमीसर ।

धारा (८७) संघ-रिपब्लिक-मन्त्रि अपने जिम्मेके राजकीय प्रबन्धकी शाखाओंका संचालन करते हैं और वे संघ-रिपब्लिककी मन्त्रि-कौंसिल तथा स०स०स०र०के उसी विभागवाले संघ-रिपब्लिक जन-कमीसरके अधीन हैं ।

धारा (८८) रिपब्लिक-मन्त्री अपने जिम्मेके राजकीय प्रबन्धकी शाखाओंका संचालन करते हैं; और सीधे संघ-रिपब्लिककी जन-कमीसर कौंसिलके मातहत हैं ।

परिच्छेद ([illegible])

स्वायत्त रिपब्लिकोंकी राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (८९) स्वायत्त-रिपब्लिककी राज्यशक्तिकी सर्वोच्च संस्था है, स्वायत्त सोवियत् समाजवादी रिपब्लिककी महासोवियत् ।

धारा (९०) स्वायत्त-रिपब्लिककी महासोवियत्को उस रिपब्लिकके नागरिक चार सालकेलिए स्वायत्त रिपब्लिकके विधानमें दिये प्रतिनिधित्वकी संख्याके अनुसार चुनते हैं ।

धारा (९१) स्वायत्त-रिपब्लिककी कानून बनानेवाली संस्था सिर्फ उसकी महासोवियत् है ।

धारा (९२) हरएक स्वायत्त-रिपब्लिक अपना विधान बनाती है, जिसमें स्वायत्त-रिपब्लिककी अपनी विशेष परिस्थितिका ख्याल रखा जाता है; तथा यह भी देखा जाता है कि वह संघ-रिपब्लिकके विधानके अनुकूल है ।

धारा (९३) स्वायत्त-रिपब्लिककी महासोवियत् अपना प्रेसीदियम् चुनती

तथा अपने विधानके अनुसार स्वायत्त-रिपब्लिक मन्त्रि कौंसिल नियुक्त करती है।

परिच्छेद (८)

स्थानीय राजकीय संस्थाएँ—

धारा (९४) प्रदेशों, जिलों, स्वायत्त-जिलों, क्षेत्रों (हल्कों), इलाकों, नगरों और देहाती स्थानों (स्तानित्सा गाँव, टोला, किशलक, अउल) के जाँगर चलानेवाले डिपुटियोंकी सोवियतें राजकीय संस्थाएँ हैं।

धारा (९५) प्रदेशों, जिलों, स्वायत्त जिलों, क्षेत्रों, इलाकों, नगरों और देहाती स्थानोंके जाँगर चलानेवालोंके डिपुटियोंकी पंचायतोंको वहाँके जाँगर चलानेवाले दो वर्षकेलिए चुनते हैं।

धारा (९६) जाँगर चलानेवाले डिपुटियोंकी सोवियत्, जा० डि० सो०में प्रतिनिधित्वकी संख्याका निर्णय संघ-रिपब्लिकके विधान करते हैं।

धारा (९७) जा० डि० सो० अपने मातहतकी प्रबन्ध-संस्थाओंके कार्यों-का संचालन करती हैं, सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखनेकी जिम्मेवारी लेती है, क़ानूनों और नागरिकोंके अधिकारोंकी रक्षाकी देख-भाल करती है, स्थानीय आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगतिका संचालन करती है; और स्थानीय आय-व्ययका निर्णय करती है।

धारा (९८) जा० डि० सो० स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिकके कानूनों द्वारा प्राप्त अधिकारोंकी सीमाके भीतर निर्णय और आज्ञा निका-लती है।

धारा (९९) जा० डि० सो०की कार्यकारिणी और प्रबन्धकारिणी संस्था है अपने द्वारा चुनी कार्यकारिणी समिति; जो निम्न सदस्योंपर निर्भर है—

(१) अध्यक्ष

(२) अनेक उपाध्यक्ष

(३) मन्त्री

(४) अनेक सदस्य

धारा (१००) संघ-रिपब्लिकके विधानानुसार छोटे स्थानोंमें देहाती जा० डि० सो० की कार्यकारिणी और प्रबन्धकारिणी संस्था निम्न सदस्योंसे मिलकर चुने हुए सदस्योंसे बनती है।

(१) अध्यक्ष

(२) एक उपाध्यक्ष

(३) एक मन्त्री

धारा (१०१) जा० डि० सो०की कार्यकारिणी अपने चुननेवाली जा० डि० सो० और उच्च जा० डि० सो०की कार्यकारिणीके सामने सीधे जवाबदेह हैं।

परिच्छेद (९)

महान्यायाधिकारी और न्यायालय—

धारा (१०२) स०स०स०र०में स०स०स०र०का महान्यायालय, संघ-रिपब्लिकोंके महान्यायालय, प्रदेश, जिला, स्वायत्त-रिपब्लिक, स्वायत्त जिलों और क्षेत्रोंके न्यायालय तथा स०स०स०र०के महासोवियत्के निश्चयानुसार स्थापित स०स०स०र०के विशेष न्यायालय और जन-न्यायालय न्यायका प्रबंध करते हैं।

धारा (१०३) सभी मुक़दमोंका फैसला जनताके असेसरोंकी मददसे होता है, सिवाय उन मुक़दमोंके जिनके लिए क़ानूनने विशेष नियम बना रखे हैं।

धारा (१०४) स०स०स०र०का महान्यायालय सर्वोच्च न्याय-संस्था है। स०स०स०र०का महान्यायालय स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिकोंकी न्याय-संस्थाओं की न्यायसंबंधी कार्रवाइयोंकी देख-भालका जिम्मेदार है।

धारा (१०५) स०स०स०र०का महान्यायालय तथा स०स०स०र०के

विशेष न्यायालय स०स०स०र०के महासोवियत् द्वारा पाँच वर्षकेलिए चुने जाते हैं।

धारा (१०६) संघ रिपब्लिकके महान्यायालय संघ-रिपब्लिकोंकी महासोवियतों द्वारा पाँच वर्षकेलिए चुने जाते हैं।

धारा (१०७) स्वायत्त-रिपब्लिकोंके महान्यायालय स्वायत्त-रिपब्लिकों द्वारा पाँच वर्षकेलिए चुने जाते हैं।

धारा (१०८) प्रदेश, जिला, स्वायत्त-जिला और क्षेत्रके न्यायालय प्रदेश, जिला या क्षेत्रकी जा० डि० सो० द्वारा या स्वायत्त जिलेकी जा० डि० सो० द्वारा पाँच वर्षकेलिए चुने जाते हैं।

धारा (१०९) जनता-न्यायालयको हलकेके नागरिक, सार्वजनिक, प्रत्यक्ष, समान निर्वाचनाधिकार और गुप्त पुर्जीके सिद्धान्तानुसार तीन वर्षके लिए चुनते हैं।

धारा (११०) न्यायालयका कारबार संघ-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक या स्वायत्त-जिलेकी भाषामें होगा। जो व्यक्ति उस भाषाको नहीं जानते, उनके लिए दुभाषिया द्वारा मुक़दमेके हर पहलूकी जानकारीका प्रबंध तथा न्यायालयमें अपनी भाषामें बोलनेका अधिकार है।

धारा (१११) स०स०स०र०के हर न्यायालयमें मुक़दमेकी सुनवाई खुली अदालतमें होगी, यदि क़ानूनने उस श्रेणीके मुक़दमोंकेलिए कोई दूसरा नियम न बना रक्खा हो। अपराधीको सफ़ाई पेश करनेका पूरा अधिकार है।

धारा (११२) न्यायाध्यक्ष स्वतंत्र हैं; उनपर सिर्फ़ क़ानूनकी पाबन्दी है।

धारा (११३) स०स०स०र०के महान्यायाधिकारीको स०स०स०र०के सभी मन्त्रियों तथा उनके अधीन संस्थाओं, सभी अधिकारियों और नागरिकों द्वारा क़ानूनोंकी सख़्त पाबन्दीकी देख-भालका सर्वोपरि अधिकार है।

धारा (११४) स०स०स०र०की महासोवियत् स०स०स०र०के महान्यायाधिकारीको सात वर्षकेलिए नियुक्त करती है।

धारा (११५) संघ रिपब्लिकों, प्रदेशों, जिलों तथा स्वायत्त रिपब्लिकों

और स्वायत्त जिलोंके न्यायाधिकारियोंको स०स०स०र०का महान्यायाधिकारी पाँच वर्षकेलिए नियुक्त करता है।

धारा (११६) क्षेत्र, इलाका और नगरके न्यायाधिकारियोंको संघ-रिपब्लिकके न्यायाधिकारी स०स०स०र०के महान्यायाधिकारीकी स्वीकृतिके अनुसार ५ वर्षकेलिए नियुक्त करते हैं।

धारा (११७) न्यायाधिकारी अपने कर्तव्यपालनमें सभी तरहकी स्थानीय राजकीय संस्थाओंसे स्वतंत्र हैं; और वे केवल स०स०स०र०के महान्यायाधिकारीके अधीन हैं।

परिच्छेद (१०)

नागरिकोंके मौलिक अधिकार और कर्तव्य—

धारा (११८) स०स०स०र०के नागरिकोंको काम पानेका अधिकार है—अर्थात् उनके काम मिलने और परिमाण और गुणके अनुसार कामका वेतन देनेका अधिकार राज्यने अपने जिम्मे लिया है।

राष्ट्रीय, अर्थ-सम्बन्धी समाजवादी संस्थाओं, समाजवादी समाजकी उपजाऊ शक्तियोंकी निरन्तर वृद्धि, आर्थिक उपद्रवों (मन्दी आदि) की सम्भावनाके दूर हो जाने और बेकारीके उठ जानेके कारण हरएककेलिए काम पानेका अधिकार सुरक्षित है।

धारा (११९) स०स०स०र०के नागरिकोंका अधिकार है, छुट्टी और विश्रामका।

प्रायः सभी कमकरोंको प्रतिदिन सात ही घंटा काम करने, कमकरों और आफिस आदिमें काम करनेवालोंको वेतन सहित वार्षिक छुट्टियोंके प्रबन्ध और जाँगर चलानेवालोंके ठहरनेकेलिए सब जगह सेनिटोरियम, विश्राम-गृह और क्लबोंका इन्तजाम, छुट्टी और विश्रामका अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२०) स०स०स०र०के नागरिकोंको बुढ़ापे, बीमारी और काम करनेकी योग्यता न रहनेपर पर्वरिश पानेका अधिकार है।

कमकरों तथा दूसरे आफिस आदिमें काम करनेवालोंका राज्यके खर्चपर सामाजिक बीमेके भारी विकास, जाँगर चलानेवालोंकी निःशुल्क चिकित्सा और जाँगर चलानेवालोंके ठहरनेकेलिए स्वास्थ्य-निवासोंका चारों ओर जाल बिछा-कर यह अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२१) स०स०स०र०के नागरिकोंको अधिकार है, शिक्षा पानेका। सार्वजनिक अनिवार्य प्रारम्भिकसे उच्च शिक्षा तककी निःशुल्क शिक्षा, उच्च शिक्षण-संस्थाओंमें प्रायः सभी विद्यार्थियोंको राज्यकी ओर-से छात्रवृत्तिका प्रबन्ध, स्कूलोंमें मातृभाषाको शिक्षणका माध्यम स्वीकृतकर; और फैक्टरियों, सोव्खोजों, मैशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों तथा कल्खोजोंमें जाँगर चलानेवालोंकी औद्योगिक टेकनिकल और कृषि-संबंधी निःशुल्क शिक्षाको संगठितकर यह अधिकार सुरक्षित किया हुआ है।

धारा (१२२) स०स०स०र०में स्त्रियोंको आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवनके हरएक क्षेत्रमें पुरुषोंके बराबर अधि-कार हैं।

स्त्रियोंको पुरुषोंके बराबर काम करने, कामका वेतन, छुट्टी और विश्राम करने; (बेकारीके खिलाफ) सामाजिक बीमा और शिक्षाका प्रबंध करके, तथा राज्यकी ओरसे माँ और बच्चेके स्वार्थकी रक्षा, वेतनके साथ प्रसूताकी छुट्टी और प्रसूतिगृहों, बच्चाखानों और किंडरगार्टेनोंकी सर्वत्र स्थापना करके, स्त्रियों-को इस अधिकारसे लाभ उठानेकी संभावना सुरक्षित की हुई है।

धारा (१२३) राष्ट्र और जातिका कुछ भी न खयाल करके आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवनके हरएक क्षेत्रमें स०-स०स०र०के नागरिकोंके अधिकारोंकी समानता अटल नियम है।

इन अधिकारोंमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी तरह भी निर्बन्ध करना अथवा इसके विरोधमें जाति और रंगका खयाल करके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप-

से नागरिकोंके विशेष अधिकारकी स्थापना, और रंग तथा जाति सम्बन्धी भेद-भाव या घृणा और अपमानका प्रचार करना क़ानूनसे दंडनीय हैं।

धारा (१२४) नागरिकोंकी मानसिक स्वतंत्रताकी सुरक्षाकेलिए स०स०स०र०में धर्मका राज्यसे और स्कूलका धर्मसे कोई सम्बन्ध नहीं है। सभी नागरिकोंको धार्मिक उपासनाकी स्वतंत्रता और धर्म-विरोधी प्रचारकी स्वतंत्रता है।

धारा (१२५) जाँगर चलानेवालोंके स्वार्थोंके अनुकूल होनेसे तथा समाजवादी प्रथाको मजबूत करनेकेलिए स०स०स०र०के सभी नागरिकोंको क़ानूनन् निम्न अधिकार प्राप्त हैं—

(क) भाषणकी स्वतंत्रता

(ख) प्रेसकी स्वतंत्रता

(ग) सम्मेलन और सार्वजनिक सभा करनेकी स्वतंत्रता

(घ) सड़कोंमें जलूस और प्रदर्शनोंकी स्वतंत्रता

जाँगर चलानेवालों और उनकी संस्थाओंके अधिकारमें छापेकी मशीनों, काग़जके गोदामों, सार्वजनिक इमारतों, सड़कों, यातायातके साधनों तथा इस अधिकारको उपयोगमें लानेकेलिए उपयोगी अन्य चीजोंको उनके हाथमें देकर नागरिकोंके ये अधिकार सुरक्षित किये हुए हैं।

धारा (१२६) जाँगर चलानेवालोंके स्वार्थोंके अनुकूल होने और साधारण जनताकी राजनीतिक कर्मशीलता तथा संगठन-सम्बन्धी प्रतिभाको विकसित करनेकेलिए स०स०स०र०के नागरिक निम्न सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा अपनेको संगठित करनेका अधिकार रखते हैं—

(१) मजदूर-सभा

(२) सहयोग-समिति

(३) तरुण-संगठन

(४) खेल और सैनिक संगठन

(५) सांस्कृतिक सभा

(६) टेक्निकल (यंत्र-विज्ञान) सभा

(७) वैज्ञानिक सभा.

और

(८) सोवियत्-संघ कम्युनिस्ट (बोल्शेविक) पार्टी—जो कि साम्यवादी प्रथाके दृढ़ और विकसित करनेकेलिए जद्दोजहदमें जाँगर चलानेवालोंकी अगुवा है और जो जाँगर चलानेवालोंकी सभी सार्वजनिक और राजकीय संस्थाओंके नेतृत्वके सारका प्रतिनिधित्व करती है—में श्रमिक-श्रेणीके समूह और जाँगर चलानेवालोंके अन्य स्तरोंकी राजनैतिक चेतना रखनेवाले और अत्यन्त क्रिया-शील नागरिकोंको सम्मिलित होनेका अधिकार है।

धारा (१२७) स०स०स०र०के नागरिकोंका शारीरिक स्वतंत्रताकी गारन्टी है। न्यायालयके निर्णय या न्यायाधिकारीकी स्वीकृतिके बिना कोई व्यक्ति गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।

धारा (१२८) नागरिकोंके घरके भीतर अनुचित प्रवेशका प्रतिषेध तथा लिखा-पढ़ीको गुप्त रखनेका अधिकार कानून द्वारा सुरक्षित है।

धारा (१२९) जाँगर चलानेवालोंके स्वार्थोंकी रक्षा करने, अपने वैज्ञानिक कामों या राष्ट्रीय स्वतंत्रता-सम्बन्धी अपनी तत्परताओंकेलिये सताये गये विदेशी नागरिकोंको स०स०स०र०में शरण पानेका अधिकार है।

धारा (१३०) स०स०स०र०के हर एक नागरिकका कर्तव्य है कि वह स०स०स०र०के विधानके अनुकूल चले, कानूनोंकी पाबन्दी करे, श्रमिक-नियमोंको कायम रक्खे, सच्चाईके साथ सार्वजनिक कर्त्तव्यका पालन करे और समाजवादी मानवीय मेलजोलके नियमोंको माने।

धारा (१३१) स०स०स०र०के हरएक नागरिकका कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक समाजवादी सम्पत्तिकी, समाजवादी सिद्धान्तके पवित्र और अविचल आधारके तौरपर देशके धन और बलके स्रोतके तौरपर सभी जाँगर चलाने-वालोंके समृद्ध और संस्कृत जीवनके स्रोतके तौरपर समझकर, रक्षा और गोपन करे।

सार्वजनिक सामाजिक सम्पत्तिको हानि पहुँचानेवाले व्यक्ति जनताके शत्रु हैं।

धारा (१३२) सार्वजनिक सैनिक-सेवा क़ानून हैं।

लाल-सेनामें सैनिक-सेवा करना स०स०स०र०के नागरिकोंका पवित्र कर्तव्य है।

धारा (१३३) पितृ-भूमिकी रक्षाकेलिए लड़ना हर एक स०स०स०र०के नागरिकका पवित्र कर्तव्य है। देश-द्रोह—शपथ-त्याग, शत्रुसे मिल जाना, राज्यकी सैनिक शक्तिको कमजोर करना, भेद खोलना—अत्यन्त भयंकर अपराध हैं; और वह बड़ी सख्तीसे क़ानून द्वारा दंडनीय हैं।

परिच्छेद (११)

निर्वाचन-नियम—

धारा (१३४) जाँगर चलानेवाले डिपुटियोंकी सभी सोवियतों—स०स०स०र०के महासोवियत्, संघ-रिपब्लिककी महासोवियत्, प्रदेश और जिलोंकी जा० डि० सो० स्वायत्त-रिपब्लिकोंकी महासोवियत्, स्वायत्त जिलों, क्षेत्रों, इलाकों, नगरों और दीहाती (स्तानित्सा, गाँव, टोला, किशलक्, आउल —के सदस्य निर्वाचकों द्वारा सार्वजनिक समान और प्रत्यक्ष मताधिकारके साथ-गुप्त पर्ची द्वारा चुने जाते हैं।

धारा (१३५) डिपुटियोंका चुनाव सार्वजनिक है—स०स०स०र०के सभी नागरिक जो १८ वर्षके हो चुके हैं, जाति, रंग धर्म, शिक्षाकी योग्यता, निवासकी क़ैद, उत्पन्न होनेकी श्रेणी, सम्पत्तिकी क़ैद या पुरानी विरोधी कार्रवाइयोंके विचारके बिना, डिपुटियोंके चुनावमें वोट देने तथा खुद भी खड़े होनेका अधिकार रखते हैं; शर्त यह है कि वे न पागल हों, और न क़ानूनी न्यायालयमें उन्हें मताधिकारसे वंचित रहने का दण्ड दिया गया हो।

धारा (१३६) डिपुटियोंके चुनाव (में सभी) बराबर हैं—हर एक

नागरिकको एक वोटका अधिकार है। सभी नागरिक बराबर होकर चुनावमें भाग लेते हैं।

धारा (१३७) पुरुषोंके समान ही स्त्रियोंको भी चुनने और चुने जानेका समान अधिकार है।

धारा (१३८) लाल-सेनामें काम करनेवाले नागरिकोंको बाकी सभी नागरिकोंकी तरह बराबरीके साथ चुनने और चुने जानेका समान अधिकार है।

धारा (१३९) डिपुटियोंके चुनाव साक्षात्‌रूपसे होंगे—सभी जाँगर चलानेवाली सोवियतें, देहाती और नागरिक जा० डि० सो०से लेकर स०स०स०र० के महासोवियत् तक नागरिकों द्वारा साक्षात् वोटसे चुनी जायँगी।

धारा (१४०) डिपुटियोंके चुनावमें वोट गुप्त देना होगा।

धारा (१४१) चुनावकेलिए उम्मेदवार निर्वाचन-क्षेत्रके अनुसार नामजद किये जायँगे।

उम्मेदवारोंको नामजद करनेका अधिकार सार्वजनिक संस्थाओं और जाँगर चलानेवालोंकी सभाओं—कम्युनिस्ट पार्टीकी संस्थाओं, मजदूर-सभाओं, सहयोग-समितियों, तरुण-संघों और सांस्कृतिक-सभाओं—को है।

धारा (१४२) हर एक डिप्टी (सदस्य)का कर्तव्य है, कि वह अपने काम तथा जा० डि० सो०के कामसे निर्वाचकोंको सूचित करे। तथा वह किसी समय कानून द्वारा स्थापित तरीकेसे अपने निर्वाचकोंके बहुमतके निर्णय-पर सदस्यतासे हटा दिया जायगा।

परिच्छेद (१२)

राज्य-चिह्न-ध्वज राजधानी—

धारा (१४३) स०स०स०र० का राज्य-चिह्न है, सूर्यकी किरणोंसे चित्रित भूगोलके ऊपर रक्खा एक हँसुआ और एक हथौड़ा, जिसको संघ-रिपब्लिकोंकी

भाषाओंमें—"सब देशोंके ऑगर चलानेवालो ! एक हो जाओ !" के लेखके साथ गेहूँकी बालें घेरे हुई हैं। चिह्नके ऊपर एक पँचकोना तारा है।

धारा (१४४) स०स०स०र०का राज्य-ध्वज है—लाल कपड़ेपर डंडेके साथवाले ऊपरी कोनेमें सोनेमें अंकित हँसुआ और हथौड़ा तथा उनके ऊपर एक पँचकोना सुनहरी किनारीवाला लाल तारा। ध्वजकी लम्बाई चौड़ाईसे दूनी है।

धारा (१४५) स०स०स०र०की राजधानी मास्को नगर है।

परिच्छेद (१३)

संविधानके संशोधनकी प्रक्रिया—

धारा (१४६) स०स०स०र०के विधानका संशोधन स०स०स०र०की महा-सोवियत्के निर्णय द्वारा ही हो सकता है; शर्त यह है कि संशोधनके पक्षमें हर-एक भवनमें कमसे कम ⅔का बहुमत उसके पक्षमें हो।

३. महापार्लामेंटका चुनाव (१९३७)

(१) प्रचार—१२ दिसम्बर (१९३७ ई०)से पहले भी सोवियत्के कितने ही चुनाव हुए थे, लेकिन उनमें यह विशेषता नहीं थी। सोवियत्-शासनकी स्थापनाके बाद यह पहला समय था, जब कि नये विधानके अनु-सार १८ वर्षसे अधिक उम्रवाले सभी स्त्री-पुरुषोंको वोट देने और सदस्यताके लिए खड़े होनेका अधिकार मिला। पहले पुराने धनी, जमींदार, पुरोहित और उनके वंशज वोटके अधिकारसे वंचित रखे गये थे। लेकिन नये विधानने उन्हें भी समान अधिकार दे दिया। पहले हाथ उठाकर या खुले तौरसे वोट लिया जाता था, जिससे बहुतसे लोग भय और संकोचसे भी वोट देते थे। अबकी बार चुनावकी पर्चीके साथ एक एक लिफ़ाफ़ा मिला था और वोटके स्थान ऐसी एकान्त जगह रखे गये थे, जहाँ बिना किसीको दिखाये वोटर पर्ची-

पर निशान कर सकता था। अबकी बार पहले-पहल छिपी पर्ची द्वारा वोट दिया था।

वोटका अधिकार पाकर भूतपूर्व राजा-बाबुओंको कितनी प्रसन्नता हुई, इसका मैं एक उदाहरण देता हूँ। मैंने अपने एक परिचित बड़े ऊँचे दर्जेके पुराने रईससे वोट देनेके दूसरे दिन पूछा—"आपकी तबीयत इन दिनों अच्छी नहीं थी, आप तो शायद वोट देने नहीं गये होंगे?"

उन्होंने बड़े आह्लादके साथ कहा—"नहीं, मैं गया था। थोड़ा बीमार हो गया था तो क्या?"

उनके चेहरेपर जिस प्रकार प्रसन्नताकी किरणें फूट निकली थीं, और वह जिस प्रकार उल्लासके साथ बात कर रहे थे, उससे मालूम होता था कि २० वर्ष तक नागरिकताके अधिकारसे वंचित इस श्रेणीको नये विधानसे कितनी प्रसन्नता हुई है।

पार्लियामेंटके सभासद-नामजद करनेकेलिए कोई मजदूर-संघ, किसान-संघ अथवा इसी प्रकारकी कोई दूसरी संस्था, अन्ततोगत्वा कोई छोटी-मोटी सार्वजनिक सभा भी नाम पेश कर सकती है। पूँजीवादी देशोंमें दो वोटर भी नाम पेश कर सकते हैं, इसलिए सोवियत्-पार्लियामेंटके सदस्यकी नाम-जदगीकेलिए संस्था या सभाका प्रस्तावक या अनुमोदक होना देखनेमें कड़ा नियम मालूम होगा; लेकिन अगर हम परिस्थितिपर अच्छी तरह गौर करेंगे, तो हमें वही उचित मालूम होगा। पूँजीवादी देशोंमें उम्मेदवारके पास चुनावमें खर्च करनेकेलिए रुपयोंका तोड़ा है, मोटरें हैं और कार्यकर्त्ताओंको वह भाड़ेपर रख सकता है। सोवियत्-प्रजातन्त्रमें बड़ेसे बड़े व्यक्तिके पास भी खर्च करनेकेलिए रुपये नहीं हैं, न मोटरें हैं, न भाड़ेके आदमियोंके मिलनेकी गुंजायश है। वह अपनी गाँठसे खर्च करके एक नोटिस भी नहीं छपवा सकता। वह खुद किसी फैक्टरी, आफिस, स्कूल या सेनामें काम करता है; और वहाँसे मनमाने हर किसीको जिस किसी वक्त छुट्टी नहीं मिल सकती। चुनावकेलिए विज्ञापन छपवाना, सभाओंका प्रबन्ध करना, जहाँ-तहाँ दौड़-

धूप करना, रेडियो, समाचार-पत्र, जलूसका प्रबन्ध करना ये सब जिम्मेवारी व्यक्तिके ऊपर न होकर समाजके ऊपर पड़ती है; इसलिए, जैसे-कैसे भी दो आदमियोंके कह देनेपर नामजद कर देना कभी उचित नहीं हो सकता। नाम-जद करनेका अधिकार संस्था या सभाको होना चाहिए, क्योंकि उन्हींके ऊपर चुनावका सब खर्च और मिहनत पड़नेवाली है।

सोवियत्-चुनावके बारेमें यह भी आक्षेप किया जाता है; कि वहाँ प्रति-द्वन्दीको खड़ा होनेका मौका नहीं दिया जाता। एक चुनाव-क्षेत्रमें एक ही आदमी नामजद होता है, लेकिन इसमें सोवियत्-विधानका कोई दोष नहीं। उसमें कोई ऐसा नियम नहीं है, कि विरोधमें खड़े होनेका किसीको अधिकार नहीं। पार्लियामेंटके दोनों घरोंको मिलाकर ११४३ मेम्बर होते हैं। इनमें किसी जगह कोई विरोधमें खड़ा नहीं हुआ, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसपर जोर या दवाव दिया गया। कम्युनिस्ट पार्टीने देशकी इतनी सेवाएँ की हैं, और कर रही है, कि उसका सारी जनतापर बहुत जबर्दस्त प्रभाव है। कोई भी विरोधमें खड़ा होनेवाला यह अच्छी तरह जानता है कि कम्युनिस्ट पार्टीके मेम्बर और पार्टी द्वारा अनुमोदित जो गैर-मेंबर पार्लियामेंटकेलिए खड़े हुए हैं, उनके विरोधमें सफलता प्राप्त करना असम्भव है। हिन्दुस्तानका ही उदाहरण ले लीजिए। पिछले चुनावमें कांग्रेसको जिन प्रान्तोंमें बहुत अधिकताके साथ कामयाबी हुई, वहाँ चुनावके वक्त भी कितने मेंबरोंके खिलाफ कोई खड़ा नहीं हुआ; और पुनर्निर्वाचनके वक्त तो साधारण निर्वा-चन-क्षेत्रोंमें कांग्रेसका मुकाबिला करनेकेलिए किसीकी हिम्मत नहीं हुई। जब जमींदारों और उपाधिधारियोंने देख लिया, कि लाख-लाख, दो-दो लाख रुपये खर्च करनेपर भी साधारण क्षेत्रके लोग कांग्रेसके मुकाबलेमें सफल नहीं हुए; तो अब जमानत जब्त करवाने कौन जाय? हिन्दुस्तानके बहुतसे चुनाव-क्षेत्र धर्म और जातिके नामपर अलग करके रक्खे हुए हैं। बड़े-बड़े धनी और जमींदारोंकेलिए भी कितनी ही जगहें सुरक्षित रखी हुई हैं। इसके

अतिरिक्त, सभी श्रेणियोंके आदमियोंपर कांग्रेसका उतना प्रभाव नहीं है जितना सोवियत्-प्रजातंत्रमें कम्युनिस्ट-पार्टीका।

कम्युनिस्ट-पार्टीको समझनेमें बाज वक्त लोग गलती कर बैठते हैं। वह समझते हैं कि १८ करोड़की जनतामें १५-१६ लाख कम्युनिस्ट-पार्टीके मेम्बर हैं; और वही जोर-जबर्दस्तीसे सारी जनताकी नाकमें नकेल डालकर जिधर चाहते हैं, उधर घुमाते हैं। सोवियत्-प्रजातन्त्रमें कम्युनिस्ट-पार्टीके मेंबर और साधारण कम्युनिस्ट (साम्यवादी)की संख्यामें फर्क है, लेकिन जहाँ तक कम्युनिज़्म (साम्यवाद)का सम्बन्ध है; उसका न माननेवाला सारे देशमें शायद ही कोई मिले। १८ करोड़की जन-संख्यामें अबोध बालकोंको छोड़कर कितने आदमी हैं जो साम्यवादी नहीं हैं? साम्यवादी तो सभी हैं, हाँ साम्यवादी दल (कम्युनिस्ट-पार्टी)का सदस्य बहुत छानबीनकर बनाया जाता है। देखा जाता है कि वह साम्यवादके सिद्धान्तोंको काफ़ी समझता है, उसमें काम करनेकी योग्यता है, वह ईमानदार है, और पार्टीके आदर्शके लिए स्वार्थ त्याग कर सकता है, हर तरहकी कठिनाइयाँ झेल सकता है, हर प्रकारके प्रलोभनोंसे अपनेको ऊपर उठा सकता है। ऐसा ही आदमी वर्षोंकी शिक्षा और परीक्षाके बाद पार्टीका मेम्बर बनाया जाता है। मेम्बर होनेपर उसकी जिम्मेवारी बहुत बढ़ जाती है। उसके कामकी मात्रा भी अधिक होती है। जरा सी गलती पर साधारण आदमीकी अपेक्षा उसकेलिए दण्ड भी कड़ा है। साम्यवादी दलके १५-१६ लाख मेम्बर सारी १८ करोड़ साम्यवादी जनताके नायक हैं। सभी जनता सिपाही है और वह उनके पथ-प्रदर्शक अफ़सर।

यही कारण है जिससे कि साम्यवादी दलका सोवियत्-जनतापर इतना प्रभाव है। यह प्रभाव ही कारण है कि साम्यवादी दल द्वारा प्रस्तुत किये उम्मेदवारोंका विरोध करनेकेलिए कोई खड़ा नहीं हुआ। यदि कोई विरोधी खड़ा नहीं होता, तो यह नहीं कहा जा सकता, कि चुनाव जनसत्ताक नहीं है। आज हिन्दुस्तानसे मुसलमानोंके पृथक्-निर्वाचनको हटा दीजिए, बड़े-बड़े स्वार्थोंकी सीटें उठा दीजिए, तो देखिएगा, सौ में ९० सीटोंपर कांग्रेसका

विरोध करनेवाला कोई न उठेगा। यदि सभी बालिग स्त्री-पुरुषोंको वोट देनेका अधिकार मिल गया हो, तो ६० फीसदी कांग्रेसियों को निर्विरोध निर्वाचित होनेपर विधानको, जन-सत्ताक नहीं है—नहीं कह सकते। इससे तो यही सिद्ध होगा कि कांग्रेस बहुत सर्वजनप्रिय संस्था है। यदि कोई विरोध करनेकेलिए खड़ा नहीं होता, तो उसे धर-पकड़कर कैसे खड़ा किया जा सकता है!

इतना होनेपर भी सोवियत्-विधानने यह नियम रखा है कि किसी भी निर्वाचित सदस्यको निर्वाचकोंका बहुमत, जब चाहे तब अपने भेजे मेम्बरको हटा सकता है और उसकी जगह नया सदस्य भेज सकता है। साथ ही यह बात भी रखी गई है कि हर एक सदस्यको उस इलाकेके वोटरोंका बहुमत जरूर मिलना चाहिए। यदि गिननेपर वोट आधे से कम आते हैं, तो उसे सदस्य नहीं समझा जाता और इसीलिए निर्विरोधको बिना वोटके चुने जानेका नियम वहाँ स्वीकार नहीं किया गया है। सोवियत्-विधान स्पष्ट देखना चाहता है कि पार्लियामेंटका सदस्य वही हो, जिसको निर्वाचकोंके बहुमतने दिलसे चुना है।

सोवियत्-चुनावके बारेमें जनसत्ताके नामपर जो आक्षेप होते हैं, उनपर अगर गौर करें, तो दोष या गुण जो वहाँ हैं, वह सम्पत्तिपर व्यक्तिके अधिकार उठ जानेके कारण हैं। यह निश्चय ही है कि किसी भी साम्यवादी देशमें, जहाँ कि स्थावर जंगम सभी सम्पत्तिका मालिक राष्ट्र है, व्यक्ति को मनमाना खर्च करनेकेलिए रुपया नहीं मिलेगा। रुपया न होनेपर जैसा तैसा आदमी विरोध करनेकेलिए खड़ा कैसे होगा? आपका अगर आक्षेप करना ही है, तो बेहतर है, यही कहें कि व्यक्तिगत सम्पत्तिके बिना जनसत्ता असम्भव है। सवाल हो जाता है, क्या समाजवाद जनसत्तावादका विरोधी है? और यह कौन अक़्ल का अन्धा कह सकता है? समाजवाद व्यक्तिकी अपेक्षा समाजके अधिकारको ऊँचा मानता है; और जन-सत्तावाद भी बहुमतके अधिकारको मानकर उसी तत्वको स्वीकार करता है।

यदि हम सोवियत् पार्लियामेंटके सदस्योंको देखें, तो मालूम होगा कि

उनमें देशके कोने-कोनेके व्यक्ति चुने गये हैं; सभी भाषा-भाषी जातियोंके आदमी वहाँ मौजूद हैं। उनमें कुछ स्त्री-पुरुष तो ऐसे हैं, जो रूसी भाषा समझ नहीं सकते और उनकेलिए अधिवेशनमें खास टेलीफोनका इन्तजाम किया गया है जिसके द्वारा भिन्न भाषाके व्याख्यानका अनुवाद तत्काल उनके कानोंमें पहुँचाया जाता है। यदि स्त्री-पुरुषके खयालसे देखें, तो वहाँ स्त्रियोंकी संख्या कई सौ है। यदि व्यवसायकी दृष्टिसे देखें, तो जहाँ एक ओर उनमें बड़े-बड़े एकेडेमीशियन, प्रोफ़ेसर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक, सेनानायक हैं, तो दूसरी ओर सैकड़ोंकी तादादमें कारखानों, खानों, पंचायती-खेतों और पशुशालाओंमें काम करनेवाले सैकड़ों मजदूर और किसान हैं। जिस पार्लियामेंटमें हर व्यवसाय, हर जातिके इतने प्रतिनिधि किसी धन या कुलके बलपर नहीं, सिर्फ अपनी योग्यताके बलपर पहुँचे हों, वह यदि जनसत्ताक नहीं है, तो और जनसत्ताक हो ही कहाँ सकती है!

* * *

निर्वाचनके वक्त बड़ी धूम-धामसे देशके कोने-कोनेमें प्रचार किया गया था। रेडियो यन्त्रोंका इस्तेमाल हुआ था। लाखोंकी संख्यामें छपनेवाले अखबारोंमें लेख लिखे गये। उम्मेदवारोंके फोटोके साथ बड़े-बड़े जलूस निकाले गये। ट्रामवे और मोटर-बसोंमें रंग-बिरंगी रोशनियों और साइन-बोर्डोंसे प्रचार किया गया। लेनिनग्रादमें तो मैंने देखा, कुछ बड़ी इमारतोंपर उम्मेदवारोंके १०-१० हाथ ऊँचे चित्र लगे हुए हैं। उम्मेदवार तथा दूसरे जन-नायक सभाओंमें व्याख्यान देते थे। उनके व्याख्यानके बोलते फ़िल्म तैयार करके चौकों और खुली जगहोंपर दिखलाये जाते थे। चुनावके तीन-चार दिन पहलेसे तो लेनिनग्रादमें हर पचास गजपर शब्द-पसारक यन्त्र लगा दिये गये थे। और मास्को तथा दूसरी जगहोंमें होते इस वक्तके व्याख्यानोंको ब्राडकास्ट किया जाता था। सारा नगर इस ब्राडकास्टसे शब्दायमान हो रहा था।

प्रश्न हो सकता है कि जब ११४३ सीटोंपर कोई विरोध करनेवाला नहीं

था, तो इतने तूफ़ानी प्रचारकी आवश्यकता क्या ? हम कह चुके हैं कि वहाँ विरोधी न होने मात्रसे कोई मेंबर चुना नहीं जा सकता। उसकेलिए बहुमत-का वोट अवश्य मिलना चाहिए और चुपके पर्चियोंके डालनेका प्रबन्ध होनेसे कोई भी आदमी पर्चीको ,बिना चिह्नित किये या बेक़ायदा बक्समें डालकर अथवा पर्चीको पाकेटमें रख खाली लिफ़ाफ़ेको डालकर अपना वोट खराब कर सकता है। इस प्रकार पार्टीकी तरफ़से नामज़द होनेपर भी जनताकी उदासीनता या अज्ञानसे कोई आदमी चुनावमें हार सकता है। इसीलिए लोगों-को समझानेकी वहाँ उतनी ही आवश्यकता थी जितनी पूँजीवादी देशोंमें विरोधीके खड़े होनेपर होती है।

* * *   * * *

चुनावने लोगोंमें कितना उत्साह पैदा किया, इसके यहाँ हम कुछ उदाहरण देते हैं—रूसकी गंगा वोल्गाके ऊँचे किनारेपर उग्लिच् कस्बेके पास पुराने पक्रोव्स्क मठकी सफ़ेद दीवारें खड़ी हैं। बीस ही वर्ष हुए जब यह मठ एक बड़ी जमींदारीका मालिक था। उसके पास कई गाँव थे, जिनमें २५८६ मर्द उसकी बेगार करनेवाले थे। स्त्रियों और बच्चोंकी गिनती ही नहीं। मठके खेतोंपर सारे जीवन भर ये किसान काम करते थे। वह मठके आसामी कहे जाते थे।

शताब्दियोंसे कुछ निठल्ली काला चोगा पहननेवाली मोटी तोंदें (साधु) इन किसानोंके खून और पसीनेके बलपर मौज उड़ा रही थीं। श्रद्धालुओंके अज्ञानसे फ़ायदा उठाकर उनको मरनेके बाद स्वर्गका प्रलोभन देकर ठगा जाता था। वोल्गा माईके बालुओंको पवित्र प्रसादी बनाकर लोगोंके दुःख विपत्तिका ढोंग रचा जाता था।

सोवियत्-शासनके स्थापित होनेपर धनिकों और जमींदारोंके साथ साधु कही जानेवाली यह काले जामेमें लिपटी तोंदें भी न जाने कहाँ विलीन हो गईं। नई सरकारने मठके मकानोंको वृद्ध-आश्रमके रूप में परिणत कर दिया।

आज वहाँ ३०० बूढ़े-बूढ़ियाँ बेफिक्र हो, शान्तिके साथ अपना अन्तिम जीवन बिता रही हैं। उनके भोजन-छाजन, दवा-दारू और मनोविनोदका सारा प्रबन्ध सरकार करती है।

देशके और लोगोंकी तरह इन ३०० वृद्धोंको भी सोवियत् नागरिकताका अधिकार है। उन्होंने भी चुनाव में भाग लिया। इन्हीं ३०० वृद्धोंमें दो अपनी अवस्थाके कारण सबसे विशेष स्थान रखते हैं। नीखोन् माखीमोविच् (माखिम् का पुत्र) तीकसिच् चिकलू निकोफ़्की अवस्था १२१ सालकी है; और पावेल कुज़मिच् मर्कलोफ़्की १२३ साल।

तीखोन् चिकलू निकोफ़्ने कहा—'मैं १८१७में पैदा हुआ था। थोड़े ही दिनोंमें इस पृथ्वीपर रहते मुझे १२१ वर्ष हो जायँगे। मेरे गाँवका नाम था अलेक्सेयेव्का जोकि वोरोनेश्के इलाकेमें है। सोस्ना नदी बड़ी सुन्दर है। उसकी धार चौड़ी है। जगह लम्बी-चौड़ी है। गाँव और मीलों तक फैली भूमि एक धनी, काउन्ट शेरेमेतेफ़्की सम्पत्ति थी। हमने कभी काउन्टको नहीं देखा। उनके पटवारी, गुमाश्ता और मैनेजर हमपर शासन करते थे और बड़ी कठोरताके साथ शासन करते थे। घोड़ोंकी तरह सिर्फ हम जमींदारके लिए काम करते-करते मरते थे। दूसरे प्रकारके जीवनको हम जानते न थे। आज कल सबको पढ़नेकेलिए मौका मिलता है, मेरा पड़पोता इंजीनियर है। लेकिन हमें कभी नहीं पढ़ाया गया। मालिकोंको केवल हमारे हाथ-पैरोंकी ज़रूरत थी। जो भी हो, गाँवमें कोई स्कूल न था। वे हमें कोड़ोंसे सिखलाते थे। मुझे मालूम नहीं कौनसे साल। शायद किसी ज़ारके मरनेके बाद। चाहे अलेक्सान्द्र होगा या दूसरा। उस वक्त किसान जमींदारोंके खिलाफ़ उठ खड़े हुए। मैं तब ११-१२ सालका लड़का था। वे पलटन बुला लाये। उन्होंने स्त्री-पुरुष सभी किसानोंको बटोर लिया; और सबको हाँककर वे गाँवके बाहर कोड़ा लगानेकेलिए ले गये। कुछने जान बचानेकी कोशिश की लेकिन भागनेमें सफल बहुत कम हुए। मैं नदीकी ओर भागा और झाड़ियोंकी ओटमें छिप गया। मैं वहाँसे सब देख रहा था। बहुतसे कोड़ोंकी मारसे वहीं

मर गये। कोई जर्नैल पलटन लेकर आया था। वह घोड़ा-गाड़ीपर था। वह लम्बा पतला आदमी था। उन दिनों लोग साँस लेनेमें भी डरते थे। वह सभी चीजसे डरते थे। उस डरनेकी तुम कल्पना नहीं कर सकते।"

सम्वाददाता लिखता है—इतना कहनेके बाद बूढ़ा जरा देरकेलिए चुप हो गया। इसके बाद उसका चेहरा चमक उठा और उसने कहना शुरू किया—आजकल हरएक आदमी स्वतन्त्रतापूर्वक साँस लेता है, स्वच्छन्दतापूर्वक रहता है, आज जीवन वास्तविक है। मनुष्यका जीवन है। तुम समझते हो कि हम बूढ़ोंसे क्या काम निकलेगा, तो भी सोवियत् सरकार हमें भोजन देती है, कपड़ा देती है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह सब कहाँसे आता है। मत समझो, चूँकि मैं बूढ़ा हूँ, इसलिए कुछ नहीं जानता। मैं सब जानता हूँ। मैं स्तालिन्को भी जानता हूँ। वह हमारे देशका प्रथम पुरुष है। उसकी बुद्धिमत्ताके कारण लोगोंने उसे अपना नेता बनाया।

पावल मर्केलोफ्, निजनीनोवोग्राद् (वर्तमान गोर्की) इलाकेके सेर्-गाच गाँवका निवासी है। वह धीरे-धीरे बोलता है। हरएक शब्दके बीचमें दृष्टको दूर किसी जगह स्थिर करके ठहरते हुए बोलता है—"मैं तिपलोयेका हूँ। एक बड़ा गाँव है। हम पोतर् मिखाइलोविच्, फिलातोफ्के असामी थे। लोगोंकेलिए बड़ा कठिन जीवन था। अन्त न होनेवाला दुःख। कोड़ा और बेंत।

"दादा! क्या वे तुमको मारते थे?"

"हाँ, मारते थे।"

"किस लिए?"

"सभी चीजकेलिए। फाटक तक नहीं पहुँचा—मारो! फाटकसे आगे चला गया—मारो! दोषी हो चाहे निर्दोष, छोटी-सी भी भूलकेलिए। आज-कल बिलकुल दूसरी ही बात है। लेकिन उन दिनों अदालत नहीं थी। गाँव-का मालिक ही संपूर्ण अदालत था। वही फैसला करता था कि हमको अस्तबल-में कोड़े लगाना चाहिए या खलिहानमें। मुझे याद है, एक बार कटाईके वक्त

उन्होंने मुझे कोड़े लगवाये थे। घरके बड़ेने चार औरतोंके साथ खेत काटने-केलिए मुझे भेजा था, औरतें सभी गर्भिणी थीं। जल्दी ही उनको बच्चा होने वाला था। न वह झुक सकती थीं, न एक उन्डी हाथसे उठा सकती थीं। एक औरतने उसी समय वहीं खेतमें बच्चा जना।

"सूर्य अस्त होनेवाला था। कटाईका अभी आरम्भ नहीं हो पाया था। कारिन्दा आग-बबूला हो गया, जब कि उसने यह देखा। उसने ठोकर मारी और मैं मुँहके बल गिर पड़ा। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उठकर मैंने उसका कोट पकड़ लिया। वह मुझे खींचकर ज़मींदारके महलमें ले गया। और फिर एक दर्जन या दो दर्जन न जाने कितने कोड़े लगाये।

"दूसरी बार मैं एक पीपेके कारण पीटा गया। मैं एक पानीका पीपा काटनेवालोंकेलिए ले जा रहा था। वह एक खन्दकमें गिर गया। पीपा एक तरफ़ खिसक गया, अभागा! इसलिए मुझे कोड़े लगे। मैं ही अकेला नहीं था, सभीको कोड़े लगे। कोड़ोंकी मारके कारण दो गर्भिणी औरतें मेरी आँखों-के सामने मर गईं। और भी बहुतसे लोग पीटे गये। और सिर्फ हमारे ही गाँवमें नहीं, हमारे पड़ोसी गाँवके किसानोंकी तो और शामत आ गई थी। उनके साथ तो खरीदे दास जैसा बर्ताव होता था। लोगोंने धैर्य छोड़ दिया। उन्होंने खेतमें खड़े गेहूँको जला दिया, और गाँवके चौकीदारको पीटा उसका फल हमें बड़ी क्रूरताके साथ भोगना पड़ा।

"आह मेरे प्यारो! क्या तुम सोचते हो, कि उन दिनों सिर्फ पीटने हीं-की आफ़त लोगोंपर थी? उनको पीटा जाता था, जबर्दस्ती फ़ौजमें भर्ती किया जाता था, और शरीफ़ों की मनमानीका शिकार होना पड़ता था। एक दिन मैं खेतमें निकाई कर रहा था। उस वक्त मैं करीब २० वर्षका था। ज़मींदार खेत देखने आया। उसने मुझे देखकर कहा—देखो उस मोटकड़ेको! अब उसकी शादीका समय आ गया है। वह उसी वक्त मुझे पकड़कर मालिकके घर-पर ले गया। वह एक दुलहिन लाये। हमारे गाँवमें एक कुबड़ी लड़की थी,

बस वहीं थी। उसे वे सीधे खेतोंमेंसे पकड़ लाये थे। मेरे ऊपर मानो बिजली गिर गई। मेरा पिता दौड़ा-दौड़ा आया, और मालिकके पैरोंमें पड़ गया। उसने किसी तरह गिड़गिड़ाकर आरजू मिन्नत करके मुझे छुड़ाया। मालिकका वह विश्वासपात्र चरवाहा था। इसीलिए मालिकने उसकी बात मानी। नहीं तो वह मुझे उस कुबड़ीके साथ ब्याह चुके थे। सब चीज मालिकके हाथमें थी। कोई आदमी अपनी स्वतन्त्र इच्छासे ब्याह करनेकी हिम्मत नहीं रखता था।

"कभी-कभी वह हमको ढोरोंकी तरह बेच देते थे। तिप्लोईके मालिकने असामियोंके साथ अपनी जमीनको किसी राजकुमारके हाथ बेच दिया, और उसने राजकुमार वोल्कोन्स्कीके हाथमें।

"लेकिन सबसे कठिन था फौजकी नौकरीका सहना। वह किसी भी अवस्थाके आदमीको पकड़ ले जाते थे। सब कुछ मालिककी खुशीपर था। २५ सालकेलिए। फौजी नौकरी गुलामीसे भी बदतर थी। बहुत कम जीते लौटते थे। मुझे दो तिनोफ् भाइयोंकी याद है। किसी कारणसे मालिक उनसे नाराज हो गया। और दोनोंको फौजमें भेज दिया। फिर वहाँ दूसरा एक फ्योदोर था। उसका निजी नाम मुझे याद नहीं। वह जवान नहीं था। वह खेत काट रहा था। उसी वक्त मालिककी नजर उसपर पड़ी। उसको उसका ढंग नहीं पसन्द आया। जो भी हो, जब वह घर आया, तो उसी वक्त उसे पकड़ ले गये। उसे खाने भरकी भी फुर्सत न दी गई; न चीजोंको सँभालनेका मौका। वह फिर नहीं लौटा।

"और कभी यदि कोई लौटकर आया भी तो वह किसी कामके लायक न रहकर। वह बूढ़ा देह-जाँगरसे थककर अपने परिवारपर बोझ बनकर। एक बातको मैं कभी न भूलूँगा। मैं उस वक्त लिस्कोफ़में था। एक बड़ी दयनीय सूरतका प्राणी मुझे दिखलाया गया। कह रहे थे, यह तुम्हारे गाँवका आदमी है। लेकिन कोई ठीकसे नहीं बतला सकता था कि वह कौन है। मैंने उसपर नजर डाली और देखा, कि वह अब मनुष्य नहीं रह गया था। उसके बाल सफेद थे, पैर नंगे, जिनसे खून बह रहा था। उसके कपड़े चिथड़े--

चिथड़े हो गये थे। और बीमार भी था। मैं उसे अपने साथ घर ले चला। रास्तेमें मालूम हुआ कि वह सिपाही रहा है। उसकी उम्र ७० वर्षकी थी। ४० वर्षकी उम्रमें उसे पकड़कर पलटनमें ले गये थे। कहीं दूर देशमें २३ वर्ष तक नौकरी बजानी पड़ी और वहाँसे सारा रास्ता पैदल चलकर हमारे इलाकेमें पहुँचा। वह बराबर खोजता रहा लेकिन उसको अपने गाँवका पता नहीं मिला। फ़ौजकी नौकरीने उसकी स्मरण शक्तिको खतम कर दिया था।

"मैं उसे तिपलोये ले आया। उसके सम्बन्धी उसे नहीं पहचानते थे। उसकी औरत और लड़के कितने ही साल पहले भूख और सर्दीसे मर चुके थे। एक बूढ़ी औरतने कहा—इसके कुर्तेको हटा तो दो, अगर पैदा होनेका चिह्न उसके दाहने कंधेपर हो, तो वह हमारे घरका है। लोगोंने उसके फटे कुर्तेको हटा दिया और वहाँ पैदायशका चिह्न मिला। "वान्यूशका" कहकर बूढ़ी औरत रो पड़ी।

"यह थी उन दिनों तुम्हारे लिए फ़ौजकी नौकरी। ऐसी ही ज़िन्दगी उन जमींदारोंके मातहत हम बिताते थे। जब किसानोंको जमींदारोंकी दासता-से मुक्त किया गया, तब भी हमारी अवस्थामें विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। उन्होंने न हमें खेत दिया, न घोड़े। लोग बोल्गामें नावोंपर कुलीगीरी करने चले गये।

"मेरी नजर कमजोर होती जा रही है। आँखोंने काफ़ी समय काम दिया, यह मैं जरूर कहूँगा। कानोंसे अच्छी तरह मुझे सुनाई भी नहीं देता। लेकिन चीजोंको मैं खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ। अब जीवन अच्छा है। इससे बेहतर नहीं हो सकता। पहले यह कैसा था? नरक! सिर्फ़ चन्द लोगोंके-लिए अच्छा और हजारोंकेलिए बदतर! और अब? सभी जाँगर चलानेवाले सुखसे रहते हैं। यह ठीक कहा गया है, तुमने अपने हिस्सेके कामको पूरा किया है, अब जनताकी सरकार बुढ़ापेमें तुम्हारा प्रबन्ध करेगी।

"मैंने बड़े आनन्दके साथ जनताकी सरकारको अपना वोट दिया। और

मैं हृदयसे आदर करता हूँ जनताके पिता योसेफ् विसारियोनोविच् स्तालिन्को ।"

* * * * * *

२४ नवम्बर (१९३७)को लेनिन्ग्राद्की सड़कपर जाते हुए मैंने देखा, स्त्री-पुरुषोंका एक बड़ा जलूस आ रहा है। कलिनिन्का चित्र तथा दूसरे घोषणा-वाक्य हैं। आदमियोंकी संख्या १०००से ज़्यादा होगी। स्त्री-पुरुष दोनों मिश्रितरूपसे चल रहे थे। स्त्रियाँ पुरुषोंके साथ फ़ौजी सिपाहियोंकी भाँति क़दम मिलाकर चल रही थीं।

* * * * * *

तात्याना फ़्योदोरोवा पार्लियामेंटकेलिये मास्कोसे चुने जानेवाले उम्मेद-वारोंमेंसे एक थी। २१ वर्षकी यह तरुणी मास्को शहरके अन्दर तीसरी भूगर्भी रेलवे-लाइनमें खुदाईका काम करनेवाले स्त्री-पुरुष श्रमिकोंकी एक ब्रिगेड (दल)की नेता है। जितनी वह फावड़ा चलानेमें तेज है, उतनी ही क़लम और ज़बानके उपयोगमें भी। प्रथम श्रेणीके वायुयान संचालकका प्रमाण-पत्र भी उसे मिला हुआ है। वह अपनी डायरीमें लिखती है—

(१)"छठे हल्केके वोटरोंकी सभा थी। मैं ज़रा देरसे पहुँची। यातायात-विभागके जन-मन्त्री-क्लब-घरमें सैकड़ों आदमी आ चुके थे। मैंने बड़ी दिलचस्पीके साथ व्याख्यानोंको सुना जिनमें अभिमान और उत्साह दोनोंकी मात्रा भरी थी। मुझे याद आते हैं, एक स्त्रीके शब्द। यह शब्द उसके हृदय-के अन्तस्तलसे निकले थे—"स्तालिन् हमारा सब कुछ है। वह हमारा नाज़ (अभिमान) है, वह हमारा चातुर्य है, हमारा जीवन है। स्तालिन्का नाम श्रमजीवियोंके मुखकी जाग्रत प्रतिमा बन गया है।"

"साथी स्तालिन्के प्रेमका भाव हम सबको एक कर देता है। जब उसका नाम उच्चरित होता है, तो तालियोंसे सारा हाल गूँज उठता है। सभी

सभाओंमें जहाँ-जहाँ इन दिनों मैं गई, यही देखा। जब मैं और सारे कमकर खड़े होकर वक्ताकेलिए ताली बजाते हैं, तो मालूम होता है, कि दीवारें हट गईं और सम्पूर्ण देशमें सुखी, शक्तिशाली जनता और स्तालिन मार्च कर रहे हैं। स्तालिन अपनी सादी और पिताकी जैसी मन्द मुसकानके साथ हमारे आगे चल रहा है।

मंचसे एक स्त्री आती है और मेरे कानोंमें कहती है—'तवारिश, फ़्योदोरोवा, मेरे जीवनमें यह पहला समय है; जबकि मैंने किसी सभामें भाषण दिया।'

'तुम्हारा भाषण बड़ा सुन्दर रहा'—हाथ मिलाते हुए मैंने उससे कहा।

इस चुनावके प्रचारके कारण लाखों नये आदमी राजनैतिक हलचलमें खिंच आये। मुझे रोज रोज इसे देखनेका मौका मिल रहा है।

कुछ घरू औरतें सभा समाप्त होनेके बाद मुझे चारों ओर घेरकर खड़ी हो गईं। उन्होंने मुझसे कहा—'हम अपने देपुतात् (सदस्य)को और अच्छी तरह जानना चाहती हैं।'

हममें दोस्ताना बातचीत शुरू हुई। मेरे नये परिचितोंने आग्रह किया कि मैं संगीत-नाटक को देखकर जाऊँ। मैंने हँसते हुए कहा—'वोटरोंकी आज्ञा मेरे लिए क़ानून है।'

संगीत-नाटक बड़ा सुन्दर था। वहाँ कलाकार और जनतामें कोई भेद-भाव न था। सभी एक सुखी परिवारसे मालूम होते थे।

(२) मैंने समझा, आज सवेरे छुट्टी रहेगी; लेकिन उसी वक्त टेलीफ़ोन खनखन करने लगा। कान लगाकर सुना 'तवारिश् फ़्योदोरोवा, ८४ नम्बरके स्कूलमें हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मैं उस सुन्दर स्कूल-भवनमें पहुँची। यह पिछले तीन सालके भीतर मास्कोमें बने २६५ स्कूलोंमेंसे एक है। मुझे याद आने लगा : मास्को कम्युनिस्ट पार्टीके मन्त्री ख़ुश्चेफ़् ने एक बार एक सभामें कहा था—'पुरुषें

जमानेमें हर साल दो या तीन स्कूल ही बन पाते थे।' मैं प्रकाशसे देदीप्यमान एक विशाल मनोविनोद-हालमें पहुँची। विद्यार्थियोंने कान बहराकर देनेवाले 'हुरा' के घोषमें मेरा स्वागत किया। वे ताली बजाने लगे और धरतीपर पैरोंको धमधमाने लगे। मुझे उन्हें शान्त करनेकेलिए प्युनिरका (बालचर्या) जीवनके कुछ वर्षोंके अनुभव कहने पड़े। मैंने अपने उन दिनोंके बारेमें उनसे कहा। उन्हें बीते अब भी बहुत समय नहीं गुजरा। लड़कोंने बड़ी दिलचस्पीसे सुना। मैंने कहा—'अच्छा, दूसरी क्या बात मैं तुमसे कहूँ।' मेरे ऊपर प्रश्नोंकी बौछार होने लगी।

'भूगर्भी रेलके बारेमें कहो। बेइंजनके विमान (ग्लाइडिन)के बारेमें कहो।'

'तुमने स्तालिन्को देखा है?'

'विमान-संचालक बननेकेलिए कितना बड़ा होनेकी जरूरत है?'

मैंने सबकी जिज्ञासाको पूरा किया। मैंने उनसे कहा—'महान क्रान्तिके बीसवें वार्षिकोत्सवके कुछ दिन पहले हमारे तरुण-साम्यवादी-संघका ब्रिगेड कितने ही दिनों तक अपने कामसे नहीं हटा, जब तककि हमने योजनाके मुता-बिक अपने कामको समाप्त नहीं कर लिया। मैंने उनसे कहा—जब पहले-पहल उड़ते हवाई जहाजसे पराचूट (मुँहबन्द छाता)के सहारे मैं कूदी। कूद जानेके बाद मेरा डर भाग गया, और मैं इतनी प्रसन्न हुई कि गीत गाने लगी। लेकिन लड़को, अब मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूँ? जरा अपनी नोटबुकें दिखलाओ तो!'

एक बड़ी छल्ली मेरे सामने लाई गई। सभी नोटबुकें साफ और ठीकसे रखी गई थीं। मैंने कहा—''कमजोर विद्यार्थियोंकी कुछ नोटबुकें मुझे दिखाओ तो।'

चारों ओर कानाफूसी होने लगी। तो भी हिम्मत करके एक शरमीला लड़का मेरे सामने पेश किया गया—'चाची तान्या, (तात्याना) यह है! यह तीसरे दर्जेका विद्यार्थी बड़ा नटखट और बड़ा ही फूहड़ लड़का है।'

एक बड़ा ही मीठा-कथा-संलाप शुरू हुआ। लड़केने 'बालचरका वचन' दिया कि मैं मन लगाकर पढ़ूँगा और ठीक चालसे चलूँगा। स्कूल छोड़नेसे पहले हम लोगोंने मिलकर गाना गाया।

(३) मुझे कभी विश्वास नहीं था कि मेरे इतने दोस्त हैं। बीसों पत्र हर रोज आ रहे हैं। उनमें कितने ही मास्को, लेनिनग्राद्से ही नहीं; बल्कि सुदूर ताशकन्द और बाकूसे आ रहे हैं। कितने ही कलखोजोंसे आ रहे हैं और कितने ही सीमान्त चौकियोंसे। ऐसे पत्र भी डाकखानेकी कृपासे मुझे मिल जाते हैं जिनपर इतना ही लिखा रहता है—'मास्को, तान्या फ्योदो-रोवा'। मुझे इस सचाईका ठीक तौरसे पता अब मालूम हो रहा है कि हमारे देशमें किसी मनुष्यको सूनापनका भान होना बड़े अचरजकी बात है। साथी बधाइयाँ भेजते हैं। वह अपनी जीवनी, अपनी पढ़ाई, अपने काम और अपनी सफलताओंके बारेमें कहते हैं। मैं अपने नये दोस्तोंमेंसे अधिकांशको उत्तर देती हूँ। लेकिन दुर्भाग्यसे हर एक पत्रका उत्तर देना मेरी शक्तिसे बाहरकी बात है। देशके सभी भागोंसे आये ये पत्र मेरे लिए बड़े आनन्दके विषय हैं।

(४) नब्बेवें हल्केकी सभा थी। खुली जगहमें हजारसे अधिक आदमी जमा थे। कितने ही श्रोता अपने बच्चोंके साथ आये थे। एक खुली लारी भाषण मंचका काम दे रही थी। लोग उसे घेरे खड़े थे। चुनाव समितिके एक सभासदने मुझसे कहा—'यह देखो', यहाँ कितने ही घरघुस आये हुए हैं।' उन्होंने यह कहते हुए लारीके पास खड़े कुछ बूढ़ोंकी ओर इशारा करके फिर कहा—'किसी सभामें इनको खींच लाना आज तक सम्भव नहीं हुआ था।'

एक पताकापर लिखा था—'हम सब तवारिश् फ्योदोरोवा और तवारिश् बुल्गानिनको वोट देंगे।'

मैं कितनी ही बार इन वाक्योंको पढ़ चुकी हूँ, तो भी यह मेरे दिलमें सदा एक लहर पैदा करते हैं। मैं सोचती हूँ—क्या सचमुच ही मैं ऐसे महान सम्मानकी पात्री हूँ? जो विश्वास मेरे प्रति किया गया है, क्या मैं उसके साथ

न्याय कर सकेगी। मेरे दिमागमें देश-प्रेमके कितने ही शब्द आये, लेकिन शब्दोंकी जरूरत नहीं, कार्यकी जरूरत है। जो भाव मुझे अपनेमें डुबा रहे हैं, उनकी सत्यता मुझे अपने कार्योंसे दिखलानी होगी।

एक प्रसन्न सजीव श्रोतृमण्डली ध्वजा-पताका नवारिश् स्तालिन तथा पार्टी और सरकारके कितने ही नेताओंके चित्र बड़े जलूसके साथ जब निकलते हैं, तो वह एक बड़ा त्योहार सा मालूम होता है। वही भाव वक्ताओंके भाषणोंमें भी दिखाई देता है। मुझे और शायद सभी उपस्थित मनुष्यों को यह नहीं मालूम होता कि हम किसी राजनैतिक सभामें हैं। जान पड़ता है, जैसे स्नेही बन्धुओंकी बैठक लगी है। मैं ऐसी अविस्मरणीय उत्साहवर्द्धक बैठकोंमें उपस्थित हो रही हूँ।

(५) मुझे अपने चंद्वक (shaft या जमीनके नीचे गहराईमें उतरनेकेलिए खुदा हुआ कुआँ)में जानेकी बड़ी इच्छा हो रही है। कितने दिनोंसे खुदाईमें मैं उपस्थित न हो सकी, लेकिन चुनाव सम्बन्धी कामोंकी इतनी भीड़ है कि उसकेलिए जरा भी समय निकालना मुश्किल है।

"अच्छा तान्या, मालूम होता है, तुम हम सबको भूल गई !"—हँसते हुए मेरे साथी कमकर मिलनेपर कहते हैं। चन्द्वकका काम समाप्त होने जा रहा है। १२ दिसम्बर तक भूगर्भी रेलवेकी पक्रोव्स्की लाइनपर गाड़ी दौड़ने लगेगी। लाइनपर आखिरी हाथ फेरा जा रहा है। हमें सभी काम पूरा और निर्दोष रीतिसे करना है।

मेरे साथी कमकर शिकायत कर रहे हैं—'अब जरा-जरा कहीं-कहीं समाप्त करना रह गया है। अपना कर्तव दिखलानेकेलिये कौन सी बात रह गई है ?'—दोस्तो, धीरज धरो, अभी तीसरी लाइन बाकी है। उसमें करनेकेलिये बहुत काम मिलेगा। हमारे तरुण-साम्यवादी-संघके ब्रिगेडको अपना कर्तव्य दिखलानेके लिए वहाँ बहुत मौका मिलेगा।

* * *   * * *

प्रसिद्ध उपन्यासकार मिखाइल् शोलोखोफ़ सोवियत् पार्लियामेंटके-लिये एक उम्मेदवार था। नवोचेरकास्क शहरके वोटरोंकी सभा थी। आसपासके कितने ही कलखोजोंके कसाक भी आये हुए थे। ओर्जोनीकिद्ज़े-हाल लोगोंसे खचाखच भरा था। दो हजारसे ऊपर आदमी प्रसिद्ध उपन्यासकारके भाषण सुननेकेलिए प्रतीक्षा कर रहे थे। वक्ताके हालमें प्रवेश करते लोगोंने जोरसे करतल-ध्वनि की।

रोस्तोफ़् नगरके गोर्की नाट्यशालाके कलाकार फ्त्यानूने 'शान्त-दोन'के लेखकके जीवनपर प्रकाश डाला। शोलोखोफ़् मंचपर आया। जोरकी तालीं पिटीं। उपन्यासकारने कहना शुरू किया—

साथियो, सोवियत् पार्लियामेंटके भाषणोंसे—जो कि समाचारपत्रोंमें छप रहे हैं—एक अभिमानका भाव प्रतिध्वनित होता है। किसका अभिमान? यही कि जनताने उनके ऊपर इतना विश्वास किया (हर्ष-ध्वनि)। मुझे भी वह अभिमानका भाव विह्वल कर रहा है। मेरे लिए, इस अभिमानमें कुछ व्यक्तिगत विशेष भाव भी मिश्रित हो गया है। सो क्यों? क्योंकि मैं दोनके एक निर्वाचन-क्षेत्रसे खड़ा हुआ हूं। दोनके तटपर मैं पैदा हुआ। दोनने मुझे पाला पोसा। यहीं मैंने शिक्षा पाई। यहीं मैं जवान और लेखक हुआ और यहीं मैं अपनी महान् कम्युनिस्ट पार्टीका मेंबर बना। मैं अपनी महान् तथा अनुपम शक्तिशाली पितृभूमिका भक्त हूँ। मैं यह भी अभिमानके साथ कहता हूँ कि मैं अपनी जन्मदातृ दोन्-भूमिका भक्त हूँ (हर्षध्वनि)।

साथियो, इस पुराने नगर ने पितृभूमिके प्रेमभरे कितने ही भाषण सुने हैं। गृहयुद्धके दिनोंमें पितृभूमिके प्रेमके बारेमें बहुत कहा गया था। दूसरोंके साथ-साथ (क्रान्ति-विरोधी) जेनरल क्रासूनोफ़् और उसी तरह दूसरे राजनैतिक गिरगिट देश-प्रेमकी बात करते थे; और साथ ही जर्मनोंको दोनपर चढ़ाई करनेकी दावत देते थे। पीछे वे मित्रों—अंग्रेजों और फ़्रांसीसियों—को बुलाने लगे। एक तरफ़ वह देश-प्रेमकी बात करते थे; और दूसरी तरफ़ कसाकोंके

खूनको बेच रहे थे। सोवियत्-सरकारके विरुद्ध लड़नेकेलिये जो हथियार उन्हें मिलते थे, उनके बदले में रूसी जनताको बन्धक रख रहे थे।

इतिहास लोगोंको उनके वचनसे नहीं बल्कि उनके कामसे परखता है। इतिहास जानना चाहता है कि आदमी कितनी मात्रामें अपने देशसे प्रेम करता है और उस प्रेम का वास्तविक मूल्य क्या है? देशका सच्चा प्रेम बड़ी बुरी तरहसे क्रासनोफ़ और दूसरे वतनफ़रोश बदमाशों द्वारा रौंदा जा रहा था। उन्होंने धोखा देकर कसाक कमकरोंको बेवकूफ़ बनाया और क्रान्ति-विरोधी युद्धमें खींच लिया।

आज सोवियत्-संघके करोड़ों आदमी देशके प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं। वह अपने खूनसे अपनी मातृभूमिकी सीमाओंकी रक्षाकेलिये तैयार हैं। जिसने हमें माताकी तरह पाल पोसकर तैयार किया, उस स्वदेशसे प्रेम करना हमारा पवित्र कर्तव्य है।

१७ करोड़ कमकरोंकेलिये हमारा देश प्रिय है। इन १७ करोड़ोंमें कुछ घृणास्पद राजनैतिक वेश्याएँ—सभी त्रोत्स्की, जिनोव्येफ़ और बुखारिन-के अनुयायी हैं, जिन्होंने अपने आपहीं को नहीं बेचा, बल्कि वे पितृ-भूमिको भी बेचना चाहते हैं। ऐसोंकेलिए आश्चर्य नहीं होता, बल्कि ऐसी घृणा होती है कि जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। मनुष्य जाति के इतिहासमें जातिद्रोह और राष्ट्रके प्रति विश्वासघात—सबसे बड़ा पाप समझा गया है।

कसाक जाति—जिसने अमीरोंके खिलाफ़ विद्रोह करनेवाले रजिन और पुगाचेफ़ जैसे वीरोंको पैदा किया—क्रान्तिके दिनोंमें उसे (सफ़ेद) जेनरलोंने बेवकूफ़ बनाया। और कमकर रूसी जनताको भाईका खून बहानेकेलिए तैयार किया। जब कसाकोंको अपनी गलती मालूम हुई, तो वे सफ़ेदोंसे अलग हो गये।

आज बोल्शेविक पार्टीके नेतृत्वमें, हमारे युगके प्रतिभावान महापुरुष साथी स्तालिन्के नेतृत्वमें, वह एक शान्त और सुखमय जीवनका निर्माण कर रहे हैं। १९१८ ई०में बवेरिया (जर्मनी)के सवारोंने अपने घोड़ोंकी दौड़

नदीका पानी पिलाया । जर्मन सिपाहियोंके बूटोंने दोनकी धरतीको रौंदा। क्रासनोफ् विदेशी बन्दूकोंके भरोसेपर तरुण सोवियत् सरकारका गला घोंटना चाहता था। वे क्रान्तिके मार्गको रोक देना चाहते थे। महान् रूसी जनता—जो कि एक नये जीवनका निर्माण कर रही थी—के रास्तेको रूँधना चाहते थे। १८ वर्ष हो गये। आज फिर पूर्व और पश्चिमसे फासिस्ट गुंडे हमपर प्रहार करना चाहते हैं। ऐसे कड़े शब्दके इस्तेमालकेलिए मैं माफी माँगता हूँ। निश्चय ही यह शब्द सुभाषित नहीं कहा जा सकता। लेकिन जब कोई इन पशुओंके बारेमें बोलता है, तो ऐसे शब्दोंका रोकना मुश्किल हो जाता है। इससे भी कड़े शब्दको इस्तेमाल किया जा सकता है; लेकिन मैं एक लेखक हूँ, इसलिए उसकी शानके वह शायाँ नहीं।

बोलशेविक पार्टीके प्रयत्नसे संपूर्ण नानाजातिक कमकर जनताकी कोशिश-से हमने अपने गरीब देशको सम्पत्तिशाली बना दिया है। हमने विशाल नयी फैक्टरियाँ खोलीं। हमने बड़े पैमानेपर पंचायती समाजवादी कृषिका निर्माण किया। हम अपनी आर्थिक प्रभुताको प्रतिदिन बढ़ा रहे हैं। आज उन सभी जातियों—जो कि परमुंडे फलाहार करना चाहती हैं—केलिए हम ललचाऊ कौर हैं। वह फिर उक्रइनको हमसे छीननेका स्वप्न देख रहे हैं। वह फिर दोनकी भूमिको जर्मन जूतोंके लोहकी नालोंसे रौंदना चाहते हैं। साथियो, जैसा कि तुम जानते हो, यह कुछ नहीं होने पायेगा। (हर्षध्वनि)

यह कुछ नहीं होने पायेगा। जैसा कि तुम्हें हालमें दिये क्लिमेन्त वोरो-शिलोफ्के भाषणसे मालूम होगा। लाल-सेना आत्मरक्षाकेलिए संगठित की गई है। लेकिन अगर हमारे ऊपर हमला होगा, तो लालसेना अपनेको संसार-की सबसे जबर्दस्त हमला करनेवाली फौज साबित करेगी। (हर्षध्वनि)

साथियो, मैं जानता हूँ। अगर एक समय जनरल क्रासनोफ् और दूसरे देश-द्रोहियोंकी सम्मतिसे जर्मन घोड़ोंने दोन् नदीका पानी पिया, तो अब उन्हें फिर कभी हमारे सोवियत् दोनका पानी पीनेका अवसर न मिलेगा। बल्कि इससे बिलकुल उलटी बात होगी। अगर हम पर हमला हुआ, अमर

फासिस्टोंके साथ सशस्त्र द्वन्द्व हुआ तो कसाक लाल-सेनाके दोन् वाले घोड़े राइन (जर्मनीकी पश्चिमी सीमापर अवस्थित नदी)का पानी पियेंगे। सोवियत् राज्यके इतने वर्षोंमें दोन् कसाक क्या से क्या बन गये। गाँवोंमें ही नहीं, बल्कि हरएक घरके लड़के हाइ स्कूलोंमें पढ़ रहे हैं। कसाक कलखोजी किसान अब अपने पुत्रकेलिए इतनेसे सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपने बच्चोंको इंजीनियर, लालसेनाके सेनानायक, कृषि-विशेषज्ञ, डाक्टर और प्रोफेसर बना देखना चाहते हैं। एक नई सोवियत् कसाक शिक्षित श्रेणी प्रगट हो रही है। दोन्‌की कायापलट हो रही है। यह अभी ही एक नई दोन् बन गई है। हम बड़े साहस और विश्वासके साथ सुन्दरतर भविष्यकी ओर बढ़ते जा रहे हैं। (हर्षध्वनि)

चिरंजीव बोलशेविकोंकी कम्युनिस्ट पार्टी ! (हर्षध्वनि) चिरंजीव हमारा महान् राष्ट्र और दोन्‌के कमकर कसाक ! (हर्षध्वनि)

चिरंजीव वह जिसका नाम हम अपने हृदयमें रखते हैं, चिरंजीव साथी स्तालिन् ! (गर्जनापूर्ण हर्षध्वनि और हुराका नारा।)

* * * * * *

चुनावके सम्बन्धमें दुनियाके एक षष्ठांशमें फैले सारे सोवियत् प्रजातंत्रमें सभाएँ हुई थीं। नवम्बर और दिसंबरकी सर्दी और उसपर उत्तरी ध्रुवके पास वाले प्रदेशोंकी सर्दी ! सत्तरवें अक्षांशमें भी और उत्तर लेनेत्सु गाँव (तुरिन्स-कोये प्रान्त)में एक ऐसी सभा हो रही थी। गाँवके सभी २१६ वोटर सभामें उपस्थित थे। किरिल् यम्‌किन्‌ने—जो कि सोवियत् पार्लियामेंटकी जातियों-की सोवियत्‌केलिए तैमूर निर्वाचन-क्षेत्रसे खड़ा हुआ था—कहा—

"मुझे आतिक-भवनकेलिए अपने जिलेके कमकरोंने जो उम्मेदवार चुना है, उसके लिए मेरे हर्षकी सीमा नहीं। मैं बारहसिंघोंके तम्बूके भीतर पैदा हुआ था। वहीं मैंने अपना बचपन बिताया। पहले वर्षोंमें धनी किसानों (कुलक)के लिये काम करता था। मेहनत सख्त थी और जीवनमें

कोई रस न था।........सोवियत सरकारने हमें सुख और शांति प्रदान की। मैं अब जानता हूं कि मैं सिर्फ अपने लिए काम नहीं कर रहा हूं, बल्कि अपनी भव्य पितृभूमि की भलाईकेलिए कर रहा हूं। मैं देख रहा हूं नये जीवन को। मैं देख रहा हूं, कैसे पहले की उत्पीड़ित तैमूरकी जनता पुनरुज्जीवित हुई है। हमारा प्रिय नेता साथी स्तालिन् चाहता है कि हमारा जीवन और भी सुखमय हो; और भी आनंदपूर्ण और सम्पत्तिशाली हो। मैं हर वक्त तैयार हूँ, उस हुक्मको बजा लानेकेलिये; जो बोलशेविक पार्टी या हमारा नेता साथी स्तालिन् दे। मैं निर्मम हो कमकरोंके और भी अधिक सुखमय जीवनकेलिए लड़नेको तैयार हूं। मैं लेनिन्-स्तालिनके झंडेको ऊँचा रखूँगा और जनता उसके चौगिर्द आ घेरेगी। चिरंजीव जनताका महान् नेता साथी स्तालिन्!"

* * खतङ् गाँवकी सभामें भी एक रायसे यमूकिन्को वोट देनेके पक्षमें प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्तावमें कहा गया था—"साथी यमूकिन् हमारे जिलेका सबसे अच्छा आदमी है। वह तुन्द्राका प्रमुख पुरुष है। वह वह मनुष्य है जिसे हमारी पार्टी और महान् नेता साथी स्तालिन्ने निर्मित किया है।"

* * *   * * *

निरक्षर कवि सुलेमान स्ताल्स्कीको पार्लियामेंटका उम्मेदवार खड़ा किया गया था। वोटके दिनसे चन्द ही रोज पहले उसका देहान्त हो गया। उसने अपने वोटरोंको निम्नलिखित कविता अर्पित की थी—

मेरे जन ने कहा सोवियत-
हेतु खड़ा हो जाऊँ।
पुण्य-देश का प्रिय सपूत मैं,
अतिशय आदर पाऊँ॥

मोदमग्न हो गया बहा,
संगीतमग्न मुद मेरा ।
वय झुका सकेगी कटि क्या,
जब सम्मानों ने घेरा ॥

बाजी बदना हूँ, गायक,
यह कहाँ मान पायेगा ।
इस जन्मभूमि में ही यह,
सम्मान दिया जायेगा ॥

पर सुयश गान गाऊँगा,
मैं उसका सुख से दिन-दिन ।
जो मार्ग प्रकाशित करता,
जो राह बताता स्तालिन् ॥

मिल खेतों में खानों में,
सागर, बहती सरिता पर ।
तुम मेरे सहचर स्तालिन्,
घन में पथरीली भू पर ॥

जग मुक्त हुए चलते हैं,
जग-रवि के पीछे दिन दिन ।
जय जय करने को है वह
मेरा पावक-ध्वज स्तालिन् ॥

धन-शासन से बिलगाया,
कुहरे पर पानी फेरा ।
पथ में शुचि सुमन पड़े हैं,
ऐसा है स्तालिन मेरा ॥

उसने जंजीरें तोड़ीं,
बन अग्नि अरि-दल को मारा,
तूफाँ, आँधी है झंझा,
वह अपना स्तालिन प्यारा ॥

रवि-दीप्त मही में गाऊँ,
उसका पावन यश दिन दिन।
निज वोट सुलेमाँ का वह
पायेगा मेरा स्तालिन ॥

निज वोट सुलेमाँ ही क्या,
प्रत्युत सब जनता देगी।
स्तालिन् की जय-गति उर में
अति सुख आँखें देखेंगी ॥

नारों में नदी चलेगा,
उस महत् सोवियत् में जब ॥
निज पुत्रों को ले उसमें,
होगा मेरा स्तालिन् तब ॥

सम्मान सुलेमाँ पाया,
गा तेरी गीत बहेगी।
जनता के सुख का कारण,
तुझ पर विश्वास करेगी ॥

ओ जन्म भूमि मेरी; मैं,
तेरा गुण गान करूँगा।
उनका चारण मैं, पूरी—
निज जाति-चाह कर दूँगा ॥

४. निर्वाचन-दिन

(१२ दिसम्बर १९३७)

महीनोंसे जिसके लिए तैयारी की गई थी; आखिर वह १२ दिसम्बर आ ही गया। उस दिन सोवियत्के सभी शहर, कस्बे, गाँव ही नहीं, समुद्रों और नदियोंमें चलते पोत भी ध्वज, पताका और चित्रोंसे अलंकृत किये गये थे। रातको दीपमाला जल रही थी। राष्ट्रीय-लांछन (हँसुवा, हथौड़ा, तारा) रंग-बिरंगे विद्युत् प्रदीपोंसे रंजित किया गया था। सोवियत् भूमि पूर्व-पच्छिम इतनी विस्तृत है कि जिस समय व्लादिवोस्तोकमें सुबह ६ बजे वोट पड़ना शुरू हुआ तो मास्कोमें ११ बजे रात हो रही थी; और लोग सोनेकी तैयारी कर रहे थे। दोनोंके समयमें सिर्फ में १७ घंटे का अन्तर है। पहला वोटर जो ४७वें निर्वाचन स्थान में वोट देने आया, वह था प्रशान्त महासागर नौ-सेना-का सहायक कमांडर कुज्नेत्सोफ़्।

सिबेरियाकी उन दूरदराज जगहोंमें जहाँ कि नदियोंके जम जाने और रास्तोंके बर्फके नीचे दब जानेसे आना-जाना बन्द हो गया था, हवाई जहाजोंने वोटकी पर्चा आदि ले आने ले जाने का काम किया। कम्चत्स्काके गाँवों और नगरोंमें चुनाव-सम्बन्धी कागजोंको पहुँचानेकेलिये कितने ही दिनों तक बहुतसे हवाई जहाज लगे हुये थे। बर्फके कारण उतरनेके मैदान खराब हो गये थे। बादल और हिम-वर्षाके कारण रास्तेका देखना आसान काम न था। विमान संचालकोंमें ध्रुव-प्रदेशका प्रसिद्ध उड़ाका वोवेर्चाकिन् था। याकुत्स्क नगर सिबेरियाके अत्यन्त शीतल नगरोंमें है। विमान-संचालक बेरेज़िन् अपने जहाजके साथ उड़कर ७ दिसम्बर हीको वहाँ पहुँच गया था।

* * * * * *

(१) १२ दिसम्बर लेनिन्ग्राद्के सारे कमकरोंकेलिये एक ऐतिहासिक दिन था। एक महोत्सवका दिन था। उस दिन लाखों वोटर अपनी पर्चियोंको

ही बक्समें डालनेको नहीं लाये, बल्कि साथ ही बोल्शेविक पार्टी और उसके महान् नेता स्तालिनके प्रति अपना प्रेम और भक्ति भी लेकर आये थे।

ठीक ६ बजे ब्रोद् लोफ् निर्वाचन-क्षेत्रके ३४वें निर्वाचन-स्थानके अध्यक्ष अल्लीलोफ्ने दरवाजा खोलते हुए कहा—"ग्रज्दानियन् (नागरिक) निर्वाचको, अब आप वोट देना आरंभ कर सकते हैं। इस निर्वाचन-क्षेत्रकी पर्चीपर कालिनिन् (सोवियत् प्रेसीडेंट) और मेलेज्नियेफ् (प्रसिद्ध पनडुब्बी-नौसैनिक) के नाम छपे थे। २ बजे तक २,२४६ वोटरोंमेंसे १६४५ वोट दे चुके थे।

(२) स्मोल्नी-निर्वाचन-क्षेत्रके १०५वें निर्वाचन-स्थानमें वोट विशेष परिस्थितिमें लेना था। इस स्थानमें प्रसूतिका अस्पतालमें प्रसूता या आसन्नप्रसवा स्त्रियोंके वोट देनेकेलिए विशेष प्रकारसे प्रबन्ध किया गया था। पहले पर्देसे हर कमरेको ६—६ हिस्सोंमें विभक्त कर दिया गया था। हर एक स्त्रीकी खाटको भी उसी तरह विभक्त कर दिया गया था, जिसमें कि एक दूसरेको वोटके बारेमें पता न लग सके। ११॥ बजे वोटिंग आरम्भ हुई। निरीक्षक-समितिके दो मेम्बर बक्सको अध्यक्षके सन्मुख बीमारकी चारपाईके पास ले आये और उसने पहलेसे चिह्नकी हुई लिफाफेमें बन्द पर्चीको उसमें डाल दिया।

(३) लेनिनग्राद्की नाट्यशालाओंने इस ऐतिहासिक दिनकेलिये खास प्रोग्राम रक्खे थे। नाटक आरंभ होनेसे पहले कलाकारोंने कविता पाठ किया और कितनोंही ने सोवियत् विधानकी विभिन्न धाराओंपर व्याख्यान दिया। सिनेमा-घर भी दर्शकोंसे ठसाठस भरे हुए थे। फिल्म आरम्भ होनेसे पहले कितने ही तरुण कवियोंने अपनी नई कविताएँ पढ़कर सुनाईं।

* * *   * * *

ओदेसा—

(१) ओदेसा काला-सागरके पश्चिमोत्तर तटपर अवस्थित एक बड़ा बन्दरगाह है। आज सबेरे ५ बजे हमें उसके [illegible] गये थे। वोटिंग

आरम्भ होनेसे बहुत पहले ही कितने लोग निर्वाचन-स्थानपर पहुँच गये थे। हर एक आदमी सबसे पहले अपनी पर्चीको बैलेट-बक्समें डालना चाहता था। लेनिन-चुनाव-क्षेत्रके ४१वें निर्वाचन-स्थानमें जिस व्यक्तिने पहला वोट दिया, वह थी ७२ सालकी अंधी बुढ़िया रोस्या मलमुद्। १९१८में वह क्रियेफ़् शहरके पास एक छोटेसे गाँवमें रहती थी। एक दिन डाकू उसके घरमें घुस आये और उसके लड़केका पता जबर्दस्ती पूछना चाहते थे। बुढ़ियाने नहीं बतलाया और उन्होंने उसकी आँखें फोड़ दीं। बुढ़िया कह रही थी—'मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है कि मैं अपने ज़िलेके योग्यतम उम्मेदवार ख्रेनकिन् और चेर्निल्साको वोट दे रही हूँ।'

६० वर्षकी बुढ़िया सोफ़ियाँ माक्सीमोव्ना (माक्सिम्की लड़की) पोनोमरेवा अपने निर्वाचन-स्थानमें वोट देने गई। उसके बुढ़ापेको देखकर कार भेजी गई, लेकिन उसने उसपर चढ़नेसे इनकार कर दिया। वह पैदल ही चलकर पहुँची।

(२) निर्वाचन-दिन ओदेसामें बड़े समारोहके साथ मनाया गया था। गायक, वादक, नर्तक, वक्ता, अभिनेता तथा दूसरे कलाकार सड़कों, चौकों, और चौराहोंमें अपने गुणको प्रदर्शित कर रहे थे। बोलते फ़िल्म सड़कोंकी दीवारोंपर दिखलाए जा रहे थे। लाउड-स्पीकरसे सारे शहरमें संगीत ध्वनि सुनाई पड़ती थी।

कृषि-विज्ञानमें क्रान्ति पैदा करनेवाला बीजसंस्कार (Vernalization) का आचार्य अकदमिक लिसेन्को, ओदेसाके निर्वाचन-क्षेत्रसे संघ-सोवियत्की सदस्यताकेलिए खड़ा हुआ था। दूर-दूरके गाँवोंके कल्खोजी किसान रात रहते ही जाग उठे थे; और हर एक चाहता था कि बैलेट-बक्सपर पहले वही पहुँचे।

* *
* *

१२ दिसम्बरको निर्वाचनका प्रबन्ध बड़े विशाल पैमानेपर किया गया था। हरएक कस्बे, शहर, गाँवमें दौड़ती ट्रेनों, चलते जहाजों, पनडुब्बियों, अस्पतालों, सभी जगहोंपर वोट देनेका प्रबन्ध हुआ था। वोटरोंमें पैदल, मोटर, तथा दूसरी साधारण सवारियोंके अलावा कितने ही स्कीइस (बर्फ-पर फिसलनेका लकड़ीका जूता) पर आये थे, कितने ही घोड़ोंपर, कितने ही बारहसिंघों और ऊँटोंपर, कितने ही बैलगाड़ियोंपर। उनमें थे कमकर, कलखोजी किसान, विद्यार्थी, लाल सैनिक, घरकी औरतें, वैज्ञानिक, कलाकार, बूढ़े और जवान। नगरोंमें तीरके निशानसे निर्वाचन-स्थानकी ओर संकेत किया गया था। निर्वाचन-घर बिजलीकी रोशनी तथा दूसरी तरहसे खूब सजाये गये थे। ऐसे निर्वाचन-स्थानोंकी संख्या थी डेढ़ लाख। निर्वाचन-स्थानोंपर बच्चे वाली माँओंके सुभीतेकेलिए अस्थायी बच्चेखाने बनाये गये थे। बूढ़ों और बीमारोंकेलिए सवारीका प्रबन्ध किया गया था।

* * * * * *

मास्को—

क्रेमलिन्की घड़ीने ६ बजाया। उसी समय मास्को नगरके १३०० निर्वाचन-स्थानोंके दरवाजे खोल दिये गये। हर एक निर्वाचन-स्थानपर सैकड़ों आदमी पहलेसे ही आकर इन्तजार कर रहे थे। कोई-कोई बहादुर तो रातके तीन बजे हीसे आकर धरना दिये हुये थे। बोगुस्लाव्स्की वोटर मोलोतोफ् निर्वाचन-क्षेत्रके ६३वें स्थानपर ३ बजेसे भी पहले पहुँचा था। अध्यक्षने पूछा—'इतना सवेरे क्यों? तुम्हें ३ घण्टेसे ज्यादा इंतजार करना पड़ेगा।'

'तीन घंटा! इससे क्या! मैं तो इस सुखमय दिनकी महीनोंसे प्रतीक्षा कर रहा था। मैं ही अकेला नहीं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्रमें वोटरोंकी विशेष तौरसे भीड़ लगी हुई थी। स्तालिन्को वोट देनेकेलिए सारा देश तैयार था लेकिन यह सौभाग्य मास्कोके

स्तालिन-निर्वाचन-क्षेत्रको ही प्राप्त हुआ। स्तालिन-निर्वाचन-क्षेत्रके वोटर अनुभव कर रहे थे, कि सारे देशकी आँखें उनकी ओर लगी हुई हैं। जो लोग निर्वाचन-स्थानपर जरा देरसे पहुँचे वे इसकेलिए अपने पड़ोसीसे क्षमा माँगते थे। वोट देनेका समय ६ बजे सुबहसे मध्य-रात्रि तक था। इस निर्वाचन-क्षेत्रके ७५वें निर्वाचन-स्थानमें सौ सैंकड़े वोटरोंने अपना वोट दे दिया था। दूसरे निर्वाचन-क्षेत्रोंमें भी यही बात थी।

* * * * * *

गोर्की—

गोर्की नगरके हर एक निर्वाचन-स्थानमें दरवाजा खुलनेसे पहले ही ढाई सौसे ४०० तक आदमी इन्तजारमें खड़े थे। ५४ वर्षका कमकर अलेक्सेइ गुर्येफ़् पहला आदमी था, जिसने ८१वें निर्वाचन-स्थानमें सर्व प्रथम वोट दिया। उसने कहा—'३८ सालसे मैं स्वर्मोवोमें काम कर रहा हूँ। मेरे सामने ही शहर बढ़ा और मेरी आँखोंके देखते-देखते इसकी कायापलट हो गई। आज यह एक स्वच्छ सम्मार्जित नगर है।'

* * * * * *

तुर्कमानिया—

उस दिन तुर्कमानियाके मेघ-रहित आकाशमें सूरज बड़ी चमक-दमकके साथ उगा था। अश्काबादकी सड़कें रंग-बिरंगी पोशाक पहने स्त्री-पुरुषोंसे भरी थी। किरोफ़ कलखोजके चरवाहोंके दो परिवार अपनी चरागाहोंसे ऊँटोंपर चढ़कर गाँवको लौटे। सखत, मुरादोफ़् और अताकारा चरवाहोंने कहा—'हम अपने मित्र साथी अन्द्रेयेफ़्को वोट देंगे और फिर जल्दी लौट जायँगे। दूसरे चरवाहे बड़े भारी गल्लोंको चरा रहे हैं और कराकेरमें हमारे लौटनेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहाँ तक पहुँचनेमें बड़ा समय लगता है, हमें तुरन्त पीछे लौटना है; जिसमें कि वह भी आकर वोट दे सकें।

* * * * * *

सोवियतके अन्तिम उत्तर वाले निर्वाचन-स्थान रुदोल्फ़-द्वीपमें ६३ वोटरों-ने वोट दिया। विमान-संचालक लेवानेव्स्की—जो उत्तर ध्रुव-प्रदेशमें कहीं गुम हो गया था—की खोजमें निकली मुहिमके सरदार तथा सोवियत् संघ-वीर शेवेलोफ़ने ठीक ६ बजे निर्वाचन-घरका द्वार खोला। वोटके समाप्त होने-पर द्वीप-वासियोंने प्रदर्शन किया और देशके सम्मानमें हुराका नारा और बन्दूकका फ़ैर किया गया, जिससे ध्रुव-प्रदेशकी दीर्घ रात्रिकी वह शान्ति भंग हो गई।

* * * * * *

सखालिन्—

सखालिन् द्वीपके बहुतसे रास्तोंको बर्फ़ने बन्द कर दिया था; और दूरके वोटरोंको निर्वाचन-स्थानपर पहुँचनेमें बड़ी दिक्कत होने वाली थी। रास्तोंकी बर्फ़ साफ़ करनेका प्रबन्ध बड़े संगठित रूपसे किया गया था; और वोटरोंको लानेकेलिए मोटरोंका इन्तज़ाम था।

उत्तरी सिबेरियामें कितने ही वोटरोंको ३० से ६० मील तक चलकर अमूदर्याके निर्वाचन-स्थानको पहुँचना पड़ा। नेन्सके रहनेवालोंका एक समु-दाय तो कुत्तोंके स्लेज (बेपहियोंकी गाड़ी)में ६० मील चलकर आया था।

* * * * * *

सद्को, मलिगिन् और सिदोफ़् नामक बर्फ़ काटनेवाले जहाजोंके आरोहियों-ने उत्तरी अक्षांशके ७८ डिग्री १० मिनट स्थानमें वोट दिया। जाड़ेके कारण उत्तरी महासमुद्रके पानीके साथ जमकर ये जहाज़ रुके हुए थे। सद्को जहाज़-को उन्होंने अपना निर्वाचन-स्थान बनाया।

* * * * * *

द्निप्रोपेत्रोव्स्क नगरके ६३वें निर्वाचन-स्थानमें फ़ैक्टरी स्कूलके एक विद्यार्थी ग्रिगोरी मुद्निकोफ़ने वोट दिया। उसने बड़े अभिमानसे कहा—

"कैसा संयोग है, आज ही मेरा जन्म-दिन है और आज ही मैं १८ वर्षका हुआ।" ८० वर्षके करीबके दो बूढ़े-बूढ़ी उसी निर्वाचन-स्थानपर मोटर द्वारा लाये गये थे। उन्होंने कहा—'साथी स्तालिनको अनेक धन्यवाद ! जो हमारे जैसे बूढ़ोंकेलिए इतना खयाल और सन्मान करते हैं।'

कियेफ् नगरके १२०वें निर्वाचन-स्थानमें ७३ वर्षकी बूढ़ी लोपातिना ३ बजे रात हीको पहुँची, कि जिसमें पहला वोट उसीका हो; लेकिन वहाँ उसने एक तरुण कमकर विजुकोव्स्कीको पहले हीसे डटा पाया। थोड़ी बिनती करने-पर तरुणने आयुका ख़याल किया और बूढ़ी औरतको सर्व-प्रथम वोट देनेका अवसर दिया।

गाँवोंकेलिए तो चुनाव मेला-त्योहार बन गया था। किर्गिजिया प्रजा-तन्त्रके काराकोल् जिलेमें कजल् चेल्येक्-कलखोज् है। वहाँ चुनावके दिन कितनी ही जोड़ियाँ मौजमें आकर नाच रही थीं। बगलके एक कमरेमें किसानोंकी मण्डली ग्रामीण नायक तुजे तुगम्बयेफ्का गान सुन रही थी। सबसे पहले वोट देनेवाली थी एक किर्गिज औरत सेइखान् अलीयेवा। उसने कहा—'हमने दरिद्री तम्बू और खानाबदोशों का जीवन छोड़ दिया और सुखपूर्ण नये जीवनका आरम्भ किया है। अपने उम्मेदवारोंकेलिए वोट क्या देना है, अपने सुख और शान्तिकेलिए वोट देना।'

दोन् तटवर्ती कसाक् गाँवमें उस दिन बड़ा जोर था। कसाक् स्त्री-पुरुष एक दूसरेसे होड़ लगाये हुए थे, कि कौन पहले अपने देशके पुत्र फ़ोल्-स्किल्कोफ् और प्रसिद्ध कसाक लेखक मिखाइल शोलोखोफ़्को वोट देगा। सारे गाँवमें गानेकी ध्वनि सुनाई देती थी—

मृदु समीर धीरे से बहती,
उपवन के वृक्षों में हो।
क्या आश्चर्य मौज में यदि हम,
इस सुखमय उत्सव-दिन में।

अस्पतालों और प्रसूति-गृहोंमें बीमारोंकेलिए वोटका विशेष प्रकारसे प्रबन्ध किया गया था। इर्कुत्स्क (बैकाल झीलके तटपर सिबेरियामें)के एक प्रसूति-गृहमें रहती अन्तोनिना रुदुखने कहा—'मेरे जीवनका यह सबसे बड़ा आनन्दमय दिन है। मैंने आज ही एक कन्या प्रसव की और आज ही मैंने अपना वोट महासोवियत्के योग्य उम्मेदवारोंको दिया। मेरी कन्याके जीवन-का कितना सुखमय भविष्य है! उसका जन्म-दिन होगा एक अविस्मरणीय त्योहारका दिन।'

* * * * * *

जिस वक्त चुनावकेलिए घोर प्रचार हो रहा था, उसी वक्त दिसम्बरकी पहली तारीखसे १० दिनकेलिए सभी फैक्टरियों, और कारखानोंमें अधिक मात्रामें चीजें तैयार करनेकेलिए जबर्दस्त होड़ लगी हुई थी। दोनबासकी कोयलेकी खानोंमें ११ दिसंबरको २,३२,१६५ टन कोयला निकला था जोकि योजनासे १ सैकड़ा ज्यादा था। १२ दिसम्बरको वहाँ २,४६,७०३ टन कोयला निकाला गया अर्थात् योजनासे ७·६ सैकड़ा ज्यादा। अलग-अलग खानोंके लेनेपर तो कितनोंने अपने हिस्सेके कामको बहुत ज्यादा मात्रामें पूरा किया। इलिच्की खानने योजनासे ४५·४ सैकड़ा ज्यादा कोयला निकाला। शाख्ती-कोल्-ट्रस्टने १३·७ सैकड़ा ज्यादा।

व्यक्तियोंको लेनेपर कितने ही खनकोंने अपने हिस्सेको कई गुनेके रूप-में पूरा किया। ओर्जोनीकिद्जे-ट्रस्टके एक खनक सोलोगुबने चार सहायकोंकी मददसे ४० गुना अधिक कोयला निकाला। उसी खानमें एक दूसरे खनक कोन्नोफ़ने एक सहायककी मददसे २२ गुनासे भी अधिक अपने कामको पूरा किया।

मास्कोके हँसुआ-हथौड़ा-लोहेके कारखानेने उपजकेलिये कई नये रेकार्ड क़ायम किये। एरकिन्ने प्रति वर्गमीतर गर्मानेके तलपर ६॥ टन फौलाद तैयार की; और मूर्जोसिन्ने ६·१ टन। बिजलीके भट्ठेपर काम करते

मोरोजोफ़ने २२ टन फ़ौलाद तैयार किया, हालांकि योजनाके मुताबिक १७ टन ही काफ़ी था।

मग्नीतोगोर्स्क के स्तालिन-लोह-फ़ौलाद-कारखानेमें प्रथम खुले भट्ठे-ने २६७० टनकी जगह ३०१६ टन फ़ौलाद तैयार किया। फ़ौलादके कमकर कोलेसोफ़ने ६.३७ टन और कोल्दोवज्नीने ६.०८ टन फ़ौलाद प्रति-वर्गमीतर तैयार की। दोनवासके एक लोहेके कारखानेमें अमोसोफ़ने ११.३ टन फ़ौलाद तैयार की; हालांकि उस भट्ठेकी ताक़त ७.७ टन ही तक मानी जाती थी। उसी दिन (१२ दिसम्बर) ४ नम्बरके पिघलाऊ भट्ठेने अपने साल-के प्रोग्रामको ही पूरा नहीं किया, बल्कि उससे १३००० टन अधिक लोहा दिया। गोर्की प्रान्तकी पचास मिलों, कारखानों और औद्योगिक सहयोग-समितियोंने १२ दिसम्बरको ही सालका प्रोग्राम खतम कर दिया।

करेलियाकी लकड़ी काटनेवाली प्रसिद्ध महिला कोस्तिना ने अपने पिता-के साथ कटाई करते हुए उस दिन अपने हिस्सेके कामको ८ गुनासे भी ज़्यादा पूरा किया। रेलवेमें भी नये रेकार्ड स्थापित हुए। दक्षिण दोनेस् रेलवेके एक इञ्जन-ड्राइवर मत्वेयेंकोने एक भारी ट्रेनको २६ किलोमीतरकी जगह ६२.२ किलोमीतर घन्टेकी चालसे दौड़ाया।

* * * * * *

उपजमें ही नहीं, विभाजनमें भी १२ दिसंबरको कितनी ही दुकानों और भंडारोंने पहलेके रेकार्ड तोड़ दिये। १० दिसंबरको प्रथम गस्त्रो-नोमू-भंडारने ३ लाख रूबलकी जगह ३,४६,००० रूबलका सामान बेचा। ११ दिसंबरको उसने ४,४२,००० रूबलका सामान बेचा। १२ दिसंबरको भंडारसे पता लगानेपर मालूम हुआ कि पिछले दो दिनोंकी बिक्रीकेलिए उसने अच्छे किस्मके १६५ टन माल मँगवाये थे, जिनमें नफ़ीस भोजन, केक, मिश्री, फल थे। उन दो दिनोंमें डेढ़ लाख खरीदें हुईं। डिलेवरी विभागने ३५ हजारकी जगह ८५ हजार रूबलकी चीजें ग्राहकोंके पास भेजीं।

शाम्पेन तथा दूसरी अच्छी जातिकी शराबकी बहुत माँग थी। १,२०,००० से अधिक नारंगियाँ फल-विभागमें बेची गई थीं। मास्कोके भोजन-भंडारोंके विक्रयाध्यक्ष 'गुल्कोफ़के कथनानुसार ११ दिसंबर को २२ सैकड़ा और १२ दिसंबरको मामूलसे ३२ सैकड़ा ज़्यादा बिक्री हुई। सड़कों और चौरस्तोंकी पगडंडियोंपर खड़ी दुकानचियोंमें भी उस दिन बड़े जोरकी बिक्री हुई थी।

गोरी—

स्तालिन्की जन्म-नगरी गोरीमें चुनावके दिन निर्वाचन-गृह बड़ी अच्छी तरह सजाया गया था। युवक-युवतियाँ चारों ओर टहल रही थीं। स्कूलके विद्यार्थी और बालचर फाटकपर खड़े हुए हसरत भरी निगाहसे वोटकेलिए जानेवाले नर-नारियोंकी ओर देख रहे थे। बेचारे अभी १८ वर्षके नहीं हो सके थे। नौजवान ज़्यादातर उन जगहोंपर भीड़ लगाये हुए थे, जहाँपर भिन्न-भिन्न प्रकारके जय-शब्द, साइन-बोर्ड और स्तालिन्के चित्र टँगे थे।

गुर्जी (जार्जिया)के कर्तालिनियाके इस छोटेसे पहाड़ी शहरमें स्तालिन्का चित्र लोगोंके दिलमें अद्भुत भाव पैदा करता था। स्तालिन् यहीं पैदा हुआ था, इसी गोरीमें बड़ा हुआ और यहीं उसने शिक्षा पाई। यहाँकी हर-एक चीज उसके यौवनकी स्मृतियोंसे सम्बन्ध रखती है। कृषि-शिक्षणालय भवन—जहाँ कि नगरका तीसरा निर्वाचन स्थान है—के दरवाजेपर एक तख़्ती लगी हुई है; जिसपर लिखा है—"यहीं भूत-पूर्व मिस्नरी स्कूलमें महान् स्तालिन्ने १ सितंबर सन् १८८८से १ जुलाई १८९४ तक शिक्षा पाई थी।"

जिन कमरोंमें नगर-निवासी और कलखोजी किसान वोट दे रहे हैं, उन्हींकी बगलमें दो कमरे हैं। इन्हींमें बैठकर वह तरुण पढ़ा करता था जो कि अब सोवियत् जनताका शिक्षण और मार्ग-दर्शक है। आजकल विद्यालयका पुस्तकालय इन्हीं कमरोंमें है। स्तालिन्के सम्बन्धकी कितनी ही चीजोंकी इन कमरोंमें आजकल प्रदर्शिनी की गई है। दीवारोंपर जोसेफ़ बिसारियोनो-विच्के विद्यार्थी जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाले हस्तलेख और फोटोग्राफ़ टँगे हुए

है। उसकी बगलमें एक दूसरा क्लास-रूम है, जिसमें एक देवदारकी शाखा-को गाड़कर फूल, खिलौने तथा जलते हुए प्रदीपोंसे सजाया गया है। माँ-बाप जब वोट देनेकेलिए जाते हैं, तो अपने बच्चोंको यहीं खेलनेकेलिए छोड़ जाते हैं।

सोवियत् जनताके ज्येष्ठ प्रतिनिधिके नामके साथ गोरीकी हर एक चीज सम्बद्ध है। स्तखानोवी कल्खोजी औरत सद्गशविली और पार्टीके मेम्बर यवनतशविलीको वोट देते वक्त गोरीका हर एक कल्खोजी किसान और कमकर समझ रहा था कि वह पार्टीके आदर्शकेलिए और स्तालिनके आदर्शकेलिए वोट दे रहा है।

जिस घरमें स्तालिन पैदा हुआ, उसमें अब म्युजियम है। उसके पासके निर्वाचन-स्थानमें ६ बजे सबेरे हीसे वागवुस्तानी कल्खोजके वोटरोंने भीड़ लगा रखी थी। एक बूढ़ी औरत निर्वाचन-स्थानमें आई और उसने अध्यक्षसे कहा कि उसका ६० वर्षका अन्धा पति वोट देनेकेलिए आनेकी जिद कर रहा है। उसकेलिए मोटर भेजी गई। शुलिशविली नामक एक स्त्रीने बड़े गम्भीर स्वरमें अध्यक्षसे कहा—"मेनशेविकोंने मेरे बेटेको मार डाला था, और मैं अंधी हो गई लेकिन अन्धापन मुझे अपने कर्तव्य पालनसे नहीं रोक सकता।"

उसी निर्वाचन-स्थानमें मेलीयेज् सकायेफ् नामक कल्खोजी किसान बड़े सबेरे पहुँचा। वह अपने गाँव नादरबाजेवीसे एक दिन पहले ही चला था। वहीं-से अपने वोटका प्रमाण-पत्र भी लेता आया था। शहरमें पहुँचनेपर सबसे पहले वह निर्वाचन-स्थानमें वोट देने गया। किसानकी उम्र ८० वर्षकी थी। गेशुती गाँवके अध्यापक तथा निर्वाचन-कमीशनके सदस्य श्रीगोरी ब्लुर् जिद्जेने कहा—"देखिए, नौजवान कितना आनन्द मना रहे हैं। सुनिए उनके गीतोंको और जरा देखिए तो उनके नाचको। अगर हम पहलेकी पीढ़ियोंने पहाड़को हिला दिया तो ये सुखी नौजवान क्या कर डालेंगे, यह सोचकर कितना आनन्द आता है।"

महान् नेताकी जन्म-नगरीपर निरभ्र आकाशमें तारे खिले हुए थे। पर्वत-की मन्द हवासे मिश्रित होकर कर्तलिनियोंके मर्दाने संगीतकी ध्वनि सुननेमें बड़ी मधुर मालूम होती थी। वोटर कभीके अपना कर्तव्य पालन कर चुके थे; लेकिन उनका उत्सव जारी था। पहाड़के ऊँचे भागपर स्तालिनका विशाल चित्र बिजली द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसे दूरसे देखनेपर मालूम होता था कि एक पहाड़ी बाज अपनी जन्मभूमिके ऊपर चक्कर काट रहा है।

५. निर्वाचन-फल

मास्कोके स्तालिन निर्वाचन-क्षेत्रका निर्वाचन-कमीशन १२ दिसम्बरकी आधी रातके बाद निर्वाचन-फल निकालनेमें तत्पर हुआ। महासोवियत्के प्रथम सदस्य तवारिश् स्तालिन यहींसे खड़े हुए थे। कमीशनके मेंबर लोग वोटोंके गिननेमें व्यस्थ थे। जब कमीशनके चेयरमैन विनोग्रादोफ़ने परिणाम सुनाया और 'तवारिश् स्तालिन स०स०स०र०की महासोवियत्के सदस्य चुने गये'—घोषित किया तो लोगोंने देर तक नारे लगाये। चेयरमैनने कहा—तवारिश् स्तालिनका महासोवियत्का सदस्य चुना जाना सिर्फ हमारे स्तालिन जिलेके वोटरोंके भावको ही प्रकाशित करना नहीं बल्कि यह सारी लाल राज-धानी (मास्को) नहीं, नहीं, हमारी सारी बहुकरोड़ी जनताके अभिप्रायको प्रकाशित करना है।

गुप्त पुर्जियोंमें यद्यपि चिह्न भरकर देना ही जरूरी था, लेकिन कितने ही वोटर अपने हृदयके उद्गार लिखनेसे बाज न आये। उनमेंसे कुछके नमूने सुनिए—

"अपने प्रिय स्तालिन्केलिए मैं वोट दे रहा हूँ।"

'बड़े हर्षके साथ मैं साथी स्तालिन्की उम्मेदवारीकेलिए वोट दे रहा हूँ।'

'प्रिय साथी स्तालिन्, हम—जनता और उसके शिक्षित समाज—पर विश्वास करनेकेलिए आपको धन्यवाद। हम कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। तुम्हारे आदेशानुसार और सोवियत्-संघकी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीके

आदेशानुसार हम सभी कठिनाइयोंको पार करेंगे; और साम्यवादके निर्माणमें आनेवाली सभी बाधाओंको दूर फेंक देंगे।[१]

१२ दिसम्बरको निर्वाचन और उसका परिणाम सोवियत्-इतिहासमें हमेशाके लिए स्मरणीय बात रहेगी। इस निर्वाचनने साबित कर दिया कि जो

देश तथा निर्वाचन सन्	जन-संख्या	वोटर-संख्या	जन-संख्या प्रतिशत	वोट दिया	प्रतिशत वोटर
पोलैंड १९३५	३,३४,००,०००	१,६२,८२,३४७	४८·८	७५,७६,६८६	४६·६
जापान १९३७	६,९२,५१,२६५	१,४६,१८,२९८	२१·१	१,०२,०४,१२७	६९·९
इंग्लैंड १९३५	४,४६,३७,४४४	३,०५,६२,७७४	६८·१	२,२०,०१,८३७	७१·९
जर्मनी १९३२	६,२४,१०,६००	४,४३,७३,७००	७१·२	३,५७,५९,६००	८०·६
यु० रा० अमेरिका (प्रेसिडेंट) १९३६	१२,८४,२९,०००	५,५०,००,०००	४२·८	४,५८,१२,१५५	८३·३
फ्रांस १९३६	४,१९,०५,९६८	१,१७,६८,४९१	२८·२	९९,३८,०५८	८३·९
स०स०स०र० १२ दि० १९३७	१६,९०,००,०००	९,३६,३९,४७८	५५·४	९,०३,१९,३४६	९६·५

पार्टी सोवियत्-भूमिका नेतृत्व कर रही है, वह जनताकी कितनी विश्वास-पात्र है। कुल वोटरोंकी संख्या थी ९,३६,३९,४७८ जिनमें ९,०३,१९,३४६ अर्थात् ९६.५ सैकड़ा लोग वोट देने गये। इसकी आप दुनियाके और चुनावों-से मुकाबला कीजिए तब आपको सोवियत् चुनावकी विशेषता मालूम होगी—

इंगलैंडमें जो अनुदार-दल शासन कर रहा है, उसे ५३.६ सैकड़े ही वोट मिले थे। युक्त राष्ट्र अमेरिकामें १९३६के प्रेसिडेंटके चुनावमें डेमोक्रेटिक पार्टी-को कुल वोटका ६०.५ सैकड़ा मिला था; लेकिन सोवियत् चुनावमें शासक पार्टीको १०० सैकड़ा वोट मिले।

सोवियत् चुनावके बारेमें व्याख्यान देते हुए स्तालिनने कहा था—"हमारे यहाँ न पूँजीपति हैं, न जमींदार। इसीलिए धनवालोंका निर्धनों पर कोई दबाव नहीं। हमारे यहाँ कमकरों, किसानों और बुद्धिजीवियोंके सहयोगकी अवस्थामें चुनाव होते हैं। परस्पर विश्वासकी अवस्थामें या मैं कहूँ परस्परकी मित्रताकी अवस्थामें। क्योंकि हमारे यहाँ न कोई पूँजीपति है; न जमींदार है, न शोषण है। और यथार्थतः यहाँ कोई ऐसा नहीं है, जो लोगोंपर उनकी इच्छाके विरुद्ध दबाव डाल सके। इसीलिए हमारे चुनाव ही संसारमें दरअसल स्वतन्त्र और प्रजासत्तात्मक चुनाव हैं।"

वोटके अधिकार देनेमें दूसरे देशोंने कई तरहकी बाधाएँ डाल रक्खी हैं। सोवियत्के नये विधानमें न स्त्री-पुरुषका भेद है, न जातिका, न धर्मका, न शिक्षा सम्बन्धी योग्यताका, न सम्पत्तिका, न सामाजिक स्थितिका; वहाँ सिर्फ १८ वर्षकी अवस्थासे ज्यादा होना चाहिये, बस, इतना ही बस है। लेकिन दूसरे देशोंमें क्या हालत है? जर्मनीमें २० वर्षके ऊपरके ही आदमी वोट दे सकते हैं और उनमें भी वे ही जो 'आर्य' हैं। इंगलैंडमें २१ वर्षके बाद वोटका अधिकार मिलता है। फ्रांसमें भी २१ सालके बाद; लेकिन सिर्फ मर्दोंको, औरतोंको नहीं।

वोटकी योग्यताकेलिए इतना कम निर्बन्ध होनेपर भी जर्मनी, अमेरिका और इंगलैंडकी अपेक्षा सोवियत्में प्रतिशत कम होनेका कारण यह है, कि

इंगलैंड और जर्मनीमें बच्चों और तरुणोंकी संख्या प्रतिशतक बहुत कम है। उन देशोंमें लड़कोंकी पैदाइश खास करके युद्धके बाद बहुत कम हो गई है। १९१०में जर्मनीमें २० वर्षके कमके बच्चे और तरुण २,५१,३०,००० (अर्थात् ४३·५ प्रतिशतक) थे और १९२३में १,८०,३१,०००(२८·८ सैकड़ा) लेकिन सोवियत्में बच्चोंकी पैदाइश ज्यादा है।

* * * * * *

प्रजातन्त्र	वोटर	वोट दिया	प्रति शत
स०स०स०र०	९,२६,३९,४७८	९,०३,१९,३४६	९६·५
१—रूसी संयुक्त स०स०र०	६,०३,५१,६५६	५,८२,५७,२४५	९६·५
२—उकइन् स०स०र०	१,७५,३०,७५१	१,७०,९८,१००	९७·५
३—बेलोरूसी स०स०र०	३०,०७,३४२	२९,२६,७७१	९७·३
४—आजुर्बाइजान्स स०स०र०	१६,४८,३५२	१५,७४,७९२	९५·५
५—गुर्जी स०स०र०	१९,४०,५४७	१८,६१,१७५	९५·९
६—अर्मनी स०स०र०	६,२०,२२०	५,९०,६४१	९५·२
७—तुर्कमानिया स०स०र०	६,५२,५१५	६,२१,८४७	९५·३
८—उजबेक् स०स०र०	३५,४८,४४१	३३,१६,४८१	९३·५
९—ताजिक स०स०र०	७,५१,७९८	७,१०,८७१	९४·६
१०—कजाक् स०स०र०	२७,८८,१४७	२६,१६,७७६	९३·९
११—किर्गिज स०स०र०	७,९९,४०८	७,४४,६४७	९३·१

मास्को नगरके वोटरोंमेंसे ९९·१३ प्रति सैकड़ाने वोट दिया। मास्कोको प्रान्तमें ९८ सैकड़ा। मिन्स्क नगरमें वोट देनेवाले ९९·६ प्रतिशत थे। लेनिन्ग्राद्में ९६·२, बाकू ९५·५, तिफलिस् (तबिलिसो) ९५·६ सैकड़ा।

महासोवियत (सोवियत्-पार्लियामेण्ट)के दोनों भवनों (संघ-भवन और जातिक-भवन)में कुल मिलाकर ११४३ सदस्य हैं जिनमें ८५५ कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर और २८८ गैरमेंबर हैं। सदस्यों (देपुतात् या डिपुटी)में १८४ औरतें हैं और ६५६ मर्द।

सोवियत् संघमें उपर्युक्त ११ सोवियत्-सोशलिस्ट-रिपब्लिक (संघ-प्रजातन्त्र) हैं; जिन्हें स्वतंत्रता है कि जब चाहें तब संघसे अलग हो जावें। रूसी, उजबेक, यहूदी, आर्मेनियन, नेनेत्स आदि १७५ जातियाँ और कबीले सोवियत्-संघके नागरिक हैं।

३३ हजार सभाओंमें किसानों और मजदूरों, लाल-सैनिकों और ओफी-सरोंने स्तालिनकी उम्मेदवारीका प्रस्ताव पास किया था। पर्चियोंमें लोगोंने लिखा था—मैं अपना वोट ही नहीं दे रहा हूँ बल्कि जरूरत पड़नेपर साथी स्तालिन्केलिए अपना जीवन भी दे दूँगा।

मन्त्रि-मंडलके एक सदस्यकेलिए डाली गई एक पर्चीमें लिखा था—'मेरे प्रिय साथी मिकोयान्! मैं तुम्हें अपना वोट बड़ी खुशीके साथ दे रहा हूँ।' दूसरीमें लिखा था—"प्रतिक्रियाके सालोंमें जारशाहीके वर्षोंमें गृहयुद्धके कठिन समयोंमें तुम कमकरोंकी आजादीकेलिए लड़े, और आज हमारे सुख और बेहतर जिन्दगीकेलिए अपना युद्ध जारी रखे हुए हो। महान् स्तालिनके नजदीकी सहकारी बोल्शेविक मिकोयान्! मैं तुम्हें अपना वोट ही नहीं दूँगा, बल्कि जीवन भी। चिरंजीव हमारा नेता पिता और गुरु योसेफ् स्तालिन्! चिरंजीव हमारा प्यारा मिकोयान्!"

मार्शल वोरोशिलोफ् (युद्धमंत्री)की सर्वप्रियता इसीसे सिद्ध है कि मिन्स्क नगर—जहाँसे वह खड़ा हुआ था—के वोटरोंमें ९९.६ सैकड़ेने जाकर उसे वोट दिया।

खरकोफ्में तरुण वोटरोंकी संख्या सबसे ज्यादा थी, यह तरुणोंकी नगरी समझी जाती है। नगरकी जन-संख्याके तीन चौथाई व्यक्ति क्रान्तिके बाद पैदा हुए और वहाँके कारखानोंमेंसे ९⁄१० पिछले इतने ही दिनोंमें बने

हैं। वहाँके विश्वविद्यालयके छात्रावासोंके विद्यार्थियोंमें दो मत हो गया था। एकने प्रस्ताव किया कि जल्दी सो जाना चाहिए, कि जिसमें सवेरे उठकर सबसे पहले निर्वाचन-स्थानमें पहुँच जायँ। दूसरे दलने कहा—रात जगकर बिता देनी चाहिए। कहीं नींद लम्बी न हो जाय। उनकेलिए निर्वाचन-स्थान छात्रावासोंमें ही नियत किये गये थे। सवेरे ही उनके यहाँ भीड़ लग गई थी। उनमें प्रायः सभी १८ से २१ साल तक के थे।

* * * * * *

(१) तात्याना फ्योदोरोवाने अपने मतदाताओंको धन्यवाद देते हुए लिखा—"एक अनिर्वचनीय जबर्दस्त भावनाने, जिसे सिर्फ खुशी नहीं कहा जा सकता, मेरे हृदयको भर दिया; जब कि १२ दिसम्बरके वोटदानका जबर्दस्त परिणाम मैंने पढ़ा। यह भाव हमारी साम्यवादी पितृभूमिकेलिए कोमल प्रेमका था और यह मेरे लिए आनन्दका विषय था; क्योंकि मेरा और लाखों तरुण नागरिकोंका यह सौभाग्य था जो कि वे संसारके स्वतंत्र देश स०स०स० र०में पैदा हुए और पले।

"अपने सदस्य चुने जानेके विषयमें, सोवियत् जिलेके वोटरोंके प्रति उन्होंने जो देशके सर्वोपरि-शासन सभाका मेंबर चुनकर मेरे प्रति महान् विश्वासका परिचय दिया है, इसके लिए मैं उनकी हृदयसे कृतज्ञ हूँ। मैं अभी बिलकुल तरुणी सिर्फ २२ सालकी हूँ; लेकिन मुझे स्तालिनीय पाठशालामें पढ़नेका मौका मिला है। मेरी हमेशा कोशिश होगी कि अपने विचारोंमें साफ़ और निश्चित रहूँ। दुश्मनके प्रति बिलकुल निर्दय रहूँ। न्याययुक्त और लड़ाईमें निर्भय, अपनी पितृभूमिसे वैसे ही प्रेम करूँ, जैसे लेनिन्ने किया; और जैसे स्तालिन् कर रहे हैं।

"मेरा हृदय सारी सोवियत् जनताकेलिए सन्मान और प्रेमसे भर गया है; उस सोवियत् जनताकेलिए जिसने कि कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर और ग़ैर-

मेम्बर उम्मेदवारों—जो कि देशके सर्वोत्तम व्यक्ति हैं—को चुनकर अपने राज-नैतिक सुविचारका उत्तम परिचय दिया है। मेरा दिल, सोवियत् जनताकी अग्रसेना महान् कम्युनिस्ट पार्टी और उसके यशस्वी नेताके प्रेमसे भर गया है। मैं अपने जीवन और कार्यसे यह सिद्ध करनेकी कोशिश करूँगी। मैं सोवियत्, बच्चों और नौजवानोंकी माँ जैसी हितचिन्तनकेलिए कितनी आभिक हूँ। इस हितचिन्तनकेलिए मैंने सदा कृतज्ञताका अनुभव किया है और आज भी अपने दैनिक जीवनके कामोंमें कर रही हूँ।"

(२) मास्कोके मशीन बनानेवाले एक कारखानेका एक बड़ा नेता कम-कर गोरेफ़् सदस्य चुने जानेके बारेमें अपनी कृतज्ञता निम्न शब्दोंमें प्रकट करता है—

"निर्वाचनके परिणामने मेरे दिलमें जबर्दस्त उल्लास पैदा कर दिया है; और यशस्वी बोल्शेविक पार्टी तथा सारी पितृभूमिकेलिए मेरे दिलमें अभिमान भर दिया है। इसने हमारे राष्ट्रकी राजनैतिक और नैतिक एकताका परिचय दे दिया। लेनिन् निर्वाचन-क्षेत्रके वोटरोंने सोवियत्-शक्तिकी सर्वोच्च संस्थाके-लिए मुझे सदस्य चुना। सारे निर्वाचनके प्रचारके समय मैंने कम्युनिस्ट पार्टीके मेम्बर और गैर-मेम्बर उम्मेदवारोंमें जनताका जबर्दस्त विश्वास देखा। कल मैंने सुदूर व्लादिवोस्तोक् तथा गोर्की, लेनिनग्राद और मास्कोसे पचासों बधाईके तार पाये।

"जनताका विश्वासपात्र होनेसे बढ़कर जीवनमें कोई आनन्द नहीं। जो सम्मान मुझे प्रदान किया गया है, मैं कैसे अपनेको उसके योग्य सिद्ध कर सकूँगा? महासोवियतकेलिए चुना जाना, जनता और खासकर अपने निर्वा-चकोंके प्रति मेरे सिरपर एक बड़ा उत्तरदायित्व है। वह मुझसे आशा रखेंगे कि मैं अपनेको श्रेष्ठ कमकर और राजनीतिज्ञ सिद्ध करूँ। स्तालिनके उपदेशानुसार वह अपने भेजे गये सदस्योंसे जरूर यह माँग करेंगे कि वह लेनिनकी तरह विचारमें साफ़ और निश्चित, जनताके शत्रुओंके प्रति निर्दय, ईमानदार और इन्साफ़-पसन्द राजनीतिज्ञ हों। एक सदस्यके तौरपर जनताको सदा प्यार

करना मेरा ध्येय है। यही आदर्श है जिसकी प्राप्तिकेलिए मैं निरन्तर प्रयत्न करूँगा।

"आज मैं उपजके एक नये रेकार्डकी स्थापनामें लगा हूँ। ६ दिसम्बरको मैंने अपना काम ४५.८२ गुना किया था। मैं चाहता हूँ कि बहुत जल्द अपने उस रेकार्डको मात करूँ। कारखानेके डाइरेक्टरकी आज्ञाके अनुसार इंजीनियरों और यन्त्रप्रवीणोंका एक दल बनाया गया है, जो मेरे बताये अनुसार तीसरे नम्बरकी सारी वर्कशापकेलिए एक योजना बनाएँगे। मेरा इस वक्त सबसे पहला काम है कि अगले महीनोंमें मेरा वर्कशाप प्रोग्रामको दूना पूरा करे।

"इस समस्याको हल करके हम लोग स्तखानोफ़्-आन्दोलन (उपजको कई गुना बढ़ानेका आन्दोलन)को और आगे बढ़ानेमें सफल होंगे और हमारे सभी कमकर कामकी उपजको कई गुना बढ़ानेमें कामयाब होंगे। यह राष्ट्रकेलिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम है; जैसा कि तवारिश् मोलोतोफ़्ने संकेत किया है—श्रमकी उपजको बढ़ाना हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न है। पूँजीवाद और साम्यवादके युद्धका अन्तिम फ़ैसला इसी समस्याके हल करनेपर निर्भर है।"

(३) प्रसिद्ध वैमानिक सोवियत्-संघ वीर बद् दुकोफ़्ने अपने वोटरोंको इस प्रकार धन्यवाद दिया—

"निर्वाचकोंने अपना इतना जबर्दस्त विश्वास प्रकट किया है, वह मेरे लिए सिर्फ़ सन्मानकी ही बात नहीं, बल्कि एक भारी जिम्मेवारी भी है। मैं महान् स्तालिन्के इस वाक्यकी सचाई और बुद्धिमत्ताको दिलसे मानता हूँ; कि वोटरों और सदस्यका सम्बन्ध चुनावके बाद ही खतम नहीं हो जाता। स्तालिनीय विधान—जो कि हमारे युगका सबसे बड़ा विधान है—साफ़ शब्दोंमें कहता है कि जिस सदस्यने अपनेको अपने निर्वाचकोंके विश्वासका पात्र नहीं सिद्ध किया, उसको सोवियत्से अवश्य लौटा लेना चाहिए।

"हमारे देशमें सदस्यका नाम 'दिखावा भर नहीं है और न सजावटकी

चीज है। बल्कि सर्वप्रथम वह है सम्मानपूर्वक मशक्कत करना तथा गम्भीर बोल्शेविक सिद्धान्तके अनुसार निरन्तर उद्योगपरायण रहना, लेनिन और स्तालिनके आदर्शकेलिए असीम लगन रखना। मैं जोरके साथ अपने निर्वाचकों—जिन्होंने कि मुझे महासोवियत्‌में अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा है—से कहूँगा कि वह ध्यानसे देखते रहें कि मैंने कहाँ तक अपनेको उनके विश्वासके योग्य सिद्ध किया और नियमपूर्वक मुझसे मेरे कामके बारेमें जवाब तलब करते रहें। और जब कभी मैं कोई भूल या गलती करूँ तो मुझे खबरदार करें। भूलिए नहीं, मेरे कामका अच्छा भला होना बहुत कुछ निर्भर करता है, आपके ऊपर। वह निर्भर करता है इस बात पर कि जनताकी चतुराई और अनुभवसे मुझे कितनी सहायता मिलती है।

"मैंने सारे उत्तरीय ध्रुव प्रदेशमें स्तालिनीय मार्गसे हुई उस महान् उड़ानमें भाग लिया था। मैंने स्तालिनकी आज्ञासे उस अत्यन्त कठिन उड़ानमें भी भाग लिया जो सोवियत्-भूमिसे उत्तरी ध्रुव होकर युक्त राष्ट्र अमेरिकाको हुई थी।

"अपने एक शब्दकी जिम्मेवारी लेते हुए मैं घोषित करता हूँ कि अपनी समृद्धिशाली पितृभूमिमें मैं उस स्तालिनीय मार्गसे—जो कि हमारे देशमें साम्यवादका महानिर्माण कर रहा है—एक जौ भर भी बिना इधर-उधर हुए, उसी तरह लगनमें काम करूँगा, जैसे कि उस उड़ानके समय मैंने किया था। और यदि इस आदरणीय आदर्शकेलिए मुझे प्राण भी देना हो तो मैं जरा भी हिचकिचाये बिना खुशीसे वैसा करूँगा।

"स०स०स०र० की महान् सोवियत्‌का चुनाव हुआ है सोवियत् जनताकी इच्छासे। इस सोवियत्‌का सदस्य होना बहुत भारी सन्मान है। ऐसा सन्मान जो मुझे अत्यन्त सन्तोष प्रदान करता है, साथ ही सोवियत्‌का सदस्य होना एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। मैं उस जिम्मेवारीको स्तालिनके बताये रास्तेसे पूरा करूँगा।"

६. महापार्लामेंटके कुछ सदस्य

(क) थुकानोफ़्—वह छोटे-छोटे शब्दोंमें बड़ी सादगीके साथ किन्तु स्पष्ट बोलता है। उसके सारे शरीरसे शान्ति और स्थिरता टपकती है। दिखावा उसमें छू तक नहीं गया है। जरा-सा सिर एक तरफ़ झुकाये वह नगरकी पार्टी कमेटीकी कार्य-कारिणीके मेम्बरोंकी बात बड़े ध्यानसे सुनता है; और बादके समय उनका नेतृत्व और पथ-प्रदर्शन करता है; सबसे आवश्यक अंशको झटसे समझकर काम करने लायक तरीक़ेसे बातोंको संक्षिप्त कर देता है।

मीरोन् थुकानोफ़् जब कोयलोंकी खानमें एक खनक था, तब भी अपने साथी कमकरोंकी बातोंको इसी तरह ध्यान तथा एकाग्रतासे सुनता था। जब वह इर्मिनो खान (दोन्-बास्)के स्तालिन् चंदवक (Shaft) में कम्युनिस्ट पार्टीका संगठन करता था, और जिस समय कि महत्त्वशाली स्तख़ानोफ़ आन्दोलनका जन्म हुआ; उस समय भी वह इसी तरह अपने साथियोंकी बातोंको ध्यानसे सुनता था। वह लोगोंको सिखलाता है और दोहरी शक्तिसे उनसे बहुतसी बातें सीखता है। वह अब भी सीधा सादा त्यागी पक्का बोल्शेविक है। अब भी वही थुकानोफ़् है जिसने अलेक्सेइ स्तख़ानोफ़्को परख लिया और उसको सिखाया; उसके हृदयमें बोल्शेविकों-की ज्वाला जगा दी। मालूम होता है कि जैसे इस बातको युग बीत गये। इस बीचमें छोटी-बड़ी अनेक समस्याएँ उसके सामने आईं। अभी दो ही वर्ष हुए कि वह सर्वप्रथम क्रेमलिन्में आया और स्तालिन्ने उसकी बातको बड़े ध्यानसे तथा उसे उत्साहित करते हुए सुना। थुकानोफ़ने कहा—"पहले हम खुद ही कोयला काटते थे और खुद ही खाली जगहमें थूनी लगाते थे; लेकिन अब हमने कामको बाँट दिया है।"

साथी स्तालिन् बोल् उठे—"यही है सफलताकी कुञ्जी!"

थुकानोफ़से पूछा गया—अपने नये ढंगके अनुसार जितनी मात्रामें वह कोयला निकाल रहे हैं, क्या उसको खानके ऊपर पहुँचाया जा सकता है?

ज़रा देरकेलिये यु़कानोफ़् ठहर गया फिर उसने आहिस्तेसे शान्तिपूर्वक कहा—"यह बिल्कुल सम्भव है। मैं दावेके साथ कहता हूं कि यह सम्भव है।"

(घट्ठे पड़े हाथोंको मेजकी छोरपर रखे) ठिगना और गठीले बदनका यु़कानोफ़् स्तालिनके सामने तिर्छे खड़ा था। स्तालिन बड़े गौरसे सुन रहा था। यद्यपि यु़कानोफ़की बात रुक-रुककर होती थी, वह उस खनकके संजीदे तथा जहाँ-तहाँ कोयलेकी काली धूलके दाग पड़े चेहरेकी परीक्षा कर रहा था। स्तालिन खड़ा हो गया और उसके साथ क्रेमलिनके हालमें बैठी सारी जनता। इस बोल्शेविक—जिसने कि 'अलेक्से स्ताखानोफ़को सिखाकर तैयार किया—के लिये प्रशंसासूचक नारे लगाने लगी। तवारिश् मोलोतोफ़ने कहा—"कम्युनिस्ट यु़कानोफ़् ऐसे लोग ही स्तखानोफ़ आन्दोलन के सच्चे सूत्रधार हैं।"

यु़कानोफ़के अब तकके किये कामोंने उसे तैयार किया कि वह खानकी खुदाईसे चंदवककी कम्युनिस्ट पार्टीमें आये। और वहाँसे नगरवाली पार्टीका नेता बने। इन्हीं कामोंने उसमें वह योग्यता पैदा की कि उसका गौरव जनता की दृष्टिमें बढ़ गया। लोगोंका वह विश्वासपात्र बना और आज वह स०स० स०र०के महासोवियतका सदस्य चुना गया। यु़कानोफ़में अपनी पार्टीके लिए बड़ी लगन है। जनताके शत्रुओंसे वह अत्यन्त घृणा करता है। उसके काममें बोल्शेविक आग है। उसमें ज्ञान और संस्कृतकी प्राप्तिकेलिए न बुझनेवाली प्यास है।

वर्षों गुजर गये, जब कि लेनिन अपना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख 'हमको कैसे संगठित करना चाहिए?' लिख रहा था, उसी समय एक खेतिहर मजदूर अपना गाँव तरोयेरोज् देस्त्वेन्स्कोयेको छोड़कर मैदानमें आया। वह पुराने घृणाके योग्य जीवन—जिसने उसके जैसे हजारों आदमियोंके जीवनको पीस दिया, निर्जीव बना दिया—के खिलाफ़ लड़नेको निकला। क्रान्तिके युद्धके समय वह वोल्गा प्रदेशमें लड़ा। चारित्सिनके प्रसिद्ध युद्धमें उसने भाग

लिया। सफ़ेद देश-द्रोहियोंके जेलकी भयंकर साँसतको भी उसने सहा और चुपकेसे वहाँसे निकलकर फिर क्रान्तिके पक्षमें हथियार ले कूद पड़ा। जार, जमींदार, और पूँजीपतियोंके लिए उसकी घृणाने उसमें वह साहस पैदा कर दिया था, कि वह दिलोजानसे पुरानी रूढ़ियों, पुराने जीवन, पुरानी परिस्थितिको उखाड़ फेंकनेकेलिये कटिबद्ध हो गया था।

गृह-युद्ध समाप्त हो गया और अब साम्यवादियोंको नव-निर्माणमें लगना पड़ा।

उसका भाई तेरेन्ती पहले हीसे कोयलेकी खानमें काम करता था। वह श्चु कानोफ़को अपने साथ इरमिनो खानमें ले गया। यह १९२४की बात है। पिंजड़ा मजदूरोंको लेकर बड़े वेगसे चन्द्रचक्रके पेंदीकी ओर चला। चारों तरफ़ घुप अँधेरा था। पानीका 'टप टप' स्पष्ट सुनाई देता था। मीरोन् सिकुड़कर अपने भाईसे सट गया—'डर गया बच्चा ?'

'हाँ, जरूर डर गया था।'

तेरेन्ती अपने छोटे भाईको एक गलियारेमें ले गया। चिरागकी धीमी रोशनीमें कोयलेके काले स्तरको दिखलाकर उसने मीरोन्‌के हाथमें एक सूमा देकर कोयला खोदनेकी कलाकी बारहखड़ी आरम्भ करवाई। पुराने खनकने काले चमकीले कोयलेके बारेमें बड़े प्रेमसे कहा—'यह जीवनदाता है!'

मीरोन् बड़े ध्यानसे देख रहा था कि कैसे उसका भाई कोयलेपर टूट रहा है।

३ सप्ताह बाद बड़ेने अपने छोटे भाईकी तारीफ़ की—"तेरे पास खनकों जैसा मजबूत और सधा हाथ है मीरोन्! हम तुझे पक्का खनक बनायेंगे।"

यह बात सच्ची निकली किन्तु उसको अपनी निरक्षरताकेलिए बड़ी चिन्ता रहने लगी। वह सोचता था, कि उसमें और भी बड़ी बातोंकी योग्यता है, लेकिन निरक्षताका अन्धकार उसे खान, देश और संसार तक पहुँचने देनेमें बाधक है।

श्चु कानोफ़ने इस कठिनाईका कैसे सामना किया, यह भी उसके चरित्र-

बलकी दृढ़ताको प्रकट करता है। उसे अपने छोटेसे पुत्र—जो उस समय दूसरे दर्जेमें पढ़ रहा था—से अक्षर सीखनेमें जरा भी लाज नहीं आई। यही नहीं, वह अपने लड़केके साथ स्कूलमें जाने लगा। लड़का अगली जमातमें बैठता था और बाप पीछेकी जमातमें। अपनी स्वाभाविक गम्भीरता और सूक्ष्म चिन्तनके साथ द्यु्कानोफ़् अध्यापककी बातोंको सुनता था और दूसरे बच्चोंके साथ अपने पाठको दोहराता था। द्यु्कानोफ़् लड़कोंके चले जानेपर भी पीछे रह जाता था। अध्यापक उससे कागजके अक्षर कटवाता था और उन्हें मेजपर बिखेर देता था। फिर मिरोन् उन अक्षरोंको जोड़कर शब्द और वाक्य बनाता था।

जिस काममें वह एक बार हाथ लगाता उसे बिना पूरा किये दम नहीं लेता था। इसी तरह उसने कोयला काटनेकी मशीनकी बारीकियोंको भी सीखा और उसकी पढ़ाईको खतम कर शिक्षित-खनकका प्रमाणपत्र पाया।

जितना ही अधिक वह पढ़ता उतनी ही अधिक अध्ययनकी चाह उसमें बढ़ती गई।

द्यु्कानोफ़्के पड़ोसमें कम्युनिस्ट पार्टीका मेंबर एक इंजीनियर पावेल् रसोखिन् रहता था। दोनोंमें परिचय हो गया। और फिर अक्सर दोनोंमें गर्मागरम बहस छिड़ जाती। इंजीनियरने कहा—"अब मीरोन् द्यु्कानोफ़्को पार्टीका मेंबर बनना चाहिए।" लेकिन मिरोन् कहता था—"अभी मुझमें वैसी योग्यता नहीं आई है।" इंजीनियर उत्तेजित होकर कहता—"प्रकृति पहलेहीसे ठोक पीटकर तैयार बोल्शेविक नहीं पैदा करती, उनके लिए सबसे ज्यादा सख्त और अति विचित्र स्कूल है पार्टी। वह शिक्षा-दीक्षा देकरके उन्हें पक्का बनाती है।"

रसोखिन्का कहना ठीक था; इसे मीरोन्ने भी पार्टीमें दाखिल होनेके बाद अनुभव किया।

मीरोन्ने जो कुछ पहले सीखा और जो कुछ पार्टीने ज्ञानके प्रति उत्साह सिखलाया, उन्हें वह अपने पास रखना पसन्द नहीं करता था। वह अपने साथ

खानके भीतर काम करनेवाले मजदूरों और पासमें रहनेवाले पड़ोसियोंमें भी वही उत्साह ज्ञानकेलिए प्यास पैदा करनेकी कोशिश करता था। थोड़े ही दिनोंमें उसके प्रभावमें आकर उसका बड़ा भाई भी पार्टीका मेंबर हो गया।

खानके उदरमें पहुँचकर वह खनकोंको खोदनेकी मशीनके इस्तेमालका ढंग बतलाता था। वहीं उसने नीली आँखों वाले एक लड़केको देखकर परख लिया कि इस पतलेमें कमकरमें नई चीज पैदा करनेकी प्रतिभा है। लड़का खानमें उसके साथ काम करता था और गाँवमें उसके पड़ोसमें रहता था यही लड़का था अलेक्सी स्ताखानोफ्! बोल्शेविक द्युकानोफ् अलेक्सेइके साथ खनकोंकी लालटेन ले पृथ्वीके उस अन्धकारपूर्ण उदरमें उतरा और उस ऐतिहासिक रात (१९३५)को उस नौजवानके पथको प्रकाशित कर दिया।

स्ताखानोफ कोयला काटनेमें किसीसे पीछे नहीं था। वह खोदनेकी मशीनको भी अच्छी तरह चलाना जानता था। उस वक्त तक कोयलेकी खानोंमें कायदा यह था कि एक आदमी खुद ही खनता था और कोयलेके निकाल देनेपर जिसमें ऊपरके बोझसे जमीन बैठ न जाय, लकड़ीकी थूनी लगाना था। इस थूनीके लगानेका काम भी वही आदमी करता था। स्ताखानोफ्ने सोचा मशीनसे खोदनेमें थोड़े समयमें हम कोयला तो काफ़ी निकाल लेते हैं; लेकिन थूनी लगानेमें समय अधिक लगता है। उसने सोचा, अगर थूनी लगानेका काम दूसरेको दे दिया जाय तो खुदाईमें जल्दी होगी। इस युक्तिसे उस रात स्ताखानोफ् कई गुना अधिक कोयला खोदनेमें सफल हुआ। अब स्ताखानोफ्ने अपने गुरुसे भी अधिक कोयला निकालकर रख दिया।

३ दिन बाद द्युकानोफ्ने स्ताखानोफ्के रेकार्ड को तोड़ दिया। इसकी खबर खानके दूसरे हिस्सोंमें और फिर खानके बाहर बड़ी तेजीसे फैली और शीघ्र ही स्ताखानोफ्-आन्दोलन सारे देशमें जंगलकी आगकी तरह फैल गया।

कुछ ही समय बाद नगरकी कम्युनिस्ट पार्टीकी कमेटीने अपने वार्षिक अधिवेशनमें द्युकानोफ्को मंत्री बनानेका प्रस्ताव पेश किया। द्युकानोफ्के

लिये यह बड़ी भारी जिम्मेवारीकी बात थी; लेकिन वह जिम्मेवारीसे डरा नहीं। उसने कहा—"साथियो, क्या तुम समझते हो कि मैं इसे निबाह सकूँगा? क्या आप इतनी तेजीसे मुझे ऊपर उठाकर जल्दी नहीं कर रहे हैं? नीचेके कोयलेके गड्ढेसे मुझे आप इतना ऊपर चढ़ा रहे हैं। तो भी यदि आपका मुझपर विश्वास है तो पार्टीने जो काम मुझे सौंपा है, उसे पूरा करनेकेलिए मैं कोई कसर नहीं उठा रखूँगा।"

मंत्री बनते ही उसने वही तत्परता, वही नया रास्ता निकालनेकेलिए उद्योग और समाजवादकेलिए वही श्रद्धा और प्रेम दिखलाना शुरू किया। उसने ढिलमिल-यक़ीन कमजोर आदमियोंको हटाकर योग्य प्रतिभाशाली जवानोंको आगे बढ़ाना शुरू किया।

वह हर रोज खानोंमें पहुँचता था और पता लगाता था कि कौन टुकड़ी काममें पीछे पड़ रही है।

कोयला सेर्‌गो शहरका सर्वस्व है। चाहे नये स्कूल बनाना हो या नई नाट्यशाला खोलनी हो या ट्रामवे की लाइन निकालनी हो या स्वास्थ्य-केन्द्र स्थापित करना हो, हर जगह खर्चे का प्रबन्ध कोयलेकी उपज बढ़ाकर ही हो सकता है।

एक खानको १६०० टन कोयला रोज निकालना चाहिए था लेकिन निकलता था १३०० टन। बैठकोंमें प्रस्तावपर प्रस्ताव लाये जाते थे लेकिन कोई लाभ नहीं। वु्कालोफने प्रस्तावोंको एक तरफ रखा, बैठकको मुल्तवी कर दिया और मैनेजरके साथ खानके भीतर गया। देखा मशीनसे काम करनेका सारा प्रबन्ध ठीक है, लेकिन फिर कौन सी रोक? वु्कालोफने फिर खनकका कपड़ा पहना, हाथमें लालटेन ली और फिर चला गढ़े की ओर। पेटके बल तथा निहुरकर सारी खान उसने छान डाली। दूसरे दिन फिर वह उसी तरह गया। कहाँ क्या दोष है, इसे उसने नोट कर लिया। फिर उसने खनकोंसे बात करनी शुरू की। उन्होंने दिल खोलकर सारी बातें बतलाईं। उसने उनको बढ़ावा देना नहीं चाहा बल्कि उनसे राय माँगी, कि कैसे कामके

कामको सुचारु रूपसे चलाया जाय ? जो कुछ उसने देखा और जो कुछ सुना उन सबको लेकर उसने अपनी एक योजना तैयार की और जब वह योजना कोयलेकी खानोंके प्रबन्धकों और इंजीनियरोंके सामने रखी गई तो दु-कानोफ़की निरीक्षणकी सूक्ष्मता और वैज्ञानिक प्रक्रियाकी शुद्धताको देखकर सबने एक रायसे उसे मान लिया । चन्द ही दिनों बाद खान अपने हिस्सेके कामहीको पूरा न करने लगी, बल्कि नियमपूर्वक उससे भी अधिक कोयला देने लगी । दु-कानोफ़् दोबारा खान देखने गया, और खनकोंको सफलताकी कुंजी बतलाने लगा । फिर उसने उस खानके चतुर खनकोंको आसपासकी सुस्त खानोंमें बाँट दिया और इसी प्रकार सेरगो नगर अपने काममें आदर्श बन गया; और स्तखानोफ़-आन्दोलनके जन्म-स्थान बननेका उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

दु-कानोफ़्को अब भी वैसी ही ज्ञानकी जबर्दस्त प्यास लगी रहती है । जनता और पार्टीने उसपर जो विश्वास प्रकट किया, उसे सम्मानित किया, उससे बल्कि उसकी प्यास और बढ़ गई ! नई पुस्तकोंके पढ़नेमें उसे बड़ा आनन्द आता है । खान या पार्टी कमेटीकी बैठकसे जब वह रातको घर लौटता है, तो अपने उसी लड़के—जिसके साथ उसने स्कूल जाना शुरू किया था और जो अब दसवीं श्रेणीमें पढ़ता है—के साथ बैठ जाता है । वह पुश्किनके मधुर पद्योंको उच्चस्वरसे पढ़ने लगता है और उसका लड़का अपने बापके अशुद्ध उच्चरणको शुद्ध करता है । नगरकी पार्टीका सेक्रेटरी बोल्शेविक् दुकानोफ़् इसमें जरा भी शरम महसूस नहीं करता । मिथ्याभिमान और अहम्मन्यता उसके लिए कोसों दूरकी चीजें हैं ।

* * *   * * *

(ख) दर्या निकितिच्ना केदूचँको मोशाश्नेनोये गाँव तीन प्रान्तों-ओदेसा, किमेक् और चिन्नित्सा तथा मोल्दाविया स्वतंत्र-सोवियत् रिपब्लिककी सीमापर बसा हुआ है; और इसीलिए सबकी आँखें उसके ऊपर रहती हैं । इसे

भी मानना पड़ेगा कि मोशचेनोयेके स्तालिन-कल्खोजके चारों हजार घर इस जवाबदेहीको समझते हैं। उनका हमेशा प्रयत्न रहता है कि उनका कल्खोज आस-पासके प्रदेशोंकेलिए आदर्श बना रहे।

दर्या इसी कल्खोजके एक ब्रिगेडकी प्रसिद्ध नेता है और हाल हीमें उद्रेसा देहाती-निर्वाचन-क्षेत्रसे उसे पार्लियामेंटमें प्रतिनिधि चुना गया है। वह पुराने दिन भी याद हैं जब कि मोशचेनोयेके चारों ओरकी भूमि खनन्को नामक एक बड़े जमींदारकी जमींदारी थी। खनन्को चतुर्थ दूमा (जारशाही पार्लियामेंट)का सदस्य था। वह धन कुबेर था और साथ ही फुलवारी लगानेकी उसे सनक-सी थी। उसके पास २०५० देसीयातिन (१ देसी० = २॥ एकड़) जमीन थी। स्थानीय कुलकोंके हाथमें भी सैकड़ों देसीयातिन थे। और मोशचेनोयेके गरीब किसानोंके पास सिर्फ चार सौ देसीयातिन अर्थात् आदमी पीछे ½ देसीयातिन्।

गरीबी किसे कहते हैं, दर्या इसे बचपन हीसे जानती थी। लेकिन वह उससे डरनेवाली न थी। उसके चारों ओर दरिद्रता हीका बसेरा था। उसका परिवार, उसके पड़ोसी, और प्रायः सभी ग्रामवासी दरिद्रता हीमें जी रहे थे। ८ वर्षकी उम्रमें बारहों मास भूखा रहनेवाले अपने बापके घरको छोड़कर उसे पेट भरनेकेलिए नहीं जीनेकेलिए काम करने जाना पड़ा। घरमें ८ बच्चे थे। दर्या चौथी थी। ३ बड़े लड़के धनी किसानोंके यहाँ मजदूरी करते थे। गाँवमें दर्याके भागकी सराहना हो रही थी—"छोटकी दर्या बड़ी खुश-किस्मत है। खनन्कोके महलमें उसे फूल सजानेका काम मिला है।"

खुशकिस्मत! किसको मालूम था कि इस छोटी कन्याको कितनी बार आँसुओंसे अपनी आँखोंको लाल करना पड़ा। कितनी बार मालिकके काममें जरा सी भूल हो जाने पर उसे बुरी तरहसे पीटा गया। किसी वक्त गुच्छा मालिककी ख्वाहिशके अनुसार नहीं बना था, या किसी समय माला ठीकसे नहीं गुथी गई, कभी फूलोंको ठीक समयपर नहीं सींचा गया; और बच्चे-पर छड़ीपर छड़ी! दर्दसे वह सिकुड़ जाती! आगसे उसे रोनेकी भी आज्ञा न

थी। अँधेरेमें छिपकर अपने दिलके भीतर ही उसे सिसकना पड़ता था। आवाज हुई नहीं कि आँसुओंको पोंछकर मुँहकी सिकुड़नोंको दूरकर मालकिनके सामने आना पड़ता था। उस वक्त कौन जानता था, कि यही दर्या एक दिन संसारके सबसे बड़े राज्यकी पार्लियामेंटकी सदस्या चुनी जायगी ?

अपने ८ व्यक्तियोंके परिवारकेलिए दर्याके पिता निकिता स्तोबोद्या-नुकके पास २ देसीयातिन् खेत था, एक घोड़ा था। गर्मियोंमें एक गाय भी हो जाती थी, जिसे जाड़ोंमें चारेके अभावसे बेच दिया जाता था।

दर्याको अब भी एक घटनाकी धीमी-सी याद बनी हुई है। एक हल और बुआईके पाँचेके लिए निकिताको अपने खेतमेंसे आधा देसीयातिन् बेचनेपर मजबूर होना पड़ा। पीछे एक अकाल वाले सालमें उस हल और पाँचेको भी बेच देना पड़ा। कर्जमें घोड़ा भी लग गया। उसी वक्त दर्याको जमींदार खनन्कोके पास मजदूरी करनेकेलिये भेजना पड़ा। उस दिनसे माँ-बापका प्रेम किसे कहते हैं, इसे उसने नहीं जाना। किसीने उसे बेटी नहीं कहा। किसीने उसे बच्चा करके नहीं देखा। वह 'मजूरिन' थी! 'तुस्न काहिल'! 'मूर्ख'! 'गोबर भरे दिमागकी' उसके मालिकोंके पास उसे पुकारनेकेलिए दूसरे शब्द न थे। लम्बे वर्ष बीत गये।

तबसे ३० वर्ष गुजर गये। दर्या अपने भूतके बहुतसे भागको भूल गई जो याद भी है, वह भी बहुत धुँधला-सा। लेकिन अभी हालके कुछ वर्षोंकी कितनी ही स्मरणीय घटनाएँ उसे ख़ूब याद हैं। अर्तेल और पंचायती खेती-का कैसे संगठन हुआ कैसे उसमें उन्नति हुई; इस सम्बन्धकी छोटी-छोटी बातें भी उसे याद हैं! और ऐसा होनेकेलिए कारण है। दर्या फेद्चेंकोकेलिए, उसके सभी ग्रामवासी नर-नारियोंकेलिए कल्खोजकी कल्पनाके साथ-साथ एक नये जीवनका आरम्भ हुआ।

स्तालिन्-कल्खोजको स्थापित हुए अभी सात ही साल खतम हुए हैं, लेकिन इतने हीमें गाँवकी जो आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति हुई है, उसका

पहले स्वप्नमें भी देखना मुश्किल था। १९३१का मोशाचेनोंये १९३७में क्या-से क्या हो गया, इसके लिए नीचे के नकशेको देखिए—

	१९३१	१९३७
जुते खेत	४२३·५ हेक्टर	२,१०० हेक्टर
गेहूंके खेत	१६६	७०७
चुकन्दरके खेत	७८	२६५

१ हेक्टर = २·४७ या प्रायः २॥ एकड़का होता है।

उपज	१९३१	१९३७
गेहूंकी खेती	[illegible] टन प्रति हेक्टर	२·१६ टन प्रति हेक्टर
चुकन्दरकी फसल	१२·१ टन प्रति हेक्टर	२०·६ टन प्रति हेक्टर
प्रति किसान कामके दिन	११३	१६०
कल्खोजकी आय	३७,००० रूबल	६,५०,००० रूबल
प्रतिदिनका वेतन (नाज)	१·४ किलोग्राम	५·२ किलोग्राम
प्रतिदिनका वेतन (नक़द)	६५ कोपेक	२ रूबल

इसके देखनेसे मालूम होगा कि १९३१में जहाँ एक दिनका वेतन था प्रायः २ सेर नाज और चार आना पैसा; वहाँ १९३७में हो गया प्रायः ७ सेर नाज और १४ आना पैसा।

पिछले सात वर्षोंमें स्तालिन्-कल्खोजने खेतीमें जबर्दस्त उन्नति की है। गेहूँकी उपजमें ग्यारह गुना और चुकन्दरमें १० गुनाकी तरक्की हुई है। इतना ही नहीं इस कल्खोजकी पशुशाला बड़ी जबर्दस्त है। एक विभागमें २७५ अच्छी नस्लकी गायें हैं। दूसरे विभागमें सफेद अंग्रेजी सूअर २५०

पोसे गये हैं। तीसरेमें ऊँची नस्लकी मुर्गियोंका एक बहुत भारी मुर्गिखाना है। पशुओं और मुर्गियोंसे कल्खोजकी आमदनी बहुत बढ़ गई है। हर एक किसानको एक-एक दो-दो पशु और कितनी ही मुर्गियाँ भी व्यक्तिगत तौरसे पालनेको मिली हैं, जिनकी नस्लकी शुद्धताकी जिम्मेवारी कल्खोज-पर है। पशुओंकी वृद्धिसे खेतोंकेलिए आवश्यक खादकी मात्रा भी बहुत अधिक बढ़ गई है।

१९३१में लोगोंके कामके दिन ३७००० थे लेकिन १९३७में उन्होंने १,३७,००० दिन काम किये, इस प्रकार दिनका वेतन ही इन ७ वर्षोंमें चौगुना-पँचगुना नहीं हुआ बल्कि कामके दिन भी ६-७ गुना हो गये। प्रत्येक किसान-की आमदनी ७० सैकड़ा बढ़ी और साथ ही १९३१में जहाँ ढाई एकड़ खेतीके-लिए ८८ दिनके कामकी जरूरत थी, वहाँ १९३७में ६५ दिन ही लगे। क्रान्ति (१९१७)से पहले किसानोंकी जो अवस्था था, उससे आजका मुकाबला ही नहीं किया जा सकता।

१९२९में जब स्तालिन्-कल्खोजकी स्थापना हुई, तो दर्या सबसे पहले उसमें शामिल हुई। उसके ग्रामवासियोंमेंसे अधिकांश कल्खोजको बड़े सन्देह-की दृष्टिसे देखते थे। जो उसमें शामिल हुए थे वह भी काम करनेकेलिए नहीं। दर्याको किसी भी काम करनेसे हिचकिचाहट नहीं थी। उन मेहनतके कामोंसे भी वह मुँह नहीं फेरती थी, जिनमें लगनेकेलिए मर्द भी हिम्मत नहीं करते थे। उस साल जाड़ेका आरम्भ हो चुका था। कल्खोजके पशुओंके पानी पीनेका कोई इन्तजाम न था। पशुशालाके बाड़ेमें एक कुएँकी जरूरत थी। पञ्चायतमें मर्द लोग खूब इसपर वादविवाद करते थे, लेकिन कोई उसके खोदने-केलिए तत्परता नहीं दिखलाता था। दर्यासे प्यासे पशुओंकी तकलीफ देखी नहीं गई। पशुओंकी देख भालका काम उस वक्त उसीको मिला था। उसने तय किया कि वह खुद उस कामको करेगी। सर्दीके मारे जमीन जमकर पत्थर-सी हो गई थी। और उसका अपना शरीर भी काँप रहा था। दर्याने फावड़ा उठाया और लगातार २ दिन तक खोदती रही। मर्दोंको लज्जित होना

रहा । तीसरे दिन ५ मर्दोंने दर्याकी जगह ली और १० दिनमें कुआँ तैयार हो गया ।

बुनाईके दूसरे मौसममें दर्या खेतपर काम करनेवाले प्रथम ब्रिगेडमें ली गई । एक साल बाद वह तूफ़ानी कमकर (अपने हिस्सेसे भी कई गुना काम करनेवाला व्यक्ति) बन गई । और उसको कई बार कामकेलिए इनाम मिले । अपने अच्छे कामकेलिए २० औरतोंकी टोलीकी वह नेता चुनी गई । जुताई और निराईमें मर्द भी कितनी ही बार उसके साथ चलनेकी हिम्मत नहीं रखते थे । गाँवकी औरतोंमें तो दर्याने रूह फूँक दी थी । सभी उसीकी तरह अपने काममें तत्परता दिखलाती थीं । पहले जो औरतें और लड़कियाँ थकनेका बहाना बनाकर काममें जी चुराती थीं; वह भी खेतोंमें दौड़ने लगीं । कुछ ही दिनोंमें काम करनेमें औरतोंने अपनेको मर्दोंके बराबर सिद्ध कर दिया । १९३४ में दर्याकी टोलीने प्रति बीघा १५० मन (प्रति हेक्तर १८ टन) चुकन्दर पैदा किया । उस समय तक ओदेसामें चुकन्दरकी यह सबसे बड़ी उपज थी और तारीफ़ यह कि उस साल सूखा-सा पड़ गया था । इस उपजने दर्याकी कीर्ति ओस्त्रोवेनोयेसे बाहर फैलने लगी । बुग नदीकी सारी उपत्यकामें उसका नाम फैल गया ।

अब दर्याको कल्खोजने एक पूरे ब्रिगेडका नेता बनाया और उसके जिम्मे १२०० बीघा (४०० हेक्तर) खेत लगा दिया, ठीक उतना ही खेत जितनेमें कि जमींदारी राज्यके समय सारे गाँवके किसान जोते थे ।

सातवीं अखिल सोवियत् कांग्रेसमें दर्या ओदेसा प्रान्तकी प्रतिनिधि चुनी गई और यह पहला समय था, जब कि वह मास्को गई ।

२८ जनवरी १९३५की वह स्मरणीय संध्या थी जब कि वह मानों स्वप्नमें हजारों विद्युत् प्रदीपोंसे प्रकाशित कोलाहलपूर्ण राजधानीकी सड़कपर चल रही थी । वह भी स्वप्न ही-सा था जब कि वह क्रेमलिनमें प्रविष्ट हुई । विशाल चमकते हुए बिजलीके फानूसोंके प्रकाशमें क्रेमलिनका प्रासाद उसे बचपनकी चिरविस्मृत किसी कहानीका स्वर्ग-सा मालूम होता था । यहाँ क्रेमलिनकी

देहर्तीपर एक बार उसके सामने अपना सारा भूत जीवन झलक उठा। कांग्रेस-में दर्या स०स०स०र०की केन्द्रीय प्रबन्धकारिणी समितिकी सदस्या चुनी गई। कल्खोजी तूफ़ानी कमकरोंकी जो दूसरी कांग्रेस हुई थी, उसमें भी वह ओदेसा प्रान्तकी प्रतिनिधि चुनी गई थी और स्तालिन् तथा मन्त्रिमण्डलके प्रमुख व्यक्तियोंके साथ उसने कांग्रेसके संचालनका काम किया। दर्या कांग्रेसके उस पहले दिनको कभी नहीं भूल सकती, जब कि स्तालिन्, वोरोशिलोफ़् और मोलोतोफ़्ने उसका बड़ा जोरदार स्वागत किया। हर एकने बड़े जोशके साथ उससे हाथ मिलाया। उस दिन दर्याको अपना आँसू रोकना मुश्किल हो गया था और स्तालिन्के हँसमुख चेहरेसे निकले प्रश्नके उत्तरमें उसने लड़-खड़ाती ज़बानसे कहा—"आप जानते हैं, मैंने अपनी सारी जवानी ज़ारशाही-के नीचे बिताई।......एक खेतिहर मजदूर, एक पददलित किसान औरत ......आपका कृपापूर्ण व्यवहार मेरे हृदयके अन्तस्तल तक इतना पहुँच गया है कि मैं कुछ नहीं कह सकती।"

स्तालिन्ने उसे शान्त किया और अपनी बगलकी कुर्सीपर बैठाया।

१९३५में दर्याके ब्रिगेडने प्रति हेक्तर २·७ टन गेहूँ पैदा किया, बल्कि १० हेक्तर लेनेपर औसत ३·७ टन तक पहुँच गई थी। इसके अतिरिक्त चुकन्दर प्रति हेक्तर २१·८ टन। इस सफलताकेलिए उसे लेनिन्-पदक (सोवियनका सबसे ऊँचा पुरस्कार) मिला। १९२४में उसने प्रति हेक्तर २·४ टन गेहूँ और २२·८ टन चुकन्दर पैदा किये। १९३७में उसने और उपज बढ़ाई, और उस साल प्रति हेक्तर २·५ टन गेहूँ तथा ३० टन चुकन्दर।

दर्याका गाँव ३ प्रान्तों और १ प्रजातन्त्रके बीचमें पड़ता है, यह हम कह चुके हैं। दर्याको जिन तरीक़ोंसे ये सफलताएँ मिली थीं, उनके प्रचारका बहुत अच्छा मौक़ा था। वह अपने ब्रिगेड के आदमियोंको लेकर आस-पासके पिछड़े हुए गाँवोंमें चली जाती थी और उन्हें कामका ढंग सिखलाती थी। उसने अपने तजर्बेसे खेतीके जो गुर प्राप्त किये थे, उन्हें वह दूसरों तक पहुँचाना अपना कर्तव्य समझती थी। यही उसके कामका प्रभाव था, जिसके कारण

१२ दिसम्बर १९३७को लोगोंने उसे अपना प्रतिनिधि बनाकर सोवियत् पार्लियामेंट (संघ सोवियत्)में भेजा ।

आज दूर्या निकितिच्ना, क्रेमलिन्में सोवियत् संसारके भाग्य-विधाताओंकी पंक्तिमें बैठती है । लेकिन अब उसमें यह हिचकिचाहट नहीं है और न क्रेमलिन्के विशाल प्रासाद उसपर वैसा रोब डाल सकते हैं जैसा कि उन्होंने ३ साल पहले, पहले-पहल आनेके वक्त डाला था ।

* * *   * * *

(ग) कोर्नेइचुक्—उक्रइनके तरुण नाट्यकार अलेखांद्र कोर्नेइचुकके नाटकोंको सोवियत्के करोड़ों आदमियोंने देखा है । कितने ही सालोंसे उसके दो नाटक—'बेड़ेका ध्वंस'—'प्लेटोन् क्रेचित्' वर्षोंसे सोवियत् जनताके प्रीति-भाजन बने हैं । उसकी इसी सफलताकेलिए उबेर्नीगराद् निर्वाचन-क्षेत्र (कियेफ् प्रान्त)ने उसे पार्लियामेंटमें अपनी तरफ़से भेजा है ।

कोर्नेइचुकका बाल्य महायुद्ध और गृह-युद्धके समयमें बीता । उक्रइन् प्रजातन्त्रके एक छोटेसे स्टेशन क्रिस्तिनोफ़्काके एक रेलवे मजदूरके घर उसका जन्म हुआ था ।

१९१८में जर्मनोंने उक्रइन्पर कब्जा किया और उनके अत्याचारका बालक कोर्नेइचुकके दिलपर गहरा प्रभाव पड़ा । जर्मन देशको लूट रहे थे । अनाज, ढोर, फल, मूल जो कुछ भी सामने आया सब छीनकर ट्रेनमें लाद-लाद जर्मनी भेजा जा रहा था । लोग अन्न-बिना भूखों मर रहे थे । चौदह वर्षके अलेखांद्रके दिलमें इन विदेशी लुटेरोंके प्रति बड़ी घृणा पैदा हो गई । अलेखांद्रको एक घटना अब भी याद है । उसका कुत्ता पल्सा अजनबीको देखकर भूँक पड़ा था । इसपर जर्मन सिपाहियोंने कुत्तेको मार दिया । वह कुत्तेको तड़पता देख रहा था और अपने आँसुओंको भी नहीं रोक सकता था ।

वह स्कूलके तेज लड़कोंमें था; और हर तरहकी किताबोंके पढ़नेका

बड़ा शौकीन था। गर्मीकी छुट्टियोंमें वह रेलवेमें गाड़ियोंकी मरम्मतका काम करता था। उसी समय वह तरुण-साम्यवादी-संघका सदस्य था और उसके संगठनमें उसने बड़ी योग्यताका परिचय दिया। १९२३में संघने उसे पढ़नेकेलिए कियेफ् भेजा। उसने खूब दिल लगाकर अध्ययन किया। उसे उस समय लिखनेका शौक हुआ। उसने इसके लिए बहुत समय दिया। १९२५में लेनिनकी वर्षीके नजदीक आते समय उसने उस महान् नेताकी मृत्युके बारेमें एक कहानी लिखी। यह उसकी पहली कहानी थी। उसने उसे धड़कते दिलसे एक पत्रमें भेज दिया। कई दिन उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। आखिर २१ जनवरीको उसके सहपाठियोंने सूचित किया कि कोर्नेइचुक नामक किसी व्यक्तिने लेनिनके जीवनपर एक बड़ी दिलचस्प कहानी लिखी है। उनको गुमान भी नहीं हो सकता था कि उस कहानीका लेखक यही उनका सहपाठी है। कुछ महीनों पीछे कियेफ़्के कमकर-तरुण-थियेटरमें एक अज्ञात नाट्य-कारके 'देहलीपर' नामक नाटक का अभिनय हुआ। दर्शक-मण्डलीने पहली ही रात उसकी बड़ी दाद दी।

१९३०में उक्रइनके तरुण-साम्यवादी-संघने कोर्नेइचुकको ओदेसाके सिनेमाके कारखानेमें काम करनेको भेजा। यहीं उसने अपना पहला ऐति-हासिक नाटक 'बेड़ेका ध्वंस' लिखा। अब उसकी प्रसिद्धि सारे देशमें हो गई। यह नाटक गृह-युद्धकी एक घटनाको लेकर है। उस समय क्रान्तिकारी नौ-सैनिकोंने दुश्मनके हाथ न पड़ने देनेकेलिए जंगी बेड़ेको अपने हाथोंसे गर्क कर दिया। कोर्नेइचुकने इस घटनाकी जानकारीकेलिए बहुत समय लगाया। वह कितने ही उन लाल नौ-सैनिकोंसे मिला, जिन्होंने उस ऐति-हासिक घटनामें भाग लिया था। नाटकका खाका तैयार हो गया था, लेकिन अभी उपसंहार और कुछ और बातें नहीं मिल रही थीं। इत्तिफाकसे एक दिन एक बूढ़े मल्लाहने कोर्नेइचुकसे कहा—नाव डुबानेसे पहले कैसे नाविकोंने जहाजको खूब धो-धाकर इसलिए साफ किया कि जिसमें समुद्र देवको एक स्वच्छ जहाजकी भेंट चढ़ायें। इस बातने कोर्नेइचुकको अन्तःप्रेरणा दी

और वह समझ सका कि वे नाविक क्रान्ति-यज्ञमें इस समिधाको एक बड़े भाव-के साथ डाल रहे थे। इस नाटकको रंग-मंचपर बड़ी सफलता मिली; और लेखकको नाट्यकार प्रतियोगितामें दूसरे नम्बरका पारितोषिक मिला। कोर्नेइचुकका दूसरा नाटक "प्लेटोन क्रेचित्" आधुनिक सोवियत् जीवनसे सम्बन्ध रखता है और सोवियत् जनताको बहुत प्रिय है। तीसरे नाट्य-महोत्सव (१९३५)में खेले गये नाटकोंमेंसे यह एक था। १९३६में पार्टी और गवर्नमेंटके नेताओंने उक्रइनके नाट्यकारोंका अभिनन्दन किया था। उसमें कोर्नेइचुक भी मौजूद था। कोर्नेइचुक लिखता है—"मैं सभापति-मंचकी ओर बढ़ा। मुझे अपना परिचय देनेका मौका दिये बिना ही कगानोविचने मुझे साथी स्तालिनके सामने पेश किया। हमने हाथ मिलाया और तवारिश स्तालिनने अपनी स्वाभाविक मुस्कुराहटके साथ मुझसे कहा—'मैंने तुम्हारे बारे-में सुना है।' मेरे दिलपर इसका इतना असर हुआ कि मैं उसका कोई समु-चित उत्तर न दे सका।

कोर्नेइचुकका सबसे नया नाटक है 'सत्य'। यह महान् साम्यवादी क्रान्ति-की घटनाओंसे सम्बन्ध रखता है। लेखकने लिखा है—"अपने नये नाटकमें दिखलाना चाहता हूँ कि कैसे मेरी जन्मभूमिके कमकरोंने लेनिन-स्तालिन-की पार्टीके नेतृत्वमें सत्यको पाया, और श्रम-जीवियोंके अधिनायकत्वका निर्माण किया।"

* * * * * *

(घ) पार्लियामेंटकी एक सदस्या लिखती है—

"स्तोबोल्स्काया (भूतपूर्व व्यत्का और वर्तमान कीरोफ़ प्रान्त)के छोटे-से गाँवमें मैं पैदा हुई थी। सोवियत्‌में कितनी जल्दी नगरों, ग्रामोंकी कायापलट हो रही है, इसका उदाहरण एक मेरा गाँव भी है। ७ वर्ष पहले मैं एक छोटी-सी वर्कशापमें समूर तैयार करनेके काममें दाखिल हुई। वहाँ २०० कमकर थे। आजकल वहाँपर स०स०स०र०की सबसे बड़ी समूर तैयार करनेवाली

फैक्टरी है। मकानोंकी ३ बड़ी-बड़ी कतारें चली गई हैं। इस वक्त वहाँ ६००० कमकर काम करते हैं।

पहले स्लोबोत्स्कायाके नजदीक छोटी-छोटी पन्द्रह चमड़ा सिझानेकी कोठियाँ थीं। अब सबको एक करके वहाँ एक बहुत जबर्दस्त चमड़ेकी फैक्टरी तैयार हुई है। उसमें ४००० कमकर काम करते हैं। पासवाली शराबकी भट्ठीको बढ़ाकर बड़े कारखानेका रूप दिया जा रहा है। १० वर्ष पहले गाँवकी आबादी १२,००० थी और अब २५,००० है। अब वह छोटा सा शहर है। हमारे शहरके कमकरोंकी आर्थिक अवस्था प्रत्येक साल उन्नत होती जा रही है। इसी साल हमारे कारखानेमें एक सांस्कृतिक भवन बनाया गया है। इसके हालमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं। और उसके साथमें ८ विश्राम और अध्ययनके कमरे, २ किन्डरगार्टन और बच्चे-खानेके कमरे, (जिनमें ४०० बच्चोंका इंतजाम है) एक बृहद् क्रीड़ा-क्षेत्र, एक नाच खेलनेकी जगह, बनी है। हमारे कमकरोंमें बहुत ही कम अशिक्षित या अर्द्ध-शिक्षित हैं।

हमारे कारखानोंमें काम करनेवाले सैकड़ों व्यक्ति—जो आर्थिक सुख और अधिकारसे वंचित रखे गये थे—अब बड़े-बड़े पदोंपर पहुँच गये हैं। सोवियत्-सरकारकी कृपासे उनको सीखनेका ऐसा अवसर मिला कि उनकी प्रसिद्धि उनके नगर और जिलेसे पार होकर दूर तक फैल गई है।

मेरे माँ-बाप तभी मर गये, जब कि मैं ८ वर्षकी थी। मेरे घर-द्वार कुछ नहीं था। एक कुलकके लड़कोंके खेलानेका काम मुझको मिला। वह जीवन बिलकुल सूखा और घोर अपमानका था। भूखी चीथड़ोंवाली मुझ जैसी छोटी-सी अनाथ लड़कीकेलिए और क्या आशा हो सकती थी! लेकिन सोवियत्-शासनने मुझे उस भयंकर दरिद्रता और परतन्त्रतासे मुक्त किया। मैंने फैक्टरीमें काम करना शुरू किया और मेरा जीवन कुछसे कुछ बन गया। काम करते वक्त मैं रातकी पाठशालाओंमें अपने कामके विषयमें विशेष ज्ञान सीखती रही। अब भी मैं पढ़ रही हूँ। सोवियत् शासन और जनताने जो मेरा उपकार किया है, उसने मुझे सिखलाया कि मैं अपने देशके ऋणको

सामग्रीकी उपज बढ़ाकर दूर करूँ। मैं एक तूफानी कमकर थी। फिर १९३९ में एक ब्रिगेडकी नायक बनाई गई। हल्के-उद्योग-विभागके मन्त्रीने सबसे अच्छे काम करनेवाले ब्रिगेडको एक झण्डा देना तय किया था; और हमारे ब्रिगेडने इतना अच्छा काम किया कि वह झण्डा हमको मिला। अपने काम-में हमने श्रम बचानेवाले कई तरीके निकाले और अपने मालको बढ़िया बनाया। समूरकी सिलाईमें जो छाँट होती है, उसमें भी हमने कमी कर दी। मैंने काटनेवाले दर्जीको नया तरीका बतलाया जिससे कि सिलाईका समय आधा हो गया। अपनी फैक्टरीमें पहले-पहल मैंने स्तखानोफ़-आन्दोलनका सूत्रपात किया। हम बराबर अपने प्रोग्रामसे दुगुना माल तैयार कर रहे हैं।

पिछले साल मैं अपने कारखानेकी सबसे बड़ी वर्क-शाप—दर्जीखाना, जिसमें कि समूर काटा, जोड़ा और सिया जाता है—की सहायक मैनेजर बनाई गई; और उसीके बाद मैंने सुना कि मेरे ज़िलेके कमकर मुझे पार्लिया-मेंटका उम्मेदवार खड़ा कर रहे हैं।

अपने बचपनके वर्षोंमें मुझे स्वप्नमें भी ख्याल नहीं आया था कि मैं कभी राजधानी देखूँगी; और आज मैं यहाँ मास्कोमें हूँ। और सो भी स०स०स० र०की पार्लियामेंटके मेंबरके तौरपर। यहाँ सरकारी मन्त्रियों, महान् क्रान्तिका-रियों और वैज्ञानिकोंके साथ बैठकर मुझे भी राजनैतिक समस्याओंके निर्णय करनेका अधिकार होगा।

पार्लियामेंटके सदस्यके तौरपर मैंने अपने सामने काम रखा है कि उद्योग-धंधेकी जिस समूर शाखाको भली प्रकार जानती हूँ, मैं उसकी उन्नतिकेलिए पूरा जोर लगाऊँ। यह बड़ा ही आवश्यक काम है। पहले जब कमकरोंकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, तो समूर (कीमती बालवाले चमड़े)के कोट या पोशाकके खरीदनेकेलिए पैसा किसके पास था? लेकिन अब हालत दूसरी हो गई है। अच्छे समूरकी पोशाककी बड़ी माँग है। हमें हर कीमतके भिन्न-भिन्न समूरोंको कमकरोंकेलिए तैयार करना है। समूरके उद्योगके अफसरोंमें ऐसी यान्त्रिक खोजनेकेलिए मैं मनोयोग दे रही हूँ कि जिसमें चमड़ेकी सिलाई

और रँगाई बेहतर हो। यद्यपि अभी ही हमने इस क्षेत्रमें विदेशी कम्पनियोंको मात करना शुरू किया है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि इस सम्बन्धकी और समस्याएँ हल की जायँ, जिसमें सबूरका उद्योग बड़े जोरसे बढ़े।

* * * * * *

(क) कुछ और सदस्य—बोल्कोवा एक स्ताञ्जानोवी कमकर स्त्री जो चेर्नोरेचेन्स्क रसायन फैक्टरीमें काम करती है, और संघ-सोवियत्की सदस्या चुनी गई है, अपने वोटरोंको धन्यवाद देते हुए कहती है—

"सिर्फ उसी देशमें—जहाँपर कि शासनकी बागडोर किसानों और मजदूरोंके हाथमें है, जहाँपर कि साम्यवादी समाजका निर्माण हुआ है, जहाँपर कि सभी समाजवादी निर्माणका नेतृत्व बोल्शेविक पार्टी और उसके महान् नेता और शिक्षक तवारिश् स्तालिन्के हाथमें है—वहीं यह सम्भव है, कि एक स्त्री जो हाल तक घरकी नौकरानी थी, वह राष्ट्रकी सर्वोच्च पार्लियामेंटकी सदस्या चुनी जाय।

मैं खूब अनुभव करती हूँ कि निर्वाचकोंने मेरे कंधेपर कितना भारी बोझ रख दिया है। लेकिन मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं अपनी सारी शक्ति, सारा जीवन, सोवियत्-जनता और लेनिन्-स्तालिन्की पार्टीको दूँगी।"

* * * * * *

एक तातार (पहले मुसलमान) अध्यापिका नयन् तुमातोवाने अपने उद्‌गार इस प्रकार प्रकट किये—

"मैंने अपनी जन्मभूमिके श्रेष्ठ पुत्र और कन्याको वोट दिया। मैंने वोट दिया कम्युनिस्ट पार्टीकेलिए, विधानके महान् निर्माता तवारिश् स्तालिन्केलिए। दूसरा मैं कर ही कैसे सकती थी! एक निरक्षर कमकरकी लड़की मेरी जैसी तातार स्त्रीको जिस सोवियत्-शासनने नागरिकताका महान् अधिकार दिया, जिसने मुझे उच्च-शिक्षा पानेका अवसर दिया। मैं अध्यापिका हूँ। ल्यांचीतमक्

गाँवके हाई-स्कूलमें अपनी तातार भाषामें मैं केमिस्ट्री और बायालोजी पढ़ाती हूँ। मेरे सभी शिष्य साम्यवादके ध्येयकेलिए सजग योद्धा होंगे।"

* * * * * *

तात्याना विकुल्तिना कलखोजी किसान की पार्लियामेंटकी सदस्या है। अपने जीवनके बारेमें वह कहती है—

"मैं एक खेतिहर-मजूरिन थी और उसपर भी पिछड़ी हुई जाति करेलियन-की। मुझे कहाँ यह गुमान हो सकता था, कि स्वतंत्र-करेली जनता मुझे जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंट)की सदस्या चुनेगी। मुझे कहाँ यह कल्पना हो सकती थी कि एक गरीब किसान—सो भी जारशाहीके शासित एक उपनिवेशमें—जैसा कि क्रान्तिके पहले करेलिया था— शिक्षित और सुख-सम्पन्न बनेगी। और मेरे लड़के शिक्षा पायेंगे। यह कहाँ मैं सोच सकती थी, कि नागरिकताके अधिकारसे वंचित एक स्त्री—जिसको गाँवके पंच चुननेमें भी वोटका अख्तियार नहीं था—पार्लियामेंटकी मेम्बर चुनी जायगी!"

* * * * * *

मरिया देमूचेंकोने चुकन्दरकी खेतीमें स्ताखानोफ़-आन्दोलन आरंभ किया था। यह सबसे पहली किसान थी जिसने एक एकड़में २० टन (१ बीघेमें २८६ मन) चुकन्दर पैदा किया था। उसका अनुकरण करके कितने बिगेड नेताओंने उसके ढंग पर खेती करके प्रति एकड़, ४० से ६० टन तक (फ़ी बीघा १००० मनसे अधिक) चुकन्दर पैदा किया। मरियाके साथ ही सोवियत् जनताने उसके बतलाए रास्तेपर चलने वाले तात्याना, दाद्किना, लेजिकूबयेवा इत्यादिको पार्लियामेंटका मेम्बर चुना।

दोरिमा नम्समरएवा एक गरीब अपढ़ बुरयत् मंगोल लड़की थी। यह कलखोजमें शामिल हुई। वहीं उसने लिखना-पढ़ना सीखा। अपने काममें उसने बड़ी तत्परता और जोर दिखलाया। इसपर पशुपालन-कलाके विशेष अध्ययनकेलिए उसे भेज दिया। पिछले चार वर्षोंसे वह एक पशुशाला और दुग्धशाला (डेरी-फ़ार्म)में मैनेजर है; और उसके प्रबन्ध और प्रयत्नसे उसके

कमाल किया है। इसके लिए उसे सरकारी पदक मिला है। आज तुरयत् जनताकी ओरसे वह पार्लियामेंटकी मेंबर है।

* * *   * * *

उज्बेकस्तान उजबेक लोगोंका प्रजातन्त्र है। हिन्दुस्तानमें तो उज्बेक कहने हीसे लोगोंको हँसी आती है; लेकिन आज उज्बेकस्तान प्रजातन्त्र शिक्षा और धन सभीमें बहुत आगे बढ़ा हुआ है। इस्लामने जो पर्दा और धार्मिक कट्टरता उनमें पैदा की थी, उसका अब नाम तक नहीं है। उजबेक जनताने सोवियत् पार्लियामेंटमें ४५ सदस्य (संघ-सोवियत्में २० और जातिक-सोवियत्में २५) भेजे हैं। कगानोविच् (रेलवे मन्त्री) और यूसुफोव जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियोंके अतिरिक्त उनमें उसमान अरकयेफ्, अलन्ज़ार खुदोयेफ्, शरीफ बाबा हमरयेफ्, पाशा महमूदोफ, गुलजार अरतीकोवा—जैसे कल्खोजके स्त्री-पुरुष हैं। मेडिहर यूसुफ खसानोफ्, मिर्जो एस्सन्चोफ्, अध्यापिका अहमनिसा मीर अहमदोवा भी उजबेकस्तानसे चुने गये पार्लियामेंटके सदस्य हैं।

अहमेजान इब्राहीमोफ् उज्बेकस्तानसे चुने गये पार्लियामेंटके सदस्यने मास्कोमें एक प्रेस-प्रतिनिधिको अपना वक्तव्य दिया—

महासोवियत्के उद्घाटनाधिवेशनकी पहली शामको देर तक मुझे नींद ही नहीं आई। मैं बार-बार उठकर होटलके जंगलेसे क्रेमलिन्के लाल (पद्मराग) जटित तारोंको देखता रहा। क्रेमलिन् राजधानीका हृदय है और ये तारे उसी हृदयकी प्रतिमा हैं। हमारे देशके सभी कमकरोंका ध्यान क्रेमलिन्की ओर है।

पहले अभिवेशनकेलिए जब मैं मास्को आ रहा था, तो मेरी नजरके सामने अपना पुराना जीवन फिरने लगा। मुझे याद हुआ, कैसे मैं लालसेनाका एक सिपाही था और कैसे मैं सोवियत्-शासनकेलिए दुश्मनों—अमीरों और मुल्लाओंसे लड़ा। लेनिन् और पार्टीके नाम मेरे होठोंपर थे। जब मैं दुश्मन-से मुकाबला करने युद्ध-क्षेत्रमें गया, पार्टी और जनताके साथ मैंने साम्यवाद-

का निर्माण किया। कितना मुझे आनन्द आता है, जब मैं देखता हूँ कि हमारा जीवन इतना सुखमय हो गया है।

सदस्य हालमें पहुँच गये हैं। प्रतीक्षाके मिनट बड़े आहिस्ते-आहिस्ते गुजर रहे हैं। लोग तवारिश स्तालिनको देखनेकेलिए उतावले हो रहे हैं। वह अपने निकटतम सहयोगियोंके साथ भीतर आते हैं। सदस्य खड़े होते हैं। ताली बजाते हैं और हुराका नारा लगाते हैं। मेरे मनमें एक अनिर्वचनीय आनन्द उत्पन्न होता है। सारी दर्शक-मण्डली आनन्दविभोर है।

जनताकी मित्रता एक जबर्दस्त ताक़त है। सदस्यों—सोवियत् जनताके प्रतिनिधियों—ने नेताका अभिनन्दन करके दिखला दिया कि जनताकी मित्रता अचल है। जो कोई भी इस मित्रताके खिलाफ़ जानेकी कोशिश करेगा, वह उस बड़ी चट्टानसे टकराकर रेजा-रेजा होकर गिर जायगा। मैंने पार्टीके झगडेकेलिए जिया और काम किया और पार्टीकेलिए, जनताकेलिए, मैं जीता रहूँगा।

* * *   * * *

आजुरबाइजान्से निर्वाचित सदस्या चिमनाज् अस्तानोवाके उद्‌गार हैं—

"जिस दिनकी प्रतीक्षा कर रही थी, आखिर वह दिन आ गया। स०स० स०र०की महासोवियत्का प्रथम अधिवेशन आरंभ हुआ। पूरे एक महीने हुए जबसे कि मैंने सुना, कि मैं जातिक-सोवियत्की डिप्टी चुनी गई हूँ, तभीसे मेरा मन मास्कोमें लगा था। मैं सोचती थी, कैसे मुझे काम करना चाहिए, कि जिन हजारों व्यक्तियोंने मुझे वोट दिया, वह अपने डिपुटीके कामसे सन्तुष्ट हों। सिवाय इसके मैं और क्या कर सकती हूँ कि सिद्ध करूँ कि जनताके सुख और सन्तोषसे बढ़कर मेरे लिए कोई स्वार्थ नहीं। सोच रही थी—वहाँ मास्को-में जाकर जब क्रेमलिन्में हम सभी डिपुटी सारे देशके सन्मुख, स्तालिन्के सन्मुख एकत्रित होंगे तो मैं क्या कहूँगी।

१२ जनवरीकी शाम आई। मैं राजधानीमें हूँ। मैं क्रेमलिन् गई। मास्को-की सड़कें प्रसन्न और शब्दायमान हैं। लाल-मैदान अद्भुत है। क्रेमलिनके तारे बड़ी खूबसूरतीसे चमकते हैं।

मेरे निर्वाचकोंकी तसवीर दिमागके सामने आई। यह हैं तेलके कमकर, कपड़ेके कमकर, अध्यापक, विद्यार्थी, लाल-सेनाके सिपाही और बाकू-गैरिसन (पलटन)के अफ़सर। मुझे उन सभाओंकी याद आई जिनमें उन्होंने मुझसे कहा था—'चिमनाज़, तू 'मातृ-भूमिकी सच्ची बेटी बनना। लेनिन् और स्तालिन्से सीखना कि कैसे जनताका प्रेम किया जाता है। बोल्शेविक-पथसे कभी नहीं हटना' मैंने अपने निर्वाचकोंको जवाब दिया—'मैं ईमानदारी और विश्वासके साथ बेहतर और कठिनतर काम करूँगी। मेरा जीवन, मेरा खून, जनताका है। और अब यहाँ मैं क्रेमलिन्में हूँ।' मैं कहती मालूम होती हूँ—भाइयो, बहनो, हम एक हैं। हम स्वतंत्र हैं। हम समान अधिकार रखते हैं। उज्बेक, कल्मुक् आजुरबाइजान्, याकूत्, महान् रूसी जाति—जिसने स०स०स०र०की सभी जातियोंको साम्यवादके पथपर अग्रसर किया—के सगे भाई हैं। हम यहाँ क्यों हैं? क्योंकि लेनिन् और स्तालिनने सोवियत्-संघकी सभी जातियोंको मिलाकर एक परिवार बना दिया।

हम अधिवेशनके उद्घाटनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक मैंने देखा, कि तवारिश् स्तालिन् अपने बक्समें प्रवेश कर रहे हैं। मेरा हृदय उछलने लगा। और जो ही शब्द पहले-पहल मेरे दिमागमें आया, उसीको मैं चिल्ला उठी—'अभिनन्दन है तवारिश् स्तालिन्, तुम्हारा! मुक्त हुई स्त्रियोंकी तरफ़से।'

यह मेरे ही शब्द नहीं हैं, बल्कि सोवियत्-संघकी सभी जातियोंकी स्त्रियोंका यह जय-घोष है। जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंटका एक भवन)ने अध्यक्षका निर्वाचन किया। सबने एक रायसे न० म० श्वेर्निक्केलिए वोट दिया। वह अध्यक्षके आसनपर आसीन होते हैं; और उपाध्यक्ष चुननेकी सूचना देते हैं। मैं देखती हूँ, हमारे आजुरबाइजान्के प्रतिनिधियोंमेंसे एक तैमूर

याकूबोफ् उठते हैं। वह कहते हैं—"मैं तवारिश् चिमनाश् अस्लानोवाका नाम जातिक-सोवियत्के उपाध्यक्षकेलिये पेश करता हूँ।"

'मैं ! ऐसा सन्मान !'

याकूबोफ्ने मेरी—आजुरबाइजान्की एक अध्यापिकाकी—अतिशयोक्तिपूर्ण तारीफ़ करनी शुरू की। वह मेरे हर्ष और संकोच दोनोंका विषय थी। डिपुटियोंने मुझे चुना। हमारे बेलोरूसी साथी अ०म० लवित्स्की एक मतसे उपाध्यक्ष चुने गये। क्या मुझे अपने आनन्दके विषयमें कुछ कहनेकी आवश्यकता है? मैं एक ही बात कहूँगी। मैं अन्तिम साँस तक कमकरोंके सुखकेलिए, जन्म-भूमिकेलिए, पार्टीकेलिए, लेनिन्-स्तालिन्के ध्येयकेलिए लड़ूँगी।"

* * *

* * *

लेबोनोवा मास्कोकी अध्यापिका सोवियत् पार्लियामेंटकी एक सदस्याने अपने भावोंको इन शब्दोंमें प्रकट किया—

"स०स०स०र०के महासोवियत्के प्रथम अधिवेशनके उद्घाटनके दिन जब मैं क्रेमलिन्की दीवारोंकी ओर जा रही थी, तो एक असाधारण हर्षोल्लास मेरे हृदयमें उठ रहा था।

मैं अधिवेशनके उद्घाटनके समयसे क़रीब एक घण्टा पहले स्पास्की दरवाजोंपर पहुँची। तो भी सदस्य और विशेष तौरसे आमन्त्रित अतिथि दरवाजेमें प्रवेश कर रहे थे। दरवाजोंके सामनेका आँगन लोगोंसे भरा हुआ था। वह सदस्योंका अभिनन्दन कर रहे थे। हँसते हुए बच्चे दौड़कर मेरे पास पहुँचे—'हो चाची लेबोनोवा !'

स्पास्की दरवाजोंको छोड़कर मैं आगे बढ़ी। क्रेमलिन्की गम्भीर शांति, अधिवेशनकी प्रथम बैठककेलिए जल्दी करते सदस्योंके क़दमकी आवाजसे भंग हो रही थी। संगमरमरका बड़ा हाल खचाखच भरा हुआ था। मेरी आँखें अनन्त कतारोंमें चक्कर काट रही थीं। यहाँ हैं राज-काजमें, मेरे प्रिय साथी ताजिकों और तुर्कमानोंकी चमकीली पोशाक, काकेशस्की नाना जातियोंसे

आये सदस्योंके काले कश्मीरेके जामे, उक्राइन् और बेलोरूसियाके कलखोजी किसानोंकी भड़कीली पोशाक......... ।

सबकी आँखें घड़ीकी तरफ हैं । सुई ४के अंकके समीप और समीप खिसक रही है । इसी समय एक तूफ़ानी जन-रव टूट पड़ा और नाना भाषाओंमें अभिनन्दनके नारे होने लगे । तवारिश् स्तालिन् पार्टी और गवर्नमेंटके दूसरे नेताओंके साथ बक्सोंमें प्रविष्ट हुए । अपार आनन्दसे मेरा मन प्रफुल्लित हो गया । मैं तवारिश् स्तालिनकी ओर टकटकी लगाये देखती रही । मैंने दिलसे अनुभव किया, इस प्रतिभाशाली पुरुषके स्वभाव—महानता, और सादगीका ।

एक बार फिर मेरा हृदय भावावेशमें डूब गया, जब मैंने अकदमिक बाच् की आवाजको यन्त्रसे आते सुना । संघ-सोवियत्का वह वृद्धतम सदस्य अधिवेशनका उद्घाटन कर रहा था । हमारे देश—साम्यवादके देश—की यह विशेषता है, एक वृद्ध वैज्ञानिक राष्ट्रके महान् पार्लियामेंटके ऐतिहासिक अधिवेशनका उद्घाटन कर रहा है । और एक बार फिर बड़े जोरके साथ मेरे मनमें अपनी पितृभूमि—जहाँ पार्टी और जनता विज्ञानकी उन्नतिकेलिए सब कुछ कर रहे हैं, और जहाँ विज्ञान जनताकी सेवा कर रहा है—के प्रति अभिमानका भाव जाग उठा ।

७. सोवियत् महापार्लामेंटका युद्ध और चुनावके बाद प्रथम अधिवेशन

महासोवियत् पार्लियामेन्टका चुनाव वैसे तो चार साल बाद होना चाहिये, परन्तु युद्धके कारण उसे चार साल तक स्थगित रखना पड़ा । १० फरवरी १९४६को अठारह सालसे अधिक उमरके आधे वोटरोंमेंसे प्रायः सारोंने ही वोट दिया । सोवियत् पार्लियामेंटके दोनों भवनोंको मिलाकर १,३४९ सदस्य हैं जिसमें संघ सोवियत् भवनके ६८२ सदस्य, हर तीन लाख जनताके ऊपर एकके हिसाबसे चुने जाते हैं । क्योंकि सोवियत्-संघकी उन्नीस करोड़ तीस लाख

(१६४०) जनतामें दश करोड़से ऊपर रूसी हैं। इसलिये संघ-सोवियत् भवन-में आधेसे ऊपर रूसी सदस्य होते हैं। किन्तु जातीय सोवियत् भवनके ६५७ दिपुती (सदस्य) जातियोंकी समानताके आधारपर चुने जाते हैं। सोलहों संघ-प्रजातन्त्र बराबर संख्यामें पचीस-पचीस दिपुती चुनते हैं—अर्थात् दश करोड़से अधिक संख्यावाला रूसी प्रजातन्त्र भी उतने ही (२५) सदस्योंको चुनता है, जितने कि पन्द्रह लाखकी जनसंख्यावाला किर्गिजिया प्रजातन्त्र। स्वायत्त प्रजातन्त्रोंमेंसे हरेक ग्यारह सदस्य, स्वायत्त जिलोंमेंसे हरेक पाँच और जातिक क्षेत्रोंमें हरेक एक सदस्य चुनता है।

१५ मार्च, १६४६को क्रेमलिन महाप्रासादमें संघ महासोवियतका प्रथम अधिवेशन हुआ। नये-निर्वाचित सदस्योंमें कितने पुराने भी सदस्य थे, लेकिन उनमें कितने वही नहीं थे जो आठ साल पहले पहली दफे उस भवनमें दाखिल होते समय थे। तात्याना फ्योदोरोवा पहली बार चुने जानेपर मास्कोकी भूगर्भी रेलवेके निर्माणमें काम करनेवाली एक तरुण कमकरिन (मजदूरिन) थी, अब वह एक इंजीनियर है। अलेक्सान्द्र बुशुगिन् उस वक्त गोर्की मोटर-कार-खानेमें फेंकू हथौड़ोंका एक छोटा मिस्त्री था और अब वह सारे कारखानेका सुपरिन्टेन्डेन्ट है।

५ बजे सायंकाल अधिवेशन आरम्भ होनेवाला था। समयसे पहले ही दिपुती लोग भिन्न-भिन्न द्वारोंसे शालमें दाखिल हुए। बर्लिनविजेता मार्शल ग. जुकोफ़के आनेपर सदस्योंने करतल-ध्वनि की। वह आकर मार्शल ई० कोन्येफ़के पास बैठ गये। उनसे थोड़ी ही दूरपर युद्धमें बिजलीकी फुर्तीसे बढ़नेवाले मार्शल क. रकोसोव्स्की भी बैठे थे और उनके पास ही स्तालिनग्रादके फौलाद-कारखानेका मजदूर इवान अल्योशिकन् भी। उसी पाँतिमें सोवियत् साइन्स-अकदमीके प्रेसिडेन्ट सेर्गी वाविलोफ़ और तीन बार सोवियतके सर्वोच्च पदक "सोवियत् संघ-वीर" पानेवाले प्रसिद्ध विमान सैनिक कोजेदुब् भी विराज-मान थे। भवनमें जनरल, खनक, सामूहिक खेतिहर, राजदूत, नौसैनिक, स्कूल अध्यापक, डाक्टर, लेखक, सभी तरहके लोग जनता द्वारा निर्वाचित होकर आये

थे। पत्रकार और दर्शक भी अपनी-अपनी जगह बैठे थे। तीन हजार व्यक्तियों-के बैठने लायक इस शालमें तिल धरनेकी जगह न थी। दर्शकोंमें कितने ही विदेशी राजप्रतिनिधि थे और पत्रकारोंमें कितने ही विदेशी पत्रकार।

ठीक पाँच बजे शामको स्तालिन् अन्दर आये। उनके साथ मोलोतोफ्, कलीनिन्, वोरोशिलोफ्, कगानोविच्, उदानोव्, अन्द्रेयेफ्, ख्रुश्चेफ्, मालिन्कोफ् और श्वेर्निक भी थे। लोग उनके स्वागतमें खड़े हो गये और तालियाँ बजने लगीं, जो कई मिनट तक जारी रहीं। संघ सोवियत्के अतिवृद्ध सदस्य और प्रसिद्ध साइन्सवेत्ता अकदमिक अ. अ. बाइकोफ् (अब मृत) ने पार्लियामेंटका उद्घाटन किया। उनके छोटेसे भाषणके बाद भवनने एक राय-से लेनिनग्रादके प्रतिनिधि अ. अ. उदानोव् भवनके स्पीकर चुने गये और दो उप-स्पीकरोंकेलिये अकदमिक लिस्सेंको—जो बीजोंके बर्नलीकरण-गवेषणाकेलिये जगत्प्रसिद्ध हो चुके हैं—और कजाक प्रजातन्त्रके महामन्त्री नूरताश उन्दा-सिनोफके नाम स्वीकृत हुए। भवनके समक्ष इस अधिवेशनमें जो कार्यक्रम थे उनमें कुछ ये थे: महासोवियत्के प्रेसीदिउम (लघु-महासोवियत्) का निर्वाचन; मन्त्रिमण्डलका संगठन; महान्यायालयका निर्वाचन; चतुर्थ पंचवार्षिक योजना (१९४६-५०) की स्वीकृति।

उसी दिन क्रेमलिनके दीर्घशालमें जातिक महासोवियत्का अधिवेशन आठ बजे सायंकाल आरम्भ हुआ। लतविया प्रजातन्त्रके प्रेसिडेन्ट-प्रोफेसर औगस्त किर्चेन्स्ताईनने भवनका उद्घाटन किया। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण-में बतलाया कि सोवियत् पार्लियामेंट विश्वमें सबसे अधिक जनतान्त्रिक पार्लिया-मेंट है। वोटरोंमें से ९९.७% प्रतिशत यानी दश करोड़ दश लाख वोटरोंने वोट दिये। लतविया प्रजातन्त्रमें संघ भवनकेलिये ९९.४१९% प्रतिशत और जातिक-भवनकेलिये ९८.९३% प्रतिशत वोटरोंने वोट दिये।

(१) **मन्त्रियोंका निर्वाचन**—उद्घाटनके बाद व० व० कुज्नेत्सोफ् एक मतसे स्पीकर निर्वाचित हुए और आजुर्बाइजानकी स्कूल-अध्यापिका चिम्नाज अब्दुल अली-कुज अरलानोवा और बेलोरूसियाके उप-महामन्त्री प०

अ० लेविस्की उप-स्पीकार निर्वाचित हुए। कार्यक्रममें प्रधान-प्रधान बातें वही थीं, जो कि संघ महासोवियत्‌में स्वीकार हुई थीं।

दोनों भवनोंने १६ मार्चको सात बजे सायंकाल अपना संयुक्त अधिवेशन किया। अधिवेशन दीर्घशालमें स्पीकर ज़्दानोवूके सभापतित्वमें हुआ। महासोवियत्‌के प्रेसीदियमका निर्वाचन हुआ जिसके सभापति या सोवियत्-संघके राष्ट्रपति (१) निकोलाय म० श्वेर्निक् चुने गये। पन्द्रह उप-राष्ट्रपति रूसको छोड़ पन्द्रह संघ प्रजातन्त्रोंके निम्नोक्त व्यक्ति चुने गये :—

(२) म० स० ग्रेचुखा, उक्रइन
(३) न० य० नतालेविच, बेलोरूसिया
(४) अब्दुवली मोमिनोफ़, उज्बेकिस्तान
(५) अब्दी समेत् कज़ाक्‌उपयेफ़्, कजाकस्तान
(६) ग० फ० स्तुरुआ, गुर्जी (ज्योर्जिया)
(७) बशीर कसुमोफ़्, सबीराबाद, आज़ुर्बाइजान
(८) ज० ई० पलेच्किस, लिथुवानिया
(९) फ० ग० ब्रोव्को, मोल्दाविया
(१०) अ० म० किर्चेन्स्ताईन, लतविया
(११) तोराबाई कुलातोफ़्, किर्गिज़िया
(१२) मिनावर शाहदयेफ़, ताजिकिस्तान
(१३) म० प० पाप्यान, आर्मेनिया
(१४) अलावर्दी बेर्दियेफ़्, तुर्कमानिया
(१५) ज० ज० वारेस, एस्तोनिया
(१६) ओतो कुउस्विनेन, करेलो-फिन
(१७) अ० फ० गोकिन् प्रेसीदिउमूके मन्त्री चुने गये।

प्रेसीदिउमके सदस्य निम्न व्यक्ति चुने गये—

(१८) मीरजाफर बागिरोफ, बाकू, आज़ुर्‌बाइजान
(१९) स० म० बुद्योन्नी, उक्रइन

(२०) न० इ० गुसारेफ, मोलोतोफ़ जिला
(२१) ग० अ० दीनमुहम्दोफ़, तातार (प्रजातन्त्र)
(२२) म० इ० कलीनिन (मृत), लेनिनग्राद्
(२३) द० स० करोत्चेंको, उक्रइन
(२४) ओ० अ० लौरिस्तिन्, एस्तोनिया
(२५) ग० म० मलन्कोफ़्, मास्को
(२६) ग० व० निग्माजोनोफ़, बाश्किर (प्रजातन्त्र)
(२७) प० स० पपकोफ़, लेनिन्ग्राद
(२८) ग० म० पपोफ़्, मास्को
(२९) आदिल गिरेइ तख्तारोफ़, दागिस्तान (प्रजातन्त्र)
(३०) य० इ० उरालोवा, बेलोरूसिया
(३१) म० फ० शिकर्यातोफ़, तुला
(३२) उस्मान युसुपोफ, ताशकंद (उज्बेकिस्तान)

फिर दोनों भवनोंने सोवियत्-संघका-मन्त्रि-मण्डल चुना :

(१) य० व० स्तालिन्—महामन्त्री
(२) व० म० मोलोतोफ़—उप-महामन्त्री और विदेशमन्त्री
(३) ल० प० बेरिया—उप-महामन्त्री
(४) अ० अ० अन्द्रेयेफ़—उप-महामन्त्री
(५) अ० ई० मिकोयान—उप-महामन्त्री और विदेश व्यापार मन्त्री
(६) अ० न० कोसिगिन्—उप-महामन्त्री
(७) न० अ० वोज़्नेसेन्स्की—उप महामन्त्री और राज्य-योजना-कमीशनके प्रधान
(८) क० या० वोरोशीलोफ़—उप-महामन्त्री
(९) ल० म० कगानोविच्—उप-महामन्त्री और वास्तु सामग्री-उद्योग-मन्त्री
(१०) इ० व० कोवालेफ़—रेलवे मन्त्री

(११) क० य० सेर्गेइत्चुक—यातायात-मन्त्री
(१२) प० प० शिरशोफ़—व्यापारिक नौका मन्त्री
(१३) ज० अ० शशकोफ़—नदी-नौका मन्त्री
(१४) द० ग० ओनिका—पश्चिमी कोयला-क्षेत्रके मन्त्री
(१५) न० क० बाइबकोफ़—तेल मन्त्री (दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्र)
(१६) म० अ० येवसेयेंको—तेलमन्त्री (पूर्वी क्षेत्र)
(१७) द० ग० ज़िमेरिन्—पावर-स्टेशन मन्त्री
(१८) इ० ग० कबानोफ़—मन्त्री बिजली-सामग्री-उद्योग
(१९) इ० त० तेवोस्यान—मन्त्री लोहा-फौलाद-उद्योग
(२०) प० फ० लोमको—मन्त्री अलोह-धातु-उद्योग
(२१) म० ग० पेर्वुखिन—मन्त्री रसायन-उद्योग
(२२) स० व० ख़ुर्निचेफ़—मन्त्री विमान-उद्योग
(२३) अ० अ० गोरेग्ल्याद—मन्त्री जहाज-मशीन-उद्योग
(२४) व० न० बशिकोफ़—मन्त्री कृषि-मशीन-उद्योग
(२५) द० फ़० उस्तिनोफ़—मन्त्री अस्त्र-शस्त्र-उद्योग
(२६) न० स० कज़ाकोफ़—मन्त्री भारी मशीन-निर्माण-उद्योग
(२७) स० अ० अकोपोफ़—मन्त्री मोटर-उद्योग
(२८) पी० इ० पाशिन—मन्त्री मशीन सूक्ष्म-यन्त्र-उद्योग
(२९) अ० अ० ईश्कोफ़—मन्त्री कृषि-पशु
(३०) प० अ० युदिन—मन्त्री भारी उद्योग-निर्माण
(३१) स० ज० गिन्सबुर्ग—मन्त्री सेना-नौसेना-उद्योग-निर्माण
(३२) ग० म० ओर्लोफ—मन्त्री पल्प और कागज उद्योग
(३३) त० ब० मित्रोखिन—मन्त्री रबर-उद्योग
(३४) अ० इ० येफ़्रेमोफ़—मन्त्री मशीनटूल (मशीन बनानेवाली मशीन) उद्योग
(३५) व० अ० मालीशेफ़—मन्त्री यातायात मशीन-निर्माण उद्योग

(३६) अ० न० जदेमिद्को — ईंधन कारखाना-उद्योग
(३७) क० म० सोकोलोफ़—गृह-पथ मशीन-उद्योग
(३८) व० प० जोतोफ़—मन्त्री अन्न-उद्योग
(३९) अ० अ० इश्कोफ़—मन्त्री मछली-उद्योग
(४०) प० व० स्मिर्नोफ मन्त्री मांस दूध-उद्योग
(४१) स० ग० लूकिन्—मन्त्री हलका उद्योग
(४२) इ० क० सेदिन्—मन्त्री कपड़ा मिल-उद्योग
(४३) म० इ० सालितकोफ़—मन्त्री कोष-उद्योग
(४४) इ० अ० बेनेदिक्तोफ़—मन्त्री कृषि
(४५) अ० ग० ज्वेरेफ़—मन्त्री कोष विभाग
(४६) अ० व० ल्युबिमोफ़—व्यापार-मन्त्री
(४७) स० न० क्रुग्लोफ़—गृह-मन्त्री
(४८) व० न० मेकूलोफ़—राज्य-रक्षा मन्त्री
(४९) न० म० रिच्कोफ—न्याय-मन्त्री
(५०) ग० अ० मीतेरेफ—स्वास्थ्य-मन्त्री
(५१) ल० ज० मेखलिस्—राज्य नियन्त्रण मन्त्री
(५२) न० अ० स्कोर्त्सोफ़—औद्योगिक फसल मन्त्री
(५३) इ० ग० बोल्शाकोफ—प्रधान सिनेमासमिति
(५४) म० ब० खपच्येंकोफ़—प्रधान, कलासमिति
(५५) स० ब० कफ्तानोफ़—उच्चशिक्षा मन्त्री
(५६) य० इ० गोलेफ़—प्रधान, राज्य-बैंक

× × ×

(२) एक भाषण—देपुती पीतर शरिया (गुर्जी)ने जातिक भवनमें बोलते हुए कहा—"संघ सोवियत्‌केलिये ६५७ पार्लियामेंट सदस्य चुने गये, जिसके वोटरों की संख्या दस करोड़ सत्तरह लाख सत्तरह हजार छ सौ

छियासी थी, जिसमें १०,१४,५०,६३६ने वोट दिया। इसमें १०,०६,०३,५६७ वोट यानी वोटोंके ६६'१६ सैकड़ा वोट पार्टी और अ-पार्टी उमीदवारोंको मिले। जातिक सोवियतके सदस्योंमें ४६ जातियोंके प्रतिनिधि चुने गये हैं, जिनमें निम्न जातियाँ शामिल हैं—रूसी, उक्रइनी, बेलोरूसी, आजुर्बाइजानी, गुर्जी, आर्मेनियन, तुर्कमान, उजबेक, ताजिक, कजाक किर्गिज, करेलीय, मोलदावीय, लिथुवानीय, लेत, एस्तोनीय, अबखार्जीय ओसेतीय, तातार, कोमी, बुर्यत-मंगोल, याकूत, चुवाश, उदमूर्त, बाश्किर, यहूदी, मोर्दोनीय, फिन्, कराकल्पक, मारी, अदिगेई, तूवीनीय, ओइरोत्, दागिस्तानी, कुमिक, अवार, खकास, वेप्स और दूसरी।

जातिक सोवियतके ६५७ मेंबरोंमें ४६६ यानी ७५'५% मर्द, १६१ यानी २४'५% स्त्रियाँ हैं..." जातिक भवनके मेंबरोंमें २२४ यानी ३४'१% कमकर, १६८ या ३०'१% किसान, २३५ या ३५'८% कर्मचारी और सोवियत शिक्षितोंके प्रतिनिधि,...कमकर सदस्योंमें १७८ ऐसे हैं, जो सोवियत् अर्थनीति, सेना, सामाजिक कार्यमें काम करनेवाले हैं और किसान मेम्बरोंमें भी ७५ वहीं काम करते हैं। सदस्योंमें ४४ सामूहिक खेतीके प्रधान, २० खेतिहर ब्रिगाद या टोलीके नेता हैं। भवनमें बहुतसे प्रसिद्ध इञ्जीनियर, डाक्टर और प्रोफेसर हैं, २४ "सोवियत्-संघ' वीर और १३ "समाजवादी श्रमवीर" और १६ स्तालिन-पुरस्कार प्राप्त हैं, ४४७ या ६८% सरकारी तमगोंसे विभूषित हैं। शिक्षाके विचारसे देखने पर १६५ यानी २६%७ सदस्य उच्च-शिक्षाप्राप्त, ३२ या ४%६ अपूर्ण उच्च शिक्षाप्राप्त और १४० यानी २१%३ माध्यमिक शिक्षा-प्राप्त हैं।

आयुकी दृष्टिसे देखने पर ३४ सदस्य २३ और २५के बीचके हैं, ५५ सदस्य २६ और ३०के बीचकी आयुके हैं, ३५ सदस्य ३१ और ३५के बीचके हैं, १४५ सदस्य ३६ और ४०के बीचके हैं, १७० सदस्य ४१ और ४५के बीचके हैं, ७५ सदस्य ४६ और ५०के बीचके हैं, ३७ सदस्य ५१ और ५५के

बीचके हैं, २० सदस्य ५६ और ६०के बीचके हैं और २६ सदस्य ६० सालके ऊपरके हैं।

सदस्योंमें से ५०६ कम्युनिस्ट पार्टीके मेंबर या उम्मीदवार हैं और १४८ अ-पार्टी सदस्य हैं।

(३) संघ-सोवियत् भवन—येल्याबिन्स्कके देपुती न० स० पतोलिचेकने अपने भाषणमें संघ-सोवियत् भवनके सदस्योंके बारेमें कई बातें बतलाईं। संघ-सोवियत्के ६८२ मेंबरोंमें २५७ यानी ४२% कमकर हैं, जिनमेंसे २३१ पार्टी, सोवियत्, अर्थनीति, सेना या सामाजिक कार्यके क्षेत्रमें काम करते हैं; इसके सदस्योंमें १५१ यानी २२% किसान हैं, जिनमें भी ५७ पार्टी आदिके काममें लगे हैं। बाकी सब कृषिके क्षेत्रमें काम करते हैं। ४४ तो उनमें कल्खोजोंके प्रधान हैं। सारे सदस्योंमें ५७६ पार्टी मेंबर या उम्मीदवार हैं और १०६ अ-पार्टी मेंबर, सदस्योंमें १६६ पार्टी और सार्वजनिक संगठनोंके कार्यकर्ता, १८८ सोवियत्के कर्मचारी, ४१ नाना आर्थिक-क्षेत्रोंके कर्मी, ५७ साइन्स और कला-क्षेत्रके कर्मी हैं। संघ सोवियत्के मेंबरोंमें बहुत काफी संख्या सोवियत्के प्रमुख-साइन्स वेत्ताओंकी है, इसमें बहुतसे लाल-सेनाके सैनिक, कमाण्डर, जनरल और मार्शल हैं। सदस्योंमें ५३५ या ७८% सरकारके तमगों और सनदोंको पाये हुए हैं। ४८ सदस्य "सोवियत् संघवीर" हैं, जिनमें ११ने दो-दो तीन-तीन बार इस वीरताके सर्वोच्च पुरस्कारको पाया। ३६ सदस्य "सामाजिक श्रमवीर" और १६ स्तालिन-पुरस्कार प्राप्त हैं। सदस्योंमें २५० उच्च-शिक्षा-प्राप्त, ३६ अपूर्ण उच्च-शिक्षा प्राप्त और १६० माध्यमिक शिक्षा प्राप्त हैं।

१२ सदस्य २३ और २५ वर्षके बीचके हैं, ६७ सदस्य २६ और ३५के बीचके, १७६ सदस्य ३६ और ४०के बीचके, १६४ सदस्य ४१ और ४५के बीचके, ११४ सदस्य ४६ और ५०के बीचके और ८६ सदस्य ५०से ऊपरके हैं। संघ-सोवियत् भवनकेलिये ६६'१८% या १०,०६,२१,२२५ वोटरोंने पार्टी, अ-पार्टी उम्मीदवारोंको वोट दिया।

अध्याय १०

(धर्म और वैयक्तिक सम्पत्ति)

१. सोवियत्‌में धर्म

सोवियत्‌में क्रान्ति-कालसे ही सरकारकी ओरसे धर्मके प्रति हस्तक्षेप नहीं किया गया। वहाँ चार धर्म प्रचलित हैं—(१) ईसाई-धर्म, जिसे सारी यूरोपीय-जातियाँ तथा गुर्जी और आर्मेनियाके प्रजातन्त्रोंमें माना जाता है; (२) इस्लाम, जिसे अजुर्बाइजान और मध्य-एसियाके प्रजातन्त्रों (कजाकस्तान, किर्गिजिस्तान, ताजिकिस्तान, उजबेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान), तथा वश्किर, तातार प्रजातन्त्रोंमें माना जाता है, (३) बौद्ध धर्म जिसके माननेवाले बइकालके पास बुर्यत-मंगोलिया प्रजातन्त्रमें रहते हैं; और (४) यहूदी धर्म जिसके माननेवाले सोवियत्‌के सभी भागोंमें मिलते हैं, साथ ही सुदूर पूर्व सिबेरियाके बीरोबिजान इलाकेमें यहूदी जातीय क्षेत्र भी कायम हुआ है।

क्रान्तिके आरम्भमें जमींदारों, पूँजीपतियों और जारके स्वार्थके खिलाफ संघर्ष चला। उसमें पादरियों, मुल्लों और महन्तोंमें जो सम्पत्तिशाली थे और जिनके पास भी जमींदारियाँ और बड़ी-बड़ी संपत्ति थी, उन्होंने क्रांति-विरोधियोंका साथ दिया। उनमेंसे कितने ही देशसे निकल भागे। इसीको लेकर बाहरके देशोंमें जोरका प्रचार हुआ, कि सोवियत्‌में धर्मोंका उच्छेद किया जा रहा है। अधिकतर छोटे धार्मिक अगुआ उस संघर्षमें भी क्रांतिके साथ रहे। यह ठीक है कि कुछ बड़े-बड़े गिर्जोंको म्युजियमोंके रूपमें परिणत कर दिया गया, किन्तु उनकी कलाकी कृतियोंकी रक्षाकेलिये उस समय यह आवश्यक था, नहीं तो कितनी ही अनमोल कलापूर्ण मूर्तियाँ जो अब वहाँ सुरक्षित

हैं, नष्ट हो गई होतीं। उस वक्तकी कार्रवाइयोंको देखकर पहले यह भी आव-श्यक समझा गया था, कि धर्म-प्रचारकोंको नागरिकताका अधिकार यानी वोटका अधिकार न दिया जाय, किन्तु यह भेद-भाव १९३६में ही मिट चुका और अब कोई भी धार्मिक नेता पार्लियामेंट या दूसरी निर्वाचन-संस्थाओं-में वोट दे सकता है, उम्मीदवार खड़ा हो सकता है।

वहाँ धर्मोंके अपने अच्छे-अच्छे संगठन हैं। मध्य-एसियाके मुसल-मानोंके सर्वोपरि नेता शेखुल् इस्लाम और उनकी समिति धार्मिक शिक्षा और धर्म-प्रचारका काम करती है। पहले जो इस्लामके शिया-सुन्नी और दूसरे संप्रदाय आपसमें लड़ा करते थे, विद्वेष फैलाते थे, उसका अब कहीं नाम भी नहीं है। धार्मिक पुस्तकें और पत्रिकायें छापनेका उन्हें पूरा अधिकार है। इसकेलिये सामग्री सरकार से बे-रोकटोक मिल जाती है। हाँ, इतना जरूर है, कि क्रांतिके बादसे सरकारने किसी धर्मको सरकारी खजानेसे पैसा देना बन्द कर दिया है, किन्तु श्रद्धालु भक्त दान-पेटीमें इतना पैसा दे देते हैं, कि पैसेकी कमी नहीं रह जाती।

जो बात यहाँ इस्लाम-धर्मके बारेमें कही गई, वही दूसरे धर्मोंपर भी चरितार्थ होती है। अर्मेनियाका ईसाई चर्च सोवियत्का सबसे पुराना धार्मिक चर्च है, जिसकी स्थापना ईसाकी चौथी-पाँचवीं सदीमें हुई थी। अर्मेनियन चर्चका प्रधान (कथोलिकोस्) सदासे अर्मेनियन जातिमें बहुत सम्मानित रहा है, और हमेशा योग्य व्यक्ति ही इस पदकेलिये जनता द्वारा निर्वाचित होता रहा। जारशाहीके जमानेमें कथोलिकोसके प्रभावको खर्व करनेकेलिये सरकारने वहाँके लोगोंसे यह शर्त मनवाई, कि लोग दो कथोलिकोसको चुनें और आखिरी निर्णय जारके हाथमें रहे। १९४६में नये कथोलिकोसके चुननेका अवसर आया। चुनावमें सम्मति देनेकेलिये अर्मेनिया-प्रजातन्त्रके ही नहीं बल्कि इंगलैंड, अमेरिका और दूसरे-दूसरे देशोंके भी अरमेनियन प्रतिनिधि पहुँचे थे और उन्होंने नये कथोलिकोसका निर्वाचन किया। यह प्रतिनिधि नवीन अर्मेनियाको देखकर बहुत प्रभावित हुए।

यहाँ हम एक अंग्रेज पादरी रेवरेंड व० अ० वोएलर-वाटरहौसके एक लेखसे कुछ उद्धरण देते हैं जिससे हमारी बात और स्पष्ट हो जायेगी। श्री वाटरहौस अगस्त १९४६ में सोवियत् गये थे।

"हमने छ सप्ताह सोवियत्-संघकी यात्रा की और जाँच पड़तालकेलिये हमें पूरी स्वतन्त्रता थी। हमने आठ हजार मीलकी यात्रा की, जिसमें रूस, लत्विया, अर्मेनिया, गुर्जी, सिबेरिया, दोनवास, और उक्रइनके प्रदेश सम्मिलित थे। सभी जगह हमें पूरी सुविधा दी गई थी, कि हम धर्मके नेताओं, धर्मविभागके सरकारी प्रतिनिधियों और साधारण श्रद्धालु लोगोंसे मिल सकें। हमने सरकारी बयानोंकी बहुत भारी परिमाणमें लोगोंकी बातोंसे मिलानकर... ठीक पाया। यह साफ था, कि सोवियत्के सभी भागोंमें सभी धर्मोंके बारेमें एक ही तरहका भाव है।......

"रूसमें जो इसाई-संप्रदाय सबसे अधिक प्रचलित है, वह ग्रीक-चर्चसे सम्बन्ध रखता है। इस धर्मको महारावल व्लादिमिरने ९८८ ई० में खासकर उसके पूजा-पाठ और संगीतके सौंदर्यसे आकृष्ट होकर स्वीकार किया था। जब व्लादिमिरने बपतिस्मा (धर्माभिषेक) लिया, तो उसके साथ ही उसकी सारी प्रजा और कमियोंने भी राजाका धर्म स्वीकार किया और इस तरह रूसी चर्चकी स्थापना हुई। यह जनतासे निकला जन-आन्दोलन नहीं था, बल्कि रावलके अनुगामी जन-समूहका स्वीकार था। रावल अपनी प्रजाके जन्म-मरणका अधिकार रखता था। रावलने आज्ञा दी—'चाहे धनी हो या गरीब जो कोई कल नदीपर बप्तिस्माकेलिये नहीं आयेगा, वह मेरे पास सम्मान का अधिकारी नहीं।' रूसी लोग राजाज्ञासे ईसाई बने।......रूसी चर्चका काफी श्रेय है, खासकर मंगोल-आक्रमणके समय, (जो कि तेरहवीं सदीके मध्यसे १५०० ईस्वी तक रहा)। इस वक्त चर्चने रूसी कबीलोंको एकताबद्ध करनेमें काफी काम किया। इस सङ्कट और सर्वनाशके कालमें निःसन्देह चर्चने कितने ही अच्छे और महान् व्यक्ति पैदा किये।......

"१७२१में पीतर महान्ने चर्चको पूर्णता अपने अधीन किया और स्वयं

उसका सबसे बड़ा मुखिया बन गया। पत्रियार्क (धर्म-महानायक) के पदको उसने उठा दिया, बिशप और पादरियोंकी सभाके सभी जनतान्त्रिक अधिकारों-को छीन लिया और रूसी चर्चका शासन बड़े मुखिया और राजा द्वारा नियुक्त पवित्र-सभा द्वारा होने लगा। पवित्र-सभाको ज़ार नियुक्त करता और वे उसीके प्रति जवाबदेह होते। इस समयसे चर्च ज़ारशाही निरंकुशताका एजेंट और समर्थक बन गया।

"ज़ार स्वयं भगवानकी तरह सम्मानित होने लगा और लोगोंमें कहावत प्रचलित हो गई 'जो विधाताका विरोध करे उसे क्षमा मिल सकती है, लेकिन ज़ारके विरोधीको अपने शिरसे हाथ धोना पड़ेगा।'.........

"उस समय भी चर्च बहुत धनी था। पीतर महान्ने भी उसके काफी धनको अपने काममें लगाया, किंतु चर्चको उससे बहुत क्षति नहीं हुई। डा० केडने अपने 'पूर्वीय ईसाई जगत्के चर्च' पुस्तकमें लिखा है—'मुख्य काम यह था कि कैसे चर्चको रूसी भूमिका अकेला स्वामी बननेसे रोका जाय।' कमिया-युगमें सारी जनताका दशांश चर्चके कमिया थे।...वर्तमान शताब्दीके आरंभमें उसके पास मकान और व्यापारके रूपमें अपार संपत्ति थी। उसकी वार्षिक आमदनी ५ करोड़ पौंड थी और बैंकोंमें १ खरब पौंड जमा थे। क्रांतिसे पहले रूसी चर्चके पास इतनी सम्पत्ति जमा थी,...पादरियोंको हुक्म था कि अपराध क्षमापन विधिको खुफिया पुलिसके कामकेलिये इस्तेमाल करें। फादर ग्रेगोरी पेत्रोफ़ने खुल्लम-खुल्ला विरोध किया और इसके लिये उसे दंडित होना पड़ा। उसने कहा था—'आज १६ शताब्दियोंके धर्म प्रचारके बाद हमारे पास बेप-[illegible]क ईसाई हैं किन्तु ईसाई-धर्म नहीं। शासन-नियमानुकूल पादरियोंने रूसी चर्चका गला घोंट दिया। बाइबिलको निगडबद्ध कर दिया और चर्चको ज़ारकी सरकारके हाथ बेंच दिया गया। अधिकारियोंका कोई अपराध, कोई नृशंसता ऐसी नहीं है, जिसे चर्चके शासक चर्चकी चादरसे ढाँक न दें। चर्चके भीतर सत्यकी सृजन-शक्ति मुर्झा गई, सूख गई, निस्तेज बन गई...।' पेत्रोफ़को इसके लिये सिबेरियामें निर्वासित किया गया। (पादरियोंकी तादाद

बहुत बढ़ गई) और जारकी सरकार मजबूर हुई कि पैंसठ लाख रूबल उनके खर्चेकेलिये दे ।...चर्चका संगठन बहुत गंदा और सड़ा हुआ था ।...एक बात साफ है, कि जारके राज्यमें धार्मिक स्वतंत्रता नामक कोई चीज न थी । एक ही चर्चको रहनेकी इजाजत थी और वह भी दासतामें था ।

"अन्तिम जार निकोलाय द्वितीयके समय सबसे अधिक प्रभाव बदनाम रस्पुतिनका था । सरकारी चर्च भी उतना ही गंदा था जैसी कि सरकार । किन्तु कितने ही विशप और पादरी संघर्षरत दरिद्रता-पीड़ित जनताके साथ खुली सहानुभूति दिखलाते थे, जिसके लिये ११ विशपोंको सिबेरियामें निर्वासित कर दिया गया । १९०५में संत-पीतरबुर्गमें कितने ही पादरियोंने सुक्रिटोली नामक संस्था संगठित की । क्रांति (१९०५)के बाद टोलीमेंसे जो लोग बच रहे थे, उन्होंने चर्च-सुधार आन्दोलनमें भारी भाग लिया । उनके आन्दोलनके फलस्वरूप जारको मजबूर होकर चर्च-कौंसिलको बुलाना पड़ा, जो कि पीतर महानके समयसे कभी नहीं बैठी थी । तो भी लगातार इसमें ढिलाई की गई, और १९१७में जारके पतनके बाद करेन्स्कीकी सरकारके वक्त कौंसिल बैठी । लेकिन क्रांति और आगे बढ़ती गई । कौंसिल यह देखकर घबड़ा उठी, कि किसान जमीन पर अधिकार कर रहे हैं । जमीनके लौटानेकी माँग करते हुए उसने, यह भी कहा, कि क्रांतिकारी मानव-जातिके दानव हैं । सरकारने इसके जवाबमें विचार-स्वतंत्रता और धार्मिक सभाओंके सम्बन्धकी अपनी प्रसिद्ध घोषणा २३ जनवरी १९१८को निकाली । उसने चर्चको राज्य और स्कूलोंसे पृथक् कर दिया । उसने घोषित किया कि चर्चकी सम्पत्ति जनताकी सम्पत्ति है, किन्तु पूजाके लिये बनाई गई इमारतें धार्मिक संस्थाओंको निःशुल्क दी गई हैं । १८ वर्षसे कम उमरके बच्चोंको घरसे बाहर धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा सकती । पादरी और सम्पत्तिवाले वोटके अधिकारसे वंचित किये गये; क्योंकि वह पुरानी व्यवस्थासे बहुत बँधे हुए थे । चर्चके सारे व्यापार, घरके रूपमें सम्पत्ति और खेत जब्त कर लिये गये । चर्चको सरकारी सहायता भी मिलनी बन्द हो गई ।

"संगठित चर्चने इस घोषणाका विरोध किया और पुराने जारशाही जेनरलों द्वारा सञ्चालित आक्रमणकारी श्वेत-सेनाका साथ दिया। बर्षों गृह-युद्ध और विदेशी शक्तियोंका सशस्त्र हस्तक्षेप चलता रहा। श्वेत-सेनाकी सहायता करते सैकड़ों पादरी मारे गये या क्रांति-विरोधी कामके लिये शूट किये गये। १९२१के अकालमें—जब कि लाखों आदमी भूखों मर गये—फिर चर्चने विरोध किया। सोवियत् सरकारने चर्चसे उसके खजानेको माँगा। यद्यपि खजाना राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दिया गया था, किन्तु अब भी वह चर्चके हाथमें छोड़ दिया गया था। पूजाकेलिये आवश्यक चीजोंको खास तौरसे छोड़ दिया गया, किन्तु चर्चका सोना और जवाहर तुरन्त जरूरी था, जिसमें कि भूखों मरते लोगोंकेलिये अन्न खरीदा जा सके। चर्चने देनेसे इनकार किया और सोवियत् सरकारकी माँगका पूरा विरोध करनेकी आज्ञा निकाली। इसमें सरकारके विरुद्ध अनगिनत बलवे हुए। एक बार फिर खून बहाया गया। भूखी जनता उनको कभी क्षमा नहीं कर सकती, जो उसके और अन्नके बीचमें रोड़ा अटकाना चाहें। इस समय चर्चको सबसे अधिक हानि हुई। पत्रियार्क गिरफ्तार कर लिया गया और देश-द्रोहके अपराधमें कितने ही पादरी और कुछ बिशप भी शूट किये गये। लेकिन कैदसे छूटनेपर पत्रियार्कने चर्चके अधिकारियोंको सोवियत्-सरकारसे सहयोग करनेके लिये कहा। अब प्रगतिशील बिशप भी कितने ही नियुक्त किये गये।

"१९२३में क्रास्नित्स्की और वेदेन्स्कीके नेतृत्वमें इन बिशपोंने चर्च-कौंसिल बुलाई, जिसने घोषित किया कि पूँजीवाद सबसे भयङ्कर पाप है, और हुक्म दिया कि इससे लड़ना सभी ईसाइयोंका पवित्र धर्म है। इस कौंसिलके बाद चर्चमें फूट पड़ी, किन्तु १९२५में नये पत्रियार्कके चुनावके वक्त उक्त निश्चयको स्वीकार कर लिया गया। इस तरह अर्थोदक्स (रूसी) चर्च और क्रांतिके बीचका संघर्ष समाप्त हुआ। पुराने और सुधारवादी दोनों चर्चोंके बिशपोंका १९३०में लेम्बेथ् कान्फ्रेंसमें आनेका निमन्त्रण दिया गया। सुधारवादी चर्चका मेत्रोपोलितन (धर्मनायक) वेदेन्स्की बना, जो अब भी

जीवित है। मास्कोमें हमने उससे मिलना चाहा, किन्तु वह बहुत बीमार पड़कर अस्पतालमें था।......रूसी चर्च आज एक है, और चर्चका नियमोप-नियम सर्व-स्वीकृत है। इसका मतलब है, कि 'सुधारवादी चर्च आन्दोलन' अब निगला जा चुका है।......हमने देखा कि अर्थोदक्स चर्च अपने चर्चकी विशेषता रखनेवाले सभी पूजा-प्रकारों और धार्मिक रीति-रवाजोंका पालन करता है। इसके बहुत जन-प्रिय होनेमें कोई सन्देह नहीं है, किन्तु वह कभी जन-तांत्रिक हो सकेगा, यह चिन्त्य है। जनतांत्रिक सुधारवादी चर्च, जिसने एक समय इतना काम किया, अब स्वयं बन्द हो गया है।

"मैंने कुछ समझदार रूसियोंसे पूछा, क्यों लोग अब फिर धर्मके अर्थो-दक्स स्वरूपकी तरफ लौट रहे हैं।......मुझे उन्होंने बतलाया,-रूसी धार्मिक मस्तिष्कको एक विशाल और अविच्छिन्न दीर्घ-इतिहास रखने वाला चर्च ही-सुधारवादी चर्चसे अधिक प्रिय है।

"यही भाव इंग्लैंड में रोमन और अंग्लिकन चर्चके अनुगामियोंका स्वतन्त्र चर्चोंके बारेमें देखा जाता है, किन्तु यह बात रूस जैसे देशकेलिये समझना मुश्किल है, जहाँके लोग विश्वके नवीनतम सरकारकेलिये इतना अधिक उत्साह प्रगट करते हैं। धर्मसे तटस्थ नेताओंने मुझसे अक्सर सीधी-सीधी भाषामें कहा है—"हम किसान हैं। हमारा दृष्टिकोण किसानों का है। धार्मिक रूसी उन्हीं चीजोंको पूज्य मानते हैं, जो प्राचीन, एकताबद्ध और सबल है।"...... अर्थोदक्स गिर्जे सदा लोगोंसे भरे रहते हैं, और उन लोगोंसे जो तीन चार घण्टे तक पूजामें बिताते हैं।

"अब मैं कुछ स्वतन्त्र चर्चों या रूसमें पुकारे जानेवाले नाम-सम्प्रदायोंके बारेमें कहना चाहता हूँ। १९१८में जिन घोषणाओंका अर्थोदक्स चर्चने घोर विरोध किया था, उनका स्वतन्त्र चर्चों ने स्वागत किया, क्योंकि अब तक जार उनका दमन करते आये थे। इन चर्चोंमेंसे अधिकांश पुराण-श्रद्धालुओंमें-से आये थे, जिन्होंने कि ग्रीक पूजा-प्रकारसे हटनेके कारण अर्थोदक्स चर्चोंको छोड़ दिया था, उनमें कुछ बपटिस्ट भी थे। जारशाही शासनमें उनपर

अत्याचार किया जाता, और मध्ययुग जैसी यातनायें दी जातीं। देश निकाला होता, जेलोंमें सड़ाये जाते, कज़ाकोंके कोड़े खाने पड़ते।......उन्हें अपने चर्चके अन्दर न विवाह-सम्पन्न करनेका अधिकार था न सभा करनेका। यही दुर्दशा आर्मेनियन चर्च और रोमन कैथलिकोंकी भी थी। अन्तिम ज़ार निकोलाय द्वितीयके शासनमें आर्मेनियन चर्चकी सारी सम्पत्ति जप्त कर ली गई। पीतर महानसे लेकर अलेक्सान्द्र प्रथम तक रूसमें रोमन केथोलिक चर्चके साथ भी ऐसा ही होता रहा।......मूलतः रोमन-कैथलिक अधिकतर पोल और लिथुवानियन वंशज थे। १९१७की सोवियत् शासन घोषणाने सभी उत्पीड़ित धार्मिक समुदायोंको स्वतन्त्रता प्रदान की और इस शासनमें वह खूब फले फूले......।

"......सरकारने कभी भी धर्मोपदेश में प्रतिबन्ध नहीं डाला। लेनिन्-ग्राद्के आर्कबिशपने हमें अपने (प्रवचनों) का हस्तलेख दिखलाया, जिसे इस सारी अवधिमें वह देते रहे और अब वे प्रकाशित होते जा रहे हैं। मास्कोके बपतिस्त संघके प्रधानने हँस दिया, जब हमने उनसे पूछा—सोवियत् संघमें कबसे धर्मोपदेश करने की अनुमति मिली। उन्होंने कहा—बपतिस्त गिर्जेकी वेदी सर्वदा मुक्त और अ-प्रतिबद्ध रही। हमने बाइबल, स्तोत्र, गीत, पूजापद्धति-की उन पुस्तकों को उलटकर देखा, जो उस समय काममें लाई जाती थीं। वह सभी लेनिन्ग्राद्में १९२६ और २७में सरकारी प्रिन्टिंग प्रेसमें छपी थीं। हमें चर्चकी बहुत सी गुटकायें, कलन्डर और इतिहास पुस्तकें दिखलाई गई, वह सभी सोवियत् युनियनकी छपी थीं। चर्चके समाचार-पत्र और हर तरहके प्रचार-पत्रक भी छपते रहे हैं......।

"सोवियत् संघमें धर्म और सरकारके बीचके मौजूदा सम्बन्धके विषयमें हमने पूछताछ की। मालूम हुआ कि प्रत्येक जिलेसे धर्मविभाग कौन्सिलोंकेलिये सोवियत् मेम्बरोंमेंसे एक प्रतिनिधि नियुक्त किया जाता है, जिसका कार्यालय सोवियत्-भवनमें ही रहता है। केन्द्रमें धर्मविभागमें कौन्सिलोंके दो अध्यक्ष होते

हैं—एक आर्थोदक्स चर्चकेलिये और दूसरा बाकी सभी धर्मोंकेलिये। उन दोनों अध्यक्षोंका अपना अपना राजकीय विभाग है।

"हमने लेनिनग्रादके आर्थोदक्सचर्चके विभागसे अध्यक्षसे बात की। सोवियत्‌में इस तरहकी हमारी यह पहली बात चीत थी। जिस तरहके प्रश्न हम पूछना चाहते थे, उसे देखते हमें भरोसा नहीं था, कि उनका स्वागत किया जायेगा। तो भी यह ख्याल करके हमारा उत्साह बढ़ा, कि दो घराटा पहले जिला-सोवियत्‌के-सभापतिने अपने साथियोंके साथ बैठकरके अवकाशके समय हमसे लम्बी बात चीत की...और हमें चाय पीने बुलाया, जो वस्तुतः चाय पार्टी थी—ऐसी चाय-पार्टी जो गिल्ड हाल (लन्दन)में भी देखनेको नहीं मिलेगी। जिला धर्म विभागके अध्यक्ष भी वहाँ मौजूद थे...।

"हमारा पहला सवाल था, उनके और जिलाके गिर्जोंके सम्बन्धके विषयमें। उन्होंने बतलाया था, कि हमारा विभाग चर्चके भीतरी मामलेमें कभी दखल नहीं देता। हमने यही बात सोवियत् संघमें सब जगह देखी। फिर हमारा दूसरा प्रश्न था—'क्या पादरीकी नियुक्तिमें आपका कोई हाथ है।' जवाब मिला 'बिल्कुल नहीं, पादरीको नियुक्त करने या उसे हटाने वाले आर्क-बिशप या धर्म-सभा (सीनेट) है, और नियुक्तिके उपरान्त हमारे विभागमें उनका नाम, स्थान आदि लिख लिया जाता है।' हमारा अगला प्रश्न था—क्या सरकार नियुक्ति, विश्वास और पूजा-पाठमें हस्तक्षेपका अधिकार रखती है? उत्तर फिर दृढ़ता-पूर्वक मिला—'नहीं।' हमने फिर पूछा—'अच्छा, तो आपका क्या काम है?' तब श्री कुरनारिफने खुलासा करके कहना शुरू किया—'प्रतिदिन हमारे पास बहुतसे मिलने वाले आते हैं। भक्त और पादरी दोनों ही। सब तरहकी आवश्यकतायें और कठिनाइयाँ हमारे समक्ष पेशकी जाती हैं। अध्यक्षका काम है, उनकी सहायता करना—...पादड़ीके रहनेका घर ठीक करना, घरमें गैस, पानी और दूसरी आवश्यक चीजें लगवाना। लेनिनग्राद युद्धमें बहुत बुरी तरह ध्वस्त हुआ था। उनका काम है टेलीफोन, कागज़ और चर्चकी दूसरी सामग्रीके लिये परमिट प्राप्त करना। गिर्जोंकी मरम्मत और

आवश्यकतानुसार निर्माण विस्तार आदिकेलिये। मकान बनाने की सामग्री दिलानेका प्रयत्न; यहाँ तक कि पादरी यदि कोई यात्रा करना चाहता हो, तो उसकेलिये रेलवे टिकट और बीजा जरा पहले दिला देनेकी कोशिश करना। अधिक महत्त्वपूर्ण बातोंमें अध्यक्ष चर्च और सरकारके मध्य विचवई करता है। महाशय कुश्नारेफ़ने यह भी बतलाया, कि चर्चने फासिस्टोंके विरुद्ध मातृमुक्ति युद्धमें अतिप्रचुर परिमाणमें पैसा जमा करके दिया—युद्ध-क्षेत्र और घरमें भी सैनिकों तथा कमकरोंमें दृढ़ता पैदा की।

"चर्च फासिस्तवादको क्रिश्चियन धर्म-विरोधी समझ उससे लोहा लेनेमें किसीसे पीछे न रहा। हमको उन्होंने यह भी बतलाया कि लेनिन्ग्राद नौ सौ दिनों तक घिरा और बम्बों द्वारा ध्वस्त होता रहा। हजारों आदमी घायल या भूखों मरे। इन दुर्दिनोंमें पादरियोंने जनताके मनोबलको कायम ही नहीं रखा, बल्कि उसे बढ़ाया। कहा जाता है रूसमें युद्धके दिनोंमें चर्चने जो सेवा की, उसके कारण धर्म-विभाग स्थापित किया गया और राज्य (सोवियत्) और संयुक्त-चर्चके बीच नये सम्पर्क स्थापित हुए, जिससे नास्तिक और ईसाई दोनों ही समान रूपसे प्रसन्न हैं। सभीके समक्ष एक लक्ष्य है, सारे सोवियत्-संघमें जनताको सुखी और समृद्ध बनाना......।

"...लेनिनग्रादमें नौ अर्थोदक्स गिर्जे काम कर रहे हैं, और कुछ और खुलने जा रहे हैं। लेनिनग्रादकी दीहातमें पचाससे अधिक गिर्जे काम कर रहे हैं। अनीश्वरवादियोंकी सभा और बन्द कर दी गई है। अधिकांश गिर्जोंमें दो या तीन पादरी हैं।...लेनिनग्रादमें एक पादरी शिक्षणालय खुला है। जल्दी ही सरकारके दिये एक मकानमें धर्मविद्या-अकदमी खुलने जा रही है। लेनिनग्रादके गिर्जोंके पत्र-पुस्तकादि मास्कोमें छापे जाते हैं।

"मास्कोमें मैं पेत्रोव्स्की पथपर बप्तिस्त-चर्चमें गया। वह लोगोंसे इतना भरा था, कि जैसा मैंने पहले कहीं नहीं देखा था। लोग सड़कपर खड़े थे। हमें भीड़के भीतरसे एक कोनेमें छज्जेपर ले गये, जहाँ सेनीचे हम जनसमूहको देख सकते थे।......मकान दीवारसे दीवार तक और खुले दरवाजोंसे बाहर

तक ठसाठस भरा हुआ था। मेरे अन्दाजसे ५०० आदमियोंके बैठने लायक शाल (हाल) में १२०० आदमी बैठे थे और पूजा ढाई घण्टे तक चलती रही। मकान इंग्लैंडमें पाये जाने वाले पुराने ढगके स्वतन्त्र चर्चोंकी हुबहू नकल थी—सादा और आयताकार, साफ काँचकी लम्बी खिड़कियाँ, वेदी एक तरफ और गानस्थान दूसरी तरफ।......यह सब देखकर मुझे वह कड़े नियम वाला बप्तिस्त गिर्जा याद आया, जिसमें मैं बचपनमें जाया करता था।

"वहाँ कोई बाजा नहीं था, जैसा कि हमारे यहाँके स्वतन्त्र चर्चोंमें भी नहीं हुआ करता था।......गान बहुत जोरदार था और बहुतसे स्तोत्र तथा लय साँकेकी थी। इस रूसी बप्तिस्त-चर्चका सारा वातावरण ठीक वैसा ही था, जैसा कि इङ्लैन्डमें पचास साल पहले था।......

"बादमें कम्यूनियन (सन्त चर्या) पूजा हुई। यह समझना मुश्किल मालूम होता था, कि इतनी भारी जनतामें रोटी और मदिराका प्रसाद श्रद्धा और आदरपूर्वक वितरण किया जा सकेगा। लेकिन प्रसाद वितरण विधिवत् सम्पन्न हुआ। रूसियोंकी श्रद्धा और आदर आश्चर्यकी बात है। पुरोहितने एक प्रकांड रोटको लगभग बारह टुकड़ोंमें तोड़ा और उपपुरोहितोंने शराबको छोटी-छोटी प्यालियोंमें ढाला। फिर मन्त्र पढ़ा गया। तदनन्तर नीरवता-पूर्वक पहले छीपी (प्लेट) और फिर प्यालियाँ बास प्रसाद-परिवेशकों (बाँटनेवालों) के हाथोंमें दी गईं। इतनी बड़ी भीड़में कैसे वे बटीं, यह कलापूर्ण काम था। मैंने देखा, रोटी और मदिरा एक हाथसे दूसरे हाथमें होती द्वारके बाहर सड़क तक पहुँची और फिर पीछे लौट आई। उस शोर गुलका यहाँ कहीं पता न था, जो कि हमें दो-तिहाई खाली अंगरेजी गिर्जोंमें देखनेको मिलता है। कम्यूनियनके बाद पुरोहितने सूचना दी-बसन्त-पूजामें मैंने एक सौ आदमियोंको बप्तिस्मा दिया। तब उसने एक सौ नामोंकी दूसरी सूची सुनाई, जिन्हें अगले रविवार को बप्तिस्मा मिलने वाला था। यह बहुत कठिन काम होगा, क्योंकि हरेक आदमी अलग-अलग कुण्डपर जायेगा। फिर प्रत्येक आदमी सिरतक पानीमें

डुबकी लगावेगा। तब एक या दो मिनट कुण्डसे निकलनेमें बीत जायगा। और प्रत्येक व्यक्तिकेलिये यही विधि। इसमें तो घण्टों लग जायेंगे ...

"मुझे यह भी मालूम हुआ, कि गिर्जेमें तीन हजार बप्तिस्मा प्राप्त मेम्बर हैं। उसे तीन सौ और आदमियोंके बैठने लायक बनानेकी इजाजत दी गई है। एतवारको मैं वहाँ पहुँचा, तो देखा, लोहेकी शहतीरें अपनी जगहोंपर रखी हुई हैं। यह भी पता लगा, कि सरकारने उन्हें रियायती दामपर दिया है। मकान बनानेकी दूसरी सामग्रियाँ भी उसी तरह दी जायेंगी। सोवियतमें एक ही मालकी भिन्न-भिन्न कीमतें होती हैं। गिर्जेकेलिये मालकी कीमत सबसे कम रखी जाती है। गिर्जोंकी इमारतकेलिये किराया नहीं देना पड़ता। वह पूजा करनेवालोंको सदाके लिये दे दी गयी हैं। हाँ, मकानकी मरम्मत या बढ़ाने, पुरोहितोंको वेतन देने तथा पूजोपयोगी चीजोंके खरीदनेका भार चर्चपर रहता है। उस दिन वहाँ दक्षिणा पाँच हजार रूबल जमा हुई थी। प्लेट-पर नोट ऊपर तक फूले हुये थे, जब कि वह लोगोंके सिरपरसे बढ़ रही थी। मुझे डर लग रहा था, कि कहीं कुछ नोट गायब न हो जायें किन्तु ऐसा नहीं हुआ...। जिस गिर्जेमें मैं गया था, वहाँ प्रति सप्ताह पाँच बार पूजा होती है, और औसत दक्षिणा प्रतिवार ५०० रूबल होती है।

"(मास्कोके बप्तिस्त संघ आफिसमें) हमने देखा कि गिर्जेकी मरम्मत, बढ़ाव और उपयुक्त सामग्रीका परमिट धर्मविभाग-कौंसिलके अध्यक्ष महाशय पोल्यान्स्कीकी मददसे चीजोंके सबसे पहले मिलनेकी शर्तके साथ मिल गया। हमने यह भी सुना, कि रूसके बप्तिस्तोंने एक मजबूत प्रतिनिधि मण्डल स्टॉकहोममें होनेवाली विश्व-बप्तिस्त कान्फ्रेन्समें भेजा। महाशय पोल्यान्स्कीकी मददसे उनकेलिये विमान पासपोर्ट विनिमय-पैसा और दूसरी आवश्यक चीजें भी मिल गईं।

"हमने बप्तिस्तोंके राजनीतिमें भाग लेनेके बारेमें पूछा। जवाब मिला, कि चर्चके मेंबर चाहें तो कम्युनिस्त पार्टीके मेंबर हो सकते हैं। पीछे कम्युनिस्त नेताओंसे मालूम हुआ, कि ईसाई होनेसे पार्टीके मेम्बर बननेमें कोई रुकावट नहीं।

वस्तुतः जिस नये राज्यका वह निर्माण कर रहे हैं, उसके प्रति उत्साह और सद्भाव दिखानेमें ईसाइयों और मार्क्सवादियोंमें कोई अन्तर नहीं।...पिछले चुनावमें पादरियोंने सिर्फ वोट ही नहीं दिया, बल्कि उनमेंसे कितने ही स्थानीय सोवियतोंके मेंबर तक चुने गये।

''सोवियत्‌में तीन हजारके करीब बप्तिस्त और इवानजेलिक गिर्जे हैं। इनमें वह गिर्जे शामिल नहीं हैं, जो कि दोनों सम्प्रदायोंकी एकता होनेसे सहमत नहीं हुए। इसके लिये कोई जबर्दस्ती नहीं। सिर्फ बप्तिस्त गिर्जों के ही प्रायः आठ लाख बप्तिस्मा-प्राप्त मेंबर हैं।... जून १९४२में दोनों सम्प्रदायोंकी संयुक्त कौंसिलके चालीस लाख मेंबर थे।

''धार्मिक सम्प्रदाय विभागकी कौंसिलका सम्बन्ध अर्थोदक्स चर्च छोड़ बाकी सभी धर्मों—आर्मेनियन चर्च, पुराणविश्वासी, बाल्तिक प्रजा-तन्त्रोंके लूथरन, रोमन कैथोलिक, ग्रीककैथोलिक, मुस्लिम, यहूदी और बौद्ध साथ ही स्वतन्त्र इवान्जेलिक चर्चोंसे भी है...।

''...अर्थोदक्स चर्चके नये पत्रियार्क (धर्ममहानायक)को १९४५से पवित्र धर्म सभा (सीनेत)ने ५वें पत्रियार्क सेर्गियसकी मृत्युके बाद निर्वाचित किया। उनके नीचे ३ आर्चबिशप और ६७ बिशप हैं। सोवियत् संघमें बाईस हजार अर्थोदक्स गिर्जे हैं, जब कि २२ अगस्त १९४१को उनकी संख्या ४२२५ थी।... नये गिर्जोंकेलिये या तो सरकारसे मकान मिले हैं, या लोगोंने स्वयं पैसा एकत्र करके नया मकान बनाया।

''पैसे-कौड़ीमें चर्च राजसे बिल्कुल स्वतन्त्र हैं। सरकारने कभी उनसे पैसा नहीं माँगा, लेकिन चर्चने माता-पितृ-विहीन बालकोंकी सहायता और दूसरे कामोंकेलिये भारी रकम सरकारको दी। उनके पास दक्षिणासे प्रचुर द्रव्य आता है। महाशय करपोफने बतलाया—चर्चवाले बहुत आसानीसे लाखों रूबल जमा कर सकते हैं। एक एतवारको मैं बपतिस्त गिर्जेमें गया, और रेवरेंड स्टेनली इवान्स अर्थोदक्स गिर्जेमें गये। उन्होंने उस एक पूजामें देखा, डेढ़ लाख रूबल एक दिनमें चढ़ा था। सरकार नये गिर्जोंके निर्माणकेलिये ईंटा,

सीमेंट, लकड़ी, काच और लोहा आदि कन्ट्रोल-भावपर देती है, जो कि साधारण व्यापारिक भावसे दशांश होता है। कार, मदिरा, पेट्रोल, मोमबत्ती आदि सभी चीजें कन्ट्रोल रेटपर मिलती है। अर्थोदक्स चचकी मातहत नवासी भिक्षुमठ हैं। पादरी सैनिक सेवासे मुक्त है, और भिक्षुओंपर अविवाहित-कर नहीं लगता...।

"जब हम मास्कोमें थे, तो एक दिन आर्चबिशप इरिनाचको देखने गये। यह पीतर महान्‌के सुधारको न माननेवाले अर्थोदपन्थी पुराण विश्वासियों के प्रमुख धर्माचार्य हैं। सोवियत्‌में इस सम्प्रदायवालोंकी तादाद तीस लाख है, और इससे भी अधिक संख्या उनकी है, जो संगठित नहीं हुए। युद्धके समय इनकी सेवायें आश्चर्यजनक रहीं। यह कार्थेड्रल (धर्मशाला) १७७१में बनी थी। वह इतने बहुमूल्य मूर्तियों और धर्मचित्रोंसे भरी थी, जितना मैंने जीवन भरमें नहीं देखा। उनमेंसे अधिकांशको धनिक व्यापारियोंने पन्द्रहवीं शताब्दीमें अर्पण किया था। पुस्तकालय और संगीत भवनमें बहुमूल्य पुराने हस्तलिखित ग्रंथों (जिनके किनारे सुनहले थे)से भरे थे। जिस सड़क पर यह चर्च अवस्थित है, उसका नाम पुराणविश्वासीपथ है। हमने सोवियतमें चर्चोंके अनेक खजाने देखे। देखकर विस्मय हुआ कि १९२१के महा अकालमें करोड़ों भूखोंके वास्ते अन्न खरीदनेकेलिये ३४,००० हीरे, ४,४१४ ग्राम (साढ़े ५ सेर) मोती, ७२,३८३ ग्राम दूसरे रत्न साथ ही चार सौ बयालीस किलोग्राम (१ किलोग्राम = १। सेर) सोना, तीन हजार छत्तीस किलोग्राम चाँदी दे देने पर भी कैसे इतना बच गया? मुझे याद है, एक दिन मैं एच्मियाजिनमें आर्मेनीयन चर्चके हेडक्वाटरमें पुराने कोचपर बैठा था। मैंने कुछ गद्दियोंको हटा दिया। पीछे मैंने जाना कि जिन गद्दियोंको मैंने इतनी बेपरवाहीसे हटा दिया, उनमें हजारों सच्ची मोतियाँ टँकी हैं...।

रेवरेन्ड वाटरहौसके वर्णनको पूरा उद्धृत करके मैं पाठकोंको उकताना नहीं चाहता, इसलिये आगे मैं उनके लेखका संक्षेप दे देता हूँ।

सोवियत्‌के बहुत सारे गिर्जोंमें सोना-चाँदीके बर्तन और आभूषण, रत्न-

जटित वस्त्र देखकर वह दङ्ग रह गये। उनसे भी अधिक बहुमूल्य चीजें इन मेहमानोंको क्रेमलिनमें देखनेको मिलीं। वहाँके खजानेको देखकर उन्हें लन्दन के टावर का राजमुकुट और रत्न अकिंचन जान पड़े। १६४६के अन्तमें पुराण-विश्वासियोंकी चर्च-कौन्सिल मिलनेवाली थी, जिसमें उनके हेडक्वार्टरको रूमनियाकी सीमापर अवस्थित वेलया-क्रिनित्सासे हटाकर मास्को ले आनेका निश्चय होनेवाला था। लतविया और लिथुवानियाके बहुतसे लूथरन पादरियों ने जर्मन फासिस्तोंका साथ दिया था, अब वह भाग गये थे। लतवियामें रोमन कैथलिक प्रभाव बहुत अधिक है। १६४५के अगस्तमें अग्लोनकी मरियम माईके मन्दिरमें ३५,००० दर्शनार्थी एकट्ठा हुए थे।

प्रतिनिधि-मण्डल गुर्जीमें एक भिक्षुणीमठ देखने गया। सोवियत् संघमें यही एक स्थान था, जहाँ उन्हें फोटो नहीं लेने दिया गया। उन्होंने अर्मेनिया में वहाँकी धार्मिक अवस्थाके बारेमें खूब छान बीन की। कई घण्टे वहाँके महामन्त्रीसे वार्तालाप किया। अर्मेनियाके ६०% लोग ईसाई हैं और अधि-कांश लोग गिर्जा जाते हैं। जनसंख्याकी दृष्टिसे सोवियत्के सभी प्रजातन्त्रोंसे यहाँ अधिक गिर्जे हैं। इनके पास सोवियत्-यूनियनका सर्वोत्तम हस्तलेख पुस्तका-लय है। "हम एच्मियाजिनमें वहाँका धर्मविद्यापीठ देखने गये। कथोलिकस (धर्ममहानायक) वहाँ मौजूद नहीं थे। हम विद्यापीठके महास्थविर (रेक्टर) से मिले। भिक्षुओं से तीन-चार घण्टे बातें करते रहे। सुमधुर फल और पेयसे सत्कार किया गया। यहाँ पाँच सालकी पढ़ाई है और हर साल पैंतीस विद्यार्थी लिये जाते हैं। आर्मेनियन चर्चके पास १२ भिक्षुमठ हैं। अर्मेनियन पादरी सारे सोवियत्में सबसे अधिक संस्कृत पुरोहित हैं। जनतामें उनका सम्मान भी उतना ही अधिक है।"

यात्राका निष्कर्ष बतलाते हुए लेखकने लिखा है—सोवियत्के जीवनमें धर्म और मार्क्सवादी दर्शनका क्या स्थान है, इसका पता हमें क्रेमलिनसे मिलता है, जहाँ कि चारों ओर से एक तरफ लाल तारे दिखलाई देते हैं, और दूसरी तरफ सुनहले क्रॉस।

२. सोवियत्‌में वैयक्तिक-सम्पत्ति

बाहरकी दुनियामें लोग समझते हैं कि सोवियत्‌में वैयक्तिक सम्पत्ति उठा दी गयी। यह विश्वास सोवियत् विरोधियोंमें ही नहीं पाया जाता, बल्कि सोवियत्-सुहृद भी अनजाने इस गलत धारणाका प्रचार करते हैं। सोवियत्‌में वैयक्तिक सम्पत्तिको एक ओरसे नहीं उठा दिया गया है, उत्पादनके साधनों-कल कारखानों खान और जमीन—में वैयक्तिक सम्पत्ति नहीं है, यह ठीक है, और न अपनी वैयक्तिक सम्पत्तिसे आदमी दूसरेके श्रमको खरीदकर लाभका व्यवसाय कर सकता है; सोवियत् कानूनके अनुसार शहर या गाँवका रहने वाला कोई भी आदमी अपने श्रमसे जो कुछ अर्जित करता है, वह उसकी वैयक्तिक सम्पत्ति है और वह इच्छानुसार उसे उपयोग कर सकता या दे सकता है। चल सम्पत्तिके अलावा गाँवोंमें लोगोंके अपने निजी घर होते हैं। शहरोंमें भी अपने लिये निजी घर बनानेमें कोई आपत्ति नहीं। आदमी अपने घर या मोटरको—जिसे उसने व्यवसायके लिये नहीं बल्कि अपने उपयोगकेलिये अर्जित किया था—खुशीसे बेंच सकता या प्रदान कर सकता है, और इसी तरह अपने उपयोगकेलिये वह चीजोंको खरीद सकता है। इस तरहकी सम्पत्तिके सम्बन्धमें वह किसी दूसरेके साथ लिखा-पढ़ी भी कर सकता है।

सोवियत्-कानून सोवियत् नागरिकके वैयक्तिक सम्पत्तिकी रक्षाकी गारन्टी देता है। इस सम्पत्तिमें अपने परिश्रमसे पैदा की गई सम्पत्ति और बचाकर जमा किये गये पैसे ही नहीं, बल्कि बाप-माँसे मिली दाय-भागकी सम्पत्ति भी शामिल है। दीवानी अदालत अधिकारके झगड़ों का फैसला देती है।

सोवियत्‌में लोगोंके मकान नहीं हैं, यह भी बात गलत है, जैसा कि मैंने ऊपर कहा। आजकल युद्ध-ध्वस्त प्रदेशोंमें तो सरकार अरबों रूबल तकावी या सहायताके तौर पर उन लोगोंको दे रही है, जो अपने लिये मकान बना रहे हैं। त्सेकोम-बांक पाँचसे दस सालमें बेबाक कर दी जाने वाली कर्ज मकान

बनाने वालोंको देता है। १९४५के पूर्वार्द्धमें डेढ़ लाख वर्ग-मीटर फ़र्श रखने वाले मकानोंके बनानेकेलिये लोगोंको कर्ज मिला था।

यह सही है कि सोवियतकी आर्थिक व्यवस्था समाजवादी है। वहां उत्पादनके सभी साधन और हथियार जनता की सम्पत्ति हैं। जनताकी सम्पत्तिका मतलब है, कि या तो वह सारे राष्ट्रकी सम्पत्ति है या गाँव के किसानोंकी सम्मिलित संस्था-कल खोज अथवा अनेक नागरिकोंकी सम्मिलित संस्था सहयोग-समितिकी सम्पत्ति है। सहयोग-समितियाँ नाना प्रकारकी दस्तकारियोंसे लेकर जूता, सिलाई, घड़ीसाजी तकका काम करती हैं। आप अपने हाथसे सिलाई, फोटोग्राफी या किसी तरहका काम कर सकते हैं। आप अपना श्रम लगाइये और उससे फ़ायदा उठाइये। हाँ, इसमेंसे थोड़ा सा कर राजके चलानेकेलिये आपको भी देना पड़ेगा। लेकिन यदि आप चाहें कि अपने घड़ीसाजीके काममें तीन और आदमियोंको नौकर रखें, तो यह नहीं हो सकता। आप उनके श्रमके मत्थे नफ़ा नहीं उठा सकते। हाँ, अगर आप अपने काममें तीन-चार आदमियोंको शामिल करके उसे को-ऑपरेटिव या सहयोगी ढङ्गसे करें, जिसमें सभी काम करने वाले भागीदार हैं, तो आप यह काम ऐन-कानूनके मुताबिक कर रहे हैं। सोवियत् राज्यका आर्थिक आधार है, उत्पादनके साधनोंपर सारे राष्ट्र या सहायोगी स्वयं श्रम करनेवाली संस्थाओंका अधिकार। पूरे राष्ट्रकी सम्पत्ति है,-भूमि, उसकी खनिज सम्पत्ति, पानी न मिलें, फेक्टरियाँ, रेल-जल-वायुके यातायात, डाकखाना, तारघर, टेलीफोन, बड़े भारी पैमानेकी कृषि यानी सोव-खोज (सरकारी खेती), मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन; म्युनिसपिलटीके उद्योग-धन्धे, नगरों और औद्योगिक केन्द्रोंके अधिकांश घर। सहयोगी-समितियोंकी सम्पत्ति और कल-खोज दूसरे ढङ्गकी सम्पत्ति है, जो कि वैयक्तिक-सम्पत्तिमें नहीं आती।

यहां सार्वजनिक-सम्पत्तिका मतलब है, सामूहिक खेती या सहयोग-समितिद्वारा कलखोज और सहयोगसमितियोंके साझेके कारबार, उनकी इमारतें।

कलखोजका खेत गाँवकी नहीं बल्कि राष्ट्रकी यानी राज्यकी सम्पत्ति है, किन्तु जैसा कि सोवियत् विधान बतलाता है, वह कलखोजोंको निःशुल्क और असीमित समय यानी सदाके उपयोगके लिये दे दिया गया है।

लेकिन कलखोजके खेतोंके अतिरिक्त गाँवके लोगोंको भी वैयक्तिक उपयोगके लिये घरके पास थोड़ा-थोड़ा खेत मिलता है। उसके लिये उपयोगी कुछ कृषि-सम्बन्धी हथियार भी किसानकी वैयक्तिक सम्पत्ति है। साथ ही कुछ गाय, भेड़ और मुर्गियाँ भी उनकी अपनी सम्पत्ति होती है।

इनके अतिरिक्त और भी स्थान हैं, जहाँ सोवियत् नागरिककी वैयक्तिक-सम्पत्ति है, उनकी संख्या बाल्तिक प्रजातंत्रों पश्चिमी उक्रइन और बेलोरुसियामें काफी है। अब भी वहाँ ऐसे किसान मिलते हैं, जो कलखोजमें शामिल न हो अपनी खेती आप करते हैं। कितने दस्तकार, हजाम या दूसरे कारीगर हैं, जो सहयोग-समितिमें नहीं शामिल हुए और अपना स्वतन्त्र काम करते हैं। उनके पास भी अपनी निजी सम्पत्ति होती है। इन छोटे-छोटे कामोंसे जो भी धन अर्जित होता है, वह अर्जन करने वालेका होता है।

संक्षेपमें सोवियत्-नागरिक जो कुछ भी कमाता है, जैसे कारखानेके मजदूर और आफिस कर्मचारीका वेतन, सामूहिक खेतीके कार्य-दिनकी आमदनी अथवा लेखक कलाकार, अभिनेता, मूर्तिकार या दूसरे व्यवसायकी आमदनी-यह सब वैयक्तिक सम्पत्ति है, और आदमी उसके उपभोग और व्यय करनेका पूरा अधिकार रखता है।

सोवियत्-कानून इस वैयक्तिक सम्पत्तिके अधिकारको उसके जीवनमें भी मानता है और बादमें भी। वह अपनी सम्पत्तिकी वसीयत करके किसीको दे जा सकता है, या सन्तानोंके लिये छोड़ सकता है। उत्तराधिकारका झगड़ा होनेपर अदालत उसका उचित फैसला करती है।

सोवियतमें वैयक्तिक सम्पत्तिका आधार भूत सिद्धान्त यह है—"जो कुछ भी आदमी अपने वैयक्तिक श्रमसे पैदा करता है, वह उसकी सम्पत्ति है।" सोवियत्-नागरिक अगर अधिक काम करता है या श्रमसे अधिक उत्पादन बढ़ाता

है, तो उसकी आय भी उतनी ही अधिक होती है, आयमेंसे अधिक बचत होनेपर उसकी संपत्ति भी उतनी ही अधिक होती और कानून उसे उस सम्पत्तिका मालिक ठहराता है। लेकिन यहाँ ध्यान रखना चाहिये, कि सोवियतके लोग आयके बचानेकी उतनी परवाह नहीं करते, जितनी दूसरे देशोंमें की जाती है। क्योंकि बूढ़े या बेकार होनेपर उन्हें भूखे मरनेका डर नहीं है, न लड़के-लड़कियोंकी ब्याह-शादीके खर्चकी चिन्ता है। हाँ, उनके पास पुस्तकें, फर्नीचर, कपड़े-लत्ते मोटर-रेडियो और गाँवोंमें घरोंकी शकलमें सम्पत्ति जरूर रहती है।

अध्याय ११

महोत्सव

१. क्रान्ति-महोत्सव

७ नवम्बर १९४६को सारे सोवियत् देशमें महाक्रान्ति का २९वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। सारे देशमें, हरनगर और हर गाँवमें यह उत्सव हरसाल बड़ी शानसे मनाया जाता है, फिर सोवियत्की राजधानी मास्कोके बारेमें कहना ही क्या है। मास्कोके क्रेम्ल (क्रेम्लिन्)के सामने विशाल लालमैदान है, यहीं एक किनारे लाल संगमर्मरकी काचकी तरह चमकती लेनिनकी समाधि है, जिसकी छत उत्सवके समय नेताओंके खड़े होनेकी वेदीका काम देती है। समाधिकी दोनों तरफ सीढ़ियोंकी तरह दर्शकोंके बैठने या खड़े होनेके स्थान हैं।

उस दिन (७ नवम्बर १९४६) प्रदर्शनके आरम्भके बहुत पहले हीसे लोग इस स्थानको भरने लगे। इनमें कम्युनिस्ट पार्टीके नेता, पार्लियामेंटके मेम्बर, "सोवियत्-संघ-वीर", "समाजवादी श्रमवीर", प्रसिद्ध जनरल, प्रमुख उद्योगोंके प्रधान, अच्छे कमकर, जगद्विख्यात साइन्सवेत्ता, कलाकार आदि मौजूद थे। एक जगहपर विदेशी राजदूत और दूसरी जगह विदेशी सैनिक मिशनके सदस्य बैठे हुए थे। दस बजे मोलोतोफ, अन्द्रेयेफ़, कगानोविच्, मिकोयान, बेरिया, मलिनकोफ, श्वेर्निक और वोजनेसेन्स्कीने आकर अपना स्थान ग्रहण किया और लोगोंने तालियोंसे उनका स्वागत किया। सैनिक शोभा-यात्राका आरम्भ हुआ जब कि लाल सेनाके जनरल-स्टाफके प्रमुख जनरल अन्तोनोफ़ क्रेम्लिन्के स्पास्की मीनारसे बाहर निकले और लालमैदानके बीचमें शोभा-यात्राके कमान्डर कर्नल जनरल अर्तेमूयेफ़से भेंट की। अर्तेमूयेफ़ने शोभा-यात्राके

बारेमें रिपोर्ट दी और दोनोंने मैदानमें पंक्ति-बद्ध खड़ी सेनाका निरीक्षण किया। जनरल अन्तोनोफ़ने स्वागत करते हुए सेनाको बधाई दी।

जनरलके संक्षिप्त भाषणके बाद सैनिक-बाजे बजने लगे। शोभा-यात्रा शुरू हो गयी। पहले अफसरोंकी रेजीमेन्टने मार्च किया, यही शानसे हाथ हिलाते-पग मिलाते चलते भड़कीली बरदी वालेमें तरुण आगे चलकर लाल-सेनाके सेना-नायक होंगे।

इसके बाद सैनिक अकदमी (स्कूल)के विद्यार्थियोंकी पाँती आगे बढ़ी। आज ये विद्यार्थी हैं, लेकिन गृह-युद्धके बड़े लड़ाके वीर रह चुके हैं और इनको युद्धका बहुत व्यवहारिक ज्ञान है, अब वे सैनिक-सिद्धान्तोंके अध्ययनमें लगे हुए हैं। इनके तजर्बेका सबसे अधिक सबूत तो यही है, कि फ्रुंजे अकदमीका हर एक विद्यार्थी युद्धमें बहादुरीका तमगा पाये हुए हैं, उनमेंसे ८४ "सोवियत्-संघ-वीर" हैं। तीन बार सोवियत् संघ-वीरके तमगेको पाये प्रसिद्ध विमान-योद्धा पोक्रिश्किन भी फ्रुंजे अकदमीका एक विद्यार्थी है। वह भी अपने सहपाठियोंके साथ कदम मिलाता चल रहा है। फ्रुंजे अकदमीमें दो पीढ़ियाँ हैं। कर्नल बास्लोफ २८ साल पहले जारके शरत-प्रासादको दखल करते वक्त लड़े थे और द्वितीय विश्व युद्धमें लेनिनग्राद नगरके रक्षक-सेनामें थे। लाल मैदानमें उनके साथ उनका २८ साला तरुण पुत्र और "सोवियत् संघ-वीर" मेजर निकितिन भी मार्च कर रहा था।

फ्रुंजे अकदमीके बाद दूसरे सैनिक स्कूलों जर्जिन्स्की तोपखाना अकदमी, स्तालिन मशीनीकृत सेना अकदमी, [illegible] इंजीनियरिंग अकदमी और दूसरे भी सैनिक स्कूलोंके विद्यार्थी सामनेसे मार्च करते निकले।

अब नौसेना अपनी नौसैनिक वर्दीमें मैदानमें मार्च करने लगी। जनताने अपने वीर नौसैनिकोंका तालियों द्वारा स्वागत किया।

तमन राइफल डिवीजनके गारद सैनिक अपनी अपनी राइफलोंको तैयार रखे बड़ी शानसे सामनेसे गुजरे। प्रसिद्ध येल्याके युद्धमें १९४१में अपनी वीरताका इन्होंने अच्छा परिचय दिया था, फिर आगे बढ़कर इन्होंने तमन प्रायद्वीपमें

घुसकर जर्मन-सेनाओंका छक्का छुड़ाया। नमन (क्रिमिया)से अपनी वीरता दिखलाते हुए इन्होंने पूर्वी प्रुशियाके जर्मन साम्राज्य-दुर्गको ध्वस्त किया। इनके ३२ आदमियोंके सीनेके पाकटसे ऊपर "सोवियत्-युद्ध-वीर"का सोनेका पंच-कोना तारा टँका हुआ है।

लोगोंने बड़े जोरकी तालियाँ बजाईं, जब सुवारोफ़् सैनिक स्कूलोंके छोटे-छोटे विद्यार्थियोंका कालम सामनेसे मार्च करने लगा। उनकी गर्वीली चाल और सुन्दर वर्दी प्रशंसनीय थी। यद्यपि उनकी अवस्था बहुत थोड़ी थी, परन्तु उनमेंसे कितनोंने युद्धमें भाग लिया था। कोल्या मिश्चेन्कोके मॉ-बापको जर्मनोंने मार डाला था। फिर दो साल तक उसने सेनामें स्काउटका काम किया। वह कई बार शत्रुपंक्ति पारकर अपने कामको बजा लाया और ऐसी बहादुरी दिखलाई, जो उसकी आयुसे बहुत अधिक थी। इन लड़कोंमें ऐसे कितने ही थे। सिर्फ कालिनिन सैनिक स्कूलमें ऐसे २६ विद्यार्थी थे, जिनको युद्धमें बहादुरी दिखलानेके तमगे मिल चुके थे।

सैनिक बाजेवालोंका झुंड लाल-मैदानके एक किनारेपर खिसका। इसी समय रिसालेके घोड़ोंकी टाप सुनाई देने लगी। स्वस्थ घोड़े अपने चाबुक-सवारोंके साथ समाधिके सामनेसे गुजरने लगे। यह जर्मन-पंक्तिके पीछे दौड़ लगानेवालेकेलिये प्रसिद्ध सवार थे। इन्होंने कितनी ही बार शत्रु-पंक्तिको भेदकर उसके भीतर हड़कम्प मचाई थी। रिसालेके खतम होते ही तोपखाना मैदानमें फैलने लगा। विजयमें सोवियतके तोपखानेका कितना हाथ रहा, यह सबको मालूम है। जर्मन फासिस्ट और जापानी सामुराई इसकी चोटसे सँभल न सके। इसने फौलाद और सीमेंटके बनाये अभेद्य दुर्गोंको तोड़कर लाल-सेनाके टैंकों और सेनाके लिये रास्ता साफ किया। इसने दुश्मनके टैंकों और तोपोंको मरोड़ कर लोहेका ढेरके रूपमें परिणत कर दिया और इवान भयंकर और प्रथम पीतरके समयसे चले आते अपने यशको और अधिक बढ़ाया।

तोपखानेके बाद विमान-ध्वंसी तोपें आईं, जिन्होंने १९४१में मास्कोके ऊपर विमानोंको आने नहीं दिया। उनके पीछे सर्चलाइट और शब्द-सूचक

यंत्रोंकी टुकड़ियाँ सामनेसे गुजरीं। फिर प्रसिद्ध कत्युशा मार्टर—एक साथ कई गोले फेंकने वाली छोटी तोपें—मैदानमें आईं। सोवियत् युद्धास्त्रोंमें यह अमोघ अस्त्र इसी युद्धमें निकला। जर्मनोंके पास उसका कोई जवाब नहीं था। इसका उपयोग सबसे पहले सितम्बर १९४२में वोरोनेजके मैदानमें हुआ और फिर यह कत्युशा-सेना बेलगोरद, खरकोफ़ होते द्नियेपर पार हो जस्सी-किसिनेफ़के घिरावेमें जर्मनोंको ध्वस्त करते कार्पाथीय दीवारको तोड़कर आगे बढ़ी।

टैंक-विरोधी तोपें, हावित्ज़र और भारी तोपें—जिनके सामने न जर्मन दुर्ग ठहर सके न जापानी—घरघराती हुई सामनेसे निकलीं। इसीमें सेवस्तापोल गारद-तोपखानेका ब्रिगेड था, जिसकी कर्नल बचमानोफ़ कमान कर रहे थे। यह ब्रिगेड पिछले गृह-युद्धके समयसे ही अपनी वीरताकेलिए प्रसिद्ध हो चुका था, जब कि उसने क्रांति-विरोधी जार-शाही गारदों और सोवियत्को कुचलने आई विदेशी सेनाओंका मुकाबला किया था। उस समय बचमानोफ़के तोपचियोंने सोवियत्-भूमिके भीतर विदेशी सेनाओंके अन्तिम दुर्गको पेरेकोपमें ध्वस्त कर उन्हें मार भगाया। द्वितीय युद्धमें बचमानोफ़की पलटनने स्तालिनग्राद् में लड़ते अपने युद्ध-क्षेत्र पेरेकोपमें जर्मन रक्षा-पंक्तिको छिन्न भिन्न किया। फिर कर्नल और उसके आदमियोंने बाल्तिक तटपर पूर्वी-प्रशियामें घुसकर जर्मन बन्दरगाह पिल्लाउ पर कब्जा किया।

अन्तमें हर तरहके टैंक सामनेसे गुजरने लगे। यह विशालकाय फौलादी रथ ऊपर-चढ़ी तोपोंके साथ चलते अपनी खड़खड़ाहटसे सारे मैदानमें हल्ला मचाये हुए थे। एक टैंकके ऊपर लिखी हुई पाँतियोंसे मालूम होता था, कि वह स्तालिनग्राद्से ड्रेस्डेन तक लड़ता गया। इसका वेग-मापक यन्त्र बता रहा था, कि इसने १३ हजार किलो-मीतरकी-युद्ध-यात्रा की और यह १३ हजार मीतर ऐसे थे, जिसमें हरेक मीतरपर जर्मनोंसे मुकाबला करना पड़ा था। इसका ड्राइवर मेजर दोर्जेको था, जिसने ठीक चार साल पहले १९४१में लाल मैदानमें अपना टैंक चलाया था। उस वक्त जर्मन सेनाएँ सोवियत्-भूमिके

अन्दर बहुत भीतर तक घुस आई थीं, किन्तु उस वक्त भी स्तालिन्ने अपने उत्साहवर्द्धक भाषणमें सोवियत्की अजेयताको घोषित किया था।

साढ़े ग्यारह बजे—डेढ़ घण्टे बाद शोभा-यात्रा समाप्त हुई।

चन्द मिनटों तक मैदान खाली रहा। दर्शक अपनी अपनी जगहोंपर नागरिकोंके प्रदर्शनकी प्रतीक्षा करते ठहरे रहे। बैंडने आवाज दी और झण्डे, पताके स्तालिन और दूसरे नेताओंके चित्रों तथा उत्साहवर्धक वाक्यावलियोंके साथ नागरिक मैदानमें आने लगे। इसमें मास्कोकी फैक्ट्रियों, मिलों और कारखानों, साइन्सके प्रतिष्ठानों और संस्थाओंमें काम करनेवाले नर-नारी नारे लगाते लेनिनकी समाधिकके पाससे गुजरने लगे। 'दीर्घजीवी हों साथी स्तालिन सोवियत् जनताके महान् नेता' 'हुर्रा साथी स्तालिन्', 'महान् स्तालिन की जय'के नारे सबसे ज्यादा बोले जा रहे थे। विजयी सोवियत्-जन अपने ऐतिहासिक लाल-मैदानमें मार्च कर रहे थे। इनमें वह नर-नारी भी थे, जिन्होंने अपने काम—जो युद्धकेलिये भी अत्यावश्यक था—में गजबकी बहादुरी दिखलाई थी। इनमें वे मजदूर, स्त्रियाँ और तरुण भी थे, जिन्होंने लालसेनाकी हरेक चीजको प्रस्तुत किया। लोहा, फौलाद, मशीनरी, अस्त्र-शस्त्रके कारखानोंके मजदूर विशेषज्ञ, साइन्सवेत्ता, विद्यार्थी, स्कूली लड़के, आफिस-कर्मचारी और घरकी औरतें सभी इन झण्डोंके पीछे पीछे चल रहे थे। वह अपने साथ चित्र-रेखाओं और विज्ञापक फलकोंको लेकर चल रहे थे, जिनसे मालूम होता था, कि वह क्या चीज बनाते हैं और कितने परिमाणमें लाल प्रोलेतारी प्रांत—सोवियतका सबसे बड़ा मशीन-टूल (मशीन-निर्मापक मशीन)के कारखानेके कमकर एक बड़े विशाल अहरनके नमूनेका लेकर चल रहे थे। उनको इस बातका अभिमान था, कि उन्होंने अभी ही अपने युद्ध-पूर्वके उत्पादनके परिमाणको पीछे छोड़ दिया है। क्रास्नयाप्रेस्न्या जिलेके दलमें त्र्येख्गर्नया कपड़ा-कारखाने के मजदूर भी चल रहे थे। यह देशकी प्राचीनतम कपड़ा-मिल है। इसने इस साल २५ लाख मीतर कपड़ा योजनासे अधिक पैदा किया और युद्धके समय पाँच लाख सिपाहियोंकेलिये वर्दीका कपड़ा दिया।

एक बड़ा गुब्बारा लिये हुए लोग चल रहे थे, जिसपर लिखा था "महान् स्तालिनकी जय !" इसे फ्रुंजे जिलेकी काउचुक फैक्ट्रीवाले मजदूर ले चल रहे थे। युद्धके समय विमानोंको रोकनेकेलिये बड़े-बड़े शहरोंमें जो गुब्बारे खड़े किये गये थे, उनमेंसे कितने ही और मास्कोके सारे ही गुब्बारे इसने बनाये थे। "हसिया-हथौड़ा लोहा फौलाद मिल"के कमकर बड़े अभिमानसे अपने झण्डोंको फहराते चल रहे थे। युद्धके समय इन्होंने हजारों टैंकों और लाखों गोलोंकेलिये फौलाद दिया। इसी तरह दूसरे कारखानोंने भी अपने बन्दन-बन्दन-पर अपने कामोंके आँकड़ोंको अङ्क और रेखा-चित्रोंमें लिख रक्खा था। बुयोन्नी कारखानेके बन्दनवारपर लिखा था, 'हमने लाल-सेनाको बारह हजार मोर्टर (छोटी चौड़ी तोपें) और स्वयंचालित पिस्तौलके ७० लाख पुर्जे दिये। मास्को बढ़ई-खानेके बन्दनवार पर लिखा था 'हमने २५ लाख टामीगनके कुंदे दिये और फिर कुर्सी-मेज बना रहे हैं।' मास्कोवाले बिजलीके कारखानेके मजदूरोंने लिख रखा था 'हमने हजारों टैंकोंपर बिजली लगाई और अब हम ट्रैक्टरों पर काम कर रहे हैं।' साइन्स अकदमीके कर्मियोंने अपने बन्दनवारपर लिखा था 'हम साइन्स और टैकनिकको नये-नये आविष्कारों और नयी नयी खोजोंसे समृद्ध कर रहे हैं।' इसी तरह मेडिकल-अकदमीकी बन्दनवारोंपर भी अपने कामके बारेमें लिखा था।

फिर मास्को जिलेकी दीहातके सामूहिक खेती (कलखोज) वाले किसानोंका जलूस आया जिनके साथ मास्को शहरके जर्जिन्स्की जिलेके भी लोग चल रहे थे। युद्ध ध्वस्त इन कलखोजोंके सरक्षक यह जर्जिन्स्की वाले लोग हैं। इसलिये जिस तरह वह कलखोजोंके पुनर्निर्माणमें एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं, उसी तरह प्रदर्शनमें भी एक साथ भाग ले रहे थे। नगरके लोगोंने स्वयं समझकर अपनी इच्छासे इलाके गृहहीन किसानोंकेलिये सैकड़ों घर बना दिये।

यह बन्दनवारें आजकलके सोवियत जीवनके हर अङ्गको प्रकाशित कर रही थीं।

उस दिन लाल मैदानके प्रदर्शनमें १५ लाख नर-नारी शामिल हुए थे और नागरिक-प्रदर्शन तीन घण्टे तक मैदानको पार करता रहा।

२. मई-महोत्सव

१९४६के प्रथम मई-महोत्सवमें मास्कोके लाल मैदानसे २० लाख आदमी गुजरे थे। मैं उस वक्त नेशनल होटलमें ठहरा था। नेशनल होटल और लाल मैदानके बीच एक बड़े चौरस्ते और कुछ गज सड़क हीका अन्तर है। प्रदर्शनकी व्यवस्थाके लिये सारे मास्को-अन्तर्गहीमें जबर्दस्त सैनिक प्रबन्ध था। मुझे जानेका पास मिल गया था, किन्तु पहलेकी तरह चौरस्ता पारकर सीधे लाल-मैदानमें नहीं जाया जा सकता था। जहाँ जाते जवाब मिलता 'रास्ता इधरसे नहीं, ऊधर से जाइये।' एक दर्जनसे अधिक बार पास और पास-पोर्ट दिखलाना पड़ा। अच्छा हुआ कि मैं आध घण्टा पहले ही होटलसे चल पड़ा था। पूरे आध घण्टेके बाद हम अपने स्थानपर पहुँचे। बैठनेका स्थान सीमेंटकी गैलरी थी। हम अपने निश्चित स्थानपर पिछली पंक्तिमें जाकर खड़े हुए। आगेके लोग भी खड़े थे, इससे पीछे वालोंका भी खड़ा होना आवश्यक था। लेनिनकी समाधिके सामनेके विशाल मकानपर सबसे ऊपर सोवियत्-लांछन बहुत बड़े आकारमें टँगा हुआ था। उसके नीचे "दा ज़्द्रावस्त्वुयेत्? मया देन् स्मोत्रा वोयेवय् सील त्रुदाश्चिख्स्या व्सेख् स्त्रान्" (सारे देशके कमकरोंकी सैनिक शक्तिके प्रदर्शनके दिन—पहली मईका स्वागत) ये वाक्य लाल जमीनपर सफेद बड़े अक्षरोंमें लिखे हुए थे। इसके बायें लेनिन और दाहिने स्तालिनका विशालचित्र था। दोनों बगलमें फिर दो नारे लिखे थे, जिनमें बायें वाला था—"स्तालिन् वृपेरेद" (स्तालिन, आगे बढ़ो) इनके नीचे यानी तीसरी पाँतीमें दोनों बगल आठ-आठ करके सोलहो प्रजातन्त्रोंके लांछन लगे थे। मकानकी छतपर पाँतीसे लाल झण्डियाँ फहरा रही थीं। लाल मैदानके बायें छोरपर अवस्थित इतिहास-म्यूजियमके भवनपर बीचमें नारा-वाक्य, बायें विशाल

हसिया-हथौड़ा और दाहिने पञ्चकोण तारा अंकित थे। हमारे सामने दाहिनी ओरके मकानपर भी बहुत-से नारे लिखे हुए थे।

ठीक दस बजे, सोवियत् नेता पधारे, सैनिक वर्दीमें स्तालिन पहले आये। उनके बाद मलिन्कोफ्, बेरिया, ज्दानोफ् तथा दूसरे मन्त्री पहुँचे। स्तालिनके आनेपर बहुत जोरकी तालियाँ बजीं। लेनिन-समाधिके निचले स्तरपर लाल सेनाके जेनरल खड़े थे। ठीक दस बजे सेनायात्रा आरम्भ हुई। बैंड ने 'मार्च' की तान बजानी शुरू की। मार्शल रकोस्सोव्स्की परेडके निरीक्षक और जेनरल अर्तेम्येफ् परेडके कमांडर अपने घोड़ोंपर चढ़े लाल मैदानके बीचमें आये। जेनरलने मार्शलको परेडकी शिष्टाचारी रिपोर्ट दी। फिर वह पाँतीमें खड़ी सेनाके सामने गये। उनका स्वागत किया गया। मार्शलने लौटकर समाधिके ऊपर चढ़ एक संक्षिप्त भाषण दिया—

"साथियो! लाल सेना, लाल नौसेना, सर्जेन्ट, छोटे अफसर, सेना एवं नौ-सेनाके बड़े अफसर, जेनरल और एडमिरल, सोवियत् सघकी कमकर जनता! मैं सोवियत् सरकार और सोवियत् सघकी कम्यूनिस्ट-पार्टीकी ओरसे कमकर जनताके अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सवके दिन प्रथम मई-दिवसको आपका अभिनन्दन करता हूँ, बधाई देता हूँ। युद्धके संकटपूर्ण और कठोर वर्षोंके बाद आज शान्तिके समय हमारी मातृभूमिकी जनता मई-दिवस मना रही है।

"मातृ-मुक्तिके महायुद्धमें सोवियत् सघकी सेनाने हिटलरी जर्मनीको ध्वस्त करके धूलमें मिला दिया। वही दशा साम्राज्यवादी जापनकी भी हुई। द्वितीय विश्वयुद्धका अत स्वतंत्रता-प्रेमी जातियोंकी पूर्ण विजयके साथ हुआ।

"युद्धने हमारी समाजवादी व्यवस्थाके अजेय जीवट, लेनिन् स्तालिनकी पार्टीके महान् संगठनके काम और उसके विचारोंकी यथार्थताको प्रमाणित कर दिया।

"अनेक जातियोंकी मित्रता और समानतापर आधारित सोवियत्-राज्य युद्धके बाद आज पहलेसे भी अधिक एकताबद्ध और शक्तिशाली है। देशरक्षाके महायुद्धमें विजय सोवियत्की सैनिक गुण और साइन्सकी विजय है। युद्धने

दिखला दिया, कि हमारी जनताके लाभोंपर जो कोई भी हाथ बढ़ानेकी कोशिश करेगा, उसपर सोवियत् सबकी सेना भारी ध्वंसक प्रहार और चोट कर सकती है।

"युद्धमें विजय और अपने ऐतिहासिक कर्तव्यको पूरा करके आज सोवियत् जनताने फिर युद्धसे रुक गये अपने शान्तिपूर्ण रचनात्मक मार्गको पकड़ लिया है। इसपर आगे चलनेका सबसे बड़ा कदम महासोवियत् द्वारा स्वीकृत वह पंच-वार्षिक-योजना है, जिसके द्वारा राष्ट्रीय कृषि और उद्योगका पुनर्निर्माण और नवविकासका काम होने वाला है...।

"साथियो! हमने बड़ी-बड़ी सफलतायें प्राप्त की हैं, हमें इसकेलिये अभिमान है। बड़े आत्म-विश्वासके साथ हम अपने भविष्यको देख रहे हैं। तो भी अनुचित होगा, यदि हम इन सफलताओंसे फूलकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रह जायें। ऐसा करना हमारे राज्यके लिये खतरनाक होगा।

"यद्यपि युद्धका तूफान दब गया है, किन्तु अभी शान्ति और सुरक्षाकी स्थापना नहीं हुई। विश्वकी प्रतिगामी शक्तियाँ अपना सिर फिरसे उठा रही हैं। स्वतन्त्रता-प्रेमी जातियोंकी शान्ति और सुरक्षा सम्बन्धी चेष्टाओंमें वह बाधा डाल रही हैं। किन्तु कमकर जनसमूह फिर नये सिरेसे युद्ध नहीं चाहता, क्योंकि वह मानवताकेलिये मृत्यु और ध्वंस होगा। इसीलिये सभी देशोंकी जनतान्त्रिक शक्तियाँ स्थायी शान्ति और सुरक्षाकेलिये भगीरथ प्रयत्न कर रही हैं।

"सोवियत-जनता अपनी सेना, अपनी नौ सेना, अपनी आकाशसेनाके ऊपर पूरा सन्तोष कर सकती है। युद्धकी भट्ठीमें तपकर फौलाद बनी हमारी सेना विश्वकी सुरक्षाकेलिये एक विश्वसनीय दुर्गका काम देगी। वह हमारी जनताके शान्तिपूर्ण श्रम और राजके हितकेलिये विश्वासपात्र संरक्षक है। सारी जनताका समर्थन उसे प्राप्त है। सोवियत् योद्धा अपने कर्तव्यको ईमानदारी और जागरूकताके साथ पूरा करेगा। वह युद्धकी अपनी अनुभूतियोंसे

लाभ उठा सैनिक दक्षताको और पूर्ण करनेकी बराबर कोशिश करता रहेगा।

"चिरजीवी हो कमकर जनताका अन्तर्राष्ट्रीय मई दिवस !

"चिरजीवी हो महान् सोवियत् जन !

"सोवियत्की वीर सेना, नौ सेना और वायुसेनाकी जय !

"लेनिन-स्तालिनकी पार्टीकी जय !

"चिरजीवी हो सोवियत सरकार !

"चिरजीवी हो हमारा चतुर नेता और कमांडर महान् स्तालिन ! उरा !"

मार्शल रकोस्सोव्स्कीने अपना भाषण समाप्त किया। सोवियत् राष्ट्रगीत-के बजनेके साथ तोपोंकी सलामीसे हवा थर्राने लगी। सैनिक बाजेने संकेत किया, और वहाँ खड़ी सेना थोड़ा एक तरफ हटी। सैनिक नगाड़ेके साथ पल्टनें मार्च करने लगीं। पहली टोलीमें सेनाके सभी विभागोंके अफसर मार्च कर रहे थे।

उच्च सैनिक कालेजके कालमकी अगली पंक्तियोंमें फ्रुञ्जे सैनिक अकदमीके छात्र चल रहे थे, जिनमें अधिकांश युद्धके प्रमुख लड़ाके और "सोवियत्के संघवीर" मार्च कर रहे थे। द्नियेपरकी लड़ाईमें अपने पराक्रमकेलिये प्रसिद्ध "सोवियत् संघवीर" और अकदमीके प्रधानाध्यापक कर्नल-जनरल चिबिसोफ् अपने छात्रोंके आगे-आगे चल रहे थे।

उसके बाद जेर्जिन्स्की-, स्तालिन-, जुकोव्स्की-, कुइबिशेफ-, वोरोशि-लोफ़ सैनिक कालेजों और वायुसेना तथा जलसेनाके कमांडरोंकी अकदमियों, उच्च सैनिक-राजनीतिक तथा उच्च सैनिक दूतोंके जनरल स्टाफवाले कालेजोंके विद्यार्थी मार्च करते आये। ये सारे विद्यार्थी पक्के योद्धा थे।

पैदल सेना दर्शकोंके सामने बंदूकोंको हाथोंमें ताने प्रगट हुई। तमन राइफल-डिवीजनको देखकर लोगोंने तालियाँ बजाई, दोनतट, तमन प्रायद्वीप, कूबन और कैचके युद्धोंमें इसने अपनी कीर्ति अमर कर दी है, "सुवारोफ़

आर्डर" और "लाल पताका", प्राप्त करनेके सम्मान उसे प्राप्त हैं। फिर कर्नल फ़ेदेयेफ़ (जो कि "लाल पताका" और "अलेक्सान्द्र नेव्स्की-आर्डर" के सम्मानसे विभूषित हैं)के नेतृत्वमें प्रथम विशेष सेवस्तापोल रेजिमेंट आई। इसी रेजिमेंटमें प्रसिद्ध "सोवियत् संघ-वीर" सर्जेंट मेजर द्रोव्यस्की हैं, जिसने सेवस्तापोलके युद्धमें अकेले ७० जर्मनोंको तलवारके घाट उतारा, और सपुनगिरिपर लाल पताका गाड़ी। बटालियनके बाद बटालियन अपने उन योद्धाओंके साथ आई, जिन्होंने कियेफ़ और वार्सा, स्तालिनग्राद और प्राग, मिन्स्क और कुइनिग्सबेर्गके युद्धोंमें वीरता दिखलाई और बर्लिनके ऊपर विजयपताका गाड़ी।

स्तालिनने इनके अभिनन्दनमें हाथ उठाया, और हजारों हाथोंने उसका अनुकरण किया।

जिस समय पैदल सेना लेनिन-समाधिके पास पहुँच रही थी, आकाशमें विमानोंकी गर्जना सुनाई देने लगी। आगे-आगे उड़ते दो मोटरें विमानको लेफ्टेनेन्ट जेनरल स्वितोफ उड़ा रहे थे। इसने मास्को-रक्षाके समय वायुसैनिक स्क्वाड्रनका सचालन किया था। पहिलेके नौ-नौके त्रिकोणमें बमवर्षक उड़ रहे थे। लाल मैदानपर पहुँचते ही लोगोंने तालियाँ बजाईं। इसके बाद कपाटक बमवर्षकोंकी पाँती आई। यह पंचम ओर्शा डिवीजनके विमान थे, जिन्होंने स्तालिनग्राद, उक्रइन, और बाल्तिकमें जर्मनोंमें भगदड़ मचा दी थी। इन्होंने जर्मन-कारखानोंको ध्वस्त किया, और बर्लिनमें पहुँचकर लड़ाईको समाप्त किया। फिर शत्रुके हृदयको कँपा देनेवाले "पक्षधर टैंक" "स्तोर्मोविको"के इञ्जनोंकी घनघनाहट सुनाई देने लगी। यह जाप्रोज्ये स्तोर्मोविक डिवीजनके विमान थे, जिसके सैनानियोंमें २३ "सोवियत् संघवीर" हैं। विमानोंके प्रथम पक्षके सचालक "सोवियत्-संघ-वीर" लेफ्टेनेन्ट कर्नल फेदोतोफ़ था। सिर्फ इसकी रेजिमेंटमें ७ "सोवियत्-संघवीर" हैं।

चन्द मिनटों तक सन्नाटा रहा, फिर लड़ाके विमान विद्युत गतिसे आकाशमें उड़ते मास्को नदीके पारकी ओर चले गये। फिर जेट-सचालित 'दुर्ग' अति तीव्र गतिसे उड़ने लगे, अमेरिकन और बृटिश सैनिक प्रति-

निधियोंने कुछ आश्चर्य और आतन्कसे उनकी ओर नजर दौड़ाई—सोवियत् राष्ट्र विमान विद्यामें पिछड़ी नहीं है।

विमानोंके बाद रिसालेके सवार अपने घोड़ोंकी टापोंकी खड़खड़ाहटके साथ आये। यह बुद्योन्नी उच्च रिसाला-कालेजके अफ़सर थे, जिन्होंने अपने शक-पूर्वजों की वीरता और युद्ध-चातुरी को कभी कम न होने दिया, इनके प्रहारको जर्मन कभी भूल नहीं सकते।

रिसालेके निकलते ही संत वसिली गिर्जेकी ओरसे तोपखानेके चलनेकी गड़गड़ाहट सुनाई दी। सोवियत्का तोपखाना जिसके लिए कोई चीज भी अभेद्य न थी! फिर विमान-ध्वंसक तोपें और युद्धकी नायिका "कत्यूशा" मध्यम और महाकाय तोपें सामनेसे जाने लगीं। किरोवोग्राद् गारद डिवीजनका नाम वीरताकेलिये महासेनानायक (स्तालिन)की आज्ञा-पत्रोंमें बारह बार लिया गया था। सेवस्तापोल-विशेष-हाविट्ज़र ब्रिगेडने स्तालिनग्राद्में जर्मनोंको ध्वस्त किया, दोनवासमें म्युसके मोर्चेको तोड़ा, क्रिमिया और मिन्स्क (बेलोरुसिया)से शत्रुको भगाया, ओर्शा, रीगा और कोइनिग्सबेर्गमें अपने पराक्रमको दिखलाया। कितनोंपर उनके युद्धोंकी नामावली लिखी हुई थी। तोप नम्बर १४३२ने ११ शत्रुदुर्गों, चार तोप-बैटरियों, १० अग्निनाडों और दो स्वयंचालित तोपोंको तोड़ा।

अन्तमें मोटरवाली सेना—मोटरसाइकली सैनिक, मोटरी सैनिक और खुली ट्रक (खुली लारियों) वाली अवतरण-सेना—आई। इसके पीछे-पीछे स्वयंचालित तोपें और टैंक पहिले हलके, फिर मध्यम फिर विकराल पहुँचे। आगे चलनेवाले टैंककी छतपर "सोवियत् संघ-वीर" लेफ्टेनेंट जेनरल पोलुबोयारोफ़ बैठे थे। उनके पीछेके आठ टैंकोंमें "सोवियत् संघ-वीर" लेफ्टेनेंट फ़ोलोफ, "सोवियत् संघ-वीर" ज्येष्ठ लेफटिनेंट ग्रेम्न्का और दूसरे थे। साल भर पहिले ग्रेम्न्काका टैंक पहिला था, जो मार्गकी बाधाओंको ध्वस्त करते राइख् स्टाग् (जर्मन पार्लामेंट) पहुँचा। टैंक सैनिक स्किदालोफ़ने—जो सात बार लाल मैदानकी परेडमें भाग ले चुका था—इन जर्मन टैंकों,

पाँच कवचित सेनावाहक मोटरों, ६ तोपोंके साथ सैकड़ों जर्मनोंको मौतके घाट उतारा। उसके द्वारा संचालित टैंक टुकड़ीने बोरोनेजमें धूल लगाई, और चेकोस्लावाकियाकी राजधानी प्रागमें जाकर विश्राम लिया।

डेढ़ घण्टेमें सेना-यात्रा समाप्त हुई, फिर नागरिकोंका प्रदर्शन आरम्भ हुआ। इस जनसमुद्रमें (प्रदर्शनमें २० लाख नर-नारियोंने भाग लिया था) लाल झण्डे, लेनिन, स्तालिन और दूसरे नेताओंके चित्र चारों ओर दिखलाई पड़ते थे। मास्कोके आफिसोंके कर्मचारी, धातुकार, मशीनकार, रेलवेकर्मी, कपड़ा मिल मजूर, आहार फैक्टरी कमकर—मास्कोके सारे कमकर यहाँ जय कोलाहल के साथ चल रहे थे। उनके मुँहसे जयघोष निकल रहे थे…"साथी स्तालिनकी जय," "चिरजीवी हो महान् स्तालिन," "हमारी जनताके नेता साथी स्तालिन, उर्रा।"

हरेक कारखानेके मजदूर अपने कारखानोंके रेखाचित्र और चार्ट साथ-साथ ले चल रहे थे। इनमें मास्कोके 'स्तालिन जिले'के मोटरके बिजली-सामान प्रस्तुत करने वाले कमकर भी चल रहे थे, जो १६५०में अपना उत्पादन पाँच गुना अधिक करने वाले हैं। एक बिजली-लेम्प फैक्टरीके बन्दनवार-पर लिखा था—"हमने तीन करोड़ सत्तर लाख लेम्प इस साल दिये और १६५०में इससे दूना देंगे।" मास्कोके हरेक जिलेने अधिकसे अधिक आदमी प्रदर्शनमें भेजे थे। मास्कोरेत्स्की जिलेके एक लाख नर-नारी व्लादिमिर इलिच कारखानेके नेतृत्वमें चल रहे थे! प्रोलेतेरी जिलेके नेतृत्वमें स्तालिन मोटर कारखानेके पचीस हजार कमकर चल रहे थे। इस कारखानेने युद्धके समय उत्पादन-प्रतियोगितामें उनचालीस बार विजय प्राप्त की।

हरेक कालमके आगे तत्तत् कारखानेके प्रमुख कमकर चल रहे थे।

साइन्स-अकदमी और मास्को युनिवर्सिटी तथा दूसरे कालेजोंके हजारों विद्यार्थी, प्रोफेसर, अनुसन्धान-कर्त्ता जब लेनिन-समाधिके पास आये, तो बड़ी तालियाँ बजीं। स्तालिनके यह वैसे ही दुलारे हैं, जैसे कि लाल सैनिक।

साढ़े छः घण्टे तक प्रदर्शन चलता रहा लेकिन चार घण्टेके बाद मैं थक गया। पासका दिखलाना अब भी अनिवार्य था किन्तु दश सैकड़ेसे अधिक सैनिक रूखे न मिले। सैनिक पंक्तियोंसे भी अधिक मुश्किल प्रदर्शन पंक्तियोंको पार करना था। पहले तो मालूम हुआ कि नगर केन्द्रका रास्ता बन्द है लेकिन किसी तरह आध घण्टे बाद मैं होटल पहुँच गया। आज मेरे जावी मित्र सिमाउनके घरपर भोजन करना था फिर सिमाउन-दम्पतीके साथ हम नगर प्रदर्शनकेलिये निकले। आतिशबाजी बहुत सुन्दर थी, किन्तु हम समयपर पहुँच नहीं सके। शहरमें दीपमालिका थी। निवासघरोंपर अधिक दीप नहीं जल रहे थे, लेकिन दूकानों, सार्वजनिक गृहों और सरकारी इमारतोंपर दीपमाला चित्र-विचित्र और बड़े जोरकी हो रही थी। केन्द्रीय तारघरपर अनगिनत विद्युत-प्रदीप जल रहे थे! मोटे अक्षरोंमें "प्रथम मई" और बीचमें भूमंडलका गोल चित्र घूम रहा था। बगलमें पंचकोने तारेके साथ दीप पंक्तियाँ भी लहरा रही थीं। नर-नारियोंकी अपार भीड़ थी। सबकी आँखों-में मदिराकी रोशनी थी और गाने-नाचनेका तो कहना ही नहीं। बारह बजे रातको मैं तो होटलमें लौट आया किन्तु उत्सव अभी चल ही रहा था।

हाँ, एक बात और। आज एक जगह हरी घास देखी।

३. विजय महोत्सव

(१) सोवियत् क्यों विजयी हुआ

जर्मनीपर सोवियत्के विजयके बाद सोवियत् पार्लियामेंटका जो पहला निर्वाचन हुआ, उसमें अपने निर्वाचन क्षेत्रके मतदाताओंके सामने ९ फर्वरी १९४६को बोलशोई थियेटर (मास्को)में स्तालिनने एक बहुत ही महत्त्व-पूर्ण भाषण दिया, जिसमें युद्ध कालमें सोवियत् जनताकी तत्परता और वीरताके साथ आगेके प्रोग्रामपर अच्छा प्रकाश डाला गया है। वह भाषण यह है :

"साथियो, महासोवियत्‌के चुनावको हुए आठ साल हो गये। यह समय भाग्यके निबटारेवाली महत्त्वपूर्ण घटनाओंसे भरा रहा है। पहले चार वर्षों-में सोवियत् नर-नारीने तृतीय पंचवार्षिक योजना पूर्ण करनेमें सारी शक्ति लगाकर काम किया। पिछले चार वर्ष द्वितीय विश्वयुद्धमें जर्मन और जापानी आक्रमणकारियोंके विरुद्ध लड़नेमें गये। निःसन्देह इस कालमें युद्ध ही मुख्य घटना रही।

"यह सोचना गलत होगा, कि द्वितीय विश्वयुद्ध आकस्मिक घटना थी या कुछ खास राजनीतिज्ञोंकी भूलका परिणाम था। यद्यपि भूलें की गईं, इसमें सन्देह नहीं। वस्तुतः यह युद्ध आधुनिक इजारादारी पूँजीवादके आधारपर विकसित आर्थिक और राजनीतिक शक्तियोंका अवश्यम्भावी परिणाम था। मार्क्सवादियोंने अनेक बार घोषित किया, कि पूँजीवादी व्यवस्था अपने भीतर साधारण आर्थिक संकट और शस्त्र युद्धके बीज छिपाये हुए है। इसीलिये हमारे समयमें अन्तर्राष्ट्रीय पूँजीवादका विकास सरल और समान रूपसे आगे नहीं बढ़ सकता, बल्कि उसका रास्ता आर्थिक संकटों और युद्धके महासंकटोंके भीतरसे होता है। तथ्य यह है कि पूँजीवादी देशोंका विषम विकास विश्वकी पूँजीवादी व्यवस्थामें सन्तुलनके घोर रूपेण अस्त-व्यस्त होनेपर अपनेको कच्चे माल और बाजारोंसे वंचित समझनेवाले पूँजीवादी देश कोशिश करते हैं, कि स्थितिको बदलें और अपने हाथमें "प्रभावक्षेत्र"को लानेकेलिये तलवारके जोरसे दुनियाका फिरसे बटवारा करें। इसका परिणाम होता है, पूँजीवादी जगतका दो दलोंमें बँटना और उनके भीतर युद्ध होना।

"शायद भयङ्कर युद्धोंको रोका जा सकता था, यदि यह सम्भव होता, कि समय-समय पर आपसमें शान्तिपूर्ण समझौते द्वारा भिन्न-भिन्न देशोंमें उनके आर्थिक महत्त्वके साथ कच्चे माल और बाजार बाँट दिये जाते। लेकिन आजकलकी पूँजीवादी परिस्थितियोंके भीतर जिस तरह विश्वका आर्थिक विकास हो रहा है, उसमें वैसा करना सम्भव नहीं।

"इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध विश्व-अर्थनीतिकी पूँजीवादी व्यवस्थाके

प्रथम अर्थसंकटका परिणाम था और उसीके दूसरे अर्थसंकटका परिणाम यह द्वितीय विश्वयुद्ध था।

"इसका यह अर्थ नहीं, कि द्वितीय विश्वयुद्ध प्रथम विश्वयुद्धकी प्रतिच्छाया था। नहीं, द्वितीय विश्वयुद्धका स्वरूप प्रथम विश्वयुद्धसे भारी भेद रखता था। यह ध्यान रखना चाहिये कि मित्र देशोंपर आक्रमण करनेसे पहले मुख्य फासिस्ट राज्यें—जर्मनी, जापान और इटाली—ने मध्यवर्गीय जन-तान्त्रिक स्वतन्त्रताके चिह्न तक को अपने देशोंसे मिटा दिया। उसकी जगह उन्होंने पाशविक क्रूरता और आतंकका शासन स्थापित कर दिया, छोटे देशोंकी स्वतन्त्रता और स्वतन्त्र विकासके सिद्धान्तको पैरोंतले कुचल दिया। दूसरोंकी भूमि हड़पनेकी नीतिको अपना ध्येय घोषित किया और यह भी घोषित किया, कि हम सारी दुनियामें अपना आधिपत्य और फासिस्ट शासन स्थापित करते जा रहे हैं। यही नहीं बल्कि चेकोस्लावाकिया और मध्य-चीनपर अधिकारकर धुरी राष्ट्रोंने दिखला दिया कि सभी स्वतन्त्रता प्रेमी जातियोंको दास बनानेकी अपनी धमकीको वह कार्य-रूपमें परिणत कर सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रथम विश्वयुद्धसे इस द्वितीय महायुद्धकी समानता नहीं। धुरी राष्ट्रोंके विरुद्ध द्वितीय विश्वयुद्धका स्वभाव शुरूसे ही फासिस्ट-विरोधी था। वह स्वतंत्रताका युद्ध था जिसका एक उद्देश्य जन-तान्त्रिक स्वतन्त्रताकी पुनः स्थापना भी थी। धुरी राष्ट्रोंके विरुद्ध सोवियत्-संघके मैदानमें उतरनेसे द्वितीय विश्वयुद्धका स्वतन्त्रता-समर्थक और फासिस्ट-विरोधी रूप और भी स्पष्ट हो गया।

"यह है वस्तुस्थिति जहाँ तक कि द्वितीय विश्वयुद्धकी उत्पत्ति और स्वरूपका सम्बन्ध है।

"मैं समझता हूँ, और इसे सब स्वीकार करेंगे कि यह युद्ध जातियोंके जीवनमें एक आकस्मिक घटना न थी न हो सकती थी। वस्तुतः यह युद्ध जातियोंकेलिये अपना अस्तित्व कायम रखनेका युद्ध हो गया और इसीलिये वहाँ चुटकी बजाते फैसला कर लेनेकी बात नहीं रह गई।

"जहाँ तक हमारे देशका सम्बन्ध है, इतना क्रूर और कटुयुद्ध हमारे सारे

इतिहासमें नहीं हुआ। युद्धका एक पक्ष यह बहुत बुरा और भयङ्कर अवश्य है, परन्तु साथ ही यह लड़ाई एक बड़ी पाठशाला थी, जिसमें जनता की सारी शक्तियोंकी परीक्षा हुई। युद्ध ने मैदान और घरके भीतरकी सारी बातोंको नंगा करके रख दिया। इसने राज्यों, सरकारों, राजनीतिक दलोंके असली चेहरेसे बड़ी निष्ठुरताके साथ सारे अवगुंठनों और पर्दोंको उतारकर फेंक दिया। बिना मुलम्मे और आवरणके; असली दोषों और गुणोंके साथ उसने उन चेहरोंको लोगोंके समक्ष रख दिया। हमारी सोवियत् व्यवस्था, हमारे राज्य, हमारे शासन और हमारी कम्यूनिस्ट पार्टीकेलिये यह युद्ध एक परीक्षा थी। उसने उनके कामके बारेमें निर्णय देते मानो कहा—यह तुम्हारी जनता और सङ्गठन है, यह उनके काम और जीवन है; उनकी तरफ अच्छी तरह देखो और उनके कामोंके अनुसार पारितोषिक दो।

"युद्धका यह एक नगद रूप था।

"हमारेलिये, वोटरोंकेलिये यह स्थिति बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस समय बहुत जल्दी और साकार रूपेण पार्टी और उसके मेम्बरोंकी कीमत कूती जा सकती है, ठीक निर्णय किया जा सकता है। दूसरा समय होता, तो हमें पार्टीके प्रतिनिधियोंके व्याख्यान और रिपोर्टें पढ़नी पड़तीं, उनके शब्दोंकी उनके कामोंसे तुलना करनी पड़ती, विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालना पड़ता। यह कठिन और जटिल काम था और यह भी नहीं कहा जा सकता कि भूल न होती। लेकिन आज, युद्धके बाद बात दूसरी है। युद्धने हमारे संगठनों, नेताओंकी परीक्षा करके स्वयं परिणाम सुना दिया है। आज हमारे लिये यह देखना बिलकुल आसान है, कि स्थिति क्या है, इस तरह हम ठीक निर्णय पर पहुँच सकते हैं।

"अच्छा, तो युद्धके परिणाम क्या हैं?

"एक मुख्य परिणाम है, जिसमें दूसरे सारे परिणाम अन्तर्हित हैं, वह परिणाम यह है कि इस युद्धमें हमारे दुश्मन हारे और हम अपने मित्रोंके साथ विजयी हुए। हमने अपने शत्रुओं पर पूर्ण विजय के साथ युद्धका अन्त

हुआ। यह युद्धका मुख्य परिणाम है। किन्तु यह परिणाम एक अति सामान्य-सा है और हम इतना ही कहकर रुक नहीं सकते। हाँ, यह ठीक है कि मानवनाके इतिहासमें, जिसका दूसरा उदाहरण नहीं मिलता, ऐसे इस द्वितीय विश्वयुद्धमें शत्रुको ध्वस्त करना यह विश्वकी ऐतिहासिक विजय है। यह सब सच है, किन्तु यह परिणाम अतिसामान्य है, और अपने विजयके महान् ऐतिहासिक महत्त्वके समझनेकेलिये हमें बातको और साकार रूपमें देखना चाहिये।

"अच्छा, तो अपने शत्रुओंपर हमारी इस विजयका क्या अर्थ लेना चाहिये? हमारे देशकी आन्तरिक शक्तियोंके विकास और स्थितिके सम्बन्धमें इस विजयका क्या महत्त्व है?

"हमारे विजयका सबसे पहला अर्थ यह है कि हमारी सोवियत् सामाजिक व्यवस्थाने विजय पाई, सोवियत् सामाजिक व्यवस्था युद्धाग्निकी परीक्षामें सफल रही। अपने जीवटको असन्दिग्धरूपमें उसने सिद्ध कर दिया। आप जानते हैं कि विदेशी पत्र कितनी ही बार कहते थे, सोवियत् सामाजिक व्यवस्था एक खतरेसे भरा प्रयोग है, जिसका असफल होना अनिवार्य है, सोवियत् व्यवस्था ताशका महल है, इसकी जड़ वास्तविक जीवनमें नहीं है। चेका (कम्युनिस्ट पार्टीकी कार्यकारिणी)ने लोगोंपर इसे लाद दिया है। बाहरसे एक हलका धक्का काफी है, इस ताशके महलको धराशायी करनेकेलिये।

"अब हम यह कह सकते हैं, विदेशी पत्रोंके उस निर्मूल दावेको युद्धने गलत साबित कर दिया। उसने दिखला दिया कि सोवियत् सामाजिक व्यवस्था वस्तुतः जनताकी व्यवस्था है, यह जनताके अन्तस्तलसे निकली है, और उसकी शक्ति इसे प्राप्त है। और यह भी कि सोवियत् सामाजिक व्यवस्था ऐसा सामाजिक सङ्गठन है, जो कि पूर्णतया स्थायी और हर तरहकी कठिनाइयोंको सहनेकी शक्ति रखती है।

"और अधिक क्या कहना है? आज इसका सवाल ही नहीं रह गया है, कि सोवियत् सामाजिक व्यवस्था स्थायी है या नहीं। क्योंकि युद्धकी यथार्थ

शिक्षाओंने ऐसा कर दिया है, कि कोई भी सन्देहालु आज सोवियत् सामाजिक व्यवस्थाके जीवटके बारेमें सन्देहकी आवाज नहीं निकाल सकता। अब तो सोवियत् सामाजिक व्यवस्थाने इतर व्यवस्थासे अपनेको अधिक स्थायी अधिक सङ्कट सहन-समर्थ प्रमाणित कर दिया है। समाजके सङ्गठनकी व्यवस्था दूसरी व्यवस्थाओंसे श्रेष्ठ है।

"दूसरा अर्थ इस विजयका यह है, कि हमारी सोवियत् राज्य-प्रणाली विजयी हुई और हमारे बहुजातिक राज्यने युद्धकी परीक्षामें डटे रहकर अपने जीवटको प्रमाणित किया है।

आप सब जानते हैं कि विदेशी पत्रकारोंने अनेक बार लिखा कि सोवियत् का बहुजातिक राज्य एक 'कृत्रिम और अवांछनीय ढाँचा' है, किसी भी बड़ी पेंचीदगीके आनेपर सोवियत्-संघका छिन्न भिन्न होना अनिवार्य है। सोवियत्-संघके भाग्यमें भी वही बदा है, जो कि आस्ट्रिया-हंगरीका हुआ।

"आज हम कह सकते हैं कि युद्धने विदेशी पत्रोंके बिलकुल निर्मूल दावेका खण्डन कर दिया। युद्धने दिखला दिया, कि सोवियत्की बहुजातिक राज्य-व्यवस्थाने परीक्षाको सफलताके साथ पास किया। यही नहीं, युद्धके दौरानमें वह और भी मजबूत हो गई और अपनेको पूरी तौरसे बाधा-सहन-समर्थ राज्य साबित किया। यह भद्र पुरुष समझ नहीं सके, कि हमारे राज्यकी आस्ट्रिया-हंगरीसे तुलना नहीं की जा सकती। हमारा बहु-जातिक राज्य बुर्जुआ आधारपर नहीं अवलम्बित था, कि राष्ट्रीय अविश्वास और राष्ट्रीय शत्रुताके भावोंको उत्तेजित करना। हमारा बहुजातिक राज्य सोवियत्-आधार पर अवलम्बित है, जो कि हमारे राज्यकी जातियोंके भीतर मित्रता और भाई चारेके, सहयोगके भावोंको बढ़ाता है।

और अब तो युद्धसे जो शिक्षा मिली है, उससे यह भद्र पुरुष इससे इनकार करनेका साहस नहीं रखते, कि सोवियत् राज्य-व्यवस्था स्थिर रहनेकी क्षमता रखती है। आज सोवियत् राज्य व्यवस्थाके जीवटके विषयमें प्रश्न ही नहीं हो सकता, क्योंकि उसके बारेमें सन्देहकी गुञ्जाइश नहीं है। अब तो बात

यह है, कि सोवियत् राज्य-व्यवस्थाने अपने बहुजातिक राज्यकेलिये एक आदर्श उपस्थापित किया है। सोवियत-राज्य व्यवस्था ऐसी राज्य-संगठन-व्यवस्था है, जिसके द्वारा जातीय प्रश्न और जातियोंमें सहयोगकी समस्या इतनी अच्छी तरहसे हल कर दी गई, जितना किसी दूसरे बहुजातिक राज्यमें नहीं हुआ।

तीसरा अर्थ हमारी विजयका यह है कि सोवियत् सैनिक शक्ति विजयी हुई, हमारी लालसेना विजयी हुई, लाल-सेनाने युद्धकी सारी कठिन परीक्षाओंको वीरताके साथ सहा, हमारे दुश्मनोंकी सेनाओंको पूरी तौरसे खदेड़ दिया और युद्धसे एक विजयीके तौरपर बाहर आई।

अब मित्र या शत्रु सभी स्वीकार करते हैं, कि लालसेनाने अपने महान् कर्तव्यके योग्य अपनेको सिद्ध किया, लेकिन यही बात छः वर्ष पहले युद्धसे पहलेके समयमें नहीं थी। आप जानते हैं, कि प्रमुख विदेशी पत्रकार और बहुतसे सेनाविशेषज्ञ अनेक बार घोषित कर चुके थे, कि लालसेनाकी स्थिति देखकर भारी संदेह होता है, लालसेनाके पास अच्छे हथियार नहीं, उसके पास अच्छे संचालक जनरल नहीं, उसमें हिम्मत बहुत कम है। शायद रक्षात्मक युद्धमें वह कुछ काम दे सके, किन्तु आक्रमणात्मक युद्धकेलिये वह बेकार है, और यदि जर्मन सेनाने आक्रमण किया, तो वह मट्टीके पुतलेकी तरह चूर्ण-विचूर्ण हो जायेगी। इस तरहके वक्तव्य केवल जर्मनी हीमें नहीं बल्कि फ्रांस, इंगलैंड और अमेरिकामें भी दिये जाते थे।

आज हम कह सकते हैं, कि युद्धने ऐसे सारे वक्तव्योंको निर्मूल और बकवास सिद्ध कर दिया। युद्धने दिखला दिया, कि लालसेना 'मिट्टीका महा-काय पुतला' नहीं बल्कि यह समसामयिक दुनियाकी अव्वल दर्जेकी सेना है, जिसके पास आधुनिक हथियार हैं, महाअनुभवी सेना-संचालक हैं और उसकी हिम्मत और लड़नेकी योग्यता महान् है। यह भूलना नहीं होगा, कि यह लालसेना थी जिसने उस जर्मन सेनाको पूरी तौरसे ध्वस्त कर दिया, जो कि कल तक यूरोपीय राज्योंकी सेनाओंको आतंकित किये हुए थी।

यह भी याद रखना होगा, कि लाल सेनाके आलोचक दिन-पर-दिन कम होते जा रहे हैं। यही नहीं बल्कि विदेशी पत्र अधिक और अधिक बार-बार लालसेनाके सुन्दर गुणोंकी बातें लिखते हैं। उसके सैनिकों और कमांडरों, उसकी सैनिक सूझ और दाव-पेंचकी निर्दोषताकी प्रशंसा करते हैं। यह बिल्कुल स्वाभाविक है। मास्को, स्तालिनग्राद, कुर्स्क, बेलगोरद, कियेफ्, किरावोग्राद, मिन्स्क, बोब्रुइस्क, लेनिनग्राद, तलिन्, जासी, ल्वोफ्में, बिस्तुला-नीमन्-डुलाइय (डैन्युब)—ओडरके तटोंपर, वीना और बर्लिनमें लालसेनाकी चमत्कारिक बिजयके बाद इसे मानना ही पड़ेगा, कि लालसेना अव्वल दर्जेकी सेना है, और उससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

शत्रुके ऊपर हमारे देशकी विजयका यह है साकार अर्थ।

यह है युद्धका मुख्य परिणाम।

यह सोचना गलत होगा, कि इस तरहकी ऐतिहासिक विजयका लाभ तब भी हो सकता था, यदि पहले ही से क्रियात्मक रक्षाकेलिये देशने तैयारी न की होती। यह कहना और भी गलत होगा, कि इस तरहकी तैयारी थोड़ेसे समय—तीन या चार सालमें की जा सकती थी। यह कहना उससे भी ज्यादा गलती होगी, कि हम अपनी सेनाकी वीरताके कारण विजयी हुए हैं। यह ठीक है कि वीरताके बिना विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, लेकिन केवल वीरता इसकेलिये काफी नहीं है। उसीसे अच्छी तरह रसदसे सङ्गठित, सुशिक्षित कमांडरों द्वारा परिचालित प्रथम श्रेणीके हथियारोंसे सुसज्जित एक बड़ी सेना रखने वाले शत्रुको हराया जा सके। ऐसे शत्रुके प्रहारको सहना, उसे पीछे हटाना, फिर उसे पूर्णतया पराजित करना—इस कामकेलिये हमारी सेनाकी अद्वितीय वीरताके साथ-साथ नवीनतम और पर्याप्त परिमाणमें हथियारों, सुसङ्गठित और पर्याप्त परिमाणमें रसदकी भी जरूरत थी। लेकिन इन चीजोंकेलिये मूल चीजोंकी बड़ी जरूरत थी। मूल चीजें जैसे—हथियार, सरंजाम और मशीनके बनानेकेलिये फैक्ट्रियोंको धातु जरूरी है, कारखानों और रेलोंके चलते रहनेकेलिये ईंधनकी जरूरत है, और खानेकेलिये अनाजकी जरूरत है।

क्या हम कह सकते हैं, कि द्वितीय विश्वयुद्धमें शामिल होनेसे पहले अपनी इन मुख्य आवश्यकताओंको पूरा करनेकेलिये, सामग्री पैदा करनेकेलिये आवश्यक अल्पतम क्षमता हमारे पास थी ? मैं समझता हूं हम जवाब 'हाँ'में दे सकते हैं। इस भारी कामकी तैयारीकेलिये हमने राष्ट्रीय आर्थिक विकासकी तीन पंचवार्षिक योजनाएँ पूरी कीं, जिसने कि उस सामग्रीको पैदा करनेकी क्षमता हमें प्रदान की। जो भी हो यह तो कहना ही पड़ेगा, कि इस विषयमें द्वितीय विश्वयुद्धके पहले १९४०में हम उससे कहीं अधिक साधन-संपन्न थे जितना कि रूस प्रथम विश्वयुद्धके पहले १९१३में था।

द्वितीय विश्वयुद्धसे पहले हमारे पास क्या भौतिक क्षमता मौजूद थी ?

इस बातको समझानेकेलिये मुझे आपको संक्षेपमें बतलाना होगा, कि कम्युनिस्ट पार्टीने हमारे देशकी क्रियात्मक रक्षाकेलिये क्या किया ?

यदि हम द्वितीय युद्धके तुरन्त पहले १९४०के आँकड़ोंको १९१३—प्रथम विश्वयुद्धके आरम्भके आँकड़ोंसे तुलना करें, तो हम देखेंगे कि १९१३में हमारे देशने ४२ लाख २० हजार टन कच्चा लोहा, ४२ लाख ३० हजार टन फौलाद, २ करोड़ ९० लाख टन कोयला, ९० लाख टन तेल, २ करोड़ १६ लाख टन विक्रेय अनाज, ७ लाख ४० हजार टन कपास पैदा किया। यह हमारी भौतिक क्षमता थी प्रथम विश्वयुद्धमें शामिल होते वक्त। प्राचीन रूसके पास यह आर्थिक आधार था, जिसका युद्ध-संचालनमें उपयोग किया जा सकता था।

अब जरा १९४०को देखिये। उस साल हमारे देशने डेढ़ करोड़ टन कच्चा लोहा पैदा किया, जो कि १९१३से करीब-करीब चारगुना था; १ करोड़ ८३ लाख टन फौलाद जो १९१३से साढ़े चारगुना था; १६ करोड़ ६० लाख टन कोयला यानी १९१३से साढ़े पाँचगुना; ३ करोड़ १० लाख टन तेल यानी १९१३से साढ़े तीन गुना; ३ करोड़ ८३ लाख टन विक्रेय अन्न यानी १९१३से १ करोड़ १७ लाख टन अधिक; और २७ लाख टन कपास यानी १९१३से साढ़े तीन गुना अधिक।

यह थी हमारी भौतिक क्षमता जब हम द्वितीय विश्वयुद्धमें शामिल हुए। सोवियत्-संघका यह आर्थिक आधार था, जिसको लेकर वह युद्धका संचालन कर सकता था।

अन्तर कितना भारी है, यह आप देख सकते हैं। उत्पादनमें इस तरहकी अभूतपूर्व वृद्धि एक पिछड़े देशकी उन्नतिकी ओर मामूली सीधी-सी प्रगति नहीं कही जा सकती। यह एक कुदान थी, जिसमें हमारी मातृ-भूमि पिछड़े देशसे उन्नतिशील देशके रूपमें, कृषि-प्रधान देशसे उद्योग-प्रधान देशमें परिणत हो गई।

यह ऐतिहासिक परिवर्तन तीन पञ्चवार्षिक योजनाओं में हुआ, यानी प्रथम पंचवार्षिक योजनाके प्रथमवर्ष १९२८से आरम्भ करके। तब तक हम प्रथम विश्वयुद्ध और गृह-युद्धकी चोटोंको ठीक करने और नष्ट-भ्रष्ट उद्योग को फिरसे चलानेमें व्यस्त थे। साथ ही हमें यह भी याद रखना होगा कि प्रथम पञ्चवार्षिक योजना चार सालोंमें पूरी हुई, और तृतीय पञ्चवार्षिक योजना चौथे वर्षमें ही युद्धके कारण रुक गई। इस प्रकार सिर्फ तेरह सालमें हमारा देश कृषि-प्रधान देशसे उद्योग-प्रधान देशमें परिणत हुआ।

यह नहीं माना जा सकता कि इतने बड़े कामको पूरा करनेकेलिये तेरह वर्ष नगण्यसे हैं। यही बात है कि उस वक्त विदेशी पत्रोंने इन आँकड़ोंके छापने-पर परस्पर-विरोधी कितनी ही आलोचनाएँ कीं। हमारे मित्रोंने समझा कि यह एक चमत्कार है। हमारे शत्रुओंने घोषित किया कि पञ्चवार्षिक योजना 'बोलशेविक प्रोपेगेंडा' और 'चेकाकी चाल' है। किन्तु चमत्कार आज-कलके युगमें नहीं होता और 'चेका' इतनी शक्तिमान् नहीं है, कि सामाजिक विकासके नियमोंको बन्द कर दे। विदेशका जनमत इस बातको माननेके लिये तैयार हुआ।

कौन सी नीति स्वीकारकर कम्युनिस्ट पार्टी इतने थोड़ेसे समयमें देशमें इन भौतिक क्षमताओंको तैयार करनेमें सफल हुई?

सबसे पहले देशके उद्योगीकरणकी सोवियत् नीति द्वारा।

देशके उद्योगीकरणका सोवियत् ढंग पूँजीवादी उद्योगीकरणके ढंगसे बिल्कुल भिन्नता रखता है। पूँजीवादी देशोंमें आमतौरसे उद्योगीकरणका आरम्भ हल्के उद्योगोंसे होता है क्योंकि हल्के उद्योगमें कम पूँजीकी आवश्यकता होती है और जल्दीसे पूँजी लौटने लगती है। और यह भी कि हल्के उद्योगसे लाभ उठाना भारी उद्योगकी अपेक्षा आसान है। इसीलिये पूँजीवादी देशोंमें उद्योगीकरणका पहला लक्ष्य हल्के उद्योगकी ओर होता है।

जब काफी समय बीत जाता है और हल्के उद्योगसे खूब लाभ जमा हो जाता है, बैंकोंमें वह एकत्रित होता है, तब भारी उद्योगकी बारी आती है, और एकत्रित पूँजी धीरे-धीरे भारी उद्योगमें लगाई जाने लगती है... किन्तु यह बहुत लम्बा रास्ता है, जिसकेलिये भारी समय कई दशाब्दियाँ चाहिए और तब तक देशको प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जिसमें कि हल्का उद्योग विकसित हो जाय। तब तक हल्का उद्योग बिना भारी उद्योगके ही जैसे-तैसे काम चलाता है। यह स्वाभाविक है, कि कम्युनिस्ट पार्टी ऐसे लम्बे रास्तेको न स्वीकार कर सकती थी। पार्टी जानती थी कि युद्धके बादल शिरपर मँडरा रहे हैं, देश बिना भारी उद्योगके अपनी रक्षा नहीं कर सकता, भारी उद्योगका विकास जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी करना चाहिए, पीछे रहनेका मतलब सब कुछ खोना है। पार्टीको लेनिनके शब्द याद थे कि बिना भारी उद्योगके देशकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करना असम्भव है, और बिना इसके सोवियत-व्यवस्था नष्ट हो सकती है। इसीलिये हमारे देशकी कम्युनिस्ट पार्टीने उद्योगीकरणके आम तरीकोंको छोड़ दिया और भारी उद्योगके विकासके साथ देशके उद्योगीकरणका काम शुरू किया। यह करना बहुत कठिन था, किन्तु असम्भव नहीं था। कल-कारखानों और बैंकोंका राष्ट्रीय-करण इसमें भारी सहायक हुआ। इसने सम्भव कर दिया, कि तेजीके साथ जमा किया जाय और फिर उसे भारी उद्योगमें लगाया जाय।

इसमें सन्देह नहीं कि बिना इसके इतने थोड़े समयमें देशका एक उद्योग-प्रधान देशमें परिवर्तन करना असम्भव था।

दूसरी नीति जो सहायक हुई, वह था कृषिका समूहीकरण (साझीकरण)। कृषिमें अपने देशके पिछड़ेपनको दूर करने और देशको विक्रेय अन्न, कपास आदिको अधिक परिमाणमें पैदा करनेकेलिये यह अनिवार्य था, कि छोटी-छोटी खेतीको बड़े बड़े फार्मोंमें परिवर्तित कर दिया जाय। क्योंकि सिर्फ बड़े पैमाने-की खेती ही नई मशीनों और कृषि-विज्ञानके सारे आविष्कारोंको इस्तेमाल कर सकती है।, और वह इस तरह अधिक परिमाणमें विक्रेय-वस्तुओंको पैदा कर सकती है। लेकिन बड़े पैमानेकी खेती भी दो प्रकार की है—पूँजीवादी और सामूहिक। कम्युनिस्ट पार्टी कृषिके विकासमें पूँजीवादी तरीकेको नहीं स्वीकार कर सकती थी, सिर्फ सिद्धान्तके ही ख्यालसे ही नहीं, बल्कि इसलिये भी कि इसके विकासमें बहुत लम्बे समयकी आवश्यकता होती; और वह किसानोंको गरीब बना खेतिहर-मजूरके दरजेमें पहुँचा देती। इसीलिये कम्युनिस्ट पार्टीने कृषिके सामूहीकरणका रास्ता लिया। वह रास्ता जिसमें किसानोंके खेतोंको सामूहिक फार्म (कलखोज)में एकत्रितकर खेतीको बड़े पैमानेपर करना। सामूहीकरणका तरीका बहुत ही अच्छा प्रगतिशील ढंग सिद्ध हुआ, सिर्फ इसीलिये नहीं, कि इसने किसानोंको गरीबीमें नहीं ढकेला, बल्कि इसलिये भी कि और विशेषतः इसलिये कि इसने थोड़ेसे वर्षोंमें सारे देशको ऐसे कलखोजों (सामूहिक खेतोंसे) ढाँक दिया जो कि नये तरहकी मशीनों और कृषि-विज्ञान-के सारे आविष्कारोंको इस्तेमाल कर सकते थे, और देशको भारी परिमाणमें विक्रेय मालको दे सकते थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि सामूहीकरणकी नीतिके बिना इतने कम समय-में हम अपनी कृषिके युगोंसे चले आये पिछड़ेपनको हटा नहीं सकते थे।

यह नहीं कहा जा सकता, कि पार्टीकी नीतिका विरोध नहीं हुआ। सिर्फ पिछड़े ही लोग नहीं—जो कि सदा नई चीजको गाली देते हैं—बल्कि पार्टी-के कितने ही प्रमुख मेंबरोंने भी बराबर पार्टीको पीछे खींचनेकी कोशिश की और हर तरह से चाहा कि उसे विकासके आम पूँजीवादी पथपर ले चला जाय। त्रोत्सकियों और दक्षिणपक्षियोंकी सारी पार्टी-विरोधी चालें, तथा

हमारी सरकारकी योजनाओंको तोड़ने-फोड़नेकी उनकी सारी 'कार्रवाइयाँ' सिर्फ एक ही लक्ष्य रखती थीं, कि पार्टीकी नीतिको असफल बनायें और उद्योगी-करण तथा सामूहीकरणके काममें रुकावट डालें। किन्तु पार्टी एक ओरकी धमकियों या दूसरी ओरके रोने-काननेकी पर्वाह न कर अपने रास्तेपर दृढ़ रही। इसकेलिये पार्टीकी प्रशंसा करनी चाहिये, कि उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा, हवाके रुखके प्रतिकूल जानेमें भयभीत न हुई और अपने नेतृत्वको उसने सदा अक्षुण्ण रखा। इसमें सन्देह नहीं कि बिना ऐसी दृढ़ता और निश्चितमनस्कताके देशके उद्योगीकरण और खेतीके सामूहीकरणकी नीतिको वह चला नहीं सकती थी।

क्या लालसेनाको हथियारसे सुसज्जित और युद्ध-उत्पादनके विकासकेलिये जो भौतिक क्षमता हाथ आई, उसका कम्युनिस्ट पार्टीने ठीक-ठीक उपयोग किया?

मैं समझता हूँ, कि वह उपयोग कर सकी और पूरी सफलताके साथ। युद्धके प्रथम वर्षमें जब कि कल-कारखानोंको पूर्वकी ओर हटाया जा रहा था और जिसके कारण युद्ध-सामग्री का उत्पादन रुक गया था, यदि उस वर्षको हटा दें तो, हम देखेंगे कि युद्धके बाकी तीन वर्षोंमें उसने बड़ी सफलताके साथ काम किया और युद्ध-क्षेत्रमें काफी परिमाणमें तोप, मशीनगन, राइफल, विमान टैंक और गोला-बारूद ही नहीं भेजा, बल्कि काफी सामग्री जमा भी कर ली।

यह भी मालूम है, कि हमारे हथियार जर्मन हथियारोंसे निम्नकोटिके नहीं, बल्कि सब मिलाकर उनसे अच्छे थे।

यह मालूम है कि युद्धके पिछले तीन सालोंमें हमारे कारखानोंने प्रतिवर्ष औसतन् तीस हजार टैंक स्वयंचालित तोपें और कवचित मोटरें तैयार कीं।

यह भी मालूम है कि इस कालमें हमारे कारखानोंने प्रति वर्ष चालीस हजार हवाई जहाज तैयार किये।

और यह भी कि हमारे आर्डिनेन्स (हथियार) फैक्टरियाँ प्रतिवर्ष हर आकार-प्रकारकी तोपें, साढ़े चार लाख तक हल्की और भारी मशीनगनें, तीस लाखसे ऊपर रायफलें और बीस लाखसे अधिक टॉमीगनें हर साल बनाती रहीं।

आखिरी बात यह भी मालूम है, कि हमारे मोटर कारखाने १९४२-४४के बीच प्रतिवर्ष एक लाख मोटरें (नजदीक मारनेवाली तोपें) तैयार कीं।

इस सबके साथ यह स्वाभाविक ही था, कि उनकी आवश्यकताओंके अनुसार तोपके गोले, विविध प्रकारके मोटरके शेल (गोले), विमानोंके बम तथा रायफल और मशीनगनोंकी कार्तूसें तैयार कीं।

उदाहरणार्थ सिर्फ १९४४में चौबीस करोड़ शेल, बम्ब और मोटर-शेल बने। सात करोड़ चालीस लाख छोटे हथियारोंकी गोलियाँ भी बनीं। लाल सेनाको हथियार और गोली बारूद कैसे दिये गये, उसका यह चित्र है।

आप देख रहे हैं कि हमारी सेनाके हथियारोंका यह चित्र प्रथम विश्वयुद्धसे कोई समानता नहीं रखता। उस युद्धमें तोपोंकी शेल और गोलोंका अकाल था। सेना बिना टैंक और विमानके लड़ रही थी। और बन्दूक भी तीन सिपाहियोंपर एक थी।

जहाँ तक सेनाकी रसद और वर्दीका सवाल है, यह सभी जानते हैं, कि उसका कोई टोटा नहीं था। यही नहीं, गोदाममें उसका काफी अखीरा जमा था।

यह तो बात हुई, कि हमारे देशकी कम्युनिस्ट पार्टीने युद्ध छिड़नेसे पहले और युद्धके दौरानमें क्या काम किया।

अब कुछ शब्द मुझे कहने हैं अदूर भविष्यमें व्यवहारमें लायी जानेवाली कम्युनिस्ट पार्टीकी योजनाके सम्बन्धमें। यह मालूम है कि यह योजना जल्दी ही पेश होनेवाली नई पंचवार्षिक योजनामें शामिल है। नई पंचवार्षिक योजना-

के मुख्य उद्देश्य हैं युद्ध द्वारा ध्वस्त जिलोंको फिर यथापूर्व स्थितिमें ले आना; उद्योग और कृषिको युद्धके पूर्ववाले तलपर लाकर उसे काफी परिमाणमें और आगे ले जाना। कहनेकी जरूरत नहीं कि राशनकी व्यवस्था शीघ्र ही बन्द कर दी जायेगी। व्यवहारकी वस्तुओंके उत्पादनकी वृद्धिपर खास तौरसे ध्यान दिया जायेगा। सभी तरहके मालकी कीमतोंको गिराकर कमकर जनताके जीवन तलको ऊपर उठाना और सब तरहकी साइन्स-सम्बन्धी अनुसन्धान-संस्थाओंका व्यापक रूपमें निर्माण, जिसमें कि साइन्स अपनी क्षमताओंके विकासकेलिये अवसर पा सके।

मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि यदि हम अपने साइन्सवेत्ताओंकी ठीकसे सहायता करें तो अदूर भविष्यमें विदेशोंकी साइन्स सम्बन्धी सफलताओंको वह पकड़ ही नहीं लेंगे, बल्कि उनसे और आगे बढ़ जायेंगे।

जहाँ तक लम्बी अवधिकी योजनाओंका सम्बन्ध है, पार्टी राष्ट्रीय धनको बहुत ऊँचे ले जानेकेलिये संगठन करना चाहती है, जिसमें कि हम अपने औद्योगिक उत्पादनको खूब बढ़ा सकें और युद्धपूर्वके उत्पादनकी तुलनामें उसे तिगुना कर सकें। हमें उस अवस्थामें पहुँचना है, जब कि हमारा देश प्रतिवर्ष पाँच करोड़ टन तक कच्चा लोहा, छै करोड़ टन तक फौलाद, पचास करोड़ टन तक कोयला, छै करोड़ टन तक तेल पैदा कर सके। केवल तभी हम समझ सकेंगे कि अब हमारा देश सब तरहकी दुर्घटनाओंसे बिल्कुल सुरक्षित है। मैं समझता हूँ इसकेलिये यदि अधिक नहीं तो तीन और पंचवार्षिक योजनाओंकी आवश्यकता पड़ेगी। यह किया जा सकता है, और हमें करना होगा। कम्युनिस्ट पार्टीके अचिरभूत और भविष्यकी योजनाके सम्बन्धमें आपके सामने मेरी यह संक्षिप्त रिपोर्ट है। अब आपको फैसला देना है कि पार्टी कहाँ तक ठीक काम करती रही और वह इससे बेहतर ढंगसे काम कर सकती थी या नहीं?

एक कहावतमें कहा गया है कि विजेताके बारेमें फैसला नहीं करना चाहिये, उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिये, उसपर अंकुश नहीं रखना

चाहिये। किन्तु, यह ठीक नहीं। विजेताके बारेमें फैसला किया जा सकता है और करना चाहिये। उसकी आलोचना की जा सकती है, और करनी चाहिये। उसपर अंकुश रखा जा सकता है, और रखना चाहिये। ऐसा करना सिर्फ काम केलिये नहीं बल्कि स्वयं विजेताओंकेलिये भी श्रेयस्कर है। इससे उनका अहंकार कम होगा और नम्रता बढ़ेगी।

(२) विजय दिवसकी घोषणा

स्तालिनने विजय-घोषणा करते हुए कहा—

"साथियो! देशबन्धु नर-नारियो! जर्मनीके ऊपर विजयका महान् दिवस आ गया। लाल सेना और हमारे मित्रोंकी सेनाओंने फासिस्त जर्मनीको घुटने टेकनेकेलिये मजबूर किया। उसने हार स्वीकार की और बिना शर्तके आत्म-समर्पणको घोषित किया।

७ मईको राइम्स शहरमें आत्म-समर्पणके बारेमें प्रारम्भिक सन्धिपर हस्ताक्षर हुआ। ८ मईको जर्मन-हाई कमाण्डके प्रतिनिधियोंने मित्र-सेनाओंके सेनानायकों और सोवियत्-सेनाके महासेनापतिके सामने बर्लिनमें आत्म-समर्पणके अन्तिम कार्यपर हस्ताक्षर किया। मई ८के २४ बजे आत्म समर्पण कार्यरूपमें परिणत होना शुरू हुआ। हमें जर्मनमुखियोंके भेड़िये जैसे स्वभावका परिचय है उनके लिये सन्धि और करारनामेंका मूल्य रद्दीके टुकड़ेसे बढ़कर नहीं है। हम उनकी बातोंपर विश्वास नहीं कर सकते। तो भी आज सुबहसे आत्म-समर्पणके निर्णयके अनुसार जर्मन सेनायें सामूहिक रूपेण हमारी सेनाके सामने हथियार रखने लगीं। अब वह पत्र सिर्फ रद्दीका टुकड़ा नहीं है, यह जर्मन सेनाका वास्तविक आत्मसमर्पण है। यह सच है कि चेकोस्लवाकियामें जर्मन सेनाका एक भाग अभी टाल-मटोल कर रहा है, लेकिन मुझे आशा है कि लाल सेना उनकी अकल दुरुस्त कर देगी। अब हम पूरी निश्चिन्तताके साथ कह सकते हैं, कि जर्मनीके अन्तिम पराजय, जर्मन साम्राज्यवादपर हमारी जनताके महान् विजयका महादिवस

आ गया। अपनी जन्मभूमिकी स्वतन्त्रता और स्वायत्तताके नामपर जो हमने महाबलिदान किये, युद्धके समय जो असह्य और असंख्य कष्ट हमारी जनताने सहे, युद्धक्षेत्र और भीतर देशकी बलिवेदीपर भारी त्याग किये, वह व्यर्थ नहीं गये और उनके फलस्वरूप शत्रुके ऊपर हमारी पूर्ण विजय हुई। स्लाव जातियोंका अपने अस्तित्व और अपनी स्वतन्त्रताकेलिये युगोंसे चला आता संघर्ष जर्मन अत्याचारों और जर्मन आक्रमणकारियोंके ऊपर विजयके साथ समाप्त हुआ।

आजसे आगे जन-स्वतन्त्रता और जन-शान्तिका महाध्वज यूरोपके ऊपर फहरायेगा।

तीन साल पहले हिटलरने अपने उद्देश्योंको दुनियाके सामने घोषित किया था, जिसमें सोवियत्-संघको खंड-खंड करना, काकेशस, उक्रइन, बेलो-रूसिया, बाल्तिक प्रजातन्त्रसमूह और दूसरे प्रदेशोंको छीनना सम्मिलित था। उसने मुँहफट होकर घोषित किया था; हम रूसको इस तरह नष्ट करेंगे, कि वह फिर कभी नहीं उठ सकेगा।" यह बात तीन साल पहले उसने कही थी। किन्तु हिलटरके पागलपनके विचार सच्चे नहीं हो सके—युद्धकी प्रगतिने उन्हें हवामें उड़ा दिया, और हिटलरियोंके अभिप्रायसे बिल्कुल उल्टी ही बात हुई। जर्मनी पूर्णतया पराजित हुई। जर्मन सेनायें आत्म समर्पण कर रही हैं। सोवियत् संघ विजयोत्सव मना रहा है, तो भी वह जर्मनीको खंड-खंड या ध्वस्त करना नहीं चाहता।

साथियो! मातृ मुक्ति-महायुद्ध हमारे पूर्ण विजयके साथ समाप्त हुआ। यूरोपमें युद्ध-काल खतम हो गया। शान्तिपूर्ण विकासका काल आरम्भ हुआ।

मेरे प्यारे देशबन्धु नर-नारियो! मैं तुम्हें विजयकेलिये बधाई देता हूँ।

जय हो, हमारी वीर लाल सेनाकी, जिसने हमारी मातृभूमिकी स्वतन्त्रता-की रक्षा की और शत्रुके ऊपर विजय प्राप्त की!

जय हो हमारी महान् जनताकी, विजयी-जनताकी!

अनन्त यश उन वीरोंकेलिये, जोकि हमारी जनताके सुख और स्वतन्त्रताके-लिये शत्रुसे युद्ध करते गिरे और अपने प्राण दिये।"

× × ×

हिटलरी जर्मनीके ऊपर विजय ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। करीब चार साल तक सोवियत् जनता एक अत्यन्त आधुनिक हथियारोंसे सुसज्जित भारी सेनाके साथ लड़ती रही। जर्मनोंको अपनी अजेयतापर विश्वास था। वह "श्रेष्ठजाति"के तौरपर सारे विश्वपर अपना अधिकार जमानेकी अभिलाषा रखते थे। आरम्भमें मित्र शक्तियोंकी फ्रांस और उत्तरी अफ्रीकामें जो हारें हुईं उनसे जर्मनोंका मन और बढ़ गया। उन्होंने सोवियत्के ऊपर एकाएक हमला कर दिया, यद्यपि न हमला करनेकी सन्धि कर चुका था। आरम्भिक समयमें जर्मन-सेनायें तेजीसे आगे बढ़ीं इससे उनका मनसूबा और बढ़ गया। उस समय तक सारी दुनियाकी स्वतन्त्रता प्रेमी जनतामें निराशा और उदासी छाई हुई थी। इसी समय १९४१के शरदमें मास्कोके पास जर्मनोंकी पहली पराजय हुई, आशाकी पहली किरण दिखलाई पड़ी। १९४२के ग्रीष्ममें स्तालिन-ग्राद्में जर्मनोंकी घोर पराजय हुई। लाखसे ऊपर जर्मन सैनिक आत्म-समर्पण करनेकेलिये मजबूर हुए। द्वितीय विश्वयुद्धका पलड़ा पलट गया। जर्मनीने तूफ़ानको रोकनेकी बहुत कोशिश की, किन्तु सब निष्फल। द्नियेपर और ओडेर, मास और राइनकी "अभेद्य" मोर्चाबन्दियोंके होते भी जर्मनी हार-पर हार खाती रही और अन्तमें लाल सेनाने बर्लिनपर अधिकार किया। नाजी राजधानीके ध्वंसपर मित्र शक्तियोंकी विजय-ध्वजा लहराई।

इस विजयमें सोवियत्-संघका सबसे बड़ा हाथ रहा। किसी देशने इतनी अधिक बलि नहीं दी—सोवियत्के ७० लाख नरनारी मारे गये। स्तालिनने कहा—"इस बारेमें सब आदमी सहमत हैं कि सोवियत् जनताने अपने बलिदान-पूर्ण संघर्ष द्वारा फासिस्त आततायियोंसे यूरोपकी सभ्यताका त्राण किया। सोवियत् जनताने मानव जातिकी यह महान् ऐतिहासिक सेवा की।"

(३) जापान और सोवियत्*

२ सितम्बर १९४५को हमारे स्तालिनने जापानके साथ युद्धके अन्तकी घोषणा की। जितना ही समय बीतता जा रहा है इस विजयका महत्त्व भविष्यकेलिये और इस विजय तथा हिटलरी जर्मनीके पराजयका सीधा अविच्छिन्न सम्बन्ध और साफ होता जा रहा है।

जापान जर्मनीका पुछल्ला राज्य नहीं था, तो भी युद्ध के पहले फ्रैंकोके स्पेनको छोड़कर कोई दूसरा देश नहीं था, जो हिटलरकी "नयी व्यवस्था"के विचारोंके प्रति कर्म और वचनसे इतना समर्थन करता हो जितना कि जापान-का शासक वर्ग।

युद्धके पहलेका जापान एक साम्राज्यवादी देश था। इसमें अधभूखी कमकर जनताका क्रूर शोषण हो रहा था। युद्ध-पूर्वके जापानमें हड़तालोंका ताँता लगा हुआ था। १९२९में १२०० हड़तालें हुईं जिसमें मजदूरोंके खून-की होली खेली गयी। इसी तरह १९३०में १८२५ और १९३१में ४४५६ हड़तालें हुईं। जापानको इजारादारी पूँजीवादका वहाँके सामन्ती वर्गसे चोली-दामनका सम्बन्ध था। जापानकी कमकर जनता—मजदूर और किसान—इस दोहरे जूएकेनीचे दबे-पिसे जा रहे थे। कमकरोंका असन्तोष भयङ्कर हो उठा और शोपकोंका होश बिगड़ने लगा।

इसी समय हिटलर जर्मनीका हर्ता-कर्ता बना। जर्मनीमें जनतान्त्रिक स्वतन्त्रताका खात्मा हुआ, जिसकेलिये कि सालोंसे जर्मन फासिस्त प्रचार कर रहे थे। जापानी प्रतिगामियोंने इसके लाभको समझा। जापानमें फासिस्त विचारधाराकेलिये मिकादोके "दिव्यसन्तान"के विचारने बहुत सहायता की। पहला और सफल संघर्ष जापानी फासिस्तवादने १९३२में यह नारा बुलन्द करते हुए किया:—"नाश हो पार्लियामेन्टी बनियों और मन्त्रियोंका, जो कि विदेशी शक्तियोंके सामने घुटने टेककर देशके साथ विश्वासघात कर रहे हैं",

---

*"सनकर्गमिक तार्लके एक लेखके आधारपर

"उठो अपने पूर्वजोंकी पुनीतश्रद्धाके नामपर सूर्य-पुत्र (जापान सम्राट्)के पवित्र शासनकी रक्षाकेलिये।"

जनतामें संगठनकी कमी और अत्यल्पराजनीतिक चेतना, जापानी पार्लियामेंटकी अपनी गन्दगीके कारण जनतामें अप्रियता और राजाके व्यक्तित्वके प्रति मिथ्या विश्वास—सबने फासिज़्मके पक्षमें जोर लगाया। फासिस्तवादका तरीका था वैयक्तिक हत्या, जिसके लिये उसी तरह कोई दण्ड नहीं दिया जाता था जैसे कि हिटलरके आनेसे पहले जर्मनीमें एबेर्ट, साइडमान आदिके समय। यहाँसे जापानी फासिस्तवाद आगे बढ़ने लगा।

१५ मई १९३२को वैयक्तिक हत्याकाण्डको एक बड़े पैमानेपर किया गया। कितने ही सेना और नौ सेनाके अफसरोंने अपनी पूरी वर्दीमें मन्त्री मकिनो और एडमिरल सूज़ूकी तथा दूसरे कितने हीके घरोंपर बम फेंका, कितने ही आदमियोंको मार और घायलकरके उसी शामको ये अफसर तोकियोकी बड़ी सड़कोंपर शान्तिपूर्वक टहलने लगे। उनमेंसे पचीसने घरमें घुसकर शरीर-रक्षकोंको मारकर महामन्त्री इनुकेइका काम तमाम किया। पहला संघर्ष सफल रहा। हजारसे अधिक अफसरोंने खुले आम घोषित किया, कि जो भी सम्राट् और उसके सच्चे सेवकों के पूर्ण असीमित पवित्र शासनकी स्थापनाका विरोध करेगा, उसे हम मार डालेंगे।

जनवरी १९३३में अन्तमें जर्मनीमें फासिस्तवाद विजयी हुआ। हिटलर देशका तानाशाह बना। इसके बाद जापानमें भी फासिस्तवादने पूरा अधिकार अपने हाथमें ले लिया। इस कामके करने वाले थे, जापानके असली शासक—बैंक स्वामी, औद्योगिक-इजारादारोंके मालिक, कोषके सर्वेसर्वा, बड़े जमींदार इत्यादि, उन्होंने "निर्बल"को हटाकर फासिस्त अधिनायकत्वकी स्थापना की, जिसने जर्मनोंके ढंगपर उन्हें जरा भी असन्तोष प्रकट करनेपर जनताको क्रूरताके साथ दमन करनेका अधिकार दिया। जिस तरह जापानी सरकारकी घरूनीतिमें जर्मन फासिस्तवादने

नमूनेका काम दिया, उसी तरह विदेशी नीतिमें भी हिटलरकी नीति जापानी शासकोंकेलिये अनुकरणीय बन गयी। १९३४में जापानी मन्त्री तनकाने घोषित किया : "यदि जर्मनोंके बहादुर नेता सोचते हैं; कि हमारे विशाल प्रदेशमें जर्मनोंके रहनेकेलिये काफी स्थान नहीं, तो जापानियोंके बारेमें कहना ही क्या ?

इनुकाइकी हत्याके थोड़ी ही देर बाद फासिस्त अफसरोंने जनरल अराकी-को युद्ध-मन्त्री बनाया, मंचूरियन रेलवेके प्रधान उशीदाको वहाँसे हटाकर विदेश-मन्त्रीकी गद्दीपर बैठाया और गाल बजाने वाला फासिस्त मत्सुओ प्रधान मन्त्री बन गया। अब अन्धे भी देख सकते थे, कि जापान किधर जा रहा है। विदेशी नीतिके सम्बन्धमें जर्मनी जो कुछ भी कर रही थी, जापान सबमें शाबाश करता था। यदि लुड्वर्थो रोड़ा अटकाता है, यदि युगोस्लावियाका राजा बाधा डालता है, तो दोनोंको मार डालो। यदि आस्ट्रियाका चान्सलर देशको जर्मनीमें मिलानेका विरोध करता है, तो उसे गोली मारो। यदि सन्धि-पत्र रुकावट डालता है, 'तो उसे कूड़ेकी टोकरीमें डाल दो'। यदि चेम्बरलेन-को हिटलरने वचन दिया था कि वह सुडेटेनलैण्डके पास जानेपर फिर चेको-स्लावियाकी ओर हाथ न बढ़ायेगा तो जवाब था "यह किसका दोष था, जो चेम्बरलेनने बेवकूफी करके वादोंपर विश्वास किया ?" यह वाक्य हिटलरकी दाहिनी बाँह हेसने एक दक्षिणी अमेरिकाके पत्रकारसे कहा था, जिसे छापने-में जापानी पत्रोंने जरा भी देरी न की, और जापानी फासिस्तोंको इससे बहुत प्रकाश मिला। हिटलरकी सफलताओंने जापानी शासकोंके ऊपर मोहनी डाल दी थी, अवसर मिलना चाहिये शासक जो भी चाहें कर सकते हैं। जापानी पत्रोंने बड़े आदरपूर्वक जर्मन फ़ूरेरके इस वाक्यको प्रकाशित किया था :—"जब तुम अपने शत्रुके साथ सुलहकी बातचीत कर रहे हो, तो सदा उसपर ऐसा असर डालो, कि मालूम हो, कि हर एक चीज़ ठीक तौर-से तै हो गयी, ऐसे समयमें भी जब कि कोई भी चीज तै न पाई।"

जापानके पास अपने लिये पके-पकाये सिद्धान्त आ मौजूद हुए। जिसके

शिक्षावाक्य थे : "अपने पड़ोसीकी भूमिको लूटो और कब्जा करो" और "शत्रुकी सफलतापूर्वक लूटको पक्का करनेकेलिये हरएक चीज करना होगा।"

लेकिन जापानका कौन मुख्य शत्रु है, इसके बारेमें साम्राज्य कौंसिलमें मतभेद हो गया। योजनाएँ एक दूसरेसे टकराने लगीं और हिरोहितो (सम्राट्) और उसके पिट्ठुओंकी देरसे सोची योजनामें भी भिन्न ही बातें होने लगीं।

१९३८में ही युद्ध करनेका निश्चय पक्का हो गया—हिटलर भी इससे सहमत था। और अराकीके सीधे असर, और सिर्फ जेनरलों हीके नहीं बल्कि अफसरोंके भी भारी बहुमतसे रूससे लड़नेका निश्चय हुआ। इसी वक्त वही भयङ्कर गलती जापानने खाई, जिसने जापान और जर्मनी दोनोंको धूलमें मिला दिया। यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, यदि जापानी सेनावादियोंने अपनी शक्तिको अत्यधिक और रुसियाको कम समझा।

तोकियो और बर्लिन दोनोंके डाकुओंका यह भारी दुर्भाग्य था, कि उन्होंने अक्तूबर समाजवादी क्रान्तिमें उत्पन्न सोवियत्-राज्यके महान् बलको नहीं समझ पाया।

जापानी शासकोंने इसी अज्ञानवश सोवियत्से व्लादिवोस्तोकके बेचनेका प्रस्ताव किया और सिगेमित्सूने सोवियत् विदेश मन्त्रीके पास मास्कोमें उद्दण्डतापूर्वक घोषित किया, कि रूसी हस्सन्को छोड़कर चले जायें। इसलिये नहीं कि हस्सन्पर जापानका कोई हक था, बल्कि सिर्फ इसलिये कि जापान उसे चाहता है। जापानको अपने सैन्य-बलपर इतना ही विश्वास था।

हस्सन्को जापानने माँगनेसे न मिलनेपर जबर्दस्ती लेना चाहा और कोरियाकी सीमापर स्थित इस स्थानपर उसे बहुत बुरी हार खानी पड़ी। मंगोलियामें भी जापानने हाथ मारा लेकिन खल्किन गोलमें जापानी सेना और भी बुरी तौरसे पराजित हुई। इन दोनों घटनाओंने जापानी साम्राज्यवादियोंके दिमागको कुछ ठण्डा किया और वह "कोमिन्तर्न विरोधी सम-

फौत'' तथा जर्मनी, इटाली, जापानकी जहाद घोषणाके होने भी सोवियत्-संघको न छेड़नेका ही निश्चय किया। उन्हें हस्सन् और खल्खिन्गोलकी घटनाओंको फिर दोहरानेकी हिम्मत न होती थी।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि जापानने सदाकेलिये अपना हाथ खींच लिया। जापानकी योजनायें लम्बे समयसे बन रही थीं। द्वितीय विश्व-युद्धके आरम्भ होनेसे पहले और युद्धके भीतर भी कुछ वर्षोंमें जापानी शासक क्रान्ति-विरोधी रूसियोंके सङ्गठनों और सेम्योनोफके साथ बातचीत चला रहे थे और सोवियत् सुदूरपूर्व तथा सिबेरियाको हड़पनेकी योजना बना रहे थे। हाँ, यह जापान और जर्मनीके उस संयुक्त योजनाका अङ्ग था, जो सोवियत्-संघके बटवारेके सम्बन्धमें बनाई गयी थी।

बँटवारेकी योजना पक्की थी और उसकेलिये जापानका सोवियत्पर आक्रमण भी निश्चित था। किन्तु २२ जून १९४१को सोवियत्पर हिटलरी आक्रमणके साथ नहीं शुरू करना था। इसकेलिये कोई जल्दी भी नहीं थी, क्योंकि उसी साल १५ सितम्बर या १५ अक्तूबर या हदसे हद १ दिसम्बर तक मास्कोपर जर्मनोंका अधिकार बिलकुल निश्चित था। जर्मन और जापानी युद्धवादियोंके दिलमें यह बात पूरी तौरपर घर कर गई थी, कि सोवियत् संघका ध्वंस हमारे हाथों अनिवार्य है और उसके साथ ही सोवियत्-संघकी जातियोंके स्वतन्त्र अस्तित्वका खातमा भी अवश्यम्भावी है।

यह विश्वास उनके मनमें इतना पक्का था, कि दोनों लुटेरे लूटके मालके बँटवारेपर बड़ी गम्भीरताके साथ मोल-भाव कर रहे थे। जर्मन जोर दे रहे थे, कि ऊराल तक हमारा और उसके आगेका भाग जापानका है। तनकाका जोर था कि स्तालिनग्रादसे कास्पियनमें गिरने तक वोल्गाकी धारा भौगोलिक, भूगर्भिक और मानववंशिक तौरसे एशियाकी अपनी सीमा है, इसलिये जापान और जर्मनीकी सीमा यहाँ होनी चाहिये। लेकिन जर्मन इसमें भ्रम नहीं होना चाहते थे, वह ''अपनी'' वोल्गाको कभी भी हाथसे जाने देनेको तैयार नहीं थे। रिबेनट्रापने तो बल्कि यहाँ तक कहना शुरू किया, जर्मन और जापानी

बिजैना ऊरालसे भी आगे सिबेरियन रेलवेके किसी स्थानपर हाथ मिलायेंगे। स्थानका निश्चय अभी नहीं हो पाया था। तनका इसे सिबेरियापर जर्मनों-की गृध्रदृष्टि और जापानके अधिकारपर हस्तक्षेप समझता था।

इस तरह लूटके मालके बँटवारेपर कुछ कठिनाइयाँ जरूर खड़ी हो गई थीं; लेकिन लूटके मालके हाथ लगनेमें जरा भी सन्देह नहीं रह गया था—कमसे कम १९४२के जाड़ोंके अन्त तक।

जापानी युद्धवादियों और जर्मन लुटेरोंकेलिये इंग्लैंड और अमेरिकाकी शक्तिका अंदाजा लगाना बहुत कुछ आसान था, किन्तु सोवियत्-संघको समझने-में वह बिलकुल असमर्थ रहे। वह यह जाननेमें बिलकुल असमर्थ थे, कि समाजवाद, सोवियत् शासन व्यवस्थाने एक शक्तिशाली राज्य पैदा कर दिया है। छोटी जातियोंपर राष्ट्रीयतावादी स्वेच्छाचारी अत्याचारोंके हटानेसे उस देशकी जनताकी वास्तविक एकता नष्ट नहीं होती; बल्कि और दृढ़ होती है। उनकी बड़ी गलत धारणा थी, कि शोषकोंके लुप्त हो जानेसे रूसी देश-भक्ति भी गायब हो गई। उनके मनमें नहीं आ सका, कि शोषकोंके हट जानेसे एक अद्वितीय शक्ति सोवियत् राज्यके रूपमें पैदा हो गई है—वही जिसने बर्लिनके गुरुओं और उनके तोकियोके श्रद्धालु शिष्योंको मिट्टीमें मिलाकर छोड़ा।

सोवियत्-संघके शत्रु सदा यह अच्छी तरहसे जानते रहे हैं, कि क्यों वह सोवियत् संघसे घृणा करते हैं, किन्तु इसे उन्होंने कभी समझ नहीं पाया, कि क्यों सोवियत् इतनी जबर्दस्त शक्ति हो गई। इसीलिये उन्होंने सोवियत्के बलको माननेसे इन्कार कर दिया। हस्सन् और खल्खिन् गोलमें मुहकी खानेपर भी उसका उनपर उतना असर न पड़ा। इस गलत धारणाका अन्त तब हुआ जब स्तालिनग्राद्में जर्मनोंको घोर पराजय खानी पड़ी और १९४५की गर्मियोंमें थोड़ेसे समय किन्तु भयङ्कर संघर्षके बाद खूब शस्त्रसुसज्जित जापानी सेनाका मन्चूरियामें पूर्ण संहार हुआ।

इसका अर्थ यह नहीं है कि वह गलत धारणा अब भी सब जगहसे

हट गई है। आज भी ऐटम बम्बकी पैंतरेबाजी उन्हीं गलत धारणाओंको लेकर है।

(४) वीरांगना जोया

१९४१के जाड़ोंमें जर्मन मास्कोकी तरफ बढ़ रहे थे, इसी वक्त उन्होंने एक गुरिल्ला तरुणीको पेत्रिश्चेवो गाँवमें फाँसीपर चढ़ा दिया। गाँवके लोगों-को फाँसी-परिदर्शनकेलिये जर्मनोंने मजबूर किया था। उन्होंने ही अन्तिमबार जीवित तरुणीको देखा था।

दो महीने बाद एक युद्ध-समाचार दाता पं० लिदोव् उस गाँवमें पहुँचा। तब तक गाँवसे जर्मन भगाये जा चुके थे। हिमाच्छादित भूमिको खोदकर तरुणीका शव बाहर निकाला गया और उसकी पहचान हुई। एक सुन्दर मुख, गर्दन पीछेकी ओर गिरी, कन्धेमें फाँसीका फंदा। यह फोटो था, जिसे पत्रोंने छापा। मृत्युकी क्रूर यातना भी उस सुन्दर मुखकी शान्ति भङ्ग नहीं कर पाई। लोग उस लड़कीके चेहरेको देख रहे थे, जिसने सारी यातनायें सहनेके बाद भी रहस्य बतलानेकेलिये मुँह नहीं खोला। वह मास्को स्कूलकी एक अठारह वर्षीया छात्रा जोया कस्मोल देम्येन्स्कयाका फोटो था। जोयाके बारेमें लिखे लेख लिदोफ़के अन्तिम लेख थे। चन्द दिनों बाद वह भी मारा गया। सीधे सादे शब्दोंमें उन लेखोंमें जोयाकी कहानी कही गई थी।

जाड़ेकी रात थी। जोया पेत्रिश्चेवो गाँवमें पहुँची। जल्दी ही उन घरोंमें आग लग गई, जिनमें जर्मन और उनके घोड़े रहते थे। जोया पकड़ी गई और एक बोतल पेट्रोलके साथ। अपराधकेलिये और अधिक गवाहीकी जरूरत नहीं थी। जर्मनोंने बहुत सासत दे-देकर पूछा, मगर लड़कीने ओठ न खोले। एक जर्मन छोटे सैनिक अफसर कार्ल बायेलाइनने पीछे बन्दी बननेपर बतलाया—"सर्दीसे उसका शरीर नीला हो गया था। उसके घावोंसे खून बह रहा था, लेकिन उसने कोई बात नहीं बतलाई। 'स्तालिन कहाँ है?' पूछनेपर जोयाने कहा—'स्तालिन अपने कर्तव्य स्थानपर' 'क्या अस्तव्यस्त-

में तूने आग लगाई ?' 'हाँ, मैंने !' 'ऐसा करनेमें तेरा मतलब क्या था ?' 'तुम सबको नेस्त नाबूद करना'...।

"जोयाको फाँसीकी टिकटीके पास ले गये। जर्मनोंने उसकी गर्दनमें आग लगाने वाली लिखकर दफ्ती लटका दी। फाँसीका फंदा उसके गलेमें डाल दिया गया। उसने जल्लादोंकी तरफ मुँह करके कहा 'तुम मुझे फाँसीपर लटका रहे हो, किन्तु मैं अकेली नहीं हूँ। हम बीस करोड़ हैं। तुम हम सबको फाँसीपर नहीं लटका सकते !''

''जोयाने फिर ठनकती आवाजमें सारे गाँवको प्रतिध्वनित करते कहा—'विदा, साथियो ! स्तालिन हमारे साथ है ! स्तालिन आयेगा !''

रूसी जनताने युद्धके बीच बहुतसे वीर नर-नारी पैदा किये। अलेक्सान्दर मत्रोसोफ, जिसने अपने शरीरसे जर्मन निशाना याकसके मुँहको ढाँक दिया। ओलेक् कोसेवाय और सेर्गिय तुलेनिन दोनों क्रास्नोदोन खानेवाले गाँवके गुरिल्लोंने इसी तरह बलि दी। लड़की गोरिल्ला लिजा चाइकिनाने भी जोयाकी तरह दृढ़ताके साथ अपनी बलि चढ़ाई।

जोया इस सारी वीरमालाकी सुमेर बनी। उसने अपनी आहुति उस समय दी, जब कि मास्कोके युद्धक्षेत्रमें देशके भाग्यका फैसला हो रहा था। उसके अन्तिम शब्द करोड़ों नरनारियोंके मुँहसे दुहराये गये। उन शब्दोंको मुँहपर लिये योद्धा जोयाका बदला लेने युद्धमें बलि देने गये। लाखों मातायें इस वीर पुत्रीकेलिये रोईं। लेकिन जोयाका पूरा चित्र उस वक्त सामने आया, जब कि उसकी डायरी प्रकाशित हुई। एक मृत जर्मन अफसरके खलीतेसे जोयाके फाँसीपर चढ़नेका फोटो मिला। चित्रकारों और मूर्तिकारोंने जोयाको अपनी कलाका माध्यम बनाया। अनेकों फिल्म, कविता, नाटक, गीत, पीतल और सिल्वरकी प्रतिमाएँ किशोरीके बलिदानके सम्बन्धमें बनी।

लिदोफ्के कम्सोमोल्स्कया प्राव्दामें प्रकाशित लेखोंके बाद ही तीन प्रसिद्ध कलाकार पेत्रिश्चेवो पहुँचे। ये कलाकार मकुप्रियानोफ, प० क्रिलोफ

और न० सोकोलोफके कुक्रीनिक्सीकी त्रिमूर्तिके नामसे चित्रण किया करते हैं। कुक्रीनिक्सी उसी १९४१के जाड़ेमें जोयाके फाँसी देनेकी सारी बातोंको जमा करनेकेलिये वहाँ पहुँचे थे। एक साल बाद कुक्रीनिक्सीका चित्र मास्कोकी प्रसिद्ध चित्रशाला त्रेत्याकोफ़ कलागैलरीमें रखा गया। कलाकारोंने अपने सारे हृदय और भावोंको इस कृतिमें रख दिया था, जिससे यह चित्र सुन्दरताके साथ अत्यन्त वास्तविक बना था। उन्हें उस फोटोग्राफका कोई पता नहीं था, जो फाँसीके एक साल बाद मृत जर्मन अफसरकी पाकेटमें पास मिला था; तो भी उन्होंने फाँसीके तख्तेपर लटकाई जाती जोयाके फोटोग्राफ लेनेका भी अंकन किया था।

अध्याय १२

(१९३७की यात्राका अंत)

१. लेनिन्ग्राद्‌से प्रस्थान*

१२ जनवरीको सबेरे मालूम हुआ कि वीज़ा मिल गया और उसी दिन रातकी गाड़ीसे चलना निश्चय हुआ। कितने ही मित्रोंको भी इसकी खबर न हो पाई थी। लेकिन मैं पहले ही उनसे विदाई ले चुका था। आचार्य श्चेर्बात्स्कीका विदाई-भोज भी मैं खा चुका था। हिन्दी भाषा के महाविद्वान् तथा नव्य भारतीय भाषाओंके विभागके अध्यक्ष आचार्य बरानिकोफ़् तथा उनके सहकारियोंसे भी प्रस्थान-मिलन कर चुका था। दत्त महाशयसे मिल आया और भाभी साहबा (श्रीमती दत्ता)ने रास्तेकेलिए चीज़ोंके खरीदनेमें मदद की। इधर कई दिनोंसे रबिनोविच्से मुलाकात न हो पाई थी। आज अकस्मात् वे रास्तेमें मिल गये। थोड़ी देरमें लोला कज़ारोव्स्का भी आ गई। सामान समेटा गया। असबाब हमने लगेजमें दे दिया और रोजके काम-की कुछ थोड़ीसी चीज़ें लेकर ११ बजेके बाद स्टेशनको चले। यद्यपि वृक्षोंकी तरह मनुष्यकी जड़ ज़मीनमें गड़ी नहीं होती; और वह बहुत कुछ स्वच्छन्द समझा जाता है; लेकिन वृक्षोंकी जड़ सिर्फ़ एक ही जगह होती है; और मनुष्य आकाश-बौंरकी तरह जहाँ जाता है, वहीं उसके बन्धनके साधन तैयार हो जाते हैं। इस दो मासके प्रवासमें यहाँ मेरे भी कितने बन्धु और स्नेह-बन्धन तैयार हो गये थे; जिनको कि तोड़ते वक्त चित्तको असन्तोष हो रहा था। मित्रों

---

*१९३८में लिखा गया पृष्ठ ११७७—१२२१

से बिदाई ली और वाण-डाक* से मास्कोकेलिए रवाना हुए। हमारा टिकट नरम तीसरे दर्जे (गद्दीदार तीसरे दर्जे)का था। कड़े तीसरे दर्जेका किराया लेनिन्ग्राद्से तेर्मीज़ तक १५० रूबल (= ६६ रु०) पड़ता है। रास्तेमें बर्फ़ ज़्यादा पड़ गई थी, इसलिए वाण-डाक भी वाणकी तरह तेज़ नहीं चल सकती थी। सबेरे खिड़कीसे देखा, तो ताज़ा पड़ी सफ़ेद बर्फ़की मोटी तह उस विषम भूमिपर सर्वत्र दिखाई दे रही थी। आसमान अब भी सफ़ेद बादलोंसे घिरा था। सड़कके किनारे खड़े देवदारोंकी हरी डालियोंपर बर्फ़के गोले बड़े ही सुन्दर मालूम होते थे। जहाँ-तहाँ एक कल्खोज् (पंचायती गाँव)से दूसरे कल्खोज् को घोड़ोंके स्लेज् (बिना पहिएकी बर्फ़में चलनेवाली गाड़ी) जा रहे थे। उन-पर, नाक-आँख छोड़कर सारा बदन पोस्तीनसे ढँके सवार चुपचाप बैठे थे। उस विस्तृत भूमिमें कहीं जीवनका चिह्न नहीं दिखाई देता था। गाँवोंके छोटे-छोटे स्वच्छ घर आधे बर्फ़में डूबे हुए थे। छत भी बर्फ़से सफ़ेद थी। हाँ, उनकी चिमनियोंसे धुआँ निकल रहा था, जो बतला रहा था, कि उनमें मनुष्य रहते हैं। हमारी गाड़ी अपनी घहराहटसे उस निस्तब्ध भूमिकी शान्तिको भंग करती हुई आगे बढ़ रही थी। इस भूमिमें वैसे ही ६ बजे सूर्योदय होता है और टाइमटेबुल्के मुताबिक गाड़ी १० बजे मास्को पहुँचनेवाली थी। हम ८ बजे भिनसारे ही हाथ-मुँह धोकर तैयार हो गये थे। हमारे कंपार्टमेंटके और तीन साथी अब भी खर्राटे ले रहे थे। जब देखा, घड़ी ११ बजा रही है, और मास्कोका कोई पता नहीं; तो साथियोंसे पूछा और मालूम हुआ कि गाड़ी ३ घंटा लेट है।

१॥ बजे हम मास्को स्टेशनपर पहुँचे। मास्को इन्तूरिस्तको तार दिलवा दिया था, लेकिन वहाँ कोई आदमी नहीं आया था। सब लोगोंको अपना अपना सामान उठाकर ले जाते देख हमने भी अपना बिस्तरा

*लेनिन्ग्राद्से मास्को जानेवाली रेलवे लाइन लेनिन्की इच्छानुसार वाणकी तरह सीधी बनाई गई है, और इसपर चलनेवाली डाकको वाण-डाक कहते हैं।

और छोटी-मोटी पोटलियाँ उठाकर चलना चाहा। लज्जा शरमसे जैसे भी कहिए मुसाफ़िरखानेके भीतर किसी तरह पहुँच गये। लेकिन कलाई खूब दुखने लगी थी। आखिर एक दिनमें श्रमिक थोड़े ही बना जाता है। हमने सोचा था, ऐसा करनेसे हमें भाषाकी अल्पज्ञताका परिचय देना नहीं पड़ेगा; लेकिन जब मुसाफिरखानेमें भी इन्तुरिस्तके किसी आदमीको नहीं पाया, तो लाचार एक भरिया (Porter)को बुलाया और उससे नव-मास्को होटल पहुँचानेकेलिए कहा। भूगर्भी रेलवेका स्टेशन मुसाफ़िरखानेके बिलकुल नजदीक था। भरिया-ने हमारा सामान उठाया और हम सुरंगके भीतर दाखिल हो, प्लेटफ़ार्म पर जा पहुँचे। गाड़ी हर दो-तीन मिनटपर आती रहती है। स्टेशनपर खड़े होते ही दरवाजा खुद खुल जाता है। गाड़ीके भीतर भी बाहर स्टेशन जैसे बिजलीके जोरदार प्रदीपोंके कारण सूरज का उजाला मालूम होता है। डब्बे बहुत साफ़, सीटें चौड़ी और अधिक आदमियोंके खड़े होनेकेलिए बीचमें काफ़ी जगह तथा हाथमें पकड़नेकेलिए छतसे लटकते चमड़ेके तस्मे थे। डन्डा और दूसरी चीजें चमचमाते पीतलकी थीं। यद्यपि गाड़ी हर स्टेशनपर कुछ सेकेंड ही खड़ी होती है और आदमीको बड़ी फुर्तीसे भीतर घुसना पड़ता है, लेकिन वैसे देखनेसे रेलकी अपेक्षा भूगर्भी रेलकी यात्रा ज़्यादा आरामदेह है। यह हिलती भी कम है। कई स्टेशनोंको पारकर हम क्रेमलिनके पासवाले स्टेशनपर पहुँचे। गाड़ीसे उतर कुछ सीढ़ियाँ ऊपर चढ़े, फिर चलती सीढ़ी मिली। चलती सीढ़ी हमारी आत्मपरीक्षाका स्थान है। लन्दनमें भी हम इससे घबराते थे और मास्कोमें भी जब जब चढ़े, तब तब दिलमें कैसा मालूम होता रहा। चलती सीढ़ी है क्या? लकड़ीकी छोटी पट्टियोंको जोड़कर माला तैयार की गई है और वह सौ दो सौ फ़ीट ऊँचे एक लोहेके ढाँचेपर रख दी गई है। मशीनके ज़रिए यह माला नीचेसे ऊपर स्वयं जोरसे खिसकती चली जाती है। मालूम होता है, वज्रकी तरह स्थिर एक ओरकी धरतीसे भीतरसे दो हाथ चिपटी साँपकी पीठ सरकती निकली आ रही है। और ऊपर जाकर उसी तरह एक निश्चल धरतीमें सरककर वह लुप्त होती जा रही है। दोनों

सिरोंपर दो हाथ तक यह धरतीसे समतल है। और फिर बादमें खुद सीढ़ीका रूप बनाती चलती है। सीढ़ीके दोनों तरफ़ ठोस और स्थिर बाँही है, लेकिन वहाँ भी हाथ रखनेकी जगह चल रही है। हमको सबसे ज़्यादा दिक़्क़त मालूम होती थी, स्थिर स्थलसे अपने शरीरको चल सीढ़ीपर, तथा चल सीढ़ीसे स्थिर स्थलपर पहुँचानेके वक़्त। मालूम होता था, गिर जायेंगे। सैकड़ों आदमियोंके बीच इस तरह गिरना कोई इज़्ज़तदार आदमी पसन्द नहीं कर सकता। एक बार जहाँ सीढ़ीपर पहुँच गये, तहाँ हम भी बाघ हो सकते थे, तथा चलती सीढ़ियोंपर तेजीसे क़दम बढ़ाते हम खुद भी ऊपर चढ़ सकते थे, लेकिन आदि और अन्तके छोरपर हमारी नब्ज़ ढीली पड़ जाती थी।

भूगर्भी रेल-स्टेशनसे निकलकर हम सड़क पर आये, और क्रेमलिन्के बाहर लेनिन्की समाधिके सामनेवाले लाल-मैदानसे होते मास्को नदीके पुलपर पहुँचे। मास्को नदी सब जगह जमी नहीं थी। इसीसे मालूम होता है कि लेनिन्ग्राद्से मास्को गर्म है। सड़कपर कहीं-कहीं बर्फ़ थी। ज़्यादा बर्फ़ तो रहने भी नहीं पाती। हर वक़्त जोतनेवाली मोटर बर्फ़को चूरा करती जाती है और उठानेवाली मशीन उठाकर दूसरी मोटरपर भरती जाती है। बर्फ़ ज़्यादा दिन रह जाय, तो यही नहीं कि सड़क बहुत ऊँची हो जायेगी, बल्कि टायरों-के दबावसे पहले तो वह नर्म होने की अवस्थामें ऊँची-नीची बन जायगी; और जब थोड़ी ही देर में सर्दी जमाकर उसे पत्थर बना देगी, तो उसपरसे मोटरोंका चलना सुगम नहीं होगा, इसीलिए बर्फ़ को रोज हटाया जाता है। इस काममें हजारों आदमी और सैकड़ों मोटरें व्यस्त रहती हैं। इस बदलीके दिनमें भी क्रेमलिन्के दोनों शिखरोंपर स्थापित विशुद्ध पद्मराग-मणि (लाल)के बने दोनों विशाल पँचकोने तारे चमचमा रहे थे। सोवियत्का यह लाल राष्ट्रचिह्न दिनके प्रकाशमें स्वयं चमकता रहता है, और रातको बड़ी तेज बिजली बत्ती उनके भीतर जला दी जाती है। तारे इतने ऊँचे पर लगे हैं कि मीलोंसे दिखलाई पड़ते हैं।

मास्को नदीपर यह नया पुल इसी साल बनकर तैयार हुआ है। अब भी एक तरफ़के किनारेकी दीवार पूरी नहीं हुई थी। जाड़ेकी भीषण सर्दीमें भी रात-दिन काम हो रहा था। इसकेलिए सीमेंट और पत्थर सबको भापके जरिए गर्म रखा जाता है। कारीगर भी हाथ में चमड़ेके दस्ताने पहने काम कर रहे थे। पहला पुल जो इससे कुछ ऊपर हटकर था, नीचा था। मास्को अब तीन समुद्रों का बन्दरगाह है। वोल्गाको एक बड़ी नहर द्वारा मास्को नदीसे मिला दिया गया है। उसी तरह बाल्तिक समुद्र और उत्तर समुद्रको भी नहर द्वारा मिलाया गया है। अब कास्पियन् सागर, उत्तरसागर और बाल्तिक सागरके स्टीमर मास्कोमें पहुँच जाते हैं। वोल्गा नहरने मास्को नदीके पानीको कई गुना बढ़ा दिया है। पुराने पुलके नीचेसे स्टीमर पार नहीं हो सकते थे, इसीलिए ऊँचे पुल बनवाये जा रहे हैं।

भरियाको नव-मास्को होटल मालूम नहीं था, और हमें अपने ज्ञानपर बहुत अभिमान था। हमें स्मरण था, कि क्रेम्लिन्के पासवाले पुलको पार करते ही होटलकी इमारत आ जाती है। यह खयाल नहीं हो रहा था, कि हम जिस पुलको समझ रहे थे, वह टूट-टाटकर न जाने कहाँ चला गया। सोच रहे होंगे, दो ही महीना पहलेकी तो बात है। लेकिन जानते हुए भी यह खयाल नहीं आ रहा था; कि सोवियत्का दो महीना यूरोपका बीस बरस और हिन्दुस्तानका दो सौ बरस है। जब हम पुल पारकर इधर-उधर देखते हुए कई गृहपंक्तियाँ छोड़ गये, फिर भी होटलका पता नहीं लगा, तो अपनी अज्ञता स्वीकारकर हमने साथीको पता पूछनेके लिए कहा। स्थान पानेमें देर नहीं हुई। वह सिर्फ़ एक सड़क आगे था।

इन्तुरिस्तका आफ़िस भी होटलमें है। लेनिन्ग्राद्से लाये कागजको हमने आफ़िसमें दिया। रसीदसे टिकट बना देना उन्होंने स्वीकार किया; लेकिन होटलमें कोई कमरा खाली नहीं था। दो दिन पहले (१२ जनवरी) महासोवियत् (सोवियत् पार्लियामेंट)का प्रथम अधिवेशन शुरू हुआ था, जिसकेलिये ११४३ देपुतात् (सदस्य) ही नहीं, कोने-कोनेसे बहुतसे प्रति-

ष्ठित दर्शक मास्को पहुँचे हुए थे। और सभी होटल उनसे भर गये थे, कमरे-का पाना एक बड़ी समस्या थी, और हम आज मास्को छोड़ नहीं सकते थे। क्योंकि पूछने पर बतलाया गया, कि अफ़ग़ान कौंसल सिर्फ़ मास्को हीमें है (यद्यपि यह कहना ग़लत था, हमें पीछे मालूम हुआ कि ताशकन्दमें भी अफ़ग़ान कौंसिल रहता है। अगर्चे उसके हटा लेनेकी बात हो रही है।) अफ़ग़ान कौंसलसे पूछनेपर मालूम हुआ, कि अब कौंसल खाना बन्द हो चुका है, और वीज़ाकेलिए कल आना चाहिए।

मास्कोसे रोज़ ताशकन्दकेलिये डाकगाड़ी छूटती है; लेकिन उस ट्रेनसे ताशकन्द जानेपर हमें गाड़ी बदलनी पड़ती, इसलिए हम स्तालिनाबाद्की डाकसे जाना चाहते थे। उससे जानेपर तेर्मिज् तक एक ही गाड़ीसे जा सकते थे। स्तालिनाबादकी डाक हफ़्तेमें सिर्फ़ दो दिन छूटती है। संयोगसे वह अगले दिन शनिश्चरको जानेवाली थी। आज कोई काम न होता देख हम लाल-मैदान और उसके आगे टहलनेकेलिए निकल पड़े। चाहते थे लेनिन्का दर्शन करना। देखा लेनिन्की समाधि—जिसके भीतर शीशेकी शवाधानीमें लेनिन्का शरीर रखा हुआ है—के सामने दर्शकोंकी दोहरी लम्बी पंक्ति है। पंक्ति इतनी दूर तक बन चुकी है कि जाते तो हमारा नम्बर हज़ारवाँ भी न होता। समाधिका दरवाज़ा थोड़े समयकेलिए खुलता है; और उस लम्बी कतारमें एकके बाद एक चलते हम जब तक दरवाज़े तक भी न पहुँचते तब तक दरवाज़ा बन्द करनेका समय हो जाता। इसलिए हमें दर्शनका लोभ संवरण करना पड़ा।

दो घंटे घूम-घामकर लौटे। अँधेरा कभीका हो चुका था। हमने फिर आफ़िसमें कमरेके बारेमें पूछा। जवाब मिला—एक यात्री कमरा छोड़नेकी बात कर रहा था, लेकिन अब तक वह गया नहीं। यदि चला गया तो आपको कमरा मिल जायगा। मैंने पूछा, यदि न चला गया तब? "तो हम कमरा कहाँसे देंगे?" घंटा भर और कुर्सीपर बैठे। देखा, एक-एक करके आफ़िस-की सभी कर्मचारिणियाँ चली जा रही हैं। अन्तमें एक महिला रह गई।

उसने कहा—हमारे हाथमें कोई कमरा नहीं। अब रातके १४ घण्टे कुर्सीपर बितानेकी समस्या थी और कुर्सी भी आराम-कुर्सी न थी। लाचार हो मैं खुद होटलके डिरेक्टरके पास गया। उन्होंने अपने सहायकको ताकीद की, और अन्तमें जैसे-तैसे करके साढ़े ८ बजे ७७० नम्बरकी कोठरी मिली। कोठरी छोटी थी, लेकिन खैर मिल गई, इसीको ग़नीमत समझा।

१५ जनवरी को ११ बजे इन्तुरिस्तके आदमीके साथ अफ़ग़ान-कौंसलके पास गये। थोड़ी देर बैठनेके बाद सेक्रेटरी आये। उनसे मैंने तेर्मिज़् काबुल, खैबरके रास्ते अफ़ग़ानिस्तान पार होनेका वीजा माँगा। उन्होंने कहा—'आज तो वीजा तैयार नहीं हो सकता और कल है इतवारकी छुट्टी, इसलिए परसों आइए।' मैंने कहा—'मेरे लिए आजकी ट्रेनसे सीट रिजर्व हो गई है।' खैर, कुछ और कहने-सुननेपर तीन बजे वीजा देना स्वीकार किया। फ़ीसके बारेमें पूछनेपर बतलाया कि उसकी जरूरत नहीं।

मास्कोकी दर्शनीय चीजोंको दो साल पहले तथा पिछले नवम्बरमें देख चुका था, तो भी समय काटनेकेलिए कोई हीला चाहिए। पूछनेपर होटलसे कुछ दूर एक सिनेमाका पता लगा। वहाँ एक अच्छा फ़िल्म दिखाया जा रहा था। मास्कोका नक़शा मैंने साथ लिया और न्यु-थिएटरके उस सिनेमाकी ओर चल पड़ा। नक़शेमें रास्ता समझ लिया था, लेकिन नक़शा बेचारा भी तो दो बरस पहले छपा था। सोचा, नहरके किनारे नाकके सीधे चले जायेंगे; लेकिन वहाँ तो कितनी ही सड़कों और मकानोंको गिराकर नये मकान बनाये जा रहे थे। उनके लकड़ीके घेरोंमें रास्ता भूल जाना कोई आश्चर्यकी बात न थी। मुश्किल यह थी, कि मेरे पास जो नक़शा था, वह रूसी अक्षरोंमें नहीं था; और जर्मन नक़शेमें लिखा न्यु-थिएटर नाम मैं किसी-को समझा न सकता था। खैर, न्यु-थिएटर जिस गृह-श्रेणीमें है, वह असा-धारण ऊँची इमारत है। और उसके दूरसे दिखाई देनेकी आशा थी, इसलिए मैं निराश नहीं हुआ। हाँ, डर यह था कि अगर कहीं पहले शो (सियाँस-=दृश्य)का टिकट खतम हो गया, तो दूसरे शो के लिए मेरे पास समय

नहीं है। पहुँचते पहुँचते समय हो चुका था। मेरे पास इन्तुरिस्तका दिया हुआ कागज था और सीट पहलेसे रिजर्व हो चुकी थी, इसलिए टिकट मिलनेमें देर न हुई। जब सिनेमा-घरमें पहुँचे, तो दरवाजेपर कोई पथ प्रदर्शिका न थी; और ईंजानिब जानते न थे, कि कौन दरवाजा भीतर जानेका है और कौन बाहर आनेका। एक दो दरवाजोंको खोलना चाहा किंतु वह भीतरसे बन्द मालूम हुए। फिर तीसरेको हाथ लगाया, तो वह खुल गया। भीतर अँधेरा था और यह भी पता न था कि हमारा टिकट किस क्लासका है, और जिस कुर्सीपर हम बैठने जा रहे थे, वह किस क्लासकी है। जाकर दरवाजेके नजदीकवाली कुर्सीपर बैठ गये। फ़िल्म अभी-अभी शुरू हुआ था। पहले महासोवियत्के प्रथम अधिवेशनका दृश्य दिखलाया गया था, जो अभी ३ दिन पहले गुजरा था फ़िल्म भी मूक नहीं, टॉकी था। और वह भी दो-तीन मिनटका नहीं, काफ़ी देरका। महासोवियत्के दोनों भवनों—जातीय भवन और संघ भवन—के सदस्योंको बैठे दिखलाया गया। फिर सदस्य एक दरवाजे-की तरफ़ ध्यानसे ताकने लगे। फिर वहाँसे एक घनी काली मूँछोंसे ढँके मुँह-वाले बन्द गलेका कोट पहने प्रसन्न-वदन तेजस्वी पुरुषको भीतर प्रवेश करते देखा। प्रवेश करतेके साथ सारे स्त्री-पुरुष सदस्य खड़े हो गये। सब मस्त हो दोनों हाथोंसे तालियाँ पीट रहे थे। और मुँहसे "हुरा स्तालिन ? हुरा स्तालिन्, हमारा प्यारा स्तालिन् चिरंजीवी हो!" के नारे लगा रहे थे। और यह नारे सिर्फ़ रूसी भाषामें नहीं लग रहे थे, फ़ारसी भाषा-भाषी 'स्तालिन जिन्दाबाद' कह रहे थे। उजबेक, तुर्कमान, मंगोल, जार्जियन, याकुत आदि सोवियत्के भीतर-की सभी जातियोंके प्रतिनिधि अपनी-अपनी भाषाओंमें नारे लगा रहे थे। कई मिनट तक इसी तरह करतल-ध्वनि और नारे लग रहे थे। सदस्योंकी शकल-सूरत नाना प्रकार की थी। कोई मूँछ-दाढ़ी-विहीन गोल आँखों और तिर्छी भौंहोंवाला था, कोई गौर वर्ण भूरी मूँछ दाढ़ीवाला, कोई कोट पतलून पहने हुए था और कोई सिरपर चिपटी गोल टोपी और लम्बे चोगेकी कमरमें रूमाल बाँधे। औरतें भी अपनी भिन्न-भिन्न पोशाकमें थीं।

नारेके शान्त होनेके बाद स्तालिन् और दूसरे नेता जब अपनी कुर्सीपर बैठ गये, तो संघ-भवनके वृद्धतम सदस्य श्वुखायाने एक छोटेसे भाषण द्वारा अभिवेशनका उद्घाटन किया।

महासोवियत् फ़िल्मके बाद असली फ़िल्मका आरंभ हुआ। फ़िल्म एक क्रान्तिकारीके सम्बन्धका था, जिसका वर्णन हम किसी और जगह करेंगे। लौटकर होटल आये तो अफ़ग़ान बीजा बनकर चला आया था। टिकट लेते वक़्त मालूम हुआ कि जिस स्तालिनाबाद ट्रेनसे हमें जाना था, उसमें नरम तीसरा दर्जा नहीं है। उसी किरायेमें हम वेगनलिट्के डब्बेमें दूसरे दर्जेमें जा सकते हैं। लेकिन सोने आदिकेलिए तीसरे दर्जेकी अपेक्षा ६० रूबल अधिक लगेंगे। मैंने कहे तीसरे दर्जेसे जानेकी इच्छा प्रकट की। ज़्यादातर इस ख़याल-से कि वेगनलिट् डब्बेमें जानेपर मुझे साधारण सोवियत् यात्रियोंके साथका आनन्द नहीं मिलेगा; लेकिन जवाब मिला कि यह परिवर्तन लेनिनग्रादमें हो सकता था, मजबूरन् दूसरा ही दर्जा स्वीकार करना पड़ा।

* * * * * *

हमारी ट्रेन कज़ान् स्टेशनसे खुलनेवाली थी। मास्कोमें कई स्टेशन हैं; जो भिन्न-भिन्न दिशाओंके यात्रियोंकेलिए निश्चित किये गये हैं। स्टेशनपर पहुँचे तो वहाँ तिल रखनेकी जगह न थी। अपना बिस्तरा-बक्स लिए लोग बैठे ट्रेनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वोल्गा-उपत्यका और मध्य-एशियामें निवास करने-वाली सभी जातियोंके मुख और वेषभूषा आप वहाँ देख सकते थे। थोड़ी-थोड़ी देरपर शब्द-प्रसारक यन्त्रसे ट्रेनके आने-जानेकी सूचना दी जा रही थी। इन्तुरिस्तके एजेंटने भीड़में हमारी बहुत मदद की। ट्रेन प्लेटफ़ार्मपर खड़ी थी। वेगनलिट्के डब्बेकी ख़ास शकल होती है। यह ट्रेन यूरोपके सभी राष्ट्रों-की रेलोंपर गुज़रती रहती है। हमारी सीट सातवें डब्बेके ६ नम्बरकी थी। ऊपरकी दोनों सीटोंके यात्री हमसे भी आगे स्तालिनाबाद तक जानेवाले थे। १० बजकर ४५ मिनटपर गाड़ी छूटी। रातको सो गये।

सबेरे दिन होनेपर देख रहे थे, कि हम ऊँची-नीची पहाड़ी जमीनसे गुज़र रहे हैं। चारों ओर बर्फ़ है। समय-समयपर हरे देवदारों और नंगे भोजपत्रों-का जंगल भी आ जाता है। मकानोंकी छतें अधिकतर फूसकी हैं, जो बर्फ़से ढकी हैं। दीवारका बहुत थोड़ासा हिस्सा बाहर दिखाई पड़ता है।

ट्रेनके बीचमें भोजन-गाड़ी थी। भोजन-परोसिका पहले मध्याह्न भोजन करनेवालोंसे पूछकर गिनती कर गई। फिर मध्याह्न-भोजन तैयार है, इसकी भी सूचना देती गई। नाश्ता तो हमने अपने पासकी रोटी, मक्खन, माँस और डब्बेके प्रबन्धक द्वारा प्राप्त मीठी चायसे कर लिया था। दोपहर बाद भोजन करने गये। दोनों कमरेकी मेज़ोंपर स्त्री पुरुष बैठे थे। हमारे बैठते ही भोजन-सूची सामने लाकर रख दी गई। वहाँ गव्याद्‌न्या, शूकर आदिके मांस, सूप तथा दूसरी चीज़ें मौजूद थीं। हमने अपने अनुकूल चीज़ें चुनकर लानेके लिए कहा। हमारे सामनेकी दोनों कुर्सियोंपर दो तुर्कमान बैठे हुए थे। उन्होंने भी खानेकेलिए फ़र्मायिश की। खानेकी तश्तरीके साथ काँटा-चम्मच भी आया। पहले उन्होंने चम्मचसे खानेकी कोशिश की, लेकिन भोजन तश्तरीसे बाहर निकल जाता था। दो-तीन बार प्रयत्न करनेके बाद चम्मच फेंक उन्होंने हाथ हीसे खाना शुरू कर दिया। एक दिनमें काँटा-चम्मचसे खाना थोड़े ही सीखा जा सकता है। उस वक़्त मुझे हँसी आ रही थी, बाहर नहीं, भीतर। और वह भी उनके लिए नहीं, अपने लिए। ११-१२ साल पहलेकी बात है, मैं मद्रास प्रान्तमें रेलसे जा रहा था, एक दिन भोजन-गाड़ीमें खाने चला गया। बैराने तश्तरीमें खाना और छुरी, काँटा-चम्मच ला रखा। काँटा-चम्मच कभी हाथसे पकड़ा तो था नहीं, जब बैराने देखा कि काम बन नहीं रहा है, तो उससे नहीं रहा गया। वह बोल उठा—छोड़ दीजिए, हाथ हीसे खाइए। हम कोई साहबी पोशाकमें नहीं थे, तो भी हमारे ऊपर घड़ों पानी पड़ गया। यहाँ इस गाड़ीमें न कोई हँसनेवाला था, न ताना देनेवाला। छुरी-काँटेसे खाने वाले रूसी भी जानते हैं, कि उनके मध्य-एशियाके भाई हाथसे ही खाते हैं। और हाथसे खानेसे कोई नीच नहीं हो जाता। ग़लती करते देख वह सिखाना

भी देते हैं। वहाँ हँसने और शरमिन्दा होनेकी कोई जरूरत नहीं। दोनों जवान महासोवियत्के अधिवेशन देखनेकेलिए अपने कल्खोज़से मास्को आये थे, और अब सोवियत् सदस्यों, स्तालिन और क्रेमलिनका दर्शनकर उनकी मनोहर और अभिमानपूर्ण स्मृतिको लेकर अपने कल्खोज़ (पंचायती गाँव)को लौट रहे थे। भोजन-गाड़ीमें खानेका औसत १८ रूबल (८)) पड़ता था।

* * *
* * *

१७ जनवरीको सबेरे भी हम ऊँचे-नीचे पहाड़ी मैदानमें चल रहे थे। इधर बर्फ़ थी तो सही, लेकिन तह उतनी मोटी न थी। गाँवोंके मकान अधिकतर फूसकी छतके थे। मकान छोटे छोटे किन्तु साफ़ और अच्छे ढंगसे बने और बसे थे, और सभी मकान गर्म किये हुए थे। उनकी चिमनियोंसे धुआँ निकल रहा था। दोहरी शीशेकी खिड़कियाँ लगी हुई थीं। जगह-जगह गेहूँके डंठे और घास गँजी पड़ी थी। कुछ गंजोंपर हिफ़ाजतकेलिए छत बना दी गई थी। जाड़ेके कारण नंगे वृक्ष जहाँ-तहाँ थे, लेकिन जंगल कम दिखाई पड़ते थे। नदी-नाले सभी जमे हुए थे। गाँवोंके कुओंपर पानी खींचनेके लिए गड़ारियाँ लगाई गई थीं। रास्ता अधिकतर पूरबकी ओर था। ट्रेन मास्कोके समयसे सवा तीन बजे ओरेन्बुर्गमें पहुँची। गाड़ी कुछ देर खड़ी हुई। उतरकर हमने स्टेशनसे बाहर देखा। ओरेन्बुर्ग कई लाख आबादीका एक बड़ा शहर है। लाल-क्रान्तिके समय यह एक बड़े ही महत्त्वका स्थान था और यहाँ सफ़ेद और लाल सेनाओंकी जमकर लड़ाई हुई थी। क्रान्तिके एक वीर सेना-नायक चपायेफ़्की यह कौशलभूमि रहा है। तातार, मंगोल, रूसी, सभी तरहके स्त्री-पुरुष दिखाई पड़ रहे थे। लोग स्वस्थ और सुदृढ़ शरीरके थे। कोई कोई अधेड़ तातारनियाँ अब भी पायजामा पहने हुई थीं। औरतोंका पायजामा सचमुच ही बहुत बुरी पोशाक है। सोवियत्के उन देशोंमें जहाँ इसलाम था, पायजामा स्त्रियोंकेलिए एक धार्मिक पोशाक-सा बन गया था; और नये शासनमें मज़हबकी तरह यह भी बहुत जल्द उड़ा है। शहरमें कारखानोंकी अगणित चिमनियाँ दिखाई पड़ती हैं। उराल् नदी पाससे बहती है।

१८को १० बजे बाद हम कज़ाक सोवियत-साम्यवादी-रिपब्लिकसे गुज़र रहे थे। अक्त्यार्बिस्क नगर रात हीको गुज़र चुका था। ज़मीन समतल मैदान सी दीख पड़ती थी। जंगल और वृक्षका कहीं नाम न था। ६ बजे सुबह गाड़ी पहाड़परसे जा रही थी। कज़ाक मंगोल मुख-मुद्रा रखनेवाली जाति है। उनके धर्मके बारेमें इतना ही कहा जा सकता है कि मध्य-एशियाकी और जातियोंकी भाँति ये भी कट्टर मुसलमान थे। गाँवोंके मकान पहलोंकी अपेक्षा और भी छोटे-छोटे थे, और इनकी छतें मिट्टीकी थीं। अराल समुद्रके कई सौ मील पीछे अक्त्यार्बिस्कसे ही मिट्टीकी छतवाले मकान शुरू होते हैं; और लखनऊके बाद यह मिट्टीकी छत खपरैलमें बदलती है। मानों मकानकी दृष्टिसे अक्त्यार्बिस्क, ताशकन्द, समरकन्द, बुखारा, बलख, काबुल, पेशावर, रावलपिंडी, अम्बाला, सहारनपुर, मुरादाबाद, लखनऊ एक ही महादेशके भाग हैं। यहाँ अब खेत बहुत दिखलाई नहीं पड़ते थे। मैदानमें सर्दीके मारे पीली पड़ गई छोटी-छोटी घासें दिखाई पड़ती थीं; जिनमें भेड़ें और दोकोहानी ऊँट चर रहे थे।

१२ बजे (मास्को समय) हम चेल्कर स्टेशनपर पहुँचे। यह एक बड़ा स्टेशन और खासा शहर है। बहुतसी मिट्टीके तेलकी टंकियाँ हैं। तेलकी टंकियोंका इतना ज़्यादा होना ज़रूरी है, क्योंकि मोटर, लारीके अतिरिक्त सरकारी और पचायती खेतोंके ट्रैक्टरोंकेलिए भी तो काफ़ी इसकी आवश्यकता है। शहर रेलकी सड़कके दोनों ओर बसा है। सर्दीकेलिए तो हम नहीं कह सकते क्योंकि हमारी गाड़ी गर्म की हुई थी; लेकिन आगे बर्फ़ पतली होती जा रही थी। रेलके दोनों तरफ़ कोई जानवर सड़कपर न आ जाय, इसकेलिए लकड़ीके चौखटोंकी आड़ लगी थी। मैदान आया लेकिन वह ऊँचा नीचा था। एक स्टेशनपर मालगाड़ी खड़ी थी, जिसपर २०, खुली मोटर-लारियाँ और १ कटरपिलर ([illegible]) ट्रैक्टर लदा हुआ था। पहले स्टेशनोंपर रूसी भी काफ़ी थे, लेकिन अब हम एशियामें चल रहे थे। इसलिए यहाँ कज़ाकोंकी संख्या ही अधिक थी। कज़ाक स्टेशन-मास्टर, और कज़ाक लाल-सैनिक ही

ज़्यादा दिखलाई पड़ते थे। एक जगह हमारे ऊपरसे हवाई जहाज उड़ता जा रहा था। हवाई जहाज़ोंके पथ-प्रदर्शनकेलिए कहीं कहीं सैकड़ों फ़ीट ऊँचे लोहेके ढाँचे बने हुए हैं। ताशकन्द और मास्कोके बीच नियमित रूपसे हवाई डाक चलती है। पहले ताशकन्द और काबुलके बीच भी हवाई डाकका प्रबन्ध था। लेकिन बच्चा सक्काके बाद वह बन्द हो गई।

आज (१६ जनवरी) मास्कोसे चले पाँचवा दिन था। हम सिरदरिया की वादीमें पहुँच गये थे। अराल समुद्र रात ही छूट चुका था। किज़लबुर्दामें कहीं-कहीं बर्फ़की चित्ती दिखाई पड़ती थी। अब मालूम होता था कि हम रूसकी सर्दी पार कर चुके हैं। स्टेशनके बाहर ऊँटों और घोड़ोंकी गाड़ियाँ खड़ी थीं। घोड़ागाड़ियाँ ही अधिक थीं। कज़लबोर्द अच्छा क़स्बा है। मकान अधिकतर एक तलके तथा मिट्टीकी छतोंके हैं। मैं इस समयकी बात कह रहा हूँ। यद्यपि इन मकानोंने अपने सामने शताब्दियोंको भूठा किया है: लेकिन अब इनके दिन इने-गिने रह गये हैं। कुछ ही वर्षों बाद जब कोई दूसरा भारतीय इधरसे गुजरेगा, तो इन मिट्टीकी छतोंके छोटे-छोटे मकानोंकी जगह ईंट, सीमेंट और लोहेके बने महल देखेगा। अभी भी ऐसे मकान जहाँ-तहाँ उठ रहे हैं। रूसके देवदारोंकी लकड़ियाँ मालगाड़ियाँ ढोकर ला रही हैं।

सिर-दरियाकी वादी पर्वत विहीन है। दो-दो हाथ ऊँचे नर्कट और सरकंडे मीलों चले गये हैं। आजकल यह सूखकर पीले पड़ गये हैं; लेकिन गर्मीमें इनकी हरियाली बहुत सुहावनी मालूम पड़ती होगी। नर्कट और सरकंडोंके अतिरिक्त एक और लम्बी घास खड़ी है, जिसकी चटाइयाँ जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ती थीं। नदीके दोनों तरफ़ मीलों विस्तृत भूमि आसानीसे खेतके रूपमें परिणत की जा सकती है। इनके लिए सिर्फ़ नहरोंकी आवश्यकता है। सिर-दरियाका पानी वैसी कितनी ही नहरोंके बनानेकी इजाजत दे सकता है। सर्दी भी सख्त नहीं है, क्योंकि नदीका पानी जमा नहीं दीख पड़ा। इस भूमि, इस आबोहवा, को देखकर तो मेरे मुँहमें पानी भर आता था। आख़िर सोवियत्-प्रजातन्त्रकी १८ करोड़ जन-संख्या अभी बीसों वर्षों तक इस योग्य न हो

सकेगी, कि इन हजारों मीलों लम्बी खेतीके योग्य भूमिको आबाद कर सकें; और उधर भारत जन-संख्याके बोझसे दबा जा रहा है। क्या ही अच्छा होता कि भारतीयोंको भी यहाँ अपना एक उपनिवेश बसानेका मौक़ा मिलता। सिर-दरियासे लेकर आमू (वक्षु) दरिया तककी भूमिमें करोड़ों आदमियोंके बसने लायक़ भूमि वीरान पड़ी हुई है। यहाँका जलवायु और सर्दी गर्मी भारतीयोंके अनुकूल भी है। पचास लाख भारतीय हिन्दुस्तानसे बाहर निकलकर अफ़्रीका, दक्षिणी अमेरिका, फ़ीजी, मारिशस् आदिमें जाकर बस गये हैं, लेकिन वहाँ उन्हें पद-पदपर अपमानित किया जाता है। नागरिकताके समानाधिकारसे वह वहाँ वंचित हैं। काश कि ये हमारे भाई अर्काटियोंके फन्देमें फँसकर उन जगहोंमें न जा मध्य-एशियाके इन भागोंमें पहुँच गये होते; तो आज वहाँ पचास लाखकी आबादीकी एक विशाल हिन्दुस सोवियत-समाजवादी-रिपब्लिक तैयार होती। जाति और रंग के भेद-भावके बिना लाल-झण्डेके नीचे वह सिर ऊँचा-कर खड़े होते। साहित्य, कला, विज्ञान तथा सैनिक और नागरिक शिक्षाके सभी द्वार उनकेलिए खुले होते। अब भी तो हिन्दुस्तानकी आबादी हर दसवें साल ३ करोड़ बढ़ रही है जो हमारे लिए एक बड़ी चिन्ताका विषय है। क्यों न सोवियत् सरकारसे हम अपने लिए भूमि माँगें। ब्रिटिश सरकार ज़रूर इसे पसन्द नहीं करेगी, लेकिन जब उसने अपने साम्राज्यके सभी विभागोंमें हमारा रास्ता बन्द कर रखा है; और जहाँ भारतीय हैं, वहाँ भी उन्हें अपमानित देखना पसन्द करती है; तो उसे क्या हक़ है, कि हमें कोई दूसरा स्थान ढूँढ़नेसे मना करे।

घासोंके कारण यह उपत्यका पशुओंकेलिए एक अच्छी चरागाह है। जहाँ-तहाँ गदहे और ऊँटोंके झुण्ड चरते हुए दिखाई पड़ते थे। गाँवों में भी कज़ाक़ युवतियोंके बाल कट गये हैं, और पायजामेकी जगह स्कर्ट पहने वह इधर-उधर फिर रही थीं। क्रान्तिके पहले अगर चेहरेपरसे ज़रा सा बुर्क़ा उठा लेतीं तो शौहर, भाई, बाप, जो भी कोई पास रहता, उनको वहीं दो टुकड़े कर देता। आज हाथमें घड़ी बाँधे अपने सम-वयस्क तरुणसे हाथ मिलाए वह इस प्रकार

स्वच्छन्द थोड़े ही घूम सकती थीं। पुलीस-सेना, रेल तथा और सभी कर्म-चारियोंमें रूसियों और एशियाइयोंकी एक ही पोशाक है। कहीं-कहीं कुछ छतें फूसकी भी दीख पड़ीं। कलखोजोंमें इन फूसकी छतोंपर मिट्टी पड़ी हुई थी। गाँवोंके मकान यद्यपि ईंट और सीमेंटके नहीं बन पाये हैं, तो भी उनके आँगन तथा दीवारोंकी सफ़ाई, और काँच लगे जँगले बतला रहे थे, कि उन्होंने कितनी आर्थिक उन्नति कर डाली है। यह स्मरण रखनेकी बात है, कि अबसे २० वर्ष पहले इस मध्य-एशियाके भी गाँव दरिद्रता, मजहबी अन्ध-विश्वास, निरक्षरता और सामाजिक कट्टरपनमें हमारे हिन्दुस्तानी गाँवोंकी तरह ही थे।

मास्को-समयसे दो बज चुका था, जब हमें ताशकन्द नगरकी बिजली-बत्तियाँ दिखलाई देने लगीं। ताशकन्द मध्य-एशियामें उद्योग-धन्धेका एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ कपड़े तथा लोहे-मशीनके कई कारखाने हैं। पिछले १० सालोंमें इसकी आबादी और भी ज़्यादा बढ़ी है। नगरके भीतर यद्यपि नये ढंगके बहुतसे सीमेंट और लोहेके आलीशान मकान बन चुके हैं, लेकिन तेजी-से बढ़ती हुई आबादीकेलिए वह काफ़ी नहीं है। अब भी अधिकतर मकान छोटे-छोटे एक तल्ले हैं। सड़कें भी सभी मास्को और लेनिनग्रादकी तरह स्फाल्ट और सीमेंटकी नहीं हैं। अधिकतर सड़कें दरियाई गोल-मोल पत्थरोंसे बनी हैं। स्टेशनसे शहर जानेकेलिए ट्राम, टेक्सी और घोड़ागाड़ियाँ हैं। शहरमें वृक्ष पर्याप्त हैं। यद्यपि आजकल उनमें पत्ते नहीं हैं, लेकिन गर्मीमें शहर बड़ा हरा-भरा मालूम होता होगा। हवाई जहाजके अड्डेपर दो विशाल लोहेके ढाँचे खड़े थे, जिनकी लाल रोशनी मीलोंसे दिखाई देती थी।

२० जनवरीको ६ बजे (मास्को समय) सबेरे हम छोटे-छोटे पहाड़ोंमें चल रहे थे। सभी पहाड़ नंगे थे। शायद बरसातके दिनोंमें कुछ हरी घास उग आती हो। बाईं तरफ़ दूर ऊँचे पहाड़ थे, जिनपर सफ़ेद बर्फ़ पड़ी हुई थी। यही हमारे हिन्दूकुशका पश्चिमी छोर है। शायद समुद्र-तलसे हम कुछ ऊँचे थे, इसी कारण जहाँ-तहाँ बर्फ़ दिखलाई पड़ती थी। १० बजे हम जीज़क

स्टेशनपर पहुँचे। यहाँ हातेमें पचासों ट्रैक्टर—जिनमें कितने ही कटरपिलर तर्जके भी थे—खड़े थे। लोग मरम्मतमें लगे हुए थे। जुताईका समय आ गया था। इसलिए ट्रैक्टर—जो जाड़े भर गुदाममें रखे पड़े थे—अब कामकेलिए तैयार किये जा रहे थे। ट्रैक्टरोंके अतिरिक्त वहाँ कितनी ही खुली लारियाँ भी थीं। शायद काटने, दाँवनेकी कम्बाइन मशीनें भी हों, लेकिन अभी फ़स्ल कटनेकेलिए कई महीने हैं; इसलिए उन्हें गुदामके भीतर रखा गया है। जो पंचायती गाँवोंको भाड़ेपर मशीन देते हैं, उन स्थानोंको मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन कहा जाता है। यहाँके मकान बहुत साफ़-सुथरे हैं। ऐसे गाँवमें आकर ख़ाम-ख़ाह नुक्ताचीनी करनेवाला यूरोपीय यात्री भी नाक-भौंह नहीं सिकोड़ सकता। सिर-दरियासे आमू दरिया तक फैले देश—जिनमें कज़ाक, तुर्कमान, उजबेक और ताजिक जातियाँ बसती हैं—को सोवियत् सरकारने कपासकी खेतीकेलिए रिज़र्व कर दिया है। यहाँके लोगोंके खानेकेलिए गेहूँ बाहरसे आता है। जिस प्रदेशमें हम चल रहे थे, वहाँ उजबेक जाति बसती है। हिन्दुस्तानमें उजबेक नाम ही सुनकर लोग हँस देते हैं। मुमकिन है, वे पहले हदसे ज़्यादा सीधे सादे रहे हों। लाल क्रान्तिके समय तक वह मध्य एसियाकी सबसे अधिक अशिक्षित जातियोंमें थे, लेकिन अब उजबेक उजबक नहीं हैं। अब ४० वर्षसे कम उमरके स्त्री-पुरुषोंमें कोई अनपढ़ ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। हजारों उजबेक सेना और सेनाके अफ़सर हैं। अपने प्रजातन्त्रका प्रबन्ध वह स्वयं बड़ी सफलतासे कर रहे हैं। उनकी भाषा जो क्रान्तिके पहले कागजपर लिखी नहीं गई थी, अब उच्च शिक्षा तककी माध्यम है। कितने ही दैनिक और मासिक-पत्र रोमन-लिपि और उजबेक भाषामें निकल रहे हैं। हर साल हजारों ग्रन्थ छप रहे हैं। रूसी और उजबेकके भाई भाईके सम्बन्धको देखकर रश्क आता है। जीजक्में रूसकी तरह सर्दी न थी, इसलिए ताज्जुब नहीं कि जूता रहनेपर भी कीचड़के डरसे लड़का नंगे पाँव जाता हो। एक रूसी यात्री लड़केसे कह रहा था—'अता (बाप) से कहो कि गलोश (जूताको ढाँपने वाला रबड़का जूता) ले दें।' रूसी भाईको उजबेकका सिर्फ 'अता' शब्द मालूम था और गलोश रूसी शब्द

होनेपर भी सब जगह सुपरिचित है। इसलिये लड़केने कहनेवालेका अभिप्राय समझ जरूर ही लिया होगा।

अब हमारी सड़कके किनारेवाले गाँवोंमें सेब, नासपाती जैसे फलदार वृक्ष भी मिल रहे थे। बीरी और सफ़ेदे अब भी थे। हाँ, पत्ते सभीके झड़ चुके थे। ११ बजे (स्थानीय समय २ बजे) हमारी रेल दक्षिण को जा रही थी। उस समय हम एक बड़े कलखोज् गाँवमें खड़े थे। इस गाँवका नाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक और क्रान्तिकारी प्रिंस क्रोपत्किन्के नामपर क्रोपत्किन् रखा गया है। मिट्टीके तेलका एक बड़ा गुदाम है। पञ्चायत-घरके बरामदेमें उज़बेक पंच कुछ मंत्रणा कर रहे थे। शायद खेतकी जुताई-बुआईकी योजना तैयार हो रही थी। १ बजे (स्थानीय ४ बजे) हम समरकन्द पहुँचे। सारा इलाक़ा पहाड़ी है; पहाड़ियाँ छोटी-छोटी हैं। समरकन्दका सारा इलाक़ा बाग़ोंका देश है। अंगूर, सेब, नासपाती, ख़ूबानी सभीके लतावृक्ष सूखेसे दिखाई पड़ रहे थे। जहाँ-तहाँ धानकी क्यारियाँ भी थीं, लेकिन अधिकतर खेत कपासकेलिए तैयार किये गये थे। नहरें और छोटी-छोटी नदियाँ भी जहाँ तहाँ थीं। उनका पानी जमा नहीं था। मकान अधिकतर मिट्टीके और छतें भी मिट्टी ही की हैं। दरवाज़ोंमें मेहराबकी जगह सरल रेखाका ही व्यवहार है। बर्फ़ नाम मात्र जहाँ तहाँ दिखाई पड़ी। स्टेशनसे बाहर अनगढ़ पाषाणोंकी लाटपर लेनिनका बस्ट (ऊर्ध्व देह) था, जो शहरकी ओर बड़ी गम्भीरतासे देख रहा था। शहर काफ़ी लम्बा-चौड़ा है। मालूम होता है, बिजली यहाँ बहुत सस्ती है, क्योंकि उस वक्त भी सड़कोंपर बत्तियाँ जलती छोड़ दी गई थीं। काबुल जैसे मीठे सफ़ेद अंगूर यहाँ हमें खानेको मिले। ख़ूबानी, सेब, नासपाती भी स्टेशनकी दुकानपर बिक रही थीं।

शामको हम एक गाँवके स्टेशनपर पहुँचे। ख़याल आया, पहले यह देश मुसलमानोंका था; देखें, आदमियोंमें कितने देखनेमें भी मुसलमानसे जान पड़ते हैं। स्टेशनपर मैंने ८० उज़बेक गिने, जिनमें सिर्फ़ ३ दाढ़ीवाले थे, और उन तीनोंमेंसे भी सिर्फ़ एक दाढ़ीको शरियतवाली दाढ़ी कहा जा सकता है।

औरतोंमें एक भी पर्दावाली न थी। अब भी बहुतोंकी पोशाक पोस्तीन या रुई भरे चोग़ोंकी थीं। लेकिन यह शायद जाड़ेके कारण हों। गर्मियोंमें ज़रूर अधिकांश लोग कोट-पतलूनका ही व्यवहार करते होंगे। मध्य-एशियाके सभी स्टेशनोंपर कुछ न कुछ रूसी स्त्री-पुरुष दिखलाई पड़े।

* * * * * *

२. तिर्मिज़में

आज (२१ जनवरी) मास्कोसे चले सातवाँ दिन था। और हम लगातार एक ही गाड़ीमें आ रहे हैं। यद्यपि हमें आज ही उतर जाना है, लेकिन गाड़ी कल आठवें दिन अपने अन्तिम स्थान स्तालिनाबाद पहुँचेगी। ६ बजे सवेरे वे ही नंगे पर्वत हमारे आसपास थे। हाँ, बर्फ़का कहीं पता न था। रातको हम कगान स्टेशन पार कर चुके थे। यहाँसे बुख़ारा कुछ ही दूरपर पड़ता है। इस वक़्त हम तुर्कमानियाँ सोवियत् सोशलिस्त-रिपब्लिककी भूमिपर चल रहे थे, और जल्द ही हम फिर उज़बेक रिपब्लिकमें दाख़िल होनेवाले थे। पहाड़ोंके बीचमें ज़मीन मैदान सी ही जान पड़ती थी। पशुओंके चरनेकेलिए काफ़ी घास थी। तुर्कमान लोग चेहरेमें मंगोल जैसे हैं। लेकिन क़दमें ज़्यादा लम्बे-चौड़े। इनकी स्त्रियाँ—जिनमेंसे बहुतोंने अपनी पुरानी वेषभूषाको नहीं छोड़ा है—दस-दस इंच ऊँची पाँच-पाँच सेरकी पिटारीसी पगड़ी सिरपर बाँधती हैं। शायद इस पोशाकसे ही, इनमें बदसूरती बहुत ज़्यादा है। जिस जगहसे हम गुज़र रहे थे, वहाँ खेत कम हैं। एक स्टेशनपर देखा, पासमें कुछ तुर्कमान-परिवार पहलेसे बनी मिट्टीकी गोल दीवारोंपर अपना काला तम्बू खड़ा कर रहे थे। उनके गदहे और भेड़ें आस-पास चर रही थीं। मालूम होता है, अब भी इनमें कुछ ख़ानाबदोश हैं। ख़ानाबदोशोंमें भी बहुतसे पंचायती पशुपालन करते हैं। कह नहीं सकता, ये परिवार पंचायती थे, या वैयक्तिक।

हमारी दाहिनी ओर दूरसे वक्षु गंगा (आमू दरिया) जा रही थी। आगे लाल-सेनाकी एक छोटी चौकी मिली। सैनिकोंके रहनेका मकान दो-तल्ला और ईंटका बना हुआ है। सिपाहियोंमें अधिक रूसी मालूम पड़ते थे। आगे एक लम्बी सुरंगसे हमारी रेल पार हुई। मालूम हुआ इसी सुरंगकी रक्षाकेलिए यह फ़ौजी चौकी थी। आखिर हम सोवियतकी सीमापर भी तो थे। यही वक्षु नदी सोवियत्-भूमिको अफ़गानिस्तानसे अलग करती है। अफ़गानिस्तानसे क्या डर हो सकता है, लेकिन उसके बाद ही ब्रिटिश अधिकृत भारत जो आ जाता है, जिसके कि सीमान्तपर अंग्रेजोंने एक बड़ी फ़ौज जमा कर रखी है।

छोटे-छोटे कई स्टेशन आये। गाँवके मंगोल मुख-मुद्रा रखनेवाले लोगों-में पुरानी पोशाक ज्यादा थी। लेकिन ताजिक जो मुख मुद्रा और भाषामें ईरानियोंसे ज़्यादा मिलते हैं, बल्कि शकल-सूरत और स्त्रियोंके सिरकी टोपीमें काश्मीरियों जैसे जान पड़ते हैं, अधिक शिक्षित और होशियार हैं।

६॥ बजे (स्थानीय १२॥ बजे) हम तिर्मिज़् स्टेशनपर पहुँचे। गाड़ीमें यद्यपि हम उतने ज़्यादा परिचित नहीं बना पाये, जितने कि तीसरे दर्जेमें सफ़र करनेपर करते; लेकिन तो भी जो परिचित हुए, उनसे बिदाई ली। भरियाने सामान नीचे उतारा। पता लगानेपर एक फ़ारसी भाषा-भाषी ताजिक मिल गये। उनके साथ जाकर स्टेशनमें लगेजके बारेमें पूछा। पार्सलघरमें भी ढूँढ़ा लेकिन मालूम हुआ, हमारे बक्स इस ट्रेनसे नहीं आये। पूछापाछी करनेपर बतलाया गया, शायद कल या परसों आ जायेंगे। ताजिक् सज्जनसे हमने कोई रहनेकी जगह पूछी। उन्होंने बतलाया होटल शहरमें है जो यहाँसे ५ किलोमीतर (प्रायः सवा तीन मील) है। उन्होंने कलखोज् तम्बूलेके चायखानेमें पहुँचाया। चाय माँगनेपर एक तीन पावकी गोल चायदानीमें हल्के भूरे रंगका गर्म पानी और एक पाव भर दूध रखने लायक चीनीका प्याला सामने रख दिया गया। पानीको प्यालेमें डालकर मुँहसे लगाया, तो मालूम हुआ कि न उसमें नमक है, न चीनी। जैसे बुखारका

काढ़ा दिया गया हो। समझनेमें मुझे देर न लगी, क्योंकि चीन और जापानमें भी तो ऐसा ही काढ़ा मिलता है; लेकिन जापानमें नन्हीं-नन्हीं प्यालियाँ होती हैं। दो-चार घूँट चाय पीनी पड़ती है। यहाँ एक बर्तनका बर्तन सामने रख दिया गया है। चायखानेमें देखा, इसी तरहकी चायदानियाँ पचासोंकी संख्यामें कतारसे सजाकर रखी हैं, और हर चायचीको एक एक चायदानी भरकर प्यालेके साथ नजर की जा रही है। मैंने दो-चार घूँट पीकर प्यास बुझाई। तन्दूरकी एक रोटी चीनीके साथ खाकर क्षुधा शान्त की। सामान अब भी हमारे साथ था। हम फिर स्टेशनपर गये। पहला काम पासपोर्टके झगड़ेसे निबटना था। पता लगानेपर मालूम हुआ कि पासपोर्ट आफिस भी शहरमें है। स्टेशन हीसे इन्दुसकी मुसाफिरके आनेकी खबर पासपोर्ट आफिसको दे दी गई। रसीद लेकर हमने अपना सामान लगेज-घरमें रख दिया। स्टेशनसे शहरको फिटेन और मोटर थोड़ी-थोड़ी देरपर जाती रहती है। खाली हाथ थे, जल्दीका कोई काम भी न था, इसलिये पैदल ही चल पड़े। सड़क गोल गोल पत्थरोंकी बनी है। बाईं तरफ कुछ पक्के घर भी बने और बन रहे हैं। कुछ बरसोंमें शहर स्टेशन तक पहुँच जायगा; लेकिन अभी आसपास सभी खेत हैं, जिनकी एक बार जुताई हो चुकी है। तिर्मिज शहरमें पंच-वार्षिक योजनाओंने उतनी काया पलट नहीं की है। अभी भी उसकी बहुत सी सड़कें कच्ची हैं। पानी बरस जानेपर उनपर बहुत कीचड़ उछलने लगता है। हाँ, सारे शहर (? कस्बे)में बिजलीकी रोशनी है। अभी पानीका नलका भी नहीं है। और पाखानोंका प्रबन्ध भी असन्तोषजनक है। मकान अधिकतर एकतल्ले हैं। यद्यपि अपनी श्रेणीके दूसरे एशियाई कस्बोंसे तिर्मिजकी इमारतें कहीं बढ़-चढ़कर हैं। अफ़गानिस्तानसे जानेवाले सौदागरोंकेलिए तो यह स्वर्गपुरका एक खंड मालूम होता है, लेकिन जिसने रूसके अन्य शहरों और कस्बोंको देखा है, उसीलिए तिर्मिजकी अवस्था उतनी प्रशंसनीय नहीं होगी। जारशाहीके जमानेमें भी हवलदार और दूसरी फौज यहाँ रहती थी। आजकल भी उस वक्तकी फौजी छावनीके बहुतसे घर

मौजूद हैं। ऐसे एक घरपर लिखा था—१८९९ अर्थात् ३८ वर्ष पहले वह मकान बना था। इन पुराने मकानोंमें जिस प्रकारके सिपाही रहते थे, उनमें और आजके सोवियत् सिपाहियोंमें जमीन-आसमानका फ़र्क़ है। आजकलका हर एक सिपाही कमसे कम सात-आठ साल स्कूलकी शिक्षा पा चुका है। हर चारमेंसे तीन सिपाही कल-मशीनकी बातोंको अच्छी तरह जानते हैं। तिर्मिज-के जारशाही जमानेके सिपाहियोंमें जहाँ रूसी ही सब कुछ थे, वहाँ आज एशियाई और रूसी कन्धेसे कन्धा मिलाये, मातृभूमिकी रक्षाकेलिए तैयार हैं। गोरे-कालेका भाव अब कहानीकी बात हो गई है। शहरके पूरब तरफ़ हवाई जहाजोंका अड्डा है। उधर नई बनी हुई इमारतें ज्यादा अच्छी हैं। तिर्मिज-का जो चित्र मैंने यहाँ खींचा है; बहुत सम्भव है, अगले दो-तीन वर्षोंमें ही वह सब लुप्त हो जाय और उसकी जगह लोहे और सीमेंटके बने बड़े-बड़े महल, स्फाल्ट बिछी चौड़ी सड़कें सिवरेज् नहरों द्वारा शहरकी गन्दगीकी सफ़ाईका प्रबन्ध होकर तिर्मिज् नया रूप धारण कर ले।

पासपोर्ट-आफ़िसमें कर्मचारी एक रूसी महिला थीं। वह सिर्फ़ रूसी और उजबेक भाषा जानती थीं। मेरा रूसीका ज्ञान अत्यन्त अल्प है, और सवा महीने बाद जब यह पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, तो वह ज्ञान भी बहुत सा विस्मृत होता जा रहा है; तो भी रूसी भाषामें काम चलानेमें मुझे कोई दिक़्क़त न होती थी। महिलाने पासपोर्ट ले लिया। चूँकि, अभी मेरा सामान नहीं आया था; इसलिए सीमा पार करनेका अभी कोई सवाल ही नहीं था। महिलाका बर्ताव बहुत ही शिष्ट था। उन्होंने रहनेकेलिए सामनेवाला गस्तिनित्सा (होटल) बतला दिया। मैंने सोचा, ऐसी जगह रहूँ, जहाँ फ़ारसी जाननेवाले भी मिलें, तो मुझे बोलने-चालनेका सुभीता रहेगा। पूछनेपर उन्होंने अफ़गानोंकी सरायकेलिए एक चिट लिखकर पता बतला दिया। अफ़गानोंकी सराय शहरके एक कोनेमें अवस्थित हातेवाले बाड़ेके अन्दर है। चौकीदार एक ताजिक वृद्ध है; जो क्रान्तिसे पहले ही अफ़गानिस्तानसे आकर यहाँ बस गया था। अपनी उजबेक औरतसे उसके कुछ बच्चे भी हैं, जिनमें-

से एक लड़की स्कूलकी अध्यापिका है बूढ़ा अब भी वेषभूषामें कुछ पुराना जैसा मालूम होता है। लेकिन लड़की केशच्छिन्ना स्कर्ट धारिणी यूरोपीय तरुणीके रूपमें परिणत हो गई है। बूढ़े चौकीदारने एक कोठरीमें जगह दी। उसी कोठरीमें पहलेसे ही एक पठान सौदागर आकर ठहरे थे। मुझे अब स्टेशनसे सामान लानेकी सूझी और एक फिटनकर वहाँसे सामान उठा लाया।

* * *   * * *

पठान सहवासियोंकेलिए जो कुछ वह तिर्मिज़में देख रहे थे वह आश्चर्यकी बात थी। हम तो मास्को, लेनिन्ग्राद् तथा रूसके दूसरे क़स्बों और शहरोंसे तुलना करके तिर्मिज़को हेच समझ रहे थे, और वह इसकी तारीफ़के पुल बाँध रहे थे। इन सौदागरोंमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने १५ साल पहलेके तिर्मिज़को देखा था। एक सज्जन कह रहे थे—पाँच-छः साल पूर्व यहाँ रोटी बड़ी महँगी थी। अब तो बड़ी सस्ती है और जितनी चाहिए उतनी मिल जाती है। गोश्त और मक्खन भी दुर्लभ थे और आज उनके लिए कुछ दाम ज्यादा जरूर देना पड़ता है, लेकिन वह बड़े सुलभ हैं। अफ़ग़ान्की सरायका मकान पहले मज़ारशरीफ़् (अफ़ग़ानिस्तान)के एक मुल्लाकी सम्पत्ति थी, और हमारे पठान साथियोंके खयालमें अब भी वही मुल्ला उसका मालिक है। मैंने पूछा भी—यदि मुल्ला मालिक है, तो सरायकी मरम्मत क्यों नहीं की जा रही है? क्यों दीवार और दरवाजे टूटते-फूटते जा रहे हैं? तिर्मिज़की और इमारतोंकी मरम्मतकी ओरसे बहुत कुछ उपेक्षा देखकर मुझे तो शक हो रहा है कि शायद सरकार शहरको नये तौरसे तामीर करना चाहती है; इसीलिए पुरानी इमारतोंकी मरम्मतपर बहुत धन और श्रम खर्च करना नहीं चाहती।

आज (२२ जनवरी) लेनिन्की मृत्यु-दिवसके उपलक्ष्यमें छुट्टी थी। आफ़िसों और बड़े-बड़े मकानोंपर शोक-सूचक काले हाशियेके लाल झंडे लगे हुए थे। मैंने दोपहर बाद शहरके कुछ हिस्सोंको विशेष तौरसे देखना

चाहा। जाते-जाते एक स्कूलके पाससे गुजरा। इमारत दो-तल्लेकी थी और ईंट-चूनेकी बनी थी। नीचे और ऊपर दोनों फ़र्श चौकोर ईंटों जैसे लकड़ीके थे। वैसे इमारत मजबूत, साफ़ और हवादार थी, लेकिन लकड़ियोंपर विशेषकर फ़र्शकी लकड़ियोंपर वारनिशकी ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। मुझे यह भी खटक रहा था। क्योंकि मैंने लेनिनग्राद्के स्कूलोंको देखा था। दरवाजा खोलकर भीतर गया। चौकीदारने एक वृद्धासे मुलाक़ात करवाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं इन्दुस् हूँ और स्कूल देखना चाहता हूँ, तो उन्होंने सादर कमरोंको दिखलाना शुरू किया। छुट्टीके कारण आज छात्र नहीं थे। सिर्फ़ एक कमरेमें कुछ प्योनीर् और प्योनिर्का (बालचर और बालचरी) बेंचोंपर बैठे बातचीत कर रहे थे। यह एक प्राइमरी स्कूल था और सो भी सोवियत्के भीतर एक बहुत ही मामूली स्थितिका। लेकिन इसकी इमारत हमारे यहाँके बहुतसे हाई स्कूलोंकी इमारतोंसे भी बढ़-चढ़कर थी। वृद्धा नीचेके कमरोंको दिखलाकर ऊपरके कमरोंको दिखाने ले चलीं। वहाँ मुझे फ़ोटोके कमरेमें जानेपर एक उज़बेक अध्यापक मिले जो कुछ फ़ारसी भी जानते थे। पूछनेपर मालूम हुआ कि वह भूगोल पढ़ाते हैं। वहाँ दो-तीन लड़के-लड़कियाँ बैठी हुई थीं, जिनका फ़ोटो एक लड़का अपने अध्यापकके परामर्शानुसार ले रहा था। अर्थात् प्राइमरीके लड़कोंको फ़ोटो खींचना सीखनेका भी वहाँ प्रबन्ध था। अभी चन्द ही मिनट मैं वहाँ ठहरा था कि दो प्योनिर्काओंका एक डेपुटेशन फ़ोटोके कमरेमें दाखिल हुआ। पूछा—आप इन्दुस हैं? मैंने कहा—हाँ! कहा—कुछ प्योनीर और प्योनिर्का नीचे कमरेमें जमा हैं, क्या आप हमें हिन्दुस्तानके बारेमें कुछ सुना सकते हैं? मैंने कहा—सुनानेमें कोई उज्र नहीं है लेकिन मुझे उतनी रूसी भाषा नहीं आती। कहा—हमारा एक सहपाठी ताजिक है, वह फ़ारसीसे रूसी करके हमें समझा देगा। लड़कियोंकी अवस्था १० वर्षके आसपास होगी। टाल-मटोल करनेकी इच्छा की तो बात ही क्या, मुझे खुद आकांक्षा थी कि इन बालक-बालिकाओंको नजदीकसे देखने की। भला ऐसे सुअवसरको मैं कैसे

अपने हाथसे दे सकता था। कमरेमें २०के करीब बालक-बालिकाएँ होंगी। सोवियत-भूमिमें पाठशाला, विश्वविद्यालय, क्लब, पंचायत, पार्लियामेंट, कहीं भी स्त्री-पुरुषकेलिए अलग संस्थाएँ नहीं हैं; और न स्त्रियाँ ऐसी कमजोर हैं कि उनके स्वत्वोंकी रक्षाकेलिए विशेष रक्षाका आयोजन किया जाय। प्योनीर् और प्योनिर्काका भी संगठन एक है। आज तवारिश् लेनिन्के मृत्यु-दिवसको अच्छे ढंगसे मनानेकेलिए यह मँडली जमा हुई थी। कमरेमें दाखिल होनेपर सभी अपनी जगहोंपर बैठे रहे। यद्यपि एक अजनबीके देखनेसे दिलमें जो कुतूहल हो रहा था, उसकी छाप उनके मुँहपर भी थी। छात्र-छात्राओंके अतिरिक्त दो-तीन अध्यापिकाएँ भी एक ओरकी बेंचपर बैठी थीं। दर्शक-मंडलीमें रूसी, ताजिक और उजबेक तीनों थे। रूसी और उजबेकोंकी संख्या बराबर थी, ताजिक छात्र कम थे। एक दस वर्षका ताजिक बालक स्वयं आकर हमारे बगलकी कुर्सीपर बैठ गया। विद्यार्थियोंकी तरफ़से प्रश्नोंकी बौछार शुरू हुई और वह ताजिक बालक अपनी भाषामें उसका अनुवाद मेरे लिए करने लगा। वैसे .फारसीका ज्ञान भी मेरा बहुत गम्भीर नहीं है, और फिर वह बोल रहा था ताजिकिस्तानकी .फारसी, जो ईरानियोंके खयालमें एक गँवारू .फारसी है—किताबको वह कितोबे कहता था। पिसरानको पिसरोने, इस प्रकार अनुवादकके कथनका आधा भाग हमारे पल्ले पड़ता था और हमारे कथनका आधा भाग उसके पल्ले। श्रोतृ-मण्डलीके पास तो यदि चौथाई भी पहुँच जाता हो तो गनीमत ही समझिए। पहले हमारी यात्रा किस रास्ते हुई, यह पूछा गया। एक बड़ा नक़शा दीवारपर टाँग दिया गया और जब हमने कहा—क्वेटा, तेहरान, बाकू, मास्को, लेनिनग्राद् ओरेन्बुर्ग, ताश-कन्द, समरकन्द, तिर्मिज; तो भूगोल अध्यापकने लकड़ीसे नक़शेपर वह सारे स्थान दिखला दिये। आगेके रास्तेके बारेमें हमने बतलाया—आमूदरिया, मजारशरीफ, काबुल, पेशावर। फिर पूछा—हिन्दुस्तानमें प्योनीर् और प्योनिर्का कैसे होते हैं। हमने कहा—उन्हें हम लोग स्काउट कहते हैं। हमारे यहाँ हर एक बालक-बालिकाको स्काउट बननेका मौका नहीं मिलता।

"क्यों ?"

"क्योंकि बहुतसे बच्चोंके माँ बाप ग़रीब हैं। उन बच्चोंको पढ़नेका मौक़ा कहाँ ? उन्हें तो पेटकेलिए काम करना पड़ता है।"

"काम ? कितने घंटे ?"

"घंटोंकी गिनती नहीं। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक और बाद भी।"

"ओह ! इतना काम ! और कितनी उम्रके बच्चोंकेलिए ?"

"तुम्हारी उम्रके। और तुमसे छोटी उम्रके बच्चोंकेलिए।"

"ओह ! तो इन्दुस्थान् बच्चे बहुत तकलीफ़में होंगे !"

एक लड़का बोल उठा—"आपके यहाँ कापितलिस्त (पूँजीपति) हैं क्या ?"

हमने कहा—"हमारे यहाँ के सभी कल-कारखाने, धन-धरती, कापितलिस्तों-के ही हाथमें हैं। क्या तुमने कापतलिस्त देखे हैं ?"

"नहीं।"

एक लड़की बोल उठी—"हाँ, देखा है, फ़िल्ममें !"

एक लड़का पूछ बैठा—"युद्धमें तुम लाल-सेनाके साथ हो या सफ़ेद सेनाके ?"

मैंने कहा—"हमारे यहाँ अभी लाल और सफ़ेद सेनाका युद्ध नहीं हो रहा है। वह हमारे देशसे बहुत दूर चीन और स्पेनमें हो रहा है।"

एक ६ वर्षका रूसी लड़का तावड़तोड़ सवाल कर रहा था। हमारी बग़लमें एक बड़ी उम्रका उजबेक या तुर्कमान लड़का खड़ा था। उसने एक बार हमारे वाक्यके अनुवाद करनेकी धृष्टता कर दी। ताजिक लड़का लड़ पड़ा—"तुम ग़लत अनुवाद कर रहे हो,। मुझसे दोबारा वाक्य दोहरवाया गया और सचमुच उस लड़केका अनुवाद ग़लत साबित हुआ। इसके बाद लड़कोंने पूछा—आपके पास अपने देशके सिक्के हैं ?

मैंने कहा—'अपने देशके तो नहीं, हाँ कुछ अंगरेजी सिक्के हैं।' फिर

उन्होंने शिलिंग, पेंसके चाँदी ताँबेके सिक्के तथा १० शिलिंग वाले नोट लेकर देखे। अन्तमें इन्दुस् प्रोफेसरको धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

३. कलखोज् नमूना

कलखोज् देखनेकी हमारी बड़ी इच्छा थी। पूछनेपर कुछ कलखोजों के नाम मालूम हुए। सबसे नजदीक तिर्मिज़से बाहर स्टेशन जाने वाली सड़ककी बाई ओर जरा हटकर कलखोज् बेनुल्मलल् था। हम स्वयं अकेले पैदल चलकर वहाँ पहुँच गये। यह डेढ़ सौ उजबेक घरोंका गाँव है। पूछनेपर कलखोज्के आफिसमें पहुँचा दिया गया। आफिसके दरवाजेपर बिजली लगी हुई थी और बाहर रेडियोका शब्द-प्रसारक यंत्र। दो मुस्तैद जवानोंने उजबेक भाषामें कुछ पूछा। फिर हमारी अज्ञता देखकर एकने रूसीमें बात की। लेकिन हम दोनों ही रूसीमें इतने कच्चे थे कि एक दूसरेको समझाना कठिन था। आफिसकी मेज, कुर्सियों और बाहरकी मिट्टीकी दीवार और मिट्टीकी छतको देखकर हमने स्कूलका रास्ता पूछा। आज (२२ जनवरी) स्कूल बन्द था। मकान मिट्टीका ही था लेकिन उसमें काफ़ी खिड़कियाँ और बेंचें थीं। दीवारमें सफेदी भी हुई थी। बच्चाखानेके बारेमें पूछनेपर बतलाया—"उसकी ज़रूरत खेत जोतने बोने और फसल काटनेके वक्त होती है। आजकल तो औरतोंकेलिये बाहर बहुत काम नहीं होता।" गाँवकी एक तरफ देखा, कुछ हट्टे-कट्टे जवान नहरकी मरम्मतमें जुटे हुए हैं। मकानोंके पास और छतोंपर कपासका सूखा डण्ठल ईंधनकेलिए जमा किया हुआ था। गाँवके भीतर जानेपर अजनबी समझकर दो आदमी मेरे पास आये। मेरी बात न समझ पानेपर वह मुझे एक अधेड़ पुरुषके पास ले गये। वह एक काम करनेवाली टोलीका ब्रिगादीर (ब्रिगेडियर या नायक) था। भाषाकी कठिनाई देखकर मैंने सिर्फ कलखोज् नमूनाके बारेमें पूछा, जिसका नाम मैं पहले सुन चुका था। मालूम हुआ, वह स्टेशनसे ढाई तीन मीलपर है। मैंने गाँवके पंचायती किसानोंमें एक बात खास देखी। उनमें संकोच, शर्मीलापन और

अपनेको छोटा समझनेका भाव बिलकुल नहीं था। वे बहुत ही अकृत्रिम किन्तु भद्रताके साथ हाथ मिलानेकेलिए आगे बढ़ते थे।

२३ तारीखको भी तातील थी। यद्यपि हमारे बक्स कल ही मिल गये थे; लेकिन छुट्टीके कारण पासपोर्टका काम नहीं हो सकता था। हमने आज कल्खोज् नमूना देखना निश्चय किया। संयोगसे स्टेशनपर उसी गाँव-का एक आदमी मिल गया। उसकी जबान फारसी थी। स्टेशनके पास रेल पारकर हम कच्ची सड़कसे आगे बढ़े। थोड़ी दूरपर हमें जुते हुए विशाल खेत मिलने लगे। यद्यपि ये खेत भी कल्खोज्-नमूनेके थे, लेकिन बस्ती अभी बहुत दूर थी। बीचमें हमने पानीकी छोटी-छोटी नहरें (कूल) पार कीं। साथीने बतलाया—'दस-बारह बरस पहले यह सारी जमीन गैरआबाद थी। वक्षु गंगाकी नहरने इस जमीनको आबाद किया। सारे गाँवमें सिर्फ कपास-की खेती होती है। बात करते-करते हम गाँवमें पहुँच गये। एक ऊँची जगह-पर कुछ घर हैं, जिनमें एक स्कूलकेलिए, दूसरा मालगोदामकेलिए, तीसरा चौथा गायों और घोड़ोंकेलिए हैं।

पहले हमारा परिचय गाँवके अध्यापकसे कराया गया। अध्यापक उजबेक थे, लेकिन वह फारसी जानते थे। विद्यार्थी भोजनकी छुट्टीमें थे। इसलिए अध्यापक महाशय चाय पिलानेका आग्रहकर स्कूलके मकानके पीछेकी ओर अपने रहनेके कमरेमें ले गये। मकानकी दीवार और छत तो वैसी ही थी, जैसी लखनऊ जिलेके देहाती मकानोंकी। हाँ, उसकी लिपाई अच्छी, तथा दरवाजे खिड़कियाँ काँचकी लगी थीं। भीतर कुर्सी, मेज तथा आलमारी भी थीं। घरके भीतर दाखिल होते ही बगलकी कोठरीसे एक भूरे बालोंवाली तथा लाल-गोल-चेहरेवाली मोटी-ताजी तरुणी निकल आई। उजबेक युवकने पत्नी कहकर उसका परिचय कराया। मेम एशियाईकी औरत हो, यह सोवियत् मध्य-एसियामें कोई आश्चर्यकी बात नहीं समझी जाती। हाँ, यह कहा जा सकता है कि दो सौ घरोंके इस छोटेसे गाँव और इस कच्चे मिट्टीके मकानमें ऐसे दम्पती! लेकिन सोवियत्की औरतें

तितली नहीं बनती। तितली बननेका उन्हें अवसर ही कहाँ है? पतिकी कमाईपर तो स्त्री गुजर नहीं करती। हर एक औरत अपनी रोजी आप कमाती है। मेम रखनेसे खर्च और फ़र्माइश अधिक बढ़ जायगी—यह ख़याल होता: तो यह उजबेक अध्यापक इस रूसी तरुणीसे शादी करनेकी हिम्मत थोड़े ही करता। मेरे सामने रूसी मिठाइयोंकी एक तश्तरी रख दी गई और साथमें कुछ तन्दूरी रोटियाँ। तरुणी चाय पकानेकेलिए कोठरीके भीतर चली गई और मैं, अध्यापक तथा पहलेके साथी महम्मदोफ़् मेजके किनारे बैठकर खाने और गप करने लगे। चायपानी और प्यालोंके आ जानेपर आग्रह हुआ कुछ अण्डोंके आमलेट बनानेकेलिए। मैं खाकर तो गया नहीं था और तीन-चार मील चलनेसे भूख भी लग आई थी। ऊपरके मनमे एकाध बार नहीं-नुहीं की, और फिर आग्रहको मान लिया। चाय-पान नहीं हुआ बल्कि यह तो भोजन ही हो गया। मालूम हुआ, स्कूलके यही दोनों पति-पत्नी अध्यापक हैं। चाय पीनेके बाद हमें पहले क्लबघरकी ओर ले गये। क्लबघर नया बन रहा है। ईंटोंकी दीवारें तैयार हो चुकी हैं। बढ़ई दरवाजे और खिड़कियाँ बना रहे हैं; और छत डालनेकी तैयारी हो रही है। गाँवके क्लबसे यह मतलब न समझिए कि एक दो छोटी सी अन्धेरी धुन्धेरी कोठरियाँ होंगी। वहाँ बीचमें ५००-६०० आदमियोंके बैठने लायक़ एक हाल है। आमने-सामने बरामडा और अगल-बगलमें ५ बड़े-बड़े कमरे। हॉल है प्रति सप्ताह आनेवाले चलते-फिरते-बोलते सिनेमा-फिल्मों तथा जब तब आनेवाली नाटक-मण्डलियोंके प्रदर्शनके लिए। यही हाल राजनीतिक, सामाजिक सभाओं, नाच-गानेकी पार्टियोंकेलिए भी इस्तेमाल होगा। अगल-बगलके कमरे पुस्तकालय, वाचनालय आदिके-लिये इस्तेमाल होंगे। सोवियत्-निवासियोंके क्लबघर मनुष्योंकी शिक्षा और मनोरंजनकी इतनी सामग्री जुटा देते हैं, कि मसजिद-गिरजे लोगोंके मनसे भी भूल जाते हैं।

क्लबघरसे हम ग्राम-सोवियत्के कार्यालयमें गये। दो-तीन कमरे थे। एक कमरेमें कुर्सी, मेज और उजबेक-भाषाके कुछ अखबार पड़े थे। एक आदमी

कार्यालयमें लिखापढ़ीका काम कर रहा था। एक जगह गाँवके कुछ बूढ़े रूईकी ढेंढ़ीसे पत्तियाँ हटा रहे थे। मध्य-एशियामें सब जगह मिस्री रुई बोई जाती है, और एक फसलमें आठ बार कपास चुनी जाती है। अन्तिम बारकी चुनी रुई उतनी अच्छी नहीं होती। जो ढेर यहाँ लगा हुआ था, वह अन्तिम बारकी रुईका था। फिर हम अस्तबलमें गये। एक लम्बा घर था जिसके एक तरफ दीवारके सहारे घास डालनेकी पतली चबूतरी बनी थी। पीछेकी दीवारकी खूँटियोंपर घोड़ोंका साज और चारजामा टँगा था। साज और चारजामेमें लगे सभी पीतल चमचम चमक रहे थे। ६० घोड़ोंकी घुड़साल होनेपर भी गंध नहीं थी। घुड़सालमें ही दो चबूतरे देखभाल करनेवालेके सोनेकेलिए बने थे। वहाँकी व्यवस्था किसी रिसालेकी घुड़सालसे भी अच्छी थी। घोड़े इस वक्त बाहर गये हुए थे, इसलिए उन्हें हम देख नहीं सके। कल्खोज़की गोशाला-में १०० गायें हैं। गोशाला साफ-सुथरी थी। गायें वहाँ मौजूद न थीं।

(१) नई जिन्दगी

कल्खोज् नमूनाके पास ८०० एकड़ खेत है और २०० घर। पिछले साल इस कल्खोज्ने आठ लाख रूबलकी कपास बेची और तवारिश महम्मदोफ कह रहे थे, कि हर एक घरको उससे ५ हजार रूबल तककी आमदनी हुई। पंचायती खेत, घोड़े और गायके अतिरिक्त हर एक घरको आधा आधा, चौथाई चौथाई एकड़ जमीन अलग मिली है। इनकी जुताई ट्रैक्टरसे हो जाती है, और घरवाले इनमें खरबूजे, तरबूज, शाक सब्जी उगाते हैं। घर पीछे एकाध गाय, दो-चार भेड़ें, दो-एक सुअर और १०-१५ मुर्गे मुर्गियाँ, निजी सम्पत्तिके रूपमें हैं। कल्खोज् नमूनाके स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियोंके कपड़े और शरीर देखनेसे ही मालूम पड़ता था कि भूख और दरिद्रताको उन्होंने कोसों दूर भगा दिया है। इन्हीं उजबेक लोगोंकी जातिके लाखों आदमी वक्षु-गंगाके इस पार अफगानिस्तानमें बसते हैं। उनकी दरिद्रता हमारे भारतके गाँवोंके किसानोंसे भी यदि बढ़कर नहीं तो बराबर जरूर है। कुछ साल पहले कल्खोज्

नमूनाके निवासियोंकी भी यही हालत थी। लेकिन आज वहाँ दुबला-पतला हड्डी-निकला अथवा फटे चीथड़ों और नंगे पैरवाला कोई आदमी देखनेमें नहीं आता। यह जरूर है कि सभीके कपड़े उतने साफ नहीं हैं, और न शरीरको खूब साफ-सुथरा रखनेकी ओर सबका ध्यान है। लेकिन यह बात तो उच्च शिक्षा और संस्कृतिसे सम्बन्ध रखती है। इसकेलिए यहाँके प्रौढ़ आदमियोंको मौका नहीं मिला था। हाँ, नई सन्तानमें ये बातें आ रही हैं। और जितने ही ज्यादा आदमी लाल सैनिक, इञ्जीनियर, अध्यापक आदि होते जा रहे हैं, उतनी ही उनमें नागरिकता भी आती जा रही है।

कल्खोज्-नमूनाके पास खेतों या बाजारमें माल ले जाने या ले आनेकेलिए अपनी मोटर लारियाँ हैं। ट्रैक्टरोंकी मरम्मतकेलिए एक लोहारखाना है; जिसमें उस वक्त कल्खोजके एक मिस्त्री—जो जातिके रूसी थे—कोई पुरजा खरादनेमें लगे हुए थे। अस्तबलसे थोड़ी दूरपर ट्रैक्टरसे खेत जोता जा रहा था। जुताई खेतके किनारेसे न शुरू करके बीचसे आरम्भ हुई थी। ट्रैक्टरके पीछे लगे चार फाल बारह इञ्च गहरी धरती उलटते जा रहे थे। तवारिश महम्मदोफके साथ जब मैं खेतमें पहुँचा, तो उजबेक ड्राइवरने जरा देरकेलिए ट्रैक्टर खड़ा कर दिया। कामके हर्जके खयालसे मैं खुद ही वहाँ से हट गया। कपासकी सूखी लकड़ी घरोंमें जलानेके काम आती है। यह प्रदेश उतना सर्द नहीं है कि मकान रात-दिन गर्म करनेकी जरूरत हो। मुमकिन है, रातमें घरोंको गर्म रखा जाता हो। पूछनेपर मालूम हुआ कि ट्रैक्टर प्रतिदिन २० एकड़ खेत जोतता है। आठ-आठ घंटेपर ड्राइवर बदलते रहते हैं; और जुताई चौबीसों घंटे होती रहती है। जुताईका परिमाण बहुत कुछ उसकी गहराईपर निर्भर है। जितनी ही जमीन ज्यादा गहरी जोती जायगी, उतने ही कम एकड़ जोते जा सकेंगे।

स्कूलकी बगलमें ही एक सरतराशखाना है। मैंने हँसीसे कहा—"यहाँ सर तराशे जाते हैं या बाल"? जवाब मिला—"बाल तराशनेको ही हम सर तराशना कहते हैं।" पास ही पंचायतका चायखाना है। डेढ़ हाथ ऊँचा चबू-

तरा दीवारोंके तीन तरफ बना हुआ है। उन्हींपर कालीन बिछी हुई है। चाय तो मैं पी चुका था। पर चायखाना देखनेकेलिए भीतर गया। देखा पाँच-सात आदमी बैठे हैं। समावारमें चायका पानी खौल रहा है। कालीनपर दो-तीन सितार पड़े हुए हैं। मुमकिन है, शामको संगीत पार्टीकी तैयारी हो रही हो। चायखानेकी तरह सरतराशखाना भी पंचायती है। उसका नफा-नुकसान सारे गाँवको है। सब देखकर जब हम लौटे, तो स्कूलमें पढ़ाई शुरू हो चुकी थी। अध्यापकने हमें स्कूल दिखाना चाहा। स्कूलका समय सवेरे ८ बजेसे १२ बजे तक और दोपहर बाद २ बजेसे ६ बजे तक है। इसीमें कुछ खेलका समय भी रखा गया है। स्कूलकी ही इमारतमें रातको सयानों (स्त्री पुरुषों)की पाठशाला लगती है। जिस वक्त मैं गया, उस वक्त गणितका पाठ चल रहा था। तीन-चार बेंचोंपर कक्षाके लड़के-लड़कियाँ बैठी हुई थीं। अवस्था सातसे दस सालकी होगी। बेंचोंके सामने लिखनेकेलिए डेस्क थे। लड़कियोंको लड़कोंसे अलग नहीं बैठाया गया था। अध्यापकने गुणा भागके कई सवाल लड़कोंसे पूछे। विद्यार्थियोंमें कुछने बड़ी तेजीसे हल किया। काले तख्तेपर जाकर एकने भद्दी गलती की, सारी छात्र-मंडली हँस पड़ी। यद्यपि इन छात्र-छात्राओंकी पोशाकमें नये-पुराने फैशनकी खिचड़ी थी, लेकिन उनके तन्दुरुस्त लाल चेहरेको देखनेसे ही मालूम होता था, कि वे कैसा जीवन यापन कर रहे हैं। पाठशालामें कुल ८८ छात्र हैं, जिनमें ३५ लड़कियाँ हैं और ५३ लड़के।

चलते वक्त अध्यापकका पाँच वर्षका लड़का कहीं बाहरसे खेल-कूदकर लौटकर आ रहा था। एसियाई बाप और यूरोपीय माँके उस बच्चेका मुँह गुलाबकी तरह लाल था। बापने मुझसे हाथ मिलानेकेलिए कहा। लजाया तो जरूर, लेकिन उसने हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। सोवियत्-सरकारने एक साल तक अपने डाकखानेकी मुहरों तथा दूसरे उपायोंसे बालकोंके मुख चूमनेके विरोधमें प्रचार किया था; और सचमुच स्वस्थ बच्चोंकी तन्दुरुस्तीकेलिए अस्वस्थ व्यक्तियोंके मुखसे निकले लाखों कीटाणु जहरका काम देते हैं।

तो भी मैं यह कहूँगा कि उस गुलाबसे सुन्दर शिशुके चूमनेकेलिए मेरा दिल ललचा रहा था ।

गाँवके सभी मकान एक जगह नहीं हैं । कुछ मकान स्कूलके क़रीब हैं, और कुछ कितने ही फर्लांग हटकर । रोटी, वस्त्र और पठन-पाठनकी समस्या हल हो चुकी है । सोवियत् सरकारको सबसे पहले यही हल करना था । क्लब-में ईंट और सीमेंटका काम शुरू हुआ है । अब आगे मकानोंका नम्बर आयेगा । बिजली और नलके प्रबन्ध होते समय गाँवका नवनिर्माण जरूर होगा । तब यह छिटफुट मकान एक जगह हो जायेंगे ।

जिस वक्त हम गाँवको छोड़ रहे थे, उसी वक्त तिर्मिज़से सैर करनेकेलिए एक मण्डली आई हुई थी । वे मुझे इंदुस् (हिन्दुस्तानी) जानकर कुछ पूछना चाहते थे, लेकिन देर होनेके ख़यालसे उन्होंने आग्रह नहीं किया । मैं तवारिश मुहम्मदोफ़् के साथ स्टेशनकी ओर चला । पहले आये रास्तेके बजाय मैंने उस रास्तेसे जानेकी इच्छा प्रकट की, जहाँसे मैं सुल्तानुस्सादातकी पुरानी ज़ियारत देख सकूँ ।

(२) सूना देवालय

यह ज़ियारत कलखोज्-नमूनाकी सीमाके भीतर और रास्तेसे कुछ हटकर है । १५—१६ साल पहले तक ज़ियारतमें सैकड़ों मुल्ला और मुजावर रहते थे । हज़ारों यात्रियोंके ठहरनेकेलिए घर और कोठरियाँ थीं । उसके बाद मज़-हबकी तरफ़से लोगोंकी उदासीनता हुई; पूजा और चढ़ावेके अभावसे मुल्ले और मुजावर हटने लगे । कच्ची ईंटों और मिट्टीकी दीवारोंके मकान एक एक करके गिरने लगे; कड़ी और किवाड़की लकड़ियोंको आस-पासके लोग उठा ले गये । अब उन मकानोंमेंसे सभी धराशायी हो गये हैं । सिर्फ प्रधान ज़ियारत, जो कि पक्की ईंटकी बनी है, अब भी खड़ी है । लेकिन कई साल बेमरम्मत रहनेके कारण उसकी भी दीवारें जहाँ-तहाँ भसकने लगी हैं । गुम्बदकी नीली ईंटोंमेंसे भी कितनी ही ईंटें खिसककर नीचे गिर पड़ी हैं । वह समय नज़-

ठीक था, जब कि गुम्बद भी धरतीपर आ पड़ता; लेकिन यह कई सौ साल-की पुरानी इमारत है। उजबेकिस्तान-प्रजातन्त्रके पुरातत्व-विभागका खयाल इसकी ऐतिहासिकताकी ओर गया, और अब सरकारकी ओरसे उसकी मरम्मत हो रही है। मुहम्मदोफ्के साथ मैं ज़ियारतके अन्दर दाखिल हुआ। आँगन और भिन्न-भिन्न हुजरोंके नीचे सैकड़ों कब्रें हैं। उनके ऊपरका चूना उड़ गया है और बहुतोंकी ईंटें भी अस्त व्यस्त हो रही हैं। मैंने बहुतेरा जानना चाहा कि हजरत सुल्तानुस्सादातका मक़बरा कौन है, लेकिन मुहम्मदोफ् साहब जिस किसी भी ऊँचे मक़बरेकी ओर अँगुली उठानेको तैयार थे, वहाँ कोई दूसरा आदमी नहीं था। मैंने पूछा—"इतने मुल्ले मुजावर जो पहले यहाँ रहते थे, क्या करते थे?"

जवाब मिला—"बेवकूफ श्रद्धालुओंकी श्रद्धासे फायदा उठाते थे। उनसे पैसे ऐंठते थे और बदलेमें किसीको लड़का नहीं, उसको लड़केकेलिए तावीज देते थे; किसीका बच्चा बीमार है उसके बच्चेकेलिये तावीज देते थे; किसीका गधा बीमार है, तो उसके गधेके सिरपर बाँधनेकेलिए तावीज तैयार कर दी जाती थी।" गधेकी तावीजकी बात सुनकर मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन मैंने मुहम्मदोफ्से जिरह करना नहीं चाहा। मेरा भ्रम आप ही जाता रहा, जब मैंने मज़ारशरीफ्में खुद अपनी आँखों गधेपर तावीज बँधी देखी। गधेपर ही नहीं बल्कि जिस मोटर-लारीपर मैं मज़ारशरीफ्से काबुल पहुँचा; उसके भी सामने शीशेके ऊपर वाली लकड़ीपर चमड़ेमें बँधी दो तावीजें लटक रही थीं। शायद हमारे ड्राइवरका पूरा विश्वास था कि हिन्दू-कुशकी ताजी बर्फसे बचकर जो हम निकल पाये, वह उन्हीं तावीजोंकी बरक्कत थी।

मैंने पूछा—"मुल्ले कहाँ गये?"

मुहम्मदोफ्ने कहा—"हमने उन्हें यहाँसे रवाना कर दिया।"

"कहाँ"?

"दोजखमें, और कहाँ! उनका बिहिश्त तो यहीं था, जहाँ हमारी

मिहनतपर मौज उड़ा रहे थे। उनके लिए तो बिहिश्त यहाँ था, और हमारे-लिए मरनेके बाद बतलाते थे।"

मैंने पूछा—"क्या आप लोगोंको मजहबकी जरूरत नहीं पड़ती?"

"हमें मजहबकी क्या जरूरत? हम काम करना जानते हैं, हम पढ़ना जानते हैं, हम सुखसे रहना जानते हैं, हमें और क्या चाहिए? मुल्ला कहता था, सुअर हराम है। इतना स्वादिष्ट, इतना ताक़तवर खाना हमारे लिए वह हराम कह रहा था। वह कहता था, नाचना हराम है। हम जानते हैं कि युवक और युवतियोंमें नाचनेसे कितनी फुर्ती आती है, और नाच मनोरंजनका कितना सुन्दर साधन है।"

मैंने पूछा—"आखिर कल्खोज्-नमूना के ये सभी २०० घर कुछ साल पहले मुसलमान थे। क्या अब भी इनमें कुछ लोग नमाज पढ़ते या रोजा रखते हैं?"

"हाँ चार साल पहले कुछ रोजादार थे। लेकिन अब एक भी नहीं। युवक और युवतियोंकी हँसीके मारे, चाहनेपर भी बूढ़े-बूढ़ियोंकी हिम्मत नहीं पड़ती।"

४. सोवियत्-सीमापर

आज (२४ जनवरी) तिर्मिजमें आये चौथा दिन था। पासपोर्ट आफिस खुला था। महिलाने कह रखा था, कि आज लिख-पढ़कर पासपोर्ट लौटा दिया जायगा और हम १०–११ बजे तक शहर छोड़ सकेंगे। आफिस जाने-पर मालूम हुआ कि हमारे निर्यात-वीजामें तिर्मिज लिखा है; लेकिन कहाँ जायेंगे, उस खानेमें अफगानिस्तान लिखना भूल गये हैं। अतएव आगे जाने की इजाजत नहीं मिल सकती; जब तक कि तार द्वारा लेनिनआदसे पूछ न लिया जाय। हमने सोचा, यह वीजाकी गड़बड़ी तेहरानसे ही शुरू हुई है। वहाँ सवा महीना ठहरना पड़ा। लेनिनआदमें इसीलिए १२ दिन रुकना पड़ा और यहाँ भी अब कुछ होने जा रहा है। अफगानकी सराय कुछ दूर-

फूटी सी थी। पाखाना भी गन्दा था और रहनेकी कोठरी भी चूहे-खटमलोंकी लीला-भूमि। अब मालूम नहीं कितने दिन और ठहरने पड़ें इसलिए हम अपना सब सामान उठाकर होटलमें चले आये। पासपोर्ट-आफिसकी महिलाने होटलकी अधिकारिणीको हमारेलिए संदेश भेज दिया था। आफिस और होटल आमने-सामने थे। इसलिए यहाँ पूछताछ करनेमें भी सुविधा थी। जिस वक्त हम अपना सामान लेने अफ़गान्सकी सराय जा रहे थे, देखा—ताजिक और रूसी दो तरुणोंकी जोड़ी एकके कन्धेपर एक हाथ रखे जोरसे गाना गाती आ रही है। आस-पासके पचीसों नर-नारी टकटकी लगाये उनकी ओर देख रहे थे। मालूम हुआ बाजारके शराबखानेमें दोनोंने खूब वदका (उदक = शराब) पी है; और जब रंग आया, तब गलबहियाँ लगाये, तान छोड़ते बाहर निकल पड़े हैं। उनके पैर ही आगे-पीछे नहीं पड़ रहे थे, बल्कि तान भी एककी पूरब जा रही थी, तो दूसरेकी पश्चिम। एककी आवाज धीमी थी तो दूसरेकी कान फाड़ देनेवाली। लोगोंकेलिए यह बिना पैसे-कौड़ीका तमाशा था।

हाटका बाड़ा बहुत लम्बा-चौड़ा है। इसमें तीन-चार सरतराशखाने हैं। मुझे भी सर तरशवाना था इसलिए एक ताजिक सरतराशकी कोठरीमें गया। मशीन द्वारा उससे सारे बाल छोटे-छोटे करवाये। और इसके लिए ३ रूबल (१।~)) सरतराशी देनी पड़ी। यह सरतराशखाना पंचायती नहीं है। इसकी आमदनी उस हज्जामको होती है। सोवियत्-प्रजातंत्रमें अब भी ऐसे कुछ काम हैं, जिनको कोई व्यक्ति स्वतंत्र कर सकता है। बूटपर पालिश करना भी ऐसे ही पेशोंमें है। हाँ, हर बूटपर पालिश करनेवाले, या हजामत बनानेवालेको सरकारसे लैसेंस लेना पड़ेगा; जिसके लिए उसे विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह किसी दूसरेको नौकर रखकर उसकी मेहनतको अपने फ़ायदेका जरिया नहीं बनायेगा।

बाड़ेके एक तरफ सबेरे ७-८ बजेसे ही आलू, मूली, गोभी, चुकन्दर, अंडा, आदि को लेकर आस-पासके कल्खोज्वाले स्त्री-पुरुष आते हैं; और उन्हें लेकर पेरो अपनी चीजें खरीदकर लौट जाते हैं। सबेरे से दो-तीन

बजे तक वह जगह एक हिन्दुस्तानी हाट-सी मालूम होती है। रोटी, मक्खन, मांस, मिठाई आदिकी सभी दूकानें सरकारी या पंचायती हैं; और वह मकानों के भीतर लगती हैं। एक जगह सबेरेसे दोपहर तक पुरानी चीजें भी लोग लाकर बेचते हैं।

गस्तिनित्सा (होटल)के हमारे कमरेमें दो सीटें थीं। एकपर ताजि-किस्तानमें काम करनेवाले एक नौजवान रूसी इंजीनियर ठहरे थे; और दूसरी चारपाई हमें मिली। कोठरी खूब साफ़ थी। नीचे कालीनका फ़र्श था। लोहेकी चारपाईपर साफ़ सुथरा ओढ़ना-बिछौना पड़ा हुआ था। एक मेज और कुछ कुर्सियाँ भी थीं। कमरा गर्म करनेकेलिए दो कमरोंके बीचमें एक एक लोहेकी बुखारी (मुँह-बन्द अँगीठी) थी; जिसमें लकड़ी बाहरसे डाली जाती है। मुँह-हाथ धोनेका भी अच्छा बन्दोबस्त था। होटलमें २८-३०के करीब कमरे होंगे। यद्यपि कमरे एक ही आदमीके लायक हैं, लेकिन सारे तिर्मिज़में एक ही होटल है, और मुसाफ़िर अधिक आते रहते हैं इसीलिए हर कमरेमें दो-दो आदमियोंका इंतजाम किया गया है। दो-तीन चारपाइयाँ गलियारेमें भी पड़ी थीं। पाखाना उतना साफ़ नहीं है, और जब तक पाखाना बहानेवाले नलोंका इन्तजाम नहीं होता, तब तक अधिक कुछ किया भी नहीं जा सकता। होटलमें रहनेका किराया प्रतिदिन ५ रूबल (२ℓ)) था। खानेकेलिए तिर्मिज़में कोई अच्छा रेस्तोराँ (भोजनशाला) नहीं है। तिर्मिज़का पार्क-कुल्तूर (सांस्कृतिक-उद्यान) बहुत लम्बा-चौड़ा है। लेकिन आजकल जाड़ेके कारण (अथवा कोई मरम्मतका काम हो रहा था, फाटक बराबर बन्द रहता था। दौड़, कसरत और फ़ुटबाल आदि खेलोंकेलिए एक अलग लम्बी-चौड़ी व्यायामशाला है। उससे थोड़ी दूरपर एक सिनेमा-घर है; 'अक्तूबरमें लेनिन' नामक फ़िल्म दिखाया जाता था। देखनेवालोंकी भीड़ यहाँ भी बहुत थी। इस फ़िल्मको लेनिनग्राद्‌में देख चुका था, इसलिए मुझे देखनेकी इच्छा भी न थी। अजेब्-घर या अजायबखाना देखने निकला। पता लगा, वह कैम्परोंके पास है। यह एक लम्बा-चौड़ा सफ़ेद मकान है। छत टीन की थी। यहाँ दो-

तीन रूसी औरतें थीं। देखनेकी इच्छा प्रकट करनेपर मुझे भीतर जानेकी इजाजत मिल गई। चार-पाँच कमरे थे। जिनमें कुछमें छोटी-छोटी कई चारपाइयाँ पड़ी थीं। सफ़ेद चादर और साफ़ तकिया-बिछौना मौजूद था। लेकिन जिस वक़्त मैं गया, उस वक़्त कोई बच्चा नहीं था। लौटते वक़्त मैंने क्लबघरका साइन-बोर्ड देखा। भीतर यहाँ भी कई कमरे थे। एक बड़ा हाल था, जिसमें २००के क़रीब कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। दो युवक और एक युवती कुछ लिख रहे थे। मालूम हुआ, आज 'पुगाचोफ़्' फ़िल्म दिखाया जानेवाला है, उसीकेलिए विज्ञापन लिखे जा रहे हैं।

* * * * * *

२५की शामको मालूम हुआ कि तार का जवाब आ गया। उसी दिन लिखकर हमारा पासपोर्ट लौटा दिया गया। अब अगले दिन जानेकेलिए हम निश्चिन्त हो चुके थे। तिर्मिज़में मैंने सरकारी बैंकसे दो पौंडका चेक भुनाया था। हमारे पास १५—२० रूबल ही रह गये थे। २२ रूबल (६।।=) तो होटलसे वक्षु-गंगाके तट तकके ही लग जाते। फ़ोनसे पूछनेपर मालूम हुआ कि १४ रूबल मोटर-नौकाके लगेंगे। इस प्रकार २० रूबलकी हमें और जरूरत थी। हमारे पास २ पौंडसे कमका चेक न था। उसे भुनानेपर २६ रूबल फ़ज़ूल जाते। सोवियत्-सरकार अपने सिक्के और नोटोंको देशसे बाहर नहीं जाने देती। रूबल बचनेका मतलब था, वह भी नावके भाड़ेमें शामिल कर लिया जाता। इसके अलावा एक दिक़्क़त और थी। बैंक १० बजे खुलता था, और हम ६ बजे ही निकल जाना चाहते थे; जिसमें कि कस्टम-आफ़िसरकी देखभालमें इतनी देर न हो जाय कि उस दिनकी नाव ही हमें न मिल सके। हमारी घड़ी १३—१४ रुपयेकी थी। हम जानते थे कि उसका दाम यहाँ ६०—१०० रूबलसे कम नहीं है; तो भी हम चाहते थे सिर्फ़ २० रूबल। हमने अपने साथी इंजीनियरसे इसके बारेमें कहा। उनके पास घड़ी न थी और दो तीन दिन साथ रहते रहते हम लोगोंका परिचय भी अधिक हो गया था। जब

मैंने उन्हें सिर्फ़ २० रूबल देनेको कहा, तो वह आश्चर्यसे कह रहे थे—'यह बहुत कम है।' मैंने कहा—'ज़्यादाके खर्चेकेलिए हमारे पास समय नहीं है।' तब भी वह समझ रहे थे, शायद भाषा अच्छी तरह न समझनेके कारण मैं ग़लती कर रहा हूँ। उन्होंने १०-१० रूबलके २ नोट देते हुए फिर कहा—"क्या इतना ही?"

मैंने कहा—'हाँ!'

ऐसे भी हिसाब करनेसे मुझे मालूम था कि चेक भुनानेपर २ पौंड या २६।।) रुपयेसे हाथ धोना पड़ेगा और यहाँ १३-१४की घड़ी जा रही है। अफ़ग़ानिस्तानमें रेल-ओल है नहीं, कि घड़ी की जरूरत हो और हिन्दुस्तानमें फिर दूसरी घड़ी ले ली जायगी।

६ बजे फिटनपर सामान रखकर हम घाटकी ओर चल पड़े। वक्षु-तट होटलसे ४ मीलसे क्या कम होगा। कुछ दूर शहरमें चले। बाईं तरफ़ बहुत दूर तक खाली जगह थी। नई बस्ती और हवाई जहाजके अड्डेके ऊँचे खम्भे और ऊँचे मकान दिखलाई पड़ रहे थे। शहर खतम होनेपर एक छोटासा कल्खोज् गाँव और जुते हुए खेत मिले। फिर मकान और रेलकी लाइन। सिपाहीने फिटनको रोका और पास माँगा। पासपोर्ट देनेपर कहा—'यह नहीं। पुलीससे लाया पास दिखलाओ।' मैंने कहा—मेरे पास पुलीसका पास नहीं है। यही पासपोर्ट है। जिसपर अफ़ग़ानिस्तान जानेकी इजाज़त लिखी हुई है।' सिपाहीने कहा—'पुलीसका पास नहीं है, तो नहीं जा सकते।' एक बार तो मुझे मालूम होने लगा कि अब शायद फिर पीछे लौटना होगा। लेकिन मैं हताश नहीं हुआ। चेहरेपर ज़रा भी विकलताका चिह्न न प्रकट करके मैंने फिर समझाना शुरू किया—'पुलीसका पास यहाँके बाशिन्दोंकेलिए जरूरी है। मैं यहाँका बाशिन्दा नहीं हूँ। मेरे लिए यह पासपोर्ट है और उसपर तिर्मिज़से अफ़ग़ानिस्तान जाना लिखा हुआ है।' सिपाही भी कुछ निश्चय करनेमें असमर्थ हो बोला—'अच्छा, तो मैं कन्त्रोलरके आफ़िसमें चल रहा हूँ, वहाँ चलिए।' हमारी जानमें जान आई। और गाड़ीवाला हमें कन्त्रोलरके

आफिसमें ले गया, जो कि रेल लाइन पारकर कुछ और आगे था। कन्ट्रोलर साहब एक रूसी सैनिक आफिसर मालूम होते थे। पासपोर्ट लेकर उन्होंने देर तक कितने ही रजिस्टर उलटे। अकारादि क्रमसे लिखे हुए नामोंको मिलाया और मुसाफ़िरोंके सैकड़ों हस्ताक्षर, जो उनकी एक बहीमें चिपके हुए थे, को भी देखा भाला। शायद वहाँ मेरा नाम न था। फिर उन्होंने टेलीफ़ोन द्वारा तिर्मिजके आफ़िससे पूछा। आधा घंटा बाद मुहर करके हमारा पासपोर्ट लौटा दिया, और नदीके किनारे जानेकी आज्ञा मिली। घाट आध मील और आगे था। थोड़ी दूर तक रास्ता बहुत खराब था। ५–५, ७–७ टनकी लारियाँ भला इस कच्चे रास्तेपर कैसे चलती हैं; यही आश्चर्य होता था। एक जगह देखा कि एक कटर-पिलर ट्रैक्टर ऊभड़-खाभड़ रास्तेको बराबर कर रहा है। घाटपर अफ़ग़ानिस्तानसे आई हज़ारों रुईकी गाँठें पड़ी हुई थीं। उनके फटे बोरोंको १०-१२ स्त्रियाँ जिनमें अधिकांश रूसी थीं—सी रही थीं। रुई, चमड़ा, अनाज, सूखे मेवे और ऊन अफ़ग़ानिस्तानसे आते हैं, और बदलेमें सोवियत्-प्रजातंत्र चीनी, लोहा, कपड़ा, पेट्रोल और कितनी ही प्रकारकी मशीनें भेजता है।

मोटर-बोटके खुलनेमें अभी ३-४ घंटेकी देर थी। २ घंटे बाद सामानकी जाँच शुरू हुई। हमारे दो बक्सोंमें एकमें—जिसका वजन १ मनसे अधिक था—सिर्फ किताबें थीं, और दूसरेमें आधा कपड़ा और आधी किताबें। कस्टम् अफ़सरने किताबें देखनी शुरू कीं। उनमें कुछ चिट्ठियाँ, फ़ोटो—जिनमें कुछ रूसके सम्बन्धकी थीं और कुछ ईरान की—देखते ही वह निश्चय करने में असमर्थ हो गया कि किसको ले ले और किसको जाने दे। आख़िर फिर उसी कन्ट्रोलरको खबर दी गई और वह घाटपर आया। उसने प्रायः डेढ़ घंटे एक-एक चीज को; काग़ज़ के छोटे-छोटे टुकड़े तकको बारीकीसे देखा। जो किताबें संस्कृतमें थीं, उनके लिए तो कुछ नहीं कहा। फिर कुछ सोवियत्के अंग्रेजी अखबारोंकी कटिंगको देखकर कहा—'इन्हें हम जाने नहीं देंगे।' मैंने कहा—'मैं लेखक हूँ और अपनी सोवियत् यात्रापर एक

पुस्तक लिखूँगा उसीकेलिए मैं यह कटिंग जमा किये हूँ। आप जानते नहीं कि ये सब अखबार सोवियत्‌से बाहर हजारोंकी तादादमें जाते हैं।' खैर उसको लौटाया गया। फिर मास्कोके नक्शेको देखकर कहा—'इसे नहीं जाने देंगे।' मैंने कहा—'आपकी इन्तुरिस्त (सोवियत् यात्रा कंपनी) इसे छापकर बाहरके देशोंमें बाँटती फिर रही है। यह ऐसी कोई गुप्त चीज नहीं।' फिर उसे भी लौटाया गया। तब मास्को और लेनिन्‌ग्राद्‌की इमारतोंके चित्रोंपर अड़ गये। वहाँ भी समझा-बुझाकर सफलता हुई। आखिरमें सोवियत्‌के राजनीतिक नेताओंके चित्रोंका मामला आया। मैंने कहा—'ये चित्र दुनियामें कहाँ नहीं मिलते? आप इन चित्रों को रोककर मेरी पुस्तक की सुन्दरताको कम भर कर सकेंगे।' वह भी लौटाये गये। फिर एक चित्रको उन्होंने दृढ़ताके साथ रोक लिया। मैंने कहा—'यह फ़ोटो नहीं है। 'मास्को न्यूज' अंग्रेजी साप्ताहिक-में छपा है; और यह साप्ताहिक दुनियाके कोने-कोनेमें जाता है।' हार मानकर उन्होंने उसे भी लौटाया। अन्तमें इन्तुरिस्तके टिकटकी रसीदें; होटलों और दुकानोंके रूसीमें लिखे कुछ बिल, आदि रह गये थे। जिनके लिए उनका आग्रह देखकर मैं चुप रह गया। आखिर भलेमानुसको हर जगह अपनी बातकेलिए जिद्द भी तो करनी नहीं चाहिए। हाँ; एक और मजेकी बात हुई थी। मैं लेनिन्‌ग्राद्‌में संस्कृतकी एक पुस्तककी प्रेस-कापी लिख रहा था। इसके लिए [illegible] इस्तेमाल की गई थी। महाकवि पुश्किन्‌की [illegible] पृष्ठोंपर पुश्किन्‌की कविता या चित्र अथवा उसकी कविताओंके पात्रोंके चित्र अंकित थे। दो कापियोंके टाइटिलपर पुश्किन्‌की किसी कविताके कुछ पात्र—जो देखनेमें भारतीय या ईरानी राजासे मालूम होते थे—जंजीर और बेड़ीमें बँधे चित्रित किये गये थे। कन्त्रोलरने देखतेके साथ ही इन दोनों कापियोंके आवरण-पत्रोंको फाड़कर रख लिया। उन्होंने शायद समझा होगा, इन चित्रोंको दिखाकर मैं हिन्दुस्तानमें प्रचार करता फिरूँगा कि देखो—'बोल्शेविकोंकी काली करतूतें। वह इस प्रकार लोगोंकी साँसत करते हैं।'

जाँच खतम होनेपर अफ़सरने हँसते हुए हाथ मिलाया और नावके छूटते वक़्त भी टोपी उतारकर विदाई दी।

३ बजे बाद मोटर रवाना हुई। वक्षु-गंगा—हाँ, दरअसल कभी यह गंगाकी ही तरह हिन्दुओंकेलिए पवित्र नदी थी—काफ़ी चौड़ी नदी है। आजकल जाड़ेके कारण ऊपरी पामीरके पहाड़ोंकी बर्फ़ कम पिघलती है, इसलिए धार उतनी गहरी और चौड़ी नहीं है, जितनी मई-जूनमें होगी। तो भी कमसे कम चौथाई उतनी जरूर है; जितनी बनारसमें गंगाकी जाड़ोंमें हो जाती है। यहाँ वक्षु पूरब-पच्छिम-वाहिनी है। दूर पहाड़ोंकी काली श्रेणी दिखलाई पड़ती है, जिनके पिछले भागमें श्वेत हिम-मंडित वही पर्वतमाला है, जो काश्मीर, गढ़वाल, नेपाल होती आसाम तक पहुँच गई है। नदीके परले पार अफ़ग़ानिस्तानकी भूमि है। वहाँ भी पहाड़ नदीसे बहुत दूर हटकर है। वक्षुका पानी मटमैला, पीले रंगका है। धारमें २-३ टापू आ गये हैं, इसीलिए मोटर-नौकाको कुछ नीचे जाकर फिर अगली धारसे ऊपर आना पड़ता है। जहाँ-तहाँ अपनी जैसी ११-१२ और मोटर-नौकाएँ देखीं। हर एक नौकामें ५००-६०० मन माल लादा जा सकता है। अपनी नावमें मैं अकेला मुसाफ़िर था। बाक़ी १२ हम्माल थे; जिन्होंने चीनी की टिकियाके बक्सोंको नावपर लादा था, और उन्हींको उतारनेकेलिए वह नदी पार जा रहे थे। इन हम्मालोंमें सिर्फ़ दो एशियाई थे, बाक़ी १० रूसी थे। अफ़ग़ानिस्तानकी सीमामें पहुँचनेपर इसके लिए पठान लोग बड़ी टीका-टिप्पणी कर रहे थे। एक साहब—जो व्यापारके सिलसिलेमें कई बार कलकत्ता बंबई देख गये थे—कह रहे थे—'अरे यह सब रज़ील हैं। साहब थोड़े ही हैं। हिन्दुस्तानमें भला कोई साहब दो मन पक्केका बक्स पीठपर लादकर इस तरह कुलीका काम करेगा! और इस तरह नावके पटरेपर चाय-रोटी गोश्त हाथमें दबाये, काले आदमीके साथ मजाक करते और थोपी लगाते, खायेगा?' उनको क्या मालूम कि इसने किस आदर्शके पीछे पड़कर इस समानताको स्थापित किया है। वक्षु पार होते समय हमें मालूम होता था कि हम हिन्दु-

स्तानकी सीमामें प्रविष्ट हो रहे हैं। इतिहासमें पढ़ा था, कभी वक्षु गङ्गा हिन्दुस्थानकी राजनीतिक सीमामें थी; और सांस्कृतिक सीमाके भीतर तो बहुत सहस्राब्दियों तक रही। और वह कुछ अंशमें अब भी है। एक घंटेमें हमारी नाव दूसरे पार पहुँच गई।

५. पहलीबार सोवियत्-भूमिमें*

अपनी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक साधन, नाना जातिके जन-समूह और नाना प्रकारकी संस्कृतियोंके कारण सोवियत-साम्यवादी-प्रजातन्त्र राजनीतिमें अपना एक प्रमुख, प्रमुख ही नहीं अतुलनीय स्थान रखता है। सोवियत्-सरकार संसारके छठवें हिस्सेपर फैली हुई है। सिर्फ मध्य-एसियाके कुछ स्थानोंको छोड़कर उसकी सभी जमीन उपजाऊ है। वह जितने आदमियोंको भोजन दे रही है, उससे कहीं अधिक को दे सकती है। उस जमीनके भीतर प्राकृतिक उपज भी प्रचुर-परिमाणमें प्राप्त हैं, जैसे ताजिकिस्तान और उत्तर-पूर्वीय-काकेशसमें कास्पियन सागरके किनारेकी वृक्ष-रहित पहाड़ी भूमि पैट्रोलके बड़ेसे बड़े भण्डारोंमेंसे है। सिबेरियाकी अत्यधिक सर्दीकी बात पढ़कर हम सोचते हैं; कि वह मनुष्यके निवासके योग्य नहीं होगा; लेकिन बात ऐसी नहीं है। समूचा सिबेरिया हमेशा हरे रहनेवाले सुन्दर तथा उपयोगी देवदार-जातीय वृक्षोंका बाग है। सिबेरियामें सोने तथा कोयलेकी बड़ी-बड़ी खानें हैं।

सोवियत् दुनियामें खनिज सम्पत्तिमें प्रथम स्थान रखता है। जहाँ तक उपजका सम्बन्ध है, रूस योरपका अन्न-भण्डार समझा जाता था और अभी तक वह अपने उस गौरवपूर्ण स्थानको कायम रखे हुए है। किन्तु निकट-भविष्यमें जब सोवियत्में उद्योग-धन्धोंका पूर्ण विकास हो जायगा और वह अपनी जरूरतसे ज्यादा माल बनाने लगेगा; तो तैयार माल उसके कच्चे

*१९३५में लिखित पृष्ठ १२२३-५५

मालके निर्यातपर प्रधानता प्राप्त कर लेगा। संसारके व्यापारकी प्रगतिको जापानके सस्ते मालने चौपट कर दिया है—यद्यपि उसे रोकनेकेलिए तरह तरहकी चुँगीकी ऊँची दीवारें, गृह-उद्योगको बचानेके नामपर, खड़ी की गई हैं। लेकिन जापानकी यह प्रतियोगिता फीकी पड़ जायगी, जब कि बाजारोंमें कुछ सालके बाद रूसका माल आने लगेगा। जापानके सभी माल तैयार करनेवाले पूँजीवादी हैं; और उन्हें मालकी क़ीमत रखनेके समय अपने नफ़े, कर्मचारियों-के वेतन, बाहरसे खरीदे गये कच्चे मालकी क़ीमत आदिपर ख़याल रखना पड़ता है। किन्तु, भविष्यमें सोवियत्के कारखाने—जिनकी संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है—रूसके १८ करोड़ निवासियोंकी आवश्यकताओंको ही पूरा नहीं करेंगे, बल्कि अपने मालको प्रचुर परिमाणमें बाहर भी भेज सकेंगे। और वह जापानी मालसे कहीं अधिक सस्ता होगा।

सोवियत्-भूमिमें एशिया और यूरोपका बहुत बड़ा भाग शामिल है; और उसकी सीमा जापानके एशियाई राज्य, अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस, तुर्की और पूर्वी तथा उत्तरी यूरोपके छोटे-छोटे राज्योंको छूती है। जिस प्रकार वह अपने यहाँके निवासियोंकी जरूरतोंकी पूर्तिकेलिए तेजीसे अपना उद्योग-धंधा बढ़ा रहा है; उसी प्रकार अपने पड़ोसी जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि शक्तियोंके डर-से अपनी सैन्य-शक्तिको भी तेजीसे बढ़ा रहा है। हवाई शक्तिमें वह संसारमें पहला दर्जा रखता है। उसे अपने राज्यके अन्दर बहुत बड़े पैमानेमें हवाई उन्नति करनेके लायक़ आदर्श भूमि प्राप्त है। उसके कारखानोंमें हवाई जहाज़ भी बहुत बड़े पैमानेपर तैयार हो रहे हैं, क्योंकि वहाँ तो नफेका कोई सवाल है ही नहीं। प्राकृतिक साधन और मनुष्य-शक्ति भी असीमित है, साथ ही हर एक विषयोंके विशेषज्ञ लोग निकलते आ रहे हैं। पूर्वी सिबेरियामें किले-बन्दियोंका ताँता लगा हुआ है; और वहाँ सबसे बड़ा हवाई अड्डा है, जो व्लादि-वोस्तोकके नजदीक है।

सोवियत् अपनी १८ करोड़ जन-संख्याके कारण स्वाधीन देशोंमें जन-संख्याके ख़यालसे भी प्रथम स्थान रखता है। यद्यपि हिन्दुस्तान और चीनकी

जन-संख्या अधिक है, पर ये तो उपनिवेश या अर्द्ध-उपनिवेश देश हैं। रूसकी सैन्य-शक्तिके डरके कारण ही गिलगितको अंग्रेजी सरकारने काश्मीर राज्यसे ले लिया है; और वह उत्तर-पश्चिम भारतका सिंगापुर बनने जा रहा है,—निस्सन्देह एक नये ढंगका। संक्षेपमें—रूसका संसारकी राजनीतिमें ऐसा स्थान है कि हर विचारवान् पुरुषको उसके कार्यक्रम और उसकी सफलतामें दिलचस्पी रखनी ही पड़ेगी।

एक बात और है। जिन देशोंसे इस साम्यवादी प्रजातन्त्र-संघका गठन हुआ है; उनमें कितने ही एशियाई देश हैं, जिनका एशियाके कितने ही अन्य भागोंकी सभ्यतासे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए उन देशोंकेलिए किये गये किसी भी उत्थान-कार्यका प्रभाव एशियाकी दूसरी जातियोंपर पड़ेगा ही, चाहे रूसी प्रभावको अपनी-अपनी सीमाके अन्दर नहीं आने देनेकेलिए सभी सीमान्त राज्योंने बहुत ही कड़ा प्रबन्ध कर रखा है। उदाहरण स्वरूप वहाँ ताजकिस्तानके प्रजातन्त्रमें १२ लाख फ़ारसी बोलनेवाले लोग रहते हैं, जिनका ईरानसे भाषा, जाति और संस्कृतिका बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। जहाँ ईरानमें बोलते फ़िल्म नहीं बनते हैं, उसका आधुनिक साहित्य भी अभी बचपनमें ही है, वहाँ ताजकिस्तानका रङ्गमंच, साहित्य तथा बोलता फ़िल्म बहुत उन्नत है, तो भी वह ईरानमें नहीं आने पाते।

मेरे सफ़रकी मंशा वहाँकी अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अथवा उनका दूसरे देशोंसे क्या सम्बन्ध है, यह जाननेकी नहीं थी। वहाँकी आर्थिक योजनाके काम तथा उसका जनतापर क्या प्रभाव है, इसे देखनेकी मेरी इच्छा थी; और मैं वहाँके कुछ महान् भारत-तत्त्व-विशारदोंसे भेंट करना चाहता था। मैंने सोवियत्-रूसमें मंचूरियाकी तरफसे प्रवेश किया। मंचुकुओकी ओरका सीमान्त-स्टेशन मंचुली है, जहाँसे रूस जानेकेलिये गाड़ी बदलनी पड़ती है। मैं वहाँ २८ अगस्त (१९३५)को पहुँचा। उस समय भी वहाँ काफी जाड़ा पड़ रहा था। स्थान पहाड़ी है। ये पहाड़ बहुत ज्यादा ऊँचे नहीं हैं और ने घास तथा मिट्टी से ढँके हुए हैं। पेड़ तो नहीं देख पड़ते, लेकिन सारी जमीन हरी घासों-

से ढँकी थी। मुझसे कहा गया था कि सोवियत्‌में खानेकी चीज़ोंकी कमी रहती है, इसलिए मैंने मास्को तकके सफ़रकेलिए खानेका पूरा सामान खरीद लिया था। पीछे वह बात ग़लत निकली। सोवियत्‌के अन्दर कहीं भी खानेकी चीजोंकी कमी नहीं है—सिर्फ़ आपको इसके लिए अमेरिकाके भावसे दाम देना पड़ेगा। मैं तीसरे दर्जेका मुसाफ़िर था। वहाँ तीसरे दर्जेके दो भेद हैं—"कड़ा" तीसरा दर्जा और "मुलायम" तीसरा दर्जा। मुलायम तीसरे दर्जेमें गद्दीदार बेंच होती है। यद्यपि कड़े तीसरे दर्जेमें मैंने आर्थिक कारणोंसे सफ़र करना पसंद किया था, तथापि वही दर्जा सफ़र करनेकेलिए सबसे अच्छा भी है। रूसके साधारण लोग उसी दर्जेमें सफ़र करते हैं, जिससे उनके सम्बन्धमें अध्ययन करनेकेलिए, काफ़ी मौक़ा मिलता है। जो पहले या दूसरे दर्जेमें सफ़र करते हैं, रूसकी साधारण-जनतासे उनका सम्बन्ध बिलकुल ही नहीं हो पाता।

सोवियत् सीमा मंचुलीसे बहुत दूर नहीं है; और मंचूकुओ तथा सोवियत्‌के बीच कोई प्राकृतिक सीमा-चिह्न भी नहीं है। सोवियत्‌में पहला स्टेशन मात्चेप्स्काया है। पहला परिवर्तन जो मैंने देखा वह यह था कि रेलवे कर्मचारियोंके मकान सीमाके उस पारके मकानोंसे कहीं अच्छे थे। मात्चेप्स्काया रूसके और स्टेशनोंके जैसा ही है, किन्तु मंचुली स्टेशनसे एकदम भिन्न दीखता है। दीवारपर प्लैटफ़ार्मकी ओर लेनिन्, स्तालिन् आदि नेताओंके चित्र थे। स्टेशनके कमरे रेलवे आफ़िसोंकी बनिस्बत होटलोंसे ज्यादा मिलते थे। रेलवे कर्मचारियोंमें कितनी स्त्रियाँ भी थीं। मैंने रूसी स्त्रियोंको हार्बिन्‌में भी देखा था। वे स्त्रियाँ सोवियत्-विरोधी दल की थीं, जिन्हें "सफ़ेद रूसी" के नामसे पुकारा जाता है। वे अपने होठोंको रँगती और मुँहपर खूब पाउडर लगाती हैं। लेकिन सोवियत् रूसमें आप शायद ही किसी स्त्रीको ऊँची ऐंड़ी का जूता पहने देखिएगा, होठ रँगनेकी बात भी बहुत कम।

मेरी गाड़ी मात्चेप्स्कायामें करीब ३ बजे दिनको पहुँची। यहाँ हरएक मुसाफ़िरके सामानकी जाँच होती है। मेरे पास बहुत कम सामान था, इस-

लिए जाँचमें कोई ज्यादा दिक्क़त नहीं हुई। फिर उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा, फिर, पासपोर्ट अफ़सरने कहा—आप आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आप सीमाके भीतर ७ रोज़ देरसे पहुँचे हैं। मैंने रूसके लोगोंको सदा ही सहृदय तथा विचारवान पाया। जब मैंने अपनी दिक्कतोंको उनसे कहा तो उन्होंने मुझे आगे बढ़नेकी आज्ञा दे दी।

मैंने सिर्फ़ १६ दिन सोवियत्-राष्ट्रमें बिताये। ट्रान्स सारबेरियन रेलवेपर मंचुलीसे मास्को जानेमें ७ दिन लगे। मास्कोमें मैं २४ घंटे ही ठहरा और फिर रेलसे मास्कोसे बाकू पहुँचा और तीन रोज़ रहा। एक दिन केस्पियन सागरमें भी बिताया। मैंने अपनी सारी यात्रा सोवियत्की साधारण जनताके साथ की। सोवियत् निवासियोंकी दो बातोंने मुझे सबसे अधिक आकृष्ट किया। पहली यह कि रूसी लोग बड़े साफ़दिल और मिलनसार होते हैं। अगर कोई स्वयं मुहर्रमी सूरतवाला न हो तो उनसे दोस्ती करनेमें दो-तीन मिनटसे अधिक नहीं लगता। वे बहुत ही अतिथि-सेवी होते हैं; और अपरिचित लोगोंको सहायता करनेमें सदा तत्पर रहते हैं। इस बातमें वे जापानके लोगोंसे एकदम मिलते-जुलते हैं। वे अपने और मित्रमंडलीकेलिये खर्च करनेमें बहुत उदार होते हैं। अतिथि-सत्कारके विषयमें मुझे पता चला कि यह रूस-निवासियोंकी पहलेसे भी खास सिफ़त है। किंतु दूसरा गुण रूसकी नवीन पद्धतिके निर्माणके बाद विकसित हुआ है; क्योंकि अब उन्हें बेकारीका कुछ भी भय नहीं रहा। जब तक वे काम करने योग्य हैं; उन्हें काम तथा निश्चित वेतन अवश्य मिलेगा, जब बीमार या किसी कारण-वश काम करनेके लायक़ नहीं रह जायेंगे, तो राष्ट्र उनके निर्वाहका प्रबन्ध करेगा। उन्हें अपनी सन्तानकी शिक्षा तथा शादीकेलिए चिन्ता नहीं करनी है। ऐसी स्थितिमें उनके लिए कंजूसीसे दूर रहना एकदम स्वाभाविक है।

पूर्वी सिबेरियाकी आबादीमें मंगोल तथा रूसी दोनों जातियाँ सम्मिलित हैं। क्रान्तिके पहले मंगोल रूसियोंसे नीच समझे जाते थे। रंग-भेदका बाजार खूबगर्म था। मंगोलोंको गुलामोंसा माना जाता था; जैसा कि अभी भी

यूरोपके अधीनस्थ पूर्वी देशोंमें देखा जाता है। लेकिन अब वह अतीतकी बात हो गई। रंग-भेदको गंध तक नहीं रही। समान कार्यकेलिए वेतनमें भिन्नता नहीं। नौकरियोंमें किसीकेलिए खास रियायत नहीं। वास्तवमें नई संतति तो उन पुरानी बातोंके सम्बन्धमें कुछ जानती भी नहीं। स्टेशनोंपर रूसी और मंगोल पुरुष या स्त्री, हाथमें हाथ मिलाये घूमते हुए दीख पड़ते थे। मिश्रित विवाह रूसमें इस प्रकार फैल रहा है कि मालूम होता है इस शताब्दीके अन्त तक विशुद्ध जातीय रूप-रंग वहाँ देखनेको नहीं मिलेगा। बात यों है कि जब एशियाई तथा रूसी नागरिक आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टिसे एक सतहपर हैं, तो इस तरहके मिश्रित शादी-विवाहमें रुकावट क्या?

सोवियत्-रूसमें मैं इतने कम दिनों तक रहा कि रूसी जीवनके हर पहलूको देख न सका। लेकिन कोई भी आदमी वहाँके आर्थिक पुनर्निर्माणकी तीव्र प्रगतिकी एक झाँकी देखकर भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मैंने मंचुलीसे मास्को तक प्रायः ४००० मील और मास्कोसे बाकू तक प्रायः २००० मीलकी यात्रा की; और हर एक स्टेशन तथा रेलवे लाइनके निकटवर्ती गाँवमें नये मकानों तथा कारखानोंका निर्माण होते पाया। समूचा राष्ट्र इमारतें बनानेकी धुनमें पागल-सा जान पड़ता है। इससे यह भी जान पड़ता है कि पंचवर्षीय योजनाका प्रभाव समूचे प्रजातन्त्र-संघ पर पड़ रहा है। वह सिर्फ मास्को और लेनिन्ग्राद् तक ही सीमित नहीं है। अपनी गाड़ीकी खिड़कियोंसे मैंने गेहूँके बहुत बड़े-बड़े खेतोंको देखा। वहाँ यंत्रसे अन्न अलग किया जा रहा था; और फिर लारियोंमें भरकर गाँवोंमें पहुँचाया जाता था। इर्कुत्स्कके निकट एक दिन बड़े तड़के मैंने एक रूसी स्त्रीको अपने कंधेपर बहँगी लिये जाते हुए देखा, जिसमें पानीके दो घड़े लटक रहे थे। आकृति और पोशाकसे वह बहुत सुन्दर और संस्कृत मालूम पड़ती थी। उसे देख मुझे 'रानी भरें पानी' वाली कहावत याद आ गई।

सिबेरियामें मैंने ट्रैक्टर (कलके हल) चलते नहीं देखे; क्योंकि वह जुताई का मौसम नहीं था। हाँ, बहुतसे ट्रैक्टर रखे हुए जरूर देखे। लेकिन मास्कोसे

बाकू आते समय मैंने चालीस-पचास ट्रैक्टरोंको एक पंक्तिमें खेतकी जुताई करते हुए देखा। यह भाग सिबेरियासे गर्म है, उसकी फ़सल कुछ दिन पहले ही तैयार हो गई थी और इस समय जुताई शुरू थी।

रूसमें वैज्ञानिक तरीक़ोंसे खेती बहुत बड़े पैमानेमें शुरू की गई है। सभी सामूहिक तथा सरकारी खेती मशीनसे होती है। खेत जोतने तथा खलियान-केलिए कलोंका ही व्यवहार किया जाता है। बहुत जगहोंमें हवाई जहाजसे खेत बोनेका काम लिया जाता है। अब पंचमांश या चौथाईसे भी कम ही खेती पुराने ढङ्गसे की जाती है। ये छोटे-छोटे किसान भी अपनी जमीनको सामूहिक बनानेको तैयार हैं, लेकिन जैसे ही उनके खेत सामूहिक बना लिये जायेंगे वैसे ही खेत-खलियानमें मशीनोंकी माँग होने लगेगी, जिसको पूरा करने-केलिए अभी काफ़ी कारखाने नहीं हैं। किन्तु सोवियत् सरकार प्रत्येक साल अपने कारखानोंकी वृद्धि कर रही है; और अब उसे समूचे देशके खेतोंको सामूहिक करनेकेलिए मशीनें देनेमें ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

रहन-सहनमें दिन-दिन तरक़्क़ी हो रही है। अब भी वेतनोंमें फ़र्क है, कोई २०० रूबल पाते हैं तो कोई ५०० रूबल, लेकिन यह वर्तमान परिस्थितिमें अनिवार्य है। पहली बात तो यह है कि दक्ष कार्यकर्ताओंको अधिक वेतन देना पड़ता है, जिसमें वे दूसरे पूँजीवादी देशोंकी तुलनामें अपने वेतनको इतना कम नहीं समझें, कि देश छोड़नेको ललचायें। आख़िर सभी कार्यकर्त्ता तो पूरे साम्यवादी हैं नहीं। दूसरी बात यह है कि वेतनमें जितनी वृद्धि होगी, उतना ही लोग अधिक माल ख़रीदना चाहेंगे, जिसे पूरे परिमाणमें तैयार करनेमें अभी कुछ समय लगेगा। वर्तमान राज्य-व्यवस्थाके पहले रूसके निवासी बड़े निर्धन थे; और बहुत सी चीज़ें, जो इस समय ज़रूरी समझी जा रही हैं, उस समय विलासकी सामग्रीमें गिनी जाती थीं। उदाहरणार्थ उन दिनों एशियाई-सोवियत्में साबुनकी भी ज़रूरत महसूस नहीं की जाती थी, फिर दाँत साफ़ करनेके लिए ब्रुश और पेस्टकी कौन-सी बात? लेकिन अब वह उज़्बक् और तुर्क लोगोंकेलिए भी नित्यके व्यवहारकी चीज़ें हो रही हैं। अपर्याप्त उपज-

के कारण इस सब चीजोंकी बिक्रीपर नियंत्रण रखनेकेलिए दाम बढ़ाना पड़ा है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजनामें यह निश्चित किया गया है, कि समूचे देशमें अधिकाधिक संख्यामें कारखाने क़ायम किये जायँ; जिसमें इन चीजोंकी कमी दूर की जाय। किन्तु मालूम होता है कि तीसरी पंचवर्षीय योजनामें ही इन सब माँगोंको पूरा किया जा सकेगा। उस समय रूसके निवासियोंकी रहन-सहनका मान संयुक्त-राज्य अमेरिकाके काममें लगे मजदूरोंसे भी कहीं ऊँचा हो जायगा।

जब मैं ट्रान्स-सिबेरियन रेलवेमें सफ़र कर रहा था तो एक गाँवमें एक बहुत ही साफ़-सुथरा गिरजाघर देखा। मैंने अपने एक रूसी दोस्तसे पूछा— इस गाँवका गिरजाघर इतना अधिक साफ़ सुथरा क्यों है? जवाब मिला—इस गाँवमें अभी भी कुछ आदमी हैं, जो ईश्वरमें विश्वास रखते हैं। बात-चीतसे यह स्पष्ट पता चला कि यद्यपि साम्यवादी दलका मेम्बर होनेकेलिये नास्तिक होना जरूरी है, तथापि जन-साधारणपर इसकेलिये दबाव नहीं दिया जाता; क्योंकि वहाँके साम्यवादी इसकी प्रतिक्रियासे भलीभाँति वाक़िफ़ हैं। उन्हें कोई जल्दी भी नहीं है। उनका तो विश्वास है, कि अगली पीढ़ीमें ईश्वरका नाम-निशान भी नहीं रहेगा, क्योंकि जो बच्चे पलनेसे ही नये वायुमण्डलमें शिक्षा पा रहे हैं; वे भला इन बातोंमें क्यों फँसने लगे?

५. बाकू शहर

मास्कोसे तीन दिनकी रेल-यात्राके बाद दो बजे रातको हमारी गाड़ी बाकू पहुँची। सारे शहरमें लाखों विद्युत्प्रदीपोंकी दीपावली-सी मनाई जा रही थी। वह समय शहरमें घुसनेका था ही नहीं, 'इंतूरिस्त' (सोवियत् सरकारकी यात्रा-प्रबन्धक समिति)का कोई आदमी भी स्टेशनपर नहीं मिला। रूसी सोवियत् नागरिकोंका सौजन्य अद्वितीय है। मास्कोके सहयात्री हमारे अज्ञातनामा मित्र, जो अमेरिकामें रहनेके कारण अंग्रेजी जानते थे,

हमारा सूट-केस उठाकर अनुकूल स्थान ढूँढ़ने चले। दो-एक जगह पूछनेके बाद स्टेशनके क्लबके कमरेमें पहुँचे। प्रबन्धकर्त्री चालीस वर्षकी एक अधेड़ महिला थीं। बाल कटे, पोशाक रूसी श्रमिक स्त्रियों-जैसी, बूटकी एड़ जरा-सी उठी हुई; किन्तु चेहरेका रंग और काले बाल बतला रहे थे कि वह एशियाई हैं। मेरे साथीने मेरे बारेमें कुछ बतलाया और यह भी कह दिया कि मैं रूसी भाषा नहीं जानता। महिलाने कहा—'यहाँ इस कोनेकी कुर्सीपर बैठ जायँ, सबेरे मैं टेलीफ़ोन करके इंतूरिस्तके पास इन्हें भिजवा दूँगी।' साथीसे कृतज्ञता प्रदर्शन-पूर्वक विदाई ली।

रातको स्टेशनके कुछ भागोंको देखा। बगलमें भोजनशाला थी, जिसमें पचीसों मेजें खानेकेलिये सजी हुई थीं। नीचेके मुसाफ़िरखानेको देखकर आप उसे मुसाफ़िरखाना कहनेकी हिम्मत ही न करेंगे। अच्छी स्वच्छशालामें कितनी ही कुर्सियाँ हैं, जिनपर कितने ही स्त्री-पुरुष बैठे हैं। बगलमें हजामत खाना है। यूरोपकी भाँति सारे सोवियतमें भी स्त्रियाँ बाल कटाने लगी हैं, इसलिये हज्जामोंकी बन आई है। हाँ, सोवियत् देशमें और कामोंकी भाँति यह पेशा भी अब प्रायः समाजके स्वामित्व में होता है। पुरुषोंकी भाँति कितनी ही स्त्रियाँ भी हज्जामका काम करती हैं। दो-चार और स्थानोंको देखा—कहीं किसी बैंककी शाखा है; कहीं अखबारों और किताबोंकी दूकान है; कहीं बिस्कुट और मिठाई सजी है। घूमकर फिर कुर्सीपर आ बैठा। देखा, टिकट बाबू लोगोंमें-से भी, जो कि सभी स्त्रियाँ थीं, कोई-कोई आकर कुर्सीपर ऊँघ रही हैं।

पाँच बजनेके बाद (९ सितम्बर) उजाला हुआ। महिलाने हजामतखानेमें ले जाकर मुँह-हाथ धोनेका इशारा किया। मुँह हाथ धोकर फिर उसी कमरेमें आया। ६ बजे कितने ही स्त्री-पुरुष आने लगे। कमरेमें मेज़ोंपर जहाँ कितने ही दैनिक, मासिक, साप्ताहिक पत्र पड़े थे, वहाँ एक कोनेमें एक बड़ा-सा पियानो भी था। दीवारोंपर लेनिन, स्तालिन, मोलोतोफ़ आदिके बड़े-बड़े चित्र टँगे थे। एक काली ओढ़नी ओढ़े महिलाको आते देख मेरा ध्यान उधर आकर्षित हुआ। उसके पीछे एक मूँछ-दाढ़ी सफ़ाचट तरुण छज्जेवाली टोपी

लगाये आया, और फिर एक केशच्छिन्ना सुन्दरी यूरोपीय वेषमें एक चार वर्षके बालकके साथ पधारीं। बैठ जानेपर बिना पूछे ही यह जाननेमें कोई दिक़्क़त नहीं हुई; कि ओढ़नीवाली महिलाके ही बाक़ी पुत्र, पुत्रवधू और पौत्र हैं। चेहरेके रंग और काले केशोंसे उनके एशियाई होनेमें कोई सन्देह ही नथा। यह भी मालूम हुआ कि यह 'मुसलमान' परिवार है। 'है' नहीं 'था' कहना चाहिए। मजहब तो यहाँ विशेषकर तरुणोंमें 'था' की वस्तु हो रहा है। वह दृश्य देखकर मेरे दिलमें तरह-तरहके विचार पैदा हो रहे थे, पर बादमें बाकूके तीन दिनके निवाससे उसे साधारण बला देखकर कम-से-कम उतना अचम्भा नहीं रह गया। वहाँ तो बाल कटाये, नङ्गी बाँहोंवाला अंगरखा पहने, बूट-धारिणी मुसलमान तरुणियोंकी संख्या गिनी ही नहीं जा सकती। उक्त वेशके अतिरिक्त एक लम्बा-चौड़ा तौलिया जैसा कपड़ा भी किसी-किसीके कन्धे पर पड़ा देखा। ओढ़नी तो सिर्फ़ बुढ़ियोंकेलिए है। यदि भूला-भटका पाजामा-कुर्ता देखनेको मिला भी, तो वह साठ वर्षसे ऊपरवालियोंके बदनपर।

नौ बजे महिलाने एक आदमी साथ कर दिया और इतूरिस्त कार्यालय-की ओर रवाना हुए। बाकूमें रूसियोंकी तादाद बहुत अधिक है—यदि आधी नहीं, तो तिहाई जरूर होगी। साम्यवादी शासनमें पुराना रंग भेद तो है नहीं सभी लोग सभी तरहके काम करते हैं। अब बोझा ढोनेका काम सिर्फ़ एशियाइयोंकेलिए नहीं रहा। मालूम होता है, अभी स्वतन्त्र काम करनेवाले श्रमिक भी यहाँ मौजूद हैं। वह आदमी कई बार कहनेपर भी इतूरिस्त कार्या-लय न जाकर जहाजके घाटपर पहुँचा। मैंने दो-चार रूसी शब्दोंको जोड़कर कहा—'बिलेत् नेत् इंतूरिस्त' (टिकट नहीं है, इतूरिस्त), और चलनेका इशारा किया। आदमीको ख़याल था कि विदेशी है, चलो जहाजपर बैठाकर मनमाना दाम वसूल करें; इतूरिस्तके पास जानेपर तो नपा-तुला ही मिलेगा।

आखिर इन्तूरिस्त पहुँचे। सतमहला विशाल नये ढंगका मकान है। उसीमें होटल भी है। कार्यालयमें दो-तीन स्त्रियाँ ही थीं, फरासीसी और जर्मन जानने-वाली वहाँ मौजूद थीं; किन्तु अपने रामको इन भाषाओंका ज्ञान—विशेषकर

बोलनेका अभ्यास—तो नहीं-सा ही था। पीछे अंग्रेजी जाननेवाली महिला-के आनेपर मैंने कहा—"मैं पहलवी (ईरान) जा रहा हूँ, और अभी मुझे ईरान-कौन्सलसे 'वीजा' लेना है।" उन्होंने बतलाया—"जहाज आपको परसों चार बजे शामको मिलेगा, तबतक आप यहीं विश्राम करें।" मैंने सबसे सस्ते दो डालर (५॥) रुपये) रोजवाले कमरेमें अपना सामान रखा। डेढ़ रुपये प्रतिबार वाले स्नान-गृहमें जाकर स्नान किया; और फिर तीन रुपये का जलपान। मैंने हिसाब अमेरिकन डालरसे चुकाया था; उसे ही रुपयेके हिसाब-से यहाँ दे रहा हूँ। तीन-तीन रुपयेका जलपान सुनकर पाठक यह न समझ लें कि मैं कुम्भकर्ण बन गया था, अथवा भोजन वाजिदअली शाहके खास बावर्ची-खानेका था। भोजन वही था, जो हिन्दुस्तानके किसी शहरमें आठ-दस आनेमें मिल सकता है; किन्तु सोवियत् अधिकारियोंके दिमागमें दाम रखते समय खयाल तो अमेरिकन यात्रियोंका रहता है। भोजनोपरान्त १० बजे नगर-दर्शनकेलिए निकले। मोटरपर रूसी दुभाषिया तवारिश (कामरेड) अना और एक दूसरी अंग्रेज यात्री महिला थीं।

बाकू संसारकी तेलकी खानोंमें सर्वप्रथम है। शहरकी आबादी छै लाखसे ऊपर है, जिसमें तुर्क अधिक हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह तुर्क पक्के मुसलमान थे; किन्तु अब मत पूछिए। मैंने अपनी आँखों एक दर्गाह या मस्जिदको गिराये जाते देखा, और गिरानेवाले श्रमिकोंके चेहरे देखनेसे अधिकांश उनमें तुर्क जान पड़े। कम्यूनिज्म का बोलबाला है, और उसके सामने किसीकी सुनवाई नहीं। यदि बेचारी कोई दर्गाह या मस्जिद फरियाद लेकर पहुँचती है, तो पूछा जाता है—"किस बिना पर तुम्हें कायम रखा जाय? क्या तुममें कोई अद्भुत कला है? क्या तुम्हारा मकबरा अति-प्राचीन काल या ऐतिहासिक व्यक्तिसे रहा है? यदि नहीं, तो काम लायक नई बड़ी इमारत, बाग या खेल-कूदके लिये जगह खाली करो।" यदि बहुत रियायत की गई, तो कहा गया—'अच्छा, अबसे तुम्हें क्लबघर, नाच-घर या किताब-घर बनाना होगा।' मस्जिद ही नहीं, यही बात गिरजा और मन्दिरोंके सन्तानों पर भी लागू है। बाकूका एक विशाल पत्थर-

का सेनागाँग् अब एक आफ़िसके रूपमें परिणत हो गया है। समुद्र-तटके मकानोंको गिराकर एक लम्बा उद्यान बनाया गया है, जिसमें वृक्षोंके नीचे जगह-जगह विश्रामार्थ कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। कहीं-कहीं क्लब-घर भी हैं, और सोडावाटर लेमनेडकी दूकानें तो हर बीस क़दमपर सन्दूक़-जैसी कोठरियोंमें देख पड़ती हैं। नगरकी अधिकांश सड़कें कोलतार की हुई हैं, बाक़ीमें नदी-के गोल-गोल पत्थर बिछे हुए हैं। मोटर, लारी और ट्रामकी आँधी-सी चल रही है, फिर भी अभी घोड़ागाड़ी एकदम विदा नहीं हुई हैं, बल्कि शहरके छोरों-पर आपको लदे हुए गधे और ऊँट भी दिखाई पड़ेंगे। और मकान? चौमहले से कम नहीं, और कोई-कोई आठ-आठ नौ-नौ तल्लोंके। इनमें अधिकांश नये शासनके बाद बने हैं। नगरके प्रधान भागसे पुराने मकान विदा हो चुके हैं। और बाक़ी जगहोंमें भी बीसियों प्रासाद खड़े होते तथा पचासों पुराने घर गिराये जाते देख पड़ते हैं।

अब हम शहरसे बाहर निकल रहे थे। बाईं तरफ़ पुराने एकतल्ले मकानों-की पाँति अपने अन्तिम दिन गिन रही थी। दाहनी ओर अलग-अलग कितने ही दोतल्ले घर थे, जिनपर १९२४ लिखा हुआ था, अर्थात् वे ग्यारह वर्ष पूर्व बने थे। आजकल इस ढंगको भी पसन्द नहीं किया जाता। नये मकान अमेरिकन ढंगके पँचमहले, छमहले, सतमहले ही बनाये जा रहे हैं। इन मकानोंमें सौ डेढ़-सौ परिवार रह सकते हैं। हर एक परिवारकी आवश्यकताके अनुसार तीन या चार कमरे दिये जाते हैं। साथिन अंग्रेज़ महिलाने पूछा—'और किराया?' तवारिश अनाने उत्तर दिये—'तनख़्वाहका दस प्रतिशत। पाँच सौ रूबल तनख़्वाह पानेवालेसे ५० रूबल, और २०० रूबल वालेसे २० रूबल'। अंग्रेज़ महिलाके ख़यालमें नहीं आ रहा था कि उसी चीज़केलिए दो व्यक्तियोंसे दो तरहका किराया क्यों?

अब हम सड़कसे काफ़ी दूर चले आये थे। हमारे दाएँ-बाएँ बहुतसे तेल-के कुएँ थे। कुओंका मतलब पानीका कुआँ मत समझिए। पहले किसी समय वे पानीके कुएँ जैसे ही रहे होंगे; किन्तु अब ट्यूबवेल की भाँति नलको

धरतीके भीतर धँसाया जाता है। हर एक स्तरपर तेल है कि नहीं, कैसा तेल है, आदि की परीक्षाकी जाती है; और फिर अन्तिम स्थानपर पहुँचकर रोक दिया जाता है। इस नल-कूपपर बीससे पचास फ़ीट ऊँचा एक लोहेका ढाँचा खड़ा किया जाता है, जिसके सहारे पंपकी मशीन लगा दी जाती है। यह मशीन बिजलीके जोरसे रात-दिन चला करती है; तेल पम्प द्वारा मीलों दूर रिफ़ाइनरी (सफ़ाई करनेके कारखाने)में पहुँचाया जाता है। मशीन फ़िट कर देनेपर काम आदमीके बिना स्वयं होता रहता है। हाँ, कुआँ खोदनेमें एक और बात है। तेल तक पहुँचनेकेलिए कितनी ही चट्टानें पार करनी पड़ती हैं और कहीं-कहीं तो तीन-तीन हजार फ़ीट तक उसे नीचे ले जाना पड़ता है, इसलिए सभी काम बिजली द्वारा संचालित यन्त्रोंसे होता है। तेल-कूपोंके पास भी कितने ही श्रमिक-प्रासाद बने हैं। बाकूकी सारी भूमि जल-शून्य है, और ये तेल-क्षेत्र तो और भी रूखे हैं। पीनेका पानी दूरसे नलों द्वारा लाया जाता है, और उसके सहारे वहाँ उद्यान-नगर बनाये जानेकी कोशिश हो रही है। बाकूसे तेल-क्षेत्रों तक कितनी ही बिजलीकी रेलवे लाइनें हैं। हम एक ऐसी ही लाइनके छोरपर पहुँचे। यहाँ किसी समय एक अच्छा खासा गाँव बसता था। अब उसके बहुतसे मकान गिर चुके हैं। एक आधमें कुछ बूढ़े तुर्क स्त्री-पुरुष रहते हैं; किन्तु हम इस उजड़े गाँवको देखने नहीं आये थे। हमें तो देखना था—'अग्नि-पूजकोंका मन्दिर'।

मन्दिरका द्वार बन्द था। तवारिश् अना चाबीवाली बुढ़ियाको बुलाने गई, और हम दोनों मन्दिरके द्वारपर पहुँचे। फाटक दोतल्ला है, जिसके निचले और उपरले दोनों तल्लोंपर एक-एक शिलालेख हैं। लेख साफ़ नागरी अक्षरोंमें हैं, वैसे होता तो इतनी दूर नागरी-अक्षरवाले शिलालेख और हिंदू-मंदिरको देखकर बड़ा आश्चर्य होता; किन्तु मुझे इस मन्दिरकी खबर पहले-पहल अप्रैल, १९२०में मिली थी। उस समय गंगासे रमता हुआ मैं वीर-गंज (नेपाल) पहुँचा था। इरादा काठमांडो जानेका था; पर राहदारी मिल न रही थी। वहीं रक्सौलवाली नदीके पुलके पास नदी-तटपर एक साधुकी

कुटियामें आसन जमा था। एक नौजवान साधु भी कुछ दिन पहलेसे आकर वहीं पड़ा था। पूछा-पेखी होनेपर उसने बतलाया—'मैं बड़ी ज्वालामाई से आ रहा हूँ'।

"बड़ी ज्वालामाई! काँगड़ेवाली तो नहीं"?—मैंने पूछा।

"नहीं, वह बहुत दूर है। हिन्दुस्तानसे वहाँ पहुँचनेमें महीनों लगते हैं, वह रूसके मुल्कमें है"।

दिल तो उत्तेजित हो रहा था कि कह दूँ—'क्यों बक रहे हो'; पर बैठे-ठाले झगड़ा कौन मोल ले! मैंने पूछा—"वहाँ जानेका रास्ता कहाँसे है"?

"काश्मीरके पहाड़ोंको पारकर चीनका मुल्क है और फिर वहाँसे महीनों चलनेपर ज्वालामाई हैं। कराचीसे जहाजपर भी जानेका रास्ता है।"

मुझे इस सरासर झूठपर सख्त गुस्सा आ रहा था। मैंने फिर कहा—

"क्या हिंगलाज भवानीके पास।"

"नहीं-नहीं, वह बहुत दूर, रूसके मुल्कमें है। वहाँ आप रूपी ज्वाला-माई विराजती हैं। धरतीसे एक ज्योति निकलती है। नैवेद्य तैयारकर सामने रखा जाता है, और माई स्वयं उसे अपनी जिह्वासे ग्रहण करती हैं। मैं वहाँ छै-सात वर्ष रहा हूँ। उधर कोई और साथी न होने से मन नहीं लगा और चला आया। मैं काश्मीरके पहाड़ी रास्तेसे लौटा हूँ।"

साधु अनपढ़ सा था। भूगोलका उसे ज्ञान न था। यदि वह कास्पियन समुद्र और बाकूका नाम ले देता, और साथ ही मिट्टीके तेलके कुओंका जिक्र कर देता, तो मैं उसकी बातमें कुछ अधिक दिलचस्पी लेता; मगर मैं अपने भूगोल ज्ञानके अभिमानसे उसकी सच्ची बात बड़े तिरस्कारके साथ सुन रहा था।

सात वर्ष बाद एक बार मैं ग्रेट-ब्रिटेनकी 'रायल-एशियाटिक सोसाइटी'के जर्नल (पत्र) की पुरानी फ़ाइलोंका पारायण कर रहा था। सन् १९००से पूर्वके एक अंकमें एक अंग्रेज लेखकका लेख 'बाकूमें हिन्दू मन्दिर' देखा। लेखकने मन्दिर और उसमें खुदे लेखों का जिक्र किया था। यह भी

लिखा था कि वहाँ एक भारतीय साधु रहता है। यद्यपि बाकूके सिंधी हिन्दू व्यापारी उसकी सहायता करते हैं; किन्तु उसका मन नहीं लग रहा है। उसने उक्त लेखकसे भारत भिजवानेका कोई प्रबन्ध करनेका आग्रह भी किया था। यह पढ़कर उस तरुण साधुके प्रति किये अपने मानसिक अत्याचारपर मुझे अफ़सोस हुआ। मैं पछताने लगा कि उस समय यदि मैं कुछ अधिक विश्वास-से काम लेता, तो बाकूकी ज्वालामाईके बारेमें कितनी ही और बातें मालूम कर सकता था।

और अब आठ वर्ष और बीतनेपर मैं उसी ज्वालामाईके मन्दिरके द्वार-पर हूँ! मन्दिरके फाटकपर नीचेका लेख (पाँच पंक्तियों)में इस प्रकार है—

"॥६०॥ ओं श्रीगणेशाय नमः। श्लो[1]
क ॥ स्वस्ति श्री नरपति विक्रमादित रा[2]
ज साके ॥ श्री ज्वालाजी निमत दरवा[3]
जा बणाया: अतीकेचन गिर संन्यासी[4]
रामदहा वासी कोटेश्वर महादेव का ॥......
आसोज वदि ८। संवत् १८६६ ॥"[5]

चान्द्र तिथि, 'निमत' और 'बणाया' पर ख्याल करनेसे मालूम होता है, अतीकेचन गिर हरियाना या कुरुक्षेत्रके समीपके रहनेवाले थे। संस्कृत न जानने-पर भी वे साक्षर थे, क्योंकि संयुक्त अक्षरोंमें उन्होंने ग़लती नहीं की है। दरवाजा खोलते वक़्त तवारिश अनाने कहा—"यह न-जाने कबके और कहाँ-के अक्षर हैं। बड़े-बड़े प्रोफ़ेसर देखने आये; किन्तु कोई नहीं पढ़ सका।"

मैंने कहा—"यह उत्तरी भारतमें सर्वत्र प्रचलित हिन्दी-भाषा तथा नागरी लिपिका लेख है। सन् १८०९में—सवा सौ वर्ष पूर्व—दरवाजा बनवानेवाले साधुने इसे लगवाया है।"

अनाने बहुत आश्चर्य प्रकट किया मेरे अगाध लिपि-ज्ञानपर।

"आश्चर्यकी कोई बात नहीं। यह अक्षर भारतमें उतने ही सुपरिचित

हैं, जितने रूसी अक्षर रूसमें! आपके साथ आनेवाले प्रोफ़ेसर लोगोंका विषय भारतीय लिपि न रहा होगा।''

बुढ़ियाने दरवाजा खोला। भीतर बड़ा आँगन है, जिसके बीचमें एक चौकोर पक्का मंडप है। भारतके सभी मठोंकी भाँति आँगन चारों ओरसे साधुओंके रहनेकी कोठरियोंसे घिरा है। शायद लकड़ीकी महँगाईसे अथवा मजबूतीके खयालसे सभी कोठरियोंकी छतें चूने-पत्थरके पटाव या लदावकी मेहराबदार बनी हैं। कितनी ही कोठरियोंपर बनवानेवाले दाताओंके नामके शिलालेख लगे हैं। इनकी संख्या दस-ग्यारह होगी, जिनमें दो गुरुमुखीके भी हैं। इनके लेखक पंजाबके उदासी साधु थे। समय इतना नहीं था कि मैं और लेखोंको पढ़ता और नक़ल करता। मंडपमें जाकर खड़ा हुआ। वहाँ चौकोर हवनकुण्ड-सा अब भी मौजूद है; पर अब ज्वालामाई नहीं हैं। तवारिश् अनाने बतलाया—''दस वर्ष पूर्व तक यहाँ अग्निज्वाला निकलती थी।

मैंने पूछा—''ज्वाला बन्द कैसे हुई?''

''स्वाभाविक गैस यहाँसे धरती फोड़कर निकलती रही होगी, जैसा कि अकसर तेल-क्षेत्रोंमें देखा जाता है। धरतीके नीचे रगड़ खाकर या बाहरसे किसीके आग लगानेसे गैस जल उठी होगी। एक बार जल जानेपर ऐसी गैसका रोकना है तो जलती बारूदके ढाकने-जैसा ही खतरनाक; पर अब कुछ उपाय मालूम हो गये हैं, जिनसे इस ज्वालाको शान्त किया गया होगा।''

मुझे ज्वालामाईके अन्तपर बड़ा अफ़सोस हुआ—विशेषकर यह ख्याल करके कि बड़ी ज्वालामाई यही थीं, काँगड़ेवाली तो छोटी ज्वालामाई हैं।

कितनी ही कोठरियोंको भीतरसे जाकर देखा। किन्हीं-किन्हींकी दीवारोंपर अब भी प्लास्तर है; जिसपर कुछ भद्दी मूर्तियाँ अंकित हैं। किन्हीं-किन्हींमें साधुओंके आसन लगानेके चबूतरे भी हैं। कहीं-कहीं धूनीकी आगकी राख भी मौजूद है। यहीं जलती धूनीके किनारे विशाल जटाधारी साधु दिग्-दिगन्तसे घूमते आकर बैठते होंगे। यहीं सुल्फ़ और गाँजेकी चिलमपर चिलम चढ़ती होगी, और सन्तजन पल्थी मारे अपनी अपनी यात्राके अतिरंजित वर्णन सुनाते रहे

होंगे। इसमें तो शक ही नहीं कि अहिन्दू देशोंमेंसे होकर भारतसे बाकू आना, उस समय बड़ी हिम्मतका काम था।

हमने ज्वालामाईके मन्दिरसे बिदाई ली। मन्दिर तेल-क्षेत्रके मध्यमें है, इसलिए चारों ओर तेलोंके कूप ही कूप हैं। कुआँ कैसे खोदा जाता है, इसे देखने गये। खुदाई बिजली और मशीनसे होती थी। एक कुआँ १४०० मीटर (१ मीटर = ३९$\frac{1}{3}$ इंच) खुद गया है; किन्तु अभी इसे २० सौ मीटर तक ले जाना है। खुदाई मिट्टीमें नहीं, चट्टानमें हो रही है। पासमें एक दूसरा कुआँ था, जिससे जल-मिश्रित तेलकी एक मोटी धार निकल रही थी। ऐसे तेल-कूप-को 'गशर' कहते हैं। ऐसे कुओंमें आग लगनेका डर रहता है। इनका मुँह बन्द करना तो असम्भव-सा है ही।

तीन-चार मील चलनेपर सड़ककी दाहनी ओर जिख गाँव आया। पुराने तुर्क गाँवका नमूना दिखानेके लिए हमें वहाँ ले जाया गया। यद्यपि इस गाँव-को पुराने गाँवोंके नमूनेके तौरपर रख छोड़ा गया है, तो भी जब निवासी पुराने ढङ्गके हों, तब तो वह वैसा रहेगा। गाँवके स्त्री-पुरुष तो तेल-क्षेत्रमें काम करते हैं, और दो सौ रूबल मासिक तनख्वाह लेते हैं। फिर यह लोग क्यों पुराने ढङ्गसे रहनेकेलिए तैयार होने लगे? फलतः मकान अधिक साफ़-सुथरे हैं। दरवाजों और खिड़कियोंमें काँच खूब इस्तेमाल किया गया है। बिजलीकी रोशनी और पानीका नल भी घर-घरमें है। यही वजह है कि इस गाँवको पुराने रूपमें रखनेमें बहुत कोशिश करनेपर भी, सफलता नहीं मिली।

हमारी मोटर कुछ और आगे बढ़ी। बाईं तरफ़से पहाड़के नीचेकी ओर जाती एक सड़क दिखलाई पड़ी। मालूम हुआ कि यहाँ समुद्र-तटपर स्नान-घाट बना है। बोलशेविकोंके स्नान-घाटमें भी कोई नई बात जरूर होगी, यह देखनेकेलिए हम उधर चल पड़े। जगह बहुत दूर नहीं थी। घाटके कुछ पहले सड़क-तटपर छोटे-छोटे वृक्ष दिखाई पड़े। वृक्ष ही नहीं, बल्कि सड़कके दोनों तरफ़ बाग तैयार करनेकी कोशिश हो रही है। इस जलशून्य सूखी पहाड़ी भूमिमें बाग लगाना कोई हँसी-खेल नहीं। यद्यपि समुद्र नजदीक है; लेकिन

खारे पानीसे यह वृक्ष जी नहीं सकते, इसीलिए दूरसे मीठे पानीका नल लाया गया है।

कुछ दूर चलकर हमारी मोटर एक गोल घुमावपर आकर खड़ी हो गई। एक फाटकसे दाखिल होकर देखा, एक ओर गोल मेहराबके नीचे रङ्गमंच है। बाकूके क्या सोवियत्‌के सभी सिनेमा थियेटरोंमें दर्शक खुली जगहमें बैठते हैं। सिर्फ रंगमंचके ऊपर छत होती है।

इस नहानेकी जगहपर भला थियेटर या सिनेमा-घरकी क्या जरूरत, जब कि बाकू शहरमें उनकी संख्या काफ़ी है, और लोग बाकूसे यहाँ सिर्फ स्नान या जल-क्रीड़ाकेलिए आते हैं?

लेकिन बोलशेविकोंकी दुनिया ही न्यारी है। उनका ख्याल है कि मनुष्य-को किसी जगह भी मनोरंजन करनेकी इच्छा हो सकती है। फिर उसका प्रबंध क्यों न किया जाय? अगर पँजीवादी देशोंकी भाँति जगह खरीदने, कुर्सियाँ और फर्नीचर तैयार करने एवं फ़िल्म या ऐक्टरोंपर रुपये खर्च करनेकी बात होती, तो शायद इतनी दरियादिली न दीख पड़ती। हम लोग दोपहरके क़रीब पहुँचे थे। उस वक्त कोई फ़िल्म या नाटक नहीं हो रहा था। दोपहर होने तथा छुट्टीका दिन न होने से बहुत कम स्त्री-पुरुष आये थे। बगलमें हज़ारों खम्भों वाला हाल या छतके नीचे खुली जगह थी, जिसमें बहुत-सी कुर्सियाँ और खानेकी गोल-गोल छोटी-छोटी मेजें पड़ी थीं। शामको और छुट्टीके दिनोंमें यहाँ बैठनेकी जगह न मिलती होगी; लेकिन इस वक़्त सभी कुछ खाली पड़ा था। हाँ, रेस्तोराँ (भोजनशाला)के परिचारक दर्जनों स्त्री पुरुष वहाँ जरूर दिखलाई पड़ते थे। यद्यपि यह जगह बाकूसे कई मीलपर है, तो भी मोटर-बसें बराबर दौड़ा करती हैं। किराया नाम मात्रका है, इसलिए लोगोंको आने-जानेमें कोई कठिनाई नहीं होती। रेस्तोराँके आगे दरख्तोंका एक छायादार बाग है। यहाँ दरख्त कुछ घने हैं। शायद यह वृक्ष कुछ पहले लगाये गये थे, इसलिए कुछ बड़े-बड़े हैं। अभी तो ये बाग उतने अच्छे नहीं मालूम होते; लेकिन कुछ वर्षोंके बाद ये सारे वृक्ष बड़े ही सुन्दर और

छायादार हो जायेंगे, और तब मरुभूमिमें यह बाग स्वर्गोद्यान-सा प्रतीत होने लगेगा; और वृक्षोंके नीचे पचीसों हजार आदमी अच्छी तरह विहार कर सकेंगे।

बागके आगे कुछ रेत है, और फिर समुद्र आ जाता है। बाईं ओर कुछ हटकर लकड़ीके तख्तोंका पुल-जैसा समुद्रके भीतर तक चला गया है, जहाँ उस वक्त भी कुछ युवक और युवतियाँ नहानेका काला लिबास पहने पानीमें छलाँग मार रही थीं। सोवियत्-राष्ट्रमें, चाहे वह एशियाई भाग हो या यूरोपीय, कई बातें बाहरके देखनेवालोंको बहुत ही आश्चर्य-जनक मालूम होंगी—खासकर हमारे भारतीय दर्शकोंमेंसे कितनोंके मुँहसे 'राम-राम' निकले बिना न रहेगा। आप बीस-बीस पचीस-पचीस वर्षके युवकों और युवतियोंको वहाँ थोड़ा-सा कपड़ा पहने साथ-साथ बालूमें लेटे या पानीमें तैरते देखकर कह उठेंगे कि भ्रष्टाचारकी हद हो गई। इन लोगोंमें अधिकांश तुर्क हैं, जो कुछ ही वर्ष पहले कट्टर मुसलमान थे। उस समय छै वर्षकी लड़की भी बिना बुर्का पहने घरसे बाहर नहीं हो सकती थी। आजकलकी इस बेशर्मीपर बहिश्तके फ़रिश्ते कितनी लानत भेजते होंगे!

अब हम शहरकी ओर चले। रास्तेके एक ओर समुद्र-तट था और दूसरी ओर पहाड़ी। कहीं-कहीं पुराने गाँवोंकी दीवारें खड़ी थीं। कुछ ही वर्ष पूर्व यहाँ लोग रहा करते थे; लेकिन अब तो अच्छे-अच्छे पक्के मकान बन गये हैं, जिनमें बिजली, पानी, नये ढंगके पाखाने आदिका इन्तजाम है, इसीलिए गाँव उजड़ गये हैं। बाकूमें वर्षा कम होती है, इसीलिए दीवारें अभी बहुत दिनों तक खड़ी रहेंगी।

हमारी गाड़ी चारों ओर शीशेसे बन्द थी, इसलिए हवा भीतर नहीं आती थी, अन्यथा सितम्बरके दिनोंमें भी वहाँ सर्दी काफ़ी पड़ रही थी। होटल-में लौटते वक्त शहरसे बाहर हमें बहुतसे बड़े-बड़े कारखाने मिले। इन्हीं कारखानोंमें मिट्टीका कच्चा तेल साफ़ किया जाता है, और उससे पेट्रोल, किरासिन, मोमबत्ती, वैसलिन आदि चीजें तैयार की जाती हैं। भोजनके बाद मैंने सोचा, शहरमें यदि कोई पुराना मुहल्ला बचा हो, तो उसे भी देखकर

चाहिए। पूछनेपर मालूम हुआ कि पुराने क़िलेकी तरफ़ पहाड़ीके ऊपरकी ओर भीतर घुसनेपर, पुराना महल्ला है। मैंने अपने होटलके स्थानको समुद्र-तटसे खूब ठीकसे देख लिया और फिर उधरका रास्ता पकड़ा। किसी समय बाकूका यह समुद्र-तट छोटे घरों, मसजिदों और क़ब्रोंसे भरा होगा। मालूम होना चाहिए कि बाकू ही नहीं, सारा काकेशस पहले ईरानके आधीन था, और रूसने इसे ५० वर्षसे कुछ ही पहले लिया था। आबादीके लिहाजसे भी यह पूर्वीय भाग तो बिलकुल मुसलमान था।

आज़ुर्बाइजान प्रजातन्त्र, बाकू जिसकी राजधानी है, तुर्कोंका मुल्क है, और यहाँकी राष्ट्र-भाषा तुर्की है। हर एक मुसलमानी शहरकी तरह यहाँ भी मस्जिदों और क़ब्रोंकी भरमार ज़रूर ही होनी थी; लेकिन आज समुद्र-तटको पत्थरसे बाँध दिया गया है, और उसके ऊपरकी जगहको साफ़ करके बग़ीचा लगाया गया है। यह बग़ीचा मीलों लम्बा चला गया है, और बाकू निवासियोंके मनोरंजनकी जगह है। बग़ीचेकी बग़लसे ट्रामकी लाइन है। कितनी ही दूर आगे जानेपर क़िलेका मीनार दिखलाई पड़ा, और मैं उधरकी ओर चलने लगा। थोड़ा दूरपर पतली गलियाँ और पुराने ढङ्गके मकान आ गये। गलियोंको देखकर बनारस याद आ रहा था। हाँ, फ़र्क़ इतना ज़रूर था कि तङ्ग होनेपर भी यहाँ सफ़ाई ज़्यादा थी। मकानोंके भीतर कैसा था, यह तो नहीं कह सकता; किन्तु रहनेवालोंमें कितनोंको साफ़-सुथरा नहीं पाया। देखनेमें भी वे ग़रीबसे जान पड़ते थे। इन गलियों और वहाँके निवासियोंको देखकर कोई भी विदेशी, जिसे सोवियत् और उसकी शासन-प्रणालीसे सहानुभूति नहीं है, सोवियत्-निवासियोंकी दीनता और दरिद्रताके बारेमें पन्नेके पन्ने काले कर सकता है। लेकिन याद रखना चाहिए कि सोवियत्‌में अभी भी बीस फ़ी सदीके क़रीब खेती स्वतन्त्र किसान करते हैं, और कितने ही मजदूरीपेशा लोग भी स्वतन्त्र मेहनत-मजदूरी करते हैं। सोवियत्‌की अठारह करोड़ निवासियोंके काम करनेकेलिए दस-पाँच वर्षोंमें फ़ैक्टरियाँ और मशीनें तैयार नहीं हो सकतीं, इसलिए कितने ही लोग अब भी स्वतन्त्र मेहनत, मजदूरी या खेती करते हैं

लेकिन जिस तेजी और दृढ़ताके साथ सोवियत्‌के कल-कारखाने बढ़ रहे हैं, उसे देखते हुए यह हालत चन्द सालोंके बाद न रहेगी। इन गलियोंके घरों और उनके निवासियों जैसे आपको लंदनके ईस्ट-एण्ड तथा दूसरे यूरोपीय शहरोंमें भी मिल सकते हैं। दरअसल रूसके बारेमें दरिद्रताकी झूठी-झूठी खबरें तो उस वक्त भी जारी रहेंगी,-जब आजसे दस पन्द्रह वर्ष बाद सोवियत् राष्ट्र दुनियाका सबसे अधिक धनी देश हो जायगा, और उसके निवासियोंकी आमदनी दुनियाके सभी देशोंके मनुष्योंकी औसत आमदनीसे बहुत अधिक होगी। बात यह है कि बाहरके सभी लोग अपनी आँखोंसे सोवियत्‌की भीतरी अवस्था देख न सकेंगे, और जो वहाँ जायेंगे, वे या तो पक्षमें सम्मति रखनेवाले होंगे या विपक्षमें। सोवियत् शासन-प्रणाली और उसके आर्थिक सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनकी वजहसे दुनियाका कोई आदमी उसके बारेमें निष्पक्ष हो ही नहीं सकता। अनजान या नावाक़िफ़ भले ही हो सकता है। फिर आप किसी भी यात्रीके लेखमें उसका मनोभाव बिना व्यक्त हुए न पायेंगे। पहलेसे सोवियत् राष्ट्र कितना उन्नत और समृद्ध हो गया है, उसकी शक्ति कितनी बढ़ गई है; यह तो अन्धेको भी मालूम हो सकता है, जब वह देखता है कि फ्रांस और इग्लैंड बड़े आदरके साथ उसे राष्ट्रसंघमें आनेकेलिए निमन्त्रण देते हैं; और उसके प्रतिनिधिको वहाँ एक स्थायी जगह अर्पण की जाती है। अमेरिका, जो बोलशेविकोंके नामसे भी नाक-भों सिकोड़ता था, आज उससे मैत्री करता है; और उसकी पंचवार्षिक योजनाकी नक़ल करनेकी कोशिश कितने ही देशोंमें की जा रही है।

पुराने मुहल्लेमें हमें एक अच्छे कटे पत्थरोंकी मस्जिद भी दिखाई दी। वह अपने नामको रो रही थी। मालूम होता है, वर्षोंसे उसपर सफ़ेदी या मरम्मत नहीं हुई। आखिर जब लोगोंको मजहबसे कोई अनुराग ही न रहा, तो मरम्मत कैसे हो? मुहल्लेमें दस बीस बूढ़े-बूढ़ियाँ अब भी इस्लामको माननेवाले हैं; मगर उनमें बहुतेरे नई उमरवालोंके मजाकसे डरके चुपचाप घरके कोनेमें ही नमाज पढ़ लिया करते हैं। अगर इच्छा भी हो, तो मरम्मत करनेमें सबसे बड़ा सवाल तो है पैसे का। अब भी तो कोई है नहीं कि उसके पास काफ़ी

स्थावर-जंगम सम्पत्ति हो। इसी मुहल्लेमें मुझे दो-चार पाजामा पहननेवाली बुढ़ियाँ भी दिखलाई पड़ीं। कुछ ही साल पहले पाजामा इन तुर्क स्त्रियोंकी जातीय पोशाक थी।

लौटते समय मैं और भी कितने ही मुहल्लोंमें गया। बाकूमें एक और बात दीख पड़ती है, जिससे बोल्शेविकोंकी मनोवृत्तिका पता लगता है। बाकू शहरमें एक तिहाई आबादी रूसी लोगोंकी है। रूसी लोग यूरोपियन हैं। यद्यपि तुर्क लोग काले नहीं होते, तो भी अधिकांश रूसियोंकी नीली आँखों और भूरे बालोंमें उनके छिपनेकी कहाँ गुंजाइश? रूसी क्रान्तिके पहले यहाँ आनेवाला हर एक रूसी 'साहब' था, और हर एक एशियाई कुली और गुलाम। रूसियोंके अलग मुहल्ले थे। रूसी मुहल्लेमें तुर्कोंका रहना सम्भव न था; लेकिन आज? आज उस भेद-भावका कहीं नामोनिशान नहीं। सभी मुहल्लों और सभी घरोंमें रूसी और तुर्क साथ साथ रहते हैं। एक ही तरहका जाँघिया और कोट पहने गलियोंमें खेलते हुए तुर्क और रूसी लड़के यह ख़याल भी नहीं कर सकते कि उनमें कोई सामाजिक या जातीय भेद है। दो-एक नहीं, हजारों तुर्क ऐसे मिलेंगे, जिन्होंने रूसी औरतोंसे शादी की है, और वही बात रूसी मर्दोंके बारेमें भी है। बात यह है कि सभी श्रमिकों का वेतन, चाहे वह रूसी हो या तुर्क, एक सा है। रूसी और तुर्क बच्चे छै वर्ष तक एक ही शिशुशालाओंमें साथ-साथ पलते हैं, और स्कूलमें दोनों जातिकी लड़के-लड़कियाँ साथ ही पढ़ती-लिखती और रहती हैं, इसलिए उस भाव की गुंजाइश नहीं है।

सिबेरिया और बाकूमें जिस प्रकार यह सह-विवाह और रक्त सम्मिश्रण हो रहा है, उससे तो मुझे ख्याल होता है; कि पचास वर्ष बाद शकल-सूरतमें भी सोवियत्के एशियाई और यूरोपीय वासियोंमें कोई भेद न रह जायगा। अगर भेद रहेगा भी तो इतना कि यूरोपीय सोवियत्के पश्चिमवाले लोग शायद कुछ ज़्यादा गोरे रहेंगे, क्योंकि एशियाइयोंसे यूरोपीय सोवियत् नागरिकोंकी संख्या तिगुनीके क़रीब है।

शामके वक़्त हम एक फ़िल्म देखने गये। रूसी फ़िल्मोंकी बड़ी तारीफ़

सुन चुका था, इसलिए उसे भी देख लेना जरूरी था। इन्तूरिस्तमें पूछनेपर मालूम हुआ कि एक आर्मेनियन टाकी फ़िल्ममें जगह खाली है। सोवियत् नाट्यशालाओं और सिनेमा घरोंमें जगह पाना आसान नहीं है। लोग पहले हीसे टिकट ले रखते हैं। लेकिन इन्तूरिस्त-एजेन्सी सब जगह फोन करके तुरन्त बता सकती है, कि कहाँ जगह खाली है। कितनी ही जगहोंका तो वह आपको टिकट भी दे सकती है। तवारिश् अनाकी मददकी जरूरत थी, क्योंकि मुझे न रूसी भाषा मालूम थी, न आर्मेनियन। बाकूमें एक दूसरा सोवियत् फ़िल्म भी देखा। सोवियत् फ़िल्मोंमें मुझे कई विशेषताएँ मालूम हुइ। सबसे पहली बात यह देखी कि स्वाभाविक दृश्य और बाजार, सेना, कारवाँ आदिके दिखलानेमें बिलकुल असलकी नक़ल की जाती है। यदि ऊँटोंके कारवाँको दिखलाना है, तो सौ-पचास ऊँटोंपर ही बस नहीं कर दिया जाता, बल्कि हजारों होते हैं। बाजार और सेना आदिके दृश्यमें भी वही बात है। जब सरकार अपने धन-जन-बलके साथ फिल्म तैयार करवानेपर कटिबद्ध है, तो फिर वहाँ खर्च और तरद्दुदका प्रश्न ही नहीं उठ सकता। दूसरी बात यह है कि अमेरिकन, यूरोपीय या भारतीय—सभी फिल्मोंमें फिल्म तैयार करनेवाले अधिक दर्शकोंको आकर्षित करनेकेलिए, स्त्री-पुरुषोंके प्रेमको, चाहे वह उचित हो या अनुचित, अत्यधिक मात्रा रखते हैं। इस विलासिताके नशेका जोरदार प्रचार मानो उनका प्रधान उद्देश्य है। रूसी फ़िल्मोंमें यह बात नहीं कि उनमें स्त्री-पुरुषों-सम्बन्धी प्रेम आता ही न हो; हाँ, उसकी मात्रा स्वाभाविक और उचित सीमाके अन्दर ही होती है।

फोटो-चित्रण और आवाजमें भी बहुत पूर्णता देखी जाती है। ऐक्टर तो कामगीरोंसे चुने और तैयार किये जाते हैं। उक्त फिल्ममें कथानक जारके समयकी आर्मेनियासे लिया गया था। दो तरुण-तरुणियोंमें प्रेम हो जाता है। तरुण एक मछुएका लड़का है। नदीमें मछलियोंका जाल फेंकते हुए उस तरुणने मछुओंके गीत गानेमें तो कमाल किया था। पीछे लड़कीपर रहनेवाले एक धनी सेठके लड़केकी नजर पड़ती है। उस वक्तकी आर्मेनियन रीतिके मुताबिक

लड़कीका बाप बिना रुपया पाये उसे दे नहीं सकता। गड़ुए तरुणने किसी तरह कुछ रुपये जमाकर उस धनी सेठके पास धरोहर रखे। सेठ रुपया माँगनेपर इन्कार कर देता है। अदालतमें मुक़दमा जानेपर अपने काग़ज़पर किये दस्तख़तसे भी वह इन्कार कर देता है। बड़े-बड़े वकील उसकी तरफ़से बहस करते हैं, उधर न्यायाधीश भी सेठके दोस्तोंमें है। सेठके दस्तख़तसे इन्कार करनेपर नौजवान कुछ बक उठता है, और उसे कई सालोंकी सजा हो जाती है। उसका दावा भी झूठा बताकर खारिज कर दिया जाता है। जारके जन्म-दिनपर सेठको खिताब मिलता है, और प्रदेशके शासक एक बड़े दरबारमें उसे तमग़ा पहनाते हैं। सेठके लड़केकी शादीमें, जो लड़कीकी इच्छाके बिना की जाती है, बड़े-बड़े रूसी अफ़सर शामिल होते हैं; और मुबारकबादी देते हैं। संक्षेपमें फ़िल्म द्वारा रुपयेके बलपर न्यायका अन्याय दिखलाया गया था। फ़िल्म खुली जगहमें एक दीवारपर दिखलाया जाता था, और लोग एक चहारदीवारीसे घिरे मैदानमें कुर्सियोंपर बैठे थे।

१० सितम्बरको, हवा तेज़ हो गई थी, और सर्दी मुँहपर काँटों-जैसी चुभती थी। इस वक़्त जब यह हालत थी, तो जाड़ेमें हवा चलनेपर कितनी सर्दी होती होगी? ११ बजेके क़रीब हम स्तालिन्-श्रमिक-संस्कृति-प्रासाद (Stalin Palace of Culture) देखने गये। यह मजदूरोंका क्लब-घर है। ऐसे क्लब बाकूमें अनेक हैं। पाँच तल्लेका विशाल भवन है। भीतर अनेक तरहके मनोरंजनका इन्तज़ाम किया गया है। एक बड़ा हाल है। जिसमें एक हज़ार कुर्सियाँ हैं। दूसरे हालमें ४०० कुर्सियाँ हैं। कुर्सियोंको बिना गद्दोंके देखकर पूछनेपर मालूम हुआ कि स्वास्थ्यके ख्यालसे उन्हें नंगा रखा गया है। गद्दा होनेपर उन्हें स्वच्छ और कीटाणुरहित (Disinfect) नहीं किया जा सकता। इन हालोंमें श्रमिकोंके नाटक होते हैं; शिक्षा-सम्बन्धी सिनेमा दिखलाये जाते हैं। व्याख्याताओंके व्याख्यान होते हैं, तथा वोट और चुनावकेलिए भी इनका इस्तेमाल होता है। वहीं एक छोटा-सा मिट्टीके तेलका म्यूज़ियम है। कमरेके बाहर दीवारपर संसारका नक्शा है, जिसमें दुनियाके सभी तेलगंत्रोंको दिख-

चमकते लाल वृत्तों द्वारा दिखलाया गया है। देखनेसे ही मालूम हो जाता है कि बाकू दुनियाका सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र है। दूसरे नम्बरवाला तेल-क्षेत्र भी रूस हीमें है। संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाका तेल-क्षेत्र तीसरे नम्बरपर आता है। सोवियत् राष्ट्रमें बाकूके अतिरिक्त मध्य-एशिया और सखालिन आदि जगहोंमें भी तेल निकल आया है। तेलके धनमें सोवियत्का संसारमें प्रथम स्थान है।

कमरेके भीतर दीवारोंपर चार्ट द्वारा दिखलाया गया है कि ट्यूबको कैसे धसाना चाहिए। टेढ़ा-मेढ़ा हो जानेपर क्या दोष आ जाता है और उसको कैसे सुधारना चाहिए आदि। एक जगह कच्चे तेलके कई नमूने रखे हुए हैं, और यह भी दिखाया गया है कि उससे क्या-क्या चीजें निकलती हैं। विशेषज्ञ लोग समय-समयपर आकर यहाँ श्रमिकोंको तेल-सम्बन्धी बातें बतलाते हैं। इतना ही नहीं, एक जगह यह भी दिखलाया गया है कि श्रमिक तेल पैदाकरके उससे किन-किन अन्य उद्योग-धंधोंको मदद पहुँचाता है, और उसके बदलेमें, खाना, कपड़ा, घर, नाटक, हवाई जहाजमें उड़ना आदि कितनी चीजें उसे मिलती हैं।

कुछ कमरोंमें पाँच हजार पुस्तकें रखी हैं तथा वाचनालय है। एक कमरेमें हवाई जहाजकी ठठरी रखी है। वहाँ सभी पुरजे खुले हुए हैं, और हवाई-जहाजके यन्त्र-सम्बन्धी ज्ञानके शौकीनोंको उसका गठन सिखलाया जाता है। सोवियत् नागरिकोंको हवाई जहाजका बड़ा शौक है। उनके हजारों उड़नेके क्लब हैं, जिनमें कितने ही हवाई जहाज रखे हैं, और सदस्योंको हवाई जहाज चलाना सिखलाया जाता है। गाँव-गाँव तकमें लकड़ीके ऊँचे-ऊँचे मीनार हैं, जिनपरसे युवक-युवतियाँ पैराशूट (छतरी, जिसके खुल जानेसे आदमी धीरेसे धरतीपर आ पहुँचता है) लेकर धरतीपर कूदती हैं। मैंने एक फोटो देखा था, जिसमें एक ही साथ हवाई-जहाजोंसे सौ सौ लड़कियोंके कूदनेका दृश्य था ?

वहाँसे हम फैक्टरीके भोजनागारमें गये। यह भी पाँच तल्लेका विशाल

महल है। भीतर घुसते ही हमें अपने कपड़ोंको ढँकनेकेलिए सफेद लम्बा कोट दिया गया। हमने एक ओरसे देखना शुरू किया। पहले रसायनशाला आई। इसमें डाक्टर लोग खानेके कच्चे सामानकी परीक्षा करते हैं - किस आलूमें कितना और कौन-सा विटामिन है? कितना प्रोटीन है? कितने और पदार्थ हैं? हर एक चीजकी परीक्षा होनेके बाद फिर वह धोने और काटनेकी जगह पहुँचता है। धुलाई-कटाई सभी कुछ मैशीनसे होती है। पकानेके स्थानमें भापका प्रयोग होता है। वहाँ तापमानकेलिए थर्मामीटर लगे हैं, और घड़ी देखकर चीजोंको चढ़ाया और निकाला जाता है। जूठी तश्तरियों और प्यालों-को भी मशीन ही गरम भाप और पानीसे धोती है। इस भोजनालयकी विशालता इसीसे समझ सकते हैं कि यहाँ तीस हजार आदमियोंका भोजन बनता है। भोजन तैयार हो जानेपर फिर रसायनशालामें उसकी परीक्षा होती है, तब वह वितरण-स्थानपर जाता है। खानेकेलिए कितने ही बड़े बड़े कमरे हैं। जो वहीं खाना चाहे, खा सकता है, और जो घर ले जाना चाहे, वह घर ले जा सकता है। जिन्हें भोजन न पचने आदिकी शिकायत है, उन्हें सम्मति देनेकेलिए वहीं डाक्टर मौजद हैं, और उनके लिए विशेष भोजन-का प्रबन्ध है। भोजन दस-बीस तरहका नहीं, सैकड़ों तरहका तैयार होता है। सबेरे छै बजे ही नाश्ता तैयार हो जाता है। काम करनेवालोंमें स्त्री-पुरुष, तुर्क, रूसी, आर्मेनियन, यहूदी आदि सभी हैं। हमने चखनेकेलिए एक प्लेट दही लेकर खाया। स्वाद अच्छा था। इस भोजनालयको देखकर हमारे साथकी अंग्रेजी महिलाने भी कहा कि यह चीज बिलकुल नई है।

वहाँसे हम स्तालिन् विद्यालय गये। यह बाकूके दर्जनों स्कूलोंमेंसे एक है। यहाँ ७ से १७ वर्षकी उम्रके लड़के-लड़कियाँ पढ़ती हैं। विद्यार्थियोंकी संख्या १८०० है, जिनमें तुर्क १६० तातार २५० आर्मेनियन ३२० और रूसी १०४० हैं। लड़कोंसे लड़कियोंकी संख्या अधिक है। हर छठे दिन स्कूलमें छुट्टी होती है। ७ से १२ वर्षवाले विद्यार्थी प्रतिदिन ४ घंटा पढ़ते हैं, और १३ से १७ वर्षवाले ६ घंटा। दो-दो सालकी पढ़ाई एक सालमें नहीं कराई

जाती। ख्याल है कि अधिक पढ़ाई करनेसे लड़कोंके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। अत्यन्त प्रतिभाशाली बालकोंकेलिए सरकार खास प्रबन्ध करती है। ऐसे लड़कोंकेलिए मास्को और कुछ अन्य स्थानोंमें खास विद्यालय हैं, जहाँ उन्हें विशेष सावधानीके साथ शिक्षा दी जाती है। इस स्कूलमें भी डाक्टरी-परीक्षाघर, भोजनशाला, व्यायामशाला आदि हैं। स्कूलके वक़्त लड़के यहीं भोजन करते हैं। उनके खानेकी मेजें छोटे-छोटे फूलके गमलोंसे खूब सजी हुई थीं। छुट्टियोंके बाद स्कूल खुलनेवाला था, इसलिए उस दिन सफ़ाई हो रही थी। ऊपर-नीचे सभी तल्लोंका फर्श लकड़ीका है। एक कमरेमें दो रूसी श्रमिक आधी बाँहकी कमीज और जाँघिया पहने पैरों द्वारा कपड़ेसे फर्शको रगड़ रहे थे। जिस स्कूलमें काले लड़के पढ़ें, वहाँ भला गोरे इस तरह काम करें! हमें वह कमरा भी दिखलाया गया, जहाँ डाक्टर विद्यार्थियोंकी परीक्षा करते हैं और स्वास्थ्यका लेखा रखते हैं। उस साधारण स्कूलकी इमारतका मुकाबला हमारे यहाँकी यूनिवर्सिटियोंकी इमारतें भी नहीं कर सकतीं।

हमारे पथ-प्रदर्शक अध्यापक तातार जातिके थे। उनके मंगोल चेहरेको देखकर तथा जन्म-स्थान अस्तराखान सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि वह कल्मुख मंगोल तो नहीं हैं; लेकिन पूछनेपर मालूम हुआ कि वे तातार हैं, जिनका जातीय धर्म पहिले इस्लाम था। उनके सिर और दाढ़ीके बाल मुड़े हुए थे। बदन-पर हमारे यहाँकी पुलिसकी तरहका बटनदार कोटनुमा कुरता था, नीचे ढीली-सी पतलून और कमरमें चमड़ेका तस्मा कोटके ऊपर पेटीकी तरह बँधा था। नेकटाई और कालरका नाम नहीं था। देखनेसे यही मालूम होता था कि किसी कारखानेके मजदूर हैं; लेकिन थे वे विद्वान् अध्यापक। सब देख सुनकर हमारे साथकी अंग्रेज महिलाने पूछा—"आप लड़कोंको धार्मिक शिक्षा तो देते न होंगे, क्योंकि सोवियत् सरकार धर्मके विरुद्ध है; किन्तु क्या धर्मके खिलाफ़ पाठ्य-पुस्तकोंमें विशेष पाठ रखे गये हैं, या जबानी ही वैसी शिक्षा दी जाती है?" अध्यापकने कहा—"पहलेसे खंडन करनेका मतलब होगा लड़कोंमें प्रति-

क्रिया द्वारा धर्मका भाव लाना। हम लोग ऐसा नहीं करते। कितने ही लड़कों-के माता पिता अब भी धर्मको मानते हैं, और उनका प्रभाव उनके लड़कोंपर भी पड़ता है। जो प्रभाव बालकके दिलपर पड़ा है, उसके बारेमें युक्तिसे हम उसीके द्वारा प्रश्न करवाते हैं और फिर उसका समाधान कर देते हैं।" सारांश यह कि बालकोंके दिलमें धर्मके ऊपर श्रद्धा न होने पावे, इसके लिए सूक्ष्म मार्ग-का अनुसरण किया जाता है, सीधे लट्ठ नहीं मारा जाता।

हमें शिशुशाला (बच्चाखाना) भी देखनी थी। बाकूमें शिशुशालाएँ बहुत-सी हैं। हम वागिरोवा-शिशुशालामें गये। यहाँ चार-पाँच-छै वर्षकी उम्रके १५० लड़के रहते हैं। मकान सुन्दर स्वच्छ है। पीछेकी ओर आँगनमें एक छोटा-सा बाग है। सेवाका काम बहुत-सी सुशिक्षित स्त्रियाँ करती हैं, जो तुर्क, रूसी आदि सभी जातियोंकी हैं, और लड़के भी सभी जातियोंके हैं। पहले हमने दरवाजेके पास डाक्टरका कमरा देखा। फिर बरामदेमें छोटी-छोटी कितनी ही अलमारियाँ देखीं। उन अलमारियोंपर कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, बन्दर आदि कितने ही जानवरोंकी तसवीरें थीं। पूछनेपर मालूम हुआ, कि यह उन लड़कोंकी अलमारियाँ हैं, जिनको अभी अक्षरज्ञान नहीं है। दूसरी तरफ़की अलमारियोंपर नामके साथ लड़कोंके फोटो थे। शिशुशालाकी प्रबन्धकर्त्रीने मुँह धोने, खाने, खेलने, सोने आदिके बहुतसे कमरे दिखलाये। यहाँ इस बातपर बहुत ध्यान दिया जाता है कि हर एक बालक अपना काम अपने हाथसे करे। धोनेके कमरेमें पानीके नलके और तौलिया टाँगनेकी खूँटी इतनी नीचे रखी गई है कि छोटे लड़के आसानीसे उन्हें पा सकें। खानेके कमरे-में कुर्सी, मेज, चम्मच, प्याला सभी चीजें खिलौने जैसी छोटी-छोटी हैं। लड़के अपने ही हाथसे खाते हैं। वे ही अपनी जमातका नेता चुनते हैं, जो उनसे सफाई आदिका काम कराता है। एक बड़े घरमें सैकड़ों तरहके खिलौने रखे हुए थे। उनमें कुत्ता बिल्लीसे लेकर रेल, मोटर, हवाई जहाज तक सभी थे। प्रबन्धकर्त्रीने हमें बंडल-के बंडल कागजोंकी फाइलें दिखलाईं। उनमें रंग या पेंसिलसे लड़कोंके खींचे चित्र और रेखाएँ थीं। किसी-किसी लड़केके चित्रमें

स्वाभाविकता अधिक देख पड़ती थी। इस खिलवाड़के करानेसे यह जानना अभिप्रेत है कि किस बालकका झुकाव चित्रकलाकी ओर है। सोवियत् शिक्षा-प्रणालीमें गाँवोंसे लेकर शहरों तक और शिशु शालाओंसे लेकर स्कूलों तकमें प्रतिभाशाली लड़कोंके चुननेकी ओर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। यह प्रबन्ध सर्वत्र इतना पक्का है कि कोई भी प्रतिभा अँधेरेमें पड़ी नहीं रह सकती। मुझे बतलाया गया कि इसी शिशुशालामें दो वर्ष पहले एक पाँच-छै वर्षका बालक था, जिसने गाने-बजानेमें बड़ा कौशल प्रकट किया था। आजकल वह मास्कोकी संगीतशाला (Music Conservatory)में है।

जिस वक़्त हम लोग वहाँ पहुँचे थे, उस वक़्त लड़कोंके सोनेका समय था। छोटी-छोटी चारपाइयोंपर सफेद चादर ओढ़े सब लेटे हुए थे। हम लोगोंसे दबे पाँव चलनेको कहा गया। अधिकांश लड़के नींद नहीं ले रहे थे। कोई-कोई हमारी तरफ देख रहे थे; और कोई-कोई आपसमें धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लड़के कई कमरोंमें सो रहे थे; किन्तु इस विभाजनमें सिर्फ अवस्थाका ख़याल किया गया था। रंग और जातिका नहीं। शिशुशालामें लड़के ८ बजे लाये जाते हैं, और ४ बजे तक यहीं रखे जाते हैं। इस बीचमें दो बार उन्हें खाना मिलता है। बाकूमें ऐसी शिशुशालाएँ सैकड़ों हैं।

११ सितम्बरको जहाज ४ बजेके क़रीब छूटनेवाला था। १२ बजे तक मैंने फिर पैदल घूमकर बाकू देखा। एक जगह बहुत भीड़ थी। मालूम हुआ कि भीतर प्रदर्शनी करके बहुत-सी चीजें बेची जा रही हैं। वहाँ खिलौने, कपड़े, सुगन्धित द्रव्य आदि हजारों तरहकी चीजें थीं। सभी सोवियतकी बनी हुई थीं। मैंने स्मृतिके तौरपर कोई चीज़ लेनी चाही। मेरे पास नौ रूबल (चार रुपये) बचे हुए थे। उनका भी उपयोग कर डालना था। सब देखकर एक मनीबैग लेना पसंद किया। मनीबैग दिखलानेपर वहाँ खड़े आदमीने उसको उठाकर अलग रख दिया और एक कागजपर दाम अपने हस्ताक्षरके साथ लिख दिया। दूसरी जगह कुछ खजानची लोग बैठे हुए थे। उन्हें रुपयेके साथ पुर्जा दे दी और पुर्जेपर मुहर करके लौटा दी गई। पुर्जा-

को फिर वहाँ ले जानेपर मनीबैग मिल गया। बेचनेका यही तरीका मास्को-में भी देखा था। सोवियत्के किसी भी शहरमें स्टेशनके पास वैसे ही भाड़ेवाली टैक्सी और घोड़ागाड़ी मिलेगी, जैसे हिन्दुस्तान या यूरोपके किसी शहरमें, फरक इतना ही होगा कि वहाँ मोल-भावका नाम नहीं। लेकिन यदि आप पूछें नहीं, तो आप यह नहीं समझ सकेंगे कि ये टैक्सियाँ या गाड़ियाँ किसकी हैं। पूछनेपर मालूम होगा कि टैक्सी गाड़ी तो क्या, छोटी-छोटी सोडावाटर और अखबारोंकी दूकानें तक सरकार या किसी श्रमिक संघ-की हैं। यहाँ बैठनेवाले दूकानदार सभी वेतन भोगी नौकर हैं।

होटलमें हिसाब करनेपर मालूम हुआ कि दो दिन मोटरपर सैर करने-का चौदह डालर देना होगा और तीन दिनके खाने और रहनेके लिए नौ डालर। बाकूसे पहलवी तक जहाजका सेकण्ड क्लासका भाड़ा उन्नीस डालर है। आजकल अमेरिकन डालर पौने तीन रुपयेके करीब है। देखनेसे यह यात्रा मँहगी ज़रूर मालूम होगी; लेकिन जैसा हम पहले कह चुके हैं। दाम रखते वक्त यहाँके अधिकारियोंको अमेरिकन यात्रियोंका ख्याल रहता है, हिन्दुस्तानी या एशियाई जातियोंका नहीं। पहली और दूसरी श्रेणीमें चलनेवाले तो धनी लोग हैं। उनके लिए चाहे जितना ही दाम रखा जाय, कोई हर्ज नहीं; किन्तु तीसरी श्रेणीके यात्रियोंके साथ खास रियायत होनी चाहिए। इस श्रेणीके यात्री अधिकतर गरीब होते हैं और वे रूसके साम्य-वादी निर्माणके देखनेकी लालसासे प्रेरित होकर आते हैं।

१॥ बजे मैं बन्दरगाहपर पहुँचा। कस्टम आफिसर तुर्क थे, और वे फ़ारसी भी बोलते थे। उन्होंने बड़ी शिष्टताके साथ बक्स खोलकर चीजें देखीं। मेरे पासके रुपये भी गिन लिये और छुट्टी मिली। हमारा जहाज़ छोटा-सा था। नाम था फ़ोमिन्। कास्पियन समुद्रमें चलनेवाले सभी जहाज़ सोवियत्के ही हैं। केबिन खूब साफ था। मेरी कोठरीमें तीन सीटें थीं; किन्तु यात्री मैं अकेला ही था। ४ बजेके करीब जहाज़ चला। बाकू समुद्र-के किनारे धनुषाकार बसा हुआ है। उसके एक छोरपर तेल साफ करनेके

कारखाने हैं और दूसरी तरफ, तेलके कुओंका जंगल। हवा तेज़ होनेसे जहाज़ हिल रहा था, इसलिए हम अपने बिस्तरेपर जाकर लेट रहे। रातके वक़्त रेडियोपर तुर्की गाना सुना। सबेरे ८ बजे दूर ईरानकी तटभूमि दिखलाई पड़ी, और १० बजे हम ईरानमें दाखिल हो गये।